

# आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान

( Modern Social Psychology )

( भारतीय विश्वविद्यालयों के विद्यार्थीय पाठ्यक्रमानुसार )

उत्तर प्रदेश भाषा निधि के सहयोग से

डॉ० रामजी श्रीवास्तव  
कलातन्त्रीय मनोविज्ञान विभाग  
विश्वी विश्वविद्यालय कलातन्त्रीय मनोविज्ञान  
काठमांडू ।  
तथा  
काजी आसिष आलम  
सीए एम  
विश्वी विश्वविद्यालय कलातन्त्रीय मनोविज्ञान  
काठमांडू ।

मोतीदास बनारसीदास  
दिल्ली :: वाराणसी :: पटना :: बनारस :: मद्रास

## बीबीकास कानामडीकास

बीबी टीव्ही, अमरावती नगर, दिल्ली-११० ००६  
 १२०, एम्बेडकर रोड टीव्ही, बीबीकास, अमरावती-१२० ००४  
 १३, केन्द्रीय टीव्ही, बीबीकास-१२० ००५  
 अमरावती एम्बेडकर, अमरावती-१२० ००४  
 बीबी, अमरावती-१२० ००५

अमरावती

आ. काशी बीबी कास

अमरावती

बीबी कास एम्बेडकर अमरावती  
 अमरावती

© बीबीकास

मुद्रण : [बीबीकास १२० ००४  
 [बीबीकास १२० ००५

बीबीकास अमरावती, बीबीकास अमरावतीकास, बीबी, अमरावती एम्बेडकर  
 अमरावती एम्बेडकर अमरावती, अमरावतीकास, अमरावती एम्बेडकर

## 444

[illegible]

अन्युक्त पुस्तक कर्मीविज्ञान विषय का चयन करते वक़्त बी० ए० तथा एड० एम० के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए चिन्तित गई है। उक्त विषय-विद्यालय के कर्मीविज्ञान विभाग में विषयविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता के प्राप्तिप्राप्त कर्मीविज्ञान के पाठ्यक्रम संशोधन हेतु हुई कार्यशाला की अनुसूचियों की ध्यान में रखकर अन्युक्त पुस्तक के विषय चयन का चयन किया गया है। पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय अनेक क्षत्र प्रवेश के अवसर कर्मी विषयविद्यालयों तथा विद्यालय राज्य के सभी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों की ध्यान में रखते हुए विभिन्न विषयों का चयन किया गया है। साथ ही आधुनिक संचार में भाषण की उच्चतम समझाओं जैसे आकाशवाणी तथा दूरदर्शन, पत्रों तथा सहायक संचार, सामाजिक परिवर्तन तथा सामाजिक व्यवस्था जैसे आधुनिक जीवन की सम्बन्ध कर्मीविज्ञानिक तथ्यों का समावेश किया गया है। जिसके अलावा केवल सामाजिक कर्मीविज्ञान के अन्तर्गत, विद्यालयों और छात्रावासों के ही नहीं, बल्कि उनके संचार की व्यवहारिक रूप में परस्पर और समझने में सक्षम हो सकें और इसके बीचोंबीच तथ्यों के अन्तर्गत हो सकें।

हम सभी देशों के आवासी हैं। बिन्दुओं जगत् अथवा परिचय और पूर्ण-महतीय विचार प्रत्यक्ष की रचना की शक्ति बताया है। अस्मात्क बालुओं के विना

निवेदन है कि अपने बहुमूल्य सुझाव द्वारा पुस्तक के संशोधन में सहयोग देने का कृपा करें। आशा है पुस्तक अध्यापकों और मनोविज्ञान के छात्र-छात्राओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

अन्त में, हम बाबू कमला शंकर सिंह, प्रबन्धक, मोतीलाल बनारसीदास, पटना के प्रति हृदय से आभार प्रकट करते हैं क्योंकि इस कार्य का श्रेय कमला बाबू की प्रेरणा ही रही है। परन्तु अपनी बात अधूरी ही रह जायगी यदि मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी शाखा के श्री वकील राम कुशवाहा तथा विक्रम प्रतिनिधि श्री मुन्नालाल पाण्डेय के प्रति अपनी कृतज्ञता न प्रकट कर दूँ क्योंकि इन लोगों ने ही पुस्तक के प्रकाशन का कार्य सहर्ष सम्पन्न किया तथा अपने असाधारण सहयोग से इसे पुस्तक का रूप समय से प्राप्त किया।

सम्पादक

जन्माष्टमी, १९९४

डॉ० काजी गीत आलम



**The book is dedicated  
to  
Mr. A. S. Ansari, LL. M.  
President  
Managing Committee  
Shibli National College Azamghash  
Who is a  
Beacon light of our hopes  
and aspirations**

**Dr. Qazi Ghaus Alam  
Dr. Ramji Srivastava  
Qazi Asim Alam**

# विषय सूची

अध्याय

विषय

पृष्ठ संख्या

1. समाज मनोविज्ञान : महत्त्व एवं आवश्यकता  
(Social Psychology : Importance and Need ) 1-21

ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि, युटिलिटीय, परिभाषा, समस्याएँ तथा क्षेत्र, सामाजिकरण एवं व्यक्तित्व, सामाजिक अन्तर्क्रिया, संज्ञान एवं व्यवहारीकरण, अभिवृत्ति, वक्त तथा प्रचार, समूह तथा नेतृत्व, अधि-प्रेरक एवं अधिगम, सामाजिक व्यक्तिवाद, समाज मनोविज्ञान का स्वरूप, अन्य सामाजिक विज्ञान के सम्बन्ध ।
2. समाज मनोविज्ञान की अध्ययन विधियाँ 22-45  
(Methods of Study of Social Psychology )

वेक्षण विधि, वेक्षण के प्रकार, प्रयोग विधि, साक्षात्कार विधि, प्रश्नावली विधि, समानात्मिकीय, संतुल्यकीय विधि, अन्तर सांख्यिक विधि, मनोवैज्ञानिक परीक्षण ।
3. सामाजिक अधिप्रेरक 46-77  
( Social Motivation )

सामाजिक अधिप्रेरक : आवश्यकता के रूप में, उत्प्रेरण की आवश्यकता, मैसरी की आवश्यकता विज्ञान, बरे का विज्ञान, आवश्यकता के प्रकार, आन्तानक आवश्यकता, परीक्षित अधिप्रेरक ।
4. अभिवृत्तियाँ 78-120  
( Attitudes )

अभिवृत्ति तथा अन्य सम्बन्ध पर, अभिवृत्ति निर्माण, अभिवृत्ति और अभिवृत्ति निर्माण, अभिवृत्ति परिवर्तन, अभिवृत्ति परिवर्तन के कारण, सिद्धांतवादीय का विज्ञान, संज्ञानात्मक विमर्शादिता विज्ञान, अनुसंधानीय सम्बन्ध तथा अभिवृत्ति परिवर्तन, सूचना की विशेषताएँ, अभिवृद्धि मापन-वासीय मापनी, लिफ्टे मापनी, बोया-देन की सामाजिक दूरी मापनी, विविध प्रणालियाँ, प्रयुक्त प्रणालियाँ ।

5. सामाजिक प्रत्यक्षीकरण 121-141  
( Social Perception )  
प्रत्यक्षिक संज्ञान, व्यापिक ज्ञान तथा सामाजिक वास्तविकता, सामाजिक अनुकूलता की प्रत्यक्ष करने वाली नीतिक प्रक्रियाएँ, सामाजिक प्रत्यक्षीकरण पर प्रत्यक्ष व्यवहार, सामाजिक दृष्टा, सामाजिक दृष्टी का संज्ञान, प्रत्यक्ष प्रत्यक्षता, सामाजिक दृष्टा में प्रत्यक्ष प्रक्रियाएँ ।
6. प्रत्यक्ष प्रत्यक्षीकरण 142-163  
( Perceptual Perception )  
प्रत्यक्ष प्रत्यक्षीकरण—प्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष, प्रत्यक्षता के प्रत्यक्ष, सामाजिक प्रत्यक्षीकरण—प्रत्यक्ष, प्रत्यक्ष-प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षीकरण प्रत्यक्ष, प्रत्यक्षता प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष, प्रत्यक्षता और प्रत्यक्षता का प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता की प्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष, प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता का प्रत्यक्षीकरण ।
7. सामाजिक प्रत्यक्ष : सामाजिक प्रत्यक्ष तथा प्रत्यक्षता 164-197  
( Social Indicators : Social Measures & Correlations )  
प्रत्यक्षता का सामाजिक प्रत्यक्षीकरण, सामाजिक प्रत्यक्षता तथा प्रत्यक्षीकरण एवं प्रत्यक्षता पर प्रत्यक्ष, सामाजिक प्रत्यक्षता के प्रत्यक्ष प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता के प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता के प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता ।
8. सामाजिक प्रत्यक्षता तथा सामाजिक प्रत्यक्षता 198-229  
( Socialization & Learning in Social Context )  
सामाजिक प्रत्यक्षता का प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता के प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता, सामाजिक प्रत्यक्षता में प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता तथा प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता द्वारा सामाजिक प्रत्यक्षता, सामाजिक प्रत्यक्षता में प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता में प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता ।
9. सामाजिक प्रत्यक्षता एवं सामाजिक प्रत्यक्षता 230-245  
( Social Status and Social Roles )  
प्रत्यक्षता के प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता एवं प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता, प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता प्रत्यक्षता ।



16. समूह मनोबोध 391-400  
( Group Mind )  
परिचयार्थ, समूह मनोबोध के अकार, निम्न मनोबोध की विशेषता, समूह मनोबोध के निर्माण, मान्य विधियाँ ।
17. सामाजिक व्यवहार के नियम 401-410  
( Law of Social Behaviour )  
सुज्ञान, संसृजन के विविध रूप, सुज्ञान का मनोविज्ञान, संसृजन प्रसार, सामाजिक जीवन में सुज्ञान का महत्व, संसृजन, प्रकार नियम, विज्ञान, महत्व, महत्वपूर्ण, महत्वपूर्ण के अकार, निर्माण, महत्व ।
18. सामाजिक परिवर्तन 411-418  
( Social Change )  
सामाजिक परिवर्तन का अर्थ, विशेषताएँ, अकार, कारण, विज्ञान, परिवर्तन, साधन में सामाजिक परिवर्तन ।
19. फैशन 419-427  
( Fashion )  
फैशन का अर्थ, स्वभाव एवं विशेषताएँ, फैशन क्या कहा, फैशन और कला में अकार, फैशन का अकार ।
20. जनमत 428-460  
( Public Opinion )  
जन का मत या कला का अर्थ, जनमत की विशेषताएँ, जनमत निर्माण की प्रक्रिया, जनमत निर्माण के निर्माण, जनमत के अकार का महत्व, जनमत मान्य, जनमत का महत्व ।
21. भीड़ तथा भीड़ का समूह 461-483  
( Crowd and Audience )  
भीड़ की परिभाषा, भीड़ की विशेषताएँ, भीड़ के अकार, विचारणीय भीड़ का मनोविज्ञान, भीड़ के विज्ञान, भीड़ तथा मानवसंख्या भीड़ में अकार, भीड़मान्य, व्यवस्था, प्रकार, भीड़समूह तथा भीड़ में अकार ।
22. प्रचार 484-502  
( Propaganda )  
अर्थ, विशेषताएँ, प्रकार, प्रचार क्या कहा, प्रचार मनोविज्ञान, मनोविज्ञान, साधन, महत्व, विचार, प्रचार ।

23. अफवाह 503-514  
( Rumour )  
अर्थ, विशेषताएँ, प्रकार, परिस्थितियाँ, कारण, विश्लेषण; साधन;  
रोक थाम ।
24. आक्रामकता 515-536  
( Aggression )  
अर्थ, सिद्धान्त, आक्रामकता को उकसाने वाले कारक, नियन्त्रण ।
25. परोपकार, सहायतार्थ, व्यवहार : समाजोपयोगी व्यवहार 537-554  
( Altruism, Helping, Behaviour ; Prosocial Behaviour )  
अर्थ, सहायतार्थ व्यवहार के निर्धारक; संज्ञानपरक माडल, सिद्धान्त ।

## अध्याय 1

# समाज-मनोविज्ञान : महत्व एवं आवश्यकता

( Social Psychology : importance and need )

मानव मनुष्य ही दुसरे व्यक्तियों के साथ सम्पर्क रखता है। इसी कारण उसे सामाजिक जीव कहा गया है। सभी समाज की सहायता और इच्छा की भरी है जो सभी जिन्दा, किन्तु इसमें कोई कभीहू नहीं कि क्या व्यक्ति हमारे जीवन में कुछ भूमिका निभाते हैं। हम दूसरों के सम्पर्क में आते हैं, उनके प्रभावित होते हैं, तथा उनकी प्रभावित करते हैं। मानव विकास दूसरों के साथ सम्पर्क पर आधारित है; बिना हम सामाजिक परिस्थिति कहते हैं अतः मानव विकास सामाजिक अन्तर्क्रिया का प्रतिफल है।

हमारे सेक्टर कुछ एक अनुभव माना प्रकार की सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भ में आता है। संज्ञानात्मक में किन्तु का सामाजिक व्यवस्था अति सीमित होता है। यह द्वयीय ( Dyad ) का उदाहरण होता है। अनुकूल के साथ-साथ किन्तु का सामाजिक व्यवस्था जिसमें एवं स्वतन्त्र होने लगता है। पिछा तथा परिवार के अन्य सदस्य की इनके सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत आते हैं। हमारी अति के साथ एकता सम्पर्क नहीं के अन्य सम्पर्क एवं विद्यालय के छात्रों के साथ भी होने लगता है। फिर के विद्यालय में शिक्षकों के सम्पर्क में आते हैं। इस प्रकार अनुकूल के साथ इनके सम्पर्क का क्षेत्र स्वतन्त्र होने लगता है। समाज के सम्पर्क अपना सामाजिक अन्तर्क्रिया के कारण को देखते हुए मान्य के बहुत नहीं अत्यन्त के कहा या "प्रकृति ने मनुष्य को सामाजिक जीव बनाया है" ( Nature has made man a social being )

इसके अतिरिक्त मनुष्य अपने अलग-अलग परिस्थितियों तथा अलग-अलग कारणों के सम्पर्क में भी आता है, जैसे टी० सी०, पोलियो, मलेरिया, चर्मरोग, पित्त, अस्थि अदि आधुनिक अन्तर्क्रिया के कारणों के कारण के अन्तर्गत ही नहीं बल्कि अत्यन्त विश्व के सम्पर्क में आते लगता है। इस प्रकार समाज-मनोविज्ञान समाज में रहने वाले व्यक्तियों के व्यवहार के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। अतः समाज मनोविज्ञान, सामाजिक जीव के अध्ययन की विद्या है।

मानव व्यवहार को समझने की उत्सुकता ने बहुत मनोविज्ञान की जन्म दिया,

शरी, समाज में मानव के व्यवहार की समझने की अनुमति से समाज-मनोविज्ञान की जन्म दिया : इस प्रकार समाज-मनोविज्ञान, बहु विज्ञान है जिसमें व्यक्ति और उसकी व्यवस्था की समझने का प्रयत्न किया जाता है : व्यवस्था का मत है दो पक्षों की होती है : पहली बहु जिसमें एक व्यक्ति तथा व्यक्ति के मान व्यवस्था किया करता है तथा दूसरी बहु जिसमें व्यक्ति, समूह या समाज के मान व्यवस्था करते हैं :

समाज-मनोविज्ञान का अध्ययन क्यों आवश्यक है ? समूह के सामाजिक व्यवहार को समझने के लिए समाज-मनोविज्ञान का अध्ययन अति आवश्यक है, किन्तु कुछ लोग यह नहीं मानते : व्यवहार के सामाजिक पक्ष को समझने एवं सामाजिक व्यवहार के सामान्य नियमों की ओर समाज-मनोविज्ञान के ज्ञान के प्रयोजन में सहायक नहीं है :

सामाजिक समझों की विस्तृत व्याख्यात्मक मानके व्यवस्थित और परिमलित हो रहे समाज में अति आवश्यक है,—बीजानिक या बीजानिक दृष्टि में भी और सामाजिक दृष्टि में भी : मान्य मान्यता व्यवस्था दृष्टि, अच्छी हुई है, अच्छी हुई बीजानिक प्रत्यक्ष नहीं समझाओं के कुछ नहीं है : किन्तु इन समझाओं का समाजाल मान समझों की समझों द्वारा समझ नहीं है : इन समझ : समझाओं के समझाल हेतु समझों की ज्ञान के अधिकृत मान्य व्यवहार और अधिकृत में बहुमूर्त व्यवस्था की आवश्यकता है : लोगों की अधिकृतों और व्यवहार में विचार के लिए हमें समाज-मनोविज्ञान के द्वार व्यवस्था होती : अति सुख दृष्टिकार और ज्ञान के अधिकृत व्यवस्था का द्वार में दिया के मत की दूर मत समझें ? इन मान की दृष्टि मान्य अधिकृतों तथा उनके समझों के विचार के ही समझें है, जिसके लिए समाज-मनोविज्ञान का ज्ञान अतिवर्त है :

इसी प्रकार समझाल में अति दृष्टि की समझ वर्त विरोधक लोगों का इसके साथ समझों के विचार के नहीं समझ या समझा : यह समझ नहीं समझ समझ है मत समझों और इन समझों की समझों के लिए समझ ही और इसके लिए अधिकृतों और समझों की परिमलित समझ आवश्यक है : इसी प्रकार समझों के विरोध समझों के बीजानिक प्रत्यक्ष की समझाल में भी, समझालों और बीजानिक समझों की अधिकृत में भी समझाल मान्य व्यवस्था की प्रत्यक्ष के समझों हेतु आवश्यक है : इन समझों के लिए अधिकृत परिमलित तथा समझाल दिया करना आवश्यक है :

समाजालीय ज्ञान, समझ, समझों, सामाजिक समझ, समझ, समझ और समझ के मान मत ज्ञान की समझों के लिए भी समाज-मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है :



मानव समाज, उसके व्यवहार की प्रेरणाओं, व्यक्तित्व की कुख्यातों और की वृत्तियों का एक व्यापक वर्गीकरण की प्रेरणा प्रदान करती है।

इसमें मैं हमें यह समझते हैं कि मनुष्य के सामाजिक व्यवहार के विषय में अधिक वैज्ञानिक ज्ञान की आवश्यकता, समाज की प्रकृति, सामाजिक विज्ञान द्वारा व्यवहार की प्रेरणाओं की वृद्धि के साथ बढ़ती जा रही है। व्यक्ति के समाजीकरण और उसके सामाजिक जीवन पर लोक कानूनों का प्रभाव बहुत है। इनके माध्यम से समाज में किन्तु समाज-सर्वोपेक्षण इसे समझ बनाता है। कुलीनता, भ्रष्टाचार, सामाजिक अन्धकार या दुरी, समाज आदि के कुछ कारकों की व्याख्या और समाज में समाज-सर्वोपेक्षण अति उपलब्धी है। इस प्रकार ज्ञान के रूप में सामाजिक, समाज-वैज्ञानिक की प्रति मानव प्रतिक्रिया के लिए समाज-सर्वोपेक्षण का ज्ञान की आवश्यकता है। यद्यपि सामाजिक विज्ञान की प्रति समाज-सर्वोपेक्षण समाज के दुर्गम एवं पीड़ितों का विकास हो रही करता यद्यपि इस सामाजिक विज्ञान की धूमिका मानव जाति की सामाजिक व्यवस्थाओं की सुधारने में समाज-सर्वोपेक्षण रही है।

यह है सामाजिक विज्ञान के माध्यम समाज-सर्वोपेक्षण के महान्, सामाजिक एवं सामाजिक के समझ हो गये हैं। समाज-सर्वोपेक्षण के द्वारा मनुष्यों के जीवन, भविष्य समुदाय और समाजों, और समाज-व्यवस्था के विकास, समझ, समाज-सर्वोपेक्षण की प्रेरणा की जा सकती है, समाज-वैज्ञानिक व्यवस्थाओं की सभी प्रकार समझ का विकास है।

## समाज-सर्वोपेक्षण की संक्षिप्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

( Short Historical background of Social Psychology )

ज्ञान है कि समाज-सर्वोपेक्षण का एक प्राचीन या पुराना विज्ञान है। यह एक विज्ञान का विज्ञान है। विज्ञान मनु के आधार पर इसे पुराना विज्ञान, किन्तु व्यवस्था प्रविष्टि के अनुसार पुराना विज्ञान कहा जाता है। समाज-सर्वोपेक्षण के विकास की सभी प्रकार समझने के विषये इसके प्राथमिक एवं विज्ञान के संक्षिप्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की आवश्यकता आवश्यक होती है। यह विज्ञान के विज्ञान में प्राचीनता, मानव व्यवस्था, विज्ञान व्यवस्था, समाज व्यवस्था तथा सामाजिक-व्यवस्था का महत्वपूर्ण जीवन रहा है। इसके प्राथमिक का समय 20 वीं शताब्दी के मध्य के माना जाता है। हमें यह है कि मानव जाति सामाजिक व्यवस्था की समझने के लिए सर्वदा से ही विज्ञान रहा है। किन्तु इस समय व्यवस्था की प्राथमिक एवं व्यवस्था-व्यवस्था व्यवस्था रही है। ये समाज-व्यवस्था, व्यवस्था, समाज, व व्यवस्था

का समुदाय लेते थे। किन्तु कहीं इस बात का खेद व्यक्त होता है कि उनके द्वारा बहुत मात्र में सांख्यिक समाज-मनोविज्ञान की विचारों की बीर अवधारणाएँ हैं।

समाज मनोविज्ञान का ऐतिहासिक विकास करने वाले लोग हैं। क्योंकि इनके विचारों में अपने-आपमें, एवं उनके विचारों का समाज-समय पर प्रभाव पड़ा है। वे विचार सांख्यिक समाज-मनोविज्ञान के आधार बने जाते हैं।

**सांख्यिकी का विकास :-** किसी न किसी रूप में समाज मनोविज्ञान का अध्ययन प्लेटो ( *Plato*, 427-347 BC ) के समय से होता आ रहा है। उसने 'विधि विचारों' नामक अपनी पुस्तिका में लिखा है कि 'यद्यपि समाज किसी विदेश समाज की उम्र है।' उसके अनुसार, समुदाय अपने समाज के अपने सामाजिक व्यवहार करित करता है। इस प्रकार उसने पॉलिथ के समाज पर एक विचार था। प्लेटो के विचार अरस्तु ( *Aristotle* 384-323 BC ) के 'समाज की एक सामाजिक चीज कहा जा।' उसके एक उद्धृति की उदाहरण का भी उल्लेख किया था। थॉमस हब्स ( *Thomas Hobbes* 1588-1679 ) उसने समाज का प्रसिद्ध पुस्तिका सांख्यिक था। उसने अज्ञान और शक्ति की पुस्तिका का नाम रख दिया था। उसके अनुसार समाज की शक्ति के बिना शक्ति का संघर्ष आवश्यक है। शक्ति की शक्ति की शक्ति पॉलिथ के समाज का। समुदाय स्वयं के सभी है। कोलेट वेदम ( *Isaac Newton* 1743-1832 ) के क्रांतिवादी विचारों पर एक विचार था। उसके अनुसार और उसके सुझावों की शक्ति के समुदाय होकर कार्य करते हैं।

एडमंड एडम ( *Adam* 1870-1930 ) के अनुसार उनके शक्ति अपनी शक्ति की शक्ति के उद्देश्य होता है। यह सुझाव पर अपनी शक्ति समाज के बिना समाज के बिना समाज के व्यवहार करता है। इसी शक्ति की शक्ति समाज होती है।

रॉबर्ट ( *Robertson* 1713-1773 ) का शक्तिवाद, समाज के शक्ति विचारों था। उसके अनुसार समुदाय शक्तिवादी और विचारों होता है। समाज समाज के समाज होता है। समाज के भी दोष होते हैं वे समाज के समाज के होते हैं। समाज के सुझावों की शक्ति पर हैं, तो समुदाय सुने करी नहीं करेगा।

**समाज-सांख्यिकी का विकास :-** समाज मनोविज्ञान के विकास में समाज-सांख्यिकी का बहुत महत्वपूर्ण योगदान पड़ा है। लैंगर एंड स्टैनिश ( *Langar and Stanish* ) के 1860 में एक शक्ति 'समाज मनोविज्ञान' ( *Public Psychology* ) के नाम से विचारों का समाज किया। यह विचार समुदाय समाज के



केल्विन ही व्यक्ति के जन्म प्रकार के कार्यों का कारण होती है। दुर्भाग्य के अनुसार समाज व्यक्ति के अतिरिक्त व्यवहारों का भीत है। इसी प्रकार हेगट्टल, पैन्क-बालरविन, बाल्टी जैसे तथा बर्निस बीवी तथा बुनिफाद बर्निस ने व्यक्ति-व्यक्तिता की पहचान की और लोगों का ज्ञान समुचित करने पर परापूर्वीय कार्य किया। अमेरिकी समाज-शास्त्री गुलबरी रॉस (Edith Wharton Ross) ने समाज मनोविज्ञान की पहली पुस्तक 'Social Psychology' प्रकाशित की।

सर्वोत्तमज्ञानियों की देन—विभिन्न वैज्ञानिकों का नाम समाज मनोविज्ञान में सर्वथा अज्ञ के नाम दिया गया है। इसके अनुसार व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार का पूरा कारण व्यक्ति की सम्पूर्ण वृत्त प्रवृत्तियाँ हैं, जो संसाधन द्वारा इसे बनने प्रवृत्तियों से प्राप्त होती है। व्यक्ति का व्यवहार तथा वैयक्तिक जीवन पूर्ण रूप से लोगों का प्रभाव है। अपने अपनी पुस्तक 'समाज मनोविज्ञान की प्रस्ताव' (Introduction to Social Psychology) के द्वारा सामाजिक व्यवहार के विस्तृत क्षेत्र के अन्तर्गत पर प्रभाव का नाम रखने पर वैज्ञानिकों की वृत्त प्रवृत्तियों का नाम "ग्रुप" के लिए दिया है तथापि इस बात का भीत अब भी प्राप्त है कि व्यवहार के कारणों को बनने की विद्या में उन्होंने परापूर्वीय विद्या और दूसरों के विद्या प्रभाव का भीत बने। इस विद्याओं के अन्तर्गत की 20 की वस्तुओं के कारण एक समाज, मनोविज्ञान में सर्वोत्तमक व्यवहारों का प्रभाव प्राप्त। सर्वोत्तम व्यक्ति पर समुद्र के कारणों का प्रभावप्रभाव प्रभाव प्राप्त। एच. एच. बाल्फोर्ड (F. H. Allport) ने किया। उन्होंने समाज-मनोविज्ञान में व्यक्ति के प्रभाव पर प्रकाशित एक विद्या। पूर्ण तथा पूर्ण (Allport & Murphy, 1931), के अपनी पुस्तक 'व्यक्तिगत समाज मनोविज्ञान' (Experimental Social Psychology) प्रकाशित की। इसके कारणों ने ही समाज मनोविज्ञान की सर्वोत्तमक प्रभाव प्राप्त किया। एच. बी. बर्निस (F.C. Barnard, 1932), गुलबरी रॉस (Margaret Mead, 1935) तथा रॉस (Ash, 1931, 32) ने समाज समाज मनोविज्ञान में ई-ई प्रभाव, समाज-मानक, समुद्र समुद्रता का सर्वोत्तमक प्रभाव पर समाज मनोविज्ञान की आधुनिक प्रभाव में महत्वपूर्ण एवं परापूर्वीय प्रभाव प्राप्त। समाज-मनोविज्ञान वैयक्तिक समाज-मनोविज्ञान बन गया। इस प्रकार समाज मनोविज्ञान वैयक्तिक, निष्ठाप्रवृत्तियों, समाजवादीयों तथा सर्वोत्तमिकों का पूर्ण है। इस विद्या में बाल्फोर्ड बाल्फोर्ड (Gordon Allport, 1933) ने कहा है कि, "सामाजिक मनोविज्ञान, वह प्रभाव और प्रभाव करने का प्रभाव है कि अन्य लोगों की सामाजिक, सामाजिक या वैयक्तिक प्रवृत्तियों के विद्या व्यक्ति के विद्या, प्रभावों तथा व्यवहार की प्रभावित करती है।" ("Social Psychology is the attempt to understand

and explain how the thoughts, feelings and behaviour of individuals are influenced by the actual, imagined or implied presence of others." )

इसका अर्थित्व यह है कि लोग किस प्रकार एक दूसरे की प्रभावित करते या प्रभावित होते हैं : ( *Social Psychology is about how people affect each other affected by one another.* ) सामाजिक की परिभाषा स्पष्ट कर देती है कि अन्य व्यक्ति उपस्थित रहे बिना भी होने प्रभावित कर सकते हैं :

आधुनिक परिभाषा का अर्थित्व यह है कि सामाजिक व्योमितिज्ञान का आरंभिक विचार समूह या संघर्ष नहीं बल्कि व्यक्ति है, जो दूसरे तथा समाजद्वारा में विभाजन देना की चीज इंगित करती है : दूसरे यह कि सामाजिक व्योमितिज्ञान, एक सामाजिक कारणों पर ध्यान देती है जो व्यवहार की प्रभावित करते हैं—यदि अन्य व्यक्ति तथा संघर्ष, विचारों तथा समूह द्वारा अपने यह सामाजिक तथा नीति संबंधित :

## समाज-व्योमितिज्ञान का दृष्टिकोण

(*Interpretation of Social Psychology*)

सामाजिक जीवन का सबसे समुच्च तत्त्व उसका सामाजिक जीवन है : जीवन का विचार करने के लिए सामाजिक विचार के लिए है : समाज व्योमितिज्ञान व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन सामाजिक व्यवस्था में करता है : इसका यह है कि समाज-व्योमितिज्ञान समूह का अध्ययन करता है या व्यक्ति का ? यदि समाज-व्योमितिज्ञान समूह की बहुत बातों में, समूह मन ( *group mind* ) और समूह चेतना ( *group consciousness* ) के अध्ययन पर उपस्थित एक विचार मानता है : समाज-व्योमितिज्ञान में हुई प्रवृत्ति में एक दृष्टिकोण की परिभाषित कर दिया है और आज समाज-व्योमितिज्ञान व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार अध्ययन की समुच्च बातों हैं व्यक्ति मात्र व्यक्ति दृष्टिकोण का बीजबाला है : एक व्यक्ति दृष्टिकोण का अर्थित्व यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अध्ययन किया जाता है कि व्यक्ति के व्यवहार की किसी न किसी रूप में व्यवस्था प्रभावित करते हैं, वे व्यक्ति की दृष्टिकोण, सामाजिकी एवं सामाजिकताओं की दृष्टि में या नहीं अध्ययनकर्ताओं की दृष्टि में सम्बन्ध होती है : समूह का अध्ययन समाज व्योमितिज्ञान अब अब में नहीं करता बल्कि कि अन्य विज्ञान करते हैं : समाज-व्योमितिज्ञान का अर्थित्व व्यक्ति, उनके व्यवहार और विचारों के अध्ययन में है : दूसरी दृष्टि समूह के सदस्यों के लिए व्यक्ति के अध्ययन में है, न कि समूहों द्वारा निर्मित समूह के अध्ययन में : समाज-व्योमितिज्ञान का अध्ययन व्यक्ति के है जो सामाजिक है : किन्तु इसका अर्थित्व

बहु नहीं है कि समाज-मनोविज्ञान का दृष्टिकोण पूर्णतः वैज्ञानिक है, क्योंकि मानव व्यवहार द्वारा व्यक्ति और समूहों में जो जो भी प्रभाव उत्पन्न होता है उसे वैज्ञानिक रूप में समझना ही समाज-मनोविज्ञान का उद्देश्य है। इसीलिए विभिन्न प्रकारों के व्यवहार द्वारा ही मानव व्यवहार की समझना संभव है। यह सब होने होने की शक्ति समाज-मनोविज्ञान की शक्ति के व्यवहार की समझना है जो व्यक्तिगत दृष्टिकोण की मान्यता अनिच्छित है। सांख्यिक समाज-मनोविज्ञान व्यक्ति के सामाजिक-व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है।

## समाज मनोविज्ञान की परिभाषा

(*Definition of Social Psychology*)

समाज मनोविज्ञान के मूल में दृष्टिकोण और सांख्यिक रूप में कुछ अन्तर यह है कि परिभाषा समाज मनोविज्ञान सांख्यिक समझना का संश्लेषणात्मक विवेचन सांख्यिक समझना के द्वारा करता है। विज्ञान यह कोई भी ही व्यवस्था में ही परिवर्तन नहीं होता, यह वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक परिवर्तनता होने में समझा समझ करता होता है। विज्ञान २५-५० वर्षों में समाज मनोविज्ञान में बहुत बदलि की है और अब इसकी समझ एक विशिष्ट समझ-विज्ञान ( *Social Science* ) के रूप में हो रही है। लेकिन यह भी सत्य है कि इसमें मनोविज्ञान तथा समाज-शास्त्र की समझ समझ विचारों होती है। अब समाज मनोविज्ञान की परिभाषा इन दो समझ-विज्ञानों में समझ समझ व्यवहार के विभिन्न दृष्टिकोणों में समाहित होती होती है।

समाज-मनोविज्ञान, व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन है। इसमें व्यक्तियों की सामाजिक व्यवहार-प्रणाली, सामाजिक, समूह, विद्या तथा समूह सामाजिक प्रणाली का अध्ययन करते हैं। यह बहुत सत्य न होता कि समाज में व्यक्ति का अध्ययन करने वाला विज्ञान ही समाज-मनोविज्ञान है ( *Social Psychology is the study of individuals in Society.* ) समाज-मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करते सामाजिक परिवेश में करता है। इसकी मूल शक्ति व्यक्ति में होती है, परन्तु यह में उसकी शक्तिशाली, शक्तिशाली, सामाजिक, तथा सामाजिकता का अध्ययन यह व्यक्ति के समूह में करता है।

अमेरिकी व्यक्तियों को ज्ञान में उनके होने वैज्ञानिक वैज्ञानिक ( *Sherril & Sherril 1948* ) ने कहा है कि समाज-मनोविज्ञान, व्यक्ति के व्यवहार तथा व्यवहार का वैज्ञानिक समझ उस सामाजिक प्रणाली में करता है जो व्यक्ति की व्यक्ति करता है।

( '*Social Psychology is the scientific study of experiences and behaviour of individual in relation to social situation.*' )

इस परिभाषा में बहुत बड़ी की अधिक मात्रा सम्मिलित होती है—

**वैज्ञानिक अध्ययन ( Scientific Study )**—यह एक वैज्ञानिक दायन, विधि से नियंत्रित करता है जो सात समाज-सर्वविज्ञान के विभिन्न वर्गों में है। इसमें (१) परीक्षणपूर्ण प्रयोग होते हैं, (२) प्रयोग एवं सिद्धि विरोध द्वारा सामान्य नियमों का प्रतिपादन करते हैं तथा (३) इन सामान्य नियमों के उपयोग द्वारा नई कल्पना करते हैं। इस प्रकार समाज-सर्वविज्ञान में सिद्धि विरोध करना आवश्यक विधि का उपयोग होता है जो आज वैज्ञानिक वैज्ञानिक विधि समझी जाती है।

**अनुभव एवं व्यवहार ( Experiences and Behaviour )**—मान की मनोवैज्ञानिक विचारों से प्रचार की होती है बहुत, ( *instinct* ) जिसका विरोधन हर कीर्ति का प्रस्ताव है तथा ( *conscience* ) सामाजिक विचारों केवल स्वार्थ के लक्ष्य करने अनुभव का विचार होती है। इस प्रकार समाज-सर्वविज्ञान में बहुत एक और स्वार्थ के बहुत विरोधमूलक व्यवहार का प्रस्ताव करते हैं यहाँ तक की सामाजिक विचारों की व्यवहारियों सामान्यीय विधि का भी अध्ययन किया जाता है जो कि प्रत्यक्ष विरोध का विचार नहीं होती, और जिसका अध्ययन वास्तविक अनुभव द्वारा किया जाता है।

**व्यक्ति ( The Individual )**—समाज-सर्वविज्ञान के विवेचन की एक दूसरी शक्ति है। परिभाषा का यह उक्त है समाज-सर्वविज्ञान की प्रस्ताव का नहीं होता है और दूसरी ओर इसे अन्य समाज-विचारों के अध्ययन की करता है इस प्रकार समाज-सर्वविज्ञान अपने व्यक्तिगत तथा विधि के आधार पर अन्य विचारों के विचार है। इसमें समाज का अध्ययन केवल व्यक्ति के स्वार्थ में करते हैं।

**सामाजिक पर्यवेक्षक विधि ( Social Scientific Methods )**—इस परिभाषा में केवल तथा केवल में सामाजिक पर्यवेक्षक-विधि पर विशेष धन दिया है जिसका उद्देश्य उन व्यक्तियों और समुहों के है जो किसी सामाजिक वास्तविक पर्यवेक्षक का अध्ययन करें होते हैं, और जो किसी व्यक्ति की व्यवहार के विभिन्न वर्ग करते हैं।

व्यवहार तथा अनुभव का अध्ययन व्यक्ति की विचारों की सम्बन्धित व्यवहार, प्रचार, चिन्तन, कल्पना आदि के द्वारा किया जाता है। केवल इन मनोवैज्ञानिक विचारों पर अनेक सामाजिक कारकों का प्रभाव पड़ता है, जिसकी सभी परिभाषा में नहीं है। यहाँ इस कार्य की ध्यान में रखकर जिन दशा सम्बन्धित में कहा कि, "वैज्ञानिक रूप में, समाज-सर्वविज्ञान की प्रभाव में व्यक्ति व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करने वाला विचार बहुत समझें है।" ("Social Psychology-

logy may, therefore, be broadly defined as the science of the behaviour of individuals in Society"। इसका अर्थित्व यह है कि समाज-सां-  
 विज्ञान समाज के अस्तित्व के अध्ययन का अध्ययन है। इस परिभाषा के अनुसार श्री  
 अण्णास मरीचिवाल के विवेचन की इसकी "अर्थ" है, बहुत बड़े अर्थों में यह है  
 कि इसका अध्ययन, हमारे अस्तित्व, स्वयं, अस्तित्व, आत्मता, मानवता  
 की, अस्तित्व अर्थ के द्वारा भी सम्बन्धित होता है। इस अर्थ की दृष्टि में यह  
 ही, अस्तित्व अर्थ के द्वारा ( 1963 ) में अण्णास मरीचिवाल की अर्थ अस्तित्व  
 अध्ययन की दृष्टि का अध्ययन करने वाला विज्ञान कहा है। ( Social Psy-  
 chology का अर्थ है the science of interpersonal  
 behaviour aspects. )

समाज-व्योमिश्रण वह कार्य किया जाये का सम्बन्ध करता है जिसका साधन सामाजिक होता है और जो सामाजिक कार्यों का वर्द्धन को उत्प्रेरित करता है। अर्थात् वह सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यों का प्रचार निरन्तर करता रहता है। अतः समाज-व्योमिश्रण में व्यक्ति के सम्बन्ध स्थापित करने का सम्बन्ध सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर में करते हैं। यहाँ जो सामाजिक किंवा समाज के प्रचार के सम्बन्ध नहीं हो सकती, अतः समाज-व्योमिश्रण का सम्बन्ध स्थापित करने का प्रचार प्रसारित होता है।

जिन्हीं की विचार की औपचारिक परिभाषा देना एक बहल कार्य है। समाज-वर्गीयविचार के अर्थ में यह बहलवाई की बातों के और यह बहल है (1) देश की लोकतांत्रिकता, (2) दूसरी परिभाषा की हल बहल। किन्तु मुख्यतः में समाज-वर्गीयविचार के अर्थ में व्यवहार, विचार, काम आदि का अध्ययन करता है जो दूसरे व्यक्तियों की व्यवहार का व्यवहार्य व्यवस्था में प्रतिष्ठित होता है। यह बहल के व्यवहार और विचार के सभी और बहल की व्यवस्था का अर्थ करते हैं। एक बहल के कारण Buros & Bryson (1937) ने कहा है "Social Psychology is the scientific field that seeks to understand the nature and causes of individual behaviour in social situations." अर्थ-व्यवस्थाओं की बहल यह भी बोझी बहल व्यवस्था होती है। व्यवहार के व्यवस्था, विचारों और व्यवस्था के भी है। इसी व्यवस्था व्यवस्था है—

समाज-वर्गविज्ञान, विभाग ३

( Social Psychology in Schools in Orientation )

निम्नो भी उस विषय को विज्ञान कह सकते हैं, जिसमें केवलिक विधियों का उपयोग होता है। अर्थात् सर्वोपयोगी विज्ञानोन्मुख है क्योंकि इसमें इतनी सख्त



विशेषतः की वैज्ञानिक पद्धतियों का अनुवर्तीय होता है। अतः परीक्षितान् व्यक्ति के व्यवहारपर प्रभाव पड़ता है। (Social Psychology विचारों का एक Subculture of Individuals)

इसका मनोवैज्ञानिक अर्थ यह है कि हमारे जीवन का सामाजिक परिवर्तनशीलता में स्थिति की इन क्रियाओं और क्रियाओं की और वेदों में विद्यमान सामान्य वैज्ञानिक स्थितियों के सम्बन्ध में है। इस सम्बन्ध की पूर्ति के लिए, ये सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का ही प्रतिबिम्ब प्रस्तुत हैं। किन्तु मनः-वैज्ञानिक सामाजिक जीवन का प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं होता है, बल्कि यह प्रभाव होता है जो सामाजिक परिवर्तनों में व्यक्ति के व्यवहार को निर्दिष्ट करता है और निर्दिष्ट करता है। सामाजिक-व्यवहारिक सामाजिक व्यवहार के कारणों में व्यक्ति प्रवेश करता है (Social Psychology studies the psychological and social causes of social behaviour.)

राष्ट्रात्मिक व्यवहार के कारकों की संख्या एवं बहुमान एक पूर्ववर्त कार्य है, क्योंकि ऐसे परिचर्य सम्मिलित हैं जो राज्य व्यवहार की वास्तविकता को साकार करते हैं। वास्तविकता की सुस्पष्टता की दृष्टि से इस कारकों की विभिन्न शक्ति शक्तों में सीमित करने का प्रयास किया गया है—(1) राज्य स्वतंत्रता के व्यवहार तथा स्वयं, (2) दूसरे राज्य तथा के व्यक्तियों के विषय में दूसरे संस्था, (3) नीतिगत पर्यावरण के प्रभाव एवं अन्तर्गत प्रभाव (4) सामाजिक व्यवहार के शक्ति होने का सामाजिक-राष्ट्रात्मिक प्रभाव, और (5) सामाजिक व्यवहार के प्रभाव में अन्तर्गत का शक्ति प्रभाव।

एक प्रकार निष्कर्ष के रूप में हम यह समझते हैं कि समाज-व्यक्तिगत मन के सांसादिक व्यवहार के कारणों को समझने का प्रयास करना है, जो सामाजिक मन में व्यक्ति के व्यवहार, विचार एवं भावनाओं को एक प्रभाव डालते हैं। (Social Psychology focuses mainly on the study of understanding the causes of social behaviour—identifying factors that shape our feelings, behaviour, and thought in social situation.)

[illegible]

### सामान्य मनोविज्ञान की सामस्यार्थ तथा क्षेत्र

(Problem and Scope of Social Psychology)

वर्षों के अनुभवों, अथवा व्यक्तिगत अनुभवों तथा समूह अनुभवों से सम्बन्धित

सामाजिक सुसमाप्ती के सम्बन्ध होने के कारण समाज सर्वोन्निष्ठता का क्षेत्र सम्पूर्ण व्यापक है और इसकी सीमाओं का निर्धारण करना कठिन है। अतः व्यक्ति के सभी प्रकार के व्यवहार को सामाजिक वर्णन में लाने हैं, इसके सम्बन्ध में करते हैं। एक व्यक्ति तथा अन्य व्यक्ति, व्यक्ति तथा समूह, अथवा ही समूहों के साथ समाजिकता के सम्बन्ध होने सभी सभी सम्बन्धों का सम्बन्ध समाज सर्वोन्निष्ठता में किया जाता है। इस प्रकार सामाजिक समूहों के विचार सम्बन्ध सहित व्यक्ति तथा समाजिक समूहों तथा सामाजिक जीवन एक सम्पूर्ण समाजों का निर्माण, समाज एवं समाज सम्बन्ध सर्वोन्निष्ठता के सम्बन्ध करते हैं। इस प्रकार समाज सर्वोन्निष्ठता का क्षेत्र बलि व्यापक है और समाज को सभी हुई व्यक्तिताओं के कारण समाज सर्वोन्निष्ठता का क्षेत्र और भी विस्तृत होता जा रहा है। अतः समाज सर्वोन्निष्ठता की सीमाओं तथा क्षेत्र का निर्धारण व ही बहुत कठिन हो है और व ही हमें संभव है कि हमें समाजों की सुविधा हेतु उनके क्षेत्र तथा सम्बन्धों का संक्षिप्त वर्णन किया जायता।

- (1) समाज का समाजीकरण, संस्कृति तथा व्यक्ति।
- (2) सामाजिक समाजिकता।
- (3) सामाजिक संरचना एवं सामाजीकरण।
- (4) संस्कृति, यह एवं प्रकार।
- (5) सामाजिक समूह, तथा समूह।
- (6) सामाजिक सम्बन्धों एवं सामाजिक सम्बन्धों।
- (7) सामाजिक सम्बन्धों समाज।
- (8) सामाजिक सम्बन्धों।

### समाज का समाजीकरण एवं व्यक्तिता

(Socialization of Child and Personality)—

समाज सर्वोन्निष्ठता की एक बड़ा सम्बन्ध समाजीकरण की सम्बन्ध है। इसी प्रकार के द्वारा समाज सभी समाज एवं संस्कृति के विभिन्न तत्वों की सीमा है। समाज सम्बन्ध सामाजिक एवं सामाजिक विवेकताओं तथा सामाजिक एवं सामाजिक सम्बन्धों पर ही निर्भर करता है। समाजीकरण व्यक्ति के ही कारण व्यक्ति समाज सम्बन्धों के बीच होता है। समाज के समाज समूह का सम्बन्ध समाज क्षेत्र के समाज होता है, यह व ही सामाजिक होता है और व ही सामाजिक होता है। अतः, समाज तथा समाज-सम्बन्धों के सम्बन्धों के बीच-बीचे समाज सामाजिक सम्बन्धों एवं सम्बन्धों का सम्बन्ध करते लभता है। समाजीकरण की प्रक्रिया समाज के समाज के समाज क्षेत्र, जीवन क्षेत्र, सम्बन्ध क्षेत्रों पर होती है। इस समाजीकरण की प्रक्रिया के

होता ही। समाज समाज का एक मात्र उद्देश्य करता है। यह दूसरी की प्रभावित करता है और स्वयं की दूसरी द्वारा प्रभावित होता है। कुछ विचारों पर अधिकारी समाज के अधिकार का निर्धारण करती है। समाजीकरण के समाज संरचना की अधिकार के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सामाजिक नियंत्रण, व्यक्ति के आचार-विचार, धर्म-वर्ण, अधिकारों और दूसरी में विश्वास को प्रभावित करती है जो उसके अधिकार के विकास एवं निर्माण में योगदान देती है।

### सामाजिक अन्तःक्रिया (Social Interaction) :—

समाज सर्वोपेक्षा, सामाजिक अन्तःक्रियाओं द्वारा उनके अर्थों का अध्ययन करता है। व्यक्ति दूसरी के विषे सहयोग की है और अनुकूलता की। व्यक्ति दूसरी को प्रभावित करता है। समाज उनके द्वारा स्वयं की प्रभावित एवं प्रभावित होता है। इसी प्रक्रिया की सामाजिक अन्तःक्रिया कहते हैं, जो समाजीकरण में भी निरन्तर आचरण होती है। व्यक्ति एक दूसरी की अपनी अभिव्यक्ति, भाषा, धर्म, विचार, अनुकूलता तथा दूसरी व्यक्ति के द्वारा भी प्रभावित करती है।

सामाजिक अन्तःक्रिया तीन प्रकार की होती है :—

1. व्यक्ति की स्वयं व्यक्ति से अन्तःक्रिया।
2. व्यक्ति की समूह के अन्तःक्रिया।
3. समूह की दूसरी समूह के अन्तःक्रिया।

किन्तु हमें स्पष्ट है समाज की अन्तःक्रियाओं में से केवल स्वयं ही समाज की अन्तःक्रियाओं ही समाज-सर्वोपेक्षा के क्षेत्र में जाती है।

### सामाजिक संज्ञान एवं आत्मसीकरण

#### (Social Cognition and Perception) :—

अनेक कारणों से व्यक्ति के संज्ञान और आत्मसीकरण को प्रभावित करते हैं। कुछ कारण व्यक्ति में निर्दिष्ट होते हैं और कुछ परिवर्तन में निर्दिष्ट होते हैं। द्वारा आत्मसीकरण केवल सहयोग पर निर्भर नहीं करता। अधिक समाज-सर्वोपेक्षा में सामाजिक सुरक्षा, सामाजिक-अनुकूलता, व्यक्ति आत्मसीकरण एवं अनेक अन्य अधिकारों का अध्ययन करती है। व्यक्ति का आत्मसीकरण अनेक कारणों द्वारा प्रभावित होता है। इन सभी का अध्ययन समाज-सर्वोपेक्षा में करते हैं।

एक समूहों का आत्मसीकरण एक रूप में नहीं करते बल्कि के माध्यम में है। दूसरी कारणों, कारणों, कारणों, कारणों व्यक्ति की दूसरी आत्मसीकरण को प्रभावित करते हैं। किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है "We do not perceive things as they are but as we are."



अपेक्षा, शक्ति, व्यक्तिगत स्वयं, एवं सामाजिकता आदि । इसीलिए आज समाज-सर्वोपेक्षण में इन व्यक्तिगतों के सम्बन्ध सभी समस्याओं का समेकित किया जाता है—जैसे जीवन-व्यवहार, व्यक्तिगत व्यवहार तथा इनसे सम्बन्धित सभी बातें आदमी का भी सम्बन्ध किया जाता है ।

अन्तिम पर संस्कृति तथा समाज के अन्तर्गत (Social-Cultural Environment) —

अन्तिम के अन्तर्गत तथा व्यक्तिगतों पर सामाजिक संस्कृतिक पर्य का विशेष अन्तर्गत पड़ता है । अन्तिम के अन्तर्गत की विशेषता यह है कि, इनके सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण की समझना अति आवश्यक है । कहा जाता है कि अन्तिम अपने समाज का दर्शन है । इस कारण समाज-सर्वोपेक्षात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक परीक्षण का अध्ययन भी करते हैं । भाषा, धर्म, व्यवहार, अपने व्यवहारों, जीवन, जीवन-शैली, आचार-विचार, आदमी, सुखी तथा समाजों आदि सभी संस्कृति का अर्थ करने करते हैं, जो अन्तिम के अन्तर्गत पर बहुत अन्तर्गत करते हैं । अतः समाज-सर्वोपेक्षण के क्षेत्र का अन्तिम अर्थ करने करते हैं ।

सामाजिक व्यापिकीय ( Social Pathology ) —

पारम्परिक अन्तर्गत अन्तर्गत सामाजिक परीक्षण के अन्तर्गत अन्तिम सामाजिक व्यापिकीय अन्तर्गत होती है,—जैसे अन्तर्गत में जीवन, अन्त, व्यक्तिगत, शक्ति एवं पर्य केन्द्र, रचना, जीवन-शैली, तथा जीवन-शैली आदि । यह सभी अन्तर्गत की व्यापिकीय समाज-सर्वोपेक्षण का अध्ययन किया है । समाज के जीवन-शैली अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत की समझना यह अन्तर्गत अन्तर्गत पर पड़ती है । समाज-सर्वोपेक्षण में माना अन्तर्गत की व्यापिकीय के अन्तर्गत, अन्तर्गत तथा इनके विद्यमान के अन्तर्गत का विशेष अध्ययन किया जाता है । समाज-सर्वोपेक्षण के अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत यह सभी तथा अन्तर्गत व्यापिकीय की रचना अन्तर्गत विद्यमान में अन्तर्गत की पड़ती है ।

## समाज-सर्वोपेक्षण का अन्तर्गत

(Measurement of Social "Pathology")

सर्वोपेक्षण, अन्तिम के अन्तर्गत एवं अन्तर्गत का अध्ययन करता है । समाज-सर्वोपेक्षण अन्तर्गत में सामाजिक पर्य का अध्ययन करता है । अन्तर्गत सामाजिक अन्तर्गत का अध्ययन भी सर्वोपेक्षण के क्षेत्र का अर्थ है । सामाजिक सर्वोपेक्षण यह अन्तिम के समाज अन्तर्गत का अध्ययन करता है यह समाज-सर्वोपेक्षण मानव अन्तर्गत का अध्ययन सामाजिक अन्तर्गत में करता है । इनके अन्तर्गत में समाज-सर्वोपेक्षण अन्तिम का अध्ययन एक सामाजिक अन्तिम के रूप में करता है । अन्तिम के अन्तर्गत का एक पर्य है अन्तिम या अन्तिम पर्य और अन्तर्गत है सामाजिक पर्य ।

यस हून किसी मनुष्य के किसी कस पर विचार करते हैं जो उसके व्यक्तिगत गुणों जैसे—उसके सामाजिक और आर्थिक गुणों और किसी जीवन काल पर ध्यान देते हैं। लेकिन अब उसके सामाजिक कस पर विचार करते हैं जो समाज के अन्य सदस्यों के साथ उसकी व्यवहार के संबंध पर ध्यान देते हैं—जैसे यह कि अन्य लोग उसके विषय में क्या विचार और मानना रखते हैं और यह दूसरों के विषय में क्या सोचता है और अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति या अनुपस्थिति उसके व्यवहार एवं क्रियाओं को कैसे प्रभावित करती है। अतः समाज-मनोविज्ञान तथा व्यक्तिगत व्यवहार पर विशेष कस देता है।

अतः व्यक्तिगत व्यवहार पर ही सामान्य जीवन की व्यक्तिगत परभाव विवेक करती है। व्यवहारवादी व्यक्ति तथा मनुष्य और कभी-कभी दो या अधिक मनुष्यों के साथ भी सहित होती है। समाज-मनोविज्ञान विभिन्न व्यक्तियों की सामाजिक क्रियाओं का अध्ययन करता है।

जैसा कि दूसरी परिभाषाओं से स्पष्ट है, समाज-मनोविज्ञान का सम्बन्ध वैज्ञानिक है। कोई भी विषय जब समय विज्ञान की संज्ञा प्राप्त करता है जब उस विषय में विचार के अन्तर्गत नियमान् होती हैं। वैज्ञानिक विधि का उपयोग, समुचित निष्कर्ष, प्रमाणिकता, पूर्ण सम्पूर्णता तथा विषयों में साम्यवैयक्तिकता आदि विज्ञान के आवश्यक लक्षण हैं। यह सभी लक्षण या अन्तर्गत समाज-मनोविज्ञान में देखे जाते हैं। अतः हम यह समझे हैं कि समाज-मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक है।

## समाज-मनोविज्ञान तथा अन्य सामाजिक विज्ञान

(*Social Psychology and Other Social Sciences*)

समाज मनोविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि पहले व्यक्तिगत और विद्या में अनेक विद्याओं का संश्लेषण रहा है। अतः इसके अनेक विद्याओं द्वारा प्राप्त होती, सामाजिक, सामान्य विषयों तथा व्यक्तियों का भी सम्बन्ध विद्याओं के अंतर्गत में होता है। इस प्रकार समाज-विद्याओं तथा समाज मनोविज्ञान में अनेक एवं सारक सम्बन्ध विद्यमान हैं। अन्य समाज विज्ञान जितने समाज-मनोविज्ञान सम्बन्ध है, इस प्रकार है—

### सामान्य मनोविज्ञान से सम्बन्ध

(*Relationship Between Social Psychology and General Psychology*)

मनोविज्ञान के मूलभूत विद्या, सामान्य मनोविज्ञान में ही निहित होती है। इन मूलभूत विद्याओं के अन्तर्गत है कि व्यक्तियों के सामान्य प्रकृति में कौन व्यवहार की प्रकृति की बात। सामान्य मनोविज्ञान व्यक्ति की क्रियाओं एवं व्यवहार का वैज्ञानिक विद्या है। इसका सामान्य विषय व्यक्ति के सामाजिक जीवन और

आसुर के नियम में ऐसे सामान्य नियमों का प्रतिपादन है जो सामाजिक, प्राकृतिक और विज्ञान-जीम हैं।

दूसरी ओर समाज-संशोधन व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार एवं क्रियाओं का अध्ययन करता है। इस दृष्टि के समाज-संशोधन का अध्ययन निम्न सामान्य संशोधन की अभिलाषा की विधि एवं प्रणाली है, क्योंकि सामान्य संशोधन आसुर के सामाजिक पक्ष पर अधिक ध्यान नहीं देता। किन्तु यहाँ हम विज्ञान के कारण यह नहीं कह सकते हैं कि दोनों एक दूसरे के सर्वथा विपरीत हैं। किन्तु हमें यह ध्यान देने में इन दोनों के अधिक एवं सामान्य सम्बन्धों का ध्यान देना है—

(1) समाज-संशोधन तथा सामान्य संशोधन—दोनों ही विज्ञान विज्ञान हैं और वैज्ञानिक हमें एक दूसरे के विभिन्न रूपों की विधियों का उपयोग करते हैं।

(2) समाज-संशोधन का दृष्टि कोण व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार के सम्बन्ध सामाजिक नियमों का प्रतिपादन है।

सामान्य संशोधन का दृष्टि कोण भी व्यक्ति के व्यवहार के सम्बन्ध में सामाजिक नियमों का प्रतिपादन है। समाज-संशोधन की प्रमुख परम्पराएँ—वैज्ञानिक-प्रयोगशालात्मक, सामाजिक-व्यक्तिगत, एवं सामाजिक-व्यक्तिगत-व्यक्तिगत सामान्य संशोधन के सम्बन्ध हैं। समाज-संशोधन में इन प्रणाली और इनके सम्बन्ध प्रणाली और नियमों का व्यवहार प्रयोग करने और वे निम्न हैं। इस प्रकार सामान्य संशोधन की इन दोनों परम्पराओं की सम्बन्ध, प्रणाली तथा नियम प्रणाली एक ही चीज हैं। इन दोनों की प्रणाली में एक ही विधि-वैज्ञानिक के बहुत बड़े और प्राथमिक व्यक्तिगत, सामाजिक व्यवहार के प्रणाली का प्रतिपादन है और व्यक्तिगत प्रणाली एक बहुत बड़ा प्रणाली है, जिसका कोई सामाजिक व्यक्तिगत नहीं है।

["The social human mind is the product of moulding influences exerted by social environment, and so, "the strictly individual human mind is an abstraction merely and has no real existence."]<sup>1</sup>

(3) समाज-संशोधन तथा सामान्य संशोधन—दोनों ही प्रमुख सामाजिक और सामाजिक के व्यवहार एवं क्रियाओं का अध्ययन करने हैं। यह भी हमें सर्वप्रथम ध्यान है कि व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन व्यक्ति की प्रणाली में प्रथम करते सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि व्यवहार प्रणाली में नहीं बल्कि अन्य व्यक्तियों का

1. Mc Dougall.—An Introduction to Social Psychology.





संविदां इन में सम्मिलित हैं । ये एक दूसरे के बीच बँधे हुए सम्बन्ध हैं जिस तरह व्यक्ति और समाज । इनके सहारे समाज के आधार पर ही निर्माण में बहुत है । कि अनुसार हमें वे दोनों समान नहीं हैं । समाजशास्त्री सामाजिक व्यवस्था की कार्यरत की और समाज-सर्वाधिकार के विषयों के आधार पर करते हैं । इसी अतिरिक्त यह दोनों विज्ञान समाज विज्ञान के सम्बन्धित होते हैं । अतः इसी अर्थ में समाज ही समाजशास्त्रिक है । समाज व्यवस्था के सामाजिक पक्ष की समझने में व्यक्ति की शक्ति एवं विकास, संरचना, समुदाय संरचना और संरचना का ज्ञान अतिवश्यक है, क्योंकि व्यक्ति समाज का अधिकतम अंग है और समाज का निर्माण व्यक्तियों द्वारा ही होता है, अतः समाजशास्त्री की समाज के अध्ययन के लिये व्यक्तियों की मनो-वैज्ञानिक विशेषताओं पर ध्यान देते हैं । समाजों की एक प्राथमिकता की वजह से ही, सामान्य तथा सामाजिक में बहुत है कि, "जैसे सामाजिक व्यवस्थाएँ, संरचना और संरचनाएँ के लिये हैं, वैसे ही समाज-सर्वाधिकार समाज-शास्त्र और समाजशास्त्र के लिये हैं ।" (*Social Psychology is to Sociology and Psychology, as Microcosmology is to Biology and Chemistry* )

समाज-समाजशास्त्री के लिये हमें भी एक चीज़ में विशेषीकृत कुछ ध्यान देते हैं :-

(1) समाज-सर्वाधिकार व्यक्ति के सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन करता है जब कि समाजशास्त्र समुदाय समाज का अध्ययन करता है । इसी समाज की शक्ति, विकास एवं संरचना का अध्ययन करते हैं । अतः दोनों के भूमिकाएँ में अलग हैं ।

(2) समाज-सर्वाधिकार में समाजशास्त्र का क्षेत्र अधिक अध्ययन एवं विस्तृत है । इसी अतिरिक्त, दोनों के सामाजिक विषय (*Sociological studies* ) में भी समान अलग है । समाज-सर्वाधिकार का विषय व्यक्ति तथा समाजशास्त्र का विषय समाज का समुदाय है ।

(3) समाजशास्त्र, सामाजिक व्यवस्था के बहुत पक्ष का अध्ययन करता है किन्तु समाज-सर्वाधिकार, बहुत समाजों द्वारा सामान्य सामाजिक पक्ष, समाज-व्यक्ति के विकास, शक्ति एवं व्यक्तिगत व्यक्ति का अध्ययन करते हैं ।

इन तीनों समाज विज्ञानों के अन्तर्गत पर अलग-अलग रूप में समझने में बहुत है कि, "जैसे बहुत समाजशास्त्र सामाजिक प्रक्रियाओं की व्याख्या करता है, वैसे ही समाजशास्त्र सामाजिक प्रक्रियाओं का ।" (*"As Psychology explains individual processes, Sociology explains social processes"* )

## समाजशास्त्र में समाजशास्त्र

(*Relationship with Classical Anthropology* )

मानव शास्त्र संरचना का विशेषाधिकार अध्ययन करता है । समाज-सर्वा-

वैज्ञानिक व्यक्ति के अध्ययन में सांख्यिकिक पुनरुक्ति का काम बड़ा करने का प्रयत्न करते हैं। अतः इन दो विज्ञानों में विभेद एवं साम्यता समझा जाने जाती है। किन्तु इनमें विभेद प्रमुख भी है :—

(1) उद्देश्य में अन्तर—सामाजिक मनोविज्ञान का मूल उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था के व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन है। दूसरी ओर मानवशास्त्र का मूल उद्देश्य व्यक्तियों एवं संस्कृतियों के उत्पत्ति तथा प्रवृत्ति का अध्ययन है।

(2) क्षेत्र में अन्तर—सामाजिक मनोविज्ञान की संरचनाओं तथा क्षेत्र मानवशास्त्र के समानाधिकार हैं। सामाजिक मनोविज्ञान की मूल संरचना व्यक्तियों की व्यवहारिता तथा मानवशास्त्र की मूल संरचना संस्कृति का अध्ययन है।

(3) अध्ययन विधि में अन्तर—सामाजिक मनोविज्ञान में प्रयोग तथा निरीक्षण की विधियाँ प्रयुक्त होती हैं, जबकि मानवशास्त्र में दस्तावेजिक (Historical) विधि का उपयोग करते हैं।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए दोनों के विभेद स्पष्ट के आधार पर बड़े सम्बन्ध माने जाते हैं—

सांख्यिक सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्ति के सांख्यिक तथा सांस्कृतिक पक्ष की दृष्टि से बहुत विचार है कि दोनों विज्ञान दुनियाँ की सम्पत्ती विद्वानों के होते हुए भी अपने अध्ययन विषय में अपने सामान्य तरीके होते हैं कि उन्हें एक-दूसरे से अलग हो जाता है।

कहा जाता है कि “व्यक्ति अपनी संस्कृति का रहस्य है” (Individual is the mirror of his social existence) व्यक्तियों के सांस्कृतिक उत्पत्ति की जाने बिना किसी मनोवैज्ञानिक विज्ञानों विवेचनाओं और व्यवहार की सभी प्रकार सभी प्रश्नों का उत्तर। सांस्कृतिक उत्पत्ति को सांख्यिक जानकारी के बिना मानवशास्त्र व्यक्तियों का अध्ययन भी करता है और सामाजिक मनोवैज्ञानिक इन दोनों का अत्यन्त उपयोग व्यक्ति के व्यवहार की समझने में करते हैं। इस प्रकार यह दोनों अन्तर्-व्यक्तिगत होती हैं। जहाँ सामाजिक मनोविज्ञान में सामाजिक-व्यवहार के बहुत अध्ययन में व्यक्ति अपने बहुत ही विविध संस्कृति का पूर्ण रूप मानवशास्त्र समझा जा रहा है। विभिन्न-विभिन्न संस्कृतियों में एक ही व्यवहार किन्तु-किन्तु बातों का परि-पात्रक है जैसे भाषणों की उच्चारण में हमारे गूँह तथा लोंबी खुली रह जाती है किन्तु व्यक्तियों की व्यवहार बहुत का जाती है। इनमें विभेद सम्बन्ध स्पष्ट होते हैं—

(1) मानवशास्त्र तथा व्यक्तिगत सामाजिक सामाजिक मनोविज्ञान की अवधारणाओं के अध्ययन में उपयोगी सिद्ध हो चुकी है—जैसे सामाजिक और

( Margaret Mead ), एवं बेनेडिक्ट ( Ruth Benedict ), रैल्फ लिन्सन ( Ralph Linton ), मैलिन्बर्ग ( Malinowski ) जदि के विभिन्न समष्टि एवं विभिन्न संस्कृतियों के अध्ययनों द्वारा जो परिणाम प्राप्त किये हैं वे समाज-व्यवस्था में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुये हैं । परन्तु, व्यक्ति के व्यवहार का सामूहिक जीवन के जीवन के जीवन में कौन प्रकार सम्बन्ध रहित है ।

(2) सामलक्षण के जो व्यक्ति-संस्कृतिक अध्ययनों के अध्ययन में व्यक्ति-व्यवस्था के जो व्यक्ति का अध्ययन किया है । व्यवस्था के जिन जोड़े ( Lovers ) के जीवन के ( Primitive religions ) समष्टि-अध्ययनों में व्यक्ति-व्यवस्था के व्यक्ति एवं व्यक्ति का अध्ययन किया है ।

संस्कृति के मूल्य पर अत्यन्त बारीकी से देखा है, कभी तथा अनुमान के द्वारा है कि "समाज-व्यवस्था में समाज-व्यवस्था के जो व्यक्ति का मूल्य तथा व्यवस्था के जो व्यक्ति का मूल्य के जो व्यक्ति के जो व्यक्ति है, जिसमें वह व्यक्ति है" "All the experimental work in Social Psychology has value and definite meaning, only in relation to the particular culture in which the investigation was carried on" ) एवं समष्टि की व्यवस्था की देखने के रैल्फ लिन्सन के द्वारा है कि "व्यक्ति, व्यवस्था की रीति तथा है, समाज, समाज-व्यवस्था की तथा व्यवस्था, व्यवस्था-व्यवस्था, जो । अब वह व्यवस्था का मूल्य है कि व्यक्ति, समाज तथा व्यवस्था और व्यक्ति का: विचारों में अपने विचार-व्यवस्था है कि जो की व्यवस्था-व्यवस्था केवल किसी एक क्षेत्र में विचार-व्यवस्था की व्यवस्था के जो व्यक्ति का मूल्य है और जो व्यवस्था में व्यवस्था का मूल्य है । जहाँ व्यक्ति के जो व्यक्ति का मूल्य है एक ऐसे विचार का मूल्य है जिसमें व्यक्ति-व्यवस्था, समाज-व्यवस्था तथा व्यवस्था के जो व्यक्ति का अध्ययन किया है" ( The individual has been assigned to Psychology, Society to Sociology and culture to Cultural Anthropology ..... It is now becoming apparent that the integration between the individual, Society and Culture is so close and their interrelations so continuous that the investigator who tries to work with any one of them without reference to the other two, soon comes to a dead end.....the next few years will witness the emergence of a science of human behaviour which will synthesize the findings of Psychology, Sociology and Anthropology—Ralph Linton).



## अध्याय 2

# समाज मनोविज्ञान की अध्ययन विधियाँ

( Methods of Study of Social Psychology )

कहात है कि पद्यक की बातों के सात्वन्त हो गये होंगे, (1) समाज-मनोविज्ञान वास्तव में एक सामूहिक विज्ञान है, (2) इसके विषय में और अधिक सामाजिक उपयोगी होना । इस बातों के सम्बन्ध में हम यह कह सकते हैं कि सामाजिक मनो-विज्ञान विषयक ज्ञान में और कुछ और ही बातें हैं यह ज्ञान सम्बन्ध है उस विधिओं के विषयों द्वारा समाज-मनोविज्ञानिक ज्ञान के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करने हैं । कारण में समाज मनोविज्ञान की समस्याओं का अध्ययन सामाजिक विधिओं—जैसे कल्पना, कल्प, विचार, अनुमान तथा मनोवैज्ञानिक विचारों के द्वारा किया जाता है । किन्तु और-और मनोविज्ञान तथा समाज मनोविज्ञान के विचारों के साथ-साथ वैज्ञानिक एवं सामाजिक विधिओं का उपयोग ज्ञान के सामाजिक व्यवहार के अध्ययन में किया जाने लगा । अब समाज-मनोविज्ञान वास्तव के सामाजिक व्यवहार के विचारों में परिवर्तन का सुझाव करने लगे हैं । समाज-मनोवैज्ञानिकों के सामाजिक व्यवहार का ज्ञान कर उनके कार्यों की वैज्ञानिक रीति के लाने का प्रयास करते हैं । उनके बाद उनके सम्बन्ध का ज्ञान बहुत मात्रा का ज्ञान हुआ है । समाज-मनोविज्ञान की सम्बन्धों हेतु, ऐसे प्रयोगों का ज्ञान प्राप्त करने के लिये, वैज्ञानिक विधि का ज्ञान अपेक्षित है । सामाजिक व्यवहार के सम्बन्ध परिवर्तनशील के वैज्ञानिक सुझावों में बहुत विधिओं में अनेक परिवर्तनों लिये हुए हैं, जिनके अध्ययनकर्ता का प्रयत्न होता है कि अध्ययन है । अनेक वर्षों के समाज मनोवैज्ञानिक का कार्य एक सुझाव के विचारों हुआ है । जिस तरह किछी पद्यक के कार्यों का ज्ञान करने के सुझाव एवं व्यवहार के विषय में एक विज्ञान निमित्त करता है, और लगे लगे समाज-मनोविज्ञान, सामाजिक व्यवहार के विषय में परिवर्तन निमित्त करता है, फिर यह ज्ञान प्रयोग की विधिओं में सामाजिक व्यवहार का विचारों करता है और ऐसी सुझावों का प्रयोग की प्रयत्न करता है जो कि लगे लगे परिवर्तन की लक्ष्य लिये के पर प्रयोजित करता है या सम्बन्ध । जिस तरह सुझाव व्यवहारों एक सुझाव की अनेक विधिओं का अनुसरण करता है और लगे ही समाज मनोवैज्ञानिक अनेक विधिओं द्वारा

...the same time it is possible to see that the

(ii) व्यवहार का वास्तुनिष्ठ निरीक्षण—वेला के लिए यह व्यवहार का वास्तुनिष्ठ निरीक्षण करना आवश्यक है, जिसके बिना यह संभव नहीं है। वेला मापन से पूर्व निम्नलिखित चीजों के वास्तुनिष्ठ निरीक्षणों के व्यवहार का निरीक्षण करना है। यह आवश्यक जानकारी का उपयोग भी वेला में करता है। वेला एवं व्यवहार का उपयोग करने वाले व्यक्तियों को बताया हो जाता है।

(10) व्यवहार की संविदा करना—ऐसा कि जिसे बहुत व्यवहार का विशेष महत्त्व है वही वह भी समझता है कि व्यवहार की संविदा पूर्णतः संविदा सिद्ध है। कभी कभी ऐसा नहीं होता व्यवहार का संविदा करना है, कभी व्यवहारों द्वारा करना है, और कभी ऐसी-वैसीर का पूर्ण संविदा द्वारा व्यवहार संविदा की व्यवस्था करना है। इस कार्य में पूर्ण व्यवस्था की जाती है ताकि कोई व्यवहारों का या कार्य करने न पड़े।

(18) विपरीत—इसके बाद जेलम विपरीत लानों का विशेषण आता है। इसके लिये लानों को खोल देना पड़ेगा। लेकिन लानों को खोलने में विशेषज्ञता चाहिए। और फिर सार्वजनिक स्थिति द्वारा जनता विशेषण दिया जाता है। यदि लानों का खोलने में विशेषज्ञता खलल नहीं होता, तो विपरीत लानों का अर्थहीन विशेषण दिया जाता है। इस लानों में जनता के लानों का अर्थहीन विशेषण होता है।

(19) **सहायता**—हमों के विद्यार्थियों के साथ उनकी भावना की जाती है। इस कार्य में समाज-सर्वोपयोग के अत्यन्त विद्यार्थियों की सहायता की जाती है, जिसके विद्यार्थियों हमों का सम्पर्क या सम्पर्क होता है। इस प्रकार अनेक अनेक मामलों में हम हमों की सहायता और सम्पर्ककर्तृताओं द्वारा आज हमों के करता है। आज हमों के अनेक विद्यार्थियों का यह भी अनेक अनेक काम है।

(५) सामाजिकरण—विद्ये की आवश्यकता के संदर्भ में जनशिक्षण का अंग बन गई निम्न बात है। संस्कृत जनशिक्षण के दृष्टि से दूर दक्षिण की आवश्यकता बढ़ने से और उन्हीं परिस्थितियों के कारण यह सामाजिकरण विधि आई है। क्योंकि इस बात की पूर्वापेक्षा है कि उच्च शिक्षण विधि माना है संस्कृत जनशिक्षण पर लागू हो सकती है। जनशिक्षण के माध्यम के विषय में सामान्य विज्ञान विभाजन विधि आई है। इस कार्य में लोकशिक्षण विधियों का उपयोग करने है।

संस्कृत-संज्ञा

### Types of Government

सौभाग्य सदैव आपको के हाथों में रहे, सभी प्रमुख विधायाधिकारी हैं—

(1) अनियंत्रित या स्वाभाविक प्रदूषण (Uncontrolled or Natural)

Characterisation) — यह सबसे बड़ा दोष है, जिससे जीवन की वास्तविक परि-  
स्थितियों में व्यवहार्यता निर्धारण करते तथा मानवजी की दुरुस्त चोट करते हैं।  
केन्द्रीय दृष्टि के अन्तर्गत की सुझाव की नींव को निर्धारण प्राप्त नहीं है। एक  
प्रकार के जीवन में समाजिक या वास्तविक समस्याओं में व्यवहार का निर्धारण  
करते हैं। अतः व्यवहार में समाजिकता का सम्बन्ध रहता है। जीवन व्यवहार  
का निर्धारण निर्धारण का अन्तर्गत नहीं करता। एकीकृत दृष्टि समाजिक या  
आर्थिक जीवन की करते हैं। सामाजिक व्यवहार के अन्तर्गत में एकता प्राप्त  
अनुभवों होता है। इसका उपयोग निर्धारण के अन्तर्गत करते हैं यह व्यवहार  
इसका के अन्तर्गत में समाजिकता या समाजिकताओं का निर्धारण करता होता है।  
यह व्यवहार की यह विधि अनुभव होती है—यह व्यवहार देती होती है कि एकता  
व्यवहार किसी सामाजिक विधि द्वारा संभव नहीं होता। इसमें व्यवहार की  
कोई सुविधाता व्यवस्था नहीं होती, जिसका अन्तर्गत नहीं व्यवहार होते हैं।  
अतः नहीं वास्तव व्यवहार व्यवस्था ही जाता है, इसका अन्तर्गत कर लेते हैं,  
अन्तर्गत की नींव कर लेते हैं। अनुभव संभव पर वेला निर्धारित नहीं का  
निर्धारण एवं व्यवस्था करते सामाजिकता करता है। यह विधि में अन्तर्गत  
सुविधाता तथा जीवन देती होती है।

सुझाव—

(1) यह व्यवहार कार्य एवं सुझाव विधि है। इसके द्वारा किसी की व्यवहार या  
अन्तर्गत में किसी सुविधाता व्यवस्था के वास्तविक व्यवहार का निर्धारण किया जा  
सकता है। यह एक विधि व्यवहार है की अन्तर्गत विधियों में व्यवस्था नहीं है।

(2) अन्तर्गत अन्तर्गत के सामाजिक व्यवहार व्यवस्था व्यवस्था अन्तर्गत द्वारा  
संभव नहीं होता, अन्तर्गत अन्तर्गत एकता व्यवस्था किया जाता है कि नींव या सुझाव  
के अन्तर्गत में यह विधि निर्धारण व्यवस्था है।

(3) व्यवहार की समाजिकता यह विधि द्वारा व्यवस्था में व्यवस्था नहीं  
होती, यह व्यवस्था एक विधि सुझाव है। निर्धारण के कारण अन्तर्गत या अन्तर्गत विधियों में  
व्यवहार की सुझाव कर जाती है। निर्धारण या अन्तर्गत के कारण इसमें समाजिकता  
नहीं रहती है।

समाधान—

(1) यह विधि अन्तर्गत एवं समाजिक है। इसके द्वारा अन्तर्गत अन्तर्गत के  
किसी विधि एवं व्यवस्था अन्तर्गत व्यवस्था कर नहीं नहीं रहती। अन्तर्गत विधियों का  
निर्धारण का समाधान संभव नहीं है।

(2) अन्तर्गत व्यवस्था का अन्तर्गत व्यवस्था अन्तर्गत के कारण की अन्तर्गत अन्तर्गत की

गुणगोचरों का जारी है। अतः इसका एक हीदृश्या ज्ञात सम्भव नहीं है जिसके कारण परिणामों की तुलना संभव हो जाती है।

(11) प्रत्येक के रूप का प्रभाव, उसके अभिव्यक्तिपूर्ण तथा वास्तविक परिणामों की तुलना कर देती है। यदि प्रत्येक के अन्तर्गत की जाती जायगी और अभिव्यक्तिपूर्ण के अनुसार देखते हैं, किन्तु कि किसी भी ने कहा है। एक ही बात। एक ही विभिन्न व्यक्ति विभिन्न रूपों में देखते हैं।

का की गई जायगी नहीं, एक हीदृश्या देखते नहीं देखते।

(2) क्रमिक प्रयोग (Experimental Observation) — इसे क्रमिक प्रयोग के अतिरिक्त विभिन्न प्रयोग, और अनुसंधानात्मक विधि भी कहते हैं। प्रयोगात्मक या सांख्यिक प्रयोग की अभिव्यक्तिपूर्ण के निष्कर्ष देते हैं कि विभिन्न विभिन्न हैं। इसके अन्तर्गत प्रयोग एवं अभिव्यक्तिपूर्ण के अन्तर्गत के अन्तर्गत अनुसंधान का प्रयोग किया जाता है। एक विधि में विभिन्न प्रयोग, अनुसंधान अनुसंधान, अनुसंधान और प्रयोग प्रयोग सभी की अभिव्यक्तिपूर्ण एवं विभिन्न प्रयोग के अन्तर्गत किन्ते जाती हैं। एक अनुसंधान क्रमिक प्रयोग में किसी अनुसंधानात्मक प्रयोग के अन्तर्गत देते हैं, प्रयोगात्मक या वे सांख्यिक अनुसंधानों की अनुसंधान में, एक अभिव्यक्तिपूर्ण प्रयोग विभिन्न विभिन्न विभिन्न में अभिव्यक्तिपूर्ण के अनुसंधान का अनुसंधान करता है। एक अनुसंधान विधि में प्रयोग सभी का अनुसंधान नहीं करता। सभी में अभिव्यक्तिपूर्ण अनुसंधान का वे किसी प्रयोग प्रयोग द्वारा करता है, किन्तु अनुसंधान—कहाँ वह प्रयोग के लिए कुछ तक प्रयोग है कि अनुसंधान प्रयोगों में प्रयोग की अनुसंधान प्रयोग होती है, अनुसंधान प्रयोग में सभी अभिव्यक्तिपूर्ण के अनुसंधान कीन्ते की अनुसंधान प्रयोग होती है। अनुसंधान है कि प्रयोग अपने वाले अनुसंधानों की अनुसंधान का अनुसंधान नहीं किया जा सकता। इसी विधि में अनुसंधान क्रमिक प्रयोग या अनुसंधानात्मक प्रयोग (Comparational Observation) का अनुसंधान करता है। एक अनुसंधान में एक बात का अनुसंधान देते हैं कि क्या वे वे अभिव्यक्तिपूर्ण अनुसंधान है। एक अनुसंधान की तुलना में बहुत ही प्रयोग प्रयोग करते हैं की काफी निश्चित एवं अनुसंधानात्मक होता है। यदि एक में अभिव्यक्तिपूर्ण के प्रयोग में वे अनुसंधान अभिव्यक्तिपूर्ण के अन्तर्गत किन्ते हैं, किन्तु प्रयोगों में अनुसंधान का अनुसंधान प्रयोग है। प्रयोग विधि के अन्तर्गत, इसमें अनुसंधान का अनुसंधान प्रयोग प्रयोग देते हैं एक अनुसंधान का अनुसंधान का अनुसंधान प्रयोग का कोई अनुसंधान नहीं करते। Rather, the degree to which the correlation is experimental method, no attempt is made to vary one of the factors in a systematic manner in order to observe its effect on the other. Rather, natu-

fully occurring reactions in both are observed to determine whether they tend to occur together in some fashion."

इसमें दोनों कार्यों में व्यायामिक रूप से प्रतिष्ठ होने वाले अवधार के परि-  
णामों का अध्ययन करने हैं और यह निश्चित करते हैं कि क्या दोनों प्राय-तः  
सहित होते हैं ? इसमें अध्ययन की समस्या का एक विश्वव्यापी स्तर का होता  
है—क्या 'अ' और 'ब' आपस में सम्बन्ध है ? यदि हाँ तो कैसे या किस माध्यम से ?

सम्बन्ध में इस विधि के पहले व्यक्ति के अध्ययन वाले व्यायामिक अवधारों का  
अध्ययन सामान्य हो गया है । इसमें निम्नलिखित विवेचनाओं का होना अनिवार्य है—

(i) प्रेरणक की उत्पत्ति अभिवृत्ति—प्रेरितव्य के सभी पहलु का अध्ययन  
होना होना करना अनिवार्य है । इसमें प्रेरणक को अपनी निजी आवश्यकताओं और  
अभिवृत्तियों से उत्पन्न उत्पन्न अध्ययन करना होता है ।

(ii) सम्बन्धिता या विविधता ( Sympatheticism )—प्रेरक प्रेरण  
विधिगत या अनुपपन्न ( Sympatheticism ) होता है । प्रेरक एक स्वतन्त्र रूप से कार्य  
करने आवश्यक करता है । यह अपने अनुपपन्न की विविधता होता है अपने मूल रूपों  
का सम्बन्ध कर के अध्ययन करने का प्रयोग करता है ।

(iii) सम्बन्ध ( Sympatheticism )—सम्बन्ध सम्बन्धित अध्ययन की एक  
अभिवृत्ति सम्बन्धिता है । प्रेरक अभिवृत्ति यह है कि प्रेरक विविधता प्रेरण के  
द्वारा प्राप्त करने की समस्या पर विचार नहीं करता, बल्कि विविधता प्रेरितव्यों  
में अपने अध्ययन की सुदृढ़ता तथा अन्य वैज्ञानिक प्रेरणों से प्रेरण करने प्रेरितव्यों  
की समस्या की सीमा करता है ।

सुविधाएँ :—विविधता प्रेरण में अनेक सुविधाएँ हैं :

(i) यह विधि एक वैज्ञानिक विधि है । इसे अनिवार्य व्यायामिक-वैज्ञानिक  
विज्ञान का स्तर प्राप्त कर रहा है । इसके द्वारा व केवल व्यायामिक अवधार बल्कि  
वैज्ञानिक अनुपपत्तियों का भी अभिप्राय प्राप्त होता है ।

(ii) इसका अनुपपन्न वैज्ञानिक जीवन के अनेक परिप्रेक्ष्यों में अवधार के  
अध्ययन से होता है । क्या यह विधि द्वारा नहीं अनुपपन्न प्रेरक व्यायाम प्रेरण  
प्रकार विधि का समर्थन है, जो अनुपपन्न की होती है और प्रेरण की । यह विधि द्वारा  
अनेक ऐसे विचारों का अध्ययन भी करता है, जिसका वैज्ञानिक अध्ययन, प्रत्य-  
क्षिक अभिवृत्तियों का वैज्ञानिक अध्ययन के कारण सम्भव नहीं होता ।

(iii) यह विधि के उपयोग के अध्ययन सम्बन्ध-वैज्ञानिकता का क्षेत्र अभिप्राय  
प्राप्त हो गया है, क्योंकि इसके द्वारा अनेक ऐसी समस्याओं का अध्ययन प्रेरण-



विश्व परिवर्तितियों में कम सम्मेलन हो गया है जिसका सम्फल अन्य विधियों द्वारा पहुँचे तुल्य है ।

कठिनाइयाँ—

(1) इस विधि की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि परिणाम अनिश्चित होते हैं । दूसरा कठिनाई यह है कि इसके द्वारा कार्य-कारण ( Cause effect ) संबंधों का निर्धारण नहीं हो जाता । एक परिणाम में परिणामों के दूसरे परिणामों में भी परिवर्तन आते हैं, इस बात का सम्मेलन नहीं होता कि इनमें—कारण सम्बन्ध ( Casual link ) है, क्योंकि इसका कोई प्रमाण नहीं होता कि द्वितीय परिवर्तनों में परिवर्तन प्रथम परिणामों में परिणामों के कारण है या इसके विपरीत प्रथम पर में परिवर्तन द्वितीय पर के परिणामों के कारण हो रहा है ।

(2) प्रेरण प्राप्त करने के व्यवहार की आवृत्ति अपने अनुसार, सामनाशी, अभिवृत्तियों, स्वयं-सम्बन्ध तथा मन के व्यवहारों के आधार पर आते हैं । वे नियंत्रित होकर प्रेरण नहीं करते, बल्कि परिणामों के योगदान होने की सम्भावना पहुँची है ।

(3) प्रेरक, नियंत्रित परिवर्तितियों में, प्रेरण उसी समय कर सकता है जब वह इस कार्य में सम्मेलन पूर्व रहा हो ।

एक साधारण कठिनाइयों के होने होने की सम्भावना-मनोविज्ञान में प्रेरण का बहुत महत्व है, क्योंकि इसकी कुछ सम्भावनाएँ होती हैं जिनका सम्फल केवल प्रेरण द्वारा ही सम्भव है जैसे बीह, बीहा समुद्र, कुछ तथा क्रान्ति आदि । इसलिये कठिनाइयों के होने हुए की नियंत्रित प्रेरण की एक महत्वपूर्ण विधि समझा जाता है ।

(3) सहभागी प्रेक्षण ( Participant Observation )—परीक्षणक अथवा विभागी ( Sympathetic observationist ) व्यक्ति की सक्रिय भावना होने, इस पर मत होते हैं कि सहभागी प्रेक्षण में, व्यक्ति का सम्बन्ध एक द्विभासीय स्तर के रूप में किया जाता है । यह व्यक्ति के के प्रायोगिक विधि पर सहभागी प्रेक्षण की परीक्षा करते हैं । उनके अनुसार सहभागी प्रेक्षण का उपयोग उन सभी सामाजिक व्यवहारों के सम्बन्ध में किया जा सकता है जिनमें प्रायोगिक विधि या अन्य परम्परागत विधियाँ सम्भव नहीं होती । सहभागी प्रेक्षण विधि द्वारा सम्बन्ध में प्रेरक, जिस समुद्र का सम्बन्ध करता है, वह समुद्र में कुछ समय पहुँचने के सम्बन्ध में होता है, और सुनिश्चित होता है । वह उस समुद्र में निवास करने सम्बन्ध एक सम्बन्ध का या स्तर प्राप्त कर लेता है । वह उस समुद्र के सदस्यों के व्यवहार

का प्रयोग उनी बहुतों के एक सक्रिय सदस्य के रूप में करता है। इस प्रकार प्रत्येक उस बहुतों की विचारों, तथा सदस्यों के जीवन का सक्रिय अनुभवी बन जाता है। इस विधि के उपयोग के अवसरों के सामाजिक व्यवहार के कारण कुछ बहुतों का सम्बन्ध ही बनता है। प्रत्येक युक्त-विचार सम्बन्ध बनने के कारण व्यक्ति के व्यवहार के निम्न वही एवं कुछ बहुतों की बात बनता है, जो अन्य विधियों में सम्भव नहीं है। यह इन लोगों को यह बहुतों के सम्बन्ध की प्रतिक्रिया से बात बनता है कि प्रत्येक के रूप में। इसके प्रयोग करने में व्यक्ति सम्भव ही नहीं हो पाते, इसके व्यवहार की बहुतों की स्वाभाविकता भी नहीं रहती है। बात: यह विधि छोटे बहुतों के अध्ययन में अधिक उपयोगी नहीं जाती है। व्यवहार की स्वाभाविकता वही रहने के कारण विधि की सुझाव भी नहीं रहती है। बात: यह विधि समाज-सर्वविज्ञान में विशेष महत्व रखती है।

किन्तु इस सामान्य विधि में कुछ कमियाँ भी आती हैं। सबसे प्रमुख कमियाँ यह हैं कि बहुतों में रहने और युक्त-विचार बनने के कारण प्रत्येक की बहुतों के सामाजिक सम्बन्ध ही बनता है और यह सम्बन्ध में अपने ही बहुतों का सम्बन्ध ही सम्बन्ध बनता है। इस कारण यह बहुतों की सम्बन्धों और व्यक्तिगतों की सम्बन्ध बनता है। परिणाम यह होता है कि प्रत्येक प्रत्येक युक्त ही बनता है। इस प्रक्रिया की दूर करने के लिए प्रत्येक की व्यक्तिगत विधि का सम्बन्ध है।

इस विधि की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि सबसे अधिक की एक सक्रिय प्रयोग करने में ही सभी अपनी विचारों एवं व्यवहार का सम्बन्ध बनता है। व्यक्ति की प्रत्येक सम्बन्ध तथा व्यक्ति सम्बन्ध के व्यवहार करने वाला भी है और अपनी विचारों के लिए सम्बन्ध है। सामाजिक विधि में यह विधि इस विशेषता के कारण भी विधि है। किन्तु की विचारण सामाजिक विधि में होता है, प्रत्येक इस विधि में सम्बन्ध होने के कारण यह सुझाव भी अपने सम्बन्ध नहीं होती जो प्रयोग में होती है।

## प्रयोग-विधि

( Experimental Method )

इस विधि का प्रयोग प्राकृतिक विचारों में हुआ। सन् 1920 के बाद छोटी-छोटी समाज-सर्वविज्ञान में भी सामाजिक विधि का उपयोग प्रारम्भ हुआ। यह सर्वविज्ञान की सामाजिक वैज्ञानिक विधि है, जिसके द्वारा कार्य-कारण सम्बन्ध ( Cause-effect relationship ) का सम्बन्ध सम्भव है। यह विधि इस दृष्टि से विशिष्ट प्रयोग या अनुसंधानात्मक विधि के विधि है, किन्तु अन्य बातों में अधिक विधि रहती है। कार्य-कारण सम्बन्धों की जीवन के लिए प्रयोगों की इन परिणामों

पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि क्या व्यवस्था यह करना चाहता है। तथा परिवर्तनों की प्रभावित करने वाले अन्य अवस्थित परिवर्तनों का विचारण भी आवश्यक है। इस प्रकार प्रयोग यह निश्चित है कि हमें कार्य-कारण सम्बन्धों के प्रत्यक्ष के बिना आवश्यक निष्कर्ष निकालने वाले हैं।

जैसा कि Wason और Cooper ( 1979 ) ने कहा है, (The method, that, is designed to allow the necessary control so that cause and effect relationships can be ascertained, is the experiment.)

प्रयोगात्मक विधि में नियंत्रित परिस्थिति में व्यक्ति के व्यवहार या व्यवस्था प्रभावित करते हैं। इस तरह पूर्वनिश्चित एवं नियंत्रित परिस्थिति में बिना पद निर्धारण की ही प्रयोग करते हैं। निर्धारण में परिचित होने वाली परिस्थितियों की निर्धारित नहीं किया जा सकता, बल्कि प्रयोगात्मक विधि में परिचित होने वाली परिस्थितियों की प्रयोगकर्ता अपने कई नियंत्रण में रखने का प्रयास करता है। छोटी बात निर्धारण की प्रयोगविधि में समय बचती है। सामाजिक व्यवस्था में प्रायोगिक विधि के कारण हम नियंत्रित परिस्थितियों के हैं किन्हीं सामाजिक व्यवस्था के अध्ययन के बिना सामाजिक अनुसंधानकर्ता अपनी दृष्टानुसार परिचर्चा कर रहे हैं। Festinger के अनुसार “प्रयोग एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें एक या अधिक परिवर्तनीय ( dependent variable ) पर एक या अधिक परिवर्तनीय के प्रभाव-प्रतिक्रिया को अध्ययन किया जाता है।”

[ ‘Experiment is a procedure in which the effect of a manipulated independent variable on a dependent variable is studied’—Festinger Research Methods in Behavioural Science.]

बीनटन के अनुसार—“प्रयोग व्यवस्था का प्रभाव होता है, जिसके द्वारा हमें के बीच कार्य-कारण सम्बन्ध प्राप्त करने के बिना ऐसी नियंत्रित स्थितियों का अध्ययन किया जाता है किन्हीं एक की प्रतिक्रिया सभी कारण नियंत्रित रहते हैं और यह कारण या ही अनुमानित कारण होता है अनुमानित प्रभाव।”

यह विधि अन्य विधियों के विपरीत है क्योंकि हमें इस प्रयोग में प्रयोगात्मक प्रभाव की पूर्ण प्रयोगात्मक में प्रभाव या प्रभावित कर सकते हैं। हमें वही पर नियंत्रण यह यह प्रभावित करते हैं कि कार्य-कारण सम्बन्धों का अध्ययन हो सके। प्रायोगिक विधि में कार्य को नियंत्रित पर और कारण को नियंत्रित पर करते हैं। इस सम्बन्धों की बीच हेतु बहुत प्रयोग में नियंत्रित या प्रायोगिक बहुत बिना होते हैं।





अनुसार को उत्पन्न करने के लिए प्रयोगशाला के पीछर कुनिम वास्तविक विधियों का निर्माण करते हैं। एड (D. E. Asch, 1956) ने एक ऐसे ही प्रयोग में समूह-समान मानक प्रभाव का अध्ययन किया। पहले व्यक्तिगत निर्णय पर समूह-समान के प्रभाव का अभ्येक्षण किया। प्रयोग में 87 प्रयोगों को रखा था। इनमें से 10 प्रयोग प्रायोगिक समूह में तथा शेष निम्नलिखित समूह में रहे। अवशिष्ट पर के रूप में समूह-समान का उपयोग किया गया जिसे निम्नलिखित समूह में समूह-समान रखा।

प्रयोगात्मक समूह को एक बर्तन के समान बर्तनद्वारा सीसीएम में रखा और प्रयोगों के समान बर्तन पर बर्तन-समान के, जिसमें बर्तन-सीसी पर 10" की समानता रखा। सीसी बर्तन की : सीसी और 8.5", 10" और 8" की सीसी समानता रखा। बर्तन बर्तन की विचार-समान : 1, 2, 3 रखा रखा था। प्रयोगों में से हर एक को यह बताया था कि सीसी सभी रखाओं 1, 2, 3, में से सीसी रखा बर्तन और की रखा के समान है। ऐसे ही प्रभाव किसे बर्तन किसे प्रयोगों में सीसी और की रखा नं० 2 की सीसी रखा के समान बताया। सीसी प्रभाव में बर्तन रखा की समानता 3" पर ही और सीसी रखाओं की 3.5", 4.5" तथा 3" प्रभाव पर रखा। फिर ही प्रभाव करते बर्तन। दूसरे प्रायोगिक विधि प्रयोगों की विचार इसके कि इस बार प्रायोगिक समूह में एक बर्तन प्रयोगों की की व्यक्ति पर रखा था। सभी प्रयोगों में समान अनुसंधान प्रभाव की बर्तन रखा सीसी 2 की सीसी रखा के समान रखा। बर्तन-सीसी बर्तन प्रयोगों की की कि यह समान सभी प्रयोगों के समान की ही प्रभाव में था बर्तन अनुसंधान सभी समान में, प्रयोगों इसके अनुसार रखा नं० 3 सीसी रखा के समान की।

ऐसा ने यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि व्यक्तिगत निर्णय, समूह निर्णय या समूह-समान में अवशिष्ट होता है। एक प्रयोग में 74% प्रयोगों में दूसरे प्रयोगों के निर्णय के प्रभाव में समान प्रभाव निर्णय किया। बर्तन समान समूह-समान में समान प्रभाव से बर्तन प्रयोगों के निर्णय का अनुसंधान करते हैं, और प्रयोगों समान में है।

प्रयोग में सभी एक प्रयोग में एक बर्तन समान में एक-एक करते बर्तन प्रयोगों की प्रभाव और प्रभाव के एक विचार किन्तु की प्रभाव समान प्रभाव की रखा के बारे में प्रभाव। प्रयोग प्रयोगों में बर्तन समान विचार प्रभाव पर रखा, की उन्हें प्रायोगिक पर में प्रभाव था और हर एक में बर्तन अनुसंधान की प्रभाव पर रखा। 87 उनके व्यक्तिगत अनुसंधान का सीसी ही था और प्रायोगिक अनुसंधान की प्रभाव ही था। बर्तन प्रयोगों में बर्तन अनुसंधान प्रभाव प्रभाव में। यह अनुसंधान समूह-समान (Group-Norm) अनुसंधान है। प्रयोग में यह निष्कर्ष प्रभाव कि व्यक्ति के



(11) प्रयोग कभी-कभी उपेक्षित हो जाते हैं और प्रयोगकर्ता की जानकारी के बिना ऐसे उलट बने लगते हैं जैसा कि प्रयोगकर्ता चाहता है। इसके साथ ही कुछ ऐसे प्रयोग भी हो सकते हैं जो पूर्ण ग्राह्यता व प्रत्यक्ष करें। सामाजिक विज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयोग का महत्व प्राप्त करना अधिकारपूर्ण होता है। सामाजिक संशोधन के प्रयोगों में यह कार्य और अधिक हो जाता है।

(12) प्रयोगात्मक विधि में परिभाषों को कार्यक क्रम के लिए परिभाषित कर दाखला करने हैं। कुछ प्रयोगात्मक यह कहते हैं कि सामाजिक विज्ञानों की संस्था के रूप में अच्छा करना उचित नहीं है।

इन परिभाषों के होते हुए भी सामाजिक संशोधन में प्रयोगात्मक नहीं ग्राह्यता प्राप्त होती है। कुछ परिभाषों को दूर करके सामग्री और संदर्भों के बीच प्रत्यक्ष प्रयोग सामाजिक संशोधन में मिले जाते हैं, और इसी कारण यह विधि सामाजिक संशोधन की सबसे अधिक उपेक्षित विधि है।

### साक्षात्कार विधि

(Interview Method)

सामाजिक सामाजिक संशोधन में व्यक्तियों की व्यवस्थितता प्राप्त करने के सम्बन्ध में साक्षात्कार विधि की काफी महत्व प्राप्त हो चुका है। इसे नियमित एवं सामाजिक व्यवस्थित के आधार पर किया गया साक्षात्कार सामाजिक संस्थाओं के संस्थापक में बहुत लोकप्रिय होता है। इस विधि में परिभाषों परीक्षण के समझ होता है, और प्रयोग के प्रयोगों के उलट होता है। परीक्षण परीक्षणों के आधार, दृष्ट-आय एवं उत्तरी भाषा के द्वारा उनके व्यवहार का सम्बन्ध करता है। किन्तु परीक्षण का व्यवस्थित एवं सुलभ होता निष्कर्ष आवश्यक है। यदि परीक्षण सुलभ होता है तो यह परीक्षणों के व्यवहार को उसके आधार, दृष्ट-आय तथा उत्तरी भाषा के द्वारा समझ होता है। इस प्रकार साक्षात्कार एक दूसरे के साक्षात्कार कर के उत्तर प्राप्त होता है। अनेक विधियों के इसी साक्षात्कार विधि द्वारा ही है—

मूवर फार्म (Luther Fay) के अनुसार—“व्यक्तिगत साक्षात्कार, जो सामग्री संशोधन की एक प्रणाली है, किसी निश्चित उद्देश्य हेतु साक्षात्कार के व्यवस्थित रूप में नहीं है।”

वी० बी० रॉय के अनुसार—“साक्षात्कार की एक व्यवस्था विधि मात्र का कहना है जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के सामाजिक जीवन में प्रत्यक्ष अपना कुछ सामाजिकता के प्रयोग करता है जो उसके लिए सामान्य एवं सुलभता प्राप्त के व्यवस्थित है।”<sup>1</sup>

1. The interview may be regarded as a systematic method by



हेडर एवं लिडमैन के अनुसार—“समाजकार के व्यवहार की स्थितियों का अधिक व्यक्तियों के बीच संवाद का एक मौखिक अनुसर होते हैं।”<sup>1</sup>

इन परिस्थितियों के समाजकार की निम्न विशेषताएँ प्रकट होती हैं—

- (i) समाजकार सामाजिक व्यवस्था के लिए छावनी एकत्र करने की एक विशिष्ट विधि है।
- (ii) यह भी या ही के अधिक व्यक्तियों का परामर्श प्राप्त करता है।
- (iii) इसमें बार-बार के जाने-बोले व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से एक दूसरे के सामने-सामने रहते हैं।
- (iv) यह अक्सर समस्याओं के समाधान की बहुत ही महत्वपूर्ण विधि है।
- (v) यह व्यक्ति के ऊपर की एवं नीचे की दोनों की जायते की बहुत ही उपयोगी विधि है।
- (vi) व्यक्ति के जीवन, कुलकाय एवं व्यक्तिगत काम की बातों की भी जायत करता है।

### सीमाएँ—

यदि अधिक स्थितियों के समाजकार बचानी बहुत ही उपयोगी है फिर भी इसमें निम्न दोष हैं—

- (1) विश्वसनीयता की कमी—कई बार ऐसा देखा जाता है कि किसी समस्या के प्रति व्यक्ति अपने-आपने के अनुभूति विवरण दे देता है जिसके कारण बात सुनवाई अनिष्ट हो जाती है।
- (2) समाजकार बचानी में प्रत्यक्ष पूर्णतः जाने-बोले के कारण बहुत ही अनिष्टता की शरीर होती है, जिसके कारण यह संशय, अनिष्टता आदि के कारण लोगों की जायते होने की बातों का सही उत्तर देने में असमर्थ हो जाता है। इस कारण समाजकार के द्वारा प्राप्त निष्कर्ष सत्य नहीं होते हैं।
- (3) संलग्न व्यक्ति—इस बचानी में अनेक प्रयोग अधिक के अधिक व्यक्तियों का प्रयोग करता है जिसके कारण व्यक्तियों की सुनवाई अधिक का जाती है और व्यवस्था में सम्मिलित सुनवाई कम।

which one person enters more or less, imaginatively into the inner life of another, who is generally a comparative stranger  
Young, P. V. Scientific Social Surveys and Research, P. 242.

1. Interview consists of dialogue or verbal responses between two persons or between several persons—Hollander and Lidman  
E. C.—Dynamic Social Research, P. 129.

## प्रश्नावली विधि

(Questionnaire Method)

प्रश्नावली पत्रों की यह सूची है जिसमें किसी समस्या के सम्बन्धित तथ्य, सीमित एवं स्पष्ट रूप में पूछे जाते हैं। इनके द्वारा विषय समुह के सम्बन्धित सूचनाएँ प्राप्त करने के बहुपक्षीय विधियाँ हैं। कठिन सामाजिक व्यवहारों के अध्ययन में यह विधि अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो चुकी है। यंत्र के अनुसार—“जिसमें सीधे सामाजिक तथ्यों के अध्ययन में सामान्य-वैज्ञानिक प्रश्नावली की प्रयुक्त कर के बहुपक्षीय स्तर के कार्य प्रयोग करते हैं।”<sup>1</sup>

पूछे एवं प्राप्त के अनुसार—“सामान्य रूप के प्रश्नावली के उत्तरों पत्रों के उत्तर प्राप्त करने की प्रक्रिया है। जिसमें एक पत्रक का प्रयोग किया जाता है जिसे प्रयोगकर्ता भेजता है।”<sup>2</sup>

बोमार्डेल के अनुसार—“प्रश्नावली विभिन्न व्यक्तियों को उत्तर देने के लिए दी गई पत्रों की एक सूची है। यह सामाजिक व्यवहारों की प्राप्त करती है जिसका सामाजिक तथा सांख्यिकीय स्वीकृत किया जा सकता है।”<sup>3</sup>

सूत्रावली के अनुसार—“प्रश्नावली सूचना के प्रश्नों का एक समुह है जिसके द्वारा विभिन्न लोग एक प्रश्नावली के सम्बन्धित अपने मौखिक व्यवहार की स्पष्ट करते हैं।”<sup>4</sup>

1. Social scientists use the questionnaire chiefly as a supplementary tool in studying measurable social phenomena.—Young, P. V. : Scientific Social Survey and Research, P. 183.

2. In general, the word questionnaire refers to a device for securing answers to questions by using a form which the respondent fills in himself. —Goode and Hart : Methods of Social Research, P. 133.

3. A questionnaire is a list of questions to a number of persons for them to answer. It secures standardized results that can be tabulated and treated statistically.

—Bogardus E. S. Sociology, P. 549.

4. Fundamentally, the questionnaire is a set of stimuli to which the literate people are exposed in order to observe their verbal behaviour under these stimuli.

—Lundberg, G. A. : Social Research, P. 183.

सूचनाएँ एवं परिणामों में से उपयोग की विधि की डिस्क विवेचना में समझ दी गई है—

- (1) किसी विशिष्ट समस्या से सम्बन्धित सूचनाएँ एकत्र करने की विधि है।
- (2) कोई भी अनुसन्धानकर्ता एक स्थान पर बैठकर ही हुए के घटानों के घोरों के विचार मान सकता है।
- (3) हमें कभी-कभी को कहीं विशिष्ट रूप में उत्तर देना होता है।
- (4) यदि अनुसन्धानकर्ता घटानों के बहुत दूर रहता है जहाँ वह निरालीन रूप से अपनी जटिलिमा व्यक्त करता है।
- (5) पहले हाथ मान सम्य बहुत ही विफलता होती है।

किस विधि में प्रयोग की "छाँ" या "कूँ" में अनुविधा काली जड़ती है ।

1000

1. क्या आप सहायता प्राप्त देखते हैं ? हाँ/नहीं
2. क्या आप और से करते हैं ? हाँ/नहीं
3. क्या आप सामाजिक समझौते पर सहमत करते हैं ? हाँ/नहीं
4. क्या आपकी समझ में सामाजिक समझौता है ? हाँ/नहीं
5. क्या आप और से को समझते हैं ? हाँ/नहीं

समाजवादी विधि के द्वारा व्यक्तिगतों तथा परिवार का मानवता है।

[illegible]

प्रधानमंत्री जीवाणु काली में विषम जाती की वट अणुन सेवा विज्ञान आश्रम है—

- (ii) बच्चों का श्रम होना—बच्चों का श्रम क्या फल देता है ?

कविता काहे आर्यों के दुर्लभता के प्रतीक भी कविता काय ही जाती है ।

- (14) **विशेष सुसज्जता**—इसकी का विशेष गुण होता एक आवश्यक गुण है। इसी में सज्जता होती उसकी की अधिकतम मात्रा चाहिए जिसका काल देने में सब की विश्वविद्यालय में हो।

[illegible]

## समाजमितीय (Sociometry)

समाजमितीय एक नई वैज्ञानिक है, जिसका सामाजिक संवेदनिकता में काफी उपयोग हो रहा है। पहले द्वारा किसी समूह में निम्न सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन होता है। किसी समूह की संरचना, समूह की संरचना का रूप, निम्न व्यक्ति का रूप पहले द्वारा अध्ययन होता है। समूह संरचना के अध्ययन इस विधि के द्वारा समूह में सदस्यों के स्वयं तथा व्यक्ति का भी अध्ययन होता है।

सोमरस लिपटो के अनुसार—“सामाजिक भाषा में, समाजमितीय किसी समूह में व्यक्तित्व तथा व्यवहार के मान का एक अध्ययन है। सामाजिकता इसमें समूह का हर व्यक्ति शामिल किया जाता है जो व्यक्तिगत रूप में अपने स्वयं बताता है कि समूह के अन्य सदस्यों में से किन लोगों के साथ वह निम्न-सम्बन्ध किसी निम्न विधि में अध्ययन करता है।”<sup>1</sup>

वैदिक के अनुसार—“समाजमितीय किसी निम्न समूह के सदस्यों के बीच निम्न विधि अध्ययन में जाने जाने वाले सम्बन्धों की समूह संरचना की व्यवस्था तथा वैयक्तिकों में व्यक्तिगत भाषा का अध्ययन है।”<sup>2</sup>

एक विधि का आविष्कार सन् 1934 ई० में डॉ० जे० एन० मोरिसी ने कोलंबी के सामाजिक सम्बन्धों के अध्ययन के लिए किया था। पहले बाद वैदिक के समूहों में छात्रों के बीच निम्न सामाजिक सम्बन्धों की बीच के लिए एक विधि प्रस्तुत होने लगी।

एक विधि में समूह के सदस्यों के पहले है कि अपने समूह में से निम्न-विधि के साथ निम्न-सम्बन्ध, स्वयं-स्वयं या स्वयं-स्वयं अध्ययन करने और निम्न-विधि के

1. In simplest terms, a sociometric measure is a means of assessing the attraction or attractions & repulsions within a given group. It usually involves each member of the group privately specifying a number of other persons in the group with whom he would like to engage in some particular activities and further, a number of persons whom he would like to participate in the activities.—Lindzey, G. (Editor) : *Hand Book of Social Psychology*.
2. Sociometry is a means of presenting simply and graphically the entire structure of relations existing at a given time among members of a given group.—Jung,



समर्थों के द्वारा परिणामों को स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं होती। जैसे बरीला-  
ल्ला ने कहा बहुतों हैं कि बहुत बन्ने के समय, किसी या कुछीन सभी बात को है।

(11) किसी भी विधि के द्वारा प्राप्त परिणाम की जाँच, सुनिश्च एवं सीमात्मक बनाना सम्भव है : यह एक सामान्यतम विधि है, जब हमें किसी द्वारा परिचित किसी भी चीज का ज्ञान कर सकते हैं। आज ही परिणामों की जाँच (Verification) करने में हमारी समस्या में कोई विधि नहीं है :

(111) कॉमिन्टर्न के द्वारा प्रवासी की व्याख्या करने सुविधाकार बन सकती है। जैसे निम्नलिखित 10 बर्षों में जापानी के अपने के अनुभवों की देखकर अमेिका में काम-धंधा बना होती, बताया जा सकता है।

(17) इस विधि के द्वारा एक साथ कई कार्यों के प्रभाव का अध्ययन संभव है :

गणेशाय नमः

### Proposed Text

सांसादिक सर्वोपेक्षा में भी अलग के परीक्षणों का उपयोग होता है। यदि मातृगत परीक्षण ( Objective test ) और आत्मगत परीक्षण ( Subjective test ) कहते हैं।

(3) **बसुबुद्ध परीक्षण ( Basubuddha test )**—इसे परीक्षणों का बहुत बड़ा समूह मानते हैं, सांख्यिक सर्वेक्षणों में नहीं होता है। डॉ. ऐके परीक्षणों के द्वारा व्यक्ति के सामयिक विकास पर बसुबुद्ध तथा बाल्यवृद्ध के विकास का मात्रा मात्र करते हैं। इस परीक्षणों के द्वारा बुद्धि, विचार, सीमाता, व्यक्तिगतता आदि का अध्ययन करते हैं। इसे बसुबुद्ध या बसुबुद्ध परीक्षण कहते हैं।

(11) **आत्मनस परीक्षा** ( *Subjective test* )—इस कीटि में जलनस परीक्षा बाटे है। परीक्षिकीककककिकी के अनुसार जलनस ( *Unconscious* ) सन स्थिति की इच्छाओं, भावनाओं तथा नियन्त्राओं के आधार-सुद्ध के वधान है। यह इच्छाओं तथा भावनाओं वलन सन में जलन की दृष्टि बाड़ी है। इसके कारण अनुसार के आधार में जलन नियन्त्राओं नियन्त्रित हो बाटी है। इन नियन्त्राओं की प्रति-फलन परीक्षककी कही है।

अतः अपने जीवन की सभी हुई घटनाओं को अज्ञान में बिखी तुलसी कह कर अतः नद बहोति ( विस्मृत ) कर देता है । इसी कारण जीवन परीक्षाओं का विमोच तुला है । अतः जीवन नाम के एक परीक्षाओं का विशेष महत्त्व है । इन परीक्षाओं के द्वारा अतः के जीवन प्रेरणों के अभावों के अतिरिक्त जीवन प्रेरणों के

हवाओं का अध्ययन करते हैं। इस कोष्ठ में जहाँ काले पंखों के वाहनकम अन्य-  
जति परिचित होंगे। हमें एक पंखीय निम्नलिखित है :

(1) रोसचाइन्हाही प्रज्वा परीक्षण ( Rosinbach Inhibition Test):—

हूरमेट रोशनी ( *Hurmat-e-Roshni* )—ने सन् 1910 ई. में त्वाही के लिये जाले यह कार्य संचालित किये । इनमें के एक-एक कार्य प्रयोग की गेले हैं । यह सब कार्य के लिये ये जो कुछ देखता है, उसे वा की सहायतापूर्वक बता देता है, वा स्वयं सिद्ध देता है । विवरण की संज्ञा, आकृति, रंग, गति, पद, पदार्थ पदार्थ एवं अन्य चीजों का वस्तुवत्त कर के प्रतीकवादी प्रमाणित करता है । यह सुनवाता एवं विवेचना के प्रयोग के अवधिगत के पुनः प्रहरी एवं तन्वी का काम ही करता है ।

(3) **ਸੰਖੇਪ ਅਤੇ ਸੰਖੇਪ (Thematic Apperception Test) —**

इसकी घरे ( Ministry ) के 1933 ई० में स्थापित किया गया - इसके 30 विधियों में 10 दुर्गों, 10 महिलाओं के लिये तथा 10 अल्पविध होते हैं । यह विश्व एक-एक कार्य प्रयोग की दिशा में जाते हैं, और प्रयोग की उच्च शिक्षा के आधार पर एक बहुमती करने का सिद्धांत का आदेश देते हैं । प्रयोग के विवरण के आधार पर उसके अधिकार का सुनिश्चित करते हैं । प्रयोग इन्हीं, कार्यवाही तथा सभी हुई कार्यवाही को प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव में नहीं जाती, इसके द्वारा अलग-अलग रूप में प्रयोगकर्ता की प्रवृत्ति प्राप्त हो जाता है ।

इसके शैक्षणिक सिमान्दक का चित्रण स्टोरी टेस्ट (Picture Story Test) तथा सी० ए० टी० (Children Apperception Test) यदि विद्यार्थी प्रदर्शक करीबतः है।

इसी प्रकार परिवारों की संरचना के रूप में बहुत ज़रा कमजोर है कि इसके द्वारा परिवार के अस्तित्व की रक्षा करना और विशेषकर भी इस परिवारों का साथ बचाने के काम हो जाता है। इसीलिए इनके परिवारों को नहीं बनना, अलग-अलग होने की अनु-  
 क्षमताओं की आवश्यकता के द्वारा व्यक्ति का साथ प्राप्त कर दिया है। किन्तु एक निश्चित  
 के सामाजिक परिवारों की आवश्यकता पर ध्यान देना पड़ता है। इस विधि से  
 परिवारिक जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों की आवश्यकता रहती है। अतः परिवारों पर  
 ज़रा ध्यान नहीं किया जा सकता -

**अन्तर सांस्कृतिक विधि**  
(Cross Cultural Method)

अभिहित करने की शक्ति का उद्देश्य है। ( "Individual is the mirror of





अवधारण करती है तथा इसमें अज्ञात अवधारणाओं और विचारधाराओं की खोज करती है। यह यह भी खोज करती है कि किस तरह सांस्कृतिक समूहों में एवं विचारधाराओं के कारण अज्ञात अवधारणों में विचारधाराएँ तथा अवधारणाएँ उत्पन्न होती हैं। इस विधि के प्रयोग में माइडल (Meadwell, 1949) के पहले द्वारा सांस्कृतिक संरचना के अध्ययनों में, टाउलर (Toulst, 1949) ने वैज्ञानिक अवधारणाओं के अध्ययन में प्रथम उपयोग किया था। पहले द्वारा साधन (Gibson) के सांस्कृतिक विकास का अध्ययन किया। ह्यूमन (Hunting, 1950), मेल्लीबार्ड तथा फ्रीडमैन (Mellishard and Freedman, 1952) राइट (Wright, 1952) और बेरी (Berry, 1952) आदि हाल पीछे करीबों (Child's learning practices), अधिगम, अनुशासन, तथा व्यवहार में सम्बद्ध सांस्कृतिक कारकों के अध्ययन में इस विधि के बहुत ही प्रयोगित किया है। वर्तमान वर्षों के अन्तर्गत यह सांस्कृतिक विधि के विभिन्न अज्ञात अवधि का होती है—

- (क) यह विधि विभिन्न संस्कृतियों के समूहों की विशेषताओं तथा अवधारणों का तुलनात्मक अध्ययन करती है। विभिन्न संस्कृतियों में प्रचलित व्यवहारों की तुलना करना इस विधि का प्रमुख उद्देश्य है।
- (ख) पहले वर्गीकृत सांस्कृतिक अवधारणाओं तथा विचारधाराओं के अध्ययन में द्वारा व्यक्ति के अवधारणों पर उसके प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।
- (ग) संस्कृति के कारण उत्पन्न अवधारणाओं और विचारधाराओं के अन्तर्गत पर कारण अवधारणों के विचार में सामान्य जीवन प्रतिपादित करने में यह विधि बहुतम होती है।
- (घ) यह विधि व्यक्ति के अवधारणों एवं व्यवहार के निर्धारकों के विचार में सामान्य ज्ञान प्राप्त होता है।
- (ङ) विभिन्न समूहों में प्रचलित सांस्कृतिक दृष्टान्तों—जैसे 'काल', 'समय', 'प्राप्ति', 'प्राप्ति' आदि का सामाजिक अध्ययन इस विधि द्वारा संभव है।

### सांस्कृतिक विधि के प्रकार

(Types of Cross Cultural Method)

परम्परागत रूप से ऐसे अध्ययन की प्रणाली में विभाजित किये जाते हैं—विचारधाराओं तथा व्यवहारिक अध्ययन (Conceptualization and Experimental Method) किन्तु ऐसा विभाजन उचित और सही नहीं है। अधिकतर विचारधारात्मक अध्ययनों के द्वारा सामाजिक विशेषताओं के विचार में सामाजिकरण समझ किये जाते हैं। यह

होता है कि ऐसे अल्पसंख्यक समुदाय पर बाधकारी होती हैं किन्तु वह सभी परिस्थितियों के निर्माण में सहभाग्य होती है तथा सामाजिक सम्बन्धों को खोलने का प्रयास करती है ।

दूरदर्शक तथा रीतिमान ( 1954 ) के अनुसार वह विधि क्षेत्र प्रकार की होती है । अथवा, प्रौद्योगिक समाधान ( technological solution ) में विविध समितियों में उपस्थित युवा एवं व्यक्तियों की सुझावमय भावना करते हैं द्वारा वहाँ में दक्षिण अफ्रीका की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं और वहाँ में क्षेत्र तथा समीक्षात्मक से सम्बद्ध समाधान होते हैं ।

इस विधि द्वारा समाधान करने में कुछ सामाजिकता का प्रभाव है । विधि दक्षिण है अतः समाधानकर्ता का अधिकार होता है समाधानकर्ता है । प्रविष्टि करने में भी समाधान का प्रभाव है । प्रविष्टि ( violation ) प्रभाव एक प्रकार करना चाहिये कि वह सम्पूर्ण समाधान का अधिकारिण करता हो । ऐसे व्यक्तियों के हो सुझावों की भावना की सम्बद्ध संस्कृति के साथी प्रकार प्रविष्टि हो और उन्हें वह विविध संस्कृति का निर्माण करता हो, तथा सामुदायिक सुविधायी करते हो । समाधान में बहुत होने वाली सामाजिकता का प्रभाव होता है और उनके सुझाव सुविधायी हैं । सामाजिकता की विविधताओं का और, वीरता सुविधायी होती चाहिये । वह भी आवश्यक है कि समाधान का समाधान करना हो सम्बन्धित समाधान में समाधान समाधान के बारे में समाधान होता चाहिये । वहाँ निर्माणों का सुविधायी सम्बन्ध होता अधिकारी है । इस विधि द्वारा विधि समाधानों का समाधान समाधान होता चाहिये । समाधान अधिकारिता समाधानों द्वारा समाधान समाधान समाधानों में समाधान समाधान, विविध समाधान समाधानों के समाधान तथा उनके समाधान समाधानों उत्पन्न की जाती प्रकार समाधान करते हैं ।



## सामाजिक अभिप्रेरक ( Social Motives )

मनुष्य कोई व्यवहार क्यों करता है ? यह अन्य कार्यों के बजाय कोई कार्य विशेष क्यों करता है ? व्यक्ति किसी वैकल्पिक व्यवहार को छोड़कर कोई विशेष व्यवहार क्यों करता है ? एक विद्यार्थी अपनी पढ़ाई में व्याप्तिक परिचय करता है, तो क्या कोई त्याग नहीं करता ? एक पिता में लम्बी (1884) का विचार था कि किसी कार्य के पक्षे व्यक्ति में 'इच्छा' उत्पन्न होती है, जो उसके कार्य का निर्धारण करती है। सीनी (1886) ने भी इच्छा द्वारा व्यवहार को विद्या दिये जाने की चर्चा करते हुए कहा था कि इच्छा, अभिप्रेरक बन जाती है। इस विद्या में सर्वप्रथम ईकडुमल ( 1908 ) ने वैज्ञानिक रूप में प्रयत्न किया। उसके अनुसार मानव की क्रियाओं का कारण उसकी कुछ प्रवृत्तियाँ ( Instincts ) हैं। ये प्रवृत्तियाँ ही मनुष्य की क्रियाओं को संभावित एवं नियमित करती हैं। अनेक मनोवैज्ञानिक इस विद्या से असहमत रहे ( Carmichael; 1972; Lashley, 1934; Koo 1930, Latman 1953 ) उन्होंने कुछ प्रवृत्तियों के विनाश के विपरीत परिणाम प्राप्त किये।

वुडवर्थ ( Woodworth ) ने "अन्वीर" ( Drives ) को मानव व्यवहार का कारण माना है। Hebb (1949), Hull ( 1943 ) आदि भी इससे सहमत हैं। एक विद्या में टोलमैन ( Tolman ), तथा यंग ( Young ) आदि भी प्रवृत्तीय प्रभाव किये। यंग ( 1936 ) ने सर्वप्रथम अभिप्रेरणा शब्द का अनु-प्रयोग किया। उसने यह प्रभावित किया कि सभी अन्वीरों की उत्पत्ति शारीरिक आवश्यकताओं से द्वारा नहीं होती। अभिप्रेरणा का उद्भव एक मनोवैज्ञानिक प्रचय के रूप में हुआ। अभिप्रेरणा की मुख्य विशेषताएँ असंशुभता और निरन्तरता है। व्यक्ति के व्यवहार के कारणों को समझने के लिए अभिप्रेरणा की समझना आवश्यक है। मनुष्य का अनेक व्यवहार किसी आवश्यकता की अनुपस्थिति के लिए होता है और यह अनुपस्थिति कथन के द्वारा होती है। प्रेरक, मनुष्य की किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए सक्रिय करती है, क्रिया को प्रयत्न की दिशा में उन्मुख करती है तथा प्राप्ति तक जारी रखती है।

हमारी कुछ अभिप्रेरणायें शारीरिक तथा अन्य सामाजिक होती हैं। वैयक्तिक या

सांसाधनिक आवश्यकताओं से सांसाधनिक अभिवृद्धि अधिक अधिक होती है। व्यक्ति के लिए प्रायः सामाजिक अभिवृद्धि, वैयक्तिक अभिवृद्धि के अधिक महत्वपूर्ण होती है। सामाजिक अभिवृद्धि, वैयक्तिक अभिवृद्धि के विपरीत अधिकतर कम होती है। अतः, सामाजिक अभिवृद्धि के परिणाम अधिक निश्चित होते हैं। मानव के सामाजिक व्यवहार उसके सामाजिक अभिवृद्धि द्वारा निर्धारित एवं नियंत्रित होती है।

सामाजिक अभिवृद्धिमें वैयक्तिक सम्बन्धों की अनेक अधिक अधिक एवं निश्चित होती है तथा यह अनेक प्रकार की होती है। व्यक्ति एक सामाजिक जीव है अतः वह समाज की अवस्था अनुवीक्षण तथा प्रतीक्षा करने का अधिकारी होता है। वह समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए अपनी उपस्थितियों की महत्ता चाहता है। वह अपने अनेक कामों की पूर्ति के लिए सभी व्यक्ति चाहता है। ये सभी सामान्य का प्रतीक करता है। सभी सभी व्यक्ति एक एवं कुछ का विचार भी हो जाता है और सामाजिक व्यवहार भी करता है। सामाजिक व्यवहार से समाज द्वारा प्रत्यक्ष की विज्ञानियों के द्वारा सामाजिक अभिवृद्धि द्वारा प्राप्त होती है।

## आवश्यकता के स्वरूप और प्रकार

( Needs Natures Type )

**आवश्यकताएँ—**व्यवहार के कारणों की वजहसे वे बहुत सारी में 'आवश्यकताएँ' मानव कुछ दुर्भाग्यों से अधिक अधिक है। वह समाज वैयक्तिक अर्थविज्ञान तथा व्यक्तिगत विज्ञानों द्वारा अनेक विज्ञान के विभाजित है। सभी के लिए प्रायः प्रायः या किसी महत्वपूर्ण अनु को सभी या महत्ता की आवश्यकता है। दूसरी को विचारों के अनुसार, "A need is, basically, a state of mind which is the basis of the desire to do something—i.e. to obtain." इन सभी सभी, विचारों, आवश्यकताएँ, सभी यदि आवश्यकताओं का अनुभव करते हैं। इसके अतिरिक्त एवं सभी की अधिकता, विचार तथा महत्त्व विज्ञानों की आवश्यकताएँ होती हैं। सभी सभी समाज 'आवश्यकता' के अनुसार की आवश्यकता में कहा जाता है, कि आवश्यक में इसी कुछ की एकता नहीं होता और यह समाज अनुभव है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति जीवन करता है, सभी होता है, विचार करता है, यदि। किन्तु यह अधिक नहीं है क्योंकि आवश्यकता केवल कुछ लोगों और व्यवहारों का नाम नहीं है। इसमें वह समाज अनेक विहित होता है। कुछ समाज या व्यवहार सभी के लिए आवश्यक होते हैं इसके अभाव ( एक समाज के साथ ) में जीवन दुर्भाग्य की अवस्था का सामना मुश्किल अवस्था होती है।

सामाजिक आवश्यकताएँ इसी महत्त्व विचार का अभाव है विचार इसके

कि सामाज्यवाद पर कभीभीज्ञानिक आलोचकोंमें बाधा उत्पन्न के लिये आवश्यक एवं उचित ज्ञानिक नहीं होती। यद्यपि दीर्घकाल तक इन आलोचकोंकी के अभाव या दुर्लभा के जीवन पर अनेक दुर्गतिमान हो सकते हैं। वह इन उद्योग या व्यवहारों के वर्ष के समान हैं जो विभिन्न स्थितियों में परिवर्तित होते हैं। यह अतिवृद्ध स्थितियों के बावजूद कम या अधिक मात्रा में अधिक मनुष्य में पाई जाती है। एक अन्य दृष्टिकोण के अनुसार कभीभीज्ञानिक आलोचकोंमें उत्पन्न अविद्वत्ताओं या मूर्खों में अतिवृद्ध है और व्यक्ति में विभिन्न व्यवहार उद्योग के द्वारा उत्पन्न होते हैं।

सार्वजनिक आलोचकोंकी की शक्ति में वर्तमान अर्थव्यवस्था परिवर्तन प्राप्त होते हैं, किन्तु पहले नहीं अधिक निम्नता कभीभीज्ञानिक आलोचकोंकी की शक्ति में प्राप्त होती है। यहाँ तक कि सम्पूर्ण की कार्यवीर्य आलोचकोंकी की शक्ति और अधिक में परिवर्तन देखा जाता है। सार्वजनिक आलोचकोंकी की शक्ति सामाजिक आलोचकोंकी की शक्ति सामाजिक अधिकार द्वारा संशोधित होती है। यही नहीं कुछ आलोचकोंकी की शक्ति सामाजिक की आलोचकोंका या व्यक्ति की आलोचकोंकी की शक्ति कर के सामाजिक अधिकार का परिणाम है।

## उद्योग की आवश्यकता

( The need for stimulation )

सामाजिक आलोचकोंकी की शक्ति है ? कि तो यह सत्य कभी नहीं है किन्तु इसकी आवश्यकता में कुछ सम्पूर्णकाल प्रयुक्त होते हैं। किसी न किसी मात्रा में कभी कभी उद्योग चाहते हैं। कभी कभी काल पर, के उद्योग करते हैं जो कभी के जीवन की शक्ति तथा काल प्रयोजन में काम करते हैं। व्यक्ति के विकास काल में कभी अधिक उद्योग करते हैं और ऐसे उद्योगों के प्रयोजन में करते हैं जो जीवन प्रत्यक्ष या अर्थव्यवस्थाकी उद्योग नहीं करते। किन्तु काल की प्रेरणा अधिक प्रेरणा प्रेरणा उद्योगों की की शक्ति अधिक प्रेरणा करते हैं और उद्योगों की अधिकता काल के काल प्रयोजन का में सम्पूर्णकाल होती है। ( लेनिन, 1966; लेनिन, एमिल तथा नूर 1966 )।

उद्योग-उत्प्रेरण ( Stimulation उत्प्रेरण ) उत्प्रेरण तथा उत्प्रेरण प्रेरित ( Stimulation ) उत्प्रेरण में उत्प्रेरण प्रेरित की शक्ति के सम्पूर्ण कभीभी द्वारा काल काल कि उत्प्रेरण के सम्पूर्णकाल उत्प्रेरण के कारण उत्प्रेरण के उत्प्रेरण क्षेत्र उत्प्रेरण उत्प्रेरण होती है और उत्प्रेरण उत्प्रेरण अधिक होती है। इस क्षेत्र के वह की उत्प्रेरण काल कि उत्प्रेरण के उत्प्रेरण उत्प्रेरण में जीवन के सम्पूर्णकाल उत्प्रेरण की शक्ति काल काल की उत्प्रेरण तथा उत्प्रेरण

के भी निम्नता ज्ञात होती है ( वेबेड, राजकम, जेन तथा रोमैन्सकान्डा [1968] ) ।

यू.ए. वेबेड ( 1971 ) ने परिष्करण की, कि वर्धमान की आवाजकता के कारण जीव दुसरी के साथ युद्धा चाहती है और अधिक, समान तथा जेनक परि-  
निमित्तों के प्रति अनुकूल प्रतिक्रियाएँ करते हैं । वेबेड ने जेनक सामान्य जिन जिनके  
समयान इस परिष्करण की पुष्टि करते हैं, जिनमें वर्धमान की आवाजकता  
अधिक ज्ञात होती है के दुसरी के सामान्य जिन की अभिवृद्धि की अधिक करते हैं ।  
हाल के परिष्कारों के बहु की ज्ञात हुआ कि जन्म वर्धमान आवाजकता करते ज्ञाती  
के ज्ञातीभावति में अधिक निम्नताओं का जन्म और न्यून वर्धमान आवाजकता करते  
के ज्ञातीभावति करते निम्नताओं का जन्म किया । जन्म 75 के निम्न के निम्न जन्म  
वर्धमान अनुकूल के ज्ञातीओं की जन्म में जन्मके छोटा युवा की के अधिक जेनक  
रिहाई जिन । जन्म वर्धमान अनुकूल के ज्ञातीओं में जेनक के जन्म की न्यून में । इसी  
प्रकार, छोटे अनुकूल जन्मके में जन्मका-जन्मका परिनिमित्त में जिन जिन पर न्यून  
वर्धमान आवाजकता ज्ञाती की ज्ञाती जन्म वर्धमान अनुकूल के ज्ञातीओं में अधिक  
जन्म जिन वा जन्म वर्धमानों के जन्म अधिक जन्मके की । जन्म ने जन्म  
जन्मके के ज्ञाती पर बहु की निम्नता ज्ञात किया कि वर्धमान-आवाजकता में  
निम्नता अधिकतर जन्मके जन्मके जन्मके का जन्म होती है ।

### मैमलो का आवाजकता सिद्धान्त

( Maslow's Theory of Human Needs )

आवाजकताओं के जिन में जन्मके मैमलो ( 1954 ) ने नीतिज आवाज-  
कताओं की ज्ञाती (Spectrum of Basic Psychological Needs) का प्रतिपादन  
किया । इस आवाजकताओं के अनुकूलिक निम्नता (Spectrum of Needs) का सिद्धान्त की कहा जाता है । मैमलो के अनुसार न्यून में जेन एवं  
जन्म की जन्म आवाजकता होती है । यदि न्यून की जेन जेन रही ज्ञात होता  
वा जन्म की आवाजकता जन्म यह जाती है की जन्मके निम्नताओं निमित्त होती  
है और जन्मका जीवन की जेन में यह जन्म है । यह जेन की आवाजकता,  
वर्धमान की आवाज आवाजकता का परिनिमित्त की हो सकती है । जन्मके सिद्धान्त  
में आवाजकताओं के निम्नता के अनुकूल की जन्म की नहीं है जन्मके यह कहा जन्म  
है कि जन्म की आवाजकताओं का निम्नता न्यून निमित्त अनुकूल में होता है । यह  
नीतिज जन्मके आवाजकताओं की जेन जन्म में जाती है । जन्मके यह आवाज-  
कताओं जन्मके अनुकूल के अनुसार निमित्त होती है । जन्मके, जन्मके नीतिज एवं  
जन्मके जन्म की आवाजकताओं निमित्त होती है और जन्म में जन्मके जन्मके

सम्बन्ध-समूहों का व्यवहारकर्ताओं का विकास होता है। इसमें सभी व्यवहारकर्ताओं की क्रिया में विचलित होने वाली व्यवहारकलाओं के लिए शैक्षिक होती है।

## आवश्यकताओं के विकास का अनुक्रम ( Hierarchy of Needs )

1. शारीरिक आवश्यकताएँ ( Physiological needs )—शारीरिक क्रियाओं की सभी चरमों में शैक्षिक आवश्यकताएँ—जैसे भूख, थकान, विश्राम, नींद आदि बहुत होती हैं, जिसका विकास पर्याप्त होता है।

2. सुरक्षात्मक आवश्यकताएँ ( Safety needs )—इसका सम्बन्ध व्यक्तिगत सुरक्षा से होता है और इसके सम्बन्धित विषयों में सुरक्षात्मक आदि आवश्यकताएँ बहुत हैं। इसी के द्वारा हम जान सकते हैं, या किसी भी प्रकार एवं प्रकार: परिस्थितियों से अपने को बचाते हैं। यह विकास क्रम में शारीरिक आवश्यकताओं के बाद किन्तु सम्बन्ध एवं प्रेम के पहले विकसित होती है।

3. सम्बन्ध एवं प्रेम की आवश्यकताएँ ( Belongingness and love needs )—अपने व्यक्तियों के स्नेह, प्रेम एवं शैक्षिक क्रियाएँ करने की आवश्यकताएँ इस क्रम में आती हैं। सुरक्षात्मक आवश्यकता के विकास के बाद आवश्यकता का शैक्षिक सम्बन्ध है। समाज, अपने सदस्यों की शैक्षिक आवश्यकता के प्रयोगों, अपने व्यक्तियों की आवश्यकताओं आदि से बचाता है और अपने में सदस्यों के अनुकूलता के रूप में नीला बहुत करता है। इसी रूप में नीला सुरक्षा की प्रेरणा नहीं होती की सुरक्षा, सम्बन्ध तथा स्नेह के लिए कोई व्यक्ति या बहुत उत्पन्न करता है।

4. मान्यता/मान्य की आवश्यकताएँ ( Esteem needs )—इसके सम्बन्धित बहुत, मान्य, सम्मान, शैक्षिक, उपलब्धता, भावनात्मक, सम्मान तथा सम्मान आदि आवश्यकताएँ आती हैं। यह आवश्यकताएँ बहुत के रूप में उत्पन्न होती हैं और यह दूसरी द्वारा व्यक्ति की शैक्षिकता की प्रेरणा पर निर्भर करती हैं। इस आवश्यकता की दृष्टि के लिए हम दूसरों के सम्मान, सम्मान एवं सम्बन्ध करने के लिए प्रेरित होते हैं, क्योंकि इसी के द्वारा हम अपने सम्मान करने हैं। सामाजिक अनुष्ठान की सम्मान के द्वारा हमारे जीवन परियोजना एवं सम्मान का प्राप्त उत्पन्न होता है।

5. आत्म-विकास की आवश्यकताएँ ( Self-actualization )—इसके सम्बन्धित सम्मान ( Self-fulfillment ), मान्य सम्मान, प्रेम, सम्मान सुख तथा प्रेम प्रेम, सम्मान के प्रति प्रेम आदि आवश्यकताएँ आती हैं। आत्म-विकास का सम्मान की आवश्यकता अन्य सम्बन्धित आवश्यकता है और प्रेम सभी सम्मान-कारणों पर इसका प्रभाव होता है। अन्य सम्बन्धित आवश्यकताएँ इसके द्वारा

निर्गमित एवं विकाशित होती है। वास्तुशिल्प, जीवन का सर्वोच्च एवं सर्वोत्तम स्वरूप है। इस अवस्थाका की पूर्ति के सम्बन्ध विभिन्नराष्ट्रीय मान्यताओं की पूर्ति का अन्तिम निर्णायक हो जाती है। मान्यताओं में यह सर्वोच्च है।

Marlow के शब्दों में, "A civilization cannot make progress, an artist cannot produce, a poet cannot write, if he is to be ultimately at peace with himself. What then can he, what he tries to his own nature. This need we may call self actualization"

संसार की बहुवार अवस्थाएँ विभिन्नराष्ट्रीय मान्यताओं से भिन्न होती, फिर भी-हीरे सम्बन्धराष्ट्रीय मान्यताओं से निर्मित होती है। इसे यह वैज्ञानिक-संस्था (Developmental agencies) या बहुजनिक संगठन (Hinterland Organization) कहता है। इसके अनुसार पटुपन की सम्बन्धराष्ट्रीय मान्यताओं की उत्पत्ति विभिन्नराष्ट्रीय मान्यताओं की पूर्ति पर निर्भर होती है,—यदि किसी व्यक्ति की जीवन स्तर माया में सम्मिलित हो तो अन्य स्तर की मान्यता-वादी मान, सम्मान, आदर, मान्यता, अधिकार आदि का विकास हो करता है। किन्तु पूर्ति के बाद कोई व्यक्ति सम्मान, आदर का आर्षा या सम्मान के माय के जीवन नहीं हो करता। जिस व्यक्ति में सम्मान की मान्यताओं की उत्पत्ति उत्पन्न होता है, उसकी सम्बन्धराष्ट्रीय मान्यताओं का बहुत बड़ा प्रभाव होता है। इस प्रकार मान्यताओं के रूप में एक प्रकार की जीवन का परिवर्तन प्राप्त होता है।

संसार की पूर्ति के सम्बन्ध होता है कि समाजीकृत मान्यताओं द्वारा एवं बहुत स्तर पर ही पूर्ति का हो जाती है, यद्यपि सभी चीजें सभी पर अभिवृद्धि और सम्पूर्ण सामाजिक अभिवृद्धि द्वारा सम्पन्न होता है।

सामाजिक तथा वैश्व ( 1971 ) के अन्तर्गत एक प्रयोग के प्रयोग की की मान्यताओं की उत्पत्ति उत्पन्न होती है बहुतों में सम्मान (Cooperation and Collaboration) का सम्मान तथा। प्रयोगों का पूर्णतया सुखान्त तथा आदर मान्यताओं के एक सम्मान पूर्ति जीवन के प्रयोगों के आधार पर प्राप्त होता है। जो प्रयोग वन पुराने मान्यताओं की पूर्ति की प्रयोगों के रूप में अभिवृद्धि एवं अभिवृद्धिपूर्ण प्रयोगों की उत्पत्ति करते हैं। सामाजिक सम्मानों, मानों, या किसी सम्मानों का सम्मान करने की अपनी सम्मान के प्रयोग में प्रयोग प्रयोग एवं प्रयोगों की सम्मानों प्राप्त थी।

पुनरी और सम्मान की मान्यताओं की उत्पत्ति करते हैं प्रयोगों में अपनी



समस्त एवं कुशलता के सर्वोच्च की तरफ इच्छा की। तब ही वे अन्य व्यक्तिों द्वारा बाहर की शक्ति के भी आविर्भावों से भावप्रियता, प्रभुता, विराजता एवं अधिकार के स्वयं विराजता में।

मनो का विराजता व्यक्तित्व के सिद्धांतों में समस्त प्रमुख स्थान रखता है। यही सही, इसकी विचार धारा अधिकतर व्यक्तिगतिक विचार में व्यक्तता का है और सामाजिक व्यवस्था में जीवन एवं के सही जाती है।

## मन का सिद्धान्त

(Murray's Theory)

सर्वोपेक्षाधिक व्यवस्थाधारी तथा मनो की अवधारणा का एक अन्य उदाहरण है। एन. मरी (1938) के अनुसार निम्न है। मन के आवश्यकता (Need) की परिभाषा की हुई कहा है, "A need is a state of affairs which stands for a drive...in the brain region, a force which organizes perceptions, apperceptions, intellectualization, creation and action in such a way as to transform in a certain direction an existing, unsatisfying situation. A need is sometimes provoked directly by internal processes of a certain kind but more frequently by the occurrence of one of a few commonly effective press (environmental factors)...Thus, it manifests itself by leading the organism to search for or to avoid encountering or, when encountered, to attend and respond to certain kinds of press...Each need is characteristically accompanied by a particular feeling or emotion and tends to set certain modes...It may be weak or intense, momentary or enduring. But, usually it persists and gives rise to certain course of overt behaviour, which...changes the existing circumstances in such a way as to bring about an end situation which will (satisfies or satisfies) the organism" (Murray, 1938, pp. 113-124).

एन. मरी का मनोपेक्षा आवश्यकता की एक बहुत ही व्यापक दृष्टि रखता है, जो एक समय की शक्ति या मन का संकेत है। यह व्यक्तिगत की सामाजिक विचारों के समग्र है। मरी का मन का संकेत की है कि व्यवस्थाधारी व्यवस्था या बहुत उद्योगों के व्यवस्था की संकेत है। व्यवस्थाधारी, मनो के विचार व्यवस्था की है और यह व्यवस्थाधारी मन संकेत एक व्यवस्था बहुत है यह मन कि व्यवस्थाधारी में मनो सही जाती। कुछ व्यवस्थाधारी के मन विचार संकेत या मन संकेत की है।

जैसे कि सुन्दर आत्मनिकताओं की उपस्थिति का अनुमान निम्न बिन्दुओं द्वारा होता है—

1. आनन्दानुभूति के प्रवाहों का परिमाणों द्वारा,
2. आनन्दानुभूति के प्रवाहों की प्रकृति,
3. विभिन्न उपस्थितियों के बीच अनुभूति के प्रति अनुभूति,
4. विभिन्न स्थितियों एवं वातावरणों का अनुभव,
5. विभिन्न स्थितियों के अनुभव का अनुभव एवं उनके बीच के अंतरों का अनुभव का अनुभव ।

जैसे कि 20 आत्मनिकताओं की सूची अनुभव की है, जो निम्न है—

1. आनन्दानुभूति (Aesthetic) —जैसे कि आनन्दानुभूति, निम्न एवं अंतरों की अनुभव करना है और उनके बीच अंतर का अनुभव होता है ।

2. अनुभवानुभूति (Aesthetic) —जैसे कि आनन्दानुभूति, निम्न एवं अंतरों की अनुभव करना है और उनके बीच अंतर का अनुभव होता है ।

3. अनुभवानुभूति (Aesthetic) —जैसे कि आनन्दानुभूति, निम्न एवं अंतरों की अनुभव करना है और उनके बीच अंतर का अनुभव होता है ।

4. अनुभवानुभूति (Aesthetic) —जैसे कि आनन्दानुभूति, निम्न एवं अंतरों की अनुभव करना है और उनके बीच अंतर का अनुभव होता है ।

5. अनुभवानुभूति (Aesthetic) —जैसे कि आनन्दानुभूति, निम्न एवं अंतरों की अनुभव करना है और उनके बीच अंतर का अनुभव होता है ।

6. अनुभवानुभूति (Aesthetic) —जैसे कि आनन्दानुभूति, निम्न एवं अंतरों की अनुभव करना है और उनके बीच अंतर का अनुभव होता है ।

7. अनुभवानुभूति (Aesthetic) —जैसे कि आनन्दानुभूति, निम्न एवं अंतरों की अनुभव करना है और उनके बीच अंतर का अनुभव होता है ।

8. अनुभवानुभूति (Aesthetic) —जैसे कि आनन्दानुभूति, निम्न एवं अंतरों की अनुभव करना है और उनके बीच अंतर का अनुभव होता है ।

९. प्रधातव (Dhātavaḥ)—अतीतकाल पर नियन्त्रण एवं अधिपत्य रखता दूसरों की भाँति एवं स्वयं की भाँति प्रधातव कहला जाति ।

१०. वदनीय (Vednīyāḥ)—अपनी विशेषताओं द्वारा दूसरों की प्रधातव बनना, उपेक्षा एवं आत्मवैचल्य करने का प्रयास, शीघ्र एवं माहुरावैध का भी प्रधातव कहला जाति ।

११. क्षति-परिहार (Kṣatya-parihāraḥ)—दूर प्रकार की क्षति की रोग, क्षारीयता एवं प्राकृतिक क्षति, दुःख, पीड़ा और कष्ट से रक्षा करना, प्रारम्भ एवं अन्तः परीक्षणियों से प्रत्यक्ष, आनन्दान्न एवं अन्तर्गत रहना जाति ।

१२. अवर्णीति के बन्धन (Avartanīyāḥ)—दुःख, अन्धकार एवं अन्धकार-आवृत्ति परीक्षणियों से बनना, शीघ्र-बान्धना की प्रत्यक्ष करने क्षारी परीक्षणियों से बनना, अन्धकार होने के बाद के क्षति होने जाति ।

१३. परिणीयता (Parīkṣatā)—आपत्ति के क्षति बहुलक्षणी एवं बहुलक्षणा, अन्तर्गत से शीघ्र की अन्तर्गत, दूसरों की दुःखता एवं रोगता जाति ।

१४. अन्ध वा अन्धवृत्ता (Andha)—अन्धकार, अन्धकार, निराश्रितता एवं अन्धकारता जाति का प्रयास रखना ।

१५. पीड़ा (Pīḍa)—दिन बहुलक्षणी के क्षति, क्षारी बनना, शीघ्र-अन्धकार करना, क्षीणता, क्षुब्ध, अन्धकार जाति से प्राप्त होता ।

१६. अवर्णीकरण (Avartanīyāḥ)—अन्धकारिक क्षति अन्तर्गत के क्षारी । क्षिप्तता रहना, अन्धकारिता जाति के क्षारी न रखना, दूसरों की दुःखता क्षति करना जाति ।

१७. क्षीणता (Kṣīṇatā)—क्षीणताद्वारा की दुःखता करना ।

१८. शीघ्र (Śīghra)—शीघ्र अन्धकार की दुःखता और अन्धकार अन्धकारिता से क्षति ।

१९. अन्धकारिता (Andhakaritā)—अन्धकारिता-द्वारा से क्षति की बहुलक्षणा तथा क्षीण, क्षुब्धता एवं अन्धकारिताओं की क्षति के क्षति अन्धकारिता पर क्षति रहना, अन्धकारिता की क्षति-क्षति क्षीण रहना जाति इस अन्धकारिता से क्षुब्ध अन्धकार ।

२०. शीघ्र वा बहुलक्षणीयता (Śīghra-bhūṣṇatā)—अन्धकार द्वारा क्षति की अन्धकारिता का प्रयास, क्षीणता, क्षीणता, क्षीण शीघ्र क्षीणता क्षीणता का प्रयास करना जाति ।

[ पृष्ठ ( 1938 ) पृष्ठ 152-216 ]

अन्यथाप्युक्तं च ॥ ३॥

### Types of Needs

यदि वे आचार्यकृतकों की विविधता नहीं है, तब तो वे सभी आचार्यों का समान हैं, जो विचार हैं—

1. (A) प्राथमिक वा अन्तःप्राथमिक आवश्यकताएँ  
( Primary or Viscerogenic needs )  
(B) गौण वा मनोव्यक्ति आवश्यकताएँ  
( Secondary or Psychogenic needs )

आधुनिक आर्थिककृतियों मुख्यतः निम्नलिखित हैं—बीज, खाद, जल, मजदूर, मशीन, विद्युत्, विभाग आदि । इन्हीं की आत्मन्यायिक की वस्तु है । बीज का नवीनीकरण आर्थिककृतियों में आत्मन्यायिक का आत्मन्यायिक आर्थिककृतियों के मुख्यतः हैं। किन्तु वे आत्मन्यायिक व वस्तु नवीनीकरण होती हैं—बीज, खाद, जल, मजदूर, मशीन, विद्युत्, विभाग आदि की वस्तु ।

3. (A) अवपल आन्वयकताएँ ( Open seeds )  
(B) आन्वयल आन्वयकताएँ ( Covert seeds )

अन्तर्गत आयाजकताओं में हैं जो पत्रिका आसक्तता या कार्टीकीक विचारों द्वारा प्रेरित होती हैं। अन्तर्गत आयाजकताओं में हैं जिनका सम्बन्ध अन्तर्गत का में नहीं होता जैसे विचारक, आत्मक, विचारक आदि।

3. (A) केन्द्रिक आवरणकलाएँ ( Focal seeds ) ।  
(B) बिखरीले आवरणकलाएँ ( Diffuse seeds ) ।

मिट्टिका आयनकारकता का सम्बन्ध पानी तथा की लीपित करने की वस्तुओं के होता है। दूसरी ओर कुछ आयनकारकता वाली सामग्रीयों होता है कि वे लीपित करनेवाले-आयनों के साथ होती है। यदि आयनकारक किसी वस्तुवस्तु वस्तु के गुण-पूर्वक आयन (मुक्ति) होती है तो इसे फ्लोयडेशन (Fluorescence) कहा जाता है और इसे बरोनिकार कहते हैं। किन्तु आयनकारक के जोखाने लगी वस्तु वस्तुओं की दीप्ति का प्रभाव होता है बरोनिकार कहा जाता है।

4. (A) जलानुभूती आवश्यकताएँ ( Proactive needs )  
(B) प्रतिक्रियात्मक आवश्यकताएँ ( Reactive needs )

अभिप्रेत की आवश्यकताओं का आर्थिक प्रणाली एवं सुविधाओं द्वारा निर्धारित होती है, इसका प्रभाव हमने जाना, यह बिना बाह्य अर्थीय के होता है, क्योंकि इसका कारण स्वयं में निहित होता है। बाह्य अर्थीयों में बाध निर्माण में नहीं होता।



वर्ग की आत्मतत्त्वज्ञानी 'आत्म' ( *Psyches* ) द्वारा प्रतिबिम्बित होती है। कुछ आत्मतत्त्वज्ञानी आत्म के भीतर निहित होती है और अन्य ऊपर बाह्य जीवन से प्रेरित होती है। आत्म और उसके परिवर्तन के सम्बन्ध प्रकृति आत्मतत्त्वज्ञानी की अनुसंधान की भी प्रभावित करता है जैसे आत्म के अन्तर्गत पर आत्मतत्त्वज्ञानी के प्रभाव प्रकट होते हैं की ही परिवर्तन की उच्च आत्मतत्त्वज्ञानी प्रभावित करता है।

आत्मतत्त्वज्ञानी के अधिष्ठित आत्मतत्त्वज्ञानी में आत्म के लिए सामाजिक स्थिति के अनुकूल होना प्रकट है। सामाजिक नियम 'व्यवस्था' के हैं जो उनके आत्मतत्त्वज्ञानी पर प्रतिबिम्बित या अनुकूल करता है।

वर्ग के आत्मतत्त्वज्ञानी विद्वान के आलोचक कहते हैं कि आत्मतत्त्वज्ञानी के वर्गों में ही प्रतिबिम्बित होती है जो आत्म के अन्तर्गत या आत्म ही प्रकट है।

### उपस्थिति आत्मतत्त्वज्ञानी ( *Non-existence* )

होती वर्ग ( 1918 ) अधिष्ठित वर्गों की अपने आत्मतत्त्वज्ञानी विद्वान के वर्ग-आत्म आत्मतत्त्वज्ञानी की संज्ञा दी। उपस्थिति आत्मतत्त्वज्ञानी, वर्ग द्वारा प्रकट की गई है। आत्मतत्त्वज्ञानी की प्रकृति में एक प्रमुख आत्मतत्त्वज्ञानी है।

वैयर्थ्यपूर्ण तथा प्रतिकूल ( 1944 ) में अपने अन्तर्गत प्रकृतिस्थिति के साथ उपस्थिति आत्मतत्त्वज्ञानी का अधिष्ठित वर्ग आत्मतत्त्वज्ञानी प्रकट है। उपस्थिति आत्मतत्त्वज्ञानी के ही अधिष्ठित होकर कोई आत्मतत्त्वज्ञानी जीवन में किसी विविध होन में प्रकटता प्रकट ( *Level of existence* ) की प्रकट पर प्रकट है या प्रकृति का प्रकट करता है। एक और यह अधिष्ठित होती है जो अपने अधिष्ठित आत्मतत्त्वज्ञानी ( *High standard* ) अधिष्ठित करते हैं, जो प्रकट करने के अधिष्ठित प्रकट आत्मतत्त्वज्ञानी प्रकट है ( अधिष्ठित प्रकट करते हैं) तथा अपने प्रकटता पर जीवन अनुकूल करते हैं और प्रकटता के अधिष्ठित करने की प्रकटता प्रकट है। दूसरे अधिष्ठित पर यह अधिष्ठित होती है जो अपने अधिष्ठित व ही प्रकट अधिष्ठित अधिष्ठित करते हैं, व ही प्रकट प्रकट करने के अधिष्ठित प्रकट करते हैं, प्रकट अधिष्ठित के साथ करने प्रकट व करने के प्रकट में अधिष्ठित प्रकटता प्रकट होती है। प्रकट प्रकट के अधिष्ठित में उपस्थिति अधिष्ठित के आत्मतत्त्वज्ञानी पर प्रकटता की प्रकटता है। अधिष्ठित तथा अधिष्ठित ( *Atkinson & Feather, 1944* ) में उपस्थिति आत्मतत्त्वज्ञानी की अधिष्ठित करते प्रकट प्रकट है कि, 'प्रकट प्रकटता प्रकट करने या उपस्थिति के अधिष्ठित की अधिष्ठित प्रकट प्रकट है।' अधिष्ठित ( 1944 ) के अधिष्ठित, 'उपस्थिति आत्मतत्त्वज्ञानी की विद्वान अनुकूल में प्रकट, अधिष्ठित अधिष्ठित का अधिष्ठित करता है। यह प्रकट प्रकट प्रकट होता है जब अधिष्ठित प्रकट प्रकट होता है कि उनके प्रकट का प्रकटता



संभाव्यता (  $PM$  ) और निष्कर्ष के औसतन गुण (  $IM$  ) का गुणात्मक अंतर है। उनके बिना निम्न गुण प्रमुख होता है :-

**THE BOLD & THE BEAUTIFUL**

अर्थात् विद्यार्थी के अभिभावक की प्रवृत्ति, विद्या की संस्था, विद्यार्थी की अभिरूपायता, तथा विद्यार्थी के अभिभावक कुल का सुव्यवहार है। इन प्रवृत्तियों में अभिभावक विद्या का उत्तम विद्यार्थी के उत्तम प्रयोग, उत्तम और उत्तम है। T<sub>1</sub> और T<sub>2</sub> का अध्ययन नाम अर्थात् के अर्थात् विद्यार्थी का प्रयोग प्रयोग, केवल प्रयोग अभिभावक नाम अर्थात् अभिभावक का प्रयोग विद्यार्थी के प्रयोग प्रयोग का प्रयोग प्रयोग है।

यह प्रमाण, प्रमाणिक व्यवस्था प्रमाण की शक्ति या निष्पत्ति के परिमाण की व्यवस्था के दोगुने है। यह दो व्यवस्थाओं की व्यवस्था के आधार पर प्रमाण के व्यवस्था के विषय में कुछ व्यवस्थाओं का प्रमाण है :—

(ii) यदि न्यायवादी-न्यायपरिचर प्रदान, निष्कर्षात्ते परिपूर्ण होकर से अधिक है  
[ John D. Macneil ] का मॉडल में उपस्थिति के बिना प्रतिपक्ष की अधिक होती :

(ii) यदि विद्यार्थी के परिदृष्टि की वजह से, वास्तव उपलब्ध होना के अभाव में  $\text{Mark} > 10$  होती है तो व्यक्ति में उपलब्ध कुल की मात्रा गणना होती है।

(211) डीकार की कण्ठस्थाना वृत्त यथा: श्री श्रीर सकेत काशी हे । यम कण्ठस्था श्री  
 डीयता यथा निम्नलिखित-रित्याह श्री डीयता ( *ka ka ka* ) अथवा यम में यमकीर  
 होती है ।

(15) चौथी उपसमस्या यह प्रश्न की जाती है - क्या सीमें-डेन और Merf कृषक कोष में समतुल्य है। इन उपसमस्याओं की राय सीन एवं हावस ( 1953 ) और एडमिशन तथा मिडिल ( 1966 ) ने की तथा यह परिणाम प्राप्त किया की प्रथम उपसमस्या-सीन एवं हावस और दूसरी विषयता परिहार के प्रेरित प्रदीप्त देशों काही की प्रत्यक्ष करते हैं किन्तु विषयता की संभावना स्पष्ट होती है। साथ ही यह भी उचित किया कि प्रदीप्त एवं प्रत्यक्ष कार्य में समतुल्य कार्य के बिने प्रदीप्त प्रथम प्रभाव करते रहते हैं। मैकलीनिय तथा वाय ( 1953 ) ने यह प्रभावित किया कि यह समतुल्य प्रभाव कि प्रवृत्ति प्रत्यक्ष होती है की प्रवृत्ति प्रभावशील कठिनाई करते काही की प्रभाव करते हैं। इसी प्रकार यह विषयता के परिहार की प्रवृत्ति के साथ की होती है, प्रदीप्त प्रभावशील कठिनाई करते कार्य के विषयता के परिहार की प्रवृत्ति प्रभावशील होती है। इसी कारण यह समतुल्य की प्रवृत्ति प्रभाव होती है की प्रभावशील कठिनाई के कार्य प्रभाव बिने करते हैं किन्तु





अवधि या प्रमुख कारण जल्दी ब्रह्म ज्ञानविषय आशयकता है। उपलब्धि प्राप्त करनेका अर्थिक अवधि या एक कारण ही उपलब्धि प्राप्त होती है किन्तु लक्ष्मीजी अवधि या ब्रह्म विषय आशयक कारण होने पर ब्रह्म ही प्राप्त है।

**उपलब्धि आवश्यकता :** एक सामाजिक प्रेरक के रूप में

(The significance of a achievement as a social media)

कमजोर आत्मशक्तता की निम्नतम व्याख्या इसलिङ्ग की गई क्योंकि यह एक सामाजिक अभिव्यक्ति के रूप में कार्य करती है ।

[illegible]

सामाजिक जागरण-शक्ति द्वारा व्यक्ति के सुख एवं अधिकृतियों के परिहास की भाषा बिलम्बी अधिक होती है, उसका अन्तःसामाजिक व्यवहार भी उतना अधिक सामाजिक होता है, सामाजिक जागरण-शक्ति में सम्यक् अर्थ प्राप्त करने वाले सम्यक् लोगों के साथ एक सामर्थ्य की पुरस्कृत होती है जब वे सम्यक् व्यक्ति बनने का ही लक्ष्य करते हैं, किन्तु जब सम्यक् करने का ही लक्ष्य होते हैं तो उनके प्रति यह अनासक्तुक्त सामाजिक प्रतिशिक्षण करता है। वे कार्य करते समय दूसरों पर आश्रित होने की अवस्था जागरण-शक्ति को विलम्ब करती है।

अर्थ में उपलब्धि वाचकका एक संज्ञक निम्नलिखित परिवर्तन है। इसका अभिप्राय यह कि कुछ समाज का संज्ञकियों जिसे उपलब्धि को केन्द्रीय माना जाता है। जबकि अन्य संज्ञकियों का समाज की समृद्धि की दृष्टि से केन्द्रीय है और इसे समृद्धि की वाचकता और समृद्धि-निष्ठा (Group solidarity and loyalty) के प्रति समर्पण मानते हैं।

**अनुमोदन आवश्यकता ( Dis-appraisal )**—यदि बाढ़ा है कि अन्य लोग इसके अवधार, विचार, तथा कार्यों की सामाजिक एवं नैतिक रूप में अच्छा समझे, इसकी प्रशंसा एवं अनुमोदन करें। इसका तात्पर्य यह है कि अनुमोदन आवश्यकता

व्यक्ति के सम्बन्ध में सम्पन्न है। बाईं पक्षों के अनुसार अत्यंत व्यक्ति अपनी विविध आवश्यकताओं तथा योग्यताओं को अभिव्यक्त करना चाहता है, जो उसके स्व-संतुष्टि के अनुकूल हो। इसी कारण में कार्यपालन का अनुकूल होता है। और व्यक्ति को अपनी समस्याओं में कार्य-विमोक्षण करना होता है। व्यक्ति, अपने व्यवहार एवं कार्य की प्रवृत्ति, स्वीकृति एवं अनुमोदन से सम्बन्ध होता है और यवका सर्वोपेक्षा करता है। इसी कारणों से व्यक्ति जब कार्य को करना चाहता है किन्तु समाज बाह्यीय व्यवहार स्वीकृत एवं अनुमोदित करता है। इस तरह व्यक्ति सामाजिक स्वीकृति की इच्छा करता है जिसके पीछे अनुमोदन अभिव्यक्त कार्यरत होता है। सामाजिक स्वीकृति तथा अनुमोदन व्यक्ति को अन्य समस्याओं की संशुद्धि में वैयक्तिक होती है, कार्यरत व्यक्ति द्वारा सामाजिक अभिव्यक्ति (Social status), सामाजिक स्थिति, या व्यक्तिगत व्यवहार की आवश्यकता पूरी हो सकती है।

अनुमोदन आवश्यकता सभी लोगों में होती है किन्तु किसी में अधिक और किसी में कम होती है। जिसमें वह अच्छा व्यक्ति होती है उसमें मात्र सामाजिक एवं वैयक्तिक दृष्टि के व्यक्ति जिसमें और व्यवहार की व्यवस्था की जाती है, क्योंकि वे ऐसा करने समाज की स्वीकृति प्राप्त करता चाहते हैं। ऐसे व्यक्ति समाज द्वारा विभिन्न कार्य को करने के योग्यता की करते हैं, इसलिए कि समाज का अनुमोदन प्राप्त करने का यह भी एक कारण है।

व्यक्ति का व्यवहार दूसरों के विचारों एवं प्रतिक्रियाओं से प्रभावित होता है। इस तरह वह व्यक्ति समाज की स्वीकृति करता है। इस तरह की व्यवस्था में व्यवहार व्यवस्था तथा बाईं (1964) के अनुमोदन अभिव्यक्ति को सुव्यवस्था-व्यवस्था व्यवस्था (Socialization and socialization) कहा है। इस व्यवस्था में व्यक्ति अपनी समस्या, योग्यता एवं सुव्यवस्था की दृष्टि पर व्यवस्था में देखने, ऐसे विचार विचारों एवं भावनाओं का अनुमोदन करता है किन्तु समाज के अन्य समस्याओं का अनुमोदन, प्रवृत्ति तथा स्वीकृति मिले।

अनुमोदन व्यवस्था के कारण में व्यक्ति स्वीकृति अनुकूल होती है। व्यवस्था तथा बाईं (1964) के सामाजिक वांछनीयता माननी (Social desirability index) का निर्माण किया है। इस माननी में कुछ वैयक्तिक प्रवृत्ति हैं। व्यक्ति इन माननी का उत्तर देता है। माननी में व्यवस्था प्रवृत्ति प्राप्त करते हैं, जो उनके अनुमोदन अभिव्यक्ति का प्रवृत्ति होता है। किसी व्यक्ति के अंतर्गत व्यक्ति होता है, व्यवस्था अनुमोदन व्यवस्था व्यवस्था ही प्राप्त होती है। अनुमोदन व्यवस्था तथा व्यक्ति अनुमोदन, प्रवृत्ति तथा सामाजिक व्यवस्थाकरण में सम्पन्न होते हैं।

व्यक्ति अनुमोदन से सम्बन्ध व्यवस्था के प्रति अनुकूल अनुमोदन व्यक्ति होता है

पर प्रतीक की अधिक पूर्णतया प्रकाश करती है, जिसके लिये यह आवश्यक होता है कि उसके आधार का अनुमीतन किया जा रहा है। इस विषय में यह उपलब्धता की जाती है कि अनुमीतन की आवश्यकता मिलती प्रकाश होती है, क्योंकि अनुमीतन सम्बन्धी पूर्णतया के लिये ही अधिक प्रभावित होता और अपने अधिक अनुमीतन करने ही संशयानुमीत सम्बन्धित होता। इससे तथा वाली में इस उपलब्धता का प्राथमिक सम्बन्धन किया है।

सामाजिक सुरक्षा और अनुमीतन के सम्बन्धी की भी सम्बन्धित किया गया है। ऐसी सम्बन्ध है कि अपने अनुमीतन आवश्यकता वाले वाली में अपने अधिकारी और अनुमीतन का सम्बन्धीकरण सम्बन्धित अधिक सम्बन्धीय होता है। दूसरी ओर पूर्णतः अनुमीतन प्रकाश करने वाले अधिकारी का सामाजिक सम्बन्धीकरण सामाजिक सुरक्षा के सम्बन्धीय होता है। इस उपलब्धता का सम्बन्धित सम्बन्धन अधिक सम्बन्धीयताओं के किया है। सम्बन्धीय, (1943) सम्बन्धीय तथा सम्बन्धीय (1952) ने देखा कि अधिकारी के अधिकारी के सम्बन्धित वाली के अधिकारी में अधिक सम्बन्धित करता है उससे सम्बन्धित द्वारा सम्बन्धित वाली का अधिकारी कम सम्बन्धित होता है। इस विषय में सम्बन्धित वाली के सम्बन्धित द्वारा कि अनुमीतन सम्बन्धित प्रकाश होने पर अधिकारी में सामाजिक सुरक्षा अधिक होती है।

अनुमीतन तथा अनुमीतन प्रकाश और अनुमीतनता (Annuity) में भी सम्बन्धीय का सम्बन्धित हुआ है। ऐसी सम्बन्ध की जाती है कि अपने अनुमीतन सम्बन्धित वाले अधिकारी में अनुमीतन प्रकाश में अपने तथा अधिक अनुमीतनता होने की सम्बन्धित होती। इस अधिकारी का सामाजिक सम्बन्धित सम्बन्धित तथा सम्बन्धीय (1962) ने किया। सम्बन्धीय के लिये सम्बन्धीय में सामाजिक सम्बन्धित सम्बन्धित गया। एक सम्बन्धित अनुमीतन प्रकाश की भी, दूसरी प्रकाश में एक सम्बन्धित अनुमीतन के लिये और अधिकार सम्बन्धित प्रकाश प्रकाश गया। लिये वाली प्रकाश में 4 सम्बन्धित वाली के लिये के सम्बन्धित सम्बन्धित का निर्देश करने का निर्देश का। सम्बन्धीय के सम्बन्धित द्वारा कि सम्बन्धित अनुमीतन सम्बन्धित प्रकाश प्रकाश में सामाजिक सम्बन्धित में सम्बन्धित का सम्बन्धित किया।

सम्बन्धित सम्बन्धितता (In-Attribution) — सम्बन्धित एक सामाजिक लीन है, इस लिये उसके अधिकारी वाली की सम्बन्धित की अधिक सम्बन्धित होती है। सम्बन्धित सम्बन्धित की लिये वाली वाली प्रकाश। सामाजिकता सम्बन्धित की सम्बन्धित सम्बन्धित है। लिये (1972) ने सम्बन्धीय सम्बन्धित लिये प्रकाश है कि यह एक सम्बन्धित प्रकाश का सम्बन्धित है लिये सम्बन्धीयता सम्बन्धित (Interpersonal relations) लिये लिये, सम्बन्धित, सम्बन्धित तथा एक लिये के लिये सम्बन्धित सम्बन्धित लिये है तथा सम्बन्धित के लिये लिये लिये है। ( "Attribution is an active disposition

due to which interpersonal relations are established and maintained which include warmth, sympathy, understanding and co-operation.”)

इस पर है कि मानव क्यों दूसरों का साथ चाहता है ? ज्ञान के मनोवैज्ञानिक यह कहते हैं कि बहुत बड़काठिना की पुनरावृत्ति के कारण मनुष्यों की तरह मनुष्यों में रहते हैं। टुलर (1928) के अनुसार हम पुनरावृत्ति के कारण व्यक्ति मनुष्य में रहता है। कुछ ही समय बाद सम्बन्ध के एक अनुसन्धक रचना की परीक्षा किया जाने लगा। सम्बन्ध सम्बन्धता के कारणों की बात करने के अनेक प्रयास हुए हैं। आज कुछ कारण यह है कि व्यक्ति की अधिकांश आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिये दूसरों का साथ या उपस्थिति आवश्यक होती है। सामाजिक विज्ञान विज्ञान के अनुसार लोगों का एक दूसरे से सम्बन्ध-रचना किसी तरह की प्राप्ति का साधन होता है ( People affiliate as a means to an end )

सम्बन्ध विज्ञान के अनुसार अन्य व्यक्तियों के पूर्वग्रह स्पष्ट होता है। इसके अनुसार अनुवीक्षण, प्रीकृत, जलवा, मान्यता आदि आवश्यकताओं की पूर्ति केवल अन्य व्यक्तियों या मनुष्यों द्वारा संभव है।

सम्बन्ध का एक विद्वित स्पष्ट इसके द्वारा मानवसुसंस्कृत का अन्तर है। सामाजिक दुःख का भी अन्तर दूसरों के साथ रहने से प्राप्त होता है, यद्यपि इस पर हम अपनी पुनरावृत्तियों और विचारों से अलग होते हैं।

सम्बन्ध के व्यक्ति की विद्या से कभी जाती है। यदि किसी व्यक्ति की विस्तृत अवधि एक साथ और उसे किसी के समर्थन की अनुपस्थिति है, न ही उसे असाधारण, बुरा, दुःखी, टोलीको, टी-वी- और रेडियो दिखा कर उसे संभार विद्या का अनुभव होता है। इस प्रकार सम्बन्ध एक अति आवश्यकता है।

सम्बन्ध पूर्व विज्ञान—जो अन्य आवश्यकताओं के पूर्ण होने के बाद भी व्यक्ति असाधारण की अवस्था अन्य व्यक्तियों के साथ रहता 'चाहते' हैं। किसी की एकता में रहता एक प्रकार का ऐसा संकट है जिसे हमने कभी एक यह कहते हैं। बीयर ( Hebbacher, 1951 ) ने यह तर्क दिया कि एकता के कारण विद्या अलग होती है जो किताब परकार के खेल के समान होती है। विद्या और सम्बन्ध के बीच सम्बन्धों के सम्बन्ध हेतु बीयर तथा उसके सहयोगियों ने अनेक प्रयास किए। उन्होंने पूर्व-प्राप्त आवश्यकताओं की अनुपस्थिति के कारणों और विविध मनुष्यों में बीयर। सामाजिक मनुष्यों में प्रयोगकर्ताओं के निर्देशों द्वारा सम्बन्ध विज्ञान अध्ययन करने का प्रयास किया। उन्हें सूचित किया गया कि वे बीयर विस्तृत साधन प्राप्त करेंगे जिससे संकट ही होता किन्तु बीयर व्यक्ति न होती। यह भी बता दिया गया

जि जी लानाहीं शरीर में जान न देला जाई उहाँ जाने की अनुमति है । कर्म कहु  
ला कि प्रतीत आरंभ होने के पूर्व जहाँ कुछ देर तक प्रतीक्षा करनी होगी । वे प्रती  
तिवद्ध के जाने के बाद में प्रतीक्षा कर सकती है और यदि जाई हो जान प्रतीति के  
बाद कर्म करने में प्रतीक्षा कर सकती है ।

विशेषित समूह की प्रयोगशालों की भी नहीं निर्देश प्राप्त होते, अन्तर केवल यह है कि उन्हें बताया गया कि विद्युत अभाव बहुत होने लगा है। उन्हें सुझावों की प्रतिक्रिया होती है : लक्षणकाल आलोचिक एवं विशिष्ट समूहों की प्रयोगशालों में एक प्रयोगशाली परेशान है : प्रयोगशाली में मिले वाले प्रयोग का आकाश का प्रयोग करते हैं कि प्रयोग में प्राप्त होने वाले विद्युत अभाव प्रयोगशाली में विद्युत विद्युत प्रयोग करते हैं ।

इस सम्मेलन की उपस्थिति यह थी कि परिवारों का विकास के कारण व्यक्ति में सुव्यवस्था की आवश्यकता उत्पन्न होती है। परिवारों का सुव्यवस्था में व्यक्ति द्वारा दूसरों का साथ माँगता है। विभिन्न व्यक्ति अपने-विशेष कार्य-कार्यक्रमों का साथ नहीं चाहते हैं ? जीवन के सम्मेलन के द्वारा परिवार इस प्रकार है :—

(1) राज्य विद्यालयों की 1/3 प्रतियोगिताओं में प्रवेश में भाग लेने के लिये परीक्षा, प्रतियोगिता विद्यालयों की किसी प्रतियोगिता में प्रवेश में भाग लेने के लिये प्रतियोगिता नहीं करनी।

आवधिकार कानून में 32 में 20 प्राधान्यों के अंतर्गत कार्य में अन्य प्राधान्यों के साथ समान व्यवहार करना वास्तव में है, दूसरी ओर अन्य कानून की दृष्टि से केवल एक प्राधान्यों के दूसरी व्यवहारों के साथ प्रतीक्षा करने की दृष्टि से है।

हीनार के अपने प्रयोग-विभागों के आधार पर अनेक उपकरणवर्गें निर्मित की हैं। इनमें प्रमुख कुछ प्रकार हैं।

(iii) राज्य विपदा कबूत की कानाई राज्य विपदाभल कानाओं के नाम इतिहास कायदा काहली की कोलि के लोविक की बलिपकानी मालती की और उनके अपने की अधिवासा काहली की ।

(iii) राज्य विद्यालयों को प्रयोग के विषय में और अधिक जानकारी दी जाएगी।

(iii) कर्मचारी विभागा समूह की प्रत्येकवर्षीय कार्य विवरणगत गतिविधियों के समन्वयक के द्वारा समूह की विस्तृत को गतवर्षीय या प्रस्तावित कार्य हैं ।

श्रीधर ने यह प्रदर्शित किया कि चिन्ता, सम्मानन की आवश्यकता उत्पन्न करती है, जहाँ चिन्तामय व्यक्ति सम्मानन के बिना उत्पन्न एवं उत्पन्न होता है।

साम्प्रदाय तथा सम्प्रदाय :- डेवर ( 1959 ) ने पिता के अधिकृत सम्प्रदाय विवाद सम्प्रदाय की विवेक है । उन्होंने सम्प्रदाय तथा सम्प्रदाय के विषय में प्रकाशित किया कि प्रथम तथा दूसरी पीढ़ी के बीच विवाद होने पर दूसरी के साथ रहना चाहती है । उनके अनुसार ये अनुसूचित की अधिक होती है । Becker and Carroll, ( 1962 ) के प्रथम तथा दूसरी पीढ़ी के बीच के अधिक अनुसूचित ( Cohesiveness ) के प्रभाव का विवेक । डेवर, वेल्सकी तथा डेवर ( 1957 ) के अनुसार, अनुसूचित के प्रभाव में प्रथम तथा दूसरी पीढ़ी के सामाजिक में अलग रह जाते हैं और प्रथम पितामह संवर्धन के रूप में रहते ही रहते हैं ।

काले समाज परिवर्तन की प्रक्रिया के कारण पर डेवर एवं डेवर ने यह कहा कि प्रथम तथा दूसरी पीढ़ी के सम्प्रदाय की अधिक बढ़ की प्रारंभ की होती है :-

(1) यह सभी सामाजिक परिवर्तन के अधिक प्रकाशित होते हैं ।

(2) प्रथम की यह पिता की प्रथा फिर कर देने के प्रथम तथा दूसरी पीढ़ी के बीच के बीच का अलग-अलग की अधिक होती है । डेवर ( 1959 ) ने भी काले सामाजिक परिवर्तन के कारण पर विचारों (Zimbardo, 1961) ने भी काले सामाजिक परिवर्तन के कारण पर विचारों का किया कि यह में वृद्धि सम्प्रदाय की होना चाहती है । किन्तु पिता में वृद्धि सम्प्रदाय की आवश्यकता की प्रभाव पर होती है ।

इसी प्रकार कुछ सर्वेक्षणों के सम्प्रदाय की आवश्यकता तथा सामाजिक सम्प्रदाय का सम्प्रदाय पर यह विचारों का किया कि यदि जीवन के सामाजिक विषयों में प्रथम तथा द्वितीय के सम्प्रदाय के कारण कि द्वितीय को कम प्रभाव होता है जो द्वितीय पीढ़ी के सम्प्रदाय की आवश्यकता का भी अधिक अधिक होती है ।

इस प्रकार यदि सामाजिक परिवर्तनों के कुछ विचारों पर यह प्रभाव होता है कि विभिन्न या दूसरी पीढ़ी के बीच के बीच प्रभाव रहता रहता है यदि प्रथम पितामह में प्रभाव होता है, और प्रथम में प्रभाव का अनुभव होता है । इस सम्प्रदाय परिवर्तन में यह भी विचारों के अनुसार है कि सामाजिक परिवर्तन एक सम्प्रदाय अनुभव है यह कि सामाजिक परिवर्तन के अधिक की प्रभाव का अनुभव हो होता ही है, किन्तु यह भी प्रभाव होता है । यह सम्प्रदाय उन सामाजिक परिवर्तनों की और भी प्रभाव करते हैं जो सामाजिकता की प्रभावों में अधिक की सम्प्रदाय आवश्यकता की प्रभाव का विचारों की है ।

कुछ सम्प्रदायों के यह भी विचारों का है कि प्रभाव, यह सामाजिक परिवर्तनों का अधिक प्रभावों के अधिक सामाजिक और सामाजिक परिवर्तनों की प्रभाव में अधिक प्रभाव

है। पिछी बाहुटी कटने या संकट के समय आसानी काम-काज एवं कार्यवाही प्रभुता के सभी का पाले है। इसका अभिप्राय यह है कि व्यक्ति ऐसी मर्यादा के अतिरिक्त अधिक सम्पन्न की बाहु मर्यादा है।

शक्ति आत्मशक्तता (Self-empowerment) —कठिन प्रयास में शक्ति का प्रदान है। जब व्यक्तिओं या समूहों में शक्ति होती है तो शक्ति का विकास सम्भव हो पाता है। अधिकृत शक्ति अन्य व्यक्तिओं, समूहों या समूहों पर नियंत्रण प्रदान करता है। यही नहीं बल्कि अन्य लोगों के व्यवहार और कार्यों को नियंत्रित एवं नियंत्रित करने का प्रयास करता है। इस प्रकार शक्ति में सम्पूर्णता के तत्त्व निहित हो सकते हैं। शक्ति आत्मशक्तता की अवधि मानव प्रयत्न, समूह की इच्छा, सामाजिक की इच्छा और कभी-कभी आत्मशक्तता के भी हो सकती है। शक्ति के अतिरिक्त शक्ति शक्ति अधिक व्यवहार या विचारों करते हैं—जैसे वैयक्तिक व्यवहार, शैली, व्यवहार और समूहों के निर्देश के कारण शक्ति। यह आत्मशक्तता कुछ न कुछ सभी लोगों में होती है परन्तु कुछ लोगों में यह शक्ति के अधिक या कम होता है। यदि नेता की शक्तिशाली कोई अधिकारी नहीं पाया जाये तो नेता जब शक्ति हथकड़ी की शक्तों में तो यह शक्ति आत्मशक्तता का ही अवलोकन करता है।

बैरामपुर ( Warangal 1957 )—के अनुसार यह व्यवस्थापन के वैश्व स्तर पर अन्य व्यवस्थाओं के व्यवहारों की प्रभावित करने वाले कारकों पर विचारण स्थापित करने में सहायता देता है। अन्य सीधों पर विचारण स्थापित करने के अनेक मामलों में अनुभव या प्रभावित ( Disadvantaged ), जैसे कि अनुभव, ज्ञान, विवेक, नीति, आदि, प्रभाव, पुनर्स्थापन, अन्य, विविध व्यवस्थाओं की सभी व्यवस्था अनुभव है।

आन्दोलन दृष्टिकर ( 1929 ) की व्यापक के आन्दोलन विधियों में प्रमुख थे, सक्ति की शक्ति की प्रमुख आन्दोलनका मायदा थी। यह सक्ति की भी सक्ति का, आन्दोलनिक रूप मानता था। उसके अनुसार बीबी में आन्दोलनका की मायदा सक्ति के अनुक्रमों के दूर होती है। बीबी दृष्टि ( 1950 ) के अनुसार एक सक्ति सक्ति की मायदा द्वारा अपनी दूर सक्ति की मायदा के अनुक्रमों का मायदा है। दृष्टिकर के दृष्टिकर के अनुसार की सक्ति सक्ति आन्दोलन का मायदा सक्ति के कारण ही मायदा के बीबी दृष्टि है। विधियों का के सक्ति की मायदा करते हैं। नवीनवादीक अनुक्रम सक्ति दृष्टिकरका के अनुसार बीबी की विधियों की बीबी, सक्ति सक्ति का बीबी का, तथा दृष्टिकर की आन्दोलन बीबी की सक्ति सक्ति के ही सक्ति सक्ति की मायदा की मायदा है।

कृषि आसुधारकता सर्वोच्च, तथा व्यक्तिगत सम्बन्धी-कारणों के सम्बन्ध में शिक्षकों  
को भी बहुत जानकारी मिली है ।





वेदव्यास तथा अन्य ( 1960 ) ने अवलोकित किया कि राज्यों में कार्यवाहकों में प्रचलित आचरणकर्ता वाली जाती है। अधिक वर्षों में अति वेदव्यास तथा पूर्ण सुखा के कारणों में अवलोकित होती है। उन्होंने यह भी अवलोकित किया कि राज्याध्यक्ष की अनेका अष्ट परिणाम में अति सामान्य की अधिक अनुति होती है। कारण यह है कि वे राज्यों पर व्यापक विवेक तथा वास्तविकता के समझने की होती है। वह अन्तर हम यह समझे है कि अति की आवश्यकता के ही कारण कोई अति मात्र लोगों, सदस्यों, या सदस्यों को नियमित करने का प्रयास करता है, उनके जातीय और राज्य की नियमितता एवं नियमित करने का प्रयास है।

2010/01/20 2010/01/20

### References

[illegible]

आत्मरक्षता का सर्वोत्तम परिभाषा—जिसी, वैज्ञानी तथा वैदिक के अनुसार "आत्मरक्षता का सर्वोत्तम व्यवहार है जिसका उद्देश्य किसी भी मुकाम या हानि पहुँचाना होता है। इसमें कुछ विचारों का अर्थ दिया जाता है, जो अन्य मामलों में कुछ और के साथ अलग होती है जो अन्य व्यक्ति द्वारा किए जाते हैं।" (Aggression, to this term is commonly used, means behaviour that is intended to hurt or injure someone. Most human adults have quite a repertoire of acts that fit this definition. Some of these are bold and violent, others shy

and attributed. Some are accompanied by tags or slogans, others are done coldly and surgically, to the perpetrator, without emotion" ( )

दोहर्ती तथा अन्य ( Dollard et. al, 1939 ) के अनुसार "आक्रामकता वह अनुचित है जिसका उद्देश्य अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों को क्षति पहुँचाना है ।" ( Dollard et. al. defined aggression as a behaviour whose goal is the injury of the person toward whom it is directed." ) उन्होंने उद्देश्य पर विशेष धन दिया है, क्योंकि यदि उद्देश्य हानि पहुँचाना न हो तो तब हानि ही बाद की वह आक्रामकता नहीं कहलायेगी । कम ( Sears, 1965 : ) के अनुसार आक्रामक एक ऐसी अनुचितता है जिसने द्वारा व्यक्ति द्वारा व्यक्ति को क्षतिकारी उद्देश्य प्राप्त करना है : ( Sears has suggested that aggression is directed as such when there "deliberate conscious intention to accomplish aggression." ) एक प्रकार से कि के विभिन्नता द्वारा आक्रामकता की विकासने में जो कदमों की उद्देश्य इसके द्वारा प्राप्त होती है, वे भी आक्रामकता नहीं माने । इस प्रकार आक्रामकता के उद्देश्यों पर ध्यान देना आवश्यक है । इसकी परिभाषा के विषय में विभिन्न वैज्ञानिक परिचालनों पर पुष्टिपत्र समान आवश्यक उचित होता है ।

आज के समय हमारा धन धन मनोविज्ञानकारों की द्वारा वह भी कि हमारे सभी में आक्रामकता की अवस्था प्रत्यक्ष होती है । उनके अनुसार हमारे शरीर में निरन्तर आक्रामकता की प्रवृत्ति होती रहती है । इस प्रकार आक्रामकता एक निहित आक्रामकता (Ingr) है जिसे अभिव्यक्ति चाहिए । इसकी अभिव्यक्ति अवास्तविकता के भी हो सकती है जैसे—बात-विवाद, झगडा की अतिदीर्घताएँ एवं झगडे, आलोचना आदि, या अन्य लोगों के जैसे अवास्तविकता कहाँ या हमारे द्वारा । कभी-कभी निराश्रय की प्रवृत्ति स्वयं अपने निरुद्ध विविध होती है जिसकी प्रवृत्ति 'आत्महत्या' के रूप में व्यक्त होती है ।

कोसलॉन्की पुष्टिपत्र के लेखक कोसलॉन्की (Koslow, 1966) के अनुसार, "आक्रामकता प्रत्यक्ष और अत्यन्त में सख्त की प्रवृत्ति है जो अपनी ही प्रवृत्ति के लक्ष्य कदमों की ओर प्रवृत्त होती है । इसके अनुसार वह भी है प्रती प्रवृत्ति है, इसका उद्देश्य अपने सभी धन मनोविज्ञान तथा व्यक्तियों की प्राप्त करना है । दूसरी ओर में आक्रामकता का प्रति अतिरिक्त (Survival)—मृत है ।" ( Koslow describes aggression as, "the fighting instinct in man and man, which is directed against the members of the

same species." According to Lorenz, aggression is not a bad thing in itself, rather, it functions to preserve the species as well as the individual. In other words, aggression has survival value.)

कार्लोस का दृष्टिकोण कुछ स्तरों में समग्र के समान होते हुए भी इस मामले में भिन्न है कि कार्लोस ने निम्नोक्त एक दृष्टिकर एक को दूसरे में इसके विरोधाभास एवं अनुकूलन एक पर अधिक धन दिया है। इसके अनुसार निम्नोक्तारी व्यवहारों के बचाने हेतु स्तरों के कार्लोसोक्ताने हेतु समग्र प्रकार की स्तरों एवं अन्य अधिग्रहणियों का प्रयोग होता पायी है। कार्लोस अपनी बात को तथा व्यवहारिक विज्ञान के लिए स्तरोंका का एक बना है। वह भी कहा गया है कि इससे वैज्ञानिक स्तरों की प्रेरणा की है तथा निम्नोक्तारी स्तरों के अनुसार निर्देशन के आधार पर अपनी व्यवहारियों की स्तरों करने का प्रयास किया है।

सामाजिक अधिग्रहण विज्ञान ( Social learning theory ) के बीच समग्र की सीखा हुआ या अधिग्रहण व्यवहार मानते हैं। एन्थोनी डे-वी-स ( 1958 ) ने कहा है कि समग्र के वैज्ञानिक समग्र स्तरों होते का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। उन्होंने कहा है कि समग्र के सभी स्तरोंका वास्तविकता में निम्नोक्तारी के बात होती है। ( All reasonable findings point to the fact there is no physiological evidence of any internal need or spontaneous driving force for fighting; that all motivation for aggression comes essentially from the forces present in the physical environment. )

यह वह कहा है कि समग्रका व्यवहारका का अधिग्रहण की होता है? इस दृष्टिकोण के बीचों में के बीचों ( 1973 ) के अनुसार एक अधिग्रहण वैज्ञानिक अनुसंधान तथा अनुसंधान ( Observational learning ) के बात होता है। यदि हमारे के बारे में यह का वही स्तरों के समग्र बात में के लेती है और समग्रों है तो हमारे वैज्ञानिक विज्ञान का अनुसंधान होता है और अधिग्रहण में भी सीखने वाले की सीखना होती है। हमारे अपने समग्र-विज्ञान का अन्य अधिग्रहण ( learning ) की देखकर भी सीखी ही अनुसंधानों करने अपने है।

एक स्तरों की समग्र में पहले हुए समग्रका की अधिग्रहण करने के प्रयास में बीच ( Baron 1977 ) ने कहा है, "समग्रका किसी प्रकार का व्यवहार है जिसका समग्र किसी दूसरे वैज्ञानिक स्तरों की अनुसंधान या अधिग्रहण है जो हमारे अधिग्रहण के लिए अधिग्रहण होता है। ( Aggression is any form of behav-



कुम्भार-आन्दोलन दृष्टिकोण में सबसे अनुपम अभिव्यक्ति यह है कि इनके माध्यम पर आकाशवाणी के विषय में अनेक उपलब्धित आकाशवाणीकरण मिले चले हैं, जैसे आकाशवाणी केन्द्र केवल कुम्भार की परिभाषा है या कुम्भार कुम्भ विद्यापीठ विद्यापीठ द्वारा की अनुपम हो सकती है। इन अभिव्यक्ति की व्याख्या करते बालीविन्द ( 'Baliyavinda' 1969 ) के अध्ययनों के माध्यम पर कुछ उपलब्धता में संशोधन मिले हैं। सर्वप्रथम, उनके अनुसार, कुम्भार के आकाशवाणी केन्द्र केवल उपलब्धता कायम होती है, विद्यापीठ कायम रहते वे हीभी हुई आकाशवाणी में भी विद्युत हो सकता है। द्वितीय, आकाशवाणी केन्द्र के प्रति होने में परिचितपरिचय कायमों का भी रूप हो सकता है। तृतीय, अपने अध्ययनों द्वारा उपलब्धता कायमों की दृष्टि की भी किन्तु उनके द्वारा अनुपम संशोधन और कुम्भार-आकाशवाणी उपलब्धता में 'अधिक व्याख्या उपलब्ध नहीं होती। तृतीय, अपने लेखों के माध्यम पर वह भी बताया कि आकाशवाणी केन्द्रों की उपलब्धता में आकाशवाणी केन्द्र के प्रति होने की उपलब्धता अधिक हो जाती है।

ए केवल होता कि कुम्भार विद्या आकाशवाणी के हो सकती है परन्तु कुम्भार-आकाशवाणी में ऐसा परिचयार्थ उपलब्ध हो गया जो किताबें कुम्भार के आकाशवाणी केन्द्र की उपलब्धता कर रहे। आकाशवाणी केन्द्र अनेक प्रकार के अभिव्यक्ति हो सकता है। सांस्कृतिक अभिव्यक्ति अभिव्यक्ति हमारे जीवन में कुछ प्रविष्टा विद्यार्थी है। सभी प्रकार उपलब्ध-विद्युत की उपलब्धता की उपलब्धता और विद्युत कर सकता है। अनेक अध्ययनों के उपलब्धता हुआ है कि जब आकाशवाणी आकाशवाणी का अनुपम कायमों की हो वह प्रति होता है ( 'Dance and Dolls', 1940 ).

## परदृष्टि अभिव्यक्ति

( 'Alcoholic Mother' )

आम कालिका में लक्ष्य की देते हैं। बीटीए में आम का विद्युत चुम्बक के उपलब्धता आकाशवाणी होता है कि आमका नहीं की गया। आम लक्ष्यी दूर जाति की आकाशवाणी केन्द्र है, किन्तु कुछ लक्ष्य शब्द नीतिश्वरी पर लक्ष्यी नीतिश्वरी के आम लक्ष्यी पदों है कि किसी एक आम के लक्ष्यी नीतिश्वरी अभिव्यक्ति में आम कर दिया है। आम लक्ष्य में लक्ष्य-लक्ष्यी और लक्ष्यी आम लक्ष्यी है, "लक्ष्यी, लक्ष्यी"। उपलब्धता लक्ष्यी आम लक्ष्यी है। लक्ष्यी में एक लक्ष्यी के लक्ष्य में आम लक्ष्यी है। अनेक लक्ष्य लक्ष्यी आम लक्ष्यी है। आम भी आम लक्ष्यी में लक्ष्य लक्ष्यी है। लक्ष्यी लक्ष्य में आम पर विद्युत हो जाता है।

द्वितीय लक्ष्य में कुछ लक्ष्यी लक्ष्यी है। आम लक्ष्य के लक्ष्य में लक्ष्यी आम कर लक्ष्यी है। उपलब्धता लक्ष्यी आम लक्ष्यी है। लक्ष्य लक्ष्यी लक्ष्यी लक्ष्यी लक्ष्यी

बोला है। काम होकर काम की आकांक्षा की ओर पीछे हटें, काम करना नहीं चाहते। अनेक बच्चे, बड़े बच्चे हैं। पीछे में से एक व्यक्ति निकलता है और आकांक्षा में कम जाता है और कुछ वर्षों में दृढ़ता हुई बच्चे की जगह जाता है।

हमारे राष्ट्र की बच्चे घर की चार दीवारों में बंद रहे हैं। एक बच्चे का विचार होता है और वह ऐसे करता है। उसे पीछे देख कर एक अन्य बच्चा अपना विचार दे देता है।

परहित, काम का बन्ध है परार्थ का स्वयं पर दूसरों की कल्याण करना है। वह अधिदेशक अधिदेशक व्यक्तिओं में जाता जाता है। काम ही कोई मनुष्य ही जिसमें वह अधिदेशक विस्तृत अनुभवित है। कोई व्यक्ति दुर्लभतावादी हो जाता है, और उसके पीछे से बहुत अधिक धन वह बच्चे के कारण, धन की कल्पना है। कुछ लोग ऐसे मिल जाते हैं जो बिना कुछ मिले हुए भी धन देते हैं। हम जाना समाचार नहीं है पहले है कि अधिक व्यक्ति को एक धर्म की आवश्यकता है वह समाचार बहुत एक व्यक्ति अपना एक दुर्लभ देने पर हीतर हो जाता है। जिस कुछ नहीं है धर्म परार्थ में एक व्यक्ति की धर्म की आवश्यकता की। उसके प्रति इस समाचार नहीं है एक विज्ञान समाचार था। एक बड़ा ही धर्म एक समाचार की प्रकार परार्थ समाचार और समाचार एक धर्म अपने धर्म दिया। वह धर्म अपने से वह व्यक्ति की धर्म धर्म है। व्यक्ति के प्रति से धर्म की परार्थ समाचार समाचार देने की आवश्यकता की, पर मनुष्य में समाचार कर दिया।

वह मनुष्य समाचार था, उसे कोई काम कुछ करने से मिले समाचार की आवश्यकता की, पर समाचार नहीं दिया। वह समाचार समाचार की नहीं था। वह धर्म की समाचार की ? धर्म का अधिदेशक था ? जिससे वह धर्म की बिना कुछ मिले अपना एक धर्म की एक मनुष्य धर्म है, धर्म देने पर समाचार।

परहित का अधिदेशक बच्चे के कारण धर्म समाचार में मिले समाचार समाचार में जाता जाता है। वह समाचार होता है कि परहित का काम अधिदेशक होता है या कुछ अधिदेशक में समाचार अधिदेशक होता है। एक धर्म में समाचार का धर्म के कारण समाचार समाचार होता है। समाचार अधिदेशक समाचार के पीछे वह धर्म है। समाचार की अधिदेशक, समाचार की समाचार समाचार समाचार का धर्म दिया जाता है। वह समाचार से एक व्यक्ति समाचार समाचार होता है कि समाचार समाचार, समाचार, समाचार समाचार समाचार है। किन्तु कुछ समाचार देने की है जो समाचार होता है धर्म की कोई समाचार नहीं समाचार समाचार है। समाचार होता है ? समाचार अधिदेशक में ही समाचार समाचार समाचार की कोई समाचार होता है ?

वह समाचार समाचार है ही समाचार समाचार समाचार होता है। समाचार







करी मेहताजी तुम बहुतों नहीं पर

कुल मेहताजी होना नहीं करी पर ।

बोर्बेल तथा कृष्ण ( 1979 ) ने सांसाधनिक साधनों के अभाव पर एक परि-  
चिन्तनों का वर्णन किया है जिनमें व्यक्ति किसी की बहुमता का अतिरिक्त महत्त्व  
करता है—

- (1) जब हम बहुतों बहुमताओं के अभाव पर सांसाधनिक तुलनात्मक मात्रा का मुँह  
होते हैं,
- (2) जब हमारा विश ( 1980 ) अभाव है,
- (3) जब हम किसी अन्य व्यक्ति की बहुमता करते होने देखते हैं,
- (4) जब मानव का अभाव के विषय ऐसे अभाव की अनुपमि होते हैं, जो  
बहुमताओं के अभाव का अभाव है,
- (5) जब हम किसी अन्य कार्य में सम्मिलित नहीं होते या किसी अन्य कार्य  
की जाती नहीं होती,
- (6) जब हम किसी ऐसे व्यक्ति की सेवा में देखते हैं जिसने कभी हमारी  
मता की है ।

एक अर्थ बहुतों यह करता है कि क्या मान्य व्यवस्था है या सांसाधनिक अभाव  
कल्पित है ? क्या इसके पीछे कभी कार्यरत होता है ? यह मान्य जीवन में कल्पित  
किया जाता है । मानव की यह मान्यता है इसके लिए यह भी आवश्यक है कि  
मान्य अपने अभाव पर दृष्टिकोण करें । कुछ सांसाधनिक मानव की अभाव के अभावों  
मान्य हैं जिनमें अन्य जैसे अभावों की समझते हैं । यदि हम दूसरे के मुँह से यह  
कालों की अभावों अभाव में आ जायगी । सांसाधनिक जीवनमान्य कुछ ने कहा  
कहा है—

अच्छे अनुपमि है कि मान्य मान्यी करे ।

करी अनुपमि है कि भी अनुपम के लिए करे ॥



## अध्याय 4 अभिप्रेतियाँ ( Attitudes )

समाज-संशोधन, व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करता है। सामाजिक व्यवहार में अभिवृत्तियों का समाज प्रमुख स्थान है। कुछ समाज-संशोधक अभिवृत्तियों के बहुत ही उल्टा दृष्टिकोण रखते हैं कि वे सिवा संशोधक द्वारा समाज-संशोधन की अभिवृत्तियों का अध्ययन नहीं है। यह भी सही किन्तु उल्टा व्यवहार मात्र है कि समाज-संशोधन में अभिवृत्तियाँ केन्द्रीय स्थान रखती हैं।

व्यक्ति के व्यवहार की दृष्टि के होते हैं—उपलब्ध ( Observable ) तथा अवलम्ब्य ( Covert ) का सामाजिक चित्त व्यवहार का निरीक्षण केवल व्यक्ति करते या कर सकते हैं, उसे उपलब्ध या साक्ष्य व्यवहार कहते हैं, किन्तु वह व्यवहार जिसका वह सीधे या निरीक्षण केवल व्यक्ति अवलम्ब्य का वे नहीं कर सकते, उसे अवलम्ब्य या सामाजिक व्यवहार कहा जाता है। यद्यपि उपलब्ध व्यवहार या साक्ष्य व्यवहार में बाह्यवर्तमान एवं दृष्टिकोण के सम्बन्ध की सम्भावना भी होती है, किन्तु अवलम्ब्य समाज-सामाजिक व्यवहार में ऐसी सम्भावना उत्पन्न होती है। अतः वह कहना अनुचित न होगा कि समाज-व्यवहार के अध्ययन द्वारा किसी व्यक्ति की सम्भावना अधिक सुलभ एवं समीचीन प्रतीत होता है। इसी कारण समाज-संशोधन साक्ष्य व्यवहार के साथ अवलम्ब्य या सामाजिक व्यवहार को केन्द्रीय स्थान देता है। इसी कारण सामाजिक व्यवहारों के अभिवृत्तियाँ, दृष्टि एवं विचारों का भीत होता है।

अभिवृत्ति ( Attitude ) की उत्पत्ति 'Aptus' नामक शब्द से हुई है, जो सीधे भाव का अर्थ है। इसका अर्थ सुविधा या योग्यता है। अभिवृत्ति एक सामाजिक अवस्था ( Hypothetical construct ) है, क्योंकि इसका प्रत्यक्ष सीधे सम्बन्ध नहीं है। इस अभिवृत्ति के प्रभावों का अनुमान किया जा सकता है, या इसका अनुमान व्यक्ति के व्यवहार एवं विचारों द्वारा किया जा सकता है। सामाजिक व्यवहार के प्रभाव एवं निरीक्षण में अभिवृत्तियाँ प्रमुख स्थान रखती हैं। इन बातों की व्याख्या 1935 के पहले कुछ वर्षों में अभिवृत्तियों की समाज-संशोधन की केन्द्रीय स्थानता करता है। इसी केन्द्रीयता की प्रतिक्रिया-संशोधकों ने की प्रतिक्रिया किया है। प्रतिक्रिया केवल प्रतिक्रिया के ही नहीं प्रतिक्रिया

कह दिया था कि समाज-संशोधन का पूरा-उद्देश्य व्यक्तिगत का विकास है। यह उद्देश्य समाज के समस्त सदस्यों को व्यक्तिगत रूप से प्राप्त होना समाज-संशोधन के किसी काम के नहीं होता है। व्यक्ति के विकास में व्यवहार-व्यक्तिगत द्वारा प्रभावित एवं निर्धारित होते हैं। अतः यह कहना समझा जा सकता है कि व्यक्तिगत समाज-संशोधन की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण समस्या है। मार्टिन लुथर किंग ने व्यक्तिगत की परिभाषा करते हुए कहा है, कि, "व्यक्तिगत-संशोधन का अर्थ है व्यक्तिगत एवं व्यक्तिगतों के प्रति व्यक्ति पर प्रतिक्रिया करने वाली मानसिक एवं सामाजिक समस्या है"। (As a discipline it is a general and neutral state of readiness, exerting a directive or dynamic influence upon the individual's response to all objects situations with which he is related.")।

आत्मशोध में अपनी समस्त परिभाषा में दो बातों पर बल दिया है। प्रथम, यह कि अधिवृत्ति एक सामाजिक तथा स्वायत्तिक व्यवस्था की रचना है। इसमें सामाजिक तथा स्वायत्तिक—दोनों बातों की बहुत विराट् रचना है। द्वितीय, अधिवृत्ति स्थिति पर इसके सख्त प्रभाव की चर्चा की है, जिसका अधिराज अधिवृत्ति के अधि-होप्रायस्य बल के बहुत ही स्वीकारता है। इसके अतिरिक्त यह परिभाषा अधि-वृत्ति के अतिरिक्त होने की ओर भी संकेत करती है।

डॉ०, क्रॉफ़ील्ड तथा बेर्लीनी ( Kroeber, Crookshank & Berkeley, 1962 ) के अनुसार, "अभिव्यक्ति के सामाजिक व्यवहार से उसकी अभिव्यक्तियों की व्याख्या मिलती है—यह किसी सामाजिक वस्तु के प्रति व्यवहार या अनुभवक गुणों, अभिव्यक्ति सामान्यता, तथा एक या विपक्ष की ( अनुकूल एवं अविकूल ) क्रिया प्रवृत्तियों की अवधारणा तथा प्रवृत्ति है।"

( "The social actions of the individual reflects his attitudes enduring systems of positive and negative evaluations, emotional feeling and pro or con action tendencies with respect to social objects." )

सूच ( Decree, 1944 ) ने अधिकांश की एक निर्देशात्मक (directive) तथा सौजन्यपूर्ण प्रणाली बना दी है ।

सीमार्ड तथा बैकमन ( Seemard & Backman, 1964 ) ने कहा है कि "वातावरण के कुछ पक्षों के प्रति व्यक्ति की भावनाओं, विचारों तथा क्रिया की पूर्ण युक्ति की नियमितता को व्यवस्थि कह्य जाती है ।" ( The term attitude refers to certain regularities of an individual's feeling thoughts and predispositions to act toward some aspect of his environment. )

जातीयता परिभाषायें यह स्पष्ट कराती हैं कि अधिवृत्ति व्यवसाय नहीं बल्कि व्यक्तिवर्ग है। जहाँ ही यह अधिवृत्ति के चरणों (Components) की और स्वीकृत कराती है। अधिवृत्ति में संसाधन, सामाजिक एवं श्रमोत्पत्ति तथा न केवल एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं, बल्कि एक दूसरे पर निर्भर भी होती है। अधिवृत्ति के इन तीनों चरणों की स्वीकृति सभी सामाजिक दर्शित होती है।

(i) संसाधनसमक तत्व (Coexistence of resources)—किसी समूह, व्यक्ति और परिविवर्ति के प्रति व्यक्ति के विपदा और विचार जबकी अधिवृत्ति के संसाधनसमक तत्व समझते हैं। किसी व्यक्ति के कार्यवाही के अनुवाही होने का तात्पर्य सामाजिक के प्रति उनके विपदा एवं विचारों की समझति में है।

(ii) सामाजिक तत्व (Socialistic elements)—इसका तात्पर्य किसी समूह, व्यक्ति या परिविवर्ति के प्रति व्यक्ति की मानवाशी एवं संवेदों में है। किसी समूह या परिविवर्ति के प्रति दूसरी समूह या सामाजिक दूसरे संवेदों पर निर्भर कराती है। व्यक्ति में समूहसम के साथ अधिवृत्ति के सामाजिक तत्व के सम्बन्धित होते हैं, जिसके कारण व्यक्ति की अधिवृत्ति में अनेकसम समाविष्ट होता है। इसी तत्व के कारण समूहों की शक्ति का समूह-समूह तथा बीच-बीच सामाजिक होता है और ये समूह अधिवृत्ति के प्रति बीच साथ रखते हैं, जो अमेरिकी और अमेरिका की बीच-बीच तथा समूह-समूह के प्रति बीच रखते हैं।

(iii) विचारसमक तत्व (Coexistence of ideas)—विचारसम चार्ज की समझता होती है, क्योंकि अधिवृत्ति व्यक्ति की शक्ति के बिना चलाने कराती है। फिर समूहों तथा व्यक्तियों के प्रति इस समूहसम अधिवृत्ति रखते हैं, उनकी शक्ति एवं समझता कराती है। लेकिन इनके प्रतिपक्ष अधिवृत्ति होती है, पहले कोई समूहसम नहीं होती और उन्हें स्पष्ट देना चाहति है।

अधिवृत्तिवादी अपने समूह एवं प्रवास के अनुसार एक दूसरे के विचार होती है। अधिवृत्तिवादी के संसार में कुछ समूह विवेकवादी होती हैं, जो विचार हैं—

(1) समर्थ व्यक्ति (Valuees)—समर्थ व्यक्ति की दृष्टि के अधिवृत्तिवादी एक दूसरे के विचार होती है। समर्थ व्यक्ति में यह स्पष्ट होता है कि अधिवृत्ति सिद्ध भाषा में अनुसृत या प्रसिद्ध है। अनुसृत अधिवृत्ति में सामाजिक समर्थ, तथा प्रसिद्ध की सामाजिक समर्थ कहते हैं यह विवेकता अनेक अधिवृत्ति तथा उनके तत्वों में विचारता होती है।

(2) बहुव्यवस्था (Multiplicity)—अधिवृत्ति के तीनों चरणों (संसाधन, सामाजिक तथा विचारसम) में यह विवेकता होती जाती है। बहुव्यवस्था में अधिवृत्ति यह है कि किस-किस और विचार-विचार उपर्युक्त के चरणों के चरणों के किसी तत्व विचार की समझ होती है। जैसे सामाजिक तत्व के सम्बन्ध अधिवृत्तिवादी विविध

संकेतों—सूचक प्रेक्ष, सुप्ता, जाग्रा, सक्रिय आदि के विषय को अधिग्रहण करने में सहायता के विचार पूर्व विचार तथा क्रियात्मक स्तर व्यक्तियों को अधिग्रहित कर निर्देशित करती हैं ।

(vii) संचालित (Operationality)—अधिकृत के दोनों तलों में परीक्षा संचालित की जाती है। सामान्य एवं विशेष संचालनक, सामान्य और विशेषक तलों में राज्य सरकार द्वारा किया है, किन्तु पूर्ण संचालित शब्द इतना होता है।

(15) **अभिधुति संघात (Astrode Constellation)**—विभिन्न अभिधुतियों का एक समूह जो एक ही क्षेत्र में स्थित होता है और जिसमें से एक या अधिक तारे एक ही राशि में स्थित होते हैं। इसमें से कुछ तारे एक ही राशि में स्थित होते हैं, तथा कुछ तारे एक ही राशि में स्थित होते हैं। यह अभिधुति संघातों का एक समूह है जो एक ही क्षेत्र में स्थित होते हैं। इस प्रकार अभिधुति संघातों का एक समूह होता है जो एक ही क्षेत्र में स्थित होते हैं।

**अभियन्ति तथा अन्य सम्बद्ध पद**

अभिवृत्ति तथा विन्यास पूर्व मत्—विन्यास वा मत् से यह बात होता है कि हम किसी वस्तु वा व्यक्ति के विषय में क्या सोचते हैं। मत् वा विन्यास भावात्मकता से आती होती है। अभिवृत्ति में भावात्मक मत्, अति महत्वपूर्ण होता है। भाव संज्ञाभावात्मकता के कारण व्यक्ति व्यवहार नहीं करता।

**अभिवृत्ति और व्यवहार—**व्यवहार की उत्पत्ति अभिवृत्ति का एक प्रथम स्तर है और व्यवहार पर अभिवृत्ति का व्यापक प्रभाव पड़ता है, लेकिन अनेक चीजों द्वारा अभिवृत्ति तथा व्यवहार में किसी सम्बन्ध के स्थापन नहीं मिलते (La Piniere, 1934)। व्यवहार, अभिवृत्ति के अभिविक्त अथवा चीजों पर की निर्भर करता है बिबर (1963) ने अभिवृत्ति तथा व्यवहार में 30 सहसम्बन्ध प्राप्त किया।

अभिप्रेति तथा सुख—अभिप्रेति किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति विचार होती है, लेकिन अभिप्रेति का सम्बन्ध व्यक्ति की जीवन शैली से होता है, सुख एक तरह के अनेक पहलुओं से सम्बन्धित होते हैं। अभिप्रेतिपूर्ण, आधा मिली व किसी सुख से सम्बन्धित होती है और एक व्यक्ति को के सुख में निराला करता है, कई विवेक यहाँ से प्रति व्यवहारक वा आभासक अभिप्रेति विचार कर लेता है। अभिप्रेतिपूर्ण तथा सुखी-दोनों ही के अंतर्गत एक ही विचारण होते हैं, किन्तु अभिप्रेति में निहित विचारण एक सुख में अनुपस्थित होता है।

**अभिवृत्ति तथा अधिष्ठाना—**अभिधेयवा एक वास्तविक कारण या दया है जो ज्ञेया को कारणात् करने, काशी रखने, व्यवहार को ज्ञेया निर्धारित करने की



एक उद्दीयक द्वारा जलान्न होती थी वह जब दूसरे उद्दीयक द्वारा भी होने लगती है । इस प्रकार जलान्न अनुसन्धान जब समय चलिता होता है जब कोई अनुसन्धान उस उद्दीयक द्वारा जलान्न होने लगती है, जो पहले नहीं होती थी । इसकी उत्पत्ति, उद्दीयक के किसी अन्य उद्दीयक के साथ बार-बार चलिता होने के कारण होती है जो स्वाभाविक रूप में उस अनुसन्धान की उत्पत्ति करता है । दूसरी अवस्था अधिक-कुशलता में होकर: प्राचीन अनुसन्धान के प्रभाव विहित होती है । जैसे यदि कोई सुख अनुभव कुछ पेशुओं, चरवाओं या व्यक्तिओं की उपस्थिति में बार-बार चलिता होता है, तो दूसरी बीतर उस पेशुओं, चरवाओं या व्यक्तिओं के सिधे प्रभावक अधिकृति विकसित होने की संभावना होती है । एक सुख संस्था में साथ साथ बीतर अन्य लोगों के प्रति गर्व में वृद्धि करती है । यदि बात किसी तरह की कभीकद नहीं थीर जायता संस्था की सेवा, बहुत परेशानी हुई, तो उस चरव के प्रति अवास्तुत प्रभाव विकसित हो जाती है । एक व्यक्ति अधिकतर के प्रभाव में तथा लीट ( *State of State*, 1938 ) में प्रयोगों के कारण यह व्यक्ति के नाम प्रसुत सिधे । इस नाम के साथ एक अन्य बीतर संस्था का । यह नाम उत्पन्न, सुख या सुख होता का । यह सिद्धा है बार सुखानी नहीं । इसी बार प्रयोगों की प्रतीक नाम की सुखता का प्रयोग ( *सुखता* ) करने का निर्देश दिया गया । परिणामों के साथ हुआ कि जो नाम प्रयोग अवधि में सर्वदा सुख नहीं के सम्बन्ध के, अन्य लोगों की प्रतीति अधिक प्रभावक प्रयोग उत्पन्न करती हैं ।

एक अन्य ऐक्य व्यवस्था ( *United & United 1971* ) में प्रयोगों ने एक नैम्बर में अनेक कार्य किए । साथे प्रयोगों की तरह में सामान्य के अधिक नई वातावरण में ऐसा क्या जब कि अन्य साथे प्रयोगों के सामान्य वातावरण में काम किया । इसी प्रकार एक समूह ने 12 से 15 व्यक्तियों के समूह ( पीढ़ी ) में क्या अन्य समूह ने 3 से 5 व्यक्तियों के समूह में काम किया । कार्य के समाप्ति पर प्रयोगों ने कार्यरिक्त व्यक्तियों का समय के आधार पर क्षेत्रीकरण किया । प्रति नई वातावरण में कार्यरिक्तों के प्रति कम समय का प्रभाव दिया । इसी सीमा सामान्य वातावरण क्या छोटे समूह में कार्य करनेवालों में कार्यरिक्तों के प्रति अधिक प्रभाव उत्पन्न किया । इस प्रकार कार्यरिक्त प्रयोगों द्वारा उत्पन्न अनुमानक व्यवस्थाओं के निर्देश व्यक्तियों के प्रति सामाजीकरण के प्रभाव विवेक ।

इस प्रकार राष्ट्रीय अनुसूचन की शक्ति का प्रयोग द्वारा समितियों निर्माण के प्रभावित होने के प्रमाण मिले । एक अन्य अध्ययन ( Radhakrishna & Karasik, 1988 ) से प्रभावित हुआ कि राज्य तथा राज्य का सम्बन्ध होने समितियों की प्रभावित करता है । क्योंकि अपने अध्ययन से राष्ट्रीय की मुख्य तथा मुख्य समितियों के साथ अनुसूचित किया । इससे एक बात ही केवल समितियों का । शक्तियों के प्रभावित हुआ



कि किस व्यक्ति का क्या प्रयोगों के लिये अनुपयुक्त बन के अनुसंधित किया गया। या उसके प्रति प्रयोगों के अन्वेषणक बन विषयवस्तु व्यवहार किया। दूसरे लोगों के निष्कर्षात्मक अनुसंधान के कारण उस व्यक्ति के प्रति निष्कर्षात्मक व्यवहार की प्रतीति हुई।

(ii) **वैयक्तिक अनुसंधान ( Individual conditioning )**—वैयक्तिक अनुसंधान का अन्तर्गत यह है कि व्यक्ति का व्यवहारों की सीख लेता है जिनके करने पर पुनर्जनन प्राप्त करता है। यदि वो पुनर्जनन के अनेक बन होते हैं, किन्तु सामंतीय प्रयोगों के अधिन में प्रयोग का वैयक्तिक अनुसंधान का विशेष महत्व है। अधिवृत्तियों द्वारा वैयक्तिक अध्ययन से अधिवृत्त होती है। लोगों के अधिवृत्त के प्रयोग तथा अध्ययन की शुद्धता महत्वपूर्ण होती है। एक पिता की कठिनी है, अपने एक बच्चे की प्रयोग करता है की कठिनी विचारधारा में विचार करता है और पिता की सामंतीय विचार रखने पर तथा वे करता है। एक अन्वेषण द्वारा हार्वे (Harve, 1965) के प्रयोगों के निष्कर्षात्मक के कुछ लोगों के प्रयोगों पर यह प्रतीति की बहुत कि तथा सामंतीय व्यवहार व्यवहार के बहूनि में अपना नाम अपना रही। प्रयोगों के अनेक प्रयोग शुरू की। कुछ कठिनी की पुनर्जनन प्रयोगकर्ता बहुतों का "सही बात है।" यह तथा सामंतीय व्यवहार के विषय में वे। तथा प्रयोगों के कुछ सामंतीय प्रयोगों के बारे में प्रयोग लिये गये किन्तु एक प्रयोग व्यवहार में सामंतीय व्यवहार के की समझ का। परिणामों के प्रतीति हुआ कि उस प्रयोगों के अधिक अध्ययन द्वारा लिये किन्हीं सामंतीय की कठिनी के विषय में "हैं" प्रयोग देने पर वैयक्तिक पुनर्जनन प्राप्त हुआ था। इसके विपरीत बन प्रयोगों के अधिक निष्कर्षात्मक प्रयोग लिये पिता की "सही" करने पर शुरू पुनर्जनन किया था हुआ था। इस प्रकार अन्वेषण के यह प्रतीति हुआ कि पुनर्जनन अधिवृत्ति निर्माण में महत्व होता है। किन्तु कुछ सामंतीयतात्मक इस प्रतिक्रिया के महत्व नहीं है। वे यह समझते हैं कि अधिवृत्ति में निर्मित प्राप्त प्राप्तकर्ता नहीं। प्रयोगात्मक अनुसंधान हो जाती है। किन्तु यदि सीखे जाने वाले व्यवहार में प्रयोग तथा प्रयोग का अवधि होता है की अधिक व्याख्यात्मक प्रतिक्रिया रखने वाले व्यक्ति व्यक्ति के नीचे की समझते हैं कि किन व्यवहार के पुनर्जनन प्राप्त करने, वे अधिक सामंतीय का अवधि करते हैं।

इस प्रकार हम यह समझते हैं कि पुनर्जनन तथा तथा के अधिक अनुसंधान द्वारा सामंतीय अनेक विषयों पर करते लोगों की अधिवृत्ति निर्माण की प्रतीति कर सकते हैं।

(iii) **मॉडेलिंग ( Modeling )**—मॉडेलिंग का अधिवृत्ति निर्माण द्वारा





(iv) संज्ञान तथा अभिवृत्ति (Cognition & Attitude)—अने अनुभवों का सार्थक संज्ञान करना है और अभिवृत्तियों का निर्माण करने संज्ञानों के अनुसार करना है। अनेक व्यक्ति का संज्ञान भी अभिवृत्ति निर्माण की प्रभावित करता है। यह अज्ञान Posinger द्वारा अभिवृत्ति संज्ञानात्मक निष्कर्षात्मक सम्बन्धन के समान है। इस प्रकार सम्बन्धनकारक कारक भी अभिवृत्ति निर्माण में अनुप्रभ भूमिका निभाते हैं। व्यक्ति उद्दीपकों का उत्तराधिकार्य किता कम में करता है उसके अनुसार व्यवहारों भी उसमें उत्पन्न होती है। यह वास्तव में व्यक्ति में अभिवृत्तियाँ निर्मित करने में सहायक होती है।

4. समूह के प्रभाव (Group Effects)—समूह के प्रति प्रभाव या समूह सम्बन्धन भी अभिवृत्ति निर्माण एवं विकास अज्ञान की प्रभावित करती है। व्यक्ति अपनी अनेक अभिवृत्तियाँ अपने समूह में अंकित कर लेता है। समूह के सदस्यों, मानकों तथा मानकों का समूहों की व्यक्तिगत अभिवृत्तियों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। रिचर (Richer, 1947) ने अपने अनुभवों द्वारा दर्शाया है कि समूह-सूचक तथा समूह-सामक अभिवृत्ति निर्माण अज्ञान पर बहुत प्रभाव डालते हैं।

अभिवृत्ति-निर्माण एवं विकास में सामाजिक समूह अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। अतः सामाजिक समूह के कारण मनुष्यों में अनेक वृत्तियाँ निर्मित एवं विकसित होती हैं। कैम्बेज तथा रिचर (1954) ने अपने अनुभवों के आधार पर अभिवृत्ति निर्माण में सामाजिक समूह की एक महत्वपूर्ण कारक बताया है। इन मनो-वैज्ञानिकों ने तीन सामाजिक समूहों में सामाजिक व्यवस्था की होना का अध्ययन किया। चुनाव के बाद व्यक्तियों के चुनाव क्या कि उनके विचारों ने कितने बोट दिया? विरासित लोगों के चुनाव क्या कि उनके बोटों ने कितने बोट दिया? अभिवृत्तियों के चुनाव क्या कि पर कालों ने कितने बोट दिया? परिचारों की व्याख्या के साथ हुआ कि 83% समूहों ने उसी व्यक्ति की बोट दिया था किन्तु उनके घर बाकी एवं कालियों ने बोट दिया था। इस प्रकार यह दर्शाया हुआ कि सामाजिक के सम्बन्धित अभिवृत्तियाँ, सामाजिक समूह द्वारा बहुत प्रभावित होती हैं।

5. अवस्थितता (Stability)—व्यक्तित्व का भी अभिवृत्ति-निर्माण एवं विकास पर प्रभाव पड़ता है। विभिन्न व्यक्तियों की व्यक्तित्व संरचना भी विभिन्न प्रकार की होती है। अतः व्यक्तित्व संरचना के अनुसार ही उनमें अभिवृत्तियाँ विकसित होती है। कैम्बेज (McCloskey 1958) ने अपने एक अध्ययन द्वारा यह दर्शाया कि विभिन्न व्यक्तियों की सूचनाओं मूल माता में उत्पन्न होती है तथा भी कम स्थिति एवं कम बुद्धिमान होती है, उनमें सर्वप्रथम अभिवृत्तियों की प्रभावता होती है। इसी प्रकार जिनमें कम एवं बुद्धि के लक्षण होते हैं उसकी अभिवृत्तियाँ

की संज्ञिकाएँ होती हैं। कुछ ऐसे ही परिचय बीनकेल ( 1960 ) और उनके साथियों ने इस विषे हैं। इस प्रकार व्यक्ति के अपने द्वारा अभिवृत्ति निर्माण प्रक्रिया समझी होती है।

**सांस्कृतिक कारक ( Cultural Factors )**—यदि हमें सांस्कृति का समझ होना है ( Individual is a creature of his culture ) सामाजिकशास्त्री द्वारा इस प्रकार से कहा गया है कि 'व्यक्तियों के निर्माण में सांस्कृतिक कारक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। सामाजिकता से ही सांस्कृति का अर्थ समझ होता है और यही समझ के अभिवृत्ति निर्माण की प्रक्रिया की आधार होती जाती है। इस सम्बन्ध में इसे समझ सामग्री ( Wilson, Medal, 1937, Cooke, 1942, Hogden 1952 ) के आधार पर यह प्रमाणित हुआ है कि व्यक्तियों के निर्माण एवं विकास में सांस्कृति का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। सांस्कृति के सांकेतिक और सम्बोधित पक्षों में ऐसे बड़े परिवर्तनों का अभिवृत्ति निर्माण पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

## अभिवृत्ति-परिवर्तन

( Attitude Change )

अभिवृत्तियाँ सर्जित होती हैं। साथ का पुन सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी परिवर्तनों का पुन है, जिसमें अभिवृत्ति परिवर्तन एक प्रमुख सम्बन्ध है। अभिवृत्ति परिवर्तन अथवा वैज्ञानिक और तकनीकी के सिद्ध एक प्रमुख चुनौती है। अभिवृत्ति परिवर्तन के विचार में कुछ वैज्ञानिकों ने महत्वपूर्ण सम्बन्ध सिद्ध हैं। ( Fikkes, 1937, Mc. Ghee, 1948, Sherif and Sherif, 1947, Krosb, Couchfield & Balesky, 1942 ) इस परिवर्तन के दो रूप होते हैं। समान परिवर्तन ( Congruent change ) और विपरीत परिवर्तन ( Incongruent change )।

(1) समान परिवर्तन ( Congruent change )—अभिवृत्ति की तीव्रता में परिवर्तन, अथवा परिवर्तन बहुत बड़ा है। किसी व्यक्ति की अभिवृत्ति में परिवर्तन वह समय का समझ है जब हम उस अभिवृत्ति की तीव्रता को बढ़ाने की दिशा में होते हैं। सबसे एक व्यक्ति ऐसा है जो चीन के प्रति कम आध्यात्मिक अभिवृत्ति रखता है, या एक अन्य व्यक्ति किसी के प्रति कम आध्यात्मिक अभिवृत्ति रखता है। समान परिवर्तन के सम्बन्ध आध्यात्मिक अभिवृत्ति की और अधिक आध्यात्मिक तथा आध्यात्मिक अभिवृत्ति की और अधिक आध्यात्मिक बनते हैं। अर्थात् हमारे द्वारा हमारे में चीन के प्रति कम आध्यात्मिक अभिवृत्ति की और चीन आध्यात्मिक तथा किसी के प्रति कम आध्यात्मिक अभिवृत्ति की और चीन आध्यात्मिक बन बनते हैं। इस

प्रकार किसी अभिव्यक्ति की सीखने की क्रम या अधिक करने की प्रक्रिया समझ परिचय ( *Conceptual change* ) कहलाती है ।

(11) विचार परिवर्तन ( *Intellectual change* )—उपरोक्त की प्रेरणा विचार परिवर्तन अधिक कहिये कि जाया है । विचार परिवर्तन में अभिव्यक्ति में गुणात्मक परिवर्तन होता है । किसी वस्तु, व्यक्ति, एक व्यक्ति के किसी पक्ष के लिये अनुकूल या प्रतिकूल करने अथवा अनुकूल हो अभिव्यक्ति है । परिवर्तन का अधिक-प्राप्त करने में बदलाव के हैं । पूर्व-निर्धारित अभिव्यक्ति की कुछ दिशा में परिवर्तन की विचार परिवर्तन कहते हैं । यामों कोई व्यक्ति परिवार नियोजन का कट्टर विरोधी है, उसे एक दिन परिवार नियोजन का समर्थन करने का प्रयास करते हैं और ऐसा कर लेते हैं तो इसे विचार परिवर्तन कहेंगे । इसी प्रकार किसी व्यक्ति की अन्तर्गत अभिव्यक्ति की अन्तर्गत रूप में परिवर्तित करना भी विचार परिवर्तन ( *Intellectual change* ) कहा जायगा ।

### अभिव्यक्ति-प्रणाली की विशेषताएँ एवं अभिव्यक्ति की परिवर्तनशीलता

अभिव्यक्ति एक संरचित सामाजिक प्रणाली है, जिसकी कुछ विशेषताएँ इसे अन्य अभिव्यक्ति प्रणालियों से भिन्न करती हैं । व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार पर किसी अभिव्यक्ति के प्रभावों में निम्नलिखित, इन विशेषताओं के कारण देखी जाती है । क्षेत्र, सम्प्रदाय तथा देशी ( 1963 ), इन विशेषताओं की अभिव्यक्ति परिवर्तन में प्रमुख योगदान देती हैं । यह विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. अभिव्यक्ति की अतिरेकता ( *Exaggeration of Attitude* )—कोई अभिव्यक्ति अनुकूल या प्रतिकूल हो सकती है । इन अतिरेकी सीरी के यहाँ उदाहरण क्षेत्र ( यूना अभिव्यक्ति ) होता है । यमों द्वारा प्राप्त हुआ है कि अभिव्यक्ति किसी चीज होती है, उसमें परिवर्तन की संभावना होती ही कम होती । ( डैनबाम, 1956 ) । अतिरेकी अभिव्यक्ति में विचार ( *Intellectual change* ) परिवर्तन अनेकानुस अधिक दुर्लभ होता है, किन्तु समग्र परिवर्तन कुछ सरल होता है ।

2. बहुविधता ( *Multiplicity* )—अभिव्यक्तियों की परिवर्तनशीलता उसकी बहुविधता की मात्रा पर भी निर्भर करती है । बहुविधता का अर्थान्वय अभिव्यक्ति में गुणगामी की संकल्पशीलता के है । बहुविधता अधिक होने पर विचार परिवर्तन अधिक कठिन होता है, किन्तु समग्र परिवर्तन अधिक आसान होता है । बहुविध अभिव्यक्तियों में अतिरिक्त गुणगामी उपलब्ध कराया अनुकूल या समग्र परिवर्तन की सुगम करता है ।

3. **संगति ( Consistency )**—व्यक्ति अपनी अभिवृत्ति अपनी संगति या समुदाय के प्रति रखे का प्रयत्न करता है। इसी समुदाय या संगति के आधार पर व्यक्ति सामाजिक अभिवृत्ति परिवर्तन की आवश्यकता को महसूस करता है ( सोमिनवर्मा, आधुनिक मनोविज्ञान )। अभिवृत्ति-प्रवाही में समुदाय के नियंत्रण और अनुमोदन के अधिपत्य होती है। इस अधिपत्य का कारण यह है कि प्रवाही के विभिन्न तत्व एक दूसरे से सम्बन्ध का उपयोग करते हैं।

4. **अन्तःसम्बद्धता ( Interconnectedness )**—अभिवृत्ति की अन्तःसम्बद्धता की भाषा की सबसे अधिकतर की संज्ञाप्रयोग की प्रयोजित करती है। अभिवृत्तियों में सामाजिक सम्बन्ध प्रविष्ट होने पर विषय परिवर्तन उत्पन्न करित होता है। इसी सामाजिक प्रभाव के कारण व्यक्ति अभिवृत्ति में विषय परिवर्तन उत्पन्न करित होता है। इसी ओर अन्तःसम्बन्धित अभिवृत्तियों में प्रत्यक्ष परिवर्तन आयात होता है।

5. **अभिवृत्ति पुंज में संगति या सम्बन्धिता ( Consistency of Attitude Cluster )**—अभिवृत्ति-पुंज, कई अभिवृत्तियों के विस्तार विहित होता है। पुंज में विहित अभिवृत्तियों संगति ( Consistency ) के कारण एक दूसरे से सम्बद्ध होती है। प्रवाही अभिवृत्तियों में विषय या प्रतिपक्ष परिवर्तन करित होता है, लेकिन प्रत्यक्ष या अनुप्राणित परिवर्तन प्रत्यक्ष होता है। समुदाय विज्ञान (ग्रुप) की मान्यता है कि जो अभिवृत्ति अनुमोदन की दशा में होती है, वहमें समुदाय की ओर जाने की प्रवृत्ति होती है। विश्वविद्यालय के ही आधार पर प्रेरितकर अभिवृत्ति परिवर्तन का समीक्षण होता है।

6. **आवश्यकताओं की स्थिति एवं संख्या**—बोई अभिवृत्ति केवल एक ही नहीं बल्कि आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है। अभिवृत्ति परिवर्तन, अभिवृत्ति द्वारा समुदाय आवश्यकताओं की स्थिति एवं संख्या पर निर्भर करती है। जिस अभिवृत्ति द्वारा स्थितिवाली एवं बल्कि आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, वह स्थिति के प्रति रहने ही प्रवृत्त होती है। इसी अभिवृत्तियों में प्रतिपक्ष या विषय परिवर्तन करित होता है, क्योंकि यह परिवर्तन स्थिति की जीवन शैली की प्रत्यक्ष प्रभाव कर सकता है। इस अभिवृत्तियों में प्रत्यक्ष परिवर्तन उत्पन्न करित होता है। कारण यह है कि प्रत्यक्ष परिवर्तन से स्थिति की आवश्यकताओं की पूर्ति पर किसी अनुप्राणित प्रभाव की सम्भावना नहीं होती।

7. **सम्बद्ध मूल्यों की केन्द्रीयता ( Centrality of related values )**—अभिवृत्ति के सम्बद्ध मूल्यों की केन्द्रीयता की अभिवृत्ति परिवर्तन का निर्धारण करती है। बोई मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व में केन्द्रीय मूल्य रहता है, जो उसके सम्बद्ध अभिवृत्ति में अधिकृत या विषय परिवर्तन मूल्य ही करित होता है, और यदि

कोई अभिव्यक्ति यदि किसी चीज सुनने से जुड़ी हो तो सबसे विचार परिवर्तन को ला-  
कृत सुनने होता है। दूसरी ओर केन्द्रीय सुनने से सम्बद्ध अभिव्यक्ति का अभिव्यक्ति में  
समय परिवर्तन घटता होता है, क्योंकि यहाँ सुनने प्रभावी प्रभावित नहीं होती।

## अभिव्यक्ति परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कारक

( Factors Affecting Attitude Change )

कई कारक अभिव्यक्ति परिवर्तन को प्रभावित एवं निर्धारित करते हैं। कुछ  
ऐसे प्रमुख कारकों को यहाँ उल्लेख है।

1. सूचना ( Information )—सूचना के अनेक माध्यम हैं—खेती, वाणिज्य,  
सैनिक, तथा प्रचार माध्यमों के माध्यम सुचनाएँ आती हैं। व्यक्ति को अभिव्यक्ति में  
परिवर्तन आंतरिक सुनने के माध्यम, खेती, विचार, तथा परिवर्तनशीलता के द्वारा  
होता है। इसके सम्बन्ध में दो प्रकार के सुनने हैं—अनुसूचित और सूचना सुनने,  
व्यवस्थापक, और सामाजिक विचार।

(i) अनुसूचित और सूचना सुनने—सामान्य ज्ञान का सुनने सूचना सुनने के  
माध्यमों में समाचार पत्र, रेडियो, टी-वी तथा टेलीफोन आदि प्रमुख हैं। आज  
हमें समाचार पत्र ( Mass Media ) कहते हैं। छोटे-छोटे अनुसूचित माध्यमों को  
सूचनाओं एवं सूचनाओं के माध्यमों में प्रमुख सुनने माना जाता है। सांख्यिक ( 1956 )  
के एक अध्ययन में अनेक प्रायोगिक अध्ययन किए। उन्होंने देखा कि छोटे अनुसूचित  
प्रचार के अधिक प्रभावित होते हैं। यह भी बताया कि सूचना सुनने को कम नहीं  
सूचनाओं प्रभावित करते हैं जो लोग केवल एक सूचनाओं की सूचना करने की सूचना  
आते हैं जो उनके सुनने, विचारों आदि के प्रभाव होती हैं। एक अन्य अध्ययन  
( केसी तथा सुनने 1956 ) के माध्यमों में एक माध्यम सुनने के सूचना सुनने किया  
कि माध्यम के माध्यमों के माध्यमों का अध्ययन किया है, जो प्रयोगों के  
अनुसूचित अधिक माध्यमों में सूचना सुनने की। किन्तु यह बताया कि विचार में यह  
सूचना की कि यह एक तरह का एक सूचना है जो उनके माध्यमों के सूचना सुनने की  
माध्यमों का है। इसके द्वारा निष्कर्ष होता है कि अनुसूचित में सूचना सुनने की सूचना  
सूचनाओं, सूचनाओं एवं सुनने सुनने सुनने द्वारा प्रभावित होती है। एलेक्सिस सूचना  
सूचना के अनुसूचितों की सूचना में अनुसूचित में सूचना सुनने सूचना सुनने सूचना सुनने  
होती है।

(ii) व्यवस्थापक ( Communication )—व्यवस्थापक अभिव्यक्ति परिवर्तन  
का एक प्रमुख माध्यम है। कोई व्यक्ति अपने किसी कार्य के लिए व्यवस्थापक हो जाता  
है जो यह उसे सुनने करने के लिए उसे सुनने प्रभावित करता है। यदि व्यवस्थापक  
सामाजिक होती है या अनुसूचित की सूचना देती है तो उसे सुनने करने की एक सूचना की



अज्ञानता होती है। ऐसी रचना में सबसे नीचे की इतिहास में बहुत उचित से काम आती है। जहाँ जहाँ की रचना में समझोत होता है। ऐसी रचना में समझोत के कारण उसे अपनी अविश्वसनीयता में परिवर्तित करना पड़ता है। इसीलिए किसी समझोत की अज्ञानता बहुत के समझ में काम अधिक समझोतानी होती है।

(क). समझ-विशेष के प्रभाव—कुछ सांख्यिक समझों द्वारा सिद्ध हुआ है कि जो विशेष बहुत से होते हैं, वे व्यक्ति की ज्ञान, व्यवहार तथा अधि-बुद्धि पर अधिक प्रभाव डालते हैं (केवल तथा बहुरीनी, 1950)। इसीलिए प्रत्येक कार्य को करने की क्षमताओं का अध्ययन किया। इन साक्ष्यों के समझ समझ सिद्ध की अज्ञानता का एक तथा प्रत्येक के ज्ञान का वैश्विक व्यवहार के रूप में प्रत्यक्ष सिद्ध करने के बहुत पर विशेषज्ञ द्वारा अध्ययन करने का अध्ययन किया गया। कुछ समय बाद एक सांख्यिक परिणामों की अध्ययन की गई जिसमें इन साक्ष्यों की भी अध्ययन किया गया जिसमें व्यवहार सिद्धों के बीचों-बीच पर काफी हुई। परिणामों के बाद हुआ कि जो साक्ष्य अध्ययन करने के साक्ष्यों द्वारा समझ नहीं की, वे समझ-विशेष के सिद्धों के बीचों-बीच में अज्ञानता के रूप में प्रत्यक्ष पर प्रत्यक्ष ही नहीं की। इन सिद्धों की अधि-व्यवहारानी बनाने में विशेष (Bassett 1955) का अध्ययन अज्ञान विशेषता तथा विशेष साक्ष्य तथा विशेष परिणाम, जिसमें के अध्ययन समीक्षा का अध्ययन किया और बहुत प्रदर्शित किया समझ-विशेषता एवं सांख्यिक समझोतता ज्ञान एवं विश्व-व्यवहारता, के अध्ययन-प्रत्यक्ष नहीं है। इसीलिए इन प्रकार बहुत प्रदर्शित किया कि केवल की अध्ययन-विधि समझ-विशेष से अज्ञान है। कुछ समीक्षाओं के अज्ञान के निष्कर्ष पर समझ अज्ञान किया (Pearling, Harari & Bass, 1958) बहुत से बहुत के अविश्वसनीयता के निष्कर्ष में प्रत्यक्ष होने की रचना में अध्ययन अधिक कारण ही प्रकट है।

2. सूचना के अज्ञान—अध्ययन का अध्ययनानी होने अविश्वसनीयता विशेष के लिये अति अध्ययन है जो कि अज्ञान वाली पर विशेष करता है। इस निष्कर्ष में हुई अध्ययनों में प्रदर्शित हुआ कि अध्ययन की, विश्वसनीयता, का अज्ञान तथा बहुत के बाद अध्ययन (Unreliable information) के रूप, अध्ययन का सूचना की अध्ययन-आती बनाने है।

(ग) विश्वसनीयता (Credibility)—बोली में कहा हुआ है कि सूचना विश्वसनीयता अविश्वसनीयता विशेष में अज्ञान प्रत्यक्ष होती है (Hornbush & Wilson 1951, Kelman & Hornbush, 1956)। इसीलिए अध्ययन विश्वसनीयता तथा अविश्वसनीयता विशेष के समय अज्ञान के बीच दोष अज्ञानता के परिणाम प्राप्त होते हैं। इन अध्ययनों में प्रदर्शित हुआ कि अज्ञान अज्ञान विश्वसनी-

नीवला जाने सम्बन्धक अधिक मात्रा में सामाजिक अभिवृत्ति परिवर्तित उत्पन्न होती है, किन्तु समान बीजों के साथ बहु प्रभाव प्रभाव होने लगता है या कम होने लगता है। जब सम्बन्धक विशेषज्ञ ही और बनेंगे नए ही ही विश्ववर्गीयता अभिवृत्ति परिवर्तन में सहभाग होती है। जब सम्बन्धक समूह का विचार प्राप्त कर लेता है ही उसकी कड़ी बाँधी का उसके द्वारा सम्बन्धित सूचना अभिवृत्ति अधिक परिवर्तित उत्पन्न करती है (Anderson, 1966, Becker, 1965)।

(ii) आकर्षण—सूचना देने वाले में आकर्षण का होता ही एक प्रमुख कारक है। आकर्षक, अनाकर्षक की विशेषता अभिवृत्ति परिवर्तन में अधिक प्रभाव होता है। लेल्लाम (1958) ने अपने अध्ययन में देखा कि अभिवृत्ति-परिवर्तन, सम्बन्धक की समाकलनता और आकर्षण की मात्रा द्वारा प्रभावित होता है। उन्होंने यह भी देखा कि यदि सम्बन्धक बीजों के विचारों के विपरीत अभिवृत्ति या विचार प्रकट करता है तो उसके प्रति विरोध की प्रवृत्ति कम होती है।

(iii) समूह सम्बन्धन (Group Affiliation)—समूह-सम्बन्धन की अभिवृत्ति परिवर्तन में काफी सहभाग होता है। सम्बन्धक का समूह के साथ सम्बन्धन आवश्यक है जिसके लिए उसे समूह का सदस्य होना चाहिए। कोई सम्बन्धक जब समूह के दूसरों और विचारों के प्रति सम्मान व्यक्त करती है तो उनकी कोई बात लगता है जो उसकी द्वारा उसके सुझावों के प्रति अधिक सहप्रतिक्रिया की सम्भावना होती है। ऐसे सम्बन्धक समूह की अभिवृत्तियों में बदलाव देने में अधिक प्रभाव होते हैं। यदि कोई प्रचारक, या नेता समूह के सदस्यों की मान्यताओं, समूह मान्यों सुझावों या मान्यों को स्वीकार करते हुए उनकी अभिवृत्ति को बदलने का प्रयास करता है, तो समूह 'उसे बदलने में से एक' एवं समूह का एक विशाल भाग बनने लगे है। इस प्रकार बहु अभिवृत्ति-परिवर्तन में अधिक प्रभाव होता है (Lazarfeld, & Berelson, 1954)। एक अन्य अध्ययन द्वारा (Katz & Lazarsfeld, 1955) यह प्रकट हुआ कि अभिवृत्ति-परिवर्तन सामाजिक एवं व्यक्तिगत वयस्का द्वारा ही प्रभावित होता है। उन्होंने यह भी प्रकटित किया कि सम्बन्धक की सामाजिक स्थिति (Social Status) कम, अधिक और पर अधिक का ही सम्बन्ध-प्रभाव पर बहुत प्रभाव पड़ता है। प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा प्रकट्य कहीं कहीं सूचना का अधिक प्रभाव पड़ता है। सामाजिक स्थिति के प्रभाव पर हूब तथा कोब (1968) ने भी प्रभाव प्रकट है।

3. सूचना के माध्यम (Media of Information)—सूचना सम्बन्धक का माध्यम की अभिवृत्ति परिवर्तन का एक प्रभावशाली निर्धारक है। अनेक सूचनाओं अधिकतर या साप्ताहिक रूप में ही जाती है। यदि कोई कल्याणक किसी विद्यार्थी

की अनुशासन का बहुत बंधन है, जो वह सुचना व्यक्तिगत रूप से देता है। लेकिन टी० बी० का ऐजेंसी द्वारा की गई सुचना बचन बचन द्वारा की जाती है। इस व्यवस्था से अपेक्षित हुआ है कि व्यक्तिगत परिचय हेतु व्यक्तिगत रूप से अपना सुचना प्रदान कर ( *Advised Agency* ) द्वारा की गई सुचना की अपेक्षा अधिक प्रभावपूर्ण होती है। ( *चिंतन तथा कार्य, 1951* )। इस रूप की कुछ वैराई-सीध रूप तक अनुपयोगी के व्यवस्थाओं द्वारा की गई है। पहले व्यक्तिगत परिचय से व्यक्तिगत प्रभाव की अधिक प्रभावपूर्ण अवस्था किया है। सुचना के बहुत साधनों में भाषा, टी० बी०, रेडियो, फिल्म या सिनेमा, तथा, तथा समाचार पत्र आदि की प्रभाव की जाती है।

(१) भाषा—भाषा अनुपयोगी का वह अधिकतम विवेचना है जो इसे अनुभव से प्राप्त करती है। सुचना के प्रकार में भी भाषा की बहुत प्रवृत्ति होती है। सुचना प्रकार में बहुत भाषा व्यवस्थाकरण की आवश्यकता होती होती चाहिए, अर्थात् भाषा का बहुत, प्रत्यक्ष और सीधे-सीधे होता है। इसी प्रकार जब सुचना की भाषा में बहुत से बहुत व्यवस्थाओं की अनुपयोगी अधिक भाषा में करती है जो वह अधिक प्रभावपूर्ण होती है तथा व्यक्तिगत परिचय में अधिक प्रभावपूर्ण होती है।

(२) टी० बी० द्वारा सिनेमा—आज व्यवस्था के प्राप्ति में टी० बी० का प्रभाव सर्वोपरि है। अनेक सर्वोपेक्षात्मक व्यवस्थाओं ( *कीर्तन तथा कार्य, 1953; साइमन तथा स्टन 1955; और केनर्ट, 1958* ) के अवस्था हुआ है कि टी० बी० सुचना व्यवस्था का एक प्रमुख प्रभावकारी प्रभाव है। दूरदर्शन के रूप के बहुत विचारों जैसे विलेय व्यवस्था व्यवस्था, भाषा की, या सिनेमा भाषा के कुछ रूप हुए कर्मों के प्रति जाने का अनुभव जब साधारण की व्यक्तिगतियों में व्यक्तिगत परिचय जाने के विषय कुछ और नहीं है। विचारों हेतु दूरदर्शन का प्रभाव सर्वोपेक्षा व्यक्तिगत परिचय में इसके बहुत की अपेक्षा करता है।

फिल्मों का व्यक्तिगत के द्वारा प्रभाव का प्रभाव जब भाषाओं और विचारों की बहुत व्यक्तिगत होती है जो किसी की भाषा का व्यक्तिगत भाषा द्वारा प्रभाव नहीं है। व्यवस्था की कुछियों और व्यवस्था के प्रभाव सुचारु की हुए करने में किसी व्यक्तिगतों का प्रभाव सर्वोपेक्षा होता प्रभाव है। भाषा में दूरदर्शन के कुछ ऐसे व्यक्तिगतों का निर्माण प्रभाव है जो व्यक्तिगत-व्यक्तिगत में बहुत प्रभाव होती है।

(३) समाचार पत्र—व्यवस्था जब भाषा द्वारा व्यक्तिगत परिचय का सर्वोपेक्षा व्यवस्था है। व्यक्तिगत व्यवस्था और प्रभाव सुचारु की जब साधारण

एक नईबादे के लिए कोई समाचार नम प्रकाशित करते हैं। अनेक नई उद्योगिक कारखानों के अनेक नई उपकरणों की प्रकाशित करते हैं जैसे विमान, मोटरकार, रेडियो, टेलीफोन आदि। सम्प्रेषण के साधुनिक साधनों के उपकरणों की सुविधा के की उपकरण हैं।

४. अनुसन्ध तथा अभिव्यक्ति परिचरित ( *Parasitism and Attitude* )—एक अभिव्यक्ति परिचरित देवी जाती है कि क्या उद्योगों और उद्योग साधन द्वारा कि आने के मत, विचार एवं अभिव्यक्तियों की बदले का प्रभाव हो रहा है। टी० बी० की कलामें और देखें कि विज्ञानकर्ता आने की अभिव्यक्तियों की बदले का प्रभाव कर रहे हैं। वे किसी साधु के बदले का साधु कर रहे हैं, या उद्योग के दुष्कर्ता, कर्मचारी के बदले वाले रीतों के लक्ष्य करते हैं या कलाकर्म-पूरीक साधु कलामें के लक्ष्य करते हैं। यद्यप्य नर आने की अभिव्यक्ति की बदले वाले प्रभावों का साधन करना होता है। यह प्रभाव की प्रभाव होते हैं तो कभी असाध्य। यह लक्ष्य प्रभाव अनुसन्ध का प्रभाव होते हैं।

विशेष अनुसन्ध ( *Positive Parasitism* )—टी० बी० पूर्व अनुसन्ध के अनुसार की एक विधि का विकास येल ( *Yale* ) विश्वविद्यालय के कुछ प्रभाव सम्प्रेषणकर्ता के विचार : यह प्रभावकर्ता किसी की अभिव्यक्ति का साधन करने के प्रभाव को प्रकाशित करते हैं और उद्योग प्रभाव साधन करते हैं। उद्योग अपने साधनों द्वारा कुछ अनुसन्ध परिचरित बात किए की विधि हैं—

(i) विवेक, अन्य व्यक्तियों की कलामें अनुसन्ध द्वारा अभिव्यक्ति परिचरित के अधिक साधन होते हैं ( *Horsland & Wilson, 1932* )।

(ii) यदि हम यह समझते हैं कि उद्योग के प्रभाव साधन का कोई निहित उद्देश्य नहीं है, तो प्रभावित होने की सम्भावना अधिक होती है ( *Walker & Festinger, 1942* )। यही कारण है कि अनेक टी० बी० विज्ञान हन नर कोई प्रभाव नहीं साधते क्योंकि कलामें प्रभाव प्रभावित उद्देश्य का साधन होता है।

(iii) जिस लोगों के उद्योग साधनकर्ता की अभिव्यक्ति प्रभाव साधन होता है, कलामें प्रभाव प्रभावित होने की सम्भावना होती है। ( *Jacob, 1934* )।

(iv) कलामें अभिव्यक्ति तथा कलामें कलामें की कलामें कलामें और कलामें कलामें अभिव्यक्ति परिचरित के अधिक साधन होते हैं ( *Kinship & Kinship, 1949* )।

(v) कलाकार की प्रभाव अनुसन्ध के द्वारा प्रभावित होने की सम्भावना अधिक होती है ( *Allyn & Festinger, 1941* )।

(vi) उद्योगिक कलामें या सम्प्रेषण अधिक प्रभावकारी होता है। एक



यह जानते हैं किसी निश्चित काल या देश की हृदय बुद्धि का सर्वोत्तम प्रकार विचारों की वस्तुतः है जो उसी पर्याप्त होने की सम्भावना कम होती है। ऐसा विश्व का ये सब समझ होता है जब अभिवृत्ति बहुततुल्य होती है। ऐसी दशा में व्यक्ति अनुभवशील बुद्धि की बात करने के लिए प्रति-रूपी विवर्धित कर देता है।

(iii) अनुभवशील विचारों के प्रति सुरक्षा—कभी-कभी एक अन्य कारण अनुभव प्रारम्भ के प्रति प्रतिरोध उत्पन्न करने में सहायक होता है, जिसका उदाहरण मैकगुरी ( Mr. Galloway 1968 ) ने कुछ वर्षों पूर्व दिया था। उसकी संकायना यह थी की व्यक्ति की अभिवृत्तियों के विकास काल का ज्ञान कराते है ( जिसका उदाहरण दिया जाता है ) व्यक्ति में किने जाने वाले अनुभव के प्रति सीधे प्रतिरोध विवर्धित होता है। मैकगुरी ( Mr. Galloway, 1968 ) ने अपने प्रायोगिक अध्ययनों द्वारा मानते संकायना की पुष्टि की।

इस प्रकार अनुभव के प्रति प्रतिरोध के अनेक कारण हो सकते हैं, जैसे प्रतिरोध द्वारा व्यक्ति (i) अपनी किसी संकायना की रक्षा करता है, (ii) पूर्व विचारों का पूर्व ज्ञान, तथा (iii) अनुभवशील विचारों के प्रति सुरक्षा भाव।

## अभिवृत्ति परिवर्तन के सिद्धान्त

( Theories of Attitude Change )

कुछ ऐसे सिद्धान्त हैं जो संज्ञात्मक प्रक्रिया पर बल देते हैं। इनके अनुसार हम अपनी अभिवृत्ति और व्यवहार में अन्तर होते हैं तथा हमें अपनी वस्तुतः रचना चाहते हैं। इस प्रकार के सिद्धान्त अपनी विद्वान्त कहलाते हैं जिसमें हाइजर का सम्मुख सिद्धान्त तथा फेरेन्सकर का विवर्धित अनुभव सिद्धान्त है। इन दोनों में एक बात उभयनिष्ठ है कि बीच अपनी निरीक्षी अभिवृत्तियों और व्यवहारों के बीच की विवर्धितों को दूर करने के लिए अभिवृत्ति परिवर्तन करते हैं।

## हाइजर का सम्मुख सिद्धान्त

( Heider's Balance Theory )

हाइजर ने सर्वप्रथम अभिवृत्ति परिवर्तन के एक सिद्धान्त का विकास किया जो सम्मुख सिद्धान्त कहलाता है। यह सामाजिक व्यवस्थीकरण पर आधारित है। यह सिद्धान्त तीन सम्मुखताओं पर निर्भर करता है—

- (i) व्यक्ति के संज्ञा की दृष्टादशी होती है।
- (ii) संज्ञात्मक दृष्टादशी संज्ञा या संज्ञा की दशा में होती है, क्योंकि इन दृष्टादशी में संज्ञा या संज्ञा की वस्तु पाई जाती है।
- (iii) संज्ञात्मक दृष्टादशी की दशा दृष्टादशी के अर्थों को संज्ञात्मक विवर्धित पर निर्भर करता है।

हस्ताक्षर के सिद्धान्त में दो स्थिति ( P और Q ) तथा एक अन्य स्थान का उपयोग किया है जिसे हम  $x$  कह सकते हैं। स्थिति ( P ) विशेषण का केन्द्र है, स्थिति Q एक अन्य स्थिति है, और  $x$  को एक घटना का विचार कर सकते हैं। हस्ताक्षर यह मानता था कि P, जो संभाव्यतात्मक संरचना में P, Q और  $x$  के बीच सम्बन्धों का संकलन करे होता है। हम तीन वर्गों में, उसके अनुसार दो प्रकार के सम्बन्ध हो सकते हैं (i) इसकी सम्बन्ध, (ii) पदार्थ या स्थानीय-स्थान सम्बन्ध। इसकी सम्बन्ध का अधिष्ठान यह माना कि वे विषयों दोनों वर्गों में एकरावाई का रही है। यदि यह इसकी का एकमात्र सम्बन्ध माना होता है तो प्रत्यक्ष कह सकते हैं और यूनान होने पर अनुमानित सम्बन्ध कहा जाता है। इसकी सम्बन्ध के उदाहरण हैं, सामान्य-सम्बन्धता, विषय-दूर गति। दूसरी ओर पदार्थ या स्थानीय-स्थान सम्बन्ध एक ऐसा सम्बन्ध है जिसके कारण-कारण हम किसी वस्तु या स्थिति की गति का या पदार्थ करते हैं। इसका अधिष्ठान यह है कि हम कुछ किसी स्थान को पदार्थ करते हैं तो उसके प्रति अनुकूल प्रभावित अधिष्ठान रखते हैं, और हम प्रभावित करते हैं तो अधिष्ठान या अनुकूल अधिष्ठान रखते हैं।

संयुक्त सिद्धान्त की मान्यताओं के अनुसार, P, Q तथा  $x$  के बीच सम्बन्ध वर्गों में पदार्थ या सामान्य के अनुसार संयुक्त या असंयुक्त हो सकते हैं। संयुक्त या असंयुक्त की निश्चितता स्थिति के अवलोकन द्वारा निर्धारित एवं सिद्ध होती है।

हस्ताक्षर के अनुसार संयुक्त तथा असंयुक्त कहा जाता है। यह वा दो दोरी सम्बन्ध प्रभावित होती है ( यीना कि पदार्थ की रसा में होता है ) या वह दो सम्बन्ध अनुकूल ( सामान्य ) और एक प्रभावित होता है यीना कि नीचे कि में दर्शाया गया है।



संयुक्त की रसा

संयुक्त की रसा सांख्यिक दृष्टि के कारणसे, विषय और स्थिति के प्रति अधिष्ठान होती है। इसके कारणसे स्थिति उदाहरण में स्थिति P पदार्थ करता है अन्य स्थिति Q तथा वस्तु  $x$  को और Q पदार्थ करता है  $x$  को वस्तु दोनों संबंध

कारणक है। सम्बन्धन की दूसरी दशा में व्यक्ति P, भाग्यहीन करता है जब व्यक्ति Q को तथा वस्तु X को और अन्य व्यक्ति Q, वस्तु X को प्राप्त करता है।

सम्बन्धन की दशा वैज्ञानिकों, वैकीनी, अधिवक्ता और समाज की चलायन करती है। वस्तुविषय व्यक्ति की सम्बन्धनता अधिक होती है। जब दो सम्बन्धन बनामक और दोबारा सम्बन्धनक होता है तो सम्बन्धनक दशा ब्रह्म होती है जिसका विचारता करनेन इस सम्बन्धनता जाता है—



सम्बन्धन की दशाएँ

इसद्वारा के सम्बन्धन सम्बन्धन की दशाएँ समाज चलायन करती हैं। वस्तु जब व्यक्ति की विचारिता करती है। जो सम्बन्धन की दशा करने में सम्बन्धन की। सम्बन्धन की दशा करने की दशा व्यक्ति के व्यक्तिगत दुर्बो पर निर्भर करती है। वस्तुविषय (1961) के सम्बन्धन समाज के प्रति सम्बन्धनता व्यक्ति की सम्बन्धनता अधिकता पर निर्भर करती है। सम्बन्धनता समाज में सम्बन्धन की दशा जब व्यक्ति की चलायन करती है जो व्यक्तिगत व्यक्तिगत द्वारा पुनः सम्बन्धन सम्बन्धन करती है।

इस प्रकार सम्बन्धन विज्ञान की मुख्य सामग्री यह है कि इस उम्र व्यक्ति की चलायन करती है जो हमारे विचारों के समाज विचार समझे हैं और अन्य विचार समझे जाते की सम्बन्धन करती है।

वस्तु सम्बन्धन विज्ञान का नाम के व्यक्ति विज्ञानों पर सम्बन्धन समाज दशा है और हमने कुछ सम्बन्धन समाजों की व्यक्ति विचार है, किन्तु यह प्रति कारणीकृत है। यह व्यक्तिगत समाज चलायन है कि हमने सम्बन्धन की समाज पर की समाज नहीं विचार समा है। इसद्वारा ने किसी व्यक्तिगत समाज में सम्बन्धन समाज के विचार में किसी व्यक्तिगत समाजों का व्यक्ति नहीं विचार। समाज ही होता व्यक्ति होता है कि यह विज्ञान सम्बन्धन की सम्बन्धनता पर सम्बन्धन सम्बन्धन कर देता है। समाज इस ऐसे व्यक्ति की भी समाज करती जिसने किसी समाज पर सम्बन्धन नहीं होती, या किन व्यक्ति की समाज करती है। उम्रों सम्बन्धन कर में सम्बन्धन नहीं होती।



## संज्ञासाधक विज्ञानाधिका सिद्धान्त

( Cognitive Development Theory )

एक सिद्धान्त की स्थापना पीरियार ( 1957 ) ने किया था । अनुसार समाज मनोविज्ञान के किसी अन्य सिद्धान्त के तुलना कीज और इसका परीक्षण करना नहीं किया । इसके आधार पर हमने ने इसे नतीजा साधक तथा विशिष्ट है विज्ञान तथा पीरियार ( 1962 ) और पीरियार ( 1966 ) ने सिद्धान्त की संशोधित किया जिससे इसकी अनेक समस्याएँ दूर हो गयीं ।

बच्चों अपनी दो कालों में अपना साधक सीखते हैं जिनमें के किसी एक का चयन करने के लिए हेतु करना है । एक का चयन करने के बाद ही बच्चों अन्य कालों के सुविधा के लिए का कुछ होता है । आप जाना सीखते हैं कि क्या आपने नहीं किया है ।

माताएँ बच्चे के साथ के बच्चों की नई नीतियों की चर्चा करने के बाद कुछ है, "क्या नई तकनीक समझ आती?" आप तुरन्त उत्तर देते हैं "हाँ" जब कि वास्तव में नहीं नहीं है । किसी के बच्चों की नयापनक बहुत बड़े की और आपने देखा इसका कि आप बहुत उत्साह है ।

इस सभी समस्याओं में जो बात समझने है उसे संज्ञासाधक विज्ञानाधिका कहते हैं जो व्यक्ति के विचारों में कुछ का स्थिति कि क्रियाओं और परिणतियों की विशेषताओं के उत्पन्न के कारणों की बता है ।

संज्ञासाधक तत्त्व, इस दृष्टिकोण की कुछ एकता है । अपने विचार में व्यक्ति को जो बात पता है या अपने परिचित के बारे में वह जो कुछ जानता है अपना ही की विचार पता है, उसे संज्ञासाधक तत्त्व कहते हैं ।

पीरियार की उपस्थिति के अनुसार जिन संज्ञासाधक तत्त्वों को एक दूसरे के साथ सम्बन्धित रूप में देखा जाता है उनमें वा की समझ ( संज्ञा ) सम्बन्ध होता है या विज्ञानाधी सम्बन्ध होता है । उस संज्ञासाधक तत्त्वों में अन्तर्निहित का अन्तर्गत होता है जो एक तत्त्व अन्य के साथ अनुसन्धन करता है और वह समझी क्या कहलाती है । जिनके उस संज्ञासाधक तत्त्वों में व्यक्ति निर्देश है, सम्बन्धित है, एक ही तरीक़ा का ही सम्बन्धित है जो इसे विज्ञानाधिका कहते हैं । ऐसे वह कहते कि "मेरे लिए होता है," और "आपका मेरे लिए होता है"—दोनों में विज्ञानाधिका पाई जाती है और के दोषों की विशेषता नहीं होती पादि । किन्तु वह निर्देश होता है और वह ही जानता है कि अपने बच्चे होता है । इस संज्ञासाधक तत्त्वों में सम्बन्धित है जो विज्ञानाधिका का उत्पन्न है । साधक तत्त्व घन दूर स्थापित हो बच्चों की वह दोषों सम्बन्धित हो है ।

विद्यन्वादिता की भाषा अधिक तीव्रता में समझ नहीं होती। वह विशेष करती है (i) संज्ञावाचक शब्दों के समूह पर तथा (ii) सम्बन्ध संज्ञावाचक शब्दों के विद्यन्वादिता की भाषा पर। अतिसार यह है कि जब संज्ञावाचक शब्द अधिक समूहबन्धुनी होती है तथा तबसे विद्यन्वादिता का बीच अधिक होता है तो व्यक्ति अधिक संज्ञावाचक विद्यन्वादिता का अनुभव करेगा। इस तथ्य की निम्नलिखित चार द्वारा अभिव्यक्त कर सकते हैं—

$$\text{विद्यन्वादिता} = \frac{\text{समूह X विद्यन्वादी शब्दों की संख्या}}{\text{समूह X शब्दों की संख्या}}$$

विद्यन्वादिता की भाषा जिसकी अधिक होती है उस शब्दों के करने के लिए व्यक्ति पर लगता ही अधिक प्रभाव होता है ऐसी वस्तु में व्यक्ति विद्यन्वादिता की दूर करने के लिए तीन प्रकार के प्रयास कर सकता है—

- (i) विद्यन्वादिता की दूर करने के लिए व्यक्ति व्यवहार के संज्ञावाचक शब्दों में परिवर्तन करे ;
- (ii) परिवेश के संज्ञावाचक शब्दों में परिवर्तन करे ;
- (iii) उसे संज्ञावाचक शब्दों की संकल्पना विद्यन्वादिता की दूर करे ।

अधिकतर शीघ्रशब्दों के अनुसार विद्यन्वादिता की एक अभिव्यक्तिवाचक वस्तु के समझ नाव सकते हैं। अतिसार यह है कि व्यक्ति की इसका अनुभव करते हैं, इसे सम करने के लिए अभिव्यक्ति होते हैं। विद्यन्वादिता की दूर करने के तीन प्रकारों के सम्बन्ध तीन प्रभावित विद्यन्वादिता की कम करने में प्रयुक्त होती है—

1. **अभिव्यक्ति परिवर्तन**—अभिव्यक्ति में परिवर्तन करने के संज्ञावाचक शब्दों की विद्यन्वादिता कम होती है। समझा करें एक वैज्ञानिक शरीर व्यक्ति यदि विद्यन्वादिता के शब्द अपने कार्य पर लगता है, जिससे उसे चुनता है। विद्यन्वादिता की वजह से इसे वह अपने भाषा की व्यवस्था कर सकता है कि समझ में वह अपनी शीघ्रता के प्रति चुनता नहीं लगता (अभिव्यक्ति-परिवर्तन), वह वह अपनी शीघ्रता की शीघ्रता के (व्यवहार-परिवर्तन)।

2. **नवीन सूचनाओं का संकल्प**—विद्यन्वादिता में शब्दों की दृष्टी प्रभावों के अत्यंत व्यक्ति अपनी अभिव्यक्ति के समझ में नवीन सूचनाएं चुनता है। इस नवीन सूचनाओं द्वारा व्यक्ति वास्तव होता है कि वास्तव में कोई समस्या, वह समझ नहीं है। अतः अभिव्यक्ति या व्यवहार में परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है। विशेष तीन चले ऐसे शब्दों की समझ करते हैं जिसमें सूचनाएं तथा शीघ्रता की प्रभाव के समझ में समझ व्यक्त किया गया है। वे ऐसा समझ करते हैं कि वे जानते हैं कि विशेष तीन के शीघ्रता हो सकता है, जो कि समझ दोषी जीवन की



विज्ञानादिता अब समय की होनी है जब व्यवहार के दुरे परिणाम होते हैं जब समय विज्ञानादिता नहीं होती जब किसी व्यवहार के परिणाम व्यवसायित या वास्तविक होते हैं (Goodrich, Coopers & Lynds, 1929) इस प्रकार वर्तमान व्यवहार जब व्यवसायित होता है और उसके परिणाम दुरे होते हैं तो व्यक्ति में विज्ञानादिता उत्पन्न करता है।

(iii) जब की विहिता (Individualism of self) —जब वर्तमान व्यवहार में वह विहित होता है तो व्यक्ति उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेता है या व्यवहार का समय बीच उत्तरदायित्व नहीं है जिसके कारण कर्त्ता की प्रविष्टा प्रभावित होती है (Barnes and Tice, 1944)। इस प्रकार जब वर्तमान व्यवहार या तो व्यक्ति के किसी एक या अधिक एक के युक्त होता है तो विज्ञानादिता का अनुभव होता है।

(iv) कार्यात्मक कठोरता—जब व्यक्ति किसी प्रकार के कार्यात्मक कठोरता का अनुभव करता है तो भी उसे विज्ञानादिता का अनुभव होता है (Croyle, and Coopers, 1943)।

विज्ञानादिता और व्यवहार—व्यवहार में परिवर्तन के लिये अभिव्यक्ति परिपूर्ण आवश्यक है और अभिव्यक्ति परिपूर्ण विज्ञानादिता द्वारा प्रभावित होता है। विज्ञानादिता को दूर करने के लिये व्यक्ति अपनी अभिव्यक्ति में परिवर्तन करता है। यदि व्यक्ति की अभिव्यक्ति के अभिव्यक्ति कार्य करता पड़ता है या अभिव्यक्ति का विरोध करता पड़ता है तो वहमें विज्ञानादिता उत्पन्न होती है और परिणामस्वरूप वहमें अभिव्यक्ति परिपूर्ण होती है। ऐसा परिणाम कोहेन, सिमून्स और कोपिंग (1958) कोहेनकर के कोहेनियम (1959) कोहेनियम (1959) सिमून्स और कोपिंग (1958) के द्वारा मिले हैं।

## विज्ञानादिता सिद्धान्त के उपयोग

(Applications of Dissatisfaction Theory)

विज्ञानादिता सिद्धान्त आकाश अपनी सिद्धान्त है। इसका सबसे महत्वपूर्ण उपयोग 'निर्णय करने' की प्रक्रिया है। यह व्यक्ति के विचारों और अभिव्यक्ति विरोधी व्यवहारों का समीक्षण एक समीक्षण देती है। इस बीच की आकाश-व्यक्ति (Individualism) पड़ते हैं। आकाश अनुभव का परिणाम एक कार्यात्मक (1929) ने विस्तृत अध्ययन किया है। उनके अनुसार किसी व्यक्ति के विचारों की उसकी बीच के बीच प्रभावित है। उन्होंने तीन अवस्थाओं का परिणाम किया। (1) यदि किसी आकाश की अभिव्यक्ति विरोधी कार्य के लिये प्राप्त किया जाए तो यह विज्ञानादिता का अनुभव करता है। (2) यदि अभिव्यक्ति विरोधी

साधु उचितार्थ अधिक समझ होती है तो विद्वानादिता की भाषा खुल जाती है। (3) कतिपय साधु अधिकतर परिचर्याएँ एक प्रकार से विद्वानादिता की समझ करते हैं। पूर्ण विद्वानादिता की समझ करने का प्रयत्न विशेष कष्टा है विद्वानादिता की भाषा सरल, सरासरी, सरल भाषा का व्यवहार की आवश्यकता करने वाली कतिपय साधु समझ होती तो अधिकतर परिचर्या अधिकतर होती पाठ्य है। उन्होंने अपने उद्देश्यों के एक समुदाय की दृष्टि-दृष्टि करने के लिये कि प्रयोग प्रयोग का 1 साधु विचार कर कि प्रयोग समुदाय की दृष्टि दृष्टि करने के लिये 20 साधु विचार। जिस उद्देश्यों में 20 साधु विचार किया गया था वहीं यह था कि दूर कोई 20 साधु विचार करने पर दृष्टि होती, जो कि उनके व्यवहार के प्रयोग था। यह उद्देश्य समुदाय केवल 1 साधु पर दृष्टि करने वाले समुदाय की कतिपय सम विद्वानादिता का अनुभव करता है। 1 साधु विचार कर दृष्टि करने वाले उद्देश्य यह सभी होते हैं कि कार्य करने वाला एक प्रयोग नहीं था।

होते सभी के द्वारा के अपनी विद्वानादिता की करते हैं। वे कहते हैं कि उन्होंने 1 साधु के लिये यह नहीं कहा कि कार्य प्रयोग है, बल्कि साधु में कार्य प्रयोग था। यह परिचर्या सामाजिक विचारधारा के विचारधारा है कि दृष्टिकोण अधिक होने के अधिकतर परिचर्या अधिक होती। उन साधुओं में अधिकतर साधु कि अधिकतर परिचर्या है दृष्टिकोण का दृष्टि होती करने है, का समझ होती है।

विद्वानादिता विद्वान का अन्य उद्देश्य व्यवहारिक प्रयोग (Practical Application) के लिये है। उद्देश्य प्रयोग कोलॉनी में अधिक नहीं होती पाठ्य है। केवल कुछ पूर्ण पूर्ण प्रयोग कोलॉनी की ही जाने पाठ्य है। प्रयोग के अनुसार विद्वानादिता के अधिकतर साधु प्रयोग के कारण, जो प्रयोग प्रयोग हैं जो उनके पर अनुभव, अधिकतर और विचारों के अनुभव हैं तथा उनके प्रयोग प्रयोग हैं जो विचार होती है।

विद्वानादिता विद्वान का प्रयोग की जाती प्रयोग प्रयोग है। उन अधिकतर अपनी अधिकतर के अधिकतर प्रयोग करता है, क्योंकि इन प्रयोगों में विद्वानादिता बहुत प्रयोग का में प्रयोग होती है। किन्तु इन विद्वानों में कुछ प्रयोगों की है।

प्रयोग, विद्वानादिता अधिकतर के अधिकतर प्रयोग की जाती प्रयोग है। यह प्रयोग नहीं है कि प्रयोग की प्रयोग प्रयोग का प्रयोग प्रयोग करेगी।

प्रयोग, विद्वानादिता विद्वान इन प्रयोग प्रयोग की अनुभव नहीं होता कि विद्वानादिता की प्रयोग प्रयोग है।

कहा है, यह विद्वान, विद्वानादिता की अधिकतर प्रयोग, विद्वानादिता की प्रयोग-प्रयोग, प्रयोग विद्वानादिता करने के अनुसार प्रयोगों में अधिकतर प्रयोगों के प्रयोग की और प्रयोग नहीं होता, जो प्रयोग एक प्रयोग प्रयोग है।

## अनुभवमयीय सम्प्रेषण और अभिवृत्ति परिचर्या

( Personal Communication & Attitude Change )

सैलट्टरी ( 1969 ) के अनुसार समाज मनोविज्ञान के किसी अन्य क्षेत्र के तुलना में यह सम्प्रेषण बहुत ही है जिसकी अभिवृत्ति परिचर्या में की है । इस और संबंधित समस्त में सर्वप्रथम ज्ञात होने वाले सबसे प्रारम्भिक तथा बहुमोदी ( 1955 ) है । यह सम्प्रेषण, सम्प्रेषण या सुझाव तथा और लोगों की प्रेरणा प्रदान है । इसकी प्रतीति बहुत आसानीसे समीक्ष्य होती है ।

1. सम्प्रेषण का साधन की विशेषताएँ ( The Characteristics of Communication )—किसी सूचना द्वारा अभिवृत्ति परिचर्या, सम्प्रेषण प्रत्यक्ष साधन की विशेषताओं पर निर्भर करता है । लोगों के साथ हुआ है कि अन्य लोगों के समक्ष होने पर समाज, प्रत्यक्ष क्षेत्र, और परिचित सम्प्रेषण अभिवृत्ति परिचर्या में अधिक प्रभाव होता है । किन्तु जिस सम्प्रेषण गुण के सर्वाधिक ज्ञान प्राप्त किया है उसे सम्प्रेषण विषयमयीयता कहते हैं ।

विषयमयीयता ( Credibility )—विषयमयीयता का अविरोध यह है कि सम्प्रेषण पर विश्वास किया जा सकता है या नहीं । जब विषयमयीय की अवस्था अधिक विश्वसनीय सम्प्रेषण अभिवृत्ति परिचर्या में अधिक प्रभाव होता है । इसमें दो बातें विदित होती हैं—विश्वसनीयता ( Credibility ) और सम्प्रेषण ( Persuasiveness ) । कहते हैं कि सम्प्रेषण की विश्वसनीयता कहते विश्वसनीयता तथा सम्प्रेषण पर निर्भर करता है । जिस सम्प्रेषण के विदित स्वामी होते हैं के अधिक विश्वसनीय नहीं माने जाते । सम्प्रेषणों में विश्वसनीयता का होना आवश्यक है—

(i) विश्वसनीयता ( Expertise ) का अविरोध सम्प्रेषण के ज्ञान की मात्रा के है । प्रारम्भिक तथा माहिर ( Horowitz and Weiss, 1951 ) ने अपने प्रयोगों के प्रमाणित किया है कि सम्प्रेषण में विश्वसनीयता का गुण प्रत्यक्ष अधिक होता है यह अभिवृत्ति परिचर्या में प्रदान की अधिक प्रभाव होता है । जब सूचना विश्वसनीय द्वारा प्राप्त होती है तो लोग उसे मान्य मानते हैं ।

(ii) सम्प्रेषण ( Persuasiveness )—जो अविरोध सम्प्रेषण के साधनों के है । यदि ऐसा प्रतीत होता है कि सम्प्रेषण के विदित क्षेत्र या सम्प्रेषण है, सर्वाधिक अभिवृत्ति परिचर्या में सम्प्रेषण का स्वार्थ विदित होता ही नहीं करीना करते लोग नहीं मानते हैं ।

(iii) आकर्षण ( Attractiveness )—सम्प्रेषण के आकर्षण में अन्य बारी-रिक्त रूप से, कुछ विचार ( विचार ) और प्रत्यक्ष क्षेत्र होने से है । जो लोग हमारे



सूचना अधिनियम अधिवर्धित परिभाषाएं प्रदान करती हैं। (Howland, Luskdale & Sheffield, 1949)। अधिनियम सूचना के अनुसार डिप्लोमा सूचना पत्रकारों को सूचना की अनेकता अधिक प्रदान करने की जाती है तथा अधिवर्धित परिभाषा में अधिनियम का भी उल्लेख है।

(14) **प्रसौरितपादकक्षा (Pseudobalanus)**—क्या यह वृक्षों पर अधिक प्रसारी-  
तापक होती है जो बीजवाली से कम प्रत्यक्ष करती है ? बीजी से सब की श्रुति-  
प्रमाणित हुई है । लेवेन्हाफ ( 1970 ) ने अपने अध्ययनों द्वारा यह प्रमाणित किया  
कि सामान्य तौर से किसी वृक्षों द्वारा प्रत्यक्ष सब की मात्रा मिलती अधिक होती  
है, अधिकतर परिस्थितों की मात्रा की पहली ही अधिक होती है । वृक्षों द्वारा प्रत्यक्ष  
सब की मात्रा के लिये बहुत अधिक मात्रा अधिकतर स्थितियों की परिभाषित करती है । इस  
प्रकार प्रसौरितपादक वृक्षों के अध्ययन सब के कारण प्रत्यक्ष और अप्रति सीधों होती है  
और सब की मात्रा की प्रत्यक्ष प्रमाण प्रमाण होती है । इस प्रकार प्रसौरितपादक  
प्रत्यक्ष अधिक प्रमाणकारी होता है ।

किन्तु कुछ कम अन्तर्दृष्टि के यह अन्वेषण हुआ है कि जीव-व्यवस्थात्मक व्यवस्थाएँ कम अभिवृत्ति प्रतिक्रियात्मक व्यवस्थाएँ हैं। (Jain and Fiebach, 1953)। इन व्यवस्था प्रतिक्रियात्मक व्यवस्थाओं के कारण जीववैज्ञानिकों ने अब व्यवस्थात्मक जीववैज्ञानिक प्रक्रियाओं की पहचान का प्रयास किया है जो अब की वृत्ति में अभिवृत्ति एवं व्यवस्था के परिचय के सम्बन्ध में है।

मैसूरु ( 1969 ) के अनुसार अधि रूखे के कारण पर्वतीय वन के प्रति कीटाणुजीवी रोगों का प्रसारण हो रहा है, किन्तु हम ही रोगों के प्रति रोकथाम के उपाय करने की दृष्टि से ही सज्जित हैं। हम पर्वत के अधि-रूखों के कारण इस विषय में अत्यधिक चिन्ताओं की भावना हो सकती है। मैसूरु ने यह भी सुझाया कि हम पर्वत और वन के पर्यावरण ( environment ) पर हमला न करें, क्योंकि पर्यावरण का हम निरन्तर ही हमारे जीवन के लिए उपयोग कर रहे हैं, किन्तु अत्यधिक पर्वतीय वन के कारण ही हमारे जीवन ( environment ) को नुकसान हो रहा है और अधि-रूखे पर नियंत्रण नहीं कर रहे।

राज्य में प्रथा विधायन ( 1978 ) के अनुसार विधायन की संख्या 100 है। यह क्षेत्र में अधिक अनुसूचित जाति प्रजा है—(क) जब भी राज्य सरकार यह कहती है कि निर्धारित करना अधिक संभव है, (ख) जब भी राज्य सरकार यह कहती है कि प्रथा के प्रति जनता का रुझान अधिक है, और (ग) जब भी राज्य की विधानसभा को यह कहना है कि राज्य में अनुसूचित जाति की संख्या अधिक प्रभावकारी हो सकती है।





की खाता की जाती है। इस प्रकार मुद्रि तथा मनुष्य में किसी भी सम्बंध की स्थापना नहीं की जाती।

चीन एक और कारण है जिससे मनुष्य के साथ सम्बन्धी का सम्बन्ध अनेक कार्मिकानिधियों से भिन्न है । यह सम्बन्ध न हीन सम्बन्ध में चीन-सुमित्र सम्बन्ध का परिणाम होता है ।

[illegible]

**अभिवृत्ति मापक ( Attitude Measurement )**

यह बात करने के लिये कि लोगों में कीमती अभिवृत्तियाँ हैं और किसी प्रकार हैं, अभिवृत्ति मानव व्यवस्था है। अभिवृत्ति मानव द्वारा व्यक्ति के व्यवहार का चरित्र बनाने वाला होता है। अभिवृत्तियों का प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं होता कि कल्याण, दुःखित होने का मानव व्यवस्था के व्यक्ति की अनुकूलता या व्यवहार के द्वारा होता है। किसी व्यक्ति के समस्त अभिवृत्ति के सम्बन्ध में लोगों की प्रतिक्रिया के रूप में उनकी अनुकूलता के रूप में हैं जो अभिवृत्ति का प्रभाव होती है। व्यक्ति की अनुकूलता के द्वारा अभिवृत्ति की प्रभाव एवं जीवन का मानव होता है। एवं इसका अभिवृत्ति मानव की समस्त जीवन अभिवृत्ति मानव की अनुकूलता है। अभिवृत्ति मानव में मानवियों के अतिरिक्त अतिरिक्त प्रभावों, समस्त व्यक्ति तथा एवं प्रभावों का प्रभावों की होता है।

मालवी की दमना हेतु अनेक कारण एकत्र मिले जाते हैं और उनमें से कुछ का प्रथम श्रेष्ठतम रूप में विवक्षित कारण है। किसी मालवी में कपड़ों या पत्तों के धरात के अन्तर्गत इस बात पर विशेष ध्यान देते हैं कि केशव के अन्तर्गत क्यों पत्तों को धरात-विधेयताहीन हो। यह विशेषताहीनता मालवी के अनेक संघ पर होती जाति है। यह भी ध्यान देते हैं कि मालवी में कपड़ों की संख्या बहुत कम जाती होती जाति है। कपड़ों या पत्तों की संख्या में अनेकों-अनेकों वृद्धि होती है मालवी की विधेयताहीनता में वृद्धि होती है। लेकिन संख्या बहुत अधिक होने पर मालवी के अन्तर्गत तथा अनु-कर्मों में कठिनाई होती है। अतः अनेकों की संख्या विधेयता धारण में अनेकों मालवी तथा कुछ-कुछ की आवश्यकता होती है।

### अभिव्यक्ति मापनी की विशेषताएँ

अविभक्ति प्रणाली के अन्तर्गत उपरोक्त के लिये कुल दिनेशवार्यों की विवरणीयता

पैमाना, इसकी को समझना, मूल्य विन्दु तथा दृक्निष्ठापकता आदि का होना आवश्यक है ।

1. विश्वसनीयता—यदि बार-बार प्रयुक्त करने पर मापनी से एक वही परिमाण प्राप्त होते हैं तो यह विश्वसनीय मापी जाती है । यह मापनी विश्वसनीय नहीं जाती है जिसमें एक ही व्यक्तिगत या मापन को बार करते पर लगातार एक वही परिमाण प्राप्त होते हैं । किसी मापनी की विश्वसनीयता को ज्ञान के निम्न कारणात्मक तीन विविध प्रमुख तरीके हैं (i) परीक्षण पुनर्परीक्षण विधि ( Test-retest method ) (ii) समासांतर कार्य विधि ( Parallel form method ) (iii) अर्धविच्छेदन विधि ( Split half method ) ।

2. वैधता—कोई मापनी जब समय बँक करी जाती है तब यह उसी गुण का मापन करती है जिसके मापन के लिये वह विनिर्दिष्ट की गई है । कोई व्यक्तिगत मापनी या कोई कोई व्यक्ति व्यक्तिगत या मापन किसी मापना में करती है उसी मापना में वह वैध मापी जाती है । बार विधियों के द्वारा कुछ रूप से मापनी वैधता का निर्धारण किया जाता है । (1) कालबन्धु वैधता ( Coeasat validity ) (2) समासांतरिक वैधता ( Concurrent validity ) (3) पूर्वानुमानक वैधता ( Predictive validity ) (4) संश्लेषणक वैधता ( Construct validity ) ।

3. इसाद्वयी की समानता ( Equality of units )—मापनी की विभिन्न इकाइयों में समानता का होना आवश्यक है । इसका अर्थव्यव यह है कि 8 और 10 अंकों के बीच मान्य करी होता कहिये की 11 और 15 अंकों के मध्य है । ऐसा न होना इसका सूचक है कि मापनी की विभिन्न इकाइयों में समानता का अभाव है ।

4. एक विमलसमकता ( Unidimensionality )—इसका अर्थव्यव यह देवता है कि क्या मापनी एक निश्चित व्यक्तिगत या मापन करती है ? जो मापनी एक से अधिक व्यक्तिगतियों का मापन करती है, उसे बहुविधायक कहते हैं । मूल्य विन्दु व्यक्तिगत मापनी में प्रयोज्य और अप्रयोज्य गुण होते हैं । इस मापनी में एक ऐसा स्थान होता है जहाँ अनावश्यक व्यक्तिगत, अप्रयोज्य रूप में और अप्रयोज्य, अनावश्यक व्यक्तिगत का रूप ले लेती है ।

## १ थारनर्स मापनी

( Thorndike's Scale )

इसे समानांतर समानांतर ( Method of equal appearing intervals ) की कहते हैं । इस मापनी का विकास थारनर्स ने अपने सहयोगी (Chavo ) की सहमता से ( 1919 ) में किया था । उन्होंने बुद्ध, चर्च, कुसुम, शिरी, उर-

विकास, कम निरीह वारि समस्याओं के प्रति विभिन्न स्तरों की अभिधृतियों के माध्यम से। यह अभिधृति मापनी सीमा की । विभिन्न स्तरों के 120 समान एकल बिंदु की अभिधृति के पक्ष और विपक्ष में सम्बन्ध में । पक्षी संख्या में निर्माणों का प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध नहीं बिंदु पाते हैं । उन्हें A से E तक अवधि के अंतर बिंदु 11 मानक की पंक्तियों की देते हैं । उन्हें यह निर्देश देते हैं कि सभी A पर एक समान की अभिधृति करें जो कुछ का सम्बन्ध सुझाव दे । इसी तरह दूसरी पंक्तियों पर भी कुछ के विषय में यह का विचार है सम्बन्ध कवर्गों का उनकी माप के अनुसार व्यवस्थित करने का निर्देश का यह भी कहा गया कि सभी E पर एक समान की अभिधृति जो कुछ का सम्बन्ध सुझाव दे । इस प्रकार सभी बिंदुओं में 11 बिंदु-मापनी पर अवधि के समान की माप बिंदु । फिर इसका मापनी (Median) का बिंदु माप । मापनी-माप विषय (Statistical Analysis) की रचना द्वारा विभिन्न कवर्गों की विशेषता की माप की देखने का प्रयास किया गया । Q के माप के निर्माणों के बीच संबंध का निर्धारण करते हैं । Q के माप के रूप में बिंदु-मापनी के बीच संबंध के अधिक होने का परिणाम प्राप्त होता है । Q के माप के बिंदु-मापनी में सभी अवधि बिंदुओं का सुझाव है । मापनी के रूप में सभी की मापनी के विकास बिंदु बिंदु Q माप एक ही बिंदु के अधिक का । सम्बन्ध यह 120 कवर्गों की 120 अवधि के समान मापनी पर एक समान की अभिधृति करने की कहा गया बिंदु में सम्बन्ध में । इस प्रकार सभी स्तरों की मापनी-मापनी (Statistical Analysis) निर्धारण की गई । इस बिंदु द्वारा भी कुछ कवर्गों के मापनी के विकास बिंदु में ।

कवर्गों बिंदु द्वारा मापनी की रचना के प्रत्यक्ष—

1. सर्वप्रथम मापनी (अभिधृति) के सम्बन्धित स्तर के कवर्गों की विभिन्न बिंदुओं द्वारा एकल करते हैं । यह कवर्ग मापनी के पक्ष और विपक्ष में होते हैं ।
2. यह कवर्ग 120-120 बिंदुओं की देते हैं । यह निर्माण बिंदु बिंदु में बिंदु मापनी का सभी अभिधृति बिंदु-मापनी माप में विद्यमान होती है ।
3. 11 पंक्तियों पर A से E तक बिंदु-मापनी बिंदुओं की देते हैं । इस कवर्ग के विषय में बिंदु-मापनी का अंतर माप करते हैं । A का बिंदु है बीच बिंदु-मापनी तथा E का बिंदु है अंतर और E का बिंदु है बीच बिंदु-मापनी । बिंदु-मापनी की कवर्गों की इन 11 पंक्तियों में व्यवस्थित करने का निर्देश देते हैं ।
4. कवर्गों का मापनी माप (Scale Tables) का बिंदु के बिंदु 11 बिंदु



जगती है। अधिदृष्टि कालोंक ज्ञान करने के लिए पायसी सुन्नी के अनुसार ज्ञान के अधिका के ज्ञान में रहते हैं और ज्ञान पायसी सुन्नी (Midnight vision) निभाती है। सुन्नी परीक्षाओं का अधिदृष्टि कालोंक ज्ञान है।

यह बहिष्कृत मावसी बालक छात्रों की होती है क्योंकि सम्मिलितार पद्धति में सिटी राहुल के बहिष्कृतों की अनेक प्रकार की बहिष्कृतियों का सामना होता है। जब मावसी में बच्चों की संख्या अधिक होती है तब यह पद्धति विशेष उपयोगी सिद्ध होती है जब कुछ, दोन बालक या सिटी बालिकाएँ की बहिष्कृतियों का सामना करना हो तब भी यह बड़ी उपयोगी पाई गई है। सम्मिलितार पद्धति द्वारा हीनार की गई बहिष्कृत मावसी की निरवज्ञानीयता छोटीबच्चक जग दुई है ( 75 ) । पद्धति की वैधता की छोटीबच्चक निम्नी है ।

विष्णु इस पदार्थ की बीजार्थी की हैं—

- (I) निर्माणों की अपनी अभिवृद्धि वाली निर्माण की प्रभावित नहीं है (इसलिए तथा विधि 1952)
- (II) इस विधि द्वारा वाली निर्माण में अधिक सब तथा सब की प्रभावित होती है।
- (III) निर्माणों का अधिकृत होता प्रभावित है।
- (IV) इस विधि द्वारा निर्मित वाली में 11 विधियों के सब प्रभावित करना प्रभावित है।
- (V) यदि की प्रभावों का वाली प्रभावित नहीं है की यह प्रभावित प्रभावित होता है कि यदि प्रभावित प्रभावित प्रभावित प्रभावित है प्रभावित (1957)

Figure 1. Example of a typical subject's data on the Liberman's Scale.

सिस्टम ग्राहकों को संश्लेषी कीटि-विश्लेषण (Sensitized Ratings) विधि काया जाता है। इसका विकास सिस्टम के 1933 में किया गया था। यह एक 5-स्तर का है—1-2-3-4-5, जहाँ 1-2-3-4-5 क्रमशः बहुत कम, कम, मध्यम, अधिक और बहुत अधिक है।

निर्वाह पद्धति द्वारा वास्तवी निर्माण के प्रमुख कारण एवं प्रकार हैं—

१. अधिकांश के सम्बन्ध कर्मों का संकट एवं चयन । अधिकृति से समझाव  
करके और अधिकृत कर्म एकत्र करने वाले हैं ।

[illegible]

3. यदि कक्षा आवृत्ति के अन्तर्गत यह दो सम्बन्ध होते हैं तो क्रमशः 5, 4, 3, 2, 1 अंक दिये जाते हैं। (किन्तु जब कक्षा आवृत्ति के अनुपातिक यह दो सम्बन्ध होते हैं तो क्रमशः 1, 2, 3, 4, 5 अंक दिया करते हैं) प्रयोग की अनुसंधान के अनुसार जो अंक दिया करते हैं। निम्नलिखित कक्षाओं पर जो अंक अंकों का योग समुचित प्राप्ति कह्य जाता है।

4. जहाँ में पर विवेचन ( Item analysis ) का उपयोग करते कक्षाओं की विवेचन सीमा का ज्ञान करते हैं। अधिक विवेचनीय कक्षाओं का चयन चयनी में करते हैं। इस प्रकार चुने गये कक्षा चयनी में अधिक दिये जाते हैं और यह चयनी का अधिक प्रयोग ( Final form ) कहा जाता है।

उदाहरण के लिए समुदाय के विषय में कक्षा और प्राप्ति प्रस्तुत है—

A. कक्षाओं की समुदाय विषय का दिये।



B. कक्षाओं की छात्रा के सुझावों का समझ देना का दिये।



इस आवृत्ति कक्षाओं की सबसे बड़ी गुरुता यह है कि "अविश्वस्य" अनुसंधान करने पर भी 3 अंक प्राप्त होते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी कक्षा के विषय में प्रयोग का अविश्वस्य रूप के कोई उत्तर नहीं देना भी भी उचित 3 अंक देते हैं। एक कक्षा कक्षा लिखत चयनी में यह है कि चयनीयों का कोई विवेचन नहीं नहीं होता कक्षा इस चयनी द्वारा ज्ञान अंकों की सुझाव कक्षाओं के प्राप्ति के भी जाती है।

लिखत चयनी की विषयसमीक्षा और सीमा की सीमा देना अनेक प्रयोग होते हैं। यह विषयसमीक्षा 191 से 190 तक प्राप्त हुई है ( Murphy & Libart 1938 )। विषयसमीक्षा की अधिक समीक्षात्मक सीमा की प्राप्त हुई ( Six 1938 )।

अधिपति चयन में प्रयोग और लिखत चयनी की सुझाव—

1. प्रयोग विधि द्वारा अधिपति चयनी के निर्माण में लिखत चयनी की अधिक अधिक चयन चयना है।

2. वस्तुनिष्ठ विधि की अपेक्षा निश्चित विधि के अभिव्यक्ति मानकी का निर्माण सरल एवं सुलभ होता है ।

3. वस्तुनिष्ठ विधि की अपेक्षा निश्चित विधि में परीक्षण सरल होता है और कम समय में हो जाता है ।

4. वस्तुनिष्ठ विधि में कानूनी का चयन निष्कर्षों के निर्देश पर निर्धार करता है जबकि निश्चित विधि में कानूनी का चयन प्रयोगों के उत्तरों तथा पर विवेचन के द्वारा करते हैं ।

5. वस्तुनिष्ठ की विधि निश्चित-विधि के सामाजिक माध्यम पर कम गुप्त है ।

## सोसायटी की सामाजिक दूरी मानकी

( Social Distance Scale or Segregation )

सोसायटी ( 1925 ) के एक सामाजिक दूरी मानकी विकसित की । उन्होंने इस मानकी का विकास राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति के माध्यम से किया था । उन्होंने इसका उपयोग अभिव्यक्तियों की तुलनात्मक व्याख्या में भी किया था । इस मानकी का आधार सामाजिक विच्छेदता ( Social Isolation ) की धारा है । अपरिचित व्यक्तियों के द्वारा इन व्यक्ति सामाजिक दूरी रखते हैं । परिचित व्यक्तियों के बहुत दूरी बहुत कम होती है । सोसायटी मानकी के आधार पर मानकी बताते समय सर्व-समय समया में सम्बन्ध अकेलापन कानूनी का चयन करते हैं । बहुत कम किसी राष्ट्रीय समुदाय के प्रति व्यक्तियों की सामाजिक दूरी को व्यक्त करते हैं । सोसायटी ने कानूनी का चयन शक्ति माध्यम पर किया था । इन कानूनों के अनुसारों के किसी राष्ट्रीय समुदाय की स्वीकृति की धारा का परिचय प्राप्त होता है ।

सामाजिक दूरी मानकी में सात स्तरों में व्यक्तियों की बहुलता प्राप्त करते हैं । इस विस्तारों पर ध्यानपूर्वक करने के द्वारा होता है कि विस्तार के आगे बढ़ते हैं तो सामाजिक दूरी बढ़ती जाती है । मानकी व्यक्त करने के पूर्व निम्न विवेक से हैं व्यक्तियों द्वारा सामाजिक प्रतिष्ठान के अनुसार विस्तृत प्रजाति के व्यक्तियों को अपनी स्वीकृतिपूर्व करने के विस्तार या दूर रखना चाहेंगे । अतः राष्ट्रीयता समुदाय के लिए बहुत सात वर्ष निम्नलिखित है—

1. विवाह द्वारा सम्बन्ध स्थापित कर सम्बन्धी के सम में ।
2. सम में व्यक्तिगत विषय के सम में ।
3. मुद्रास्ते में पड़ोसी की सम ।
4. अपने व्यवसाय में समुदायों की सम ।
5. अपने देश में नागरिक की सम ।
6. अपने देश में परीक्षा की सम ।
7. अपने देश के निष्ठापित कर पुराना ।



इस बातची की उच्च सीमा 'समिन्वय' सम्बन्ध की सीमा है क्योंकि सम्बन्ध अनुकूल अभिवृत्ति का सीमा बताया है जब कि बातची सीमा देश के विपरीतस्थ करने वाली प्रवृत्तियों का सीमा बताया है क्योंकि अनुकूल अभिवृत्ति का परिचय बताया है। इस बातची का अनुकूल गुण यह है कि इसके द्वारा किसी एक राष्ट्रीय समूह के प्रति निश्चिन्त लोगों की अभिवृत्तियों की तुलना तथा एक व्यक्ति की विभिन्न राष्ट्रीय समूहों के प्रति अभिवृत्तियों की तुलना कर सकते हैं। सामल-सर्वेक्षण के सीमा में इसका स्थान उपरोक्त हुआ है। लेवी ( 1943 ) ने इसका सीरोजन 'सोशल रिफ्लेक्शन थैरेपीजिटर' ( Social Reflection Therapist ) के रूप में किया था।

सीरोजन की सामाजिक दृष्टि बातची की एक मुख्य विशेषता यह बताई जाती है कि इसकी बात सीमाओं के बीच सम्बन्ध दृष्टि नहीं है। साथ ही इस बातची में सर्वोत्तम या सर्वोत्तम बातची की प्रति सम्बन्धों के सम्बन्ध का कोई सीमा बताया नहीं है। केवल लक्षिक आधार पर सम्बन्धों का सम्बन्ध नहीं है। इसी प्रकार एक अन्य बातची यह भी है कि सामाजिक दृष्टि के यह बातची दृष्टि नहीं है। साथ ही इसका उपरोक्त सीमा है।

सांख्यिक परीक्षणियों में यह बातची विभिन्न रूप के उपरोक्त परिचय द्वारा कर सकते हैं क्योंकि नहीं अन्य बातची, अन्य उपरोक्त, अन्य उपरोक्त और अन्य उपरोक्तों के बीच रहते हैं। विभिन्न रूपों, बातची एवं उपरोक्तों के प्रति सामाजिक दृष्टि का सम्बन्ध, देश की सामाजिक सम्बन्धों के सम्बन्ध में उपरोक्त ही प्रस्ता है।

सामाजिक स्केलीग्राम ( Guttman's Scalogram )—इसे सामाजिक (1950) ने विभिन्न किया। इसे सामाजिक बातची भी कहते हैं। उन्होंने अमेरिकी वीरियों के सैनिक स्तर के सम्बन्ध हेतु इसका प्रस्ता किया। इसे स्पष्ट करने हेतु सामाजिक ने कहा है कि, "सम्बन्ध स्केलीग्राम के रूपों के समूहों की बातची की सीमा ही यह सम्बन्ध है उपरोक्त सीमा वाला एक व्यक्ति अन्य व्यक्ति के सम्बन्ध रूप में उपरोक्त उपरोक्त है।" ( 'We shall call a set of items of common content a scale if a person with a higher rank than another person, is just as high or higher on every item than other person.' ) ईसे बात के सम्बन्धित सामाजिक स्केल का रूप निम्न होता :—

1. स्तर स्तर 45 डिग्री के अधिक है।
2. स्तर स्तर 55 डिग्री के अधिक है।
3. स्तर स्तर 65 डिग्री के अधिक है।

यदि वक्ताओं का कहना है कि कोई व्यक्ति दूसरे पर घर 'हूँ' करता है तो यह घर की छद्म हूँ उत्तर देता क्योंकि जब उसका कमरा 55 फीटों से अधिक है तो निविदा ही 45 फीटों से अधिक होता है। इसी प्रकार यदि कोई लोचने पर घर 'हूँ' उत्तर दे तो इसका अर्थ होता कि उसका रहते था। दूसरे पर भी हूँ उत्तर होता है। यहाँ की ही तरह पाठकों के बीच में व्यक्तिगत की एक विधा का भी मतलब होता है। इसी कारण इसकी जिम्मेदार विभाजनकारी (Unidimensional Scale) भी होती है।

इस नायबी के मुख्य कार्य निम्नलिखित होते हैं—

1. यह संख्या कि कोई व्यक्ति एक बार अधिक हो सकता है या नहीं ।
2. गैरसंक्रमण करना, इसमें दुपचा कुछ भाग है । इसके द्वारा वही की कोमल का निपटारा ( *Consciousness* ) प्राप्त होती है ।
3. संख्या के सम्बन्ध जगत् की यह तरह दुपचा कि यह प्राप्त हो सके कि प्रत्येक की अधिकतम के मिलना सम्भव है ।

इस मापनी में व्यक्ति के कुल ज्ञानों का मापनी के दृष्टिक कर्तनी वा वरी के विविध समकक्ष होता है। इस प्रकार हम किसी व्यक्ति के समपूर्ण ज्ञानों के द्वारा कभी कभी पर कलमी अधिकारी की पुनः संरचना कर सकते हैं। इसके विभि पुनः ( Reproducibility Coefficient ) द्वारा निकालते हैं।

$$\text{Rep. Coefficient} = \frac{\text{Total number of Errors}}{\text{Total number of Responses}}$$

कमी-कमी बूझ चुकः होखला दुर्वाक की विमरवापीपडा का सूचक बाबा बाबा है । परदेन जेसीबाब में -85 के भी अधिक विमरवापीपडा के परिचाय प्राप्त हुऐ है किन्तु एत हेलत में उल्ल वैकडा ( *Ullah Vakidity* ) का ठीक अनुमान नहीं हो पाता । कार्गिलत कबला में ही कपरी के बदन में वैकानिक बाबाय के कबाय के कारण कपरी की अन्तरास्तु वैकडा का अनुमान दुर्जन हो जाता है । एक उकार कपरी के बदन में वाकवापी न कर्ने के कारण परिचायी के दोषयुक्त हुऐ की संभावना होती है ।

**विशिष्ट प्रभावित**

इसलिए प्रत्येक समाप्ति के बाद ही निम्नलिखित कार्य करें :

अर्थ विभेदक प्रणाली ( Semantic Differential Technique )—यह विभेदक प्रणाली को विभक्त करने वाले बलि आसुत और उनके सङ्घर्षी हैं । ( Osgood, Suci & Tannenbaum, 1957 ) हैं । इसके अन्तर्गत बलिहारी का नाम ही छोटी वाली विभेदक प्रणाली ( Bipolar Adjective Scale ) के द्वारा



एक प्रणाली द्वारा प्राप्त प्रारंभों के व्यवधान के आधार पर प्रोफाइल (Profile) बनाते हैं; जो क्षण भर में अभिवृत्ति का गीत बजा देता है।

एक अभिवृत्ति मापनी द्वारा अभिवृत्ति के संज्ञात्मक और मान्यक प्रारंभों का व्यवधान मापन सम्भव है (Chagnon et al., 1957)। इसकी विस्तारशीलता के अध्ययनों में अगस्त (1957) के '83 के लेकर '91 तक प्राप्त की है। मापनी की संख्या के निर्धारण हेतु इसकी तुलना मापनी के की गई - '74 के '82 तक बहुसंख्यक प्राप्त हुआ है। जहां मापनी विस्तारशील एवं गीत वाली जाती है।

### अच्छलन प्रणालियाँ

(Displaced Techniques)

विशेष प्रणालियों में दूसरी अभिवृत्ति प्रणाल्य प्रणाली बदलाती है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इसके द्वारा अभिवृत्ति मापन में प्रयोग की गई सामान्य नहीं हो पाता कि इसकी अभिवृत्ति का मापन हो रहा है। यह सामान्य होने पर कभी-कभी मापनी सामयिक अभिवृत्तियों की विविधता की कीर्ति में भी बहुत विविधता नहीं मान्य करती। इस समय की प्रणाल्य में एकतरफा प्रयोगशीलता के सम्बन्ध प्रणालियों का विकास किया है तथा सामयिक अभिवृत्तियों का मापन हो चके। जैसे ही अभिवृत्ति मापन की सभी विधियाँ सम्भवतः कम से मान्य करती हैं परन्तु इनमें प्रयोग की इसका अभाव हो जाता है कि इसकी अभिवृत्ति का मापन हो रहा है किन्तु सम्बन्ध प्रणाल्य में अभिवृत्ति का मापन सम्भवतः कम से स्थिति की प्रणाल्यी और प्रारंभों के द्वारा होता है। यह सम्बन्ध प्रणाल्यी स्थिति मापन की प्रणाल्य प्रणालियों के सम्बन्ध प्रणाल्यी है तथा कुछ में ही प्रयोग प्रयोग के साथ प्रणाल्यी प्रणाल्यी का ही सम्बन्ध होता है। इस वर्ष की कुछ प्रणाल्यी इस प्रकार हैं—

पुष्टि-समय प्रणाली (Exact-chronic Technique) — इसे विकसित करने का क्षेत्र हैमर (1948) की है। इसके सम्बन्ध अभिवृत्ति-समय से सम्बन्ध कुछ समय सम्भव करती हैं। प्रत्येक समय के साथ ही पुष्टिपूर्ण विचार उत्तर के रूप में मिले रहते हैं। इस की वैश्विक पुष्टिपूर्ण उत्तरों में एक अभिवृत्ति के सम्बन्ध और इसका प्रतिकूल होता है प्रयोग के द्वारा प्रतिकूल उत्तर से इसकी अभिवृत्ति का सम्बन्ध करती हैं। इसमें वे स्थिति-समय सम्बन्ध के प्रति अभिवृत्ति मापन हेतु प्रत्येक विकास किया था। इसकी प्रणाल्य-प्रणाल्यी विस्तारशीलता '82 तक सम्बन्ध करके विस्तारशीलता '48 प्राप्त हुई है (नवम्बर 1950)। इसमें वे इसकी एक ही प्रणाल्य प्रणाल्यी किया है।

समयपूर्ण प्रणाली (Sequence Completion Technique) — ऐसा कि इसके साथ में सम्भव है इस प्रणाल्यी में प्रणाल्यी के सम्बन्ध अन्य प्रणाल्यी सम्बन्ध

करके उन्हें दुरा करने का निर्देश देते हैं। कुछ छात्रों में कभी-कभी एक उच्च प्रदर्शन करने की प्रेरणा होती है। तो कभी प्रयोग की कमी स्नेहानुसार उच्च प्रदर्शन करने की प्रेरणा होती है। कुछ मनोवेत्ताओं के कुछ छात्र एवं कभी-कभी प्रयोगों ( Paired direct and Projective questionnaires—PD PQ ) का विश्लेषण किया जिसमें अभिवृत्ति के सम्बन्ध कभी-कभी कभी-कभी होते हैं। इसमें '9' के '98' के बीच निरवरोधता प्राप्त हुई है।

कहाती प्रयोगों—इसमें कभी-कभी के उच्च प्रदर्शन कभी-कभी प्रदर्शन करने की प्रेरणा होती है।

इसी प्रकार के द्वारा निर्मित टी० ए० टी० का उपयोग भी अभिवृत्ति मापन में किया जाता है। प्रयोगों में अभिवृत्तियों ( Racial Attitudes ) के मापन में रीचरकाइन द्वारा निर्मित रीचर काइन स्टेडी ( Rosenzweig's Fricade Frustration Study ) का उपयोग किया गया है। इन में छात्रों की कुछ छात्रों के द्वारा बताया गया है कि यदि के इसी परिस्थिति में अपने मापन की रीचर काइन बताया कि वे क्या करते। कभी-कभी बिना की रीचर काइन कहाती बिना के निर्देश भी देते हैं। इन प्रयोगों में निरवरोधता और रीचर काइन के उच्च की स्नेहानुसार होती है।



(i) सामाजिक प्रत्यक्षीकरण में अन्य व्यक्ति की क्रियाएँ निहित होती हैं। इस द्वारा अन्य व्यक्तियों के प्रति, स्वयं स्वयं की प्रतिक्रिया में अनुमति मिलती है।

(ii) दूसरी क्रियाएँ अन्य व्यक्तियों में प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करती हैं। इस प्रकार सामाजिक प्रत्यक्षीकरण में अन्य व्यक्तियों की प्रतिक्रियाएँ निहित होती हैं।

(iii) सामाजिक प्रत्यक्षीकरण में व्यक्तिगत निहित होती है।

विशेष अनुभवों तथा अन्य व्यक्तियों के प्रत्यक्षीकरण को एक दूसरे से अलग करने हुए बीयर ( 1958 ) ने कहा है, प्रत्यक्षीकरण एक ही क्षण में विभिन्न चीजों के प्रत्यक्ष, और सामाजिक प्रत्यक्षीकरण का दूसरी व्यक्तियों का प्रत्यक्षीकरण होता है किन्तु ऐसा अलग सर्वमान्य नहीं है।

क्रियाएँ तथा बीयर के अनुसार "सामाजिक मनोवैज्ञानिक ऐसी प्रक्रियाओं में ही विशेष रुचि रखते हैं। एक है, उन प्रक्रियाओं पर सामाजिक तथा व्यक्तिगत कारणों का प्रभाव। सामाजिक मनोवैज्ञानिक की अन्य रुचि दूसरी प्रत्यक्ष, प्रत्यक्ष तथा सामाजिक प्रक्रियाओं में है।"

(The Social Psychologist has two specific interests in such processes. One is the effect of social and personal factors on these processes. The other interest of social Psychologist is in our perceptual, cognitive and affective processes. Seard & Backman, 1954 )

बीयर ( 1955 ) ने कहा है, "सामाजिक प्रत्यक्षीकरण का सर्वोच्च सामाजिक परिणाम के विषय में व्यक्ति के अनुभव काय-विस्तार के है।" ( "Social perception is consequently taken to denote the whole individual's understanding of his social situation. )

इस प्रकार उपरोक्त परिभाषाओं में निम्नलिखित तीन तथ्यों की चर्चा की गई है।

(i) सामाजिक प्रत्यक्षीकरण, प्रत्यक्षीकरण पर सामाजिक और व्यक्तिगत कारणों के प्रभाव का अध्ययन करता है।

(ii) इस पर प्रत्यक्ष, प्रत्यक्ष तथा सामाजिक प्रक्रियाओं की प्रभाव डालती है।

(iii) इसका सामाजिक प्रभाव सामाजिक परिणाम के सम्बन्ध में व्यक्ति के अनुभव काय-विस्तार के है।

अतः हम यह समझते हैं कि सामाजिक प्रत्यक्षीकरण का सर्वोच्च अनुभव नहीं है जो सभी व्यक्तियों के प्रत्यक्ष होता है, बल्कि इस पर सामाजिक एवं व्यक्तिगत

कार्यों के प्रयासों से भी है, जबकि सामाजिक उत्तरदायित्व का अभिप्राय बाह्यी की वह शक्त के प्रयोगकर्ता करने से नहीं है, जैसी के है, बाह्य की शक्ति हम है । यदि आप विद्यार्थियों के करते नहीं है—

आपकी सभी आवश्यकताओं, हम सहायक किसी तरह की है।

[illegible]

अवधारित संज्ञानमः पुरमे एवं इतिहास की भाषा

{ Non Verbal Communication : Language of Gases and Gestures }

[illegible]





कभी स्वभाव का भी । यह सामाजिक भाषा कभी बदल हीती है, और समय-समय पर परिवर्तनों में गुमा है ।

सामाजिक संज्ञाएँ कौन कौन होती हैं ? उनके कई तरीके हैं किन्तु ज्ञान अनेक स्तरों में इसे दोहरी के गुमा है । सबसे पहले के ज्ञान-विकास का मुखकृति-विकास (Facial Expression), नेत्र सम्पर्क (Eye contact), शरीर के भाव एवं स्थिति (Body posture and Movements) तथा स्पर्श (Touching) प्रमुख हैं ।

(A) मुखकृति-विकास :- मुख की हलचल का सूचक बहुत ज्ञात है क्योंकि किसी व्यक्ति के मुख और शरीरों का सामाजिक भावक भाव मुखकृति द्वारा ही होता है । दो हजार वर्ष पूर्व मुखकृति रोचक तथा "सिखी" के बहुत या "This face is like a mirror of the heart" यह वाक्य ज्ञान की जड़ों होता है, क्योंकि किसी के भाव के बाद भी व्यक्ति के मुख भावनाओं का ही उसके मुखकृति द्वारा अभिव्यक्त हो पाते हैं, सिध्द आचारी के कहा का प्रकट है । एक (1984) तथा हजार (1977) ने अपने शोधों द्वारा मुखकृति-विकास की छः श्रेणियों के प्रभाव का सिद्ध है—अपमान, आलो, आश्चर्य, भय, शोक एवं गुस्सा ।

किन्तु क्या यह पता है कि क्या सामाजिक विकास कार्यशील होते हैं ? दूसरा यह प्रश्न यह भी है कि क्या इन विकासों में सामाजिक चिन्मयता का कोई प्रभाव होता है ? नीतिगत श्रेणियों की अनुसंधान के समय संसार के सभी मानव समुदाय विकास की अभिव्यक्त करते हैं और ऐसा एवं कार्यशील होता है । एमरीन तथा कालेल (1973) ने ही प्रमाणित है कि जीवोन्मित दृष्टि के बाद ही प्रभाव होने प्रमाणित परिनिष्ठित श्रेणियों में प्रभाव मुखकृति-विकास अभिव्यक्त काती है । कभी प्रमाण साक्षित भाषा का ज्ञान न होने पर अनुभावक की भावप्रकटा होती है किन्तु मुखकृति—भाषा में किसी अनुभावक का व्याख्यातकों की कोई आवश्यकता नहीं होती ।

(B) नेत्रों की भाषा (Language of the Eyes; Contact of the Gaze) :- नेत्रों की भाषा ही अनेक लोगों के अनुभावक सबसे प्रभाव और प्रभावशाली होती है । नेत्रों के अनेक भाषा ज्ञान के प्रभाव में बहुतपूर्व वाले होते रहे हैं । यदि बात बहुत सीधी प्रमाण ज्ञानों द्वारा व्यक्ति के बात करें तो सबसे नेत्रों की न प्रेम शक्ति की सबसे प्रमुख, भावनाओं और शक्तियों के प्रभाव में प्रकट का प्रमुख प्रमाण है । प्राचीन कविता में नेत्रों को "भावना के सीधारे शक्ति का जरीया" कहा या । नेत्रों की भाषा, प्रति, प्रकटी का प्रकट, नेत्रों के प्रकट, एक एक प्रकट भाषा सामाजिक प्रकट का बहुतपूर्व प्रमाण है । यदि कोई व्यक्ति नहीं करे, दूर हजारों

बीर देशकर सीकता है, जो हृदय की मित्रता और वसन्त का चिह्न मानते हैं (मिर्चिक, सीकर तथा कार्पेच, 1974)। बिना देखे या बिना मन्दर बिना वात कारी की जिम्माओं (1977) से जमीनीयों का सीकता का समान माना है। देश कार्पेच की वसन्त का समानता का अनुसूच मानता का अधिक मानने के कुछ अवसर भी हैं। यदि कोई व्यक्ति इसकी और विचार करता है और इसकी अधिकियाओं की और मान बिना बिना समानता करता है तो यह अनुसूच अनुसूच का समान समानता करता है (सर्वे तथा वन, 1973)। कुछ परिस्थितियों एवं स्थानों में दूरता अनुसूच एवं सीक का चिह्न कहा जाता है। (एलकर एवं कार्पेच, 1973)। इस प्रकार दूरता की देश बिना सर्वे अनुसूच का अनुसूच समानता करता है। मान: बिचकी और समानता दूरता माना है यह सर्वे ही माना है और समान का अनुसूच करने के कारण यह परिस्थिति विशेष से दूर माना है।

(C) राष्ट्रीय की भाषा : इंग्लिश (Mother Language : Gradients) :- राष्ट्रीय के मानन, हृदय, पैर, तथा दूरता की स्थितियों की सांसाधिक दूरता का अनुसूच मानन है। सीक, दूरता और समानता के स्थितियों के अनुसूच के समान, मानने राष्ट्रीय मानन, हृदय, दूरता, और पैर की स्थिति एक सीक नहीं रहती। बिना और समानता में मान के समान मानने राष्ट्रीय मानन एवं दूरता पैर तथा वन सीक की स्थितियों कभी समान नहीं होती। राष्ट्रीय मानन एवं अनुसूच सीक की स्थितियों बिना के समान दूरता और स्थितियों का परिभाषक होती है।

ऐसे स्थानों के मान सांसाधिक स्थितियों की मान: राष्ट्रीय की माना करते हैं, बिना बिना समानता की दूरता मान होती है :-

1. वन स्थितियों की स्थिति स्थानों का सीक हृदय यह राष्ट्रीय माना करता है। Kaap (1978) के अनुसार दूरता, माना बिना की स्थिति समानता का चिह्न माना है। ऐसे मानन की अनुसूच की स्थिति मान स्थितियों के समान मान मान का सीक है।

2. दूरता मान या राष्ट्रीय स्थितियों से मान: दूरता की माननों के बिना के स्थिति दूरता मान होती है जैसे पैर समानता माने (सीक) के प्रति अनुसूचता अधिकिया का सीक है जो कुछ स्थितियों में दूरता तथा समानता की समान से मान मान माना दूरता का परिभाषक समानता माना है। जैसे दूरता मान पर स्थिति का समान रहता है, फिर भी अधिकमान, एवं बिना के मानों पर जेक समानता दूरता मान देखे जाती है।

3. दूरता मान या राष्ट्रीय मान के मानने प्रति दूरता की अधिकियाओं की अधिक मान होती है। मेहराबान (1968) ने बताया है कि कुछ राष्ट्रीय स्थितियों का समान



कुछ महत्त्वपूर्ण बातें हमें ध्यान में रखनी पड़ती हैं। पहली बात यह है कि हमें अपने मन में एक ठोस निश्चय होना चाहिए कि हम अपने जीवन में एक ठोस उद्देश्य का पालन करेंगे। दूसरी बात यह है कि हमें अपने जीवन में एक ठोस नीति बनानी होगी। तीसरी बात यह है कि हमें अपने जीवन में एक ठोस व्यवस्था बनानी होगी। चौथी बात यह है कि हमें अपने जीवन में एक ठोस अनुशासन बनानी होगी।

[illegible]

## आत्मनिरूपक अनुशिक्षण को प्रभावित करने वाली मौलिक प्रक्रियाएँ ( Basic Processes Affecting Perceptual Responses )

कुछ मुख्य प्रक्रियाएँ आत्मनिरूपक अनुशिक्षणों को प्रभावित करती हैं, जिनका साथ सामाजिक व्यवस्थीकरण की सभी प्रकार समझने के लिये आवश्यक है। यह कुछ प्रक्रियाएँ निम्नलिखित हैं :

1. व्यवस्थीकरण का प्रभावनात्मक संघटन ।
2. विशिष्ट विविध वर्गीयक संघटन के साथ भावित के अनुभव की आवृत्ति ।
3. प्रभावनात्मक पूर्व विवेधानत्मक पुनर्वसन ।
4. सामाजिक नियंत्रण ।
5. व्यवस्थीकरण के सूचक ।

1. व्यवस्थीकरण का प्रभावनात्मक संघटन ( *Systemic organization of perception* )—आत्मनिरूपक में प्रभावनात्मक संघटन की विशेषता पाई जाती है। भावित अपने व्यवस्थीकरण में निम्नलिखित सभी वर्गीयकों की ओर एक साथ ध्यान नहीं दे सकता। वह किसी समय व्यवस्थीकरण में निम्नलिखित अनेकानेक वर्गीयकों में से चुने हुये कुछ कभी-कभी वर्गीयकों के प्रति ही प्रतिबिम्बित करता है, और कुछ विविध वर्गीयों में अपने व्यवस्थीकरण को संघटित करता है। व्यवस्थीकरण में मौजूद अनेक वर्गीयकों में से ही भावित प्रभावना भी नहीं होता। प्रभावना के प्रभावनात्मक संघटन की विशेषता सामाजिक व्यवस्थीकरण का मूल आधार है। भावनों का प्रभाव करने में बड़े हुए वह रहे हैं, कहीं हमारे में हीनार पर सभी वर्गीयों को समझकर रिक-टिक कर रही है, जिसकी का रंगत वह रहे है, भावना छोटा पाई करीब में को रहा है, जिसकी समझार वह वैक रहे है, किन्तु भावना व्याप्त मुख्य में बना है, साथ वर्गीयक साथको वर्गीक कर रहे है किन्तु साथ उनके वैकवर रहे जा रहे है। इस प्रकार व्यवस्थीकरण प्रभावनात्मक होता है जोक देखी ही विशेषता सामाजिक व्यवस्थीकरण में भी होती है।

2. वर अनुभव की आवृत्ति ( *Frequency of past experiences* ) :—विभिन्न वर्गीयक संघटनों तथा अनुशिक्षणों के साथ भावित के पूर्व अनुभव की आवृत्ति को सामाजिक व्यवस्थीकरण की एक अन्य मौलिक प्रक्रिया है। इस तरह भावित के व्यवस्थीकरण में कुछ विविध वर्गीयकों के साथ प्रभावना पूर्व अनुभव उसके व्यवस्थीकरण तथा भावित के व्यवस्थीकरण को प्रभावित करता है। अनिश्चित वर्गीयों की प्रवेष्टा विविध वर्गीयों की प्रभावनात्मक होने वा प्रभावनात्मक साथ बहुत ही मूल होने पर भी वीर प्रभावना रहे है। निम्न वर्गीयक—अनुशिक्षण अनुशिक्षण की आवृत्ति जिसकी अधिक होती है उसकी प्रभावनात्मकता भी वीर होती है तथा भावित में उनके प्रति होने की प्रभावनात्मकता भी अधिक होती है।

३. सम्भाव्यता तथा श्रुत्यात्मक पुनर्व्यवस्था ( Probable and Notional Re-arrangement )—मरिच की कुछ अनुक्रियाएँ पुनर्व्यवस्था होती हैं जो सम्भव नहीं हैं । जो अनुक्रियाएँ सम्भव हैं वे पुनर्व्यवस्था अपना पुरास्कार होती हैं, फिर कभी ही परिचित होने पर कभी चटित होने की सम्भावना अधिक होती है तथा चटित या विस्फोटक रूप के पुनर्व्यवस्था अनुक्रियाओं के द्वारा वे अपने की सम्भावना कम होती है । यह मरिचक प्रत्यक्षीकरण के विषय में भी सत्य है । इसी यह निहित होता है कि हम अव्यवस्थित अनुक्रिया के द्वारा चटित होने की सम्भावना इस प्रकार कम करती है कि हम अव्यवस्था—अनुक्रिया अनुक्रम के विषय में व्यक्ति का पूर्व अनुभव कम है । पुरास्कार अनुक्रिया प्रत्यक्ष तथा चटित अनुक्रिया विवेक होती है ।

4. **समकालीन निर्धारक (Contemporary Determinants):**— किसी अनुष्ठान के समय व्यक्ति के समकालीन निर्धारक जैसे बुद्धि, योग, स्वास्थ्य, विद्या आदि भी वह समय पहले, अवलोकन के प्रभावित करते हैं। अवलोकन के समय व्यक्ति की व्यवस्थिति, संवेद, व्यक्तिगत, समाजगत प्रभावार्थ, इत्यादि के प्रत्यक्ष कारण उनके अवलोकन को निर्धारित करते हैं। ये कारण अनुष्ठान के समकालीन निर्धारक कहलाते हैं, जिस पर व्यक्ति को अनुष्ठान करने की उत्पत्ति निर्धार करती है। अनुष्ठान की उत्पत्ति के कारण कुछ कर्तव्यों के अवलोकन की सम्भावना बढ़ जाती है, जैसे घरघीत व्यक्ति द्वारा अनामः कर्तव्यों का अवलोकन होना करता है। कुछ परिस्थितियों में अनुष्ठान की उत्पत्ति के कारण कुछ कर्तव्यों का अवलोकन बाधित होता है, जैसे तनाव पूर्व पितामह भक्ति कुछ कर्तव्यों का अवलोकन नहीं पाता।

3. **प्रत्यक्षीकरण के सूचक (Indicators of perception) :**—बिनायी चट्टानों के प्रति व्यक्ति की अनुभूतियों का अन्तर होना है, जिसका प्रत्यक्षीय किसी प्रेरक की नहीं हो सकता है। दूसरे शब्दों में हम किसी व्यक्ति की अनेक अनुभूतियों का प्रत्यक्ष रूप में विरोध नहीं कर सकते। अतः प्रत्यक्षीकरण के विषय में व्यक्ति का विषयों संबंधः अत्यन्त अलग-अलग हो विवेक करता है जिसका सामान्य बहु रूपों के विरोध में करता है।

### सार्वजनिक व्यवस्थीकरण के निर्धारक

**( Determinants of Social Perception )**

सांसाधिक प्रावर्धनकरण के उपयोग एवं विचारधारा को समझने के लिए अनेक प्रायोगिक अध्ययन हुए हैं यह अध्ययन प्रायोगिक मानककरणों, दृष्टी, प्राथमिक नियंत्रणों, व्यक्ति के अनुभव, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिखरों तथा कारणों के





अधोवर्ती की योजना के सम्बन्ध में अनुसूचित अर्थजातों का नाम है। योजना के सम्बन्ध में अनुसूचितों की आयुक्ति ६ वर्षों के भीतर समुदाय में स्थापित की।

ऐसा कहना बड़ा वाकिफ़ है कि युवा-कलीक़ का जीवन भी सामान्यता का एक निमित्त होना है बड़ा काली है वो ज़ातविक विच्छिन्नी काय है काली है कीर पालि ऐसी कालुषी का ज़ातविकरण करने कालता है वो कालिता लुही की काली है जैसे विचित्रता में भटके हुए कालुषी ( युवा के बारे में ) एवं विचित्रता के विचित्र कालिता के विचित्र ।

सीनेकसीलीय एवं एसीनियन ( 1948 ) ने भी सेबाइन जैसे ही परिणाम अपने सम्मुख में प्राप्त किये । उनके उद्योगों में मोशन के संयम और कार्यात्मक देखरी के सम्बन्धी का अध्ययन हुआ है, जिसमें उद्योगिक वास्तवी दृष्टिकोणकीय द्वारा विविध प्रकारों का एक अध्ययन किया है, जिसमें उद्योगों की निम्नलिखित वरी : कार्यात्मक अध्ययन का एक दृष्टिकोण यह था कि उद्योगों की गतिमान देखरी की : फिर अध्ययन का एक और-और गतिमान गति यह था कि उद्योगों की गतिमान देखरी की गतिमान गति । निम्न देखरी का अध्ययन व्यवसायिक अध्ययन पर कार्यात्मक और अन्य देखरी का अध्ययन करनेवाला सीनेकसीलीय के एक अध्ययन । निम्न गतिमान गतिमान ( *Seinekseeley's 1953* ) के मोशन और गति के सम्बन्ध उद्योगों का अनुसंधान करने में गतिमान गति किया कि सीनेकसीलीय संयम गतिमानों में मोशन तथा गति के सम्बन्ध गति के बिने निम्न देखरी प्राप्त हुई । विविध अध्ययनों के संयम वाले व्यवसायिकों में व्यवसायिक गतिमानों के गति की दृष्टि निम्नलिखित गति प्राप्त हुई । निम्न गति ( 1956 ) की यह गतिमान गतिमान तथा गतिमान गतिमानों में गति प्राप्त हुई ।

लेखा, प्रोब तथा प्रोबल (Larson, Young, & Marshall, 1953) ने एक प्रायोगिक अध्ययन में कुछ कम-श्रीर शक्तियुक्त बच्चों ( जिस श्रेणी के Probable children ) की बधाई में किया। अपने प्रोब तथा प्रोबल बच्चों की बधाईयों की बधाईयों के समान बहुत कम बच्चों के लिये प्रस्तुत किया, किन्तु बच्चों: प्रोबल बच्चों ( Probable class ) की बधाई-श्रीर बधाई। प्रोबल के विभिन्न बधाईयों के लिये प्रोबल बधाईयों की एक बधाई बधाईयों का नाम बधाई या। कुछ बच्चों की बधाई में प्रोबल बधाई बधाई बधाई का बधाई की बधाई बधाई बधाई, बधाई बधाई बधाई की बधाई में 1-5 बधाई की बधाई के के ही बधाई बधाई का बधाईयों का। बधाईयों के बधाई बधाई कि कुछ बच्चों बधाई के बधाईयों की बधाईयों प्रोब बधाईयों के बधाई की, बधाई बधाई, प्रोबल की बधाई बधाई बधाई की बधाई की बधाई है। 4 बधाई बधाई प्रोबल के बधाई की बधाई बधाई बधाई की बधाई बधाई की बधाईयों की बधाईयों बधाई बधाई की बधाई। किन्तु बधाई

बंजन अवधि 5-6 वर्षों तक की कमी हो प्रत्यक्षीकरण एवं अनुकूलता प्रभावित कर विवेकात्मक प्रभाव प्राप्त हुआ। दूसरे वर्षों में जीवन के बंजन की एक निश्चित सीमा ही अनुकूलता प्रभावता को बढ़ाती है।

दूसरी ओर व्यक्ति अपने तथा में उसके निररीत परिस्थान प्राप्त हुये, अर्थात् भुख की निश्चित मापदण्डों का अवरोधों की प्रत्यक्षिता देखती पर कोई प्रभाव नहीं प्राप्त हुआ।

एक परिणाम यह है कि व्यक्ति की सामाजिक जीवन प्रणाली कसने सामाजिक अनुकूलताओं की प्रभावित करती है। ऐसे होने पर किसी एक एक जीवन प्रणाली अनुकूलताओं में वृद्धि जाती है तथा प्रत्यक्ष प्रत्यक्षिता देखती कम हो जाती है। बंजन की एक निश्चित मात्रा के बाद अवरोधों की अविवक्षणीयता में कमी प्रभाव होने के अनेक कारण हो सकते हैं। एक ऐसा कारण भुख की सूचीक प्रकृति (Qualitative nature of hunger) कहलाती है। सामान्यी के प्राप्त हुआ है कि सामान्यतः अनु-पुष्टिवां तथा भुख की कारोहिक व्यवस्थाकरणों पर प्रभाव अधिकतर होती है पर इसके जीवन करने का समय होता है। किन्तु एक निश्चित जीवन के समय के बीच करने के बाद धीरे-धीरे एक व्यवस्थापकता में कमी आने लगती है, बाह्य व्यक्ति की जीवन स्थिति या न मिले। वैज्ञानिकों तथा एडविजन (1954) और जिन्ने (1954) ने बताया है कि बंजन की सामाजिक व्यवस्था में अवरोध प्रभाव कम के कसोटीपुष्ट अनुकूलताओं प्रकृतित करती है, किन्तु बंजन प्रभावता में वृद्धि जाने पर व्यक्ति के प्रभाव कम के प्रति होने वाले अवरोधपूर्ण व्यवहार कम होने लगते हैं, यही नहीं कम मात्रा या भुख की सीमा एक निश्चित सीमा तक पहुँच जाती है, तो देखी तथा में व्यक्ति व्यवस्था प्रणाली का प्रत्यक्षीकरण नहीं करते।

जीवन-बंजन और प्रत्यक्षीकरण के सम्बन्धों में व्यक्तिगत विचारों के प्रभावों का भी अध्ययन हुआ है। एक कारोहिक अध्ययन (Gustafsson & Eriksson, 1946) ने कुछ ऐसे व्यक्तियों की अवरोध व्यवस्था तथा जिन्हें था। यहुने एक कठि-मुझाई (Starvation) स्थिति में रहता था। ऐसे का बाह्य की अवधि में अवरोधों के जीवन प्रभाव में 35 पीछ की कमी आई। कठिमुझाई स्थिति का अवरोधों पर निम्न प्रकार के प्रभाव देखे गये। कुछ अवरोधों ने ही इस बात की ही बताया कि वे प्रभाव युक्ति रहे हैं, या वे लगती मुझाई की सुझने का प्रभाव करती हैं। कुछ ने बीच में आकर कमरा छोड़ दिया। अनेक व्यक्ति अपने देखे के जो करने की अवस्था रखने का प्रभाव करते थे, व्यक्ति उन्हें करने की बात न करते, तो कुछ बाया प्रकार के अवरोधों की व्यवस्था में छोड़ रहते। कुछ अवरोधों ने अपना प्रति प्रभाव प्राप्त करने के अवस्था में बताया। उनमें के अनेक ने प्रेम और रोमांच के प्रति



से प्राप्त हुआ कि प्रयोग के निम्ने बहुत कम ही बच्चे चुन्नी के सम्बद्ध चमकी की आवश्यकता देखती हय थी, जबकि उनकी चट्टान, आवागमनक्षेत्र कम होने पर अधिक चुन्नी और चमकी चुन्नी। उनके विपरीत कम चट्टानचुन्नी चुन्नी के सम्बद्ध चमकी की आवश्यकता देखती अधिक प्रयत्न हुई। इस प्रकार हम यह समझें हैं कि प्रयोग के निम्ने चट्टानचुन्नी चुन्नी के सम्बद्ध चमकी के प्रति उनकी अधिक आवश्यकता अधिक-सीधता देखी गई। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि व्यक्ति का अवलोकनक्षेत्र उस चुन्नी द्वारा अधिक प्रभावित होता है, जिन्हें व्यक्ति अधिक चट्टान देता है। वेल्डर-फ्राइ और फेल (1949) ने प्रयोग सम्बन्धी चट्टानक का अनुप्रयोग करके प्रयोग के प्रयोग का पुनरावर्तन किया और अपने प्रयोगों तथा अन्य द्वारा परिणामों की पुष्टि की।

जिन्नायेदु चर्चित प्रयोगों के यह संकेत मिलता है कि व्यक्ति के बहुत चुन्नी के सम्बद्ध चट्टानचमकी के प्रति संवेदनशीलता अधिक होती है। यद्यपि, चुन्नी के सम्बद्ध चमकी का सीधे अवलोकनक्षेत्र व्यक्ति के द्वारा बहुत अनुभव की गई आकृति का परिणाम भी हो सकता है। कुछ मनोवैज्ञानिक चुन्नी के सम्बद्ध चमकी की दृष्ट संवेदन-शीलता की व्याख्या चट्टानक चुन्नी की आकृति (Tisserand *et al* 1950) के आधार पर करते हैं। आकृति के आधार पर अनुक्रिया-आकृति की व्याख्या के कुछ कम इस प्रकार है :—

(i) एक प्रयोग में सोलोमन तथा होल्ज (Solomon & Holzman, 1950) ने पाशुपत आवश्यकता देखती की श्रृंखला (Lower visual-motualisation hierarchy) तथा विभिन्न चुन्नी के सामान्य सीधे-आवागमन क्षेत्रों में बहुत चुन्नी की आकृति के बीच सम्बन्धों का अध्ययन किया। उन्होंने अपनी अवलोकनक्षेत्र के अनुसार चट्टानचमकी प्राप्त किया और बताया कि यह अवलोकनक्षेत्र अवलोकनक्षेत्र है कि व्यक्ति की चुन्नी प्रवाही चुन्नी के सम्बद्ध चमकी की आवश्यकता की प्रभावित करती है। उनके द्वारा यह संकेत मिलता है चमकी-चमकी-चमकी के सम्बद्ध चमकी का व्यक्ति की अधिक अनुभव होने के कारण उनकी आवश्यकता कम अवलोकनक्षेत्र में भी सीधे होती है। इस प्रकार, उनके अनुसार यह बहुत अधिक नहीं है कि चुन्नी प्रवाही सामाजिक अनु-क्रिया की प्रभावित करती है।

(ii) एक अन्य सामाजिक अवलोकन द्वारा प्रयोगों तथा अवलोकन (Fosselman & Schoemaker, 1951) यह संकेत दिया कि चमकी-चमकी-चमकी की आकृति तथा चुन्नी के निम्ने देखती की अवधि, व्यक्ति के चुन्नी का प्रभाव होने है, अवलोकन क्षेत्रों व्यक्ति के चुन्नी पर निर्भर करते हैं। इस प्रकार इस अवलोकन के दृष्ट वाद को पुष्टि हुई कि देखती चुन्नी की आकृति द्वारा निर्धारित एवं प्रभावित होती है। इसके





यस वट्टीयकों का व्यवस्थीकरण नहीं करना चाहता जो अनुभव होते हैं या अधिक महत्वाही के सम्बद्ध होते हैं। एक प्रकार का यह और संशुद्धि हास्य विभिन्न एवं विविध वट्टीयकों एवं अनुमान कर्मों को व्यवस्थ करने वाली प्रत्येक-प्रत्येक के व्यवस्थीकरण के करना वा सुझा की दक्षिणा ही वास्तविक सुझा कहलाती है। विदेशी तथा देशीय ( 1964 ) ने प्रत्येक सुझा के विहित तीन स्तरीयों की चर्चा की है :-

(1) सदस्य राष्ट्रीयता की अनेक अभिविधता का के विचारपूर्वक एवं समीचीन रूप से अध्ययन की आवश्यकता महती अधिक होती है। (ii) यह राष्ट्रीयता की अवधि के विषे सुझाव; समीक्षात्मक एवं समीचीन होती है, व्यक्ति में वैयक्तिक अभिविधता (Individualistic Perspective) अवलम्ब करते हैं। ऐसा व्यवहार (वैयक्तिक) व्यक्ति की अनुसंधान अनुसंधानों में सुझाव अवलम्ब करते हैं। (iii) यह व्यक्तिगत अवधि के वैयक्तिक अभिविधता अनुसंधान करते हैं, चाहे अवलम्बकारी सुझाव एवं समीक्षा अनुसंधानों का वही व्यवहारिकता से कर का रहा है।

**प्राथमिक सुरक्षा की प्रायोगिक विधियाँ**

(Experimental Characteristics of Perceptual Defense)

[illegible]

"Reverend" : कैथलिकों ने विभिन्न व्यक्तियों की उल्लेखित बहुतों अधिक होने की प्रशंसा बढ़ा करते हुए भी है कि ऐसे व्यक्तियों की पुनरावृत्ति सामान्य व्यक्तियों के दैनिक जीवन में कम होती है। यह प्रशंसा के परिणामस्वरूप प्रत्यक्ष में बढ़े नागरिक एवं लोकतांत्रिक होते हैं, किन्तु इसमें एक विरोधाभास निहित है। क्योंकि किसी उद्देश्य या किसी राज्य या अन्तर्राष्ट्रीय जैसे विषय को किसी अवस्था या सम्बोधन से जोड़ा है? इसकी प्रशंसा के रूप में कहा जा सकता है कि अतीत व्यक्तियों का ऐतिहासिकता करने कुछ भी उनकी वक्तव्य में सम्बन्ध रहता है।

इस विनोदभाषण की अनेक प्रशंसाएँ की गई हैं :—

(A) निम्नलिखित तथ्यों की जासबिजाा वैदुसी कवित्त हुनि का: एक संभावित कारण यह हुी संभव हुै कि कवित्त सार्वभौमिक प्रविधियों के कारण हुन पड़ो का प्रत्याकषाण करने में अक्षम हुी जासपायी भाने । कवित्त हुनकी वैदुसी यक्ष भानी हुै और की-ए-ए-ए-ए में की कृति भानी हुै ।

(3) इस विद्या में एक बात सभी को बताना चाहता हूँ कि निषिद्ध वस्तुओं के बिना अनुष्ठित प्रत्येक काम हीन है, क्योंकि एक काम सर्वोपयोग की अवधारणा के बिना या अवसीक/विनाशकारी वस्तुओं के उपयोग की अवस्था नहीं बनता। ऐसा इसलिए है कि निषिद्ध वस्तुओं की उपस्थिति दैनिक जीवन में कम होती है। क्योंकि अपने पड़ोस के कुछ लोगों को सीधे तब से जानता है, जो आपस में एक दूसरे की बातें साझा करता है। बिना पुनर् की अवस्था है, जो तीन बार केवल एक बार करता है। यदि पुनर् नहीं होता तो फिर काम के पहले एक अवस्था अवसर दूसरा है। यदि ऐसे लोगों की निषिद्ध वस्तु के बिना ही जीवन है कि वही देखनी में बड़ी होती नहीं है, एक, आदि, में।

(C) विभिन्न समूहों की व्यवस्था देवरी बसिब हॉल के एक ही छत तलवाड़ी-कमल की है, इसके अनुसार समूहों की आकृति बदलानुर्ण है। विभिन्न समूहों की आकृति समान या अनुक्रम हॉल के बाहर की एक ही व्यवस्था देवरी बसिब हॉल तलवाड़ी है।

बीमारीय जंगल जंगल (1953) द्वारा प्रेरित, विश्वविद्यालय और विभाग (1952) की वास्तविक दुनिया के सम्बन्ध परिवर्तनों की पुष्टि की है। उन्होंने प्रयोगों में निम्न से सम्बन्ध समीचीन को स्थापित किया जंगल प्रयोगों में इस्तेमाल किए गए निष्कर्ष प्राप्त कि प्रयोग का समय निर्धारण से सम्बन्ध समीचीन की देखने से बचाव करते हैं। लेकिन जंगल बीमारियों द्वारा अनुसंधान निम्नांकित (Response salience) के महत्व की पुष्टि हुई है (Bierman & Kiffin, 1953; Freeman, 1954; Kirchoff, 1959 etc.) ।



## प्रत्यभिज्ञा देहनी का संशोधन, अधिव्यवधारकों द्वारा

( *Modification of Recognition Threshold by Learning Factors* )

रोसमैन ( 1953 a ) के अनुसार अधिव्यवधारक अनुविज्ञा सुनी द्वारा की विवेक सम्बन्धी समस्या की उच्च प्रत्यभिज्ञा देहनी की व्याख्या हो सकती है। यहाँ "Wb-8" का अध्यधीकरण होता है। उद्दीष्टक नाम वास्तव में "Wbware" है, किन्तु प्रायः अवीक्षण वाले "Wbware" अत्यधीकृत करते हैं।

विवेक के सम्बन्ध समस्या की उच्च प्रत्यभिज्ञा देहनी का एक अन्य अध्यधीकरण परिहार अधिव्यवधारण ( *Ambiguity Learning* ) का उपयोग करता है। परिहार अधिव्यवधारण में किसी अनुविज्ञा के प्रतिष्ठ होने की सम्भावना में एक के परिहार के कारण वृद्धि जाती है। अधिव्यवधारण का बहु विज्ञान्य सामयिक परिधिस्थितियों में लागू होता है जब कोई वस्तु सारासरी वा समझी जाती पर "Unclear" कहता है। यदि भी एक की रीक होती है तो क्या वास्तव की विवेक वाले पुनर्निष्ठ होती है।

हेरिगमन तथा बाल्सी ( 1956 ) के प्रयोग के बाद हुआ कि जब उद्दीष्टक एक की विवेक के अनुसंधित कर होते हैं तो उच्च प्रत्यभिज्ञा देहनी प्राप्त होती है। कुनेसी ( 1957 ) ने अपने अध्ययन के अन्तर्गत किया कि परिहार अधिव्यवधारण वस्तुसमस्याओं में व्यापक उद्दीष्टकों के प्रति सुरक्षा या अभिव्यवधारण ( *Defensive of generalization* ) उत्पन्न करती है।

## उद्दीष्टक अभिव्यवधारण तथा प्रत्यभिज्ञा देहनी

( *Stimulus Generalization & Recognition Threshold* )

अनेक अध्ययनों के परिणाम यह दर्शाते हैं कि अभिव्यवधारण उच्च प्रत्यभिज्ञा देहनी की उत्पन्न करते हैं ( *Shaw & Poracava, 1947, Erickson, 1951, 1953* ) जबकि अन्य अध्ययनों ने प्रमाणित किया है कि अभिव्यवधारण उच्च प्रत्यभिज्ञा देहनी को विवश करते हैं। इनमें से प्रथम सांख्यिक सुरक्षा के उच्च बाद वाले अभिव्यवधारण ( *Generalization* ) का उपयोग करते हैं। बाल्सी ( 1961 ) के लक्ष्य-सुरक्षा उच्च उद्दीष्टकों की सुरक्षा में अभिव्यवधारण उच्च प्रत्यभिज्ञा देहनी की वृद्धि, किन्तु अभिव्यवधारण के उच्च स्तर पर के सांख्यिक सुरक्षा के व्यापक पर अभिव्यवधारण ( *Generalization* ) उत्पन्न करती हैं, जब देहनी विवश हो जाती है।

## सांख्यिक सुरक्षा में व्यक्तिगत विचलनाएँ

( *Individual Differences in Perceptual Defiance* )

सांख्यिक सुरक्षा पर हुए अनेक अध्ययनों में व्यक्तिगत विचलनाएँ पर बड़ी व्यापक गढ़ी गया है। कुछ लोग विवेक-समस्या का अनुसंधान बड़े ही रीक करते-

विद्य के साथ अपनी दैनिक जीवन में करते हैं। ऐसा माना जाता है कि उनके जिन्ने कोई विशेष बात नहीं है। जन्म से व्यक्तिगत स्वभाव का अभिव्यक्ति के कारण कुछ विशेष सामग्री बच्चों के अति निम्न प्रकार की परिस्थिति हो सकती है, जबकि कुछ बच्चों की निम्न बच्चों की तुलना में बहुत अधिक है। इसी प्रकार निम्न बच्चों में सामान्य विद्या का अभिव्यक्ति का सामान्य बच्चों के बच्चों जन्म प्राप्त हो सकती है। जन्म: इसमें व्यक्तिगत विद्या का बच्चा नहीं होता है।

**सांख्यिक बल (Perceptual Association)**—इसका अर्थवत्त यह है कि वह उद्दीपक को व्यक्ति को सामान्यताओं के कुछ तथा सामाजिक सम्बन्ध में तुलना होले है, व्यक्ति उनके आधार / बल का सांख्यिक (अर्थ: association) करता है। इस विषय में सुन्दर तथा सुश्रीव (Bower & Goodman, 1947) ने सांख्यिक बल का अध्ययन किया है। विभिन्न व्यक्तिगत स्तर के यह व्यक्तिगत बलों की परी पर बल होले, बीच सांख्यिक (circular light spot) की कुछ बलों की तुलना के यह सांख्यिक बल का कि वह सांख्यिक विभिन्न बलों के आधार के आधार हो सकती है। बलों का तुलना बल का। बीच-बीच बलों का तुलना बल उनके अनुसार बलों द्वारा बल होले बल सांख्यिक का आधार की तुलना बल। सुन्दर तथा सुश्रीव ने बलों के बलों के बलों के आधार के तुलना में सम्बन्ध (overestimation) किया। यह विषय विशेष परिवार के बलों के बलों के बल की। सुन्दर तथा सुश्रीव (1948) ने भी सामान्य बल का अध्ययन किया। बल का बल (Klein et al., 1951) ने कहा कि बलों के बलों के आधार का सांख्यिक बल सामाजिक बल का सम्बन्ध नहीं बना। इसे सामाजिक बल का बल का है जो सामाजिक सम्बन्ध का बहुत सम्बन्ध है। इसमें व्यक्तिगत विद्या नहीं होती है।

**सांख्यिक तथा सांख्यिक सम्बन्ध (Inter-Social & Intra-social relation)** :—इस सम्बन्ध का अर्थवत्त है कि सामाजिक (Masary Tajfel, 1957) द्वारा किया गया है। बलों को बहुत सम्बन्ध का अध्ययन।

इसके अनुसार सामाजिक सम्बन्ध एक ही बलों के उद्दीपकों के तुलना और आधार के सम्बन्ध होता है। यदि किसी बलों के जो आधार—बलें तथा बलें उद्दीपक सम्बन्ध बलें हैं जो व्यक्ति बलें उद्दीपकों का सम्बन्ध तथा बलें उद्दीपकों का सम्बन्ध बलें हैं।

सांख्यिक सम्बन्ध के विषय में इससे कहा कि जो उद्दीपक बलों के बल एक बलों के उद्दीपक सम्बन्ध तुलना के सम्बन्ध होता है। व्यक्ति जन्म बलों के उद्दीपक बलें होता है। सम्बन्ध के सम्बन्ध के विषय हुआ कि बल की



## अध्याय 6

### व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण ( Person Perception )

हमारे व्यवसाय हमारे जीवन की रूढ़ि है। हमारे जीवन का अधिकांश भाग अन्य व्यक्तियों से व्यतीत होता करते हुए बीता है। व्यक्ति को जिसमें एवं व्यवहार उसके इच्छित वीरुष लोगों के विषय में उनके ज्ञान और उनकी व्यवस्थाओं पर निर्भर करता है। हमारे जिन्दे यह आवश्यक है कि अन्य व्यक्तियों की विशेषताओं, अधि-कृतियों, इच्छाओं, व्यवस्थाओं, दुर्गों, उद्देश्यों और व्यवस्थाओं की समझ और सभी प्रकार की, क्योंकि उनके प्रति हमारा व्यवहार उनके अवधि एवं निर्धारित होता है। इसके अतिरिक्त एक सामाजिक जाली होने के बारे में मनुष्य अन्य लोगों के विषय में आवश्यकता चाहता है। व्यक्ति यह भी जानने के लिए उत्सुक रहता है कि ज्ञान और उसके विषय में क्या होता है—व्यक्त करते हैं या व्यवहार, अधि-कृतियों में या व्यवहार व्यवस्था में उनके लिए व्यवहार किसे हो सकते हैं या व्यवस्था, विशेष करने के बारे में व्यवस्था है क्या नहीं, उत्तरादि। व्यक्ति यह भी सोचता है और जानना चाहता है कि कोई व्यक्ति विशेष व्यवहार है या व्यवस्था, बुद्धिमान है या दुर्ग, विश्वासनी है या व्यवस्था, उत्तरादि है या निर्णय, विचार है या व्यवस्था अधि।

व्यक्ति हमारे जाली की व्यवस्था में रहकर अन्य लोगों के ज्ञान व्यतीत करता है और उत्सुकता व्यवहार करता है। इस प्रकार यह वह करते हैं कि व्यक्ति का सामाजिक व्यवहार उत्तरादि निर्भर करता है कि यह दूसरों के दुर्ग-व्यक्तियों का व्यवस्थाकरण कैसे करता है। इसी कारण व्यवस्था व्यवस्था करने विशेष में विश्वास लोगों की विशेषताओं, उद्देश्यों, व्यवस्थाओं, व्यवस्थाओं, व्यवस्था-व्यवस्था, अधि-कृतियों और व्यवस्थाओं के बारे में व्यवस्था करने में व्यवस्था रहता है। इस जाली जाली व्यवस्था देखें कि एक व्यवस्था व्यक्ति हमारे और या रहता है, जो यह व्यवस्था है कि व्यक्ति व्यवस्था करने कि व्यवस्था कोई व्यवस्था है या और की हमारे कुछ व्यवस्था चाहता है या व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था रहता है। यदि हम व्यक्ति व्यवस्था कर जाली पूर्व व्यवस्था कर लेते हैं जो व्यक्ति में होने वाले व्यवस्था और व्यवस्था में व्यवस्था है। अन्य लोगों के विषय में हमारा व्यवस्था हमारे सामाजिक व्यवस्था में व्यवस्था व्यवस्था है। ज्ञान अन्य व्यक्तियों के बारे में हमारा ज्ञान हमारे जिन्दे अधि व्यवस्था है। व्यक्ति व्यवस्थाकरण में यह ज्ञान और की व्यवस्था है।

## व्यक्ति-आत्मजीकरण का स्वरूप एवं कार्य

अनौपचारिक में आत्मजीकरण का अनुपयोग अत्यन्त विविध रूपों में हो सकता है। इन में से कुछ हैं : अनौपचारिक में अन्य व्यक्तियों के सुख-सुखों को साधना के रूप में करने के रूप में आत्मजीकरण का उपयोग किया जाने लगा है। अन्य लोगों के लिए मैं द्वारा संसार अन्तर्गत के व्यक्तिगत सुखों के लिए मैं अपने कारणों पर भी निर्भर करता है—कि किसी व्यक्ति के लिए मैं अन्य लोगों के विचार, व्यवहार, या विचारों का, या सामाजिक-व्यक्तिगत रूप में।

विश्वीय एन बीसी ( 1974 ) में व्यक्ति आत्मजीकरण के रूप में बताया गया है कि "व्यक्ति आत्मजीकरण यह प्रक्रिया पर आधारित है जिसमें अन्य लोगों के लिए मैं अपना, आत्मिक, या अन्य अनुपयोगी विचार होती है।" ( *Paradoxical perception focuses on the perception by which expectations, opinions, or feelings about other persons are formed.* ) इस प्रकार व्यक्ति आत्मजीकरण यह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा हम अन्य व्यक्तियों के लिए मैं संसार को देखते हैं और अनुसार व्यवहार करते हैं, जो व्यक्ति मैं उनके साथ हमारी अन्तर्गत की अन्तर्गत एवं निर्धारित करता है। एन बीसी एवं अन्य लोगों ( Robert Baron & Don Byrne ) ने कहा है कि व्यक्ति आत्मजीकरण यह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा हम अपने आत्मिक के व्यक्तियों की अपने या अपने का अन्तर्गत करते हैं ( *The process through which we attempt to understand the persons around us is known as paradoxical perception.* )

हमारे के लिए मैं द्वारा संसार सुखों: निम्नलिखित 3 तरीकों पर निर्भर करता है—

- (i) हमारे के लिए मैं निर्भर करने के लिए अन्तर्गत की अन्तर्गत सुखों की मात्रा।
- (ii) अन्य व्यक्ति और अन्तर्गत के रूप अन्तर्गत की मात्रा।
- (iii) अन्य व्यक्ति तथा अन्तर्गत के बीच अन्तर्गत अन्तर्गत की मात्रा।

हम अपने वैयक्तिक जीवन में अन्य लोगों के लिए मैं अपना विचार करते या निर्भर करते हैं। हमारे अन्तर्गत को यह बात अन्तर्गत करते हैं कि निर्भर करने के लिए निर्भर सुखों अन्तर्गत है, अन्य व्यक्ति के निर्भर अन्तर्गत हुई है। तथा हम लोगों के लिए मैं अन्तर्गत की अन्तर्गत हुई है। हमारे के लिए मैं द्वारा निर्भर इस तरीकों तरीकों पर निर्भर करता है। इस प्रकार व्यक्ति-आत्मजीकरण एक व्यक्ति निर्भर अनुपयोगी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा सामाजिक अन्तर्गतों की अन्तर्गत में अनुपयोगी प्रक्रिया है।

## प्रमाणांकन के साधन

( Sources of Interpretation Facilitation )

व्यक्ति अपने-आप में वृद्धि के साथ-साथ धीरे-धीरे विचलित होते हैं : सम्भवतः आधु में वृद्धि के साथ अन्य व्यक्तियों के बारे में गुणात्मक संज्ञान तथा कुछ-कुछ में वृद्धि होती है, जिससे दूसरों की उपस्थिति में आशंका भी बढ़ती है और उनके व्यवहार की प्रत्याशा करने की क्षमता भी । इन समस्याओं की प्रकल्पना ( Facilitation ) के द्वारा अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति और सुन्वयित करने की प्रक्रिया में सुचना के तीन मुख्य साधन विद्युत होते हैं—

1. परिस्थिति ( The situation )
2. उद्दीष्टक व्यक्ति का लक्ष्य व्यक्ति (The stimulus or target person)
3. वेक्षक ( The observer )

1. परिस्थिति ( Situation )—वेक्षक और उद्दीष्टक व्यक्तियों की अपरः क्रिया की स्वीकृत प्रभाव करने वाली परिस्थिति मुख्यतः का एक प्रमुख साधन है । परिस्थिति के अनेक उदाहरण इस विषय में बहुलानुपूर्व होते हैं । हर सांस्कृतिक रीति व्यक्तियों के लिए सम्पूर्ण बहुलानुपूर्व होती है । सामाजिक संज्ञान में प्रत्येक सांस्कृतिक का बहुलानुपूर्व स्थान होता है । यह ज्ञानः एक प्रकार की भूमिका रखे ( Role behaviour ) होती है, जिससे साथ ही कुछ प्रत्याशाएँ सम्बद्ध कर लेते हैं । जैसे कैम्बेरीन की भूमिका में व्यक्ति के यह प्रत्याशा की जाती है, यह आशंका में गये, हीनकुल और सामान्य की प्राप्ति में बहुल को बहुलता देना । जहाँ ही इन किसी स्तर में प्रवेश करते हैं, एक व्यक्ति कहता है, इस उद्योगी उद्योग कैम्बेरीन के मन में करते हैं और उसके यह उम्मीद करते हैं कि वह सभी के पक्ष में, बहुलानुपूर्व की प्रत्याशा करेगा और उनके विषय में और सुचना देने में भी सहयोग होगा ।

ऐसी सामाजिक भूमिकाएँ जिसमें अधिक कम-सम्बन्ध सम्बद्ध होता है, हमारे मन में इन भूमिकाओं के प्रति बहुत स्पष्ट आशंका सम्बन्धी प्रत्याशाएँ होती हैं— जैसे माता, पिता, भाई, बहन, पड़ोस, जड़की, सामाजिक रीति आदि । इन भूमिकाओं के साथ ही कुछ निजी विशेषताएँ और व्यवहारपरक प्रत्याशाएँ सम्बद्ध होती हैं ।

यह ज्ञान है कि भूमिका निर्वाह के समय व्यक्ति को देखकर जैसे एक भूमिका-कर्मी, कैम्बेरीन का सम्बन्धक की उनके कर्तव्य प्रत्यक्ष के सम्बन्ध देखकर उनके विषय में प्रमाणांकन करते हैं । यह अर्थः भूमिका प्रत्याशा के द्वारा होता है, किन्तु यह सम्बन्ध बहुत ही साथ समय के लिए होता है, जिससे इन प्रत्याशाओंमें सुधार की हो सकती है, क्योंकि भूमिका-प्रत्याशाएँ कभी-कभी व्यक्ति के सामाजिक स्थापन की प्रिया



3. प्रेसक ( Presswork ) :—सूचना का टीका और प्रतिष्ठित साधन एवं वेधक होता है। यह बताता कि क्या व्यक्ति की सम्बन्ध करने, वह क्या व्यक्ति के विषय में लेखक की भावना, संज्ञान तथा समीक्षाओं पर निर्भर करता। कुछ लोग दूसरे लोगों पर विचार नहीं करते, जब कि अन्य व्यक्ति हुए एक की विचार-धारा प्रभावित होते हैं। कुछ व्यक्ति किसी के सम्बन्ध का साधक करने में संकोच नहीं करते, तो अनेक लोग किसी के अपने द्वारा फैलाना या किसी पर निर्भर करना समुचित समझते हैं। किसी व्यक्ति के किसी वर्ष विचार के लोगों के विषय में कुछ विविध विचार होते हैं जैसे कलम, साक्षात्कार, दायित्व, सम्बन्ध, अन्य मति। कुछ लोग उनके विचार होते हैं, जो अधिकतर पढ़ते हैं। वे अपनी विरोध भावना का प्रकाशन भी अपने सम्बन्ध एवं विचारों द्वारा करते हैं। कुछ साधन साक्षात्कार, साक्षात्कार तथा अन्य अधिकतर पढ़ने वालों के प्रति विरोधी सम्बन्ध एवं प्रति-वृत्ति का प्रदर्शन करते रहते हैं। इसका कारण उनकी अधिकतर विरोधी व्यक्ति होती है।

इस लेख के लेखक कर्मियों ने सम्पादन में सम्बन्ध सूचना के लोगों द्वारा पर प्रभाव कर के प्रभाव नहीं दिया है- प्रेसकों की सामान्य विविधताओं की और अधिक प्रभाव दिया है जबकि सम्पादन में लेखकों की व्यक्तिगत विविधताओं की और सम्बन्धित रूप प्रभाव दिया गया है। यद्यपि प्रभाव विविध में प्रेसकों की सामान्य विविधताओं की प्रभाव किसी रूप व्यक्ति प्रभाव होते हैं।

## सामाजिक व्यक्तिगतता

( Social Personality )

हम करते हैं कि जीवन में अनेक व्यक्तियों के बारे में केवल यह पढ़ते हैं कि यह बहुत संस्कृति-प्रदाता वर्ष का प्रभाव है, जैसे यह कि कोई व्यक्ति विपक्ष है, मित्राही है, या द्विजन है। अन्य व्यक्तियों के अभाव में या न्यून होने पर केवल इसका संज्ञान कि यह बहुत संस्कृति प्रदाता वर्ष के सम्बन्धित प्रभाव है, के आधार पर प्रभाव प्रदर्शित करने लगते हैं। इस प्रकार व्यक्ति के संस्कृति प्रदाता वर्ष की जानकारी उनके सम्बन्धित प्रभाव को काफी प्रभावित करती है। जब किसी व्यक्ति के दुर्गति का प्रभावित प्रभाव प्रभावित, तब, देह या किसी प्रभाव की संभावना के आधार पर पढ़ते हैं तो इसे सामाजिक व्यक्तिगतता कहते हैं। किन्तु यह सम्बन्धित नहीं है कि किन दुर्गति का प्रभावित प्रभाव एवं उनके सम्बन्धित प्रदाता वर्ष के आधार पर कर रहे हैं, यह प्रभावित प्रभावित है। इसमें कोई संदेह नहीं कि व्यक्ति पर उनके सम्बन्धित प्रदाता वर्ष, व्यक्ति, वर्ष का प्रभाव का प्रभाव पड़ता है किन्तु यह नहीं है कि कि व्यक्तिगत विचारों पर यह प्रभाव न पड़े। व्यक्तिगत प्रभाव का प्रभाव



सबसे पहले वास्टर लिपसन (Walter Lippman, 1922) ने किया था। उसने इस लम्ब का इस्तेमाल उन विचारों और अवधारणों को संक्षिप्त करने के लिए किया है जिन्हें कठिन करने पर सभी प्रकार की विविधताएँ समाहित रहने पर स्थित होती हैं।

[illegible]

Schatts ( 1964 ) ने इससे वैयक्तिक जीवन में व्यक्तियों के जीवन में मानव को समझने शुरू किया है कि "An individual uses a whole network of typifications. The sum-total of these typifications constitutes a frame of reference in terms of which, not only socio cultural, but also the physical world has to be interpreted". उनके अनुसार व्यक्तियों का जीवन एक संदर्भ है, व्यक्तिगत जीवन में इसी संदर्भ ( Functional ) उपयोगिता है ।

क्लिम्बल योंग ( Climball Young, 1940 ) ने कहा है कि "संविधानों को सर्वोत्तम रूप से परिष्कृतित करने का यह कहा जा सकता है कि यह एक विद्या है।"

कार्य करने वाला ज्ञान है, जिसके साथ पछन्द, वात्सल्य, स्नेहप्रति या आगेप्रति का प्रबल सामाजिक भाव सम्बद्ध रहता है।

( It is best to define it as like classificatory concept is related to a role, some strong emotional feeling such as like, dislike, approval or disapproval is attached". )

यह परिभाषा सहिष्णुति की दो विशेषताओं पर प्रकाश डालती है। प्रथम यह कि सहिष्णुति प्रबल स्वीकारण सम्बन्ध करती है। द्वितीय इसका सम्बन्ध पछन्द, वात्सल्य, स्नेहप्रति या आगेप्रति की भावना से होता है।

कुपुत्राजी ( Kuppurajay, 1961 ) के अनुसार "सामाजिक रूप से सहिष्णुति की बुझिपूर्व या प्रबल स्वीकारण करने वाले समूह के रूप में परिभाषित कर सकते हैं, जिसमें व्यक्तियों को अन्य समूहों के विषय में कोई प्रबल वर्गीकृत भाव प्राप्त रहता है।" ( It is broadly said, we can define the stereotyped as a like classificatory concept with strong feeling such regarding other groups of people )"।

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में यह कहते हैं कि सहिष्णुति का अर्थ किसी व्यक्ति या समूह के विषय में एक वास्तव या बुझिपूर्व धारणा है जिसमें उसके बड़े, धर्म या जाति के आधार पर धारणाओं निर्मित करते हैं। इससे प्रबल सामाजिक भाव जुड़े रहते हैं। समाहार के लिए सीखने की संकीर्ण प्रेरी, अपने-की उपलब्धि, वास्तव की विवेक और तथा का साथ, वास्तव की पूर्ण ( जीना प्रविष्ट ) हरिजन की तथा, सीखी की क्षम, नहीं कहते हैं।

## सहिष्णुतियों की प्रकृति

( Nature of Stereotypes )

सामाजिकज्ञानियों ने सहिष्णुतियों के सम्बन्ध में विशेष रूप से प्रकृति की है। सहिष्णुतिकरण एक सामाजिक-सांस्कृतिक दोष है, क्योंकि यह एक संस्कृति के सभी लोगों में अवसर समान रूप से पायी जाती है। सहिष्णुतिकरण में तीन सम्भाव्य रूप के हो सकते हैं, किन्तु यहाँ की विशेषता की कहते हैं—

- (i) व्यक्तियों का स्वीकारण, या स्वीकारण,
- (ii) प्रबल पूर्ण पर बहसति,
- (iii) प्रबल एवं सामाजिक पूर्णों में निर्भरति।

1. सम्प्रतिष्ठों का स्वीकारण—सहिष्णुतिकरण में तीन सम्भव सम्प्रतिष्ठों का स्वीकारण करते हैं जैसे मुसलमान, या हिन्दू। निम्न व्यक्तियों में विषय-

धिया लक्षण या पुन धिया-धिया माना वे ऐसे होते हैं। व्यक्तिगत धियाता के कारण कोई भी दो व्यक्ति दूसरे के विरुद्ध लक्षण नहीं होते। किन्तु विविध समूहों, समुदायों, जाति की समूहों के लिए समान कुछ गुणों का प्रभाव कर लेता है। वे लक्षण या पुन व्यक्तिगत के वैयक्तिक विशेषताओं—जैसे बुद्धिबल की कमजोर, जवान, बीम, विशेष केश-कृष्ण या प्रचण्डता लक्षण हो सकते हैं। यह पुन, समूह की समानता, संघर्ष या समान जैसे व्यवहारिक, जर्म या राष्ट्रीयता के भी सम्बन्ध हो सकते हैं या यह व्यवहार के कुछ विशिष्ट संस्कारों पर आधारित हो सकते हैं।

सीम्पसन तथा लेविस (Campbell & Lewis) के संकेतानुसार किसी पुन के लक्षण के दो समूहों में विभक्त करना अधिक विरल होता है, जब पुन के अधिकतम संख्या में अधिकतर होने की सम्भावना की जाती हो अधिक होती है। इस प्रकार रक्त-सुक्रिकाओं वाली मातृ यह समूहों में है, जो यह यह जानने के बाद बताते हैं कि यह व्यक्ति विशेष समूह जर्म या बीम के सम्बन्ध है, अर्थात् केवल किसी व्यक्ति की बीम का ज्ञान होने पर जर्मता पुनर्निर्माण अधिकतम समूहों में है। अतः अधिकतम एक विशिष्ट लक्षण का संशोधन है जिसमें केवल किसी समूह या जर्म के सम्बन्धता व्यक्ति की सम्भावना का ज्ञान पर्याप्त समझ आता है। इस ज्ञान के आधार पर यह ज्ञान होता है कि यह जर्म के सभी पुन यह व्यक्ति में मौजूद है।

देसन, सैदुन और रिमारी ( *Intergalactic & Kites*, 1954-6; *Scissors*, 1959 ) में अपने कवयियों में प्रेमियों के साथ विश्व बसुद्धि मिले । वह विषयों में आजीवन कवयियों के सम्बन्ध में अपने विषयों में जीने-जीने का छोटे छोटे दृष्टि मिले । कवयियों के साथ हुआ कि यदि कवयियों के विश्व के आजीवन का सम्बन्धकारण किसी विशिष्ट कवयियों के सम्बन्ध के रूप में किया हो, नहीं सम्बन्धकारण रूप बसुद्धि का रूप में बना व ही हो तो वे बस कवयियों के सम्बन्ध कभी कवयियों रूप उन्हें आजीवन कर रहे हैं । बस: कवयों एकता बना छोटे पर कवयों किसी किसी कवयियों का सम्बन्ध बनते हैं, या इसके विशिष्ट किसी की कवयों कवयों छोटे कवयों की कवयों कभी रूप आजीवन करने के लिए कवयों छोटे हैं ।

2. अवस्था सुनी में बहुमति—जिन्होंने भी एक बात लिखता वह है कि बिना सोचे सुकसे किसी चीज़ी विशेष के लक्षणों में बहुमत एक तरह के लक्षणों का अन्तर्नीकरण करते हैं। किसी चीज़ का बहुमत के अर्थों में यदि किसी प्रकार की एक बहुमत भी होने पर तब: वह बात लेते हैं कि उसका व्यवहार एक जैसा होगा। अतः एक के लिये इस चीज़ी ऐसे सुकसे भी, जिसकी वस्तु कभी-कभी हुए हैं और बात कई हुए हैं, एक चीज़ी में रहते हैं, और उन्हें 'हिन्दी' करते हैं। हिन्दी के लिये में यह व्यवस्था रहते हैं कि वे सभी प्रकार के अर्थों में अति



सम्बन्धित व्यक्ति होती है। प्रत्यक्षीकरण की इस अनुसूची के दो मुख्य कारण हैं : पहली किसी भी या समूह के विषय में जांचा विचार करने के लिये विशेष करने की आवश्यकता, और दूसरी, इस जांच की या समूह प्रत्यक्षीकरण सिद्धि प्रति सदियों विस्तृत करने वाला व्यक्ति सम्पत्तिमान करता है। जब किसी व्यक्ति के विषय में जांच यह जानते हैं कि यह समूह खोपी का है, तथा अन्य सूचनाओं का अभाव होता है, तो व्यक्तिगत विचारों की सुविधा प्रत्यक्षीकरण के अभाव में होती है और ऐसी घटा में उनके प्रति प्रतिस्पर्धी इस विशेष व्यक्ति के प्रति न होकर उस वर्ग के प्रति होती है जिसका यह समूह है। इसमें ( 1944 ), और तथा अन्य ( 1954 ) ने अपने अध्ययनों द्वारा व्यक्तिगत वर्गों की सुविधा की है।

प्रत्यक्षीकरण व्यक्ति के प्रत्यक्षीकरण की सम्पत्ति करने वाले कारणों में एक समूह कारण है प्रत्यक्षीकरण व्यक्ति तथा वेकल के बीच सम्बन्धित या सुसंगत ( Face to face ) सम्बन्ध। ज्ञान: इस वर्ग किसी व्यक्ति के सम्पत्ति करने में अनेक कारण जांचाई हमारे विचार के विचार होती है, अर्थात् सदियों और सुसंगतों का अभाव सम्पत्ति के कारण होता जाता है और उपर्युक्त खोपीय अनुसूचित या अभाव की वजह होता है। सदियों का अभाव, ज्ञान की सुविधा के कारण यह होता है।

सदियों का एक और वजह भी है। सदियों के कारण किसी विशेष वर्ग के लोगों में होती जाने वाली विशेषताओं के विषय में अन्वेषणकर्तव्यों की सम्पत्ति की सम्पत्ति कुछ विशेष सामाजिक प्रक्रियाओं के कारण होती है जो इन वर्ग के विषय में एक निश्चित विचार में होने के लिये अभिवेष्टित करती है। यही सम्पत्ति सदियों का आधार होती है।

## सदियों की सम्पत्ति-असम्पत्ति

(Truth or Falsity of Stereotypes)

सम्पत्ति-प्रत्यक्षीकरण सदियों की सम्पत्ति पर चलते हैं, अर्थात् सदियों की सम्पत्ति करते हैं। इसकी परिभाषा में भी इसकी अनुसूचित होता है। जब परिभाषा में यह कहते हैं कि सदियों का वर्ग किसी व्यक्ति के विषय में जांच खोपी की सम्पत्ति के आधार पर यह सम्पत्ति कि इन खोपी के लिये कुछ व्यक्ति में मौजूद होते। इसमें स्पष्ट है कि प्रत्यक्षीकरण खोपीय किसी खोपी के लिये खोपी में सम्पत्ति करने के विचारमान नहीं होते। ज्ञान: सदियों की प्रत्यक्षीकरण खोपी और जांच यांचा जाता है। सदियों के एक ज्ञान—“कि किसी समूह की सम्पत्ति खोपीयों के खोपीय के लिये प्रत्यक्ष है” में ही यह बात निहित है कि सदियों ज्ञान: समूह होती है। जब वेकल की व्यक्ति की सामाजिक सम्पत्ति के प्रतिस्पर्धी अन्य सूचनाओं का अभाव होता है तो यह व्यक्तिगत विचारों की अभाव करने के लिये करने के

हिने मान्य होता है। अतः अधिकांश अधिवां मनोवैज्ञानिकों ने और अति हालतकी-  
काल पर आधारित होती है। यह बात अनेक व्यवस्थाओं के परिवर्तनों ( G. W.  
Allport, 1955; Katz & Stenlund, 1958; Lindzey Ross, 1969 ) के सम्य-  
कता है। यह वा सी मनोवैज्ञानिकों ने होती है या पूर्णतः के विचारधारा। उनके के  
आधार पर यह बात मान्य होती है। अधिवां, अतिविक्रम, बहुमुखी एवं अति धाना-  
मोहक बात पर आधारित होने के कारण झूठी होती है।

हम बात देखते हैं कि सी चरुओं में एक ही विशेषताएँ होने होने भी अनेक  
चरु के बीच अपने चरुओं की अपने अर्थों में तथा अर्थ सीने के लक्षणों की  
अर्थों में अति अर्थ है।

किन्तु कुछ न्याय-आलोचक अब यह इतिहास करते हैं कि अधिवां विस्तृत विचारधारा  
नहीं होती, बल्कि अपने आपका वा सीने अर्थ होता है जिसे अधिवां कर देते हैं।  
न्याय-आलोचक व्यवस्थाओं के आधारित होता है कि अनेक अधिवां वास्तविक विशेष-  
ताओं पर आधारित होती है ( Campbell, 1967 )-अतः हम यह कहते हैं कि  
कुछ अधिवां में व्यवस्था का अर्थ होता है, जिसे सीने तथा सीने के बीच द्वारा सीने-  
करीब कर प्रस्तुत करते हैं। एक तरह अधिवां कुछ कुछ बातों में विद्यमान हो  
सकते हैं, अधिवां व्यवस्था अधिवां के अर्थों और विस्तृत होने की उपरुक्त बतानी  
आता करता है।

## सुधारित मनोविज्ञान

( Attributional Theories )

चरुओं की व्यवस्थाओं तथा व्यवहार का अर्थ व्यवस्था में व्यवस्था  
होता है। हम बात अर्थ व्यवस्थाओं की व्यवस्थाएँ व्यवस्था विशेषताओं की व्यवस्था में  
अर्थ करते हैं। अपने ही व्यवहार के कारणों का अर्थ होता है और व्यवहार  
के कारणों की व्यवस्था में, व्यवस्था-व्यवस्थाएँ व्यवस्था अर्थ करते हैं। किन्तु विशेष  
व्यवस्था में किसी व्यक्ति का व्यवस्था के कोई व्यवहार नहीं किया ? यह व्यवस्था  
विशेष हम व्यवहार के कारणों की व्यवस्था का अर्थ करते हैं, सुधारित-व्यवस्था  
है। अनेक व्यवस्था के यह व्यवस्था व्यवस्थाओं की अर्थ का अर्थ नहीं है। कोई  
व्यक्ति बहुत सीधे सीधे और व्यवस्था है जो अर्थ व्यवस्था, अर्थ, वा व्यवस्था नहीं है ?  
हम किसी के व्यवस्था व्यवस्था की सी नहीं बात कहते, किन्तु हम अपने व्यवहार  
के व्यवस्था के कुछ व्यवस्था अर्थ व्यवस्था नहीं करते हैं। कोई बात वा कोई अर्थ  
नहीं होती है, के व्यवस्था में व्यवस्था के व्यवस्था का व्यवस्था सुधारित मनोविज्ञान  
है : ( Attribution theory is the study of people's beliefs about why things happen.—Festinger & Cooby, 1963 )

चुनिष्ठ पुस्तकालय एक बहिन संस्थान है, जहाँ कलेक्टर विद्यापीठ का विकास मानव संसाधन के कार्यों के समन्वय के तहत होता है। इसमें कुछ प्रमुख विद्यापीठों की सूची की जा सकती है।

### कल्याणत्मक अनुमान का सिद्धान्त

[ Theory of Correspondence Indifference ]

इस विद्वान् के विचार का मैं बोल रहा हूँ (Edward, E. Ross and Robert H. Davis, 1966) की है। तुलनात्मक अनुमान के क्या अर्थ हैं ? किसी के विचार में किताब क्या अनुमान तुलनात्मक इस सबसे कहलाता है जब कहीं भी किताबी और अतिरिक्त चीजनुची ( चीजों के बिन्दे ) समान विधियों का प्रयोग किताब का रहे, अर्थात् जब कहीं प्रत्यक्ष किसी कर्त्तों की बाब एक किताब की देखकर कुछ ऐसे जगहों का तुलनात्मक कर लेंगे। जो कहीं किताबी के समान हों, तो इसे तुलनात्मक तुलनात्मक कहा जाता है। एक तरह किताब प्रकार का तुलनात्मक, यही ही विचार के किताब साद्वान, तुलनात्मकता विचारों अतिरिक्त होती। एक तरहतुलनात्मक तुलनात्मक तुलनात्मक समझ ही कहता है। नामों को अतिरिक्त "अ" और "ब" आदि कार्यरत में कर। "ब" के "अ" को अन्तर्गत तथा और "अ" विरुद्ध। क्या बात "ब" के अन्तर्गत की देखकर उनके अतिरिक्त की कुछ विवेचनाओं का तुलनात्मक कर लेंगे ? नहीं बात "ब" को अन्तर्गत, अन्तर्गत या अन्तर्गतता का लेंगे ? यदि अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत "अन्तर्गत" लक्ष्य है, और इसके अतिरिक्त उनके अतिरिक्त में अन्तर्गत के चीजनुची का बाधा होता है, तो यह अनुमान तुलनात्मक होता। यह देखकर किसी कर्त्तों की केवल एक किताब की देखकर उनके अतिरिक्त के कुछ ऐसे जगहों का तुलनात्मक करे जो कहीं किताबी के बिल्कुल अनुपम हो, तो ऐसे अनुमान को तुलनात्मक कहेंगे तुलनात्मक की बाधा किताबी अतिरिक्त होती, तुलनात्मक में किताब की बाधा की उन्नी ही अतिरिक्त होती।

अनुमान की शक्ति का विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि प्रत्येक शब्द के कुछ परिवर्तन होते हैं। हमारे सम्बोधन में मायों 'अ' द्वारा 'ब' की सहाय्य देने के ही पर्याप्त होते हैं। (1) किसी शब्द 'अ' का अन्त विभक्त, (2) 'अ' नहीं विभक्त बल्कि वही शक्ति का अनुमान तथा हुआ था। यदि ऐसा न हो, तो स्पष्ट है कि 'अ' ने 'अ' की सामान्य विभक्त, तो 'अ' के अन्तर्गत का अनुमान बरत होता। अनुमान देखी वहाँ से अनुमान ही स्पष्ट है, क्योंकि स्पष्ट लगता है कि 'अ' ने 'अ' को अन्तर्गत शक्तियों की शक्ति के लिए विभक्त था। स्पष्ट यदि स्पष्ट था विचार यह है कि 'अ' ने 'अ' को नहीं देखा था और अन्तर्गत से स्पष्ट था था, तो अनुमान में उन शक्तियों की अन्तर्गत नहीं था। दूसरी वहाँ

के अनुमती से पुनर्जागरण की भाषा को भाषी आहूँ, क्योंकि चर्चित विचार 'अ' के प्रतिष्ठान के प्रवक्तृ रूप में सम्पन्न नहीं हैं। इस विधि में प्रत्येक 'अ' के अनुमति, आह्वानकला आदि विविधताओं का पुनारीक्षण नहीं कर लेता। हाँ, उसे 'अनादिमान' की सीमा से बाधता है।

अनुमान प्रक्रिया की विस्तृत व्याख्या के संकेत मिलता है कि पुनारीक्षण—प्रक्रिया में कला की क्रियाओं में विहित "उद्देश्यों" का शोध प्रत्येक के अनुमति होता है। अनुमान प्रक्रिया पर पुनर्जागरण करने से कला के उद्देश्यों की भाषा लक्ष्य है तथा परिणामों के रूप निर्णय करते हैं कि कला (कला) किस परिणामों की उत्पत्ति करने की शक्ति और भाव है। कला के द्वारा कला के "उद्देश्यों" (Latencies) का निर्णय किया जा सकता है। हमारे पूर्व चर्चित उदाहरण में, "पाली", 'अ' 'अ' की प्रक्रिया के बाद उसके नीचली कला की प्रक्रिया समग्र भाव से प्रेरित रहा था। उसकी प्रेरणा से आत्म का संज्ञा भी हो रहा था। 'अ' की प्रती क्रियाओं के प्रत्येक निर्णय करता है कि कला 'अ' की प्रेरणा हो आत्मपुनर्जागरण किया था, जो वह वह भी शोध करता है कि 'अ' अनादिमान, आह्वानकला अनादि ही नहीं बल्कि विस्तृत या विस्तृत है और 'अ' की प्रक्रिया का उद्देश्य प्रत्येक के बाधता था।

कला के "उद्देश्यों" का अनुमान करने के बाद, अपनी प्रक्रिया—'प्रभाव' (Disposition) का अनुमान करते हैं। प्रती के एक रूप की ओर प्रेरणा के रूप प्राप्त किया है। प्रती के अनुमान अन्य प्रती के अन्तर्गत अनादिमानक कलाओं का अनुमान करने की प्रक्रिया एक बात से भी प्रभावित होती है कि वह अनुमान के कला के किस क्रियाओं की प्रेरणा करते हैं। प्रती एवं प्रेरितिविचार, 1976) यदि कला प्रभाव के विस्तृत अन्तर्गत करता है तो प्रत्येक प्रेरणा कारण कला के प्रभाव में लक्ष्य करता है। यदि वह एक अनादिमान अन्तर्गत के प्रेरितिविचार से सम्पन्न होते हैं तो प्रेरणा पुनारीक्षण अधिक सम्पन्न होता है।

पुनारीक्षण में विहित पुनर्जागरण अनुमान पर चर्चित कलाओं के अतिरिक्त अन्य अन्य कारणों का भी प्रभाव पड़ता है। यह कारणपुनर्जागरण अनुमान की प्रेरणा का निर्धारण करते हैं। किसी अनुमान में हमारे विचारों की भाषा प्रक्रिया के दो अनुमान कारणों के अनुमान पर निर्धारित होती है। प्रत्येक है, प्रिया द्वारा अनादिमान परिणामों की प्रेरणा और प्रीति प्रिया की सामाजिक प्रेरितिविचार। प्रत्येक भाषा प्रत्येक प्रेरितिविचार है। प्रत्येक प्रेरितिविचार में कई प्रेरितिविचार है। भाषा प्रत्येक प्रेरितिविचार में है, जो भाषा प्रेरितिविचारों पर निर्धार करते हैं और प्रत्येक प्रेरितिविचार निर्णय करते हैं। प्रत्येक भाषा की प्रिया के प्रेरितिविचार हो सकते हैं। (1) प्रेरितिविचार के लिए एक अनादिमान







सबभार या डिवा के कारण की समस्या में यदि मान्यता है। इसकी माता अतिरिक्त होने का अतिरिक्त बाह्य गुणात्मक होता है, जिसकी माता कुछ समय पूर्व गुणवत्ता वाले उदाहरण के साथ किन्तु के अन्तर्गत की जा चुकी है। इसका कारण यह है कि कभी कभी सबभार की अनुकूलता अन्य पद्धतियों या पद्धतियों के प्रति करता है। यदि ही ही फिर माता में।

(1) **सहस्रवर्षि ( Centenary )**—क्या सभी व्यक्ति ऐसा ही सम्मोहित नहीं हैं, जैसे हमने पुस्तक के बारे में उपाध्याय से कहा था ? क्या वह पुस्तक की सुन्दर भाषा के सभी छात्र समझते हैं ? यदि अनुसूचित, सभी की समझ अनुसूचित है, तो हमारी सम्भावना अधिक होती कि सम्मोहित / होंगे । वह पुस्तक के कारण हुआ ? यदि केवल एक ही छात्र होता, अन्य कुछ नहीं तो हमारा मान्य यह होता कि उसकी होंगी का कारण वह छात्र के व्यक्तित्व में निहित है । अन्य सहस्रवर्षि ( उपाध्याय में सभी छात्रों का होना ) के बावजूद सुसंगतता उत्पन्न होता है यह कि शिक्षा की निरन्तरता के सामाजिक सुसंगतता उत्पन्न होता है ।

(3) संयति ( *Consistency* )—जहाँ जहाँ के जमान नाम कुछकुछ भी एक जमान में पड़ी हो वही समसुतित मानते हैं। यदि "हूँ", तो जगमें संयति होगी, यदि "नहीं" तो संयति का अभाव होगा। उभय संयति, असंयति एवं बाह्य सुलभयोग के लिये यदि आवश्यक है।

केली ( Kelly ) के अनुसार सुसारीयता के समय सुसारीयता अनुमान के निर्धारण में वित्तिय सार्वजनिक प्रक्रियाएँ विचारणीय होती हैं। -सीमल व कैपिल ( 1945 ) सीमल, कैपिल एवं बरलेन ( 1961 ) तथा मैकगोर्ड ( 1972 ) के केली प्रारूप ( Kelly's model ) के आधार पर सार्वजनिक वित्त को परभाव केली के सार-सामयिक सुसारीयता का सामाजिक समर्थन दिया ।

होबार् ( Hobbs, 1944, 1958 ) के केसी के सिद्धान्त पर लिखी गई पुस्तक सीखने में बताती है कि इस सिद्धान्त में सुधारण करने सबसे परिष्कृत रूप में सीखने की प्रक्रिया की प्रकृति सुनिश्चित होती है । कारणों से सुधारण सिद्धान्त व्यवहार के कारणों की व्यवस्था में उत्पन्न करता है । सीखने का प्रकृति ( 1967 ) के एक सीखने के प्रभाव से ही इस सिद्धान्त की सीखने का है ।

**सफलता और विफलता का सुषारीपण**

### 1. Attribution of Blame to Fathers

जयति वाइनर ( Jayanti Weinert ) के सुपारीयन के एक ऐसे वाक्य का विकास किया है जो वाइनर के अवधि विविध वेबो बी और एडिड काया है। इस प्रकार का सुपारीयन यह है जो वाइनर और निम्नलिखित की अनुसंधानों

में निर्मित होता है। दूसरे किसी कार्य विशेष में व्यक्ति की सफलता या असफलता का सम्बन्धित्व देखे हैं। फेल्ड, कार्लो द्वारा प्राप्त सफलता और असफलता का तुल्य-योग्य करता है ( फाइनर तथा अन्य, 1971 ) और उसी के अनुसार उसके व्यक्तिगत जीवन सुखी या दुःखारोपित किया जाता है। सफलता के लिए विशेष के एक शिक्षापी के तुल्य पर विचार कर सकते हैं, क्योंकि हमारे कार्य में सफलता प्राप्त की। उसके इस बीच के बारे में विचारित लोगों की आज्ञा-अज्ञात प्राप्त है। यदि कोई कहता है बीच का कारण यह है कि लोगों ने वेद प्राप्त में या नहीं, एक व्यक्ति कहता है कि शिक्षापी के विशेष प्रयत्न के कारण ऐसा हुआ, कोई अन्य व्यक्ति कहता है कि बीच बहुत कारण था, पीछा कहता है कि शिक्षापी के अपनी विशेष योग्यता के बीच शिक्षा। यदि बीच बहुत कारण था, या वह प्रयोग के प्रयत्न में या वह ही शिक्षापी की सफलता का कारण यह शिक्षापी नहीं है लेकिन यदि बीच शिक्षापी के प्रयत्न में या विशेष योग्यता एवं हीनो के प्रयत्न प्राप्त की सफलता का कारण उस शिक्षापी में निर्मित माना जायेगा लेकिन प्रत्यक्ष उस शिक्षापी में कोई नहीं विशेषता का प्रयत्न का तुल्ययोग्य नहीं करता। किन्तु जाने के बीच में ही नहीं शिक्षापी एक-ही और ही वेनो ही विशेषता उनके बीच प्राप्त कर लेता है जो उनके आधार पर उस शिक्षापी में कहता, स्पष्टता, प्रयत्न, सामाजिक जाति प्रयत्नों का तुल्ययोग्य किया जायेगा, क्योंकि यह वेनो का प्रभाव करते हैं कि वह सफलता या असफलता उस शिक्षापी की प्रयत्नी विशेषता है प्रयत्नी नहीं। बीच तथा फाइनर ( Felder & Weinberg, 1973 ) ने अपने एक सामाजिक सम्बन्ध द्वारा ऐसी प्रयत्नी की प्रयत्नी की विशेष तुल्ययोग्य की सामाजिकता या कारणों का बहुत परिधिगत में निर्मित होता स्थापित होता है। दूसरे प्रयत्नी में प्रयत्नी अपने प्रयोग द्वारा विज्ञान की तुल्य की।

### तुल्ययोग्य सिद्धांतों की तुलना एवं संश्लेष

( Comparing & Contrasting Attribution Theories )

बीन तथा फेल्डर ( 1963 ) का तुल्ययोग्य अनुमान का सिद्धांत, फेल्ड ( 1963, 1971 ) का सामाजिक तुल्ययोग्य का सिद्धांत तथा फाइनर ( 1971 ) का सफलता और असफलता पर सामाजिक तुल्ययोग्य—सभी प्रयत्न प्रयत्नी पर निर्भर करते हैं। हर सिद्धांत सामाजिक है, प्रत्येक प्रयत्न का कारण निर्दिष्ट व्यवहार के होता है और हर एक ऐसे प्रयत्नों को स्थापित करता है जिनके द्वारा प्रत्येक व्यक्तिगत प्रयत्नी प्रयत्नों या तुल्य का तुल्ययोग्य कर सकता है। प्रत्येक सिद्धांत का प्रयत्न प्रयत्नी के व्यवहार के प्रयत्न प्रयत्नी की प्रयत्नी का प्रभाव करता है।

किन्तु इन सिद्धान्तों में कुछ कमियाँ भी हैं। अमेरिकन, सोवियत तथा बेसिन के व्यवहार विवेचन की इसकी मज्जु किया है जो किसी निश्चित समय में प्रति होती है, उनका सिद्धान्त विभिन्न समयों और विभिन्न परिस्थितियों में कालों के व्यवहार पर विचार नहीं करता। अर्थात् केवल उक्त व्यवहार तथा जो एक बहुत बराबर करते हैं। ये मज्जु कहते हैं कि क्या विभिन्न परिस्थितियों तथा स्थानों पर काल में अवधि पाई जाती है? इस प्रश्नकोष के इस मज्जु कहते हैं कि केवल उक्त व्यवहार एवं काल के सिद्धान्त नहीं जैसा एवं बेसिन के सामाजिक सिद्धान्त के अधिक व्यापक है।

दूसरी और जैसा एवं बेसिन इस पर व्यापक रहे हैं कि काल के इस व्यक्ति में कार्यविधि कितने होते हैं जैसा केवल की कार्यविधि केवल इस पर है कि व्यवहार का कारण सामाजिक है या बाह्य। दूसरे सामाजिक सामाजिक ही काल के कारण केवल का सिद्धान्त इस बात पर काल ही जाता है कि किस विवेक पुनः के कारण व्यवहार उत्पन्न हुआ। कारण उक्त काल का सिद्धान्त काल उत्पन्न और उत्पन्नता के सामाजिक तत्त्व कोविता मज्जु जाता है। इस प्रकार, सोवियत तथा बेसिन के सिद्धान्त में मज्जु-मज्जुमूर्ति है कि व्यक्ति के काल पुनः के कारण किया ही नहीं केवल के सिद्धान्त का प्रथम केवल मज्जु निर्धारित करते हैं कि काल व्यवहार का कारण कोई सामाजिक कारण या बाह्य नहीं?

### सामाजिक सिद्धान्त का व्यावहारिक उपयोग

(Practical Applications of Attribution Theory)

काल के कालों में सामाजिक सामाजिक के इस पर का कारण व्यावहारिक उपयोग कारण ही गया है। इससे उपयोग का बीच एतना व्यापक है कि मज्जु केवल कुछ बहुत कालों की कालों ही समय है।

प्रथम, सामाजिक सामाजिक कोविता काल उत्पन्न कारणों के कारण उत्पन्नता की सिद्धान्त मज्जुमूर्ति के काल कोवितामूर्ति की उत्पन्न में काल का मज्जु है (कालिक, किसी उक्त मज्जुमूर्ति, 1985)। सामाजिक एवं व्यक्तिों की किसी व किसी काल में काल का काल के कारण व्यवहार के मज्जु उत्पन्नता काया जाता है—काल उत्पन्नता मज्जु उत्पन्न की, मज्जु उत्पन्न कालों की उत्पन्न। इस कोवितामूर्ति के कारण उत्पन्न उत्पन्नता की सिद्धान्त मज्जुमूर्ति इस उत्पन्नता की निर्धारित कालों में काल नहीं कालों है।

द्वितीय, कालिक सामाजिक सिद्धान्तों की सामाजिक काल की कारण में काल काल गया है (बेसिन, 1985)। इस कालों में मज्जु कहा गया है कि काल उत्पन्नता होती है जो काल होता है कि सामाजिकता का बीच होने पर काल में काल कालों है

बीर सहनशक्ति की संभावना बढ़ जाती है। सहनशक्ति की संभावना में सुविधा के ह्रास की सम्भावना पड़ती है। पुनर्जीवन विज्ञान ऐसी समस्याओं का हल ढूँढ़ता है जिसमें ह्रास घटाने का काम है।

दुःख, वैवाहिक असुखादियों (Marital difficulties) की समस्याओं को सुलझाने पुनर्जीवन उपचारों का बहुत प्रभावशाली होता है (हीनरमन, दुबोरे तथा रीकमन, 1983)। ऐसे विवाहिक जोड़े को एक पुनर्माजीकरण में जमा होते हैं वे समाजीकृत जोड़ों की संवेष्टा करने कार्यक्रमों में समावेशक रूप देखने की प्रवृत्ति कायित्व रखते हैं। वे एक दुसरे की संवेष्टाकृत सभी सम्भाव्य कार्यों में अहम उनके अनुमान धर्मों परिवर्तन की माता नहीं होती। इस विषय में सीधे परिवर्तनों से प्रेरित विचार है कि यदि कोई एक दूसरे के व्यवहार के कारणों के समजीकरण की परिचित कर दें।

असह में पुनर्जीवन का उपयोग व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान में किया जा रहा है। अर्थात् इसका उपयोग व्यक्तिगत व्यवहार के रूप में किया जा रहा है। छात्रों के द्वारा अध्ययन की समस्याओं के समाधान में इसका व्यापक उपयोग हुआ है। (विन्सन तथा विन्सले, 1982)। ऐसे छात्रों द्वारा समस्या का पुनर्जीवन अपनी सीखता के समाधान के रूप में करने की प्रवृत्ति होती है जबकि कई बार इसका कारण बहुत एवं समस्या होती है।

एक प्रकार बहुत पुनर्जीवन अनेक समाजीकरण की विधियों के पीछे होता है। ऐसे सीधे अपनी समस्या का कारण ही स्वयं की नहीं समझे किन्तु निरालता का कारण अपने आपकी मानते हैं। जिन व्यक्तियों के कारणों (Self-cause) बहुत गहन होता है वे अपनी असफलता का कारण अपनी सीखता की मानते हैं। यदि ऐसे लोगों की समझे निरालता के कारणों का पुनर्जीवन परिचित कर दिया जाय तो उनकी समस्याओं का समाधान हो जाता है। उनकी समझे अनुभवक साथ समय द्वारा समय पुनर्मात्र के समझे में पुनर्जीवन विज्ञान उपयोगी हो सकते हैं। (Berkman & Gissler, 1983)

### स्व-प्रत्यक्षीकरण (Self Perception)

स्व-ज्ञान मनोविज्ञान का सम्बन्धित भाग है, किन्तु इसका बहुत बड़ा भी रहता है। सामाजिक सम्बन्ध कहते हैं कि "जाने की जान" (Know thyself)। सांख्यिक वैज्ञानिकों और विचारकों ने सीधे ही मुक्तों की रचना साधन-ज्ञान के उपयोग के विषय में की है।

एक सर्वोच्च व्यक्ति के साथ रहता है और सभी व्यक्ति की कुछ व कुछ अपनी







एशिया महाद्वीप की सीमाओं का निर्धारण करने के सम्बन्ध में एक विचार प्राप्त हो सका जाता था वहीं उसकी दृष्टि पच्छिम ( Western Side ) ओर थी। एक व्यक्ति यहाँ के दृष्टि पच्छिम की ओर बल देता था : वह व्यक्ति कोई आम एशिया नहीं था बल्कि एशियाई नहीं के अनन्त था। वह सीमा प्रसार की प्रवृत्ति-वादी एवं पूर्वाग्रही विचारों दृष्टि पच्छिम की ओर बल देने वाला था ( जैसे भारत की राम, कान्हा तथा बालम कल्याण ) ।

चीन समुद्री के प्रयोग प्रयोग का अनुभव करते हैं क्योंकि उन्हें एनीमोन नामक जीवित की नहीं की किन्तु इनके केवल एक समुद्र की प्रतीक पत्ता की प्रभाव के विषय में बताया गया था। सभी चारों समुद्र एक परिवर्तनकारी के साथ समान स्थिति हैं जो इनमें शामिलतावाद प्रभाव करता है (Schachtel) की दीर्घता शास्त्रज्ञों का प्रभावप्रभाव अनुभव न होना। उनके अनुसार प्रत्येक समुद्र प्रारंभिक प्रयोग प्रारंभिक प्रयोग की पता पता प्रत्येक फिर एक समुद्र के समुद्र पर निर्भर करता है। किन प्रयोगों की एनीमोन की प्रभावों के साथ ही नहीं की इनके प्रयोग की प्रभाव प्रभाव की—प्रयोग का प्रभाव प्रयोग के कारण था। इन प्रयोग किन्हीं पता ही की नहीं किन्तु इनके प्रभावों की प्रभाव प्रभाव की नहीं, उनके प्रयोग का कारण प्रयोग नहीं की। उनके प्रयोग का कारण प्रभाव प्रभाव प्रभाव प्रभाव (Schachtel) की। इनके का प्रभाव यह है कि इन के प्रयोग का प्रभाव प्रभाव के प्रभाव न कर उनके को समुद्र प्रयोगों की प्रभाव प्रभाव। प्रयोगों पता के प्रयोगों किन्हीं प्रयोग न था, वे प्रभावप्रभाव की प्रभाव प्रभाव।

वास्तव में वास्तवीय संविधान का हस्ताक्षरकृत अथवा मुद्रित नहीं है जिसका Schaeffgen जीव विज्ञान ने समझा था ।

## सामाजिक प्रभाव: सामाजिक मानक तथा समरूपता

( Social Influence Social Norms & Conformity )

असहज में परस्पर एकलपता के बाव भी व्यक्ति के व्यवहार और विचारों में परिवर्तन की जाती है। यह प्रक्रियाएँ उनके प्रभाव के व्यवहार एवं विचारों पर-  
कल्पित होती हैं, सामाजिक पर्यवेक्षण में केन्द्रीय हेलिक्स रखती हैं, और हमें की  
सामाजिक प्रभाव-प्रक्रियाएँ कहते हैं। सामाजिक पर्यवेक्षण की अधिकतम समझना  
हम प्रभाव-प्रक्रियाओं पर निर्भर करती है। प्रभाव-प्रक्रिया की सभी प्रकार समझने  
में समाज-व्यवस्था का भाग आवश्यक है। सामाजिक प्रभाव वह समय परित  
होता है जब एक व्यक्ति की क्रियाएँ बाह्य व्यक्ति की क्रियाओं की गई होती है।  
( Social influences may be said to have occurred when someone's  
behaviour has been influenced by the action of another. )

इसके पूर्व कुछ अन्य अवस्थाओं में भी सामाजिक व्यवहार पर विचार किया जा  
सुका है, किन्तु यह सभी व्यक्ति के दृष्टिकोण से की थी—यही वह (व्यक्ति) दूसरों  
का साथ नहीं चाहता है, उसकी अपर: क्रिया के अहित अधिकतम भाग। सामाजिक  
प्रभाव के अर्थगत रूप सामाजिक पर्यवेक्षण तथा व्यक्ति के व्यवहार पर इसके  
प्रभावों पर स्पष्ट है। इसके अर्थगत व्यवहार की वास्तव और निर्दिष्ट करने वाली  
सामाजिक अभिप्राय यही प्रक्रियाओं की निर्भरता का उदाहरण दिया जाएगा।

### निष्पादन का सामाजिक सुकरीकरण

( Social Facilitation of Performance )

दूसरों की उपस्थिति में हम जोर कोई कार्य करती हैं और हम उनका निरीक्षण  
करते हैं, तो क्या होता है? कार्य करते समय दूसरों की साथ उपस्थिति प्रभाव  
का एक प्रमुख कारण है। अन्य मौखिक और पर्यवेक्षण के कारण की ही जाती है,  
या प्रतिक्रिया के भी। अन्य पर्यवेक्षण/प्रतिक्रिया कार्य में सहायक हो सकता है किन्तु  
एक सीमा के बाद प्रतिक्रिया का कार्य निष्पादन पर बाधक प्रभाव पड़ता है। राबर्ट  
कीन वासीर ( 1963 ) ने लोगों की प्रतीक्षा के उपरान्त बताया है कि प्रतिक्रिया  
संगठन तथा सामाजिक पर्यवेक्षण का एक कारण हो सकता है। कार्य निष्पाद  
प्रतिक्रिया एवं प्रतिक्रिया-पूर्व होता है, दूसरों की उपस्थिति कार्य के समय उत्तरी ही  
कार्य में कम सहायक होती है। दूसरी ओर कार्य के उत्तर एवं कम प्रतिक्रिया-पूर्व  
होने पर दूसरों की उपस्थिति कार्य में उत्तरी ही अधिक सहायक हो सकती है।

परिचित एवं अपरिचित कार्बन (Familiar & Unfamiliar Task) —  
अनुसंधान कार्योक्त में जिस अनुसंधान समूह की स्वीकृति थी वह निम्नानुसार के चुनने-  
करण के समक्ष था। इसमें दो एक समानता में केवल कार्बन क्लोराइड की मात्रा  
की वृद्धि का समान २० भाग वाले छेदे बोरी ( जो कपासद्वारा बलि जलित वायु  
की दर में वृद्धि से ) के दल का परिशीलन ( analysis ) करना का औसत  
दर २५ प्रतिशत पर एक माह के अन्त में समान करने पर केवल दो कार्बन की।  
अनुसंधान की वायु दर होने पर सुविधा रखती थी और ऐसा होने का उचित  
( नियोजन ) देना था। विनिश्चित समूह के अनुसंधान पर उपरान्त वाले कार्बन की वृद्धि  
काही से, विभिन्न कार्बनिक समूह की बहुत कम कि समय-समय पर एक केवलित  
कार्बन का वायु दर कार्बन के अन्त में समान करने निम्नानुसार की नियोजन करने।  
ऐसा कि समान करने काही करने पर करने से। परिणामी के अन्त द्वारा कि एक  
अनुसंधान के कार्बन में अधिक सुविधा देनी थी किन्तु कार्बन की नियोजन उनके अन्त  
का कर रहे थे। अनुसंधान के अन्त वाले अन्त में विनिश्चित समूह के ६४ प्रतिशत की  
का कि अनुसंधान समूह २० प्रतिशत की ( केवल तथा केवल, १९६३ )। इससे  
स्पष्ट है कि कार्बन के समान सुविधा की उपरिनिश्चित कार्बन की उपरिनिश्चित कार्बन है।

आर्थिक प्राप्ति को प्रतिबन्धित करने सम्भव नहीं है इसलिए कहा कि अन्य मामलों की उपस्थिति विचारण में विराजित नहीं है। दूसरे एक दौर (1963) के एक दौर के प्रयोगों की तुलना में बताया गया, और कोले को पता चला। उन्हें कोलेक दस केलेक पर लगे केलेक एक विद्युत आपात विद्युत चलाया। प्रयोग के समय नहीं केले पर एक एक चरण या चले चले के समय दस केलेक के लिए एक चलाया, और बाद-बाद कुछ समय बाद-बाद पर चले के समय की सम्भवता प्रमाण ही नहीं की। सम्भव प्रयोग की वह सीमा में समय 1.5 विद्युत का समय समझा। यह प्रयोगों की प्रतीति तुलना में की गई, जो बात कहा कि बाद-बाद तुलना में केलेक दो कोले ही वह सीमा को कि चले चले और चले ही चले विद्युत आपात में चले के कोले सम्भव है, और उन दो के समय 4.2 विद्युत तथा 4.5 विद्युत का समय दस चले के सीमा में चले।

राष्ट्रपति ने श्री ए.के. अग्रवालों का अभिलेख किया तथा : अब कागदीनों की अन्य कागदीनों की वर्गीकरणों में सुलभता में सीढ़ियां तथा ही अन्य अभिलेख किया गया : यह अभिलेख अभिलेख में था :

विन्ध्य सीले रीक्षण में अन्य छात्रों की उपस्थिति में केंद्री राज की प्रेरणा विचारक प्रकट था। विन्ध्य सीले रीक्षण में अन्य छात्रों की उपस्थिति ने उन्हें की प्रेरणा विन्ध्य ( ज्योतिष, प्राग्वहिकत्व तथा दर्शन, 1949 ) ।



[illegible]

सांसाध्यिक स्थानकों द्वारा प्रत्यक्षीकरण एवं संज्ञान पर प्रभाव

( Influence on Perception and Cognition through Social Norms )

अज्ञात दृष्टां के व्यवहार में ऐसे समूहों की पहचान है जिसमें वह अपने वर्तमान की संरचित, संरचित एवं सामान्य व्यवस्था है। सभी समूहों में बहु-व्यक्ति, विचार, तथा दूसरों की सीखता है जिसका उपयोग वह अपनी व्यक्ति की शिक्षाओं और व्यवहार में करता है यद्यपि वह अज्ञानता जीवन के आर्थिक रूपों में अधिक सक्रिय होती है किन्तु किसी न किसी माता के समुदाय जीवन व्यवहार में पाए जाते हैं। एक दृष्टां के समूहों के प्रति दूसरी व्यक्तियों में व्यवहार के समुदाय व्यवस्था (Group patterning of behaviour) का कारण होती है - किन्तु सामाजिक मानक (Social Norms) कहते हैं। सामाजिक मानक, व्यवस्था तथा व्यवहार-रूपों में एक ही होते हैं और संरचित व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था, व्यवस्था-व्यवस्था की संरचना का संग्रह होती है।

[illegible]



मानक किसी समुह के सदस्यों की वे विशेषताएँ हैं जो विभिन्न दशाओं में व्यक्ति के व्यवहार के प्रभावित करने की अधिकतम करते हैं। सामान्यतया मानक स्पष्ट विवरित होते हैं। यह समझ में अनुवाहक और स्पष्टता होते हैं।

### सांख्यिक का अर्थ तथा स्वरूप

( *Measurement and Methods of Social Research* )

सीरिय तथा शीरर ( *Sheriff & Sherif, 1969* ) के मत हैं कि, सांख्यिक मानक सांख्यिक व्यवस्था में विहित समुदाय तथा व्यवहार के आधार के आधारों की और संकेत करते हैं, जो किसी समुदाय स्वीकृत स्थिति में सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। ( "*Social research refers to any collection of systematic and systematic data which is designed to describe, interpret, predict, or control the behaviour of individuals, organisations or human communities.*" ) *Dr. Sheriff & G. W. Sherif, 1969.*

सीरर तथा रीडमैन ( *1974* ) के अनुसार, "मानक यह मानकर कि व्यवहारक दशाया है जिसमें समुह के सभी प्रमुख सदस्यों होते हैं और जिसमें समुदाय समुह के सदस्यों के व्यवहारक की रीति का निर्धारण किया जाता है, तथा मानक्यों एवं व्यवहार की सुनिश्चित किया जाता है।" ( *A social norm is a standard or behavioural expectation shared by group members against which the validity of perception is judged and the appropriateness of feelings and behaviour is evaluated.* ) *P. F. Secord & G. W. Bachman, 1974.*

सादर ( *1976* ) के अनुसार मानक, "समुह के सदस्यों के व्यवहार के लिए मानक है, जिसमें मानक पर विभिन्न दशाओं में सदस्यों के व्यवहारों की अनुकूलता की जाँच होती है।" किसी समुह के नियंत्रण को नियंत्रित करने का कार्य मानकों द्वारा ही होता है।

मानकों से समुदाय कार्य करता समझ में समुदाय समझा जाता है जबकि नियंत्रित होते वाले पर समझ समझ समझ है, समझ अनुकूलता, नियंत्रण तथा सभी-सभी अनुकूलता समझ जाता है। मानक के अनुसार कार्य करने वाले समझ की स्वीकृति, अनुकूलता, और समझ प्राप्त करते हैं।

मानक व्यवहार का सामाजिक नियंत्रण करने सभी क्षेत्रों में करते हैं जिसमें व्यक्ति किसी कार्य समुह पर निर्धार करता है। समुह संकलन-सम्य मानकमानों के समझा व्यक्ति की सामाजिक सामाजिक मानकमानों की प्रति करता है। अपने मानक-मान पर व्यक्ति होते हैं, जो: अपने व्यवहार में नियंत्रितता परिहार नियंत्रित नियमों, परिणामों, परिणामों व्यक्ति के प्राप्त होता है।

सांख्यिक मानक समूहों के व्यवहारों के वाली समर्थ-संज्ञा ( *indices of socialization* ) के समान होते हैं। वे समूहों की व्यवहार के अधिक/अनुचित का बोध कराते हैं। मानकों को समूह का दर्जा नहीं मिले बिना या समूहों के बिना ही मानक सामाजिक में उत्पन्न अनुकरण, समूह समूह और समूहों के द्वारा बना जाता है। समूह मानकों की मुख्य माप विचलन की अनुपस्थिति नहीं होती, किन्तु इसे-पूर्ण या अर्ध-पूर्ण रूप से विचलन को मान्य समझा जाता है। इसी विशेषता की श्रम में पहले हुए शोध ( 1970 ) ने सामाजिक मानक की परिभाषित करती हुए कहा है कि—मानक का सामाजिक मानक समूह द्वारा ही एक किन्तु या व्यवहार के एक-पक्ष का संकेत करते हैं। सभी समूहों के समान मानक की व्यवहार विचार की एक एक सीमा की दृष्टि करते हैं, नहीं एक समूह नहीं यह समझा है—..... सामाजिक मानक सुसंगत करने वाली एक मापनी है विचार समूह के सामाजिक व्यवहार, कार्य, विचारों अथवा किसी भी समूह के लिए-संकेतार्थ और सामाजिक मानक बीमारों विनिश्चित करती है।" ( *Social values of norms solidify especially just one point or one single way of behaviour. Like all consensus, norms encompasses a range of behaviour which is tolerable.....A norm is an evaluative scale designating an acceptable latitude and an objectionable latitude for behaviour, activity, beliefs or any object of concern to the group.* ) Sherif, 1936

सीशरों तथा सीशर ( 1974 ) के अनुसार, " सभी समूहों के समान अपनी व्यवस्था के सदस्यों में एक व्यवस्था या नियमितता प्रस्तुत करते हैं और अक्सर उनका व्यवहार ऐसा होता है कि समूह के समान व्यवस्था द्वारा मानकों की व्यवस्था के लिए मानक में एक दुबले पर दबाव आते हैं। समूह-व्यवहार में ऐसी नियमितताओं की व्याख्या सामाजिक मानकों के रूप में की जाती है।" ( *Members of all groups exhibit certain regularities in their patterns of interaction. Further, they often involve behaviour in which members exert pressure upon one another to conform to some recognized standard. Such regularities in group behaviour have been explained in terms of social norms.* ) P. F. Shaffer & C.W. Backman 1974,

### सामाजिक मानकों की विशेषताएँ

( *Characteristics of Social Norms* )

उपरोक्त परिभाषाओं ने मानकों की कुछ प्रमुख विशेषताओं की पहचान होती है, जो निम्नलिखित हैं :



1. सामाजिक मानक व्यवहारी के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं । इन प्रकार वे सामाजिक नियंत्रण का साधन हैं ।
2. समूह के सामाजिक व्यक्तित्व अभिव्यक्तियों में मानकों के बहुत प्रभावित होते हैं ।
3. मानकों का विकास सामाजिक व्यक्तित्वों द्वारा नियंत्रित व्यवहार और अनुभवों के आधार पर होता है ।
4. मानकों के अनुसंधान व्यवहार करने के लिए बहुत बहुत प्रयत्न होना है ।
5. किसी समाज/समूह के व्यक्तियों के व्यवहार में एकता, समानता, अनु-वादिता तथा सामाजिक सामाजिक मानकों के द्वारा, नियंत्रित होता है ।
6. समाज के अनेक व्यक्ति समूह मानकों को कुछ मानकों का व्यवहार के द्वारा मानक मानते हैं ।
7. मानकों के कारण किसी समाज के अंदर सभी व्यक्तित्वों में एकता, नियंत्रित, मानक-कार, सुखी तथा समानता की अभिव्यक्ति होती है ।
8. सामाजिक मानक एक सामान्य प्रत्यक्ष है जिसमें अनेक पर प्रतिबलित है—जगह, कक्षा, लोकप्रियता, परंपरा, कानून, कर्म, नियम आदि ।
9. सामाजिक मानकों का व्यवहार पर बहुतसारी प्रभाव पड़ता है । अनेक मानक ऐसे होते हैं कि समूह के कुछ व्यक्तियों की प्रति उन्हें पर निर्भर करती है ।
10. कुछ समूह मानक व्यवहार तथा व्यवहार (Coexisting and Coexisting) होते हैं ।
11. सामाजिक मानकों का अनुसंधान व्यवहारी में अनुसंधान तथा करीब मानक पर निर्भर करता है ।
12. सामाजिक मानकों का विकास तथा परिवर्तन दोनों अनेक तरीके के द्वारा होते-होते होता है ।
13. मानक, लिखित और मौखिक दोनों हो सकते हैं, किन्तु कानून के प्रति-बल सभी मानक बहुत मौखिक ही होते हैं ।

प्रयोग सामाजिक मानकों का विकास (Experiment, Development of Social Norms)—सामाजिक मानकों के विकास के लिए वे बोरिस (1934) के प्रयोगिक अनुसंधान पर प्रभावित माना अभिवादन है । प्रयोगों की एक करने में अनेक प्रयत्न किये गए । उनके प्रत्यक्ष फल पर एक प्रयोगिक कार्य (Telegraphic code) की प्रभावता थी । उन्हें बताया गया कि अपने को व्यवहारित किया जाता है वह एक प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष होता है । उन्हें प्रत्यक्ष के प्रतिबल













विशेषी रूप समूह यात्रियों एवं समूह प्रवासी के समझ होने के अभाव में अपने व्यवहार और व्यक्तिगत विचारों तथा अभिवृत्तियों तक को बचल देते हैं। यह व्यवहार सामाजिक समझता नहीं वादी है। समझता की अनुपस्थिति यह है कि हमें व्यक्ति समूह प्रवासी के मामले में समझता ही जाता है। अतः व्यक्ति तथा समूह का सम्बन्ध में स्पष्ट होता व्यवहार की एक आवश्यकता नहीं है। केन, लन्दन तथा कैपेली ( 1962 ) के अनुसार “व्यक्ति एवं समूह के मध्य में स्पष्ट के सम्बन्ध समूह-व्यक्त के द्वारा व्यक्ति के समूह के प्रति की निर्णायक एवं विवादात्मक बहुमता का जाती है उसे समूह समझता नहीं है” ( The yielding of the individual's judgement to actions to group pressure arising from a majority decision has been explained and that demonstrated by the group ) इसके अन्तर्गत होता है कि समूह-व्यक्त अन्तर्गत की ही होती है और व्यक्तिगत या व्यवहार की व्यक्ति द्वारा सामाजिक-समूह निर्देश या किसी व्यक्ति के द्वारा प्रभाव प्राप्त करती है, क्योंकि उसके चिन्तन किया या निर्देश करने में व्यक्ति की रक्षा होती है कि वह नहीं है।

ऐन ( 1952 ) के अनुसार “समझता का अर्थ है—दूसरों के सामाजिक और व्यवहार के समझ करने सामाजिक और व्यवहार की परिचित करने के है।” ( Conformity means, understanding other's perception and behaviour to achieve more similarity to the perception and behaviour of others. )

समझता उस समय प्रति होती है जब व्यक्ति सामाजिक मानकों के अनुसरण हेतु अपने व्यवहार की परिचित करते हैं। यह एक ऐसा वाक्य है जिसके द्वारा समूह अपने सदस्यों के व्यवहार, विचार तथा प्रतिक्रियाओं की प्रति प्रति में करते हैं। ऐसा विचार मास्लोमी ( 1958 ) ने प्रस्तुत करते हुए कहा है— “Conformity occurs when individual change their behaviour in order to adhere to existing social norms—widely accepted rules indicating how people should behave in certain situations or under specified circumstances”.

वर्चित परिभाषाओं की व्याख्या के अन्तर्गत यह स्पष्ट कह सकते हैं कि समझता व्यवहार की ऐसी अवधि है, जिसमें व्यक्ति अपने व्यवहार, व्यवहार एवं विचारों की अपने समूह के मानकों या मानकों के अनुसार परिवर्तित या परिचित कर देता है। अर्थात् व्यक्ति सामाजिक या सामाजिक में और के नहीं बोलते, बल्कि सामाजिक नहीं है, जो समझता का एक स्पष्ट उदाहरण है। ये स्पष्ट अवधि करते हैं, क्योंकि सामाजिक तथा सामाजिक विचारों के अनुसार सामाजिक में और-और



में बीजना अनुचित है। जीवन के अनेक क्षणों में समरूपता के लिए प्रभाव पड़ते हैं और प्रत्येक सांख्यिक अनुपात पर प्रभाव प्रभाव पड़ते हैं।

### समरूपता के सिद्धान्त (Theory of Constancy)

यह यह है कि जीव सभी क्षणों के अनुपात के अनुपात अनुपात करते हैं? किन परिस्थितियों में व्यक्ति समरूपता अनुपात करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर हमें समरूपता विचार के सिद्धान्तों के सिद्धांत है, जो "समरूपता सभी क्षणों में" व्यक्ति करते की प्रतीति है।

अनुपात सिद्धान्त (Proportionality Theory)—समरूपता के कारणों की व्याख्या में विहित करते हैं। व्यक्तिगत जीवन में व्यक्तिगत अनुपातों का अनुपात करते, समरूपता के कारणों पर प्रभाव डाल सकते हैं। बीजिक तथा कुल (1979) के अनुसार कुछ व्यक्तियों के व्यक्तिगत जीवन में समरूपता की पूर्ववृत्ति (Predisposition) प्रभाव पर होती है।

अनेक शोधकर्ताओं ने अनुपात में समरूपता प्रमाणित करने वाले व्यक्तियों के व्यक्तिगत जीवन की शुरुआत करने के प्रभाव किए हैं। इस विषय में समरूपता (1985) ने एक अनुपातपूर्ण अनुपात अनुपात पूर्व प्रभाव के अनुपातों की शुरुआत में समरूपता का अनुपात किया है। अनुपात के परिणामों के साथ प्रभाव कि अनुपात में समरूपता प्रमाणित करने वाले अनुपातपूर्ण अनुपात अनुपात होते हैं, अनुपात की समरूपता अनुपात है और अनुपात की समरूपता अनुपात करते हैं। वे अपने अनुपात और अनुपातों की समरूपता करते हैं और अनुपात के अनुपात-अनुपात में प्रभाव डालते हैं। व्यक्तिगत अनुपात अनुपात करने की विशेषताओं की प्रतीति करते हैं। अनुपात के अनुपात अनुपात करते हैं कि यह अनुपात अनुपात, अनुपात अनुपात, अनुपात अनुपात, अनुपात-अनुपात की अनुपात न करने वाले, अनुपातों की अनुपात न करने वाले, अनुपात अनुपात न करने वाले, अनुपातों तथा अनुपातों अनुपात करते हैं।

अनेक अनुपातों में समरूपता तथा समरूपता अनुपात करते हैं कि व्यक्तियों में कोई अनुपात न अनुपात नहीं अनुपात प्रभाव (अनुपात तथा अनुपात, 1979)। अनुपात अनुपात अनुपात अनुपात अनुपातों में व्यक्तिगत अनुपात करते हैं कि अनुपात के अनुपात में अनुपात करते हैं कि अनुपात अनुपात नहीं है। यह भी प्रभाव डालता है कि अनुपात अनुपात अनुपात होते हैं कि व्यक्तियों समरूपता अनुपात की प्रतीति में अनुपात नहीं होते।

### समूह अनुपात सिद्धान्त (Group Proportion Theory)

व्यक्ति अनुपात के अनुपात अनुपातों में अनुपात नहीं अनुपात अनुपात। ऐसी अनुपातों में

समुद्र के समान होने की वजह समझ होती है। ऐसे व्यक्तियों का कारण यह है कि समुद्र एवं समाज में समझदार करने की सुविधा और अनुसंधान विधिनिष्ठताओं और व्यवस्था के विचार होते हैं। समुद्र-व्यवस्था पर सामाजिक व्यवस्था के दृष्ट (1932) केरी (1933), विष्णु तथा गोयारी (1935), कैमेल (1941) आदि प्रमुख हैं। व्यवस्थाओं के बात हुआ है कि व्यक्ति समझदार एवं निष्ठाओं के विचार में समाज एवं उपर्युक्त व्यवस्था के बारे में भी जानकारी अधिक करता है यह (1) व्यक्तिगत अनुभवों तथा प्रवृत्तियों, और (2) सामाजिक व्यवस्था तथा व्यक्तियों के अनुभवों और प्रवृत्तियों पर आधारित होती है। समाज, जीवन का प्रभावशाली कारण है। इस प्रकार सामाजिक व्यवस्था व्यवस्था में प्रमुख है जो कि समुद्र का समाज पर निर्भर करता है। प्रवृत्त का यह कारण समुद्र की व्यवस्था और भी बहुमुखी हो जाता है।

सामाजिक व्यवस्था के कारण समुद्र एक नए प्रकार का समाज की व्यवस्था है जिसे विष्णु तथा गोयारी (Dealside & Goard, 1935) ने मानक-वस्तु समुद्र समाज (Maritime Social Pressure) कहा है। यह समाज व्यक्तियों की सामाजिक मानकों के अनुसार होने के लिए विचार करता है, क्योंकि मानकों का अनुकरण व करने वाले समुद्र-समुदायन एवं समुद्र समीक्षित की होती हो है राष्ट्रीय और सामाजिक दृष्ट, विचार, समाज एवं दृष्ट का व्यवस्था की करते हैं (3) यद्यः समुद्र व होने हुए की व्यक्ति समुद्र के मानकों के अनुसार व्यवहार करता है।

यह निश्चित है कि व्यक्ति पर समुद्र प्रभाव पड़ता है और यह व्यवहार में व्यवस्था का एक प्रमुख कारण है। यह समुद्र समाज की कमी में पड़ता है—(1) समुद्र व्यक्ति की कुछ प्रवृत्तियाँ देता है तथा व्यक्तियों से उनके समाज करने की व्यवस्था करता है। (2) समुद्र द्वारा व्यक्ति जिसे जाने का वह समझ समझदार के लिये समझों की उत्पत्ति करता है। इनमें समाज प्रकार के समाज से सामाजिक समझता तथा दूसरी प्रकार के समाज के किसी समीक्षित व्यक्तिगत होती है। कैमेल (1945) ने एक विचार में हुए व्यवस्थाओं की समीक्षा के साथ बताया है कि मानक सामाजिकता से सामाजिक अनुकरण अधिक होता है। समुद्र के दृष्ट के वह का विचार के प्रभावशाली व्यवस्था जाती है किन्तु यह साथ साथ का विचार के लिये होती है, सामाजिक या सामाजिक नहीं होती। समुद्री वह का विचार के कारण वह-आ करने का प्रभाव व्यक्ति करते हैं किन्तु क्योंकि यह समुद्री समाज होती है वे एक समीक्षित या समझदार का समर्थन साथ लेते हैं और समीक्षाओं को सामाजिक की करने करते हैं। सामाजिक या विचार के कारण समझदार का समीक्षित या समीक्षित व्यवस्था होती है, व्यवस्था व्यवस्था में समझदार की कोई समीक्षा नहीं जाता

भारत का राष्ट्रीय पक्षी है।

[illegible]

एक असाध्य बुर बीमारी है कि समुद्र तटों पर अनधिकृत स्नानार्थ स्नान करने का एक प्रयास करता है।

**समस्या १**      **निर्देशक**

### Disadvantages of Conformity

समस्त व्यवहार के कार्यों की प्रकृति के विरुद्ध व्यवस्था के विद्यार्थी की चर्चा की गई किन्तु यह 'व्यवस्था नहीं' की पूर्ण रूप में व्यक्त नहीं करते। व्यवस्था की कनिष्ठ कारण प्रदर्शित करते हैं, विनकी व्यवस्था व्यवस्था व्यवहार के कार्यों की समझने में सहायक हो सकती है। इन कारणों के विषय में कुछ व्यवस्था के बीच व्यवहार के कारण प्रभाव में होते हैं—स्थिति की विशेषताएँ (Individual characteristics), समुदाय की विशेषताएँ (Group characteristics), तथा कार्य की विशेषताएँ (Task characteristics)।

१. अव्यक्त की विशेषताएँ—सामाजिक अनुकूलता की भाषा समूह के सदस्यों के सम्बन्ध और उनकी विशेषताओं के भी अव्यक्त होती है। एक विषय में हुए कुछ सम्पन्न बहसों से नि समूह के एक सदस्य से अन्य सदस्यों के प्रति सामाजिक की भाषा समकालीन की भाषा की अव्यक्त जाती है, समीक्षक के मन में समूह के अन्य लोगों के लिए सामाजिक अधिक होने पर समकालीन अधिक होती है। ( डी. एच. १९५१; डी. एच. १९५९; सर्वोन्मुख, १९५३; डी. एच. तथा फील्डर, १९५३ )। सामाजिक संवेदन ( Social Sensation ) निम्न होने पर समकालीन अधिक होती है। ( डी. एच. तथा फील्डर, १९५३; डी. एच. तथा डी. एच., १९५४, )।

विषय { 1963 }, हाजराय { 1964 } तथा के { 1958 } शक्ति के यह प्रतीति कि हाजराय के शक्तियों में अत्यन्तित्व की शक्ति अत्यन्तता से अत्यन्त है, अर्थात् अत्यन्तित्व अत्यन्त होने पर अत्यन्तता कम होती है और अत्यन्तित्व कम होने पर अत्यन्तता अत्यन्त होती जाती है { इसके अतिरिक्त विषय अत्यन्त होती

( 1936 ) केवी तथा बालिरी ( 1954 ) यदि वे ऐसा कि जब व्यक्ति समुह द्वारा व्यवहार किया जाता है तो यह समस्त व्यवहार अधिक करता है ।

कुछ अन्य अध्ययन ने यह स्पष्ट करते हैं कि व्यक्ति की कार्य में कुशलता एवं प्रशिक्षण की अधिकता समस्त व्यवहार की प्रवृत्ति का प्रमुख हो सकती है (रीडरबर्ग (1961) ) । एक अध्ययन में रिडरबर्ग ( 1961 : 5 ) वर्षों तथा कोम रिडरबर्गों में समस्तता के तुलनात्मक अध्ययन के यह बात किया कि कोमिडिटी की प्रवृत्ति कार्य के बीच अधिक समस्त व्यवहार प्रदर्शित करती है । इन विविधताओं का कारण समस्तता की विविध प्रवृत्तियों का अनुसरण हो सकता है ।

2. समुह की विशेषताएँ—समुह की प्रमुख विशेषताएँ समस्तता की भाषा और प्रकार की प्रवृत्ति एवं विविधता होती है । समुह की इन विशेषताओं में समुह की संरचना, आकार, संरचना, निर्णय की प्रभावशालिता तथा प्रत्येक व्यक्ति की प्रवृत्ति । समस्तता की भाषा एवं प्रकार बहुत कुछ इन विशेषताओं पर निर्भर करता है । अतः इनकी चर्चा बहुत आवश्यक है ।

(1) समुह की संरचना ( Group Cohesiveness )—किसी समुह के सभी सदस्यों के अधिक प्रभावशाली होने के कारणों में समुह संरचना प्रमुख है । प्रवृत्ति में समुह के प्रति व्यक्तिगत अधिक होने पर समस्तता की अधिक होती है, और व्यक्तिगत प्रभावशालिता पर निर्भर करता है । अतः अधिक व्यक्तिगत समुह अधिक संरचना प्राप्त करता है । समुह में संरचना अधिक होने पर समुह, प्रवृत्ति पर प्रभावशालिता के लिए अधिक प्रभावशाली होता है । (गोडविन, 1962) संरचना सभी सदस्यों में प्रभावशाली होती है अतः समस्तता की भाषा की प्रभावशाली होती है । कोमिडिटी तथा कार्य (1936), लार्ड तथा लार्ड ( 1961 ) हेन, (1962), तथा बालर ( 1962 ) ने अपने प्रवृत्तियों में दर्शाया है कि समुह में संरचना की भाषा प्रवृत्ति अधिक होती समुह प्रवृत्ति के प्रति समस्तता की भाषा की सभी सदस्यों के अधिक होती ।

(2) समुह का आकार—समस्तता की प्रवृत्ति को प्रभावित करने वाले समुह प्रवृत्ति कारणों में समुह का आकार एक अन्य प्रमुख कारण है । समुह के आकार तथा समस्तता का सम्बन्ध काफी अधिक है । सामान्य तौर पर किन्तु यह स्पष्ट है कि समुह आकार का प्रभाव प्रवृत्ति पर प्रभावशाली होता है । समुह आकार का प्रभाव प्रवृत्ति पर प्रभावशाली होता है किन्तु एक विविधता प्रभावशाली हो सकता है अतः आकार प्रभावशाली होता है, प्रवृत्ति पर प्रभावशाली होता है किन्तु समुह प्रवृत्ति में प्रवृत्ति प्रभावशाली होता है । एक अन्य ( हेन, 1951 ) ने यह प्रवृत्ति प्रभावशाली होता है कि जब एक व्यक्ति का निर्णय एक व्यक्ति करता है तो प्रभाव प्रवृत्ति होता है, अतः प्रवृत्ति में

दीर्घीय व्यक्ति होते हैं जो अत्यन्त कमजोर बच्चा है किन्तु चार-पाँच व्यक्तिों द्वारा विरोध किए जाने पर समूह अत्यन्त अधिकतर होता है । अधिक अर्थों का उत्पन्न समकक्षता की अधिकता है । यह अत्यन्त आसानी से बच्चा चार-पाँच के भी अधिक होती है जो समकक्षता की भाषा में कोई व्यक्तिगत प्रति नहीं होती । केवल ( 1935 ) के अध्ययन में छात्रों में समान रूप से भाषाओं के विभिन्न होने के बाद समूह के रूप में अधिकतर रूप में रहकर अकारण के प्रति भी दूरी का निर्णय करता है तथा जो कार्य विशेष करने में किसी भाषाओं में अधिकप्रवृत्ता (Commandingness) की प्रवृत्ति अत्यन्त रूप में दिखाई नहीं । इस प्रकार समूह का बड़ा आकार समकक्षता की अत्यन्त अधिकता है किन्तु आकार पाँच के अधिक होने पर व्यक्ति की समकक्षता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता ।

एक बड़ा प्रयोग द्वारा रैक ( 1936 ) के अनुसन्धान तथा मानवीय भाषाओं द्वारा प्राप्त विभिन्न प्रणालियों की समष्टि का प्रभाव किया है ।

उन्होंने देखा कि समूह का आकार चाहे बड़ा हो या छोटा, पाँच, एक व्यक्ति का विपक्ष समान व्यवहार की प्रवृत्ति में प्रवृत्ता जाता है किन्तु यह प्रयोग समकक्षता प्रभाव के अन्तर्गत में अधिकतर करता है जो केवल एक व्यक्ति के विपक्ष का समकक्षता की भाषा पर बहुत ही कम प्रभाव पड़ता है । केवल मानवीय-समूह प्रभाव के प्रति प्रयोग द्वारा अधिकतर के समान विपक्षप्रवृत्ति के एक होने पर समकक्षता पर अधिक प्रभाव पड़ता है । देखा कि अधिक समकक्षता और विपक्षों की बराबरी नहीं होती है क्योंकि ऐसी रचना में विपक्ष का कोईनाशक और छोटी रचना का अधिकत्व होता है ।

(iii) समूह-निर्णयता—समकक्षता समूह की संरचना द्वारा भी प्रभावित होती है । यह समूह के कुछ व्यक्ति किसी बात को लेकर विरोध करते हैं जो व्यक्ति विरोधियों के अपनी तुलना करता है—व्यक्ति स्वयं विरोधियों के किसी विशेष हान के कारण बर्ण है, समरूपता है या विपक्ष है । यदि विरोधियों में समता/समकक्षता अधिक है तो उनके निर्णय होने प्रभावित करते हैं और इन समकक्षता व्यवहार करते हैं । समरूपता का समकक्षता व्यक्तिों द्वारा यह किसी समूह का निर्णय होता है जो व्यक्ति और समूह में मिलनाई उनमें एक की बड़ा होती है ।

समूह में अनिश्चित व्यक्ति की हो सकती है और निर्णय की अधिक हो सकते हैं और इसका भी समकक्षता पर निर्धारक प्रभाव पड़ सकता है । यह सम्भव जाती अधिक हो सकता है । समूह के सदस्यों में प्रतिस्पर्धी का किसी के होने से अधिक आसानीयता, अनिश्चितता का आसन्न तथा अधिक व्यक्तिगत प्रवृत्ति का अनुभव होता है । साथ ही साथ किसी एवं प्रतिस्पर्धी के निर्णयों के बीच समकक्षता होने और समरूपता अधिक समकक्षता की अनेका की जाती है ।

(iv) समृद्ध सहमति की यथोक्तता (Usability of General Consensus) :—समृद्ध सहमति सम्मेलन की स्थापित करने वाला एक अन्य प्रभावशाली कारण है। वेब ( 1951 ) ने अपने एक अध्ययन में सामाजिक सम्मेलन तथा सामाजिक दल के प्रति प्रतिरोध के महत्व पर प्रभाव प्रस्तुत किया है। इस के दो विधियों में तुलनात्मक अध्ययन किया, एक कार्पोरेट दल में समीक्षक पर सर्वसम्मति का प्रभाव या और दूसरी दल में समीक्षक की समृद्ध के केवल एक अन्य व्यक्ति का समीक्षक दल का, और वाली समझ उसके विरोधी थे। निष्कर्षों में प्रस्तुत होता है कि प्रभाव दल में अधिक समझता दल हुई जिसका स्पष्ट कारण समृद्ध की सर्वसम्मति की। दूसरी दल में समृद्ध के केवल एक व्यक्ति का समीक्षक दल होने के कारण सम्मेलन की प्रभाव कम हो गई इसमें स्पष्ट है कि योगदान देने के विरोधी विचार व्यक्त किये जाने पर बहुमत व्यक्तियों पर बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इसके द्वारा यह भी प्रस्तुत होता कि विरोधी दल के सम्मेलन के विचारों और विचारों में परिवर्तन नहीं आये, विरोधी विचारधारा और कम होती है। कुछ सम्मेलनों के अनुसार यह बहुत समृद्ध मानक व्यक्ति द्वारा किये गये निर्णय विचार की सीमा में होते हैं जो वह बहुत मानक के प्रभाव के निर्णय की सम्मेलन में वृद्धि प्रती है या सम्मेलन में वृद्धि प्रती है, किन्तु यह बहुत समृद्ध मानक व्यक्ति के निर्णय विचार की सीमा के बाहर होता है जो पहले समय निर्णय की सम्मेलन प्रती है।

(v) समृद्ध की कार्पोरेट शक्ति (Corporate Strength) :—समृद्धों द्वारा विभिन्न माता में कार्पोरेट शक्ति का अनुसंधान वास्तव में विवक्षित होने पर किया जाता है। यह समृद्ध की कार्पोरेट शक्ति अधिक होती है इसमें समझ सम्मेलन अधिक होता जाता है। वास्तव में प्रति प्रतिरोध व्यक्त करने पर समृद्ध व्यक्त या समझ सम्म, प्रभाव या सम्मेलन दल का उपयोग करते हैं जैसे समझ या सम्मेलन के जिसे सुधार दीये ही समझ सम्मेलन की स्थापित करते हैं।

समृद्ध द्वारा कार्पोरेट दल का उपयोग दल पर निर्भर करता है कि व्यक्ति के विरोध के समृद्ध की सम्मेलनों किसी स्थापित होती। यह विरोध का प्रभाव बहुत ही गहन या अनुकूल नहीं होता तो समृद्ध कार्पोरेट दल का अनुसंधान नहीं करता। किन्तु यह समझ के विरोध के समृद्ध की सम्मेलन स्थापित होती है या किसी कार्य का में समृद्ध का अधिक होता है तो समृद्ध विरोध करने वाले की कार्पोरेट का दम दियाकर उन्हें समझ सम्मेलन के जिसे विचार करता है।

3. संश्लेष की विशेषताएँ (Tasks Characteristics) :—विभिन्न संश्लेष के सम्मेलन में व्यक्तियों की सम्मेलन की माता निम्नित करने के उद्देश्य के भी समझ सम्मेलन होते हैं। यह ऐसा बात है कि सुनने एवं सुनिश्चित संश्लेषों की सुनना

में अधिक एवं साफ़ संकेतों में अधिक समरूपता के प्रभाव मिले हैं (जेम्स, हेल्मन तथा माउन्टन, 1958)। एक अन्य अध्ययन (जिसे भी नहीं पढ़ी) भारत में पड़ोस वर चुने हैं) के देश के विभिन्न जम्माई की पैदाईं उपलब्ध वर इमीयों के मिलन करने की बहुत ही बड़ बात हुआ कि पैदाईं की जम्माई में अन्तर कम होने पर इमीयों के मिलन में अधिक समरूपता का परिणाम मिला और पैदाईं की जम्माई में अन्तर अधिक होने पर समरूपता में कमी आई। अपने बड़ बर्तित मिला कि मुख्य की अन्तरा संकेतों के अधिक होने पर अधिक मात्रा में समरूपता बर्तित हुई।

अब यह है कि ऐसा क्यों होता है? भारत में संकेत के अधिक एवं अन्तर होने की वजह से उमीयन समूह के सांसाधनिक सूचना प्राप्त करते हैं, दूसरी संकेत के मुख्य होने पर सांसाधनिक संमान ही समरूपता उत्पन्न करने मिले काफी होता है। अतः संकेत का अन्तरन समूह वसाय तथा समरूपता की मात्रा—कीलों की उन्माहित मात्रा है (विदुष का बीजरी, 1955)।

इस प्रकार समरूपता की मात्रा तथा अन्तरन पर सांसाधनिक विविधताओं, समूह की विविधताओं तथा कभी की विविधताओं का प्रभाव पड़ता है।

### समरूपता के आधार (Basis of Similarity)

एक दूसरी के समान निर्धन क्यों करते हैं? अन्तरन अवधारण करी या नहीं और दूसरी मात्रा अन्तरन करी पर निर्धार करते हैं निर्धन कुछ प्रमुख कारणों की वजह की वही। एक बात अन्तरन मात्रा है कि अन्तरन अवधारण बहुत ही सामान्य है। सांसाधनिक सांसाधनिक सांसाधनिक के प्रति अन्तरन अवधारण करी हैं। अपने एक अन्तरन उत्पन्न है पैदा करी है? मिला कि अन्तरन अन्तरन है इस बात का उत्तर बहुत प्राप्त नहीं है। समरूपता के पीछे निर्धन प्रमुख कारणों में प्रमुख की की पुनिपाती सांसाधनिकताओं निर्धन होती है—प्रधान मिले जाने की दृष्टि तथा कुछ होने की दृष्टि (कनको, 1945)।

(1) प्रधान मिले जाने की दृष्टि (The desire to be liked)।—प्रधान सम्मान प्राप्त करी सांसाधनिक प्रभाव के हैं। अब यह है कि दूसरी में जाने प्रति अन्तरन की सम्मान करी अन्तरन करी। यह सांसाधनिक जीवन की एक प्राचीन प्रवृत्ति है। अन्तरन अन्तरन इस सम्मान में कारणर ही करते हैं। एक सांसाधनिक वस्तु प्रदाती के अनुसार इस दूसरी के सम्मान होने का प्रभाव करते हैं, क्योंकि सम्मानर अन्तरन उत्पन्न करने की बहुत ही सांसाधनिक उन्मायक मात्रा होती है। ऐनिक जीवन में माता-पिता, परिवार का तथा समूह में सम्मानर-वस्तु तथा मिल सांसाधनिक उत्पन्न करने पर प्रवृत्ति, अनुवीयन एवं प्रवृत्ता की उत्पन्न करी हैं। इस प्रकार

हम समाजीकरण के अन्तर्गत समझ लेना सीख लेते हैं क्योंकि हमने स्नेह, प्रेम और भावना का अनुभूति प्राप्त होता है। इस कारण से अल्पकालिकता मानवीय सामाजिक प्रभाव कहलाती है।

(ii) लड़ी होने की इच्छा : सुकलात्मक सामाजिक प्रभाव (The desire to be right : Individualistic social behaviour)—जब मान किसी तरह की असमंजस को जानना चाहते हैं तो अज्ञान में या अनसमझता अवस्था में डूबते हैं। इसी प्रकार यदि किसी कदम की समझ-बूझ याचना चाहते हैं तो उसे मान सकते हैं किन्तु धार विभिन्न सामाजिक विचारों की सुझाव जैसे विभिन्न कर सकते हैं या वह जैसे सुझावपूर्ण विवेचन कर सकते हैं कि जीवन के कदम सबसे सामाजिक और सहायक है। इस काल/कालुजी के साथ ही परीक्षा के कोई तरह का व्यवसाय नहीं है। फिर भी हमें लड़ी होने की सीख अच्छी है। इस अवस्था का समाधान सामान्य है, हम ऐसे अवस्था के विचार में सुकलात्मक करने के लिये अन्य लोगों के मत, विचार का विचार प्राप्त करते हैं। हम अन्य व्यक्तियों के चर्चा और विचारों को जाने बिना-बाह्य के तौर पर अपनी करते हैं। समझना के इस महत्वपूर्ण सामान्य की सुकलात्मक सामाजिक प्रभाव कहते हैं जो वैयक्तिक जीवन का वैयक्तिक जग है। सामाजिक व्यक्तिगतों में हम अन्य लोगों के समान सोचते और बिना करते हैं, यथार्थ हमें हम अपने लड़ी होने के विचार के व्यवसाय होते हैं।

इस प्रकार समझ लिये जाने की इच्छा (मानवीय सामाजिक प्रभाव) और लड़ी होने की सीख इच्छा (सुकलात्मक सामाजिक प्रभाव) के कारण व्यवहार की सामाजिक रीति कर्तव्य व्यवसाय का प्रदर्शन करते हैं।

### अनुपालन (Conpliance)

हम दूसरों के व्यवहार एवं विचारों पर विचारणा प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। यद्यपि पूर्ण निर्वाण्य सम्भव नहीं है तो भी अनेक भिन्नियों का अपनी सामाजिक प्रभाव करने के लिये होता है। इसके द्वारा हम अपनी इच्छासुमार अन्य लोगों की व्यवहार, व्यवहार और व्यवसायों में परिवर्तन करते हैं (Covert, Discreet, and Me Overt, 1984)। इसी सबसे महत्वपूर्ण, अव्यक्त और प्रभावकारी विचार है—समझना, अनुपालन और आज्ञाकारी (Compliance, Obedience)।

व्यवसाय की सभी हम कर चुके हैं अनुपालन (Compliance) सामाजिक प्रभाव का बहुत प्रभाव और विचार है। सभी-सभी हम दूसरों के विचार या भावना पर अपने व्यवहार प्रभावित कर लेते हैं। इस प्रकार अन्य लोगों द्वारा बाह्य और विचार सामाजिक जीवन का व्यवसाय जग है। विवेक काली बाह्य वेचने







साधन पहुँचाने का प्रयास करना चाहिये या इसकी प्रति की कम्पली भावना रखते हैं की हन की उनके प्रति वैसी ही भावनाएँ रखते हैं ।

अन्तिम सांसाधनिकता अर्थात् प्रसार की सांसाधनिक व्यवस्थाओं में साधनता पूर्णतया विद्यमान है, क्योंकि इसका उपयोग अनुशासन प्रति की एक तकनीक के रूप में की हो सकता है । इसकी को सांसाधनिक करने की दृष्टि हमें यह होनी चाहिये छोड़- छोड़े कार्य करना चाहिये, छोड़े-छोड़े उपहार । यदि ऐसा चाहिये या उस व्यक्ति का क्या किया चाहिये । एक बार ऐसा कुछ करने पर कदाचित् साधनता की हो जाता है और उसके विवेक की दृष्टि में कठिनाई का अनुभव करता है (रिच, 1971), सिद्धांतगामी (1983) के अनुसार अमेरिका में इस्तेमाल व्यवसाय वाले लोगों की बहुत बुरी का उपहार देते हैं, जब बीच किया जाता कि एक व्यवसाय उपहार की उपयोग कर लेते हैं की फिर उनके अपने व्यवसाय के लिए व्यवसाय का का विवेक करते हैं । केवल कुछ ही लोग देते होते हैं, जो पूरा विचार किया बात विवेक करते हैं । यह तकनीक साधन में बहुत सफल रही, सिद्ध चीज ही बीच इस्तेमाल विवेक के उपयोग की बहुत वैश्व, एकाग्र बनते, ठीक उनके व्यवसाय उपहार के उपहार कर लें । एक प्रकार विवेक यह कहा जाता है कि हमें व्यवसाय उपहारों के व्यवसाय चाहिये, क्योंकि हमारे अनुशासन करने का यह बहुत सफल हो सकता है ।

(31) बहु-आयामी तकनीक (Multiple techniques) :—बीच साधनता तकनीक के अनुसार अनुशासन चाहिये है की उनके उपयोग की एक बार साधन एक हीमात्र रही रहते । वे साधन एक, दो यात्रों वाली तकनीक का उपयोग करती व्यवसाय की व्यवसाय करने के लिए करते हैं । एक प्रकार एक विवेक के कारण करते हैं, यदि विवेक विवेक के प्रति अनुशासन की दृष्टि करने बहुत सफल । ऐसी अनेक तकनीकों में व फुट एन व और तकनीक (The foot is the door technique), व और एन व फुट (The door is the foot) तथा सीमांत तकनीक (Lowballing technique) प्रमुख हैं ।

(A) व फुट-एन-व-और (The foot is the door):—इसमें कदाचित् के कारण में छोड़े-छोड़े विवेक विवेक करते हैं और साधन में बहुत बुरी के विवेक विवेक करते हैं । एक कहावत है कि “बहुमती नकली नकली पहुँचा ( हन ) नकली”, इसी प्रकार अमेरिका में एक कहावत है—“Gird your loins and bind your loins to a loins” जहाँ एक दृष्टि से, वे अपने एक बीच के बीच । एन व विवेक यह है कि अनुशासन का व्यवसाय करने वाले कारण में बहुत कारण विवेक करते हैं, जब यह बहुत ही जाता है । उन व्यक्ति बुरा या बहुत-बुरी विवेक करते हैं ।

इस तकनीक की सफलता का सुबोधात्मक कारण है कि जिसे प्रत्येक अध्ययन हुए है। इस परिदृश्यता की व्यापकता परीक्षा हेतु बीजवीन व बीजर (1966) ने भी व्यापक प्रयोगशालाओं की व्यवस्था की, जिसमें उन्हें उपलब्धीय प्रतिस्पर्धियों से उनके चर्चों में समर्थी करना था—बहुते एक छोटा विवेक, उस फिर एक बड़ा विवेक करना था। पहले प्रतिस्पर्धियों के सुरक्षित दृष्टान्त के पैटर्न का बीजोबीजना स्तर की सुन्दर करने के आवेदन पर हस्ताक्षर करने की बहुत सारा। फिर ही साराह बार एक साथ प्रयोगशाला के समर्थी किया (अधिक पर बाकर) और प्रत्येक प्रयोगशाला के करने बाद में बहुत सुरक्षा विफल एक सत्यापन की बीजो बीजना एक समर्थी का विवेक किया। विविधता बहुत के केवल सुबोधा विवेक किया गया (बीजो बनाने)। प्रतिस्पर्धियों के कुछ-कुछ-बीज सत्यापन प्रयोगशाला की प्रथम समर्थन दिया—जिन प्रयोगशालाओं के पहले दृष्टान्त सुबोधा के आवेदन पर हस्ताक्षर किये थे, वे द्वितीय विवेक (बड़े विवेक) का अधिक अनुशासन किया। कुछ बाद के अध्ययनों के प्रतिस्पर्ध करने सादसीय नहीं रहे (बी बीन बना गया 1983) तथापि इस तकनीक की अनुशासन जालि की प्रभावशीलता-कला अवधिय नहीं (बीजर, 1973)।

इस पर है कि यह प्रत्यक्ष क्यों प्रमाण होता है? सत्यापन-प्रयोगशालाओं की सत्यापन के अनुसार यह प्रमाणों के साधनप्रयोगशाला के कारण होता है। एक छोटे विवेक की प्रयोगशाला करने के बाद प्रयोगशाला सत्यापनप्रयोगशाला (Self-Perception Study) में विफलता का अनुभव करते हैं। वे अपने सामर्थी सुबोधा के विवेक पर बहुप्रकार करने जालि के रूप में देखने लगते हैं। अतः पुनः समर्थी पर पहले से बड़े विवेक की भी प्रयोगशाला कर लेते हैं (सत्यापन तथा अवधिय, 1971; बीजो, 1979)। इस व्याख्या की प्रमाण (1979) के अनुसार प्रमाण समर्थन प्राप्त है। इसके प्रतिष्ठ होने के लिए सब के सब भी प्रयोगशाला का प्रयोग प्रमाण है—प्रथम विवेक की सत्यापन सारा हुआ अवधि है कि प्रमाण करने अवधि के प्रतिस्पर्धियों पर विचार करने, द्वितीय सत्यापन प्रमाण का प्रभावशीलता है। यदि बीजो प्रमाण अनुशासन के प्रति करने की सामर्थी पता है तो सामाजिक सत्यापन की सब अवधि का कारण नहीं माना जा सकता। वास्तव में अनुशासन के प्रमाण की बाहु प्रयोगशाला के कारण कुछ-कुछ-बीज प्रमाण की सुरक्षा का प्रमाण सब देता। बी बीन प्रमाण विवेक की ही अवधिगत कर लेते हैं, उनके विषय में सत्यापनप्रयोगशाला सत्यापन प्रमाण देता है कि वे अपने का प्रमाण में भी विवेकनों की सत्यापन करे।

दूसरे सत्यापनप्रमाण के अनुसार प्रमाण: एक छोटे विवेक के प्रति बहुप्रकार होने से प्रयोगशाला प्रयोगशालाओं के विषय में अधिक विवेकप्रमाण प्रमाणित बना देते हैं। अतः वे प्रमाण में बड़े या बहुतबड़े विवेक के प्रति अनुशासन-प्रमाण प्रमाणित करते हैं (पिटर, 1981)। बाद के प्रयोगों से इस सत्यापनप्रमाण की सुरक्षा हुई है।

संज्ञक में इन दो संस्तीक(ओं) में संज्ञा भवन मानना न हो संज्ञक है, न ही प्राधान्यक है।

(10) दू. कीर-दूध-दू. पीस (Litter-doodh-dooch Pees)-इसमें दूधम मिले-दूध दूध तथा किसी एक लवु होता है जो दूधम तकलीफ की शीघ्र दिये-दूध मरीन होती है। इसमें आरम्भ में ही किसी बड़ी मात्रा का माह-दूधम पीस का अनुपात 2:1 का रसो का दूधम करते हैं-जिसके लवम व्यक्ति द्वारा कल-दूधम मिले जाने की संभावना अधिक होती है। दूधम मिले-दूध तकलीफ ही जाता है उस किसी लवमम मर (होता मिले-दूध) का माह-दूध किया जाता है। आरम्भ में लवम व्यक्ति के दूध दूधम मिले-दूध की ही दूधमम होता है जबकि लवम का माह-दूधम दरबार होने पर ही का माह-दूधम मर-दूध की का के का माह-दूध का माह-दूध ही का ही मर-दूध।

विद्यार्थियों तथा उनके सहयोगियों ( 1973 ) ने इस पर का अनुसंधान कार्य किया । ( Chaidhi et al ( 1973 ) suggested that on some occasions people who refuse an initial request may be more likely to agree to a subsequent request ) इनके अनुसार कुछ अवसरों पर जो लोग आरम्भिक निवेदन अवसोक्त करते हैं, उनके उत्तरागामी निवेदन के अनुमति देने की संभावना अधिक होती है । इस सीखकार्यों में बहुत पर कावेय के विद्यार्थियों की एक पर एक व्यापक निवेदन किया—क्या वे जो हाल तक प्रति तथाही की बड़े बाल जनराधियों के उत्तराद में लैवतनिक काइलेसन के जन में कावेय करने ? तैदा कि कावाइल है कीवे की लैवार नहीं हुआ की निवेदन की उत्तरा—क्या वे कावेय जनराधियों के एक अनुमति की जो बड़े के निवेद विविधजन युवावे के लैवेने ? तथाक अतिवात एक निवेदन के प्रति अनुमति हो पर । पहले विनयित विनयित अनुमति के माध 17% प्रति हो इस निवेदन पर लैवार हो ।

इस तकनीक का उपयोग सीसी के कार्बोनिंग जीवन की बहुत ही परिचितिनी में भी देखा जाता है। सी-सी का जल विद्युत विद्युत कार्बोनिंग कुछ देर कुछ या देरी नहीं करने कार्बोनिंग या विद्युत में दूरा देते हैं जिसे कार्बन केन्द्र, सी-सी के कार्बोनिंग या विद्युत की बात कर देते हैं और विद्युतों का उद्भव दूरा हो जाता है ( विद्युतविनी, 1985 )। विद्युत 5 सीसी सीसी की आवश्यकता होती है के 50 सीसी के परचित के जिसे आवश्यक करते हैं। जल भद् है कि देखा नहीं होता है। इस विद्युत में ही उपयोगकर्ता विद्युत नहीं है :—

इससे बहुत प्राथमिक कवियों (Heterogeneous poets) कहना है जहाँ नाट्य की दृष्टि के बाद साधारण नाट्य की एक छोटी कवियों प्राथमिक स्वीकार कर लेते हैं। जहाँ नाट्य के नियमों की व्याख्या का पीछे करना प्राथमिक कवियों के लिए कर स्वीकार कर लेते हैं।





केन्द्रांतर्गत कार्यकर्ताओं को कष्ट एवं पीड़ा देने ? उसने सर्वोच्चों को बताया कि वे अधिकतर नए राज्य के प्रशासकों से सम्बद्ध एक सर्वेक्षण में भाग ले रहे हैं। यद्यपि कोई एक राज्य सर्वेक्षण की शुरुआत अधिकतर कार्य में अत्यधिक सुविधा पर विद्युत प्रसार देता है ( अन्य सर्वेक्षण सम्बन्धित या )। अत्यधिक सुविधा के बाद अगली सुविधा पर विद्युत प्रसार की संख्या बढ़ती जाती है जिसके बिना अनुसूचित क्षेत्र विभागों की आवश्यकता की। विद्युत प्रसार 15 वीं से बढ़कर 450 वीं तक हो सकता था। हालांकि वे सर्वेक्षणकर्ता ( अधिकृतकर्ता ) को कोई विद्युत प्रसार नहीं देता था, किन्तु यह बात अलग होने वाली प्रयोग की नहीं जा सकती थी। केवल विभाग नम्बर 3 के द्वारा अनुसूचित प्रसार प्रसार या विद्युत प्रयोग सर्वोच्चों की यह विनम्र विनम्र के बिना किया जाता था कि राज्य बननी नहीं है।

प्रयोगकर्ता में अधिकृतकर्ता ( पूर्वोक्तों के अनुसार ) के अनेक सुविधा होती हैं। प्रयोग प्रसार हो जाने की एक आवश्यकता प्राप्त या आवश्यक ( Discreetness ) में प्राप्त नहीं है। क्या एक सर्वेक्षण को वे अधिकृत करते रहे हैं जब कि हर अगली सुविधा पर प्रसार की संख्या बढ़ती जा रही है ? या वे इस कार्य में नग्न कर दें ? प्रयोगकर्ता उसकी विद्युत प्रसार जारी रखने के बिना प्रसार करता है। इसलिए जब भी वे प्रसार में विनम्र करते हैं या द्वितीयक होते हैं, तो कहता है—  
“कृपया कार्य जारी रखें।”

अंत में ही अपने यह कहता आश्चर्य कर दिया कि उन्हें कोई और विनम्र नहीं है, बल्कि कार्य की प्रवृत्ति जारी रखता होता है।

जूलि सर्वोच्च संकेतानुसार प्रयोग में भाग ले रहे थे जिसके बिना उन्हें पहले ही इस का प्रसारण हो चुका था; अतः अंत में अधिकृत का अधिकृत-कर्म कर सकते हैं हालांकि वे 65% सर्वोच्चों के पूर्व आवश्यकता का प्रमाण किया। इसके विनम्र विनम्र अनुसूचित किन्हीं यह कार्य नहीं बिने बने थे, आवश्यकता प्रयोग रूप में प्रसार होने विद्युत प्रसार का प्रयोग किया।

एक अन्य प्रयोग के निष्कर्ष (1963a, 1974) के परिचित परिणामों में भी पहले से ही परिणाम प्राप्त मिले। अध्ययन का प्रारंभ के निम्नलिखित परिणाम के द्वारा एक निष्कर्षों अन्य के आवश्यक में कर दिया। प्रारंभ की गति की कि प्रसार परिणामों के आवश्यकता पर नगरी, किन्तु प्रसार न हुआ न इसी प्रकार एक अन्य परिणामों में अधिकृत सर्वेक्षण में प्रसार के प्रसार होने की विनम्र करते हुए प्रयोग के छोड़ें बने का निष्कर्ष किया तो भी अधिकृत के आवश्यक किया। कुछ समय बाद प्रयोग, परिणामों सर्वोच्च तथा आवश्यकता के भी देखे की परिणाम प्राप्त हुए ( Elberts and Mann, 1974, Shanon & Tully, 1977 ) :



विधेयतात्मक आज्ञापालन क्यों होता है ? ( *Why does despotism obediently occur* ) :—विश्वशास के समयकों की कड़ी आलोचना की गई । यह मान्यता अतिरिक्त कहा जाता है, क्योंकि प्रतीकों के इस इन्द्रजालिक विवेक में यह जाने की पूर्ववद्वेषित नहीं हो गई थी । इसके अन्तर्गत सूटकर निवार करने की बात यह है कि हम प्रयोगों में समाजवादी तथा लोक सेवा जीवन की सामाजिक परिस्थितियों में विभिन्न अधिकार रखने वालों के कथनवादी एवं इन्द्रजालिक आदेशों का शासन स्वेच्छापूर्वक क्यों करते हैं ? ऐसा इतिहास होता है कि आदेश करने वाले अधिकार एवं अधिक रखते हैं अतः आज्ञापालन के अनिवार्य कोई विचार नहीं होता । किन्तु विश्वशास का एक वैदिक अन्तःकरणों में प्रयोगकर्ताओं में कोई ऐसा व्यक्ति निहित नहीं की जिसके द्वारा वे प्रशासन का काम ले सके । वैदिक जीवन में भी जीवन ऐसे आदेशों की बलता सामाजिक अधिकारों का सामुदायिक अधिकारों के आधार पर कर सकते हैं । किन्तु आज ऐसी नहीं होता और अधिकारों को एक प्रशासन की आज्ञापालन स्वेच्छापूर्वक क्यों करते हैं ?

इसके पीछे कई कारण होते हैं, जिनमें प्रमुख निम्न हैं :—

प्रथम, अनेक परिस्थितियों में अधिकार रखने वाले आज्ञापालन करने वालों की उत्तरदायित्व से मुक्त कर देते हैं या न्यायान्तरित कर देते हैं ।

द्वितीय की सामाजिक परिस्थितियों में उत्तरदायित्व का स्वाभाविक अन्तर्गत होता है, किन्तु प्रयोगकर्ता लोगों में यह काफी कम होता है । विश्वशास के प्रयोगों में प्रयोगों की आलोचना में ही कहा देते हैं कि निम्न अन्तःकरणों के अन्तर्गत का उत्तरदायित्व प्रयोगकर्ता ( अधिकार रखने वाला ) पर है न कि उन पर । अतः वे आज्ञापालन करते हैं ।

तृतीय प्रयोगकर्ता के अनुसार अधिकार वाले व्यक्ति अतः किसी व्यक्ति सकते हैं जो उनकी शक्ति एवं अधिकारों का सुझाव है—किसी व्यक्ति एवं सेवा के अधिकारों अनेक प्रकार के विवेक, वैदिक, इन्द्रजालिक व्यक्ति विवेक प्रकार की पूर्णकारी, कोई व्यक्ति प्रयोग करते हैं जो उनके प्रतिष्ठित पर ( *disobey* ) तथा अधिकारों के अन्तर्गत होते हैं । उन्हें देखकर प्रयोग होते हुए भी जीवन अधिकार नहीं अन्तःकरण । शक्ति एवं अधिकार के दर निम्न का लोगों की आज्ञापालन शक्ति पर बहुत प्रभाव पड़ता है ( *कुलकर्णी, 1934* ) । एक बड़े शक्ति की शक्ति पर प्रभाव पड़ने वाली की शक्ति पर एक शक्ति अन्तर्गत रखने वाली शक्ति पर यह व्यक्ति को व्यक्ति और के निम्न कुछ ऐसे ऐसे हैं । एक परिस्थिति में व्यक्ति देने वाले को आज्ञा पुराने वाले की शक्ति पर प्रभाव नहीं की तथा दूसरी तथा में एक सामाजिक अधिकारों के शक्ति पर प्रभाव नहीं की ।

[illegible]

संक्षेप में हम यह समझते हैं कि असीमता में उपस्थित आकाशालय तथा वास्तु-  
मित्र जीवन हमारी में आकाशालय के अनेक विविध कारण कारोण होते हैं। वे  
कारण हमारे में विद्यमान एक अविच्छेदीय बल का रूप होते हैं—विद्यमान अति  
अविच्छेदीय अविच्छेदीय के लिए अविच्छेदीय अविच्छेदीय होते जाते हैं। असीमता, एक अविच्छेदीय-  
पूर्ण असीमता असीमता के अविच्छेदीय अविच्छेदीय अविच्छेदीय के लिए असीमता होते  
जाते हैं।

विषमतात्मक साम्राज्य : प्रतिरोध (Disobedience - *obediencia* : Resistencia) होने तक तक अधिकतर दलने वाली के आंदोलों के राज्य की हीन प्रकृति के समझना ही कुछ कारणों की नहीं की है । अब हम इसके सम्बन्ध समझना पर विचार कर सकते हैं इस प्रकार के समाज के प्रति प्रतिरोध कति कर सकते हैं ? अनेक तक- सीमें कारणों वाली नहीं है ।

बचन, आदेश बाह्य कारणों वाली व्यवस्थितों को स्थापित करते हैं कि अधिकार रखने वाला वर्गों के स्वयं द्वारा प्रचार की शक्ति के उपयोगकारी होंगे। ऐसा कहा देने की वजह से आजाततावन की प्रकृति में लीज कभी की अनेकता को जाती है, और अनेक आजातता के परिणामों के इन वर्गों की प्रकृति हुई है (देविलान, 1978; किल्लिंग हाव पीन, 1974)। जब अमीरों की वजह से है कि अधिकार देने व्यवस्थितों (Vijayar) की प्रकृति प्रकृति व्यवस्थित है की प्रकृति आजाततावन का स्वर जाती प्रकृति है।





अलग अलग तथा निर्धारित का अर्थ नहीं है बल्कि एक ही दिशा में ही चला है ।

समाज समीकरणियों के अनुसार समाजीकरण एक अन्तर्निष्ठात्मक प्रक्रिया है । सामाजिक जीवन होने के लिये व्यक्ति अपने स्वभाव व अनुष्ठान की सीखने, आसक्तियों परस्परकारी, समझी तथा सुझों की अभिव्यक्ति का प्रयोग करता है । इस प्रक्रिया के द्वारा समाज का व्यवहार होने-वारे परिष्कृत होता है । समाज के समर्थ तथा सामाजिक परिवर्तन के द्वारा सामाजिक सुख सभी द्वारा होने वाले हैं । किन्तु की सामाजिक जीवन के अन्त में ही सामाज्य ही जाती है की सामाजिक परिवर्तन का आधार होती है और समाजीकरण की प्रक्रिया जीवन जीवन प्रकृति बदली है । यह सब समाज समीकरणियों सामाजिक परिवर्तन के लिये लोगों की अनुष्ठानों की बात करते हैं की उनके अभिप्राय लिये करते हैं । यह मानना करते हैं कि लोगों ने अपने जीवन की दुःख निवारित कर लिया है कि वे अपने परिवार के सदस्यों की समाज करते हैं और उनके प्रति उपयुक्त अनुष्ठानों कर करते हैं । सामाजिक जीवन के अन्त में, इस समाज में एक दूसरे के सम्मान की प्रकृति के अन्त की सीखते हैं । सभी लक्ष्य व्यक्ति सभी एवं समाज के नियमों की भी सीखते हैं की समाजीकरण का आधार करते हैं । इस लक्ष्य व्यक्ति, तथा मातृकी भाषा के अन्त में सभी, शिक्षाओं, अभिव्यक्तिओं एवं आसक्तियों भाषा की सीखते हैं ।

यह प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक जीवन के अनुष्ठानों व्यवहारों की सीखता है, समाजीकरण कहलाती है । इस प्रकार समाजीकरण यह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक व्यवहार का अर्थ करता है । व्यक्ति में, इसके अनुष्ठानों सम्मानप्रकृति एवं आसक्तियों के अनुसार व्यवहार निश्चित हो जाते हैं । योग तथा योगी ( Jones & Glazer ) के अनुसार "समाजीकरण में व्यक्ति ऐसे सुझों, शिक्षाओं तथा अन्त के बीच एवं अन्त की निर्धारों की अभिव्यक्ति करता है की उनके अनुष्ठान में सामाज्य होती है" ( "Socialization refers to the adoption and internalization by individuals of values, beliefs, and ways of perceiving the world that are shared by a group." ) अर्थात् समाजीकरण व्यक्ति अनुष्ठान के अन्त आसक्त्य स्थापित कर होता है और अपने अनुष्ठान के नियमों, परस्परकारी और सीखी कर अनुष्ठान करने अन्त है । इस प्रकार व्यक्ति के समाज होता व्यवहार सभी पर अभिव्यक्ति करता है । उसे यह बात होता है कि क्या अभिव्यक्ति है, और क्या अनुष्ठान । सीखते तथा सीखते (1974) के अनुसार "समाजीकरण एक अन्तर्निष्ठात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा अनुष्ठान के अन्तों के अनुसार के अनुष्ठान व्यक्ति के व्यवहार का परिष्कार होता है ।" (Socialization is an internalized process whereby a person's behavior is

modified to conform to expectations held by the members of the group to which he belongs."

डोफी ( Dooley, 1977 )—यह कहता है कि, "समाजीकरण वह संघो-  
करण है जिसमें समूह के सामाजिक ढांचे पर, सामाजिक समूह एवं समूह द्वारा  
होता है कि व्यक्ति समूह के नियमों और मान्यों के प्रति अनुकूलता स्थापित करता  
है।" ( "Socialization is a combination of the human being's  
unfolding potential and pressures that social group apply to attain  
conformity to their rules and norms." )

उपरोक्त परिभाषाओं की विचारकर समाजीकरण को पुनः परिभाषित किया  
जा सकता है : समाजीकरण एक प्रकार, वह व्यवस्थितप्रण प्रक्रिया है, जिसके  
अंतर्गत व्यक्ति सामाजिक व्यवस्थाओं की अधिकतम कर सामाजिक मान्यों की करते  
वीर्य होता है : यह समाज के कुली, किसानों, व्यापारियों, पत्रकार, टीलेटिविजन,  
नियमों और मान्यों के प्रति की नीयता और उनके अनुसार व्यवहार करता है।  
अतः है, वह समूह के अन्य सदस्यों की प्रत्याशाओं के अनुसार व्यवहार करता,  
समाजीकरण के द्वारा ही होता है : इस प्रकार समाजीकरण, द्वारा होता कि  
वीर्य तथा वीर्य के समूह है, व्यक्ति कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के प्रति कुछ विशिष्ट  
व्यक्तियों का अधिकतम कर होता है : परिणाम स्वरूप उसकी व्यवहार करने की  
अति नम जाती है और वह उसका उपयोग नवीन परिस्थितियों में करता है।

सामाज्य कर के समाजीकरण का उपयोग व्यवसायिक में सामाजिक व्यवस्थाओं  
के अंतर्गत एक होता है, किन्तु व्यवसायिकों का सामाजिक अधिकतम प्रोत्साहन  
में पूर्व कर के अनुसार नहीं होता और ऐसे ही करने की व्यवस्था में भी करने है : इस  
प्रकार हम देखते हैं कि समूह के प्रति के साथ विभिन्न वीर्य व्यवस्थाओं में प्रा-  
वस्थाप्रकार व्यक्ति को सामाजिक सुख, मानक और अधिकतमों का अधिकतम करना  
पड़ता है, जिसके द्वारा उसका सामाजिक समाजीकरण होकर न होता : समाजीकरण  
की प्रक्रिया की आवश्यकता हर समूह समूह के लिए है, और वह वीर्य वीर्य  
प्राप्ति होती है।

बीकॉर्न तथा बीकॉर्न ( 1974 ) के अनुसार समाजीकरण को सामाजिक  
अधिकतम कर ही निर्धार नहीं करता बल्कि सामाजिक व्यवस्था कर की निर्धार  
करता है।

समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा समूह, व्यक्तियों के व्यवहार को नियंत्रित करता  
है : सामाजिक अधिकतम, सामाजिक नियंत्रण का एक व्यवस्था (Discipline)  
तथा एक व्यवस्था के विफल द्वारा करता है : सामाजिक व्यक्तियों की व्यवस्था की  
प्रति के व्यवस्था जाती है।

## सामाजीकरण के साधन

( Agents of Socialisation )

सामाजीकरण के कुछ स्रोत, साधन या माध्यम होते हैं, जिनके द्वारा अनेकजिन सामाजिक मान्यताएँ स्थापित होती हैं। यह स्रोत या साधन विभिन्न प्रकार के समूह होते हैं जिनमें बच्चों में यह आता है। इन समूहों में परिवार, मित्रमण्डल, शिक्षणस्थान, विद्यालय के छात्री, और आर्थिक समूह आदि सामाजिक समूह कहलाते हैं और समाजीकरण के समुच्च साधन माने जाते हैं। इन समूहों के कुलों, भावनों, एवं व्यवहारिकों की बहुत बड़ी, एवं सफ़ल रूप सामग्री के समाजीकरण पर पड़ती है, क्योंकि इनमें बच्चों की व्यवस्था बहुत सफ़ल, जिनकी एवं पड़ती होती है। दूसरे, कुछ द्वितीयक समूह जैसे समुदाय या संघ, या संसद आदि होते हैं जिनका प्रभाव भी समाजीकरण पर सफल पड़ता है किन्तु सामाजिक समूह के समान नहीं।

समाजीकरण पर सामाजिक समूह के प्रभाव—बच्चों का सामाजीकरण परिवार में ही होता है जहाँ परिवार, मित्र, मित्रमण्डल, विद्यालय समूह आदि सामाजिक समूह की सीटि में रहे जाते हैं और इसका सर्वाधिक प्रभाव सामग्री के समाजीकरण पर पड़ता है।

1. परिवार (Family)—समाजीकरण के बच्चों में परिवार सबसे अधिक प्रभावशाली साधन है। परिवार कभी समूह में ही वह घर जिसमें बच्चा पैदा होता है वह एक सक्रिय सामाजिक अस्तित्व के रूप में स्थापित हो जाता है। सामग्री के रूप, सीटि शिक्षा तथा बालकों का जीवन सबसे पहले परिवार में ही होता है। परिवार में माता-पिता तथा अन्य परिवार कभी के सामाजिक-साहित्यिक अनेक समाजीकरण के माध्यम होती हैं। बच्चों का व्यवहार, अस्तित्व व्यवहार, व्यवहारिक, सीटि व्यवहार, व्यवहार आदि परिवार के द्वारा सामाजिक सीटि जाते हैं। परिवार, बच्चों की सामाजिक एवं सामाजिक प्रतिक्रिया प्रभाव करते हैं। परिवार द्वारा अनेक सामाजिक व्यवहार व्यवहार व्यवहार होते हैं जो बच्चों के सामाजिक व्यवहार के रूप होते हैं व्यवहार होते हैं। परिवारकर्मों के साथ व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था के समाजीकरण के व्यवहारों की सीटि है। परिवार में जो व्यवहार बच्चों की होते हैं वे उनके सामाजिक जीवन के जीवन के प्रभाव होते हैं। सामाजिक प्रभाव अनेक बच्चों पर निर्भर करता है। व्यवहार के जीवन परिवार पर प्रभाव, व्यवहारों का सामाजिक व्यवहार, सामाजिक तथा व्यवहारों के प्रभाव आदि।

2. विद्यालय (School)—यह बच्चे बहुत में प्रभाव करते हैं जो उनके सामाजिक तथा सामाजिक व्यवहार में बहुत की प्रभाव भी बहुत होती है। बहुत में प्रभाव के बालकों का सामाजिक व्यवहार प्रभाव हो जाता है। यह-यह सीटि के

सामाजिक दायरों के अनुसंध के अनुसार बंट जाते हैं। मनुष्य में यह समूह के समूहों का व्यवहार तो निम्न हो ही जाय ही अन्त्यावर्तों के दायरों के भी समानो-परीची व्यवहार विकसित होते हैं। उसे व्यक्तिगत (Individual) माना होता है। समूह में वृद्धि के साथ-साथ किसी और समूहों के प्रभाव में भी वृद्धि आती है। माता-पिता एवं अधिप्राप्तों के व्यवस्था की प्रत्यक्ष नियन्त्रण प्रभाव होती है, समूह का प्रभाव जल्दा ही प्रभाव होता है। वेद प्रभाव संश्लेषण की वास्तविकता तथा इन कारणों पर भी बहुत दूर तक निर्भर करता है। मनुष्य में ही समूहों की प्रकृति समान के सदस्यों, आदर्शों, सुखों और सामंजस्य व्यवहार के संकेतों की आवश्यकता होती है। इस समूह हम देखते हैं कि परिवार के बाद समूह वर्गों के समाजीकरण का एक बहुत महत्वपूर्ण साधन है।

3. **यव समूह (Peer Group)**—समूह में वृद्धि के साथ-साथ वर्गों के सामाजिक दायरों की परिधि भी बढ़ती है। प्रत्येक दायरों की-बाद तथा परिवार के दायरों के अतिरिक्त सामान्य का बाद वृद्धि के साथ वर्गों के बाद भी होते आता है। यव-समूह का अधिप्राप्त है वर्गों समूह वाले साथ वर्गों का समूह। यव समूह का महत्व वर्गों के लिये प्रत्यक्ष अधिक होता है कि वे प्रकृति लिये आदर्श बन जाते हैं। यव समूह मुख्यतः तीन वर्गों का है। मुख्यतः यह संस्कृति के विकास के रूप में कार्य करते हैं। संस्कृति की यव समूह संश्लेषण करता है। केवल कुछ समूह ऐसा नहीं करते बल्कि साथ सामाजिकों के समूह। यव-समूह के ही द्वारा सामान्य-व्यक्तियों की जीवन की वास्तविकताओं का ज्ञान प्राप्त होता है। परिष्कारों के आदर्श, सुखों तथा संस्कारों की प्रकृति और सामाजिक रूप देने में यव समूह महत्वपूर्ण भूमिका भटा करते हैं। वर्गों की सामंजस्य व्यवस्था करने में यव समूह की भूमिका प्रत्यक्ष साधन होती है। यव समूह सामान्य-व्यक्तियों की प्रकृति अनुचित अनुसार देते हैं कि वे किसी सामाजिक परिवेश का अनुभव प्राप्त कर लगे जो उनके सामाजिक समाजीकरण की बहुत आवश्यकता है।

4. **बच्चे (Marginalized)**—बच्चे की समाजीकरण का एक साधन है। मनुष्य में प्रकृति तो अपने 5-6 वर्ष की समूह में करते हैं किन्तु जो ही के 2-3 साल के होते हैं अपने बच्चे के साथ वर्गों और बड़े-बड़ों के वर्गों में आते जाते हैं। बच्चे के लीनों के साथ समूहों द्वारा अपने बच्चे सामाजिक व्यवहार, नियमों, आदर्शों और प्रकृति-व्यक्त का अधिप्राप्त करते हैं। यदि बच्चे के लीन दुरे होते हैं तो अपने संश्लेषण प्रभाव भी आती है।

5. **सांघिक समूह (Religious Group)**—द्वारा प्रभाव में लगे का विशेष महत्व है और साथ सामान्य-व्यक्तियों के अतिरिक्त प्रत्येक समाज लगे की समूह



समय देता है। लक्ष्मि कुल-बाईं समान होती है, किन्तु समाज के जीवन-धर्मिक विधियों द्वारा वे अलग-अलग होती हैं। लक्ष्मि समूह की समान के अन्तर्गत की शिक्षा का निर्धारण करते हैं और इस प्रकार समाजीकरण को समान एवं अलग-अलग रूप में व्यक्तित्व करते हैं।

6. गालियारी काबडू (Kalyani Kabaddi)—हुमारी जविक जिलों के गिरी-वाडीयों होती है । यह गिरी-वाडीयों द्वारा हुमरी के खेले है । इस खेल का अर्थान बनने, वहीं खेल मुड़ी, खली पर होता है । हुमारी गिरीवाड की हुमारी गहल-बहल, खान-खान, बीर दुर्धनबीर की अन्तर्गत बनते हैं जिले अन्तर्गत अन्तर्गत का अन्तर्गत का अन्तर्गत है ।

**निर्माण कार्य के प्रकार**

(Reflections of Secondary Group)

[illegible]

समूह की समझता के आधार पर किसी व्यक्ति के व्यवहार का पूर्ण समझ ही निम्न वाक्यता है। समूह इसी विचारधारा की कड़ी बाँधी है। अतः समूह जिसका कोई व्यक्ति सदस्य है, उसे समझ कर के तथा समझ वाक्य में उल्लिखित नहीं करते। अतः वाक्य समूह-समझता के आधार पर व्यक्ति के व्यवहार का समझ समझ नहीं करता है। इसीलिए ( 1942 ) ने इस विचार में समझ-समूह की धारणा की है। जिसमें समझ के कोई व्यक्ति अपना व्यक्तिगत समझ है। ( *Relationship between the group and the individual in which the individual does not understand himself...* ) James H. Ogburn.

राज्य की समृद्धि व्यक्ति के व्यक्तित्व का साधक होना है। व्यक्ति वह समृद्ध है जिसके मानवमूल्य का उपयोग व्यक्ति के व्यवहारों की तुलना में किया जाता है। इसके समृद्ध व्यक्ति के लिए राज्य समृद्ध नहीं होता। केवल वह समृद्ध राज्य समृद्ध वह होता है जिसके राज्य व्यक्ति का साधकत्व होना है। ऐसे समृद्ध का

समाजीकरण में प्रमुख स्थान होता है। व्यक्ति व्यक्ति एक समुदाय की जीवित और अनुपस्थित का अभिमान होता है। अतः इसका प्रभाव व्यक्ति होता है। वह प्रभाव व्यक्ति को ही नहीं बल्कि और व्यक्तित्व को। समाहित समाजों के कारण व्यक्ति समुदाय विशेषी बनते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समाज समुदाय समाजीकरण की बहुत आवश्यकता करते हैं।

इसके अतिरिक्त कुछ मनोवैज्ञानिक भाषा की भी समाजीकरण का एक महत्व बताते हैं। भाषा के अनुपस्थ, आकाशवाणी, दूरदर्श, तथा सामाजिक अन्तर्निर्माण भाषा सभी भाषा पर निर्भर करते हैं। भाषा के बिना कोई सम्झने या विचारों का आदान-प्रदान सम्भव नहीं है। यदि भाषा न होती तो हम न ही अपने विचार दूसरों तक पहुँचाने न ही दूसरों के विचारों और व्यवहारों को जान पाते। इस प्रकार भाषा समाजीकरण का एक मुख्य साधन है।

### समाजीकरण के निर्धारक ( Determinants of Socialization )

समाजीकरण के प्रमुख निर्धारक इस प्रकार हैं—

1. प्रारम्भिक अनुभूतियाँ ( Early Social Experiences )—समुदाय और समुदायों में प्रमुख अन्तर यह है कि समुदाय एक सामाजिक चीज है। सामाजिक सिद्ध दृष्टियों के सम्बन्धों के समाजीकरण अन्तर्गत है अर्थात् समाज द्वारा प्रेरित या प्रोत्साहित व्यवहारों की सीखता है। यदि किसी व्यक्ति को सामाजिक सम्बन्धों के अभिमत कर दिया जाय तो वह व्यक्ति में सामाजिक गुणों का विकास होता है। प्रारम्भिक अनुभूतियों में भी सामाजिक अनुभव व्यक्ति को प्रेरित करते हैं। ये अनुभूतियों की प्रेरित ( 1940, 1947 ) में सामाजिक अनुभवों के प्रेरित करने के लिए महत्वपूर्ण कीमती में बना रहता है। व्यक्ति अपने के लिए अपने जीवन सामाजिक विद्या प्राप्त करता है। अपने के एक 6 वर्ष की आयु में ही जीवन और अपने जीवन में महत्वपूर्ण राई गई और 8 वर्ष तक उसकी प्रेरित हो जाती है। जबकि दूसरी दृष्टि काई 12 साल की आयु में छोटे बच्चों के विकास व्यवहार कहती थी। व्यक्ति यह कहते हैं कि विशेष शिक्षण की व्यवस्था की जाती है। अपने जीवन में सामाजिक प्रेरित प्रेरित की और वेनी के जीवन इसका अभिमान यह है कि सामाजिक शिक्षण के कारण सामाजिक विकास प्रेरित हो जाता है। सिद्ध-प्रती में एक व्यवस्थाओं में प्रेरित अपने अनुभव सामाजिक सम्बन्धों के प्रेरित होने के साथ सामाजिक सम्बन्ध के प्रभावों का प्रेरित करते हैं। अपने जीवन के केवल जीवन व्यवहार प्रेरित है अतः उसका समाजीकरण प्रेरित हो जाता है। यही नहीं अपने जीवन प्रकार की सामाजिक और व्यवहार सम्बन्धी विवरणों की प्रेरित होती है। इन सभी के द्वारा

होता होता है कि सामाजिक सामाजिक अनुसंधानों समाजीकरण में कुछ सुनिश्चित किया है :

अनेक सामाजिक विद्वानों ने अनुसंधान कर चुके हैं कि सामाजिक सामाजिक, अनुसंधान, समाजीकरण की प्रभावित करते हैं : (Marsden, 1974; Journal, 1975; Sears, 1970)। लोगों में काम के समय के उनके लोगों को साक्षात् में प्रभाव कर दी जाती है एक सामाजिक समानता (Social Inequality) में परिवर्तित किया : उन्हें हुए प्रभाव के अनुसंधानों में पूर्ण रूप के परिवर्तित कर दिया गया है। जीवन और एक एकसे एक प्रकार, एक: एकसाथ करता साक्षात् या कि वे जीवन का समाजीकरण न कर पाते। दी जाती के समय करने के बाद लोगों (1952) में जीवन करने के बाद यह पाया कि सामाजिक एवं सामाजिक और नर के अनुसंधान एवं समाजीकरण से। उनकी उनका सामाजिक समाज समान या। लोगों ने निष्कर्ष के रूप में बताया कि काम के बाद जीवन करने में सामाजिक समाज सभी सामाजिक प्रति प्रभाव करता है। साक्षात् (Marsden, 1952) के भी जीवन के सामाजिक लोगों के सामाजिक जीवन के प्रभावों के समाज के प्रभाव यह देखा कि जीवन के कुछ सामाजिक एवं सामाजिक विचारों में अनुसंधान एवं सामाजिक परिवर्तित करते हैं। उन्होंने सामाजिक विचारों में प्रभाव आई करने के अनुसंधानों को सामाजिक अनुसंधान बताया है। परिवर्तन में लोगों को निम्न साक्षात् प्रभाव, प्रभाव, एवं एवं समाज प्रकार की अनुसंधानों उनके समाजीकरण पर निम्न प्रभाव साक्षात् है। सामाजिक अनुसंधानों के समय के समाजीकरण परिवर्तित होता है।

3. भौतिक परिवर्तन (Physical Environment)—सामाजिक की प्रभाव के होते हैं—सामाजिक तथा भौतिक। भौतिक समाजकरण सामाजिक समाज की भी प्रभावित करता है। व्यक्ति निम्न भौतिक समाजकरण में रहता है, उनका समाज बहुत एक एक उनके समाजीकरण पर भी प्रभाव है। व्यक्ति के निवास-स्थान, तथा परिवर्तित प्रति उनके परिवर्तन-समय की प्रभावित हो नहीं पाते निम्नलिखित की करते हैं। दुनिया के अनेक क्षेत्र, प्रभावों के समाज का प्रभाव में परिवर्तित, एक दूसरे के निम्न प्रभाव का परिवर्तित कई समान। इन व्यक्ति समानों में रहने वाली की प्रभाव, प्रभाव, प्रभाव, प्रभाव, प्रभाव और प्रभावों एक दूसरे के समान निम्न होती। दुनिया के निवासियों तथा प्रभाव निवासियों के सामाजिक प्रभाव एक प्रति होने की प्रभाव नहीं की या प्रभाव। भौतिक परिवर्तित—जीवन या समाज तथा काम भौतिक प्रभाव सामाजिक प्रभावों की प्रभाव एक एक निम्न करते हैं। कई लोगों (अनुसंधानों) तथा उनके प्रभाव, और प्रभावों में प्रभाव भौतिक समाजकरण प्रभाव नहीं है, या: उनके समाजी-

मरण के लिए उद्योग्य व्यवहार की व्यवस्था नहीं होती। बहुजनपदी में रहने वाले अनेक लोग रात के देर के बगर सब का समनवर्तित हो जाया करते हैं और प्रातः काया स्वस्थ। विविध प्रकार की बाजारों द्वारा घर के निकल जाते हैं, क्योंकि बाजार की व्यवस्था के कारण अधिकतर लोग बजार के पचाहीं किन्तु बीच-बीच में रहते हैं। ऐसे अनेक लोग हैं जो केवल व्यवहार के लिए ही अपने घरों के आसपास का व्यवहार करते हैं। कदा-काल घरों का व्यवसायीकरण भी हो होता है किन्तु अनेक घरों का प्राचीन में रहने वाले घरों का होना है बिना के आस-पास के व्यवहार करने वाले घरों एवं परिवारों की काय व्यवस्था करती है। यह व्यवहार इस तरह करते हैं कि अधिकतर व्यवसाय की व्यवसायीकरण को व्यवस्थित करता है।

3. **जैविक-कारक (Biological Factor)**—पौधों के वनोद्धारक को कुछ जैविक कारक भी प्रभावित करते हैं। इनमें दो कारक मुख्य रूप से होते हैं—**मैवाण्ड** और **कार्बोमिक अम्ल**।

(ii) **उष्णकटिबंध (Tropical)**—समशीतोष्णकटिबंध पर अक्षांश के उष्णकटिबंध का भी समशीतोष्णकटिबंध पड़ता है। उष्णकटिबंध समशीतोष्णकटिबंध की अपेक्षा अधिक उष्ण पड़ता है और अधिक वर्षा के विकसित होने हैं। उष्णकटिबंध समशीतोष्णकटिबंध के भी बीच पड़ जाते हैं। अतः वे उष्ण समशीतोष्णकटिबंध के समशीतोष्णकटिबंध के समान पड़ जाते हैं। अतः उष्णकटिबंध उष्णकटिबंध के विकसित होने और समशीतोष्णकटिबंध के समशीतोष्णकटिबंध के समान पड़ जाते हैं। समशीतोष्णकटिबंध का विकास भी इस पद्धति के पड़ने से पड़ता है। उष्णकटिबंध समशीतोष्णकटिबंध के बीच, और समशीतोष्णकटिबंध के पड़ने से, इसलिए उष्णकटिबंध उष्णकटिबंध के समशीतोष्णकटिबंध के समान पड़ जाते हैं।

(३) **पारोपिक समाज** [ *Parochial Society* ]—यदि भी पारोपिक समाज का भी समाजीकरण पर कुछ न कुछ प्रभाव पड़ता है। कुछ वर्गों में जिन में ही कुछ पारोपिक विह्वलता होती है जैसे—बाने, बन्ने, बीनने का लोको होंगे हैं। साथ साथ के बात, बहरे, लोके का बीनने ही पारोपिक हैं। ऐसे वर्गों का समाजीकरण करना सुकर नहीं होता जिसका सामना वर्गों का होता है। इसके कारण पारोपिक भी होते हैं और अनीतिजनिक भी। बीच-बीच अपना पारोपिक समाज के पारोपिक समाज के कारण समाजीकरण के सभी अवसर न ही जात होते हैं और न ही सामाजिक ही हो पाते हैं। ऐसे वर्गों में जिन समाज की सामाजिक स्थिति हीन जगह विह्वल ही पाते हैं भी उनके समाजीकरण की सम्भावना करते हैं। अपने साथ विह्वल, सामाजिक और समाजवाद का अवसर होता है जिसका सुख के सभी सुखित समाजीकरण द्वारा सुखते हैं। दूसरी ओर सामाजिक पारोपिक हीनता को सामाजिक समाज समाज के समस्त साथ करने में लगने होने के कारण सामाजिक समाजों का सभी लोग करते हैं।

4. सांस्कृतिक कारक ( Cultural Factor )—ज्याँकि विश्व संस्कृति का अध्ययन होता है अतः विश्व सांस्कृतिक परामर्श में विचरित होता है, अतः सामाजिक प्रवृत्ति प्रभावित होता है। व्यक्ति को उसकी संस्कृति का ज्ञान बहुत महत्व है। टैल (Tennant, 1949) के अनुसार "अनुसार तथा विचार के यह संकेत जो एक पीढ़ी के दूसरी पीढ़ी को परिवर्तन द्वारा आत्मनिर्णय होते हैं, संस्कृति कहलाते हैं"। (By culture we mean the patterns of thought and behaviour transmitted from generation to generation by learning.)

टैल लिटन ( Ralph Linton, 1936 ) के अनुसार, संस्कृति को परिभाषित करते हुए कहा कि, एक निश्चित समाज के सदस्यों में व्यवस्थित आदर्शित विवेक जैसे सामान्य व्यवहार-संकेत, अभिवृत्तियों और धर्मों के अनुष्ठात मान्यताओं को उसकी संस्कृति कहते हैं। (Culture is some total of behaviour-patterns, attitudes and values, shared and transmitted by the members of a human society.)

लुगर् को लिन्डग्रेन ( H. O. Lindgren, 1971 ) के अनुसार, संस्कृति के सम्बन्धित धर्म, विचार, मान्यता, नीति, धर्म आदि प्रवृत्तियों वाली है जो किसी समाज द्वारा विकसित होती है तथा सदस्यों में सामान्य रूप से पाई जाती है।<sup>11</sup> ( "Culture consists of the systems of Values, beliefs, norms, attitudes and symbols that have been developed by a society and are shared by its members" )

लुगर् ( Linton, 1939 ) के कहा है कि प्रतीकों पर आधारित मान्यताओं और परम्पराओं के समूह प्रत्यक्ष के रूप में संस्कृति कहते हैं। ( Culture is a system of thoughts and values represented upon symbolizing, consolidated in social-relational context. )

इसके अनुसार संस्कृति का स्वयं सीधे इसके बीच नहीं द्वारा होता है। (i) प्रत्यक्ष के द्वारा, अभिवृत्तियों, धर्मों और विचारों के रूप में, (ii) प्रतीकों को सामाजिक व्यवस्था के रूप में, और (iii) सामाजिक विचार में प्रत्यक्ष प्रतीक प्रवृत्तियों के रूप में। संस्कृति के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष मान्यता सम्बन्धी द्वारा होता है, जो स्वयं प्रकट है कि सामाजिक संस्कृतियों अलग-अलग विचारित पायी है, अतः अनुसार को विचार का एक कारण सांस्कृतिक विचारों की है।

मार्गरेट मीड ( Margaret Mead, 1933 ) के अनुसार संस्कृति केवल यह निर्दिष्ट पायी है कि व्यक्ति किस प्रकार के जीवन करते हैं, यह यह भी कि इसके जीवन करने का रीति, अनुष्ठान, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष के सम्बन्धी तथा प्रवृत्तियों की रीति के द्वारा निर्दिष्ट होती है। अतः विभिन्न संस्कृतियों में प्रतीक-





मित्र कुर्बे 33% महिलाएँ पाठक बनें हैं, अल्पसंख्यकें बचत बड़ा संख्या 22% से बड़ी और फिर 18% पर स्थित हैं।

[illegible]

एहि भाग की अनुसार में भविष्य के दिने अन्ततम सुख होना है की इसकी पीछे का अनुसंधान सुख होना चाहिए ।

**पुनर्विमान सेवा अधिनियम**

( Reinforcement and Learning )

यह पुनर्जीवन तथा पुनरुत्थार का प्रयोग बहुत ही सामान्य हो गया है। बी० एच० गिल्लर ने इस पुनर्जीवन के प्रयोग की अपने अधिवार विज्ञान की कक्षा में प्रयोग की है। वे पुनरुत्थार प्राप्त की अधिक मात्रा चाहते थे। प्रयोगशाला प्रयोग में अधिवार कक्षा के निम्ने पुनरुत्थार, सुख विहित प्रयोग होता है, क्योंकि सामान्यतः बहुजीवन का प्रभाव सुख प्राप्त होता है। पुनरुत्थार वाली सभी प्राणियों प्रयोगशाला नहीं होती। पैर के अध्ययन प्रयोगशाला की का बहुजीवन सामान्यतः कब से प्रयोग प्रयोगों के निम्ने बहुत अधिक प्रयोगशाला (Reproduction) का निम्न सामान्यतः कब से सुख (Satisfaction) प्रयोगों के निम्ने होता है।

सी० एच० विजय ( 1963 ) के अधिकृत ग्रन्थ में पुनर्जीवन केन्द्र का वर्णन आया है । उनके द्वारा बहुत ही वैज्ञानिक अनुसंधान ( *Optimalization of Invertebrate and Vertebrate Respiration* ) का आधार पुनर्जीवन है । इस उपक्रम का सबसे बड़ा लाभपूर्ण दायीं कायरी है जिससे एलने बताया है कि पुनर्जीवन कीसे अधिकतम की जासकता है ।



"By attaching a reinforcing consequence we increase the rate at which a response occurs; by eliminating the consequence, we decrease the rate. These are the processes of operant conditioning and extinction." )

अर्थात् पुनर्सेवन के अभाव के कारण अशुद्धि के प्रति होने की दर में वृद्धि जाती है तथा पुनर्सेवन की दृष्टि से या अभाव कर देने पर अशुद्धि के प्रति होने की दर बढ़ जाती है। इन विद्यमान की अवस्था के अभाव के कारण अशुद्धि के प्रति अलग अलग पर प्रभावित अवस्थाओं के प्रति अलग अलग होने की दृष्टि जाती है। अर्थात् इसे अर्थात् द्वारा पुनर्सेवन किया गया था। जब अर्थात् अलग अलग की दृष्टि हो अलग अलग होने की दर कम हो गई। अर्थात् वैश्विक अशुद्धि के प्रति अलग अलग होने की दृष्टि अशुद्धि के प्रति हो गई।

प्रतिबन्ध अधिका अनुकरण द्वारा सामाजिक अधिगम

[ Social Learning Through Model or Imitation ]

यद्यपि वैश्वीकरण अनुसन्धान के विज्ञान परम्परेण्डात्मक परीक्षणाला में कठुं कल-  
मीमी विज्ञान हल हैं किन्तु परीक्षणाला के बाहुर, अरिह अललललर के ललललली ली  
ललललल में लुली लललल ललली ललली लीला हैं ।

व्यक्ति मात्र। व्यक्ति के व्यवहार की रीतिरिवाज अनुसंधान व्यवहार करने का प्रयास करता है। अर्थात् व्यक्ति के व्यवहार के प्रभाव अनुसंधान करते हैं। व्यक्ति के व्यवहार का अनुसंधान करी की आधुनिक और करी रीति या व्यक्ति हो सकता है। व्यक्ति का व्यवहार-रीति, रीति-उपकरण, व्यवहार-रीति, व्यवहार, व्यवहार-उपकरण, व्यवहार-रीति तथा रीति करी करी अनुसंधान द्वारा सीखे जाते हैं। (1983) के अनुसंधान के अनुसार की व्यवहार अनुसंधान या कि "व्यक्ति अनुसंधान है।" वैज्ञानिक (1983) के अनुसंधान की अनुसंधान कहा या अतः अनुसंधान व्यवहार अनुसंधान व्यवहार का। किन्तु अनुसंधान के व्यवहार होने के वैज्ञानिक प्रमाण नहीं उपलब्ध है। अनुसंधान हो अनुसंधान है कि अनुसंधान अनुसंधान की व्यवहार है। अनुसंधान द्वारा सीखने के लिए विभिन्न प्रकार के व्यवहार हैं—

१. **प्रतिष्ठा का निर्देशन**—बहुमान के विवेक प्रतिष्ठा के माधुर्य की ओर लक्ष्य देना आवश्यक है। इसके विवेक प्रयोजन के लक्ष्य प्रतिष्ठा की अभिवृद्धि आवश्यक है अथवा निर्देशन संभव नहीं होता। इसके अभिवृद्धि प्रतिष्ठा के माधुर्य में प्रकाशित ( *Manifestation* ) का होता आवश्यक है क्योंकि अन्तिम रूप माधुर्य का बहुमान प्रकाश है जिसके लिए अभिवृद्धि होती है। प्रतिष्ठा में अभिवृद्धि और माधुर्य होती है के कारण है की प्रतिष्ठा द्वारा प्रतिष्ठा में निर्देशन सिद्ध की बहुत प्रभावित करती है।

2. प्रेरित व्यवहार की वाद रचना—व्यवहार के निर्देशन से उत्पन्न प्रतिक्रिया बनती है जो व्यक्ति की प्रवृत्ति का आधार होती है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति प्रेरित प्रणाली की प्रतिक्रिया अभिव्यक्त में अनुभव होती है। व्यवहारों के ज्ञान हुआ है कि व्यक्ति व्यक्तिगत सीखों, समूहों आदि के द्वारा प्रतिस्पर्धा के व्यवहार को सीखता है ( कैम्पुस, दुबे, तथा वेल्सन, 1969 )। इसी प्रकार प्रतिस्पर्धी व्यवहार की रचना में सामाजिक सिद्धांत में अनुभवों मिलती है।

3. व्यवहार की रचना—प्रतिक्रिया द्वारा अभिव्यक्त में प्रतिस्पर्धा के सीखे की व्यवहार की निर्धारित करने की रचना एवं अनुभवों का आधार है।

4. अभिव्यक्त तथा अनुकरण के लिए अभिव्यक्ति—प्रतिक्रिया अभिव्यक्त एक प्रकार का प्रेरित प्रतिस्पर्धा है जिसके लिए अभिव्यक्त करने में अभिव्यक्ति का होना आवश्यक है। मनोविश्लेषण सिद्धांतों के अनुसार रचना के ज्ञान प्रवृत्ति एवं में भी तथा प्रवृत्ति में प्रतिस्पर्धा अनुभवों निर्धारित होता है जो अपने में सीख की रचना के निर्धारित निर्धारित होती है। री का सीख प्राप्त करने के लिए री के व्यवहार का अनुकरण करने के लिए अभिव्यक्ति होता है। एक प्रकार के अभिव्यक्त की निर्धारित की रचना-आकृति अनु रचना है। सिद्धांत मिलती तथा अन्य ( 1965 ) के अध्ययनों से इस ज्ञान का समर्थन नहीं हुआ।

एम्बेरी कैम्पुस तथा वाल्डरी ( 1963 ) ने बताया है कि पूर्ण व्यक्ति व्यवहार के प्रेरित होने की आवश्यकता करने में निश्चित सिद्धांत रीति है किन्तु सीख व्यवहार की उपरान्त प्रणाली में अनुभव नहीं है। सिद्धांत ( 1933 ) ने अनुशिक्षकों के प्रभाव की प्रणाली 'डिप्लोमा' (Diploma) की अनुशिक्षा के द्वारा की है। अपने अनुसार अनुशिक्षकों की अनुशिक्षित केवल या सीखी कार्य जैसे निर्धारित की वाद रचना या समर्थन करना की प्रणाली का प्रभाव है, यदि प्रयोगकर्ता निर्धारित लिए अपने अपने कार्य से सम्बन्धित व्यवहार को प्रदर्शित करता है। अन्य प्रवृत्तियों और अनुशिक्षों द्वारा अभिव्यक्त में निर्धारित रचना के अनुकरण का उपयोग किया जाता है। दूसरों के व्यवहार के निर्देशन और अनुकरण द्वारा अभिव्यक्तकर्ता अपने कार्य व्यवहार एवं उपरान्त प्रवृत्तियों की सीखी हुए निर्धारित व्यवहार का अनु-प्रभाव कर सकता है। प्रवृत्ति का अभिव्यक्त प्रवृत्ति एक उपरान्त व्यवहार है। छोटे बच्चे माता और बापों का अनुशिक्षित प्रभाव-निर्धार द्वारा कुछ प्रवृत्तियों के अनुशिक्षित के द्वारा उत्पन्न नहीं सीखी प्रवृत्ति कि दूसरों की प्रवृत्ति के अनुकरण द्वारा सीखते हैं।

कैम्पुस तथा वाल्डरी ने अनुशिक्षित की- राह ( 1954 ) के सामाजिक अभिव्यक्त सिद्धांत की प्रभावप्रणाली की है। राह में अनु का कि किसी निश्चित परिस्थिति में किसी व्यवहार के प्रेरित होने की प्रभावप्रणाली का कारण प्रवृत्ति निर्धार करती

है : (A) व्यवहार के पुनर्नीति होने के विषय में व्यक्ति की चलाचल, (B) व्यक्ति द्वारा पुनर्नीति की दिशा वाले मान्य मूल्य या मूल्य। वैष्णुदा तथा वास्तवी के अनुसार यह विद्वान्मय एक अनुभविताओं की व्यवस्था नहीं कर सकत। जिसकी उत्पत्ति हो न हुई हो—बैत एक चरणा की भावनीय भावा विस्तृत नहीं जायत। यह एक भावा का एक भावम की नहीं नीति समझा व्यक्ति यह मानता है कि देखा करने में यह यह बहुत पुनर्नीति प्राप्त करेगा, क्योंकि पहले समझ जादवीय नीति मान्य कोई व्यक्ति (Individual) नहीं था।

वैष्णुदा ( 1971 ) के अनुसार पुनर्नीति विद्वान्मय की परिवर्तनना के अनुसार परिवर्तन के प्रति होने के विषय प्रतीत्य की अनुमान अनुभविता का पुनर्नीति होना आवश्यक है। अपनी परिवर्तन के विषय प्रतीत्य प्रति आवश्यक है। इनके अनुसार परिवर्तन ( व्यक्ति ) का व्यवहार देना अनुभविता है की परिवर्तनकर्ता में अनुभविता जायत करता है। यह व्यवहार की अनुभविता नीति वाले मान्य अनुभविता की पुनर्नीति करता है। वैष्णुदा के सामाजिक परिवर्तन विद्वान्मय के अनुसार परिवर्तन इसके विषय प्रति अनुभविता है। परिवर्तनकर्ता परिवर्तन परिवर्तन ( व्यक्ति ) के व्यवहार का निर्देशन करता है, इसलिए कि मान्य यह पुनर्नीति की संभावना की व्यवस्था करता है। यह परिवर्तनकर्ता परिवर्तन, एक परिवर्तन, परिवर्तनकर्ता संभव और परिवर्तन का सामाजिक विद्वान्मय (Kashyap) के द्वारा एक व्यक्ति की संभावना, करता है। इनके परिवर्तन संभव अनुभविता-परिवर्तन प्रति होता है।

वैष्णुदा के विद्वान्मय में सामाजिक पुनर्नीति आवश्यक देना नहीं सुझावों की (Facilitation) जायत है, क्योंकि अनुभविता परिवर्तन ( व्यवहार ) के परिवर्तन संभव कारण की व्यक्ति की दिशा का निर्धारण करते हैं। इनके बीच के परिवर्तन देना कि परिवर्तन पर देना अनुभविता की देना रहे करने वाले नहीं से एक अनुभव के परिवर्तन विषय वाले की सुझाव विषय हो न विषय हो, मान्य मान्य के अनुभवकर्ताक परिवर्तन का परिवर्तन करते हैं (वैष्णुदा, सुलेख तथा वैष्णुदा, 1988)।

एक अन्य अध्ययन में वैष्णुदा तथा वैष्णुदा ( 1983 ) ने पुनर्नीति-मूल्य तथा पुनर्नीति प्रति मान्य में अनुभव के संभावना का अध्ययन किया। एक प्रतीति में विषय ( 1988 ) द्वारा वास्तवी के वैज्ञानिक विद्वान्मय के बीच में अनुभव मूल्यों के आधार प्रति अनुभविता के बीचों (Peters) का अनुभवीय दिया। विषय में एक विषय का पुनर्नीति के प्रति परिवर्तन के विषय में इनके की परिवर्तनकर्ता यह मान्य नीति वैज्ञानिक व्यवस्थाओं के पुनर्नीति है। प्रथम व्यवस्था में विषय यह परिवर्तन व्यवस्था करता है। इनके पुनर्नीति का पुनर्नीति, इसके हुई प्रति की भावा द्वारा करते हैं और व्यक्ति के व्यवस्था (Lambert) पर मान्य नहीं वे। यह व्यवस्था यह नहीं कोई दो संभावना सुझाव है—एक ही एक संभव सामाजिक रूप के



वाले दम्पती के व्यवहार पर कोई तथ्यात्मक प्रभाव नहीं था, क्योंकि पुनर्लेखन तथा के समाधान पर वे अपने वैयक्तिक स्थिति में लौट आते थे ।

प्रतिफल के व्यवहार के प्रभाव की वैयक्तिक व्याख्या अतिव्यय के साथ उनके सामाजीकरण द्वारा की जाती है क्योंकि वे अपने तथा अतिव्यय में समाधान का प्रयत्नशीलता करते हैं । अतः वे अव्यक्त परिस्थिति में अतिव्यय की अनुकूलता के अनु-करण द्वारा सुधार का अनुभव करते हैं । मैथुन तथा वांछनी ( 1963 ), भारत में अनुकरण तथा सामाजीकरण में कोई प्रभाव नहीं है ।

यह भी कहा जा सकता है कि अनुकरण एक विशेष प्रकार का पुनर्लेखन है क्योंकि प्रत्यक्ष अनुकरण करते वाला व्यक्ति अपने आप में प्रत्यक्षकारी होता है । किन्तु शोधकर्ताओं की संख्या इस अभिप्रायों द्वारा नहीं हो जाती ।

रॉडर के सामाजिक अतिव्यय सिद्धान्त की अनुकरण की व्याख्या में कुछ बुद्धि-दायी हैं जो अन्य प्रभावों में सम्मिलित नहीं हैं । एक बात की आवश्यकता है स्पष्ट है कि अपने दिन प्रतिकर्मी की स्वीकार करते हैं देशों की युविता के अनुकरण की संभावना अधिक होती है ( Placidas के Thiamletheliasis, 1970 ), या फिर जब प्रतिकर्मी की युविता का अनुकरण करते हैं जो उनके अनुसार गुणवत्ता करते में लगते होते हैं । ( Oshawa के Michael, 1966 ) ।

रॉडर के वैयक्तिक परिस्थितियों प्रतिकर्मी का उपयोग करते बाद बोलों के प्रभावित किया कि परिस्थितियों की परिभाषित करने में अतिव्यय सहजता होते हैं ( Haskel के Rosner, 1968 ) । Dr. H. Michaelson द्वारा ( 1971 ) ने समाधान स्तर की देशी महिलाओं का अध्ययन किया किहोने किया कि वे बर्तों के प्रति भावना हीमार्थिक एवं समाजस्थितिक पर प्रभावित किया था । उन्हें टी. बी. द्वारा तीन प्रतिकर्मी की तीन बूटें बर्तों की कृति, प्रभावित किया था । कुछ प्रयोगवादी की विचारना कि अतिव्यय निःशुद्धीय करने की कृता, प्रभावता का प्रभाव है । कुछ कार्य की प्रतीति कहा कि सामान्य के कोई घर की वे नियमित पर करने की तरह केते हैं । इसके बाद फिर प्रयोगकर्ता ने प्रयोगस्थान में प्रयोगवादी की सुखोद करने में प्रभावों की निज महिलाओं ने अतिव्यय की घर की दुर करते देखा था क्योंकि भी बने हो किया प्रतीति कुछ समय में ही वे अपने की कृति-प्रभावित नहीं । दूसरे बर्तों में प्रभावः परिस्थिति का मुकाबला ( Coping ) करते वाले प्रतिकर्मी ने परिस्थिति की परि-भाषित या स्पष्ट करने में प्रयोगवादी की मदद मिलती है । अतः वे ऐसे प्रतिकर्मी के सामाजीकरण करते हैं और उनके व्यवहार का अनुकरण करते हैं । जीवन की अनेक परिस्थितियों में अतिव्यय, निज किसी बहुरी व्यक्ति द्वारा प्रत्यक्ष पुनर्लेखन के हो प्रतीत होता है । यदि कोई प्रत्यक्षकारी है तो यह स्वयं अतिव्ययकारी है और



लिने है । संदर्भ समूह यह होता है जिसकी सदस्यता की वजह से वह समूह में होती है जिसके सदस्यों में यह अपना सुसंगत करता है । दूसरे शब्दों में व्यक्ति के व्यवहार के सुसंगतता का मापदंड होता है । ( *Reference group is one in terms of which the individual views or evaluates himself. One whose standards are used as comparison point for the individual behaviour.* — Jones and Gerard. )

इस तरह सदस्य समूह यह है जिसके साथ व्यक्ति अपना सामाजीकरण कर करता है । यही उसका संदर्भ बन जाता है । पैरिड ( 1963 ) के अनुसार, सदस्य समूह यह है, जिसका, कोई व्यक्ति अपने आपकी संघ बनने करता है वा यकीननात्मक रूप से जिसके साथ अपने की सम्बन्धित करने की आकांक्षा करता है । वैयक्तिक जीवन की भाषा में सदस्य समूह यह समूह है जिसके साथ व्यक्ति सामाजीकरण करता है वा करना चाहता है । ( *Reference groups are..... groups to which an individual relates himself or expects to relate himself as a part psychologically* )

सदस्य समूह अधिकृतियों द्वारा चुनीं के कारण हो सकते हैं जिसका यह अनुसरण करता है और जो अपने सामाजिक अधिग्रह का आधार हो सकते हैं । कारण में ऐसे समूह की अधिकृतियों का व्यवहार व्यक्ति के व्यवहार तथा अधिकृतियों का निर्धारण करती है । कैमुरा ( 1971 ) के इसी दृष्टि की आधार पर करते कहा है कि हम अपने व्यवहार का निर्धारण, आत्मसुसंगतता तथा आत्मसुसंगतता द्वारा करते हैं जो सदस्य समूह अधिकृतता सदस्यों की सामाजिक वा सामाजिक अधिकृतियों द्वारा स्थापित होता है । ( *As Bandura ( 1971 ) points out, "one tends to control our own behaviour through standards of self evaluation and self reinforcement that, in turn, are influenced by the real or anticipated reactions of admired or respected members of reference groups"* )

समाजित होने के लिये व्यक्ति की सदस्य समूह की सदस्यता आवश्यक नहीं है । संवर्धित संवीरता जैसे सुसंगत/सुसंगतों के लिये सदस्य समूह होते हैं यद्यपि वे संवीरता नहीं होते । दूसरी ओर, समूह जिसके में संलग्न होते हैं उसके बिना सदस्य समूह हो सकता है इसलिए कि वे अपना स्वयं के अधिकृतियों और व्यवहार के बीचों में आधार के रूप में करते हैं । सदस्य समूह के द्वारा ही व्यक्ति में अपनी बहुमान विभक्ति होती है ।

सामाजिक अधिकृतियों में समाज-निर्वात अपने-अपने शब्दों के लिये सदस्य समूह के रूप में कार्य करती हैं, विशेषकर जीवन के इस चरण में जब वे अनुसरण आधार





महान के आधार का कार्य कर सकते हैं। अन्य प्रकार की अधिगम विधियाँ बच्चे, अभिजातों और कुल की सीखने वाले हैं।

## सामाजिक अधिगम में प्राथमिक कारक

( Perceptual Factors in Social Learning )

अधिगम और कुलों का निरीक्षण समाजीकरण द्वारा बहुत प्रभावित होता है। निरीक्षण समाजीकरण का निरीक्षण बहुत कुछ अधिगम और कुलों द्वारा प्रभावित होता है। अधिगमियों और कुलों तथा कुलों और प्राथमिक सीखने में इसका निरीक्षण प्रभावकारी प्रभाव होता है।

सामाजिक में ही सीखते हैं कि क्या सीखा जाय है और क्या बहुत सीखते हैं, निरीक्षण अधिगम की अधिगम एवं कुल सीखने के आधारों में एक बहुत प्रभाव है। सामाजिक अधिगम सीखने की कठिनाई के प्रति असह्य होता है। इसी वजह से सीखने के लिए कार्यकारी कठिनाई वर है बहुत प्रभाव है। लक्ष्य प्रभावों में लक्ष्य की कठिनाई प्रभाव है किन्तु कठिनाई और सीखने में प्रभाव लक्ष्य की और प्रभाव नहीं देते। सामाजिक अधिगम में सामाजिक सामाजिक अधिगम निरीक्षण कुलों के सीखने की सीखने की होती है जो अधिगम ( Skill ) में प्रभावों वर एक होता है। इस कुलों के कारण यह लक्ष्य तथा लक्ष्य सीखने के लक्ष्यों की लक्ष्य विधियों ( Disadvantaged positions ) के आधार वर समाजीकरण करने प्रभाव है, और कुलों के आधार का समाजीकरण इस कुलों की सीखने में प्रभावित करता है।

अमेरिकी बाजार द्वारा सीखने की कुल प्रभावों की निरीक्षण समाजीकरण ( Social stratification ) की अधिगम है। इनसे सामाजिक के बहुत सामाजिक कठिनाई का ही सीख होता है—अधिगम, अधिगम, या अधिगम।

अधिगम कुल समाजी, अन्य प्रकार के अधिगम कुल में निरीक्षण है कि अधिगम ( Personal equality ) की सामाजिक कुल प्रभाव है। अति अधिगम के लिए सामाजिक विधियों अधिगम और अधिगम है। कुलों वरों का अधिगम वरों के अधिगम एक अधिगम प्रभाव सीखने की उनके प्रभाव वरों के अधिगम करता है। अधिगम वरों के आधार से वरों के लक्ष्यों द्वारा लक्ष्य तथा वरों में सामाजिक वरों के अधिगम व लक्ष्य के आधार की अधिगम वर होता है। अति वर वरों के अधिगम करता है वरों लक्ष्य वरों के आधार वरों के अधिगम है।

## अधिगमों में निरीक्षण प्रभाव विधियों

( Research Disadvantages in Studies )

अधिगमों अधिगम वरों की लक्ष्य वरों है कि लक्ष्य और वरों में अधिगम

स्थितियों ( Status conditions ) के कारण होती है । ये सब समस्याएँ उत्पन्न हैं कि संविधान और कानून में वास्तव तथा औद्गम्य रूप में अंतर के कारण है । ये इससे बहुत और वास्तविकता के भी परिचित हो गयी हैं । जोड़ी की उच्च संविधान का अर्थ यह है कि वक्ता को यह अनुमान करना पड़ेगा कि जोड़ी का विचारण स्वतः हो जाता है । जोरन दूधक तथा वाकर विवेक ( 1966 ) ने अपनी ही जोड़ी के साथ वास्तविकता के साथ प्रतिष्ठित होने वाले अधिनियम का अध्ययन किया । यह सभी जोड़ें पुनर्गठन करने की क्षमता रखते हैं । वे वाकर के अधिनियम ( Minors ) अधिनियम में प्रयुक्त होते हैं । अपने आप अपनी ही विचारण के एक-एक के प्रतिष्ठित रूप के एक प्रकार के अधिनियम ने कहा कि यह अपनी ही जोड़ी बहुत सामाजिक है और अपने कुछ समय उनके साथ सामाजिक स्थितियों के साथ केसने में विचारण तथा उनके प्रति जोड़ों का अध्ययन किया । इससे जोड़ी अपने को यह बताते हैं कि जोड़ों का अर्थ अपने के अर्थों में सामाजिक वास्तव है अपना यह अपने की पुनर्गठन करने में सक्षम है । अपने प्रकार के अधिनियम ने कुछ छोटे-छोटे स्थितियों अपनी ही विचारण, अपने ही ही यह अनुमान कि जोड़ी कुछ सामाजिक कार्य निष्ठावा है और अपने अपने के वास्तविकता वास्तव करने का कोई वास्तव नहीं किया । अपने यह प्रतिष्ठित किया कि यह अनुमान करने में सक्षम है । उपर्युक्त के सामाजिक रूप के वास्तव, अपने अधिनियम ने वास्तव के साथ एक केस में वास्तव किया किन्हीं वास्तव, किसी विचारण, विचारण और वास्तव ही वास्तव अपने विचारण वास्तव की । एक अधिनियम अधिनियम की एक जोड़ी के समय एक में वास्तव संविधान का, अधिनियम के अपने के वास्तव, वास्तव के प्रस्ताव है कि अधिनियम की विचारण विचारण प्रतिष्ठित हो गई है और विचारण यह अनुमान कर सकता है । अधिनियम के साथ कुछ कि अपने वास्तव के अधिनियम की अधिनियम विचारण प्रयोगों की वास्तव की । एक प्रकार यह अधिनियम की वास्तव के वास्तव की कि यह अपनी ही वास्तविकता है, और विचारण यह वास्तव किया कि अधिनियम में अपनी पुनर्गठन कर सकता है, ऐसी अधिनियम की विचारण अपनी के अधिनियम वास्तविकता प्रयोग की ।

अपनी के साथ अपने एक विचारण का परिधान जोड़ी पर भी लागू होते हैं अपने अधिनियम में विचारण अधिनियमों द्वारा पुनर्गठन का पुनर्गठन किने जाने की क्षमता होती है, अपने अधिनियम के अनुमान की क्षमता अधिनियम होती है । एक ऐसी अधिनियम की वास्तविकता होती है किन्हीं पुनर्गठन करने की क्षमता विचारण होती है । अधिनियम का साथ अधिनियम के साथ वास्तविकता में वास्तविकता का पुनर्गठन अधिनियम का अनुमान किया जाता है । सामाजिक अधिनियम बहुत कुछ पुनर्गठन तथा अधिनियम पर विचार करता है ।

सुविधा सुविधा

(Baker, 1996)

[illegible]

इस प्रकार भूमिका अधिनियम का वास्तविक अर्थाने संविधान के किसी भाग के अनुच्छेद, अधिनियम और प्रादेशिक के अन्तर्गत अधिनियम की श्रेणी का होना है। इसमें तीन भागों का विवेक अन्वेषण है :—

- (1) बुनियादी लेखांकन प्रणाली एवं मानकों का सीखना,
- (2) बुनियादी बीजगणित एवं प्रणालियों का सीखना,
- (3) बुनियादी गणना का सीखना,

(1) कृषिका से सम्बन्धित सूखों एवं मानकों का अभिलेख—सकल धान-विषयक जानकारी हेतु यह आवश्यक है कि समूह के सदस्य अपने क्षेत्र समूह बनाते

[illegible]

(४) **भूमिका कौशल्यों का अतिव्यवहार**—जिसे भी भूमिका का निर्वाह किया जायतक कौशल्यों के दुर्भोज होना । अतिव्यवहार भूमिकाओं के विभिन्न कौशल्यों और प्रणालियों का अतिव्यवहार जायतक होता है । किसी कार्य में लगे हुए वह एवं अनुपस्थित व्यक्ति की तुलना में उनी कार्य के करने में लगे वनानुपस्थित व्यक्ति द्वारा अनुभव की गई कमियाँ इसका प्रमाण है । भूमिका निर्वाह में व्यक्ति के लिये दो कौशल्यों का जायतक जायतक है । प्रथम, वह कौशल्य की व्यक्ति की विभिन्न भूमिका निर्वाह में जायतक होती है तथा दूसरी, वे कौशल्य की भूमिका अनुपस्थितों के साथ व्यक्ति की सम्बन्धित के करने में प्रयुक्त होती है ।

(11) **श्रुतिका परिचय का अभियम ( Learning style identities )**—  
 व्यक्ति श्रुतिका-परिचय का अभियम करता है जो व्यक्ति के स्वभाव का वर्णन करता है। श्रुतिका परिचय का अनुमान ( Measurement ) वा परिचयीय रूप जानकारी के साथ व्यवस्था पर निर्धार करती है। श्रुतिका के साथ अपना परिचय बना लेने के साथ व्यक्ति द्वारा उसी श्रुतिका के अनुभव पर ही जो व्यवहार करते करता है उसे एक श्रुतिका, अपनी इस श्रुतिका परिचय का अपने स्वभाव का अभिव्यक्त बना लेने के कारण परिचय, कभी के भी बने ही नाक करता है, यानी वह श्रुतिका ही श्रुतिका बना रहा हो।

सूचिका व्यवस्था में मातृभाषा सभी प्रकार के अधिष्ठान निर्दिष्ट होती है। सामाजिक व्यवस्थाओं तथा अर्थोपयोगों से सम्बन्धित होने पर अर्थात् सामाजिक अधिष्ठान के आधार पर विभिन्न प्रकार की अनुक्रियाएँ अतिष्ठ करती है। पुरातन एवं नव के द्वारा यह अनुक्रियाएँ प्रयोग वा निष्पन्न होती है। पुनर्निर्मित अनुक्रियाओं को अर्थात् व्यवस्था के पुनर्गठन के लिए अर्थात् अनुक्रियाओं का निर्माण हो जाता है। ऐतिहासिक अनुक्रियाओं इस सम्बन्ध में मुख्य सूचिका विद्यमान है। सूचिका व्यवस्था के अनुसार अर्थात् अपनी क्रियाओं और व्यवहार को निर्धारित करता सीमा जाता है। वास्तव अर्थों क्रियाओं एवं व्यवहार वास्तविक रूप में सीमित है। अर्थात् अनेक व्यवहार का अर्थ वास्तविक होता है। अपने क्षेत्र-क्षेत्र में अतिष्ठ सूचिकाओं को अन्वयि रूप में करना लेते है। सूचिका व्यवस्था के सम्बन्ध विधान एवं कल्याण का भी

सोचमान होता है : इस विभिन्न जातियों के बुद्धिमानों की सीखनी और कुछ लोगों की लगन है : इसी प्रकार सामाजीकरण की बुद्धिमान अधिव्यवस्था में सहभाग्य है : सामाजीकरण सामाजिक में उपलब्ध सामान ( *Material* ) पर निर्भर करता है : बिमरी ( 1957 ) ने इसकी सीखनी निर्देशना-विद्यमान जात की है : इनके अनुसार निर्देशना समाजीकरण का आधार है : ह्यूमन ( 1940 ) के अनुसार समाज के पिता के साथ सामाजीकरण करता है, क्योंकि पिता के नियन्त्रण एवं अधिकांश के प्रति लोगों की भावना से प्रेरित होता है : सामाजीकरण की सीखना में सामाजीकरण ( 1961 ) समन्वय-विद्यमान ( *Coordinability-theory* ) का उपयोग किया है : क्योंकि कोई व्यक्ति या सामाजिक व्यवस्था में संगठित उच्च व्यक्ति के साथ सामाजीकरण करता है जिसने कुछ सामान होता है :

## बुद्धिमान अधिव्यवस्था को प्रभावित करने वाले कारक

( *Factors Affecting Social-Learning* )

बुद्धिमानों के अधिव्यवस्था को प्रभावित करने वाले कारकों पर निर्भर करता है : इस कारकों में व्यक्ति की विशेषताओं और परिवेश के सम्बन्ध विद्यमान होते हैं : यह कारक बुद्धिमान अधिव्यवस्था में सहभाग्य की होते हैं और कारण की : बुद्धिमान अधिव्यवस्था के और साथ हेतु इस कारकों की सीखना सामाजिक है :

(1) समन्वय तथा सहभाग्य ( *Classy & Coherence* )—बुद्धिमान के सीखने में बुद्धिमान सामाजिकों की उपलब्धता नहीं सहभाग्य होती है : बुद्धिमान के नियंत्रण में सहभाग्य के साथ लोगों की विशेषताओं विद्यमान उपलब्ध होती है, बुद्धिमानों का सीखना समाज सुलभ होता है : जैसे कि-साथ लोगों के सीखना करते हैं कि यह नियंत्रण के सीखना, सुलभ करने उद्देश्य, अपने सीखने के करने की सामाजिकता सीखना, ही अपने की बुद्धिमान का सीखना सामाजिक होता : साथ ही कि-साथ तथा साथ बहि-कार लोगों में अपने की बुद्धिमान सामाजिकों के करने में सहभाग्य का होता की सामाजिक है, सामाजिक अपने बुद्धिमान करने में सीखनाई होती : बुद्धिमान सामाजिकों में सहभाग्य होने पर उपलब्ध सामाजिक के सिद्धि सुलभताओं में सीखनी की सामाजिक अधिव्यवस्था होती है और सामाजिक बुद्धिमान का सीखना सुलभ होता :

(2) सामाजिकों की सहभाग्यता ( *Compatibility of Interrelationships* )—समन्वय सामाजिकों पर व्यक्ति नियंत्रण नियंत्रण बुद्धिमानों का निर्भर करता है : एक समय में व्यक्ति बुद्धिमानों तथा एक के साथ दूसरी बुद्धिमान व्यक्ति की बुद्धिमान के अधिव्यवस्था को प्रभावित करता है : एक तथा में व्यक्ति के नियंत्रण-नियंत्रण प्रकार की विशेषताओं की होती है और इस विशेषताओं में नियंत्रणी सामाजिक होती है, बुद्धिमान अधिव्यवस्था सामाजिक सामाजिक सुलभ होता है : दूसरी और विभिन्न बुद्धिमान सामाजिकों के नियंत्रण

अन्यथा कठिनाई होती है। अनेक व्यक्ति किसी भूमिका को ग्रहण करने के पहले ही उसे सीख लेते हैं। लेकिन भूमिका में सम्बद्ध व्यक्तित्व गुण तथा समता जब व्यक्ति में निहित होते हैं केवल तभी यह कार्य सुगम होता है।

(7) परिस्थिति-अन्य विशेषतायें (Situational characteristics)—कुछ समूहों में समाजीकरण द्वारा सीखने वालों के व्यवहार में नाटकीय परिवर्तन आते हैं जब कि अन्य में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आते। यदि विभिन्न समूहों जैसे धार्मिक समूह, सैनिक अकादमी, शक्ति क्लब या ऐसे अन्य समूहों में विद्यमान समाजीकरण की तुलना करें तो स्पष्ट रूप में विदित होगा कि समाजीकरण पर परिस्थिति अन्य विशेषताओं का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। कुछ दशाओं में वे भिन्नतायें स्वयं भूमिका के स्वरूप की दर्शाती हैं। कुछ भूमिकायें अन्य की अपेक्षा अधिक व्यापक होती हैं। कुछ समूहों में समाजीकरण अन्य से अधिक होता है। इस दृष्टिकोण से विसमाजीकरण-प्रक्रम बहुत प्रभावशाली होता है। कुछ दशाओं में सीखने वाला उस व्यक्ति से असह कर दिया जाता है जिन्होंने उसकी आवश्यकताओं की संतुष्टि की हो तथा जिसने उसके मत पर की समर्पण दिया हो यदि समूह का पुरस्कार तथा दण्ड पर नियंत्रण अधिक और व्यक्ति के समस्त विकल्प कम होवे हैं, तो समाजीकरण अधिक तीव्र होता है। ऐसा होने का कारण यह है कि ऐसी दशा में व्यक्ति समाज पर अधिक निर्भर होता है।

परिस्थिति ही भूमिका अधिगम के लिये वांछित तादात्म्यकरण के अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार परिस्थिति की विशेषतायें भूमिका-अधिगम के निर्धारण में बहुत सहायक होती हैं। अनेक परिस्थितियाँ समाजीकरण को प्रवृत्त करती हैं।

जिनकी अधिक होती है उसका अधिकतम व निर्यात करना सुविधा होता है। इस विषय में आर्थिक शक्तों का प्रभाव है।

(3) भूमिका प्रवेश से पूर्व का अधिगम ( *Learning before entering the role* )—भूमिका के अनेक तन्त्र उस भूमिका के ग्रहण करने वाले के पूर्व सीखे जाते हैं। अतः, इसी कारण के कारण वा व्यापक हो जाता है। विशेष, अनेक भूमिकाओं का अधिगम, अनेक भूमिका को सुगम करता है। उद्योग सम्बन्ध भूमिकाओं का अधिगम करना, भूमिका सहायियों से भूमिका के अधिगम करने से सहायक होता है। जैसे लाल का अधिगम से लड़के महिला, श्री सम्बन्ध ऐसी ही भूमिका सहायक होती है, और इस तरह लाल की भूमिका के अनेक तन्त्रों को सीख चुकी होती है।

(4) भूमिका की व्यापकता ( *Participation in a role* )—कुछ भूमिकाएँ मात्र की अनेक अधिक व्यापक होती हैं। इस व्यापक क्षेत्र वाली भूमिकाओं में निम्न प्रकार के व्यवहार शामिल होते हैं। इस प्रकार की भूमिकाओं का सीखना अनेकानुस अधिक होता है। दूसरी ओर सीमित क्षेत्र वाली भूमिकाओं का अधिगम सुगम होता है। जैसे लाल की भूमिका लड़के व्यापक होती है और इससे अनेक अधिक शामिल होता है और इसके अधिगम में अधिकानुस सहायकता शामिल होता है।

(5) भूमिका विभाजन ( *Role Discontinuity* ) से सम्बन्ध प्राप्तकर तथा सीमा—भूमिकाओं में विभाजन का एक अन्य आधार है इसके साथ सम्बन्ध प्राप्तकर तथा सुगम विभिन्न भूमिकाओं के विभाजन के साथ विभिन्न मात्रा के प्राप्तकर सम्बन्ध होते हैं और सीमा लाल तरह विभिन्न भूमिकाओं के बाद विभिन्न मात्रा में प्राप्त करना करने वाली हैं। जो भूमिकाएँ प्राप्तकर के चुकी होती हैं, वे अनेकानुस सीमा सीखी जाती हैं। यह भूमिकाएँ निम्न व्यापक की अधिक सुगम प्राप्तकर करता है, वे विभाजन के सीखी जाती हैं। अतः भूमिकाओं के सीखने की विधि, सम्बन्ध प्राप्तकर तथा सुगम द्वारा सम्बन्धित होती है।

(6) व्यक्ति की विशेषताएँ—सीखने वाले व्यक्ति की विशेषताओं की भूमिका निर्यात की निर्धारित करती हैं। अनेक भूमिका के निर्यात के लिये अलग-अलग विशेषताओं या लक्षणों की आवश्यकता होती है। भूमिकाओं के अधिगम में व्यक्ति, सुसज्जित, प्रभाव, उस व्यक्ति तथा व्यक्तिगत लक्षण करती होती है, और इसके निर्यात होने पर सीखना सुगम होता है। जैसे लाल एक व्यापक की भूमिकाओं में व्यापक-व्यापक लक्षणों की आवश्यकता होती है। यदि किसी व्यक्ति में भूमिका के अनुसृत प्राप्त होते हैं तो यह वास्तव में उस भूमिका को सीख लेता है,

काल्पनिक एवं निष्पत्ति ( Ogden & Minskoff ) ने कहा है, प्रत्यक्ष प्रतीति



की परिभाषा, समूह के अन्दर स्वयं एवं दूसरों के सम्बन्ध में अपना मन है।'<sup>1</sup> ('A person's status is his group standing or ranking in relation to others.'<sup>2</sup>)

### संस्थानिकों के प्रकार

### ( Types of Beaded Station )

संयुक्त विधान ( 1943 ) के अनुसार सामाजिक संस्थानों का विकास होना है—

(3) आधु-मीन वर्ष ( Age of Fish Generation ) : इसमें सिंग, बगवा, बालक, बालिका, पुत्र, पुत्री, पुत्र, पत्निया, पुत्र-पुत्री आदि आते हैं ।

(2) परिवार, सम्बन्धी वा घरेलू समूह ( Family Group & Extended Group )—ये दो श्रेणियाँ हैं वे हैं—माता, पिता-पति, दादा-दादी, नाना-नानी, बच्चा-बच्ची, बालिक-बालिका, बहना-बहनी, बेटा-बेटाई आदि समूह हैं।

(3) संस्थिति या प्रतिष्ठा समूह ( *Sanstha or Prasthiti group* )—  
 इस वर्ग की संस्थिति में विभिन्न, सुवर्णित, वादक, वाद्य, वाद्यहीन गति आते हैं ।

(4) व्यावसायिक वर्ग (Occupational group)—वाटकर, रीसालेन डीकर, बनीम, मजदूर आदि इस वर्ग के कुछ उदाहरण हैं।

(३) मैत्रीय एवं सहायक बन्धि ( Friendship & Co-Operative Bonds ) :—इसके कुछ प्रमुख सम्बन्धन हैं मित्री बन्ध, सहायक बन्धि के सम्बन्ध, सहसहायक या हाथी कीन के सम्बन्ध, शिष्य बन्धि ।

हैरती की लिम्बरेन ( Henry Clay Liedgren, 1973 ) का मत है कि लिम्बरेन के सर्वोत्तर का वास्तव वास्तविक समाज के सबसे कमजोरों पर आधारित है । लिम्बरेन के एक कथन की भी यही व्याख्या है—संयोजनमयक वर्ग ( antagonistic-class group ) और उसके समावेश के रूप में यह समाजकी अधिकारी, स्वतन्त्रकारी, जिमी मोरी के समाज, लिम्बरेन वास्तव ।

संश्लेषण के किन्हीं अंशों में से किसी एक अंश में संश्लेषण के :-

1. **अधिरोपित संविधि** ( *Adoptive System* )—यह संविधि यह कि लक्ष्य समुदाय का समान द्वारा प्रयुक्त होती है । यह संविधि विना अपात्र प्राप्त होती है क्योंकि यह परामर्शदाता का अनुमति होती है । परिवार के बड़े-बान, भाया भाभी, माता की संविधियाँ होती हैं । यह सभी अधिरोपित समुदाय परंपरागत है ।

3. **अव्यक्त संसक्ति ( Ascribed Status )**—वेदा कि हमने नाम के आधार पर देवी संसक्ति को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अपने-अपना के आधार करने चाहते हैं उस काही प्रकार यह संसक्ति को निम्नी है । एक बार प्राप्त होने के



3. किसी व्यक्ति को नम्रु में सामाजिक प्रतिष्ठा, नम्रु में उसके घर का परिवार के आचार पर नहीं है।

4. व्यापारिक अथवा निजी अन्य सुविधाओं के सुदृढ़ सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए हमने संशुद्धि कायम करार है। इस कार्य में यह अपने विशेष अनुभव और योग्यता को अनुपयोग करता है।

3. विभिन्न सामाजिक समितियों के साथ कुछ सम्पर्क या दृष्टिगत जारी होती है। जैसे भारतीय समाज में नौ नौ सम्पर्क जैसी संस्थाएं हैं।

४. केवल यह सुनिश्चित होना या समझा जाना कि बहुमतपूर्ण मानता है, नहीं संविधान में दोष होते हैं । किसी व्यक्ति में अप्रामाण्य रूप ही तो समाज के एक को कभी-कभी के बिन्दु बहुमतपूर्ण हो तो सामाजिक संरचना की विशेषता उसे नहीं बनाते ।

**Table 1**

### 4 Determinants of Social Status

संविधान दुन, समाजभित अथवा बहिक के दुनों के अथवा विविध विद्यालय के अनुसार समझे का समझे है । संविधान के विविध शाखाओं में-संविधान अथवा समाज है उन्हें दुरुपयोग करने की समझा, समझ का समझ, दुनसार बहिक की समझ, दुनसार की समझ समझ है उनके अथवा समाज समझ के विविध ( *Interpretation* ) ।

[illegible]



पुरुषों में पुरुषकार गुण (masculine values) विहित होता है, यहाँ लिंग के लक्ष्य-विहित गुण की हो सकता है और नहीं भी। बिना विहित गुण वाले लिंगेय स्त्रीत्व (absence of masculinity) द्वारा गुण प्रकट कर सकते हैं। ऐसे लिंगेय के उदाहरण प्रजाति, परिवार सामूहिक कुष्ठभूमि, और चीत हैं। स्त्रीत्व (femininity) एक ऐसा लिंगेय है जिसमें गुण विहित होता है। स्त्रीत्व के आधार पर कोई स्त्रीवर्गीय ऐसी भूमिकाएँ प्राप्त करता है जो किसी एक कर्मी की नहीं प्राप्त होतीं जैसे उच्च वेतन, व्यवस्था की भूमिका, संपादन में सफलता के समय सहायक में न रहने आदि।

सादीत यह है कि संरचनात्मक व्यवस्था के चलन होता है। व्यक्ति, जिसके गुण समूह के सदस्यों के लिए पुरुषकार गुण पहले हैं उन्हें सभी समूहों में उच्च संरचनात्मक प्रजाति की जाती है। ऐसे पुरुषों का स्त्रीवर्गीय स्त्रीत्व (fate) होता भी सामान्य है। व्यक्ति पुरुषकार गुणकारी व्यक्ति उच्च संरचनात्मक प्राप्त करता है। इसी प्रकार गुणों द्वारा किसी को समूह में उच्च की जाति के लिए नहीं जाती है, उच्च संरचनात्मक प्रजाति करती है। किसी व्यक्ति की कुष्ठभूमि या पूर्व प्रतिष्ठा-उत्पत्ति लिंगेय भी संरचनात्मक की जाति में योगदान करते हैं।

## सामाजिक भूमिका (Social Roles)

अर्थ एवं स्वरूप—सामाजिक व्यवस्था (Social System) के समस्त अनेक संरचनाओं और उनके सम्बद्ध अनेक भूमिकाएँ होती हैं। उदाहरण के लिए सम्पन्न, छात्र, दासी, बच्चा, कर्मक, कर्मचारी, माता, पिता, पुत्र, सौतेला, बहिन आदि भूमिकाएँ। व्यक्ति सामाजिक पंजीकरण (Social position) के कुछ व्यवहार सम्बन्धी प्रत्याशाएँ सम्बद्ध होती हैं, जिसे सामाजिक भूमिका कहा जाता है। समाज में अनेक व्यक्ति विभिन्न समयों पर विभिन्न प्रकार की भूमिकाएँ निभाते हैं। एक व्यक्ति को व्यवस्था है, घर में पिता, बलि घर की भूमिकाएँ निभाता है। अनेक भूमिका के समय-समय प्रत्याशाएँ सम्बद्ध होती हैं।

सीकोर्स तथा बैकमन (Secord & Backman, 1974) ने कहा है, कि "व्यक्ति सामान्य पर सामाजिक भूमिका से उत्पन्न किसी पंजीकरण (Position) तथा उसी सम्बद्ध प्रत्याशाओं दोनों से होती है"। (The more general term social role is used to refer to both a position and its associated expectations.)

किराबल यंग (Kiraball Young, 1966) के अनुसार "व्यक्ति की कुछ करता है या निष्पन्न करता है उसे हम उसकी भूमिका कहते हैं।" (What the individual does or performs, we call his role.)

मार्सेल ( Mearseal, 1954 ) के अनुसार, "व्यक्ति की भूमिका एक समूह का सामाजिक व्यवहार का परिचायक है जो उस समूह की मान्यताओं और मान्यों के सर्वोच्च प्रतिनिधि के अनुसार उसे समझा जाता होता है।"

( A person's role is a pattern or type of social behaviour which seems situationally, appropriate to him in terms of the demands and expectations of those in the group. )"

रेबर ( Reber, 1986 ) के अनुसार, "समाज मनोविज्ञान में भूमिका के सबसे सामान्य: सिद्धि ऐसे व्यवहार के होता है जिसमें कुछ अधिकार ( rights ) व्यापार ( obligations ); कर्तव्य ( duties ) प्रतिनिधित्व होते हैं तथा जिसे व्यक्ति एक ही पूर्व सामाजिक परिस्थिति में करने के लिए उत्साहित, प्रेरित तथा प्रोत्साहित होता है।" ( In Social Psychology role refers generally to certain rights, obligations, and duties which an individual is expected, wished and indeed, encouraged to perform in a given social situation. )

उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से भूमिका के अर्थ पर प्रकाश पड़ता है। इससे निम्न निम्नलिखित बातें होती हैं :—

(1) सामाजिक भूमिका सामाजिक समूहों का एक अंग है। इसका सम्बन्ध सामाजिक व्यवस्था के सामाजिक पंजीकरण ( Position ) से है।

(2) भूमिका के साथ कुछ उत्पत्तियाँ सम्बन्ध होती हैं। इस आभास में दो मुख्य विशेषताएँ निहित होती हैं।

(अ) यह उत्पत्ति पूर्वनिर्धारित ( anticipatory ) होती है। भूमिका प्राप्त के यह संकेतों की जाती है कि यह कुछ निश्चित प्रकार के व्यवहार करेगा। पूर्वनिर्धारित विशेषता व्यक्ति के व्यवहार की निर्दिष्ट करती है। क्योंकि भूमिका निर्धारित करने वाला व्यक्ति यह पूर्वनिर्धारित करेगा कि दूसरी लोग उसके व्यवहार के प्रति कौन सी प्रतिक्रिया कर सकते हैं और यह अपने व्यवहार की अनुसार पूर्वनिर्धारित करता है।

(ब) इन उत्पत्तियों में मानकों के गुण होते हैं क्योंकि भूमिका उत्पत्तिपूर्ण मानक पर ( expectancy ) होती है। यह उत्पत्तिपूर्ण व्यक्ति को यह बात याद दिलाता है कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। यह व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित और निर्दिष्ट करता है। सामाजिक उत्पत्ति ( normative expectation ) के निर्धारित व्यवहार करने पर समूह का सम्बन्ध स्थापित करता पड़ता है और अन्य लोगों में उसके प्रति कोश और प्रतिक्रिया के स्तर को उत्पन्न होते हैं। उत्पत्ति के लिए निम्न की भूमिका की है। निम्न के आभास

की जाती है कि वह अपने अपने के बीच; पाप, पिछा स्वभाव हमारी आदत-आचरणों की प्रतिबिम्बित है। एक पिछा अपनी तुलना की प्रभाव में हमें हम से दूर रखता है जो हमारे की भावों में व्यवहारी करता है और जो हम से पिछा पाप का बीच व्यतीत करता है। हम वह करते हैं कि वह व्यक्ति पिछा की प्रतिबिम्बित आदत-आचरण के अनुसार व्यवहार नहीं कर रहा है।

(100) सुविचारों से निर्धारित व्यवसाय निर्धारित होती है ।

(18) कृष्ण भूमिमात्रे अतिशयान्न स्यात्तु किं अन्य भूमिमात्रे भवेत् :

**संयोजक से सम्बन्धित प्रश्न**

( Concepts Related with Rates )

कुल संवत्सम साप्ताहिक प्रतिका के सम्मिश्रित हैं निर्मित कही प्रकाश, शक्ति विना साप्ताहिक प्रतिका का संवत्सम समस्त नहीं होता ।

1. भूमिका श्रेणी वा भूमिका श्रेणीकरण ( Role category or position )
2. भूमिका अपेक्षा ( Role expectation )
3. भूमिका व्यवहार ( Role behaviour )

(1) भूमिका खेती या भूमिका पोषीकरण—( Role category or position )—भूमिका खेती या पोषीकरण का उदाहरण व्यक्तिगत के समूह या समुदाय में है जिसमें समान व्यवहार की उम्मीदों की जाती है। भूमिका खेती में भूमिका सत्ता करते करते व्यक्ति की भूमिका-व्यक्तियों या व्यक्तियों (Role player or actor ) कहा जाता है। किसी भूमिका खेती में व्यक्तियों के समूह के बीच साधारण है—(1) किसी सामाजिक व्यवस्था या सामाजिक सम्बन्ध में एक या वर आसीन सभी व्यक्तियों की एक भूमिका खेती में रहती है। (2) वे किसी छोटे समूह में बहुत सी एक ही वर वर आसीन होते हैं। (3) उनके एक एक प्रकार का निर्वास करते हैं। इनमें से प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था है। व्यवहार के बिना परिवार में माता की खेती में व्यवहार की सामान्य उम्मीदों होती है। सामान्य रूप के समूह समूह का एक व्यवहार का समूह पोषीकरण है जैसे छोटा बच्चा, छोटी लड़की, दुध-मुग्ध, दुध-खिला, बूढ़ा व्यक्ति, बूढ़ा महिला आदि। व्यवस्था के आधार पर व्यवस्था, परिवार, भूमिका खेती वगैरे होते हैं।

इंग्लिश सरकार की प्रसिद्ध कॉपी में जलियाँल लॉर्ड बगुदा में ऐसे १८ (Eighteen) होते हैं जो जगहों में विभिन्न रूप से पाये जाते हैं। बेन्नी तथा बीदम (Benda & Bidam, 1943) ने ऐसे लॉर्ड बगुदा की प्रसिद्धाओं के महाद्वयन बताया है, जैसे कोकर, विविण्ड, डिमोडर आदि।

सुविधा यंत्रों में कमीटर के लीढ़े आधार में सुविधा बाल के सुविधा पर  
आज केवल होता है कि "धी धी" करने वाला या कबला ।

(2) भूमिका प्रत्याभार्य (Role expectancies)—प्रत्याभार्य का अविभाज्य अन्तर्क्रिया के सुनीचायी और माननीय विशेषताओं से है। भूमिका प्रत्याभार्य वह प्रत्याभार्य है जो किसी भूमिका धर्मी से जुड़ी होती है। जैसे जीव-जन्तु पीलीछत्र।

कुछ भूमिका प्रत्याभार्य ऐसी होती हैं जिनमें भूमिका अधिकारियों में वयस सहभाग होती है। इनसे और कुछ प्रत्याभार्य कुछ विशिष्ट व्यक्तियों की वयस होती है। आज के जमाने जैसे परिवेष्ट के गति और सभी दोनों से कार्य करने तथा परिवेष्ट की आद में योगदान की प्रत्याभार्य की जाती है।

(3) भूमिका व्यवहार (Role behaviour)—भूमिका व्यवहार का अविभाज्य किसी भूमिका धर्मी में अधिकारों के रूप व्यवहारों से है जो उसकी भूमिका प्रत्याभार्य के अनुसरण होते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि व्यवहार वही भूमिका के अनुसरण हो। कभी कभी व्यक्ति का व्यवहार भूमिका प्रत्याभार्य से विरोध भी होता है। व्यवहार के लिए किसी क्षेत्रों के प्रत्याभार्य की जाती है कि वह किसी विषय का सम्यक विवेचन करेगा परन्तु वह भूमिका प्रत्याभार्य के अनुसरण नहीं कर पाता है। वह उसका भूमिका व्यवहार ही नहीं मानता बल्कि वह उसकी भूमिका प्रत्याभार्य के अनुसरण नहीं है।

### सामाजिक भूमिकाएँ तथा सामाजिक अन्तर्क्रिया

(Social Roles and Social Interaction)

भूमिका तथा सामाजिक अन्तर्क्रिया में अविभाज्य सम्बन्ध होता है। अन्तर्क्रिया के बिना कोई व्यक्ति अपनी भूमिका का निर्वाह नहीं कर सकता। समाज मनो-विज्ञानियों ने सामाजिक अन्तर्क्रिया की अवस्था सामाजिक भूमिका के आधार पर की है। सामाजिक अन्तर्क्रिया की परिस्थितियों में परिवर्तन स्थिर-स्थिर व्यक्तियों द्वारा भूमिका निर्वाह में व्यक्ति व्यवहारों का जाती है। भूमिका निर्वाह की वारुण करने वाले क्षेत्रों में चार समूह समझे जाते हैं।

(1) परिस्थिति परक व्यक्ति (Situational Describers)—चार्लिस एन डेविस (Charles E. Davis, 1969) के अनुसार अनेक परिस्थितियों व्यक्ति के विशिष्ट प्रकार के भूमिका निष्पादन की कार्य करती हैं। परिस्थिति के इन लोगों को भूमिका धर्मी (Role Describers) कहते हैं। इन परिस्थिति की धर्मी के पास अन्तर्क्रिया के आधार पर अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। डेविस (Kasubhai, 1967) ने अपने अध्ययन में व्यक्तियों के व्यावसायिक क्षेत्र और औद्योगिक क्षेत्रों के व्यक्तियों का अध्ययन हो निम्न धर्मी/परिस्थितियों में किया। एक परिस्थिति में परीक्षा प्रत्याभार्य केन्द्र व्यक्तियों तथा अन्य में एक राष्ट्रीय-वैज्ञानिक द्वारा परीक्षाओं की अन्तर्क्रिया में किया गया विशिष्ट अनेक प्रकार की



कमर विषयक समुदाय समन्वय की। परिवारों के अंतर्गत कि प्रेरित व्यवहार द्वारा प्रभावित परिवर्तन में छात्रों ने इसे केला के समग्र परीक्षण मानकर उप-सुधार भूमिका निभावन किया। परन्तु सामाजिक परिवर्तन में संभावित छात्र परीक्षण की छात्रों ने कलात्मक योजना का परीक्षण मानकर भूमिका निभावन किया। इस परिवारों के परिवर्तन की छात्रों का भूमिका निर्धार का समग्र समग्र होता है। इसके अतिरिक्त कि परिवर्तन, परिवर्तन, तथा परिवर्तन के माध्यम से परिवर्तन की छात्रों के अंतर्गत की और परिवारों को प्रभावित किया।

(2) **व्यक्तिगत कारक तथा भूमिका बीजक ( Personality & Role Skills )**—भूमिका निभावन का संबंधित करने का अंतर्गत व्यक्तिगत कारकों तथा भूमिका बीजकों के कारण होता है। इसकी व्यक्तिगतता, सामाजिकता, व्यक्तिगतता, सामाजिकता तथा भूमिका निभावन इसके भूमिका निभावन की प्रभावित करते हैं। भूमिका निभावन का अंतर्गत-भूमिका निभावन के विषय में छात्रों द्वारा है। इसी प्रकार भूमिका निभावन द्वारा भूमिका निर्धार करने वाले के सामाजिकता के प्रमुख एवं अंतर्गत की व्यक्तिगत होती है। इसका एवं भूमिका अधिकता द्वारा भूमिका निभावन के छात्रों प्रभावित होता है। भूमिका निभावन और व्यक्तिगत छात्रों के निर्धार की छात्रों के व्यक्ति भूमिका निभावन का अनुभव करता है।

(3) **अन्यथाकारिक भूमिकाएँ ( Externally Roles )**—किसी भूमिका अधिकता के अंतर्गत अंतर्गत की छात्रों का एक भूमिका से प्रभावित होते हैं। यह एक छात्र अनेक भूमिका अधिकता की छात्रों का छात्रों है। छात्रों के छात्रों के भूमिका निभावन की छात्रों की छात्रों है। किसी परिवर्तन विषय में एक भूमिका निभावन अंतर्गत होती है और अंतर्गत अनेक छात्रों का प्रभावित होती है। यह छात्रों में भूमिका अधिकता का अंतर्गत अनेक भूमिका से अधिक और अंतर्गत भूमिका से अंतर्गत के छात्रों के प्रभावित होता है। अंतर्गत के अंतर्गत एक भूमिका अंतर्गत और एक अंतर्गत अंतर्गत में अंतर्गत अंतर्गत है, कारण यह है कि अंतर्गत की भूमिका में अंतर्गत भूमिका निभावन करने छात्रों है।

4. **भूमिका समझौता ( Role Negotiation )**—भूमिका अधिकता छात्रों के भूमिका निभावी अंतर्गत में अंतर्गत का अंतर्गत का से अंतर्गत की करते हैं और यह निर्विवाद कर लेते हैं कि किसी निर्विवाद परिवर्तन में यह अंतर्गत अंतर्गत करने के अंतर्गत और अंतर्गत अंतर्गत में भूमिका अधिकता तथा अंतर्गत अंतर्गतों में अंतर्गत अंतर्गत निर्विवाद होती है। अंतर्गत के अंतर्गत और अंतर्गत का

के किसी प्रकार का भूमिका समझोता कर लेते हैं। जिससे कुछ परिणामों में भूमिका अव्यहार बहु प्रभावित होता है। भूमिका समझोता निम्न कारणों पर निर्भर करता है :—

(i) दोनों पक्षों की भूमिका पहचान, (ii) परिणामों की मूल्य, (iii) दोनों की सामाजिक स्थिति—संबन्ध, निर्देशांक, तथा विकास, (iv) दोनों पक्षों के अव्यवस्थित सीमाएं और (v) अधिकारी के परिणाम पर सीमाएं पक्ष के सम्बन्ध।

भूमिका समझोता किसी भाषा में इच्छित सम्बन्ध में प्रतिष्ठित होता है किन्तु निम्न स्थिति में बहु भूमिका अव्यहार का अनुष्ठानित होता है :—

(i) यहाँ भूमिका की सीमाएँ अपनी भावना होती हैं कि विशिष्ट भूमिका निम्नस्थ की समझ कि वह निम्न छोड़ देती है।

(ii) यहाँ भूमिका अधिकारी और अधिकारहीन की भूमिका सम्बन्धों का सम्बन्ध में पक्ष नहीं होती,।

(iii) जब भूमिका अधिकारी अपनी विशेषताओं के कारण सामान्य रूप से अपनी भूमिका की निम्नस्थ करता है।

(iv) यहाँ परिणामों की मूल्य भूमिका निम्नस्थ में इच्छित होती है।

(v) यहाँ जब भूमिका निम्नस्थ में अनुष्ठानित होती है।

(vi) यहाँ भूमिका अधिकारी तथा अधिकारियों की सामाजिक स्थिति में निम्नस्थ अपनी अधिक नहीं होती कि किसी सम्बन्धों की सम्बन्धता हो।

### भूमिका संबंध तथा भूमिका समझ के अर्थ

( *Understanding of Role Conflict and Role Strain* )

भूमिका संबंध एवं भूमिका समझ का अधिकार किसी भी भूमिका के सम्बन्ध सम्बन्धों के अनुष्ठान में आई हुई अधिकारों के है। यद्यपि भूमिका संबंध इस सम्बन्ध होता है यहाँ भूमिका अधिकारों की सम्बन्ध निर्देशों या अधिकारों का सम्बन्ध का सम्बन्ध करता करता है। जब एक ही भूमिका के भीतर कई सम्बन्धों की सम्बन्धता पूर्व सम्बन्धों होती है तो इसके को निम्नस्थ होती है बहु अर्थः भूमिका ( *Inter role conflict* ) कहलाती है—जैसे किसी सम्बन्धों के निम्नस्थ, निम्नस्थों के निम्नस्थ की मूल्य, सम्बन्ध, सम्बन्धों की मूल्य और सम्बन्धों के निम्नस्थ की सम्बन्धों करता है तो सम्बन्धों की निम्नस्थ के भूमिका संबंधों का सम्बन्ध करता होता है बहु अर्थः भूमिका संबंध कहा जाता है। इससे और कभी-कभी किसी व्यक्ति की अपनी सम्बन्धों भूमिकाओं में सम्बन्ध सम्बन्धों की दुरा करने में भूमिका संबंध का अनुष्ठान होता है तो इसे अर्थः भूमिका संबंध ( *Inter role conflict* )—कहा जाता है। सम्बन्धों के निम्नस्थ की भूमिका के सम्बन्ध करने के सम्बन्ध

की व्यवस्था की जाती है। जब स्वयं व्यवस्था पुनः बनना पड़ती है तो पिछली भूमिका तथा व्यवस्था की भूमिका व्यवस्थाओं में संघर्ष हो सकता है।

भूमिका तनाव अधिक व्यापक शब्द है। इसके अन्तर्गत बहुत सारी परिस्थितियाँ आती हैं जिनमें व्यक्ति अपनी सामाजिक भूमिका से सम्बद्ध व्यवस्थाओं की पुनः बनने में कठिनाई महसूस करता है। सीनेलेई, बैरलीन ( *Senechal & Barthelemy, 1974* ) के अनुसार भूमिका तनाव का अर्थ है, "किसी निश्चित भूमिका के निष्पादन में व्यक्ति द्वारा अनुभव की गई कठिनाई से है।" ( *Role strain refers to the difficulties that persons experience in performing a particular role.* )

### भूमिका तनाव के कारण

( *Causes of Role Strain* )

समाजशास्त्रियों के अध्ययनों द्वारा भूमिका तनाव के अनेक कारणों का शोध प्राप्त हुआ है, जिनमें निम्न वर्गों में रखा जाता है :—

1. सामाजिक व्यवस्था से उत्पन्न भूमिका तनाव—  
( *Role strain originating from social systems* )
2. व्यक्तित्व लक्षणों से उत्पन्न भूमिका तनाव—  
( *Role strains originating from personality traits* )
3. सांस्कृतिक से उत्पन्न भूमिका तनाव—  
( *Role strains originating from cultural factors* )

1. सामाजिक व्यवस्था से उत्पन्न भूमिका तनाव :—( *Role Strains Originating from Social Systems* ) समाजशास्त्री भूमिका तनाव की उत्पत्ति में सामाजिक व्यवस्था की बहुत भूमिका है। वह भूमिका अधिकताओं के वास्तविक सम्बन्धों की विशेषताओं के आधार पर भूमिका निष्पादन में उत्पन्न लक्षणों की व्याख्या करते हैं।

सामाजिक व्यवस्था के जो उच्च भूमिका तनाव उत्पन्न करते हैं वह इस प्रकार हैं।

(i) अपेक्षित प्रत्याशार्थ ( *Vogel's expectations* ) :—भूमिका निष्पादन में जब उच्च महत्त्व का अभाव होता है जब किसी सामाजिक व्यवस्था में भूमिका अपेक्षार्थ कमजोर होती है। निश्चित भूमिका अधिकताओं में महत्त्व के अभाव में भूमिका व्यवस्थाओं के विकास में बाधा पड़ती होती है। भूमिका व्यवस्थाओं में स्पष्टता के अभाव के अनेक कारण हो सकते हैं। किसी भूमिका विशेष में गई भूमिकाओं के विकास से भूमिका व्यवस्थाओं में अपेक्षा आती है ( *Schubert, 1937* ) भूमिकाओं में अधिक परिवर्तन से भी भूमिका व्यवस्थाओं में अपेक्षा आती है ( *Rose, 1951* )।

(ii) संघर्षात्मक एवं प्रतिद्वन्द्वतात्मक प्रवृत्तियाँ—[ *Conflictual & antagonistic role tendencies* ] :—किसी सामाजिक व्यवस्था के समूह के कारण भूमिका प्रवृत्तियों में संघर्ष एवं द्वन्द्व उत्पन्न होने के कारण भविष्यती भूमिका समूह का अनुमान करती है। भूमिका के परस्पर संघर्षात्मक तथा प्रतिद्वन्द्वतात्मक प्रवृत्तियाँ अलग होकर भूमिका समूह को विकसित करती है। यह संघर्ष या द्वन्द्व एक ही या अनेक भूमिका समूहों के व्यवहार के सम्बन्ध हो सकती है। उदाहरण के लिए यह मानते हुए भी कि बच्चों को बचक देना उचित नहीं है एक सामाजिक दायः बच्चों में अनुशासन कायम रखने के लिए उन्हें दण्डित करता और भूमिका समूह अनुमत्त करता है। भूमिका प्रवृत्तियों में विरोध के कारण ही समाज उत्पन्न हो सकता है ( *सिंस तथा अन्य, 1958* )।

(iii) अनुकम्पिक भूमिकाएँ ( *Dissonant roles* )—यह भी एक भूमिका भविष्यती एक के बाद अन्य भूमिका बना करता है जो उसके साथ सम्बन्ध प्रवृत्तियों में अन्तर और अन्तरे क्वाणुसार एक के बाद अन्य भूमिका के निर्माण के कारण उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए बच्चों के परस्पर विरोधी भूमिका विरोधी प्रवृत्तियों की जाती है—कभी उसे बच्चा कहकर नहीं की जाता में बच्चा बने से क्या किया जाता है जो कभी कभी कहा जाता है कि “जब तुम बड़े हो गए हो बहुत समय तक बनेले नहीं या लकड़े।” ऐसी कहा में यह नहीं समझ पाता कि यह क्या है या कहा और अन्तरात्मक भूमिका समूह अनुमत्त करता है। इन बातों पर विरोध ( *Dissonance*, 1961 ) से अन्तरे प्रवृत्तियों द्वारा प्रभावित होता है। बच्चों के बने के परावर्तन ( *Paradoxical* ) के कारण उत्पन्न प्रवृत्तियों में भूमिका समूह उत्पन्न होते हैं।

(iv) दो या अधिक भूमिकाएँ यह ( *Two or more role positions* ) एक ही व्यक्ति की या अधिक वीचीकण्ड ( *Positions* ) उत्पन्न करता है जो एक ही व्यक्ति में उभरे अन्तर-अन्तर प्रवृत्तियों की जाती है। इन प्रवृत्तियों में विरोध विरोध के कारण भूमिका भविष्यती समाज वास्तुतः करता है ( *Gross एवं, 1958* )।

(v) आचार और अधिकार ( *Obligations & rights* )—अनेक भूमिका में आचार या कर्तव्य और अधिकार विहित होते हैं। इसके कारण व्यक्ति अपनी भूमिका प्रवृत्तियों के अनुसार व्यवहार नहीं कर पाता है इसके परिणाम स्वरूप उसे भूमिका समूह या सामूहिक समूह यह कहता है। किसी भूमिका में विहित कर्तव्यों और अधिकारों में अनुमत्त का समूह की भूमिका समूह उत्पन्न करता है ( *Evans, 1962* )।

(vi) लक्ष्य प्राप्ति में बाधा ( *Hindrances in attainment of goals* )—

कभी-कभी वाणिज्यिक व्यवस्था में व्यक्ति द्वारा किए गए छोटे-छोटे बदलावों के साथ-साथ ही अवरोध उत्पन्न होता है जो उसमें भूमिका उत्पन्न करता है। ब्रुक्स (Brooks, 1968) ने इस बिन्दु की अपने अध्ययनों द्वारा खोजी है।

2. व्यक्तिगत लक्ष्यों के उत्पन्न भूमिका समाक—(Role Status Inter-Permeability thesis)—कुछ लोगों में भूमिका समाक की अवधि भूमिका अधिकारी की कुछ विशेषताओं के कारण होती है। यह अवस्था निम्न है :—

(i) निश्चित सीमाता का अभाव (Lack of certain abilities)—किसी व्यक्ति में किसी निश्चित सीमाता का (जो वह निश्चित भूमिका के लिए जरूरी हो) अभाव हो सकता है जो भूमिका समाक उत्पन्न कर सकता है। यह अवस्था व्यक्तिगत सांकेतिक लक्षण, सीमाता, अधिकारताएँ या व्यक्तिगत लक्षण होती सकती है। इनके अभाव के भूमिका व्यवहार के उत्पादन में अवरोध के कारण भूमिका समाक उत्पन्न हो सकता है। रॉय, ग्रेन तथा ब्लू (Roy, Green & Blue, 1954) ने अपने अध्ययन में कक्षाधीन महिलाएँ वाले बच्चों की उन बच्चों से सम्बन्धित विचारों के विचारण में उत्पन्न भूमिका समाक तथा निवर्तित सम्बन्धता वाले व्यवहारों के बदलावों का अन्वेषण किया। परिवारों के साथ हुआ कि बालक छोड़ने वाले छात्रों ने अपनी कक्षाधीन विशेषता के विपरीत व्यवहार करने के कारण अविचारपूर्वक अधिक भूमिका समाक अनुभव किया था। अतः भूमिका समाक की उत्पत्ति में व्यक्तिगत लक्षणों का बहुत योगदान होता है।

(ii) आत्म सम्मेलन से ठहराव (Co-orientation with self concept)—दूसरी के साथ व्यवहार व्यक्ति के आत्म-ज्ञान के अनुकूल होता है तथा दूसरे की तरफ विभिन्न प्रकार का व्यवहार करते हैं। कभी-कभी व्यक्ति के प्रभाव के साथ ही भूमिका व्यवहार तथा आत्म-सम्बन्ध से ठहराव होने पर व्यक्ति भूमिका समाक का अनुभव कर सकता है। उत्पादन के लिए एक दृष्टान्तार्थ कार्यकारी की यदि अपने अधिकारी के प्रभाव में घुल केना चले तो उसे भूमिका समाक का अनुभव होता क्योंकि उसका भूमिका व्यवहार उसके आत्म-सम्बन्ध से ठहराव रहा है। इन सभी की पुष्टि रॉय तथा अन्य (Roy et al., 1956) और बैकमन एवं सीमन (Backman & Seeman, 1968) के अध्ययन परिवारों में होती है।

(iii) अधिकृत तथा अधिकारताओं द्वारा अवरोध (Interference due to authority and status)—कभी-कभी व्यक्ति की अधिकृतता तथा अधिकारताओं की वृद्धि किसी भूमिका व्यवहार के उत्पादन में अवरोध उत्पन्न कर सकती है जिससे भूमिका समाक के उत्पत्ति की संभावना बढ़ जाती है। उत्पादन के लिए यदि किसी व्यक्ति में अधिकारी विरोधी अधिकृतता उत्पन्न हो तो यह एक

जबकि बहुतेक नहीं सिद्ध होता क्योंकि वास्तव में व्यक्तिगत की भूमिका कम करते हैं उसकी एक विरोधी अभिवृत्ति भूमिका उत्पन्न उत्पन्न करती है। ऐसे ही यदि व्यक्ति किसी भूमिका का विनाशन विकसित करने लगता है जिससे उसकी आवश्यकता, अपना एवं कुशलता की व्यक्तिगत नहीं होती तो वह भूमिका उत्पन्न अनुभव करता है। वास्तव में कि वह किसी व्यक्तिगत के यदि कार्योत्पन्न का कार्य करना मान ले उसमें भूमिका उत्पन्न उत्पन्न हो सकता है।

(iv) सामाजिक कारकों से उत्पन्न भूमिका उत्पन्न (Role strain due to conflicting interests) — यह किसी व्यक्ति की ऐसी भूमिका का निर्धारण करता करता है जो उसके सामाजिक विचारों के विरोध होती है जो उसे भूमिका उत्पन्न का उत्पन्न हो सकता है। वास्तव में कि वह किसी व्यक्तिगत की उत्पन्न की कुशल पर उत्पन्न केवल का कार्य करता वह जो उसे भूमिका उत्पन्न का अनुभव हो करता है क्योंकि उसके सामाजिक विचारों की इस भूमिका के विनाशन के इस नहीं होती है।

वास्तव में कि वह इन कारकों को उत्पन्न करती है जिससे व्यक्ति की भूमिका उत्पन्न का अनुभव हो सकता है। व्यक्तिगतों में व्यक्तिगत के सम्बन्ध कारकों द्वारा भूमिका उत्पन्न की उत्पन्न की तथा समाजशास्त्रियों ने सामाजिक व्यवस्था में व्यक्तिगतों की उत्पन्नता को है।

### भूमिका उत्पन्न का समाधान

(Resolution of Role Strain)

भूमिका उत्पन्न की उत्पन्न सामाजिक व्यवस्था (Social structure), व्यक्तिगत और सामाजिक कारकों के कारण होती है। इसे उत्पन्न में उत्पन्न समाज मनोवैज्ञानिक भूमिका उत्पन्न के समाधान में तीन प्रकार के सामाजिक व्यवस्था के सम्बन्ध समाधान, व्यक्तिगत पर समाधान, तथा सामाजिक कारकों के सम्बन्ध समाधान किसे होते हैं किन्हीं चर्चा नहीं की जायेगी—

(1) सामाजिक व्यवस्था से जुड़े समाधान (Resolution related to social structure) — समाजशास्त्रियों सामाजिक व्यवस्था पर कार्यरत भूमिका उत्पन्न समाधानों को अनुभव करते हैं और इसके सम्बन्ध किन्हीं उत्पन्नों द्वारा भूमिका उत्पन्न के समाधान पर कम होते हैं—

(i) वर्तमान में वृद्धि (Continuous increasing socialization) — विभिन्न भूमिका व्यक्तिगतों में विभिन्न भूमिका उत्पन्नताओं के उत्पन्न में वृद्धि वृद्धि के उत्पन्न के कारण भूमिका उत्पन्न व्यक्तिगत हो सकते हैं। अतः मनो-वैज्ञानिक ऐसा करते हैं कि भूमिका उत्पन्न के समाधान हेतु यदि विभिन्न भूमिका उत्पन्नताओं में वृद्धि उत्पन्न करें। भूमिका उत्पन्नताओं में व्यक्तिगत उत्पन्नता उत्पन्न

सर्वप्रथम विनियमित करने के लिए सम्भवतः सन्निविष्टी (voluntary association) का चरण, जहाँसे धुनिकताओं को स्वीकृत का में आता करता, प्रतीय धुनिकताओं के सम्बन्ध इतिहास, काल्पनी और अधिकांशों का स्वीकृत बीच करने को सम्भवता को जाती है । इससे धुनिकता स्वरूप में कभी जाने को सविज्ञा को जाती है ।

(ii) इतिहासिक प्रत्याभाषों में कभी (Historical in contemporary expectations)—इतिहासिक धुनिकता प्रत्याभाषों बहुत धुनिकता स्वरूप का कारण होती है । ऐसी स्थिति में सब प्रत्याभाषों में कभी सम्भवतः धुनिकता स्वरूप को स्वीकृत का करता है ।

कुछ लेखकों ने इस स्थिति में कहा कि जब किसी धुनिकता के साथ सम्बन्ध काल्पनिक इतिहासिकता के आधार पर सम्भव होती है तो जबसे धुनिकता स्वरूप को स्वीकृत होती है । जहाँ मैरिज (Marriage, 1957), पारोस (Parsons, 1951) और टोली (Tolley, 1953) ने बताया कि यदि काल्पनिकताओं को सविज्ञा स्तर में सम्बन्धित कर दें तो धुनिकता स्वरूप के स्वरूप सम्बन्ध को स्वीकृत कर सकते हैं ।

ऐसे ही विविध धुनिकता सङ्घर्षों में काल्पनिकता के आधार पर देने पर स्वरूप स्वरूप स्वरूप के अनुसार बहुत एक-दूसरे के स्वरूप करने जबसे धुनिकता स्वरूप को स्वीकृत स्वरूप है । इस प्रकार यदि धुनिकता सङ्घर्षों के बीच स्वीकृत में सम्बन्धित सम्भव करने तथा किसी एक स्वीकृत को विविध स्तरों की धुनिकता स्वीकृत में न रही तो धुनिकता स्वरूप को स्वीकृत है या स्वीकृत हो सकता है ।

(iii) धुनिकता स्वीकृतों में स्वरूप: प्रारम्भिक (Antecedent transactions in social processes)—एक धुनिकता के साथ धुनिकता में प्रारम्भिक (Antecedent) यदि स्वरूप होती काल्पनी धुनिकता स्वरूप का सम्बन्ध हो सकता है । ऐसा स्वीकृत सम्भव है क्योंकि प्रारम्भिक (Transactions) के विविध स्वीकृतता के होने के स्वीकृत स्वरूप को स्वीकृत करता है । यह स्वीकृतता सम्भव करने के लिए प्रारम्भिक (Transactions) सम्भवतः धुनिकता स्वीकृतों का स्वरूप होता सम्भव होता है स्वीकृत बहुत धुनिकता स्वरूप को स्वीकृत को स्वीकृत है ।

(iv) अधिकांशों और काल्पनी में पुनर्स्थापना—(Re-establishment of rights and obligations)—जब कभी धुनिकता सङ्घर्षों के अधिकांशों और काल्पनी में सम्बन्ध का सम्भव होता है तो को स्वीकृत धुनिकता स्वरूप का सम्बन्ध करता है । यह धुनिकता सङ्घर्षों के अधिकांशों और काल्पनी में पुनर्स्थापना स्वीकृत कर जबसे धुनिकता स्वरूप का सम्बन्ध हो सकता है ।

2. सम्बन्धित के सम्बन्ध सम्बन्ध—(Relationship between transactions)—स्वीकृत के स्वीकृत स्वीकृत स्वरूप को स्वीकृत की स्वरूप स्वरूप

( Value system ), बहुत ठोस ( Rigorously defined ) बुनियाद जगजाही की वैज्ञानिकता का हिस्सा बनने की चाहतें हैं । जहाँ व्यक्ति की तुलना जगजाही में सुलझाया, बहुत अधिकतर अभीष्टताओं का अनुपयोग, बुनियाद जगजाही की साधु-वैयक्तिकता का देकर बुनियाद जगजाही का समाधान कर सकते हैं । जहाँ तथा जग ( Gossak et al: 1938 ) ने अपने अध्ययनों द्वारा व्यक्ति के सामाजिक समाधान के जगजाही के बहुत की अवधि किया है ।

3. सांख्यिक कारणों से सम्बद्ध समाधान ( Statistical based on individualism )—कुछ सांख्यिक कारणों पर आधारित समाधान की बुनियाद जगजाही में बहुत होती है । यदि एक ही बुनियाद वैयक्तिक के व्यक्ति द्वारा बुनियाद समाधान के समाधान का समाधान होता है तो यह ही समाधान के समाधान है समाधान-विचार, एवं समाधान विचारित कर लेते हैं कि समाधान का एक समाधान समाधान समाधान होता है । ऐसा समाधान बुनियाद जगजाही के समाधान तथा नवी बुनियाद समाधानों के समाधान के समाधान को समाधान है । वहीं ( Gossak, 1938 ) ने अपने अध्ययनों के आधार पर देखा कि अपने व्यक्ति का किसी बुनियाद समाधान की सामाजिक कारणों का सामाजिक समाधानों के अनुपयोग नहीं होता यदि ही यह ही समाधान समाधान के द्वारा नवी समाधान विचारित कर बुनियाद समाधान का समाधान कर लेते हैं ।

वस्तुतः विवेचना के समाधान है कि बुनियाद समाधान की चाहतों के अपने समाधान है । वस्तुतः ही समाधान के समाधान की एक समाधान के बुनियाद समाधान की यदि समाधान नहीं तो समाधान समाधान किया का समाधान है ।

### बुनियाद समाधान समाधान के सिद्धान्त

( Theories of Social Revolution )

समाधान समाधानों में बुनियाद समाधान के समाधान की समाधान के समाधान के कुछ सिद्धान्तों का समाधान किया है । इनमें ही बहुत सिद्धान्त समाधान समाधान हैं—

(i) जहाँ तथा जग का बुनियाद समाधान समाधान सिद्धान्त ( Gossak's Theory of Social Revolution ) ।

(ii) गुड ( Gooden's ) का बुनियाद समाधान सिद्धान्त ( Gooden's Social Revolution Theory ) ।

(i) बुनियाद समाधान के समाधान का सिद्धान्त ( Theory of Social Revolution )—साथ, समाधान, एवं समाधान ( Gossak, Mavon et al: 1938 ) का यह सिद्धान्त के अनुसार बुनियाद समाधान का समाधान कर रहे व्यक्ति समाधान बुनियाद समाधान की समाधान का समाधान है और समाधान यह



कहाते हैं कि उनके धर्मशास्त्र कदापीसी की ऐसी व्यवस्था का अधिकार है जो वह या तो किसी एक व्यवस्था की अनुमति करते हैं, या सभी व्यवस्थाओं की अधिकारिता द्वारा अपने स्वयंसेवा करते हैं, या फिर दोनों में से किसी की पूर्ति नहीं करते । इस तथा अन्य के अनुसार ऐसी विनियमों में धर्मशास्त्र अधिकारों का प्रत्यक्ष लेन-देन किया जा सकता है ।

(1) व्यवस्था की अधिकारिता प्रमाणित ( *Justification of legitimacy* ), (2) अपने व्यवस्था की अनुमति के प्रति अनुमति के सापेक्षता ( *Justification of satisfaction* ), और (3) सापेक्षता के प्रति अनुमति की अनुमति ( *The satisfaction of relative legitimacy and satisfaction* ) । इन तीनों चीजों की चर्चा नहीं की जायेगी ।

(1) व्यवस्था ( *Legitimacy* )—जब कोई व्यक्ति अपने धर्मशास्त्र को लागू करता है ( *Legitimacy of satisfaction* ) करता है अर्थात् यह मानता है कि उसके धर्मशास्त्र कदापीसी की ऐसी व्यवस्था करने का अधिकार है जैसे किसी व्यवस्था । उसके द्वारा की व्यवस्था कि वह कोई भी प्रमाणित, प्रमाणित व्यवस्था है । लेकिन यदि कोई व्यक्ति अपने यह मानता है, तो वह व्यवस्था नहीं । इस तथा अनुमति के अनुसार अपने व्यवस्था ( *Legitimacy of satisfaction* ) के प्रति अधिकारिता प्रमाणित करता है जबकि व्यवस्था ( *Illegitimacy* ) व्यवस्था के प्रति अनुमति का अधिकार नहीं करता ।

यदि की अधिकारिता व्यवस्थाओं में एक व्यवस्था ( *Legitimacy* ) है तो अधिकारिता प्रमाणित वाली व्यवस्था के अनुसार व्यवस्था करना । यदि दोनों व्यवस्थाएं प्रमाणित होती हैं तो धर्मशास्त्र अधिकारिता अपने स्वयंसेवा करता है ।

(2) अनुमति ( *Satisfaction* )—अनुमति का अर्थ यह किया जाये कि किसी व्यवस्था के धर्मशास्त्र कदापीसी का धर्मशास्त्र अधिकारिता की अपनी व्यवस्थाओं की अनुमति या अनुमति होती है । व्यवस्थाओं की अनुमति करने वाली व्यवस्थाओं का व्यवस्था अनुमति ( *Positive satisfaction* ) और व्यवस्थाओं की अनुमति न करने वाली व्यवस्थाओं का व्यवस्था अनुमति ( *Negative satisfaction* ) होता है । यदि की व्यवस्थाओं में एक के प्रति एक व्यवस्था अनुमति होने पर अधिकारिता अपने व्यवस्था के अनुसार धर्मशास्त्र व्यवस्था करता है । यदि दोनों व्यवस्थाओं के प्रति व्यवस्था अपने व्यवस्था अनुमति होता है तो दोनों व्यवस्थाओं के अनुसार व्यवस्था करता है अर्थात् दोनों में स्वयंसेवा करता है । यदि दोनों व्यवस्थाओं के प्रति अनुमति नहीं होता है तो ऐसी विनियमों के अनुसार व्यवस्था नहीं है ।

(3) अनुमति ( *Obligation* )—अपने अनुसार धर्मशास्त्र व्यवस्था के



[12] अधिकतम के लिए महत्वपूर्ण व्यक्ति नहीं एक व्यक्ति सुविधा व्यवहार की जायज या अजायज प्रदान करें ?

उपरोक्त में अविचार करके 'सुख सुविधा' सीमाओं की सीमा निर्धारित करता है। किसी भाषा में मान्य सुविधा सुख के विषय में अधिकतमों में वृद्धि होती है। ऐसी परिस्थितियों में किसी भी व्यक्ति को वसूली करता है, की वास्तविक वसूली सुख के सम्बन्ध की वसूली करने का प्रभाव बढ़ सकता है। नहीं एक सीमावर्त या संवर्धन सुविधाओं, का प्रभाव है यह अवधि में वसूली करने के प्रभावों के प्रभावों की सम्बन्धित कर देती है।

यह व्यक्ति के वर के साथ सम्बन्ध करीब या प्रभावों में वृद्धि नहीं होती ही के साथ महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया अवधि में—यह सुविधाओं, व्यवस्था द्वारा व्यवहार की जायज प्रदान करती है।



## अन्तर्व्यक्तिक आकर्षण

( Interpersonal Attraction )

सांसारिक व्यवस्था एक जटिल एवं बहुसमायीत प्रक्रिया है जिसके कारण अन्तर्व्यक्तिक सम्बन्धों का प्रवर्धन करील हो जाता है। अतः समाज मनोवैज्ञानिक व्यवस्था के अनेक बहुत बलवर्ती की बहुमान तथा व्यवस्था में करीब लेते हैं। यह व्यवस्था अन्तर्व्यक्तिक आकर्षण का आधार भी है। स्वयं, स्नेह, मित्रता तथा प्रेम से सम्पन्न व्यवस्था ही व्यक्तियों के सांसारिक सम्बन्धों का केन्द्र है। दूसरी व्यवस्था साधारण बलवर्ती के कारण दोस्ती-प्रेम से तब विद्रुत हो सकती है। सामाजिक व्यवहार में सामाजिकता के अनुसंधान, समीक्षा सम्मान तथा श्रद्धा की आवश्यकता प्राप्ति होती है। सामाजिक-विविध व्यवस्था होती है। अतः सामाजिकता में आकर्षण उत्पन्न करता है। इससे साहचर्य और सम्बन्ध में वृद्धि होती है अतः इसके परिणाम स्वरूप और-और प्रेम, मित्रता और प्रेम का विकास होता है। बहुतों का मत है यह है कि व्यक्तियों में व्यवस्था ही आकर्षण का कर्म है होती है। एक-दूसरे के अन्तर्गत व्यक्तियों में ही व्यवस्था होती, सम्बन्धों में सांसारिकता होती है जो मित्रता, समीक्षा और मित्रता का कर्म के होती है। कुछ व्यक्तियों के प्रति स्वयं ही अन्य के प्रति व्यवस्था के कर्मस्वरूप सम्मान भी विवक्षित होती है। स्वयं की आकर्षण, सम्मान की विवर्धन करते हैं। इसके बहुतों की संख्या में आकर्षण-विवर्धन के बीच सम्बन्ध होती है। स्वयं या आकर्षण का सम्बन्ध किसी व्यक्ति का सम्मान सम्मान ( Positive evaluation ) और सम्मान, सम्मान और विवर्धन का कर्म है सम्मान सम्मान करता। व्यक्ति आकर्षण सम्मान प्रक्रिया है अतः इससे सम्मान, सम्मान-सम्मान तथा व्यवहार प्रेम प्रेम ( Cognition, evaluation and behavioural components ) विवर्धन होते हैं।

आकर्षण के विचारों की प्रवृत्ति के वैज्ञानिक समाज मनोवैज्ञानिक की सभी व्यक्तियों के बीच सम्बन्धों के विकास तथा प्रवृत्ति में बढ़ती या नहीं है (यह तथा मित्रता, 1981; अतः, 1983; इन्वील्ट तथा मास्टर, 1985 )। प्रेम तथा सम्मान ( 1987 ) के अनुसार अन्य व्यक्तियों के प्रति स्वयं की भाव ही आकर्षण है ही अन्तर्व्यक्तिक सम्बन्धों की-विषय और प्रवृत्ति पर निर्भर करती है (Attraction is the degree to which we like other individuals. It is based on the direction and the strength of interpersonal evaluations )।

सांसाधिक आन्दोलन अन्तर्गतकारी होता है और यह कारण यह आर्थिक उत्थान करने में सफल होता है, जो राष्ट्रपति एमरिट बारी के लिए अतिशय ही अभिलेखित करता है और सम्भवतः इसी आन्दोलन के दो या अधिक अभिनेता के आन्दोलन विकसित होता है ( बीनार्ड तथा बीनार्ड, 1964 ) । राष्ट्र के विपरीत तथा विकास के आन्दोलन का बड़ा महत्व है । जिस राष्ट्र में आर्थिक नहीं होता ( जैसे संयुक्त ) का अर्थ होता है किन्तु कारण बारी में राष्ट्र के प्रति विपरीत तथा बारीका बारी होता है और बहुत राष्ट्र अन्तर्गतकारी नहीं यह जाता । भारत तथा में आर्थिक बारी महत्वपूर्ण रहा है । सामाजिक और इसे के बारी बहुत बारीका बारी के सम्भवतः पता जाता है किन्तु इनकी अनेक आन्दोलनकारी की प्रति सामाजिक आर्थिक बारी विपरीत बारी है । बीनार्ड के इसके बहुत की इसके हुए इसे 'राष्ट्र में राष्ट्र की अन्तर्गतकारी' की बारी की बी । बीनार्ड तथा बारी ( 1979 ) के अनुसार आर्थिक के द्वारा अभिप्राय एक व्यक्ति की अर्थ के प्रति अन्तर्गतकारी बारी है । ( By association, we stand a positive attitude towards it and we stand a positive attitude towards it ) ।

[illegible]

अवस्थितिर्धो कः सुखदायकः ( Disbanding Managers ) अथवा ये पुरुष  
कानि कसौ व्यवसायों के लिये परिचित नहीं हो सकते । इन सम्पूर्ण जीवन काल में कुछ  
ही व्यवसायों के सम्पर्क कर पाते हैं—जिनके आर्थिक विकास होना है, या वाय-  
वासी और शक्ति के कारण विकसित होते हैं या सम्पत्ति की सम्पत्तियों के कारण  
विकसित हो जाते हैं ।

1. **सांघेयिक निष्कृष्टता ( Physicoid Procreancy )**—बहुधा प्राकृतिक सम्पूर्ण के कारण जल-बहुजन बढ़ती है। की जनसंख्या निवारण मात्र में साध-साध होती के कारण, या अतिमित एक समय पर एक ही लीन से जल सम्पत्ति है। इस प्रकार की सांघेयिक निष्कृष्टता के छोटे-छोटे परिवर्तन में बढ़ि होती है। बहुजन वाली के जल माध्यम का बहुजन होता है। जल एक दूसरे का परिवर्तन करते हैं। ( केपलर, 1980 )।

1999 के बाद हुए सीरी के स्थापित हुए है कि सर्वप्रथम का कोई नए सीरी के स्थापित के स्थापित विचारों के प्रति अज्ञान है, जबकि सीरी के (मान-व्यवस्था)





विस्तारित होते हैं। इस परिणाम के साथ हमें सोच से बाहर हुआ है कि—सम्भवतः वास्तविकता में कल्प वाले सभी युवा अवैवाहित अवल विवाही होते हैं और सम्भवतः ये युवा व्यक्तियों की अपेक्षा सामाजिक सद्व्यक्तियों से अधिक अवैवाहित करते हैं (कनाडन तथा मेहराविशाल, 1977)। सुख/आनन्द की कक्षा में सम्भवतः मात्र अवैवाहित में कल्प अंक बने होते, युवा अंक वाले व्यक्तियों की अपेक्षा 6 माह की अवधि में ही अधिक स्त्री की विवाह बना लेते हैं (लीनविलियर तथा माकली, 1985)।

पैकटवस तथा जस्टीस (1984) के कार्यों में सम्भवतः की वास्तविकता का दृष्टि दीर्घा अभिवेक (Perspective Abstraction) के रूप में है। इस विषय में सामाजिक अभिवेक यह है कि कल्प व्यक्तियों की अपेक्षा कुछ लोग अधिक दीर्घावर्त तथा लोहार्थ अवैवाहित सम्बन्धों से मिले अधिक प्रभाव रूप में अभिवेकित होते हैं।

सम्भवतः तथा विवाह के अभिवेकों के विविध व्यक्तियों के सामाजिक जीवन में ही व्यक्तित्व विप्लवों होती हैं। कल्प साथ ही वाले की अपेक्षा साथ के सभी व्यक्तियों में सामाजिक सुखकला अधिक होती है (माइकल तथा टवीर 1983)। उनके एक बड़ा लक्ष्य (विशेषज्ञ) होता है कि विवाह की जीवन (Opposite sex) के व्यक्तियों के साथ सामाजिक सम्बन्धकारी अवैवाहित करते हैं। कल्प जीवन के साथ सम्भवतः वास्तविकता वाले एक बार सम्भवतः स्थापित ही वाले पर युवा सम्भवतः व्यक्तियों से अधिक संतुष्ट होते हैं।

सम्भवतः वास्तविकता अवैवाहित परिस्थितियों की अनुकूलता के रूप में—टीक्टर (1959) के कार्यों में अवैवाहित व्यक्तियों द्वारा बताया है कि सुविधता तथा रूप के कारण लोगों में व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध करने की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। सम्भवतः पर साथ के व्यक्तियों के सम्बन्धकला में लक्ष्य जाता है कि सम्बन्ध व्यक्तियों में अवैवाहित परिस्थिति के विषय में साथ लोगों के साथ सम्बन्धन की प्रवृत्ति होती है। साथ ही साथ साथ की कक्षा में कल्प व्यक्तियों का साथ बढ़ते हैं साथ में अवैवाहित ही नहीं वही। वे उनके ही ही लक्ष्य है, उनके अवैवाहित, तथा अवैवाहित के विषय में लक्ष्य-बीज करते हैं। इस अवैवाहित की सामाजिक सुखकला की अवैवाहित के साथ के अवैवाहित विवाह की कक्षा का प्रभाव करते हैं। एक बार यह अवैवाहित रूप में कल्प जीवन सम्बन्ध ही करते हैं, जो सम्भवतः में लक्ष्य अवैवाहित रूप में बढ़ जाता है। वारिड तथा जस्ट (1978) के कार्यों में अवैवाहित के इस रूप की दृष्टि की है।

### आकर्षण के निर्धारक

यहाँ प्रश्न यह उत्पन्न है कि सामाजिक सभी और सभी विषयों और लक्ष्य संरचना में अवैवाहित करता है? इस के कुछ वर्षों में आधुनिक व्यक्तियों के लक्ष्य के अवैवाहित सामाजिक का अधिक अवैवाहित सम्बन्धकला हुआ है। सामाजिक के सम्बन्धकला



ही व्यापक नहीं है यही जाती है—(i) वह भी कार्यक्रम की शक्ति की विशेषताओं का प्रभाव नहीं है, क्योंकि जिसके अनुसार शक्ति द्वारा शक्ति के पूर्ण तथा विशेषताओं के कारण आकृष्ट होता है, और (ii) भी कार्यक्रम में होने वाले 'आम तथा दुर्घट' पर ध्यान देते हैं। क्योंकि वे भी कार्यक्रम के आम प्रभावों का आम और दूसरे सभी का प्रभाव को प्रभाव देते हैं।

अन्तर्गोपनिषद् अन्तर्गोपनिषद् के अन्तर्गोपनिषद्

## 1 Determinants of Interpersonal Attraction

[illegible]

1. **शारीरिक आकर्षकता ( Physical Attractiveness )**—यह शारीरिक रूप से व्यक्ति के व्यक्तित्व सुनौ या विविधताओं के सम्बन्धित होते हैं। शारीरिक आकर्षकता व्यक्तित्व विविधताओं में एक प्रमुख विशेषता है। शारीरिक आकर्षकता केवल ही महत्वपूर्ण रहा है। बेहरे और शरीर की सुन्दरता आकर्षक के वास्तविक के समान है। यह किताबी ही बात में होती है। पहले व्यक्ति बेहरे की सुन्दरता के सम्बन्ध और चर्चित होता है। सुन्दर व्यक्ति के प्रति बहुतों की तरफ में लोग उल्लेख, प्रशंसा, श्रद्धा सम्मान, सम्मान कुछ सम्मान करते तथा सम्मान, होने लगते हैं। ऐसी सम्मानों बाद व्यक्ति सभी क्षेत्रों में प्रभावित है। हमारी सभी पूर्व मान्यता ( Aristotle ) ने कहा था कि सुन्दर बेहरे किसी प्रभावितता का चिह्नमान नहीं होता। "Personal beauty is a universal recommendation which may result of recommendation." Aristotle ने कहा है कि सभी लोग आकर्षक चीजों का प्रभाव करते देखे करते हैं। इसका अर्थ कुछ अर्थों में सम्मान तथा सम्मान ( Walster et al., 1966 ) ने कहा तथा शारीरिक आकर्षकता के महत्व की समझ किया। उन्होंने एक सम्पूर्ण रूप आकर्षक की विशेषता, सम्मानों की सम्बन्धित प्रति के सुनौ ( smile ) में रहा, कहा। अर्थात् का सम्मान



एक वाक्य के लिये अनुसूचक वाक्यों के व्यवस्थित समूहों की आवश्यकता महसूस होती है। अतः अनुसूचक वाक्यों के लिए विशेष रूप से संशोधित विधा है। इसका परिचय यह हुआ कि प्रत्येक वाक्य के लिये आवश्यक व्यवस्थितों में सभी सुबो वाक्यों का आदीकरण करने से व्यवस्था यह बनती है कि “सुबो वाक्य”, ( *Subordinate clause* ) ।

3. **भौतिक आकर्षण तथा भौतिक आन्विष्य (Physical Attraction and Physical Interrelation)**—दुन्दर एवं आर्षण्य स्थितियों के साथ सृष्टि के स्थिति की अवस्था बहुत बदली है। भौतिक आन्विष्य आर्षण्य आकर्षण का एक प्रमुख विधायक है। भौतिक आन्विष्य या आन्विष्य आकर्षण की एक प्रमुख अवस्था है। आन्विष्य के एक क्षेत्र, आर्षण्य और विषय तथा सृष्टि और सृष्टि और अवस्था का विचार भी हो सकता है। अवस्थास्थिति की परिवर्तन के अनुसार अवस्था का क्षेत्र, सृष्टि का सृष्टि के विचार का है। (Boswell, 1932, Clark, 1933, Burr, 1973, Katz & Hill, 1938)। यह कार्य करने वाली की अवस्था का क्षेत्र सृष्टि का है। आन्विष्य के विषय भौतिक सृष्टि होती है (Gullikson, 1938, Kipka, 1939, Zander & Harvill, 1960)।

वास्तव में खीसीलिक दूरी का वास्तविक अर्थों में समझदारी नहीं है। यह वास्तविक या दूरी के सम्बन्धित सुझाव का सुझाव ही लगती है, वास्तविक की अवस्था, तथा वास्तविकता या वास्तविक (अर्थ: वास्तविक) का वास्तविक अर्थ है जो वास्तविकता वास्तविक की अवस्था करता है।

(ब) कल्पविद्या—अधोवैदिक या अधोवैदिक कल्पविद्या की संभावना बढ़ती है। जो लोग एक दूसरे के विरुद्ध अधोवैदिक रहते हैं उन्हें एक-दूसरे के बाधघोर, कल्पों आदि की संभावना बढ़ती ही लगाना होती है। ( Misra & Kishor, 1988 )। विपरीत विचारों के अधोवैदिक कल्पविद्या अपने आप में जगत् बहुमूल्य नहीं है जिसका कि कल्पविद्या का अन्तर्गत बहुमूल्य है। ( Chester Basko and Bridge Kishor 1977 )। एका विद्वान् यह है कि अधोवैदिक कल्पविद्या कल्पविद्या का अधिकांश अन्तर्गत है। जिसमें अधोवैदिक कल्पविद्या की संभावना बढ़ जाती है। कल्पविद्या की विधि के अधोवैदिक कल्पविद्या के एक अधोवैदिक ( Basko-Kishor ) में अधोवैदिक ( Basko-Kishor, 1981 ) के अनुसार, अधोवैदिक कल्पविद्या की संभावना अधिकांश होती है।

(ब) **साम्यक्रिया की अवस्था**—इसी अवस्था में साम्यक्रिया की अवस्था मान की परावृत्ति बढ़ा जाती है। जॉन डार्लि तथा जेम्स मार्लि (John Darl & James Marshall, 1974) ने अपने अध्ययन में देखा कि महिलाएँ जब कार्यवाही के प्रति अधिक उत्साह की दिशा में बढ़ती हैं। इसी के

एक व्यवस्थित की व्यवस्था समुदाय मानना उत्तम काही है तथा मिलने की व्यवस्था से उत्पन्न होकर अन्य व्यक्ति का सुख और संका व्यक्ति के मन में उत्पन्नकरने किया जाता है।

(स) मान्य प्रदर्शन ( *Moral exposure* )—सामान्य द्वारा मान्य की प्रशंसा का एक अन्य कारण भी है। रॉबर्ट जार्जोस ( *Robert Zajonc* ) एक अन्य ने अनेक अध्ययनों द्वारा प्रमाणित किया है कि व्यवस्थित के प्रतिपक्ष बहुत है और प्रतिपक्ष के प्रभाव उत्पन्न होता है या प्रभाव बढ़ती है। प्रतीक प्रदर्शनों के बाद-बाद प्रदर्शन पर प्रभाव करते या व्यवस्थित सुलभकरने की प्रवृत्ति प्रतीक प्रभाव कहलाती है।

4. समानता ( *Similarity* )—आर्थी प्रतीक कहकर है कि “( *Birds of a feather flock together* )” काफी समान वस्ती वाली विविध एक समुदाय बनाने को जाती है। ऐसे ही एक जैसे का समान समान वाले व्यक्ति एक दूसरे की संका प्रभाव करते हैं एक साथ एकजुट होने वाली हैं व्यवस्था के अनेक कारण हो सकते हैं। एक कारण यह हो सकता है कि समुदाय के अनेक समानता प्रतीक द्वारा एक दूसरे पर एकता ( *Unanimity* ) के लिए प्रभाव करते हैं। एक अन्य सम्भावना है कि तीन एक दूसरे को प्रतिक्रिया प्रभाव करते और साथ रहते हैं प्रतीक प्रभाव करते हैं। प्रभाव यह है कि समानता क्यों होती है? समानता प्रतीकवादी अध्ययनों से समानता की तीन विधाओं का प्रभाव स्पष्ट हुआ है जो निम्न है—

- (I) अभिवृत्ति की समानता ( *Similarity of attitudes* )
- (II) क्षमता की समानता ( *Similarity of Potency* )
- (III) व्यवहार में समानता ( *Similarity of behaviour* )

(1) अभिवृत्ति की समानता ( *Similarity of Attitude* )—डॉ. डी. हेनरी ( *Doc Henry* ) ने प्रभाव पर अभिवृत्ति-समानता के संबंधों पर अधिकतम प्रतीक की प्रदर्शित किया।

इसके अभिप्राय में प्रतीक एक अभिवृत्ति समानता करता है और साथ उसके एक व्यक्ति के विषय में निर्णय करता है। अन्य व्यक्ति ( सामाजिक ) के विषय में प्रतीकवादी उसे कुछ सुझावें प्रदान करता है। अन्य में प्रतीक इस सामाजिक प्रतीकवादी व्यक्ति के विषे अपना साधन-संकेत करता है।

एक सामाजिक अध्ययन में डी. हेनरी ( *Henry, 1941* ) प्रतीकों के प्रतीकवादी प्रतीकवादी को उस समय प्रभाव किया जब प्रतीकवादी व्यक्ति के 26 अभिवृत्ति प्रतीक का प्रभाव प्रभाव बढ़ती गया और प्रतीक के विषय। केन्सल एक प्रभाव ( *Kaplan & Anderson, 1973* ) ने अध्ययन के आधार पर देखा कि प्रतीक के प्रतीकों में एक-दूसरे के प्रति प्रभाव एक समय बढ़ जाती है जब किसी विषय का

समाज के उत्तर अपनी व्यक्तिगत सफलता होती है। दूसरे तथा तृतीय (Hinsdale & Karasick, 1983) ने भी व्यक्तिगत सफलता और आन्दोलन में सम्बन्ध बना दिया एवं अन्य अध्ययन में समझे तथा पढ़ाये (Paradey & Hinzburg, 1973) ने व्यक्तिगत सफलता और आन्दोलन में सम्बन्धक बहुमुखीता बना दिया। इनमें कारणों के अतिरिक्त एक अन्य व्यक्तिगत की ओर आकर्षण होते हैं जिसकी व्यक्तिगत उत्तरी अपनी व्यक्तिगतों के समान होती है।

(ii) व्यक्तिगत सफलता (Personalizing Similarity) — एक बहुमुखीता कर सकते हैं कि समान व्यक्तिगत वाले व्यक्तिगत समान सुखी, श्रेणी, आत्मसम्बन्धों और व्यवहारगत परिणामों वाले व्यक्तियों में एक दूसरे के प्रति आकर्षणता हो सकती है, और यह यह विषय बन सकते हैं। एक प्रकार व्यक्तिगत की समानता को एक व्यक्तिगत समानों की समानता की आकर्षणता को प्रभावित करती है।

कुछ व्यक्तिगत अध्ययन उनकी के लिए आकर्षण होते हैं — जैसे प्रभावशाली, अतिरिक्त व्यक्तिगत सुखी। पावर एवं वार्नि (Hinsdale & Hinzburg, 1970) ने कहा कि प्रभावशाली व्यक्ति अन्य समान रूप वाले के लिए की आकर्षण होते हैं, वस्तु, विचार और प्रभावशाली व्यक्ति की उनके प्रति आकर्षण होते हैं। वैक-एलियट एवं वीलीन (McClelland & Hinzburg, 1983) ने दर्शाया कि की व्यक्तिगत समानता होती की की वृत्ता है वे हैं वही अन्य वृत्ताओं की एक समानता वाले व्यक्ति की प्रभावता है और उनकी ओर आकर्षण होते हैं।

विशेषता एवं विचार (Hinsdale & Hinzburg, 1983) ने दर्शाया कि अतिरिक्त समानता वाले लोगों की ओर की-वृत्ता होती की की वाले आकर्षण होते हैं। फिर तथा एक (Hinsdale & Hinzburg, 1983) ने दर्शाया प्रभावों के सामाजिक सुखी की समानता के कारण सामाजिक आकर्षण के समान बना लिए।

व्यक्तिगत एवं अन्य (1984) ने अपने अध्ययन में व्यक्तिगत समानता की अतिरिक्त व्यक्तिगत समानता की आकर्षणता पर एक बहुमुखीता विश्लेषण बना दिया। इनके अनुसार व्यक्तिगत की समानता में वृद्धि व्यक्तिगत समानताओं में वृद्धि के सम्बन्ध है। फलस्वरूप (Hinsdale et al.,) तथा अन्य (1981) ने कहा है कि की व्यक्तिगत के समानता में वृद्धि के सामाजिक व्यक्तिगत समानता के समान में की यह समझें हैं कि व्यक्तिगत समानता एक प्रकार व्यक्तिगत सुखी के समानता सामाजिक आकर्षण का एक प्रमुख विश्लेषण है।

(iii) व्यवहारगत समानता (Behavioural Similarity) — ऐसे व्यक्तियों की की की वृत्ता कर सकते हैं की उनकी वृत्त व्यवहार किसी परिचित में करती है अर्थात् यह है कि व्यक्तियों की जिज्ञासों और व्यवहार की समानताओं की उनके सामाजिक आकर्षण का विश्लेषण कर सकते हैं। दूसरे तथा

काय ( Tatham et. al., 1984 ) ने अपने अध्ययनों द्वारा दर्शाया कि धार्मिक समूहों के विद्यार्थी उन अन्य लोगों के अधिक बेरोज़गार हैं जो बेरोज़गार, अप्रत्यक्ष या अन्य वैज्ञानिक योगदानों में उनके व्यवहार जैसे व्यवहार करते हैं। बीबीस उन बहुचर्चितों ( Kasper et. al., 1976 ) ने एक अध्ययनों द्वारा दर्शाया कि कि वह विद्यार्थी जिनमें व्यवहारगत समारोह—जैसे परीक्षा में कलम, कपड़ पहनना, परिवर्तन, महिला का जीवनिक पार, विरोध भी आदि होती है उनके जीवन विचार हो जाती है ।

एक बात स्पष्ट है कि अधिभूति, अधिभूति और व्यवहारगत समारोह जहाँ-कैथोलिक आदर्श का प्रमुख निर्धारक है । अन्य यह है कि समारोह के धार्मिक आदर्श में वृद्धि क्यों होती है ? प्रथम, समारोह सुधारों होने के साथ समीक्षा होती है वह; अधि के विचारों और विचारों को संयुक्त करती है वह। आदर्शों उत्पन्न करती है । द्वितीय, मैकगर् ( MacGraw, 1982 ) के अनुसार समारोह एक दुर्गम के लिए उपयोग प्रविष्टि ( Fossilization ) के द्वारा सामाजिक सुधार को उत्पन्न करती है ।

5. धार्मिकता ( Religiousness )—धार्मिकता आदर्श का एक अन्य प्रमुख निर्धारक है । धर्म की प्रतीति के भी बहुतबूढ़ है एकका बना रहना, जो धार्मिकता पर बहुत हद तक निर्भर है । धार्मिकता की माप ( Bryant, 1971 ) ने आदर्श का प्रमुख मापक बताया है । डैन ( Dinn, 1984 ) के अनुसार धर्म की मापक समारोह, और धार्मिक विचारों की नहीं बल्कि उनके साथ धार्मिक वेद, गीत, धर्म, धर्म आदि भी उनके प्रमुख निर्धारक है ।

6. धार्मिकता ( Religiousness )—धार्मिकता, धार्मिक में धार्मिक, या धार्मिक के नहीं बल्कि बहुतबूढ़ हो रहा है । धार्मिक के मापों की नहीं बल्कि धर्म की भी मापों करने की नहीं करते हैं । धार्मिक की माप धर्म-वैज्ञानिक आदर्श का एक निर्धारक वाली या नहीं है । धर्म समारोह के अपनी प्रतीति नहीं करता है । कुछ प्रतीति में धार्मिकता की आदर्शों की बढ़ती है । धार्मिक धार्मिकता की समारोह धर्म समारोह है किन्तु उनके समारोह के अलग होने में किसी की समारोह नहीं हो सकता । जीवन बना अन्य ( Jodan et. al., 1973 ) के अनुसार किसी धार्मिक द्वारा अपने समारोह की आदर्शता के बारे में दुर्गम पर समारोह के समय के अलग अलग के धार्मिक समारोह है । वह समारोह धार्मिक के समारोहों की धर्म केता है तथा उनके धार्मिक धार्मिक के समय है जो धार्मिक के आदर्शों नहीं समारोह हो पाता ( धार्मिक, 1990 ) । जीवन, जीवन बना धर्म ( Jodan, Jodan & Dargan, 1984 ) का विचार है कि धार्मिक धार्मिक समारोह ( जिसकी धार्मिक करता है ) धार्मिक के सभी-

कभी कभी हमें ऐसा करीब महसूस होता है कि वह दूर बातों में ही है ही नहीं मिलता, और सामग्री में कटका होता है और कभी कभी हमें ऐसा लगता है : इस प्रकार हमें ही कभी-कभी हमें ही एक निश्चित है :

[illegible]

आचार्यजी के विद्यालय

### Theories of Attraction

आमरीक के तीन सम्बन्धित कानूनों के बीच सम्बन्ध की आकांक्षी की एक व्याख्या की जा रही है, किन्तु के एक प्रकार एक दूसरे के विरुद्ध हैं कि सम्बन्ध की आकांक्षी की सम्बन्ध होता है । एक के अनुसार आकांक्षी का विचार इसी प्रकार होता है कि सम्बन्ध सम्बन्धित कानून ( *Interconnectedness* ) सम्बन्धित कानून की दूसरे के अनुसार सम्बन्धित एक दूसरे की सम्बन्धित सम्बन्धित है और दूसरे सम्बन्ध के अनुसार सम्बन्धित के बीच किन्तु अन्य की सम्बन्धित सम्बन्धित होती है । एक तीन सम्बन्धों की कानून की आकांक्षी :—

(ii) समरूपता तथा समतुल्य सिद्धान्त ( Similarity and balance theory ) कायम का अनुमान करते हुए ग्लोब्स ( 1956, 1961, 1981 ) ने आकर्षण के सिद्धान्त का विचार किया जिसके अनुसार किसी वस्तु के प्रति किसी अवस्थित अभिवृत्ति के कारण व्यक्तियों में आकर्षण विकसित होता है ( *These relations exist between persons as the attraction that they hold is connected to what they are* ) । समतुल्य या अभिव्यक्त व्यक्तियों के विवाही, मित्रतापूर्ण, दयावीकृत, उच्च तथा ग्राह्यता में संबंध के हैं । समतुल्य तथा वह है जिसमें संतुल्यता होती है अनुकूलता तथा आवर्त के रूप में होता है । यह सिद्धान्त बहुत AIX theory of attraction अनुमान है । सिद्धान्त के नाम इस प्रकार हैं—समरूपता करने वाले व्यक्ति अवस्थित वस्तुओं में होते पाते हैं । इन वस्तुओं के साथ व्यक्तियों के साथ के उनके प्रति कुछ विकसित अभिवृत्तियाँ विकसित होती हैं यह अभिवृत्तियाँ आकर्षण का अनुमान हो सकती हैं । यदि दो व्यक्ति समतुल्य की अवस्था करते हैं और वस्तुओं के प्रति अपना अभिवृत्ति रखते हैं । यदि वे एक-दूसरे की अवस्था करते हैं किन्तु वस्तु के प्रति विपक्ष अभिवृत्ति रखते हैं तो एक-दूसरे की ग्राह्यता होती है किन्तु वस्तु के प्रति अपना अभिवृत्ति रखते हैं, तो अपना या अनुकूलता की विपक्ष पाई जाती है । समतुल्य की विपक्ष के रूप का अधिक प्रति विकसित हो जाती है यह एक अनुमान की विपक्ष विकसित हो जाती है । व्यक्ति की

जबने सांख्यिक असाधारण और अत्यधिकरण में उत्पन्न अन्तर्भावनाओं की अभि-  
व्यक्ति करना पड़ता है। अनुसूच्य सिद्धान्त के AEX सिद्धान्त को जाने की चर्चा  
की गई थी। इस नाम के अनुसूचीय का अधिष्ठान यह है :—

A—अव्यक्ति व्यक्ति।

B—यह व्यक्ति जो अव्यक्ति कर रहा है।

X—सामान्य वस्तु या तत्त्व।

जब इन तीनों तत्वों AEX में सम्बन्धता पाई जाती है तो इसे संवृत्त कहा  
जाता है। सम्बन्धन के बिना यदि A तथा B अभिव्यक्ति या विविधताओं के नाम को  
जानने में लोगों वस्तु X को समझ या ठीकी मानकर करते हों तो यह अनुसूच्य की  
जाना नहीं जाती क्योंकि AEX-तीनों में सम्बन्ध सम्बन्ध है, किन्तु तीनों में से  
या तीनों व्यक्तियों तथा तीनों तत्व में से कोई भी विचार होता तो इसके सम्बन्धन  
की क्या उत्पन्न होती। जैसे A, तथा B नामक व्यक्ति एक दूसरे के प्रति सम्बन्ध  
अभिव्यक्ति या जान करते हैं किन्तु X की कोई एक समझ करता है और दूसरा  
मानकर वह X के प्रति उनकी अभिव्यक्ति समझ नहीं है तो प्रत्येकी अभिव्यक्ति नहीं  
जानती। पुनः अनुसूच्य की सम्बन्धता हेतु A या B में से किसी एक की अपनी अभि-  
व्यक्ति परिष्कृत करना होता। अनुसूच्य की क्या प्रत्यक्ष तथा पुनरीक्षण होती है।  
अनुसूच्य की क्या अनुसूच्य होती है और व्यक्ति तथा एवं वस्तु का अनुसूच्य करता  
है जो व्यक्ति की अभिव्यक्ति परिष्करण के सिद्ध प्रेरित करती है। वस्तु एवं तत्त्व के  
वृत्ति के सिद्ध व्यक्ति को विचार उत्पन्न करने करते हैं—

(I) A और उनके पुन समान है—ऐसी X के अनुसूच्य पुन की उत्पन्न  
कर उसके नाम सम्बन्ध जाती रही।

(II) X के प्रति कोई एक अपनी अभिव्यक्ति समझ में।

(III) X के प्रति ऐसी A तथा B अपनी अभिव्यक्तियों की समझ में।

यदि अनुसूच्य में अनुसूच्य की क्या X के कारण उत्पन्न होती है तो प्रत्यक्ष इस  
पर होता होता कि अनुसूच्य में X की क्या वस्तु प्राप्त है। जैसे अगर X अनुसूच्य में बहुत  
बहुत होता है तो सम्बन्धता उत्पन्न करने के प्रभाव में A और B अपनी अभि-  
व्यक्तियों को समझ सकते हैं। लेकिन जब X अनुसूच्य नहीं है तो कोई परिष्करण  
किसी की अभिव्यक्ति में नहीं होता और अनुसूच्य की क्या नहीं की नहीं  
जानी रहती।

जब किसी सामान्य अभिव्यक्ति वस्तु के प्रति जो व्यक्ति सम्बन्ध जान करते हैं  
और तीनों व्यक्ति प्रत्यक्ष एक-दूसरे की समझ की करते हैं तो संज्ञात्मक प्रत्यक्षी  
अनुसूचित होती है, लेकिन जब तीनों तत्वों अर्थात् दो व्यक्तियों और तीसरी वस्तु  
या विचार या सम्बन्ध में से कोई एक सम्बन्ध होने पर प्रत्यक्षी अनुसूचित होती





है कि अल्ट्रानिज़्म रसायनों के कारण प्रतिकृत (Mirages) उत्पन्न होती है जिसके कारण व्यक्ति अपने विविध परिचयित करते हैं (बीन्गलर तथा ड्रुवर, (1964)।

उत्प्रेरित व्यक्ति संभवतः के विचारों से स्वतः होता है कि संसार में संभावना होने पर व्यक्तियों के एक दूसरे के प्रति आकृष्ट होने की संभावना होती है। व्यक्ति-व्यक्तियों, विवेकवादी, विचारों और भावनाओं में समानता होने पर वस्तुतः उत्पन्न होती है जो आकर्षण का रूप ले लेती है। गुरुत्व के अतिवृद्धियों में समानता को आकर्षण का आधार बनाता है किन्तु अवधान व्यक्तियों के अवस्था के गौण गुणवादी तक होती है (बीन्गली, 1979)। संभावना में कभी जाती है (एन तथा ड्रुवर, 1966), अतिरिक्त, दूसरी के विचार, तथा संवेदन होने की भावना उत्पन्न होती है (एनड्रुवर तथा कायसिन्, (1966), अवधानता प्रत्यक्षीय होती है और लोगों की यह भावना है कि जो दूसरे अवस्थित है वह सम्भव करेगा (पैरसेलिक तथा ड्रुवर, 1963)।

(11) समानता पुनर्वसन के साधन के रूप में—समान्यता (Similarity as a source of reinforcement) आकर्षण का संभवतः सबसे अधिक कारणीभूत पुनर्वसन के साधन पर आधारित है, जिसके अनुसार हम उसकी वस्तु करते हैं जो पुनर्जन करते हैं तथा एक-दूसरे वाले व्यक्ति को सम्बोधन करते हैं। विद्युत् तक के व्यवहार के यह रूप स्पष्ट है। जो लोग किसी वस्ति की चीज से प्यारे हैं, प्यारे हैं, हाथी, बिले वा अन्य वस्तु से प्यारे हैं वस्ति उन्हें प्यार करते हैं तथा जो लोग प्यार करते हैं, प्यारे, पिछले वा ओह का प्रभाव नहीं करते, वस्ति उन्हें सम्बोधन करते हैं। इस प्रकार पुनर्जन के सम्बन्ध व्यक्ति वस्तु निर्धारित करते हैं। इस विचार में एनड्रु तथा ड्रुवर (1966, 1974) तथा कायसी (1973) ने यह परीक्षण करने का प्रयास किया कि व्यक्ति-व्यक्तियों की समानता में अवधानकारी गुण विहित हो सकते हैं। कायसी तथा ड्रुवर के अनुसार अन्तर्व्यक्ति आकर्षण का संश्लेषण अधिक अवधान के रूप में पर प्रकट है। व्यक्ति-व्यक्तियों की अतिवृद्धियों में किसी व्यक्ति समानता होती है वे एक-दूसरे के विचार करने हो अवधानकारी होने, अवधानक रूप में आकर्षण की उच्च अनुपात में होता।

इस प्रक्रिया (model) के अनुसार पुनर्जन के सम्बन्ध अर्थात्क अवधानक रूप और अवधानी अर्थात्क अवधानक भावना उत्पन्न करती है। अतः व्यक्तियों वा वस्तुओं वा पुनर्वसन अवधानक वा अवधानक भावनाओं की अनुवृत्ति की भावना के आधार पर करते हैं। कोई व्यक्ति दूसरे को बहुत अच्छा मानता करता है तो पिछले यह वह अवधानक रूप अवधानकारी अनुवृत्ति होती है। कायसी तथा ड्रुवर (1973) के अनुसार इस अनुवृत्ति का पुनर्जन गुण द्वारा होता है उसके प्रति

[illegible]

होबिद् एक छोटी बच्ची एक चम्पक उड़ती है और पूरे वन में जाती है।  
उसकी माँ बारम्बार उड़ना नहीं अनुमिता करता क्योंकि—वोने चुपकी है और एक  
हाकी बच्ची की देखी है। जब चम्पक उड़ना एक सुन्दर अनुमिता बन गई, बूँद  
देना करने पर माँ द्वारा चुपकी और जाती बने की सुन्दर अनुमिता सम्पन्न हो गई।  
जब वह सभी बच्ची बने के लिए चम्पक का तरीका करते लगती है।

सुसज्जित प्रयोगशाला के समुपार ठीक सही प्रक्रिया कायमकीजिए। आसानी से जासू होली है। बहुत थोड़ी सी आसानी से सम्पन्न हो जाती है। ( जो जले जाते होते हैं ) जबकि प्रति करोड़ों का विनष्टित होता है। और पकड़ने किसे जाने मरते हैं। इनमें विनाश भराव आते हैं—

६. एक सुरक्षित—अति अनेक वर्षों तक की और समय तक नहीं देता। कुछ की बहुत बड़ी मात्रा देता है, (आकृष्ट होता है) अन्य चीजों पर देता है। बहुतों वर्षों की बड़ी मात्रा देता है। किसी एक समय पर देता है।

2. एक भावना—सुखाना के एक प्रकार की सुख या सम्पन्नता की भावना जिसमें उत्साह होती है।

3. एक साहसिक—कभी-कभी व्यक्ति पुरस्कार होता है, किन्तु बहुधा पुरस्कार किसी व्यक्ति की उपस्थिति के सम्बन्ध होते हैं। महाभारत के लिए एक विशिष्ट विधि है क्योंकि किसी क्षेत्रीय या स्थानिक क्षेत्र के क्षेत्रों में ही वह पुरस्कार ( मेड ) के सम्बन्ध में जाता है क्योंकि वह स्थानिक क्षेत्र होता है। कभी-कभी क्षेत्रीय पुरस्कार के सम्बन्धित रूप के सम्बन्ध होते हैं।

4. एक निष्कर्ष—मुद्रास्तर के समस्त व्यक्ति जब समय की सुझाव प्राप्त करने वाली हैं जब सरकार को सीधे नहीं होते हैं, बल्कि केवल निम्न वाली हैं :

इसी प्रकार कुछ व्यक्ति किसी अनुसूचित जाति के सम्बन्ध ही नहीं हैं बल्कि एक साधारण-सामान्य व्यक्ति माने जाते हैं। जैसे कि नीट रिवा-कटन है कि समाज का ही वह नीट का, जो उनके प्रति अनुसूचित जाति कुछ करता है और जाति को सम्मान करने करते हैं। इस दृष्टि कीवत्त की व्यवस्था के लिए जातीयिक समर्थन प्राप्त है ( Kaptein and Olijne, 1970 )। यह समाज इस बात पर बल देता है कि वह व्यक्ति को सुधार मान के सम्बन्ध है, अनुसूचित जाति के सम्बन्ध व्यक्ति की विशेषता नहीं बल्कि निम्न जाति है। यह व्यक्ति उस जाति का कारण रहा हो या न रहा हो।

वापसी तथा बहुवर्षीयों ( वापसी एवं केमन, 1964, 1965, डिफिट एवं दुने, 1969, वापसी एवं केमन, 1966 वापसी एवं डिफिट, 1966, तथा डिफिट, 1970 ) के अपने वित्तीय-सांख्यिक अनुभवों द्वारा यह प्रमाणित किया कि व्यक्तियों की वित्तीयताओं में समानता उनके लिए आवश्यककारी होती है तथा व्यक्तिगतों में समानता विद्यमान व्यक्ति होती है। अपने परस्पर सांख्यिक की समानता होती है।

किन्तु कुछ अन्य लोगों ने यह प्रमाणित किया कि सांख्यिक तथा समानता में बहुत दूरता या अंतर समानता पर-आते हैं। डिफिट ( 1972 ) नेमर ( 1966 ) तथा कर्नी एवं कर्नी ( 1970 ) के अनुभवों में भी वित्तीय-समानता-सांख्यिक पर-कलन की पुष्टि नहीं हुई।

(iii) सांख्यिक तथा समानता किन्ने जाने की प्रत्याशा ( Attitudes and expectations of being liked )—अनेक प्रमुख सांख्यिक समानता यह प्रमाणित है कि समान किन्ने जाने की प्रत्याशा द्वारा सांख्यिक समानता होती है। व्यक्तिगतों की समानता के कारण सांख्यिक की समानता समान किन्ने जाने की प्रत्याशा द्वारा भी जाती है। अर्थात् समान व्यक्तिगतों के व्यक्तियों में समान किन्ने जाने की प्रत्याशा के कारण सांख्यिक समानता होती है। यह दुने के प्रति साक्ष्य होता है जब कने यह प्रमाणित होती है कि यह भी उसे समान करने ( यूरोपियन एवं रोमन, 1966, केमन 1966, रीमर 1967 )। जब इन यह प्रमाणित है कि समान व्यक्ति में समान व्यक्तिगतों हैं तो यह निष्कर्ष निकल सकता है कि समान व्यक्ति उसे समान कर सकता है या नहीं। इस प्रकार समान किन्ने जाने की प्रत्याशा समान समानता जाती है।

एक अध्ययन ने यह प्रमाणित किया कि बहुवर्षीय की समानता के पीछे व्यक्ति, अन्य बहुवर्षीय समानता लोगों की समानता करते हैं ( वासमर एवं वासमर, 1963 )। इसी प्रकार एक अन्य अध्ययन ने भी यह प्रमाणित किया है कि बहुवर्षीय व्यक्ति अपने बेटे ( समान ) की व्यक्तियों के विचार करते हैं क्योंकि ऐसे ही ( बहुवर्षीय ) समान व्यक्तियों में वे समानता सुनिश्चित की जाती है।

अन्य प्रकार की विशेषताएँ—व्यक्तिगत की समानता के व्यक्तिगत सांख्यिक व्यक्ति की सांख्यिक विशेषताओं की बहुवर्षीय जाती जाती है। कुछ अध्ययनों के प्रमाणित किया है कि व्यक्ति के सांख्यिक दुने ( एक-एक व्यक्ति ) की सांख्यिक समानता करने में बहुवर्षीय होते हैं ( वॉशिंगटन, रीमर एवं रॉयसन, 1971, तथा वासमर, यूरोपियन एवं रॉयसन, 1966 )। व्यक्ति की सांख्यिक समानता समानता, बीरता, एक-एक व्यक्ति की सांख्यिक का समान है। सांख्यिक विशेषताओं से व्यक्तिगत विशेषताओं समान है। विशेषताओं में समानता और सांख्यिक होती है।

इसी प्रकार व्यक्ति की सामाजिक, व्यावहारिक तथा व्यवसायिक विशेषताओं की अन्य अवस्थाओं की व्याख्या करती है।

(iv) पुरक व्याख्यानकारणों पर आधारित स्पष्टीकरण (Elucidation based on supplementary causal factors) —कारण: सामाजिक का इसी दृष्टिकोण का आधार यह है जो की व्यक्तियों में व्यवहार के अनेक विभवताओं पर इस दृष्टि है। इसके पीछे कार्यगत विचार यह है कि जो व्यक्तियों में पुरक कारणकारणों का अन्तर्गत कारण करती है (विष्णु, 1971:8)। इनके अनुसार व्यक्ति देखे अन्य व्यक्ति/व्यक्तियों की ओर आकर्षित होता है जिसकी अवस्थाओं या विशेषताओं एक दूसरे की पुरक होती है। इसके पीछे वैज्ञानिक विचार यह है कि व्यक्तियों में जिसका एक विशेषता है सोही उस परकी विशेषताओं का अन्तर्गतकारणों एक दूसरे की पुरक होती है। जैसे एक व्यक्ति में प्रमुख का गुण है तथा अन्य में प्रमुख की विशेषता करने का गुण है की इनमें आकर्षण उत्पन्न हो सकता है क्योंकि उन दोनों की विशेषता के इनकी व्यावहारिक व्यवहारकारणों की दृष्टि सेवक है। (विष्णु 1953) ने इनके अवस्थाओं द्वारा आधारित विचार है कि किसी विशिष्ट व्यवहारकारण वाली पर अन्य अनेक कारण होने वाले सोही वही व्यक्ति/व्यक्तियों के विचार करती है जो यह व्यवहारकारण के अन्तर्गत अनेक का पुरक व्यवहारकारणों में अन्तर्गत अनेक उत्पन्न करती है। व्यवहार के विद् प्रमुख की विशेषता वाले व्यक्ति/व्यक्ति/व्यक्ति के विचार करती है कि वह व्यक्ति/व्यक्ति की या प्रमुख विशेषता करने की उत्पन्न होती है। यद्यपि इसके अन्तर्गत नहीं है कि पुरकार प्रमुख वैज्ञानिक-वैज्ञानिक की नहीं है (विष्णु एवं विष्णु, 1977, कौटिल्य, व्युत्पन्न एवं कारण, 1960)।

आधुनिक प्रक्रिया पर आधारित स्पष्टीकरण (Explanation based on interaction process)।

एक दृष्टिकोण के अनुसार सामाजिक का आधार अवस्था है। इसमें दोनों के अवस्था यह निर्धारित करती है कि व्यक्ति/व्यक्ति की ओर आकर्षण होता। यही की ओर आकर्षण होने की अवस्था होती जिसके अन्य व्यक्ति/व्यक्ति/व्यक्ति कोण। इसके अन्तर्गत अनेक अवस्था है, किन्तु इसके प्रमुख सामाजिक का विशिष्ट विचार है।

### आकर्षण का विविध सिद्धांत

(Exchange Theory of Attraction)

वीनर एवं कैली (1929), होब्स (1961), तथा एलन (1954) ने विशिष्ट अवस्था के आधार पर अवस्था तथा अवस्थागत सामाजिक की अवस्था करने का प्रयास किया है। यद्यपि यह विचार में प्रमुखता तथा अन्य जैसे प्रमुखता दोनों की वही कारण-कारण करती है किन्तु यह अवस्था विचारों के ही सोही के अन्तर्गत है।



समाजशा, वास्तविक आकर्षण और विनिमय सिद्धान्त ( Similitarity concept) आकाशचिह्न सभी व्यवस्थित करने पर) — यह सिद्ध हो रहा है कि समाजशा, अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण से सम्बद्ध है, लेकिन पहले समाजशा का अधिगम, प्राप्ति करने, परे, रंग रूप, संज्ञा, समाज, आनु आदि को सम्बन्ध है। समाजशा में विविध गुणधर्म-गुण के कारण आकर्षण की भाषा बढ़ती है। विशेषतः या विशेषतः रूप होने के कारण समाज गुण या बहुत गुण होती है।

अब हमारे के समाज होने पर एक ही समा में व्यवहार कर रहे का एक ही आनु रूप में होने पर व्यवहार की सम्भावना अधिक होती है व्यवहार का समान समझ है आकर्षण के। एक प्रकार विषयों की एक दूसरे के विरुद्ध समाजशा की अवस्था यह कारण हो सकती है कि हमारी व्यवहार के अधिक समान मिलते हैं, अतः हमारे विषयों की सम्भावना भी अधिक होती है। एक प्रकार आकर्षण व्यवहार के समान पर भी निर्धार करता है। दूसरे यह कि, गुणगुण विनिमयों में समाजशा गुणों में समाजशा से सम्बद्ध है जो कि गुणधर्म है यथार्थ आनु का अधिक प्राप्ति कर समाज पर आम आवृत्ति की बहुमति समाज करता है ( बीकानेर, 1954 ) ।

सोमता और व्यवहार कीमतों की समाजों अधिक प्रतिष्ठित रूप है, यथार्थ गुणधर्म समाज समाज व्यवहार विविध सोमता का कीमत पर निर्धार होती है। कुछ कीमतों या सोमताओं के होने पर समाज व्यवहारों में आकर्षण यह पर निर्धार करता है कि एक गुणों के कारण से दूसरी विचारों होती हैं जो उनके विरुद्ध व्यवहारिक रूप से व्यवहारकारी होती है।

व्यक्तिगत विचारों तथा व्यवहारों की व्यवहार करने वाले समाज परामर्श के भी सम्बद्ध होती हैं? यद्यपि हमारी व्यवहार व्यवहारों की विविध विचारों के द्वारा भी जाती है किन्तु सोमता तथा वेरी ( 1959 ) के अनेक कारण बताते हैं—

(i) जो बीच एक दूसरे के विरुद्ध होते हैं वे कम समाज पर व्यवहारिक रूप करते हैं, अतः वे ऐसे व्यवहारों की आम करते हैं जो दोषों के प्राथमिक रूप से गुणधर्म होते।

(ii) विरुद्ध करने वाले समाज दूर करने वाली की व्यवहार अधिक समान होते हैं। दूसरी में समाजशा एक दूसरे को बहुमति समान करती है।

(iii) अब की व्यवहारों में विचारों व्यवहारों होती है जो वे एक दूसरे के व्यवहार का प्रतिष्ठित समान करने में अधिक समान होते हैं और अधिक समानता आकर्षण से सम्बद्ध है ( बीकानेर, 1954 ) ।

(iv) दोषों, व्यवहार एवं वेरी के अनुसार, व्यक्तिगत रूप से विरुद्ध व्यवहारों

में निम्नतर व्यवस्था, कार्यात्मक दृष्टी बाजी के साथ व्यवस्था से कम लाभदायक सम्भव होती है ( कर्म और प्रभाव—दोनों दृष्टियों के ) : अतः कम बाजों के समान होने पर कार्यात्मक निष्पत्ति अधिक लाभदायक होने के कारण अधिक सुसंभव होती है ।

(४) गुरुनान्त ( 1945 ) के अनुसार कम व्यक्ति व्यवस्था करते हैं वा सम्यक्साधन व्यवहार ( Commensurate behaviour ) करते हैं ही वे दूध-माछी का विनिमय करते हैं । यह ( अपने आप में ) अपने सम्बन्ध की मात्रा और आवश्यक से प्रति करता है ।

आकर्षक सिद्धान्त, विपदा पूर्व प्रेक्ष—विभिन्न प्रकार की व्यवस्थाओं—समस्या, प्रतिद्वन्द्वि, विपदा, मनु, सम्बन्ध, विपदा आदि के कारण व्यवस्था करता है और सम्यक् ही व्यक्ति के लिये होने-बोने आवश्यक कम बाजों ही को अपने विपदा ही जाती है । यह आकर्षक की एक कला है । यह विपदा की प्रभावदायक होती है ही आकर्षक की मात्रा में और प्रति जाती है और यह प्राकृतिक सम्बन्ध प्रेक्ष का कम से होता है । ऐसी तथा में सम्बन्धों और बीच ही जाती है यह दृष्टान्त में ही सम्बन्ध का जाती है ।

### समाजमितीय आकर्षक का मापन

(Secondary : The measurement of Attraction)

समाजमितीय पद्धति का उपयोग सर्वप्रथम मोरेली ( 1914 ) ने सन्तुष्ट संरचना के अध्ययन के लिये किया । इसके द्वारा सन्तुष्ट में आकर्षक का मापन, पद्धति—समस्या का कारण तथा समाजमितीय सम्बन्धों का अध्ययन करते हैं । मोरेली कई विधि के बीच सिद्धान्त में सम्बन्ध करते हैं । एक विधि में दूधे मात्रा प्रकार के सम्बन्धों का सम्बन्ध समाजमितीय विधि की बीच प्रतिक्रिया में प्रभावित हो चुका है । एक विधि द्वारा किसी भी सन्तुष्ट में पाये जाने वाले समाजमितीय सम्बन्धों का सामाजिक मापन कर सकते हैं । इसके अन्तर्गत सन्तुष्ट के अधिक प्रभाव के लिये लगे कार्य में पाये लेने के लिये संवेदनशील व्यक्ति करने का निर्देश देते हैं । यह विधि लगे कार्य एक सन्तुष्ट के ही करता है—साथ पद्धति, साथ एक समरे में पद्धति, साथ संवेदनशील, साथ विधिक पर मात्रा का साथ लियेवा मात्रा आदि । सभी प्रभावों के सम्बन्ध या सम्बन्ध सम्बन्ध करने को कहती हैं । एक सम्बन्धों की एक वैधानिक द्वारा प्रति है, जिसे सम्बन्ध आदि ( Secondary ) कहती हैं ।

समाजमितीय प्रदत्तों की व्याख्या—समाज आदि प्रेक्ष की सन्तुष्ट संरचना तथा सन्तुष्ट के सम्बन्धों में आकर्षक की मात्रा का दृष्टान्त प्राप्त करता है । पूर्णिक यह विधानिक पर है प्रतिक्रिया मात्रा है अतः एक ही सम्बन्ध में दूधे सन्तुष्ट की





समुहियों का पूर्णरूपण, प्रभुता, आकांक्षा, सामूहिक-उदात्ता-संज्ञितादि आदि का मानन। इसके अतिरिक्त अंतर्मुखितक आकर्षण से सम्बद्ध व्यक्तिगत कार्यों का मानन की समाश्रयिनि मानन से होता है। इससे समूह की संघटता (Cohesiveness) का भी ज्ञान होता है। समूह संघटता न्यून होने पर सामूहिक आकर्षण, सहयोग की भावना, समंजन तथा एक कुट होकर कार्य करने की प्रवृत्ति का अभाव होता।

**समाश्रयिनि प्रवृत्ति की सुविचार्यो—समाश्रयिनि प्रवृत्ति की निम्न सुविचार्यो है—**

- (i) इससे समूह की सामाजिक संरचना, सामूहिक आकर्षण, विभजन तथा सदस्यों के आपसी सम्बन्धों का ज्ञान प्राप्त होता है।
- (ii) इस प्रवृत्ति से समूह संघटता (Cohesiveness) का बोध होता है जो समूह संघटन का परिचायक है।
- (iii) समूह में केन्द्रन, मनोबल आदि का परिचय प्राप्त होता है।
- (iv) समूह में विफलकारी व्यक्तियों का बोध समूह के चर्चों (Cliques) के द्वारा होता है।
- (v) किसी समूह में सम्पर्कन चार्चों (Communication Channels) का पथन ज्ञान होता है।

**समाश्रयिनि प्रवृत्ति की अनुविचार्यो—समाश्रयिनि प्रवृत्ति से निम्न अनुविचार्यो होती है—**

- (i) केवल एक विधि द्वारा प्राप्त प्रवृत्तों पर विश्वास नहीं किया जाता, बल्कि दूसरा उपयोग प्रायः किसी अन्य विधि के साथ किया जाता है।
- (ii) इस प्रवृत्ति का उपयोग बड़े समूहों पर संभव नहीं है। अतः केवल छोटे समूहों का अध्ययन ही इसके होता है।
- (iii) इस प्रवृत्ति द्वारा प्राप्त प्रवृत्त अधिक मात्रात्मक नहीं होती। अतः अनेक मनोवैज्ञानिक इसे क्वांटिट एवं क्वालिटी प्रवृत्ति की मान्यता नहीं देते।

## पूर्वोपद्रु तथा विभेदन

( Prejudice and Discrimination )

अभिहितियों के लक्ष्य संकेत मिलता है कि हम लोग, समुदायों और समुदायों के विषय में कौन विचार एवं भाव रखते हैं। विष्णु अभिहितियों द्वारा हमारे समाज की प्रति साक्षी और व्यापक समझनाओं के भी सामर्थ्य है—दुर्भाव, विवेक और प्रयत्नपूर्ण भाव। ऐहिक जीवन में ऐसे अनैतिक प्रभावों का विरोध है जिसे प्रभावित होता है कि किसी व्यक्ति विवेक के प्रति समुदाय भावियों के समुदाय की सामान्य अभिहितियों द्वारा प्रभावित होते हैं। अभिहित तथा समुदाय के संबंधों का एक प्रभावपूर्ण प्रभाव तथा विवेक के सम्बन्ध में होता है। आज हमारे का कोई ऐसा ऐसा नहीं है जिसमें दुर्भाव, विवेक भावों की समझनाओं न हों। आज हमारे में आज सामाजिक प्रभावों में उनके की प्रभाव प्रभावों के कारण हुई है। दुर्भाव के कारण हम, सामाजिक समझ, विवेक, सामाजिक रहे तथा नई संघर्ष ( Class Struggle ) और सामाजिक प्रभावों सम्बन्धित होती है। आज सामाजिक विरोधी समुदाय, तथा सामाजिक समझ/सामाजिक भाव समझनाओं में समुदाय समुदाय का प्रभाव प्रभावित कर रहा है कि उनके सभी सभी प्रभाव प्रभावित है। हम हमारे की दुर्भाव कार्यरत है। भारत में उनके भावियों, सभी तथा की सभी भावनाओं के बीच के सभी लोग रहते हैं। आज दुर्भाव एवं विवेक की प्रभाव समझनाओं का प्रभाव भारतीय परिस्थिति में और भी अधिक बढ़ गया है। दुर्भाव के कारण व्यक्ति किसी समुदाय के सम्बन्ध में उनके समुदाय या समुदाय भाव एवं विचार विकसित करते हैं। हम हम किसी व्यक्ति के सुखों या दुखों की सभी प्रकार सभी बिना हम सभी समुदाय/समाज के सम्बन्ध पर उनके विचार में अभिहित या प्रभाव विवेक/विवेक करते हैं की इसे दुर्भाव ( Prejudice ) कहा जाएगा। जन्म की सभी का सुखी की समुदाय, समझ भाव समझ, विवेकों का प्रभाव विचार वि समुदाय भाव तथा समझ होते हैं, का समझनाओं द्वारा विवेक की प्रभाव ( विवेक ) कहा गया समुदाय की प्रभाव में दुर्भाव/विवेक प्रभाव है। ऐसी प्रभावों, विचार तथा विवेक समझ में नई समुदाय की सामाजिक प्रभावों एवं समझनाओं की समझ की है और उनके परिस्थिति/समझ विवेक सभी, भावियों, सभी में प्रभाव, समझ तथा सामाजिक प्रभाव समझ कर लोगों के समझ और सम की प्रभाव करते हैं। (Prejudice) एवं की प्रभाव "Prejudicialism" कहा है हुई है जिसका प्रभाव

है पूर्ण निर्लेख । इसमें यह तथ्य निहित है कि पूर्वाग्रह यह निर्लेख है जो उसी की जाति बिना दिया जाता है; इसलिये सामान्यपूर्ण होता है । यह निर्लेख अनविनय होता है क्योंकि बहुत कम से बहुत दिया जाता है । पूर्वाग्रह व्यक्तियों के अतिरिक्त समूहों, समाजों, राष्ट्रों तथा दुष्टों और विविध समूहों, जातों और विचारों आदि के प्रति भी हो सकता है ।

एत० एच० बिट के अनुसार पूर्वाग्रह का सर्व सामान्य में अतिरिक्त वा अत्यन्त दुष्ट मत है । ( "The word prejudice actually means a premature or biased opinion" ).

बीबीसी तथा वेबमन ( 1914 ) के अनुसार, पूर्वाग्रह एक ऐसी अभिवृत्ति है जो किसी व्यक्ति की किसी व्यक्ति, समूह के प्रति अनुकूल वा अनानुकूल नीति के सोचने, समझने, और अनुकूल करने वा बिना करने के लिये पूर्वज्ञ (Prejudice) करती है । (Prejudice is an attitude that predisposes a person to think, perceive, feel, and act in favourable or unfavourable ways toward a group or its individual members ).

कुछ अन्य मनोवेत्तानियों के पूर्वाग्रह की परिभाषित करने हुए यह है कि यह किसी एक समूह के लोगों के प्रति असहिष्णु, अनुचित वा अनानुकूल अभिवृत्ति है । (Prejudice refers to an intolerant, unfair, or unfavourable attitude toward another group of people." Harding, Proshansky, Kuster and Cheln, 1949 ).

रॉबर्ट ए० बेरल तथा रॉन राबर्नी ( 1988 ) के अनुसार पूर्वाग्रह, केवल एक समाज के आधार पर किसी समूह के सदस्यों के प्रति एक अभिवृत्ति है जो सामाजिकरूप से होती है । ( "Prejudice is an attitude ( usually negative ) toward the members of some group based solely on their membership in that group. In other words, when we state that a given person is prejudiced against the members of some social group, we generally mean that she or he tends to evaluate its members in some characteristic manner ( again, usually negatively ) merely because they belong to that group. Their individual traits or behaviour plays little role, they are liked or disliked simply because they belong to a specific social group" )

अब हम पूर्वाग्रह की एक विशेष प्रकार की अभिवृत्ति मानते हैं जो इसमें दो समूह एक निहित होते हैं । (1) अभिवृत्तियों बहुत संभावित (Schemata) के रूप में कार्य करती हैं क्योंकि अभिवृत्ति में संभव के संभाव्यतम प्रति, आधारा तथा



में बनार होता है। पूर्वादिष्ट के साथ भी ऐसा कुछ होता है। कभी-कभी पूर्वादिष्ट व्यक्ति बहुत से मनुष्यों के मर्यादा के प्रति आत्मतक अभिव्यक्ति रखते हुए उन्हें प्रत्यक्ष रूप में प्रकट करने में असमर्थ होते हैं। आधुनिक सामाजिक चिन्तन, या यथार्थ जिसे जाने के रूप में उन्हें मुख्यतः आध्यात्मिक अभिव्यक्तियों के विकास में देखते हैं। कभी-कभी ऐसे अवरोध आधुनिकता की होते हैं। जब आध्यात्मिक मान्यताएँ विचारण तथा व्यवहार प्रणालियों का एक निष्कर्ष के रूप में अभिव्यक्त होती हैं। ऐसे विवेकपूर्ण व्यवहार कई रूप लेते हैं। सबसे पहले यह रूप है कि व्यवहार के कारण आध्यात्मिक अभिव्यक्तियों का परिहार किया जाता है। बीच-बीच में इसके कारण लोक-विशेषों के सामान्य अभिव्यक्तियों को बाहर रखते, जिसका एक अवसर व ऐसे और तरीकों में व पहले की ही विचारों का एक होता है और सबसे लोकप्रिय रूप विवेक के द्वारा प्रकट प्रकाशन होता है, जिसमें प्रत्येक मनुष्य का विकास होता है। इस प्रकार विवेकण किया रूप में पूर्वादिष्ट है। (Dissemination is practical in action)

विवेक के रूप—कहकर लोक समग्र अभिव्यक्तियों का प्रतिष्ठित किया किसी समग्र के करने का प्रयास करते हैं। वे होते हैं आधुनिक मान्यताओं हैं। एक प्रकार प्रत्येक विवेक (Socialism of dissemination) के अवरोध द्वारा प्रकट होता है—कभीकि यह अपने आध्यात्मिक विचारों को विचारों में सहायक होते हैं। यहाँ हम अपने दोषों की चर्चा करते—(i) प्रकट करने की सहायता प्रकट, (ii) विचारण प्रसार के प्रतिकार/टीकेषण (Tokesion), (iii) विचारण विवेक (Retention dissemination)।

(i) सहायता में आत्मतकाली (Retention to help)—इसमें प्रत्येक अवरोध में पूर्वादिष्ट व्यक्ति प्रकट करने की जिम्मेदारता करता है सहायता देने के आत्मतकाली करता है। किन्तु स्पष्ट यह नहीं कहते कि वे आधुनिक मनुष्य के प्रति पूर्वादिष्ट होने के कारण सहायता नहीं करते बल्कि इसके लिए कोई उचित सहायता करते हैं, विवेकपूर्ण एवं परिणीतियों में जब प्रत्येक व्यक्ति की उपस्थिति होती है। (Dissemination of Donnell, 1977)। इसके कारण प्रकट हैं। जब प्रत्येक प्रकट करने वाले को प्रकट होते हैं तो पूर्वादिष्ट व्यक्ति अपनी विचारण का प्रसारण प्रकट विचारण के द्वारा करते हैं कि वह अपने व्यक्ति आत्मतकाली करने।

(ii) टीकेषण (Tokesion)—प्रत्येक विवेक का प्रसारण रूप वह है जिसमें विवेक में टीकेषण विधि होता है। पूर्वादिष्ट व्यक्ति आत्मतक मनुष्य के मर्यादा के विषय छोटे-छोटे प्रकट करने अपने आत्मतक के अवरोध हेतु करते हैं। वे प्रकट अवरोध करने वाले जाने वाले विचारण के विवेक करते हैं। बीजे (1982) के अपने अवरोधों द्वारा प्रकटित किया कि टीकेषण का प्रसारण प्रकट प्रसारण प्रकट होता है।



संक्षिप्त में वे किसी व्यक्ति की जगह समूह (Group) या जाड़ा समूह (Outgroup) या समूह मानते हैं। इस प्रकार की विन्यास करने में बहुत सारा विशेष उद्योग रहता है। व्यक्तिगत के सर्वेक्षण के कारण ही जगह समूह तथा जाड़ा समूह का प्रभावित उत्पन्न होता है। जगह समूह के प्रति जाड़ी मान्यता, व्यक्तिगत तथा विचार और जाड़ा-समूह के साथ अनानुसृत व्यवहार, नुती भावनाएँ तथा समाजगत विचार समूह कर लिये जाते हैं और इनमें जगह प्रभाव व्यक्तिगत जीवनगत धारित्व लिये जाते हैं। जगह समूह के प्रति मान्यता की भावना विशुद्ध सामाजिक है। (डेवलीन एवं डीनर, 1982) सामाजिक जगह की दो विशेषताएँ हैं विचारित करने की प्रथम प्रकृतियों के प्रभाव जैसे लोगों के राज होते हैं (जायने, औरतिय, तथा देवदर, 1980), सामाजिक तथा जगह, 1979)। इन सभी अवस्थाओं में जगहों के सामाजिक रूप से जाड़ा समूहों के प्रति व्यक्तिगत व्यवहार व्यवहारों की प्रतीति इनके प्रति व्यक्तिगत अनानुसृत प्रतीति दिया।

जगह समूह है कि व्यक्ति जगह समूह तथा जाड़ा-समूह का विभाजन क्यों करते हैं? सामाजिक तथा समूहों की (1982) के अनुसार विभिन्न सामाजिक समूह के साथ सामाजिकरण के द्वारा वे अपने व्यवहारगत (Self concept) में वृद्धि करते हैं। वे इन प्रतीति की सामाजिक-प्रतीति (Social comparison) करते हैं। एक सामाजिक मान्यता (Minkowski and Wierman, 1985) के अनुसार समूहगत की अनुपस्थिति के कारण जाड़ा-समूह का व्यवहारगत की मान्यतागत ही होती है। क्योंकि यह व्यक्तिगत रूप से दिया कि विशेष रूप से उदात्त अनुपस्थिति समूहगत के कारण जाड़ा समूह के जाड़ी का और की अनानुसृत व्यवहार होता है। इन सभी प्रतीति के इस विचार की समर्थन मिलता है कि सामाजिक जगह की दो जाड़ी—जगह समूह (इन) तथा जाड़ा-समूह (वे) में विचार करने की प्रतीति-समूह जाड़ी (Radial), जाड़ी (Radial) तथा जाड़ी प्रतीति की प्रतीति और विकास में बहुत प्रतीति मिलती है।

2. सामाजिक प्रतीति—प्रतीति की प्रतीति के कुछ उदात्त जाड़ प्रतीतिगत पर मत देते हैं। जाड़-समूह के अनुपस्थिति के अनुसार प्रतीति जाड़ों द्वारा व्यक्तिगत की के जीवन का एक रूप है। जगह (Oser 1948) का कथन है: "Race prejudice is a social attitude propagated amongst the public by an exploiting class for the purpose of stigmatising some group as inferior so that the exploitation of another group itself or its resources may both be justified."

अमेरिकी राज दूर के प्रतीति जाड़ी का जीवन जाड़ प्रतीतिगत के कारण



का । सामान में हथिनियों, झेड़वाली जाति के शीत पुष्पिकों की कलापि की जाति।  
 बुधिकादी के कारण ही हैं । जाति के विशेषण गुण वर के सब जाति वाली  
 की उलही जाति। बुधिका के कारण निम्न वस्त्रा जाति जका । जाति में वस्त्रा  
 में वस्त्र निम्न जाति की सामान कमीशन की निम्नजाति के अनुसार जाति। बुधिका  
 वस्त्र निम्न जाति वर जाति। वस्त्र जाति जाति जाति की जाति। बुधिका  
 के निम्नजाति की जाति। वर जाति । इस जाति जाति निम्न जाति में जाति जाति का  
 जाति के जाति ।

**सुधीयत सभा विमोचन : संवैधानिक दृष्टांत**

**[ Prejudice and Discrimination : Theoretical Approaches ]**

दुर्भाग्यवश तथा विविधता के कारणों की वजह बनने के लिए सर्वत्र विज्ञान प्रति-  
पादित किए गए हैं। सर्वत्र साक्ष्यों के समीचीन प्रमाण "The Nature of Progress-  
ism" ( 1939 ) के विविध कारणों/प्रमाणों की वजह की है। इसमें बहुत  
ज्यादा विवरण है।

2. सामाजिक-सांस्कृतिक तरीका (Sociocultural approach) :- समाजशास्त्री तथा मानवशास्त्री इस अध्ययन के द्वारा पुरुषित तथा विवेक की कल्पना करने का प्रयास करते हैं : वे इस कार्य की पुरबिद्धता का विश्लेषण करते हैं : इससे निम्न प्रत्यक्ष है:-

- (i) स्थरीकरण, ( Urbanisation ), शरीरीकरण (Industrialisation) और सामाजिक स्थिरताओं में वृद्धि,
- (ii) कुछ वस्तुओं की ऊपर की ओर गतिशीलता, ( Upward mobility of certain groups );
- (iii) बड़ा एवं अधिकतर पर अधिक नए तथा शीघ्रियों के अभाव में लोगों में वृद्धि;
- (iv) बढ़ती हुई जनसंख्या, जनशक्ति शक्ति का अभाव तथा अत्यधिक स्थिरताएँ;
- (v) अनेक स्थितियों द्वारा सामाजिक वर्गों के विकास में अदीप्ता, कुछों पर अदीप्ता तथा जनसंख्या अत्यधिक में वृद्धि;
- (vi) परिवार की शक्ति का और अभावों में परिवर्तन तथा इसमें अत्यधिक स्थिति के अभावों में परिवर्तन ।

1910 के बाद संसार के अधिक बड़े देश अमेरिका का बाद में जर्मन, बड़ी संख्या के रूसियाली, फ्रांसीसी, व बेल्जियम के कारण के कारण रूसीयों की दरमय करने के कारण हुआ भी इसी सामाजिक-आर्थिक अर्थक के एक रूप था (Barnes, 1910)।

नगरीकरण में वृद्धि की भारतीय समुद्धी के निम्न पूर्वानुमान का एक कारण है। बाइसन ( 1947 ) ने अमेरिका में शहरीयों के निम्न अनुमान नगर के क्षेत्रों में स्थायी पूर्वानुमान में समीकरण को कुछ कारण बताए। अमेरिकी रोज ( 1948 ) बाइसन समीकरणों ने शहरीयों के निम्न अमेरिका में स्थायी पूर्वानुमान की भी इसी कारण बताया। उनके अनुसार शहरीयों के निम्न पूर्वानुमान इसीलिए बनाया गया क्योंकि वे नगर जीवन के उत्पीड़न हैं।

सांख्यिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण से नगरीकरण सांस्कृतिक-समुद्धी के प्रति पूर्वानुमान की व्याख्या की होती है किन्तु इसके द्वारा अनेक समुद्धी के प्रति अचलित पूर्वानुमान की व्याख्या संभव नहीं है। भारत में हिन्दुओं में मुसलमानों या बुद्धजनों में हिन्दुओं के प्रति पूर्वानुमान की व्याख्या संभव नहीं है। भारत के इन दो समुद्धी वर्गों की सांख्यिक तथा सांस्कृतिक विशेषताएँ एक ही और एक आधार पर उसमें कोई विभक्तता नहीं देखी जाती।

कुछ समुद्धी की उत्पत्ति की ओर प्रतिबोधता (upward mobility) की पूर्वानुमान और विशेषता को कम होती है। जब कोई निम्नतर समुद्धी वर्ग के भारी पर आवे बढ़ने लगता है तो उच्च-उच्च के पूर्वानुमान उसके निम्न विस्तार होने लगते हैं। शहरीयों को अग्रगण्य से जो वर्ग का आधार निम्न एवं बेचकर निम्न वर्ग के लिए प्रवेशान में अनेक समीकरण की रिपोर्ट के अनुसार निम्न वर्ग की योजना पर पुनर्गठन का आवश्यकता अत्यधिक और भी तीव्र हो गया है।

इसी प्रकार स्थायित्व के बाद विज्ञान तकनीक की प्रगति के नीकरी के लिए विशेष आवश्यकताएँ एक महत्त्व आवश्यक हो गई है जहाँ से नीकरी/रीकरण के अभाव में बढ़ती हुई बेकारी और बेरोजगारी ने समाज में वृद्धि करती है।

राष्ट्रीय परिस्थितियों में जो यह कारण कार्यरत प्रतीत होता है। अत्यन्त विकास एवं तकनीकी प्रगति ने प्रविष्टि के महत्त्व को बढ़ा दिया है। इस प्रगति के कारण उच्च समुद्धी के बढ़ते हुए उपभोग ने प्रविष्टि के महत्त्व को बढ़ा दिया है। लोकतांत्रिक के अभाव में कुछ समुद्धियों में अर्थों में वृद्धि का अर्थ उदाहरण के लिए मानव विकास विशेषी एवं आर्थिक समीक समीक है। इस विषय में राष्ट्रीय परिस्थितियों में अध्ययन का अभाव है।

नगरीकरण में वृद्धि होती जा रही है, जिसमें अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। एक ओर उच्च जीवन स्तर की कमी है जो शहरी और ग्रामीण की समस्या अलग होती जा रही है। एक बढ़ती हुई समस्याओं के कारण की गलत प्रकार के पूर्वानुमान विकसित हो गई हैं।

समाज की प्रगति के कारण जीवन की परिस्थितियाँ बढ़ रही हैं और अब जीवन अधिकतर उच्च होता जा रहा है। समाज की बढ़ती हुई परिस्थितियों के कारण

अनेक भौतिक आन्तरिक समस्याओं के निवारण में सहायक होने के कारण दुर्गोत्थ के सामाजिक मामलों के प्रति सहभागिता में वृद्धि करने का रहे है। दुर्गोत्थ समूह द्वारा स्वयंसेव के कारण समाज में एक नया है। भौतिक आकाश समूह के प्रति हुए समाज में अनेक दुर्गोत्थ एवं विविधता मानक का रूप धारित करने का रहे है। समूह द्वारा ही कार्य करने की प्रति दुर्गोत्थ मानक के प्रति सहभागिता की भावना करता है। अतः अनेक लोग दुर्गोत्थ मानक के प्रति सहभागिता व्यक्त करते जा रहे है। (करी तथा पैट्रिकिनु, 1938)। पैट्रिकिनु (-1938) ने अवलोकित किया है कि समूह का स्वयंसेव करने की प्रवृत्ति किन स्थितियों में अधिक होती है के साथ लोगों की अनेक स्थिति दुर्गोत्थ होने है।

दुर्गोत्थ की अवधि में परिवार की चुनिका तथा इसके लोगों में परिवर्तन होते जा रहे है। इसी कारण वैयक्तिक के समस्याओं में सहायता की प्रवृत्ति बढ़ रही है। की दुर्गोत्थ तथा विवेक के निवारण में सहायक होती है। सामाजिक परिस्थितियों के कारण परिवार की चुनिका और समस्याओं में परिवर्तन जा रहे है। इस परिवर्तन के कारण आता-जाता एवं परिवार के लोगों का अधिक समय करने में व्यतीत होने के कारण लोगों के वास्तव-जीवन में प्रवृत्ति की अनेकता कम समय में है। अतः लोगों की वैयक्तिक और वास्तव-जीवन की अनेकता होने के बाद समस्या और प्रतीत होती जा रही है। समस्याओं की प्रवृत्ति हुई किन्ना के कारण वैयक्तिक जीवन हो रहा है की दुर्गोत्थ की प्रवृत्ति बढ़ता है।

3. परिनिवर्तितव्य दृष्टिकोण ( *Reorientational perspective* )—दुर्गोत्थ के अधिक कारण स्थितिगत तब तक करने करते है। इसमें यह प्रतीत है कि कुछ लोग दुर्गोत्थ होने है किन्तु कुछ लोग नहीं प्रवृत्ति होते है। सामाजिक-वर्गीय-वैयक्तिक आकाश वास्तविकता के निवारण प्रतीक स्थितियों की दुर्गोत्थ का एक कारण मानती है। स्वयंसेवता की प्रवृत्ति हुई प्रवृत्ति करने एक मुख्य कारण है किन्ना वर्षों हुए कुछ समय हुई कर चुके है।

असादीय वा राष्ट्रीय समुदायों के प्रति अवलोकित दृष्टिकोणों में समय के साथ परिवर्तन एक प्रमुख परिनिवर्तितव्य कारण है। वैयक्तिक विषय कुछ की अवधि में अनेकियों कारणों अपने वास्तविकता में देखा अकार किन्ना किन्ना आन्तरिकी एवं व्यक्तियों के विषय में आकाशव्यक्त दृष्टिकोणों तथा यह अवधि अन्य वैयक्तिक राष्ट्रीय-निवर्तितव्य के प्रति आकाशव्यक्त दृष्टिकोणों निवर्तित हुई। कुछ के सामाजिक जीवन में अवलोकित अनेकियों वास्तविकता के अवधि की अवधि-परिवर्तित तथा और बढ़ा। 1948 में यह क्षेत्रीय समुदाय स्थितियों में अकार आकाश हो गया, की दृष्टिकोणों वासी परिवर्तित हो गई। परिवर्तित का निवेदन की वास्तविकता रहा किन्तु 1948 में अधिक अनेकियों यह अवधि के लिए निर्देशी ( *Crowl* ) का निवेदन प्रमुख करने अने।

विशेष रूप में उसी ही बर्तनों के पुनर्गठन में ही परिवर्तन आये और जब एक एक विशेषी देश बन गया तो परिस्थिति के परिष्कार के बर्तनों के उद्धार के विफलता बर्तनों के पुनर्गठन में परिवर्तन अभिव्यक्त हुए। इसी प्रकार बर्तनों के विफलता में अभिव्यक्ति वास्तविकी में अनावश्यक बर्तनों में दोषों देशों के सम्बन्धों में सुधार के सम्बन्धन आये अतः सामाजिक-सांख्यिक विज्ञान ही है।

भारत-वीर युद्ध के पूर्व भारतीयों के बर्तनों के प्रति अत्यन्त प्रतिशुद्धि विचारण थी, किन्तु 1942 के युद्ध के बाद बर्तनों के प्रति भारतीयों की प्रति-शुद्धि बर्तन अत्यन्त ही थी। इस प्रकार के बर्तनों पर अपना विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिकों ने अपने सम्बन्धों द्वारा प्रकाश डाला था। इस प्रकार परिस्थिति का कारण ही प्रभाव की प्रभाव करने में अत्यन्त ही है।

3. सामाजिक-सांख्यिक (Psychosomatic approach)—परिस्थिति-सम-सांख्यिक के विफलता प्रभाव का एक अन्य उदाहरण ही प्रभावित व्यक्ति के बर्तनों तथा पुनर्गठन का परिभाषा करता है। इस सम्बन्ध में किन विद्वानों की धारा की जाती है अत्यन्त ही है मनोवैज्ञानिक है, क्योंकि इसके पूर्व-परिस्थिति-सांख्यिक, ऐतिहासिक या सामाजिक-सांख्यिक विज्ञानों पर आधारित है। सामाजिक विद्वानों के अनुसार प्रभाव तथा विफलता की प्रभाव के विवेक प्रभावित व्यक्ति पर प्रभाव की प्रभाव करता होता। Deane तथा Wrightson (1944) के अनुसार "According to these theories if you want to alter prejudice and discrimination, you must first directly on the prejudiced person" तथा परिभाषा यह है कि पूर्व-परिस्थिति-सांख्यिक की प्रति-शुद्धि विद्वान, इतिहास, समाज, अतः, ऐतिहासिक और सामाजिक में प्रभाव के कारणों की प्रभाव न करके प्रभावित व्यक्ति में प्रभाव के कारणों की प्रभाव मानते हैं तथा उनके अनुसार प्रभाव की प्रभाव व्यक्ति की विचारणों, बुद्धि, सम्बन्धों तथा सम्बन्धन के दोषों के कारण होती है। व्यक्ति की प्रभाव प्रभावों के कारण प्रभाव प्रभाव का सामाजिक-सांख्यिक ही होता है और व्यक्ति प्रभाव प्रभाव के प्रभाव करता है।

इसमें ही एक विद्वान की प्रभाव यह है कि प्रभाव की प्रभाव प्रभाव की प्रभावों में प्रभाव होती है, क्योंकि प्रभाव या प्रभाव प्रभाव प्रभाव में प्रभाव-प्रभाव है। प्रभाव और प्रभाव ( Frustration and deprivation ) प्रभाव में प्रभाव-प्रभाव होती है। प्रभाव और प्रभाव के प्रभाव में प्रभाव प्रभाव ( Hostile impulses ) प्रभाव होती है, जो यदि विफलता नहीं की जाती तो प्रभाव प्रभाव-प्रभावों की प्रभाव अत्यन्त ही प्रभाव होती है। ( Frustration and deprivation lead to hostile impulses, which if not controlled are likely to discharge against other minorities" Allport, 1951 )

(i) **बाबूला का विन्यास (Scapegoating)**—इसके अनुसार पुनरा-  
का मुक्त वापस आनेवाले के लिये सब जमानेवा नहीं होता या जब उस पर बाबूला  
संभव नहीं होता तो पुर्नसृष्टि व्यक्ति की बाबूला एवं लोक सब बलिदानों बाबूलों  
के प्रति विन्यासित होती है। इस प्रकार यह सिद्धांत एक अधिकतर पर आधारित  
है कि व्यक्ति अपनी कमजोरियों का कारण सब व्यक्ति या बाबूला की मानता है।  
उत्पन्न परिस्थिति (Situational Attributions) बाबूला क कारण सब बलिदानों बाबूला की मानती  
किन्ती विशिष्ट अवस्था का कारण मानकर उसके प्रति पुर्नसृष्टि विवेक करते हैं  
और इस प्रकार सबकी बाबूलों की अभिमान का कारण (Scapegoating) का करते  
होते का कारण बनते हैं। भारतीय परिस्थिति में विन्यास पुर्नसृष्टि में बाबूला  
विन्यास सिद्धांत की पूर्णता बहुत होने का अनुमान किया जा सकता है।  
आजकालों का अभाव होने के कारण हमें सब में इस पर हमारा ध्यान आकर्षित  
नहीं है। इस बाबूला विन्यास का अन्वेषण पुर्नसृष्टि व्यक्ति एक प्रकार का प्रति-  
पक्षक प्रतीत करता है जिसमें यह अपनी कमजोरियों के लिये अपने भाग की दोषों का  
सहारा कर यह भारतीय जन व्यक्ति या बाबूला पर मानता है। यह किया किसी  
अधिक होती यह मानता ही पुर्नसृष्टि होता। इस विन्यास की परिणाम  
की पुनरा के अनुसार बाबूला कालीन तथा अधिक कमजोरियों के प्रति विन्यासित  
ही जाती है।

पुनरा का विन्यास सिद्धांतों के पुर्नसृष्टि के विषय में वैदिक तथा विवर  
(1957) ने प्रत्यक्ष करते (Situational theory) तथा किसी करते (Personal  
theory) में विवर किया। प्रत्यक्ष करते की यह संभावना कि बाबूला पुनरा का  
सबका है, या पुनरा का पुर्नसृष्टि होने पर की लोक प्रभावित ही करते है इस  
संभावना करते के सब के अपने वेद अनुसार एक होकर सब संभावित करते का  
पुनराका करते की होता ही करते है। इसके अन्वेषण पुर्नसृष्टि में वैदिक के तरी  
के प्रभाव सब लिये। किन्तु किसी सब लिये दोषों करने का सब पुर्नसृष्टि की  
सहारा है, की कि पुनरा सिद्धांत के अधिकतर के अनुमान है।

(ii) **अधिकार की बाबूला और संरचना—**यह मान्य व्यक्ति की  
का पुर्नसृष्टि की पुर्नसृष्टि का कारण मानता है। इसके अनुसार पुर्नसृष्टि केवल  
काली व्यक्ति में विकसित होता है इसके व्यक्ति का परिणाम दोषों का पुर्नसृष्टि  
होते है। यह मान्य पुर्नसृष्टि की मान्य नहीं मानता, बल्कि इसके अनुसार पुर्न-  
सृष्टि सिद्धांत व्यक्ति की लोक विन्यास और अनुमान मानना के कारण मान्य  
होता है। यह विन्यास का अधिकार के करते करते व्यक्ति का एक सब सब है  
जिसमें आकाशी या बाबूला (Authoritarian) व्यक्ति में विन्यास की  
किया प्रति होती है। एक पुनरा "The Authoritarian Personality"



अपने कार्य आत्मनिष्ठता वस्तुओं के प्रति ऐसे अनन्यतापूर्ण संन्यास विवर्जित होते हैं जिसका पूर्वसंन्यास किया जा सकता है ।

(11) अशोभन ( Disrespect )—जब व्यक्ति अपने पूर्ण या अंशहीन को अन्य व्यक्ति या वस्तु पर आरोपित करते हैं तो, इसे अशोभन कहते हैं । इस प्रकार का अशोभन आमतः के अर्थोंमें किया जा : एक विशेष बात यह है कि व्यक्ति अपने अपने आत्मवस्तुओं का अशोभन करने में नहीं करते बल्कि अपने केवल अर्थात् पूर्ण की ही वस्तुओं पर शोभते हैं । वस्तुतः सर्व कहते हैं किन्तु इसे अन्य लोगों के लिए सब भले हैं अर्थात् यह कहते हैं कि वे हमारे प्रति वस्तुतः शोभते हैं, जब : हम ही उनके प्रति ऐसी शोभना शोभते हैं । सीटी-वालों के विषय में हमारे प्रधान अर्थोपेक्षा में मिले हैं । इसकी संभावना भारतीय परिस्थितियों में भी समुद्र होने की है ।

कहा कि वैदुष्टिक ( Pedigree ) में शक्ति है कि पुर्वाग्रह सभी नैतिकतापूर्ण दृष्टिकोण आधुनिकता (Ecclesiasticalism) की ओर खिंचे हुए हैं । इसके अनुसार तीन बातें माननीय की आवश्यकता नहीं मिली जीवन के अनुभवों के आधार पर होती है । ( People's knowledge is not a knowledge in itself but a knowledge of the world ) और एक व्यक्ति की शक्ति अपने ही विवेक विवेक है अन्य कम विवेक व्यक्ति की अनुभव एवं कारण कहता है । किन्तु अनेक प्रकार के पुर्वाग्रहों की शक्ति अर्थोपेक्षा कारण द्वारा समझ नहीं है । विवेक के एक पुर्वाग्रह तथा विवेक अनुभव वस्तु में शक्ति ही की शक्ति अनुभव शक्ति इस विवेक की शक्ति होती है ।

(12) अर्थोपेक्षा ( Philosophical Approach )—एक उदाहरण के अनुसार व्यक्ति के अनुसार अर्थ (Philosophical approach) का नहीं बल्कि अर्थ के अनुसार व्यक्ति का अनुभव किया जाता है कि : नैतिकतापूर्ण दृष्टिकोण के लिए, ही व्यक्ति की विवेक विवेकताओं की शक्ति पर सब होता है, यह अनुभव व्यक्ति के आत्मनिष्ठ अर्थोपेक्षा पर सब होता है । किसी एक बात की शक्ति एक ही नहीं बल्कि अनेक शक्तियों में होता है । हमारी शक्ति अनेक कारणों द्वारा प्रभावित हो सकती है—वैदिक विवेक के साथ हमारे पूर्व अनुभव, सभी परिस्थिति के साथ व्यक्ति की परिस्थिति के वे सब विवेक और हम शक्ति के प्रति । इन कारणों या उनके अर्थों द्वारा अनुभव की अनुभवित करते हैं । जैसे किसी व्यक्ति-हस्त विवेक विवेक की शक्ति में अन्य विवेक का अर्थ एवं कारण अनुभव और शक्ति "आत्मनिष्ठ" कहा जाता है । किन्तु अन्य विवेक ( ही भारतीय, सभी नैतिक-करी है ) की शक्ति में हमारे अनुभव और विवेक कहा जाता है । हमारे शक्ति में पुर्वाग्रह का यह अनुभव आत्मनिष्ठ अर्थोपेक्षा पर सब होता है तथा अर्थोपेक्षा विवेकताओं की और अर्थोपेक्षा बहुत कम शक्ति होता है ।







ईमानदारी की बात यह है कि लोग बहुत कमसे कम, या कभी-कभी के या कभी-कभी बहुतसे के धोखों के शान में सक्रियता करता करता करते हैं। इस अवधि के मूल में भी अधिकतर व्यक्ति अन्तःसमूह के ही सम्पर्क रखते हैं। अन्तर्भावक समूहों में निहित संरचना विपरीत पाई जाती है जहाँ अन्तर्भावक समूहों के भी कुछ सामान्य रचना बहुत है ( Kelly, 1954 ), यद्यपि इनमें अधिकतर सामाजिक सक्रियता करने समूह के सदस्यों तक ही सीमित होती है। क्या विभिन्न समूहों में सम्पर्क बढ़ाने के प्रयत्न में कभी कोई का करता है? सम्पर्क प्रकल्पना के अनुसार यह संभव है और गरीब ( 1953 ) के अनुसार अधिक अच्छे तरीके हैं बिना प्रतीत होता है कि सम्पर्क में वृद्धि प्रयत्न में करी या करती है। जहाँ जहाँ-जहाँ विभिन्न सामाजिक समूहों के सदस्यों में परिचय बढ़ता है, ही उन्हें आशय होता है कि वे रिश्ता बनाने के लक्ष्य नहीं अधिक प्रयत्न है। अन्तर्भावकों की बहुतों ही प्रेरणा एवं भावना के सामाजिक आकर्षण की प्रभावता करते हैं। कौटुम्बिकों में परिचय के प्रति प्रतिरोध होता है यद्यपि कभी-कभी अन्तर्भावक प्रकल्पना प्रभाव होती पर कभी-कभी नहीं है। यहाँ विभिन्न समूहों के बीच एक दूसरे की कठोर अच्छी तरह जान पड़े है, जिसके कारण यह अन्तर्भावक अधिकतरों प्रभावकारी होने लगते हैं। कृष्ण, नई दूरी सम्पर्क के माध्य समूह की ( Kinsch-kinship ) का नाम लगाया ही जाता है। इन कारणों के आधार होता है कि बढ़ते दूरी अन्तर्भावक सम्पर्क के प्रयत्न में करी या करती है।

किन्तु इस विषय में दुर्भाग्यवश विभिन्न उत्तर प्राप्त होते हैं। ऐसे सम्पर्क आकर्षण प्रभाव प्रदान करने में केवल यह समय महत्व होते हैं जब यह (सम्पर्क) बहुत ही विशेष दशाओं में प्रतिष्ठित होते हैं ( कुक, 1955 )। यह यहाँ विषय है—

(i) जहाँ, अन्तर्भावक पर यह समूहों की सामाजिक, आर्थिक, या कार्य-सम्बन्ध परिधि ( context ) में सम्पर्क प्रभाव होता पाई है। यदि वे इन माध्यों पर अधिक विचार होते ही इनमें सम्पर्क प्रभाव होता और यहाँ के कारण प्रयत्न वह करता है।

(ii) सम्पर्क परिधि में सहयोग एवं सम्पर्कप्रभावता होने बाह्य तात्त्विक समूह सम्पर्क प्रभावों के उत्पन्न का प्रभाव करें।

(iii) समूहों के बीच सम्पर्क अन्तर्भावक होता बाह्य तात्त्विक के एक-दूसरे की कभी प्रभाव प्राप्त करें।

(iv) सम्पर्क ऐसे सम्पर्क में प्रतिष्ठित होता बाह्य यहाँ, अन्तर्भावक सम्पर्क प्रभाव के लक्ष्य में ही जहाँ कभी के लोगों की सहयोग का प्रभाव अन्तर्भावक प्रभाव होता है।

(२) समुद्रों में वस्तुधारा का रूप ऐसा होना चाहिये कि एक-दूसरे के बारे में उनके अनुमानका और अधिकृतिक विचारों और भावनाओं का सम्बन्ध हो सके ।

(३) ऐसे सम्बन्धों में भाग लेने वालों को पहले समुद्रों का जलविज्ञान समझना है इसके साथ सुन्दर सम्बन्धों को साथ व्यवस्थित या वर्गीकृतियों के प्रति साक्षात्कीकृत कर देने ( सागरार, 1984 ) ।

सुख ( 1985 ) तथा रोडरिज ( 1978 ) के अनुसार जब समुद्राधुनी समुद्रों के जलविज्ञान विचारों में सम्बन्ध प्रतिष्ठित होते हैं, तो पहले बीच पुर्वीयुद्ध में कमी जाती है । पुर्वीयुद्ध तथा समुद्रोन्मेषों में अनेक कारणों में समुद्रों को जलानों के सम्बन्धें वृद्धि द्वारा सम्बन्धों के अन्तर्गत पुर्वीयुद्ध में कमी का सम्बन्धन किया (पुर्वीयुद्ध, विज्ञान तथा विकास; 1978) । इनके सम्बन्धन में ३ जलों के समुद्रों में एक विविध सम्बन्ध की सीमा । समुद्र के जलविज्ञान को एक सम्बन्ध का एक दिना हुआ भाग पैदा करना या और फिर इसे सम्बन्ध के सम्बन्ध समुद्र करना का । इसका समुद्र विज्ञान सम्बन्ध सम्बन्ध के व्यवस्थित विज्ञान पर निर्भर था । जल, जलोत्पत्तियों को विचार समुद्र सम्बन्ध को साथ करना था । इस सम्बन्ध विज्ञान द्वारा जल विज्ञान उद्योगधुनी में । इसके बाद विज्ञान विज्ञान ( विज्ञान सम्बन्ध ) का सम्बन्ध किया गया ( विज्ञान समुद्रोन्मेषों सम्बन्धी समुद्रों विज्ञान ) जलों में अन्तर्गत वृद्धिकरण में न केवल कमी सम्बन्ध की वार्द साथ सम्बन्धों के सम्बन्धों के प्रति वर्तन में वृद्धि का सम्बन्ध की दिया ।

एकी राज्य के विज्ञान सुख ( 1984 ) तथा उनके समुद्रोन्मेषों में की साथ फिर । इस सम्बन्धन में सम्बन्धों में दो सम्बन्ध सम्बन्धों में साथ साथ किया, जिसमें एक सीधों और साथ सीधों का । उन्हें एक सम्बन्ध/सम्बन्ध सीधों ( सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध ) में साथ किया या जिसके विविध राशियों पर सम्बन्धित पैदा-सीधों राशियों की प्रति निर्दिष्ट की । यह सीधों सीधों की जिसमें अनेक सीधों विज्ञान सम्बन्ध में । विज्ञान सम्बन्ध में समुद्र सम्बन्धों विज्ञान सम्बन्धों की और सीधों सम्बन्धों में सीधों तथा समुद्रोन्मेषों सम्बन्धों ( समुद्रों के बीच ) सम्बन्ध तथा सीधों की सम्बन्धों हैं । इस प्रकार विज्ञान समुद्रों में सम्बन्धोन्मेष सम्बन्धों सम्बन्धों की सम्बन्धों के सम्बन्धोन्मेष समुद्रों और पुर्वीयुद्ध के सम्बन्ध सम्बन्धों का सम्बन्ध है । सम्बन्धों में 1980 के पूर्व सीधों तथा सम्बन्धों के सम्बन्ध सम्बन्धों में । इनके एक सम्बन्धों में किया की सम्बन्धों सम्बन्धों की और सम्बन्धों सम्बन्धों की किया में सम्बन्धित किया गया । अधिकृतियों तथा अन्तर्गत अधिकृतियों में सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्धों के विज्ञान सम्बन्ध ( सुख, 1984 a, 1984 b, 1985, विज्ञान तथा विकास, 1984 ) ।

दूसरी प्रकार सीधों तथा सम्बन्धों ( 1974 ) में सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्धों के





सर्वोच्च परिणाम प्राप्त किए। वेन ( 1933,36 ) ने सुखोन्मुख सम्पर्क में लेम्बर विधि के द्वारा दस विषय में काफी सफल परिणाम प्राप्त किये। इन तथ्यों का समर्थन क्लेन सोलकलाशों ने किया ( केन्द्रीय तथा आन्वीर्षी, 1935, इतिवट, 1936, मोनर 1935, 1936 )। पूर्वाग्रह के विरुद्ध प्रचार माध्यमों का उपयोग करके इसे बदला जा सकता है।

6. कानून द्वारा (Through Legislation)—कानून द्वारा पूर्वाग्रह, भेद-भाव एवं पक्षपात को समाप्त करने के उपाय को अपनाया जाता है। भारत में अस्पृश्य/द्विजनों के साथ पूर्वाग्रहित व्यवहार किया जाता था। सरकार ने कृपा-सूत्र को वैधानुसी बना दिया। इसका कुछ प्रभाव अवश्य पड़ा किन्तु कृपा-सूत्र तथा अनेक पूर्वाग्रह विरुद्ध सचास न हो सके। वास्तव में लोगों की अभिदृष्टियों में परिवर्तन तथा अवगत होमार किये बिना केवल कानून के सहारे पूर्वाग्रह का जन्मरुन संभव नहीं है।

## अध्याय 12

### सामाजिक अन्तःक्रियाएँ ( Social Interactions )

समुदाय एक सामाजिक जीव है। जहाँ सभी सदस्यों और समूहों में सामाजिक अन्तःक्रियाएँ चलते रहती हैं। समाज, सामाजिक सम्बन्धों का समूह-जाल है, एक जाल है सामाजिक सम्बन्धों का। सामाजिक सम्बन्धों की संरचना समाज के विभिन्न समूहों—जैसे कुटुंब, पड़ोसियों, स्कूलों, क्लबों, क्लॉ, तथा समाज-संगठनों में व्यवस्थित व्यवस्थाओं द्वारा होता है। यह व्यवस्था का व्यवहार सामाजिक क्रिया का एक पैसा है। एक प्रकार से यह समझें कि सामाजिक सम्बन्ध समाज का निर्माण करने वाले समूहों की सामाजिक व्यवस्था पर निर्भर करता है। यह दो महत्वपूर्ण बिन्दु हैं जो किसी न किसी प्रकार की सामाजिक व्यवस्था पर निर्भर करते हैं। एक यह कि समाज एक मुक्त समूह में बने हैं। जो व्यवस्था होती है परि-चार व्यवस्था के भी सामाजिक, विचार, व्यवस्था, संस्था, मुक्त की परित हो करता है।

### सामाजिक अन्तःक्रिया का अर्थ

( Meaning of Social Interactions )

जहाँ-जहाँ सभी के सामाजिक व्यवस्था के व्यवहार पर निर्भर रहा होता, किन्तु जहाँ-जहाँ मुक्त है सामाजिक व्यवस्था पर निर्भर मुक्त व्यवस्थाओं द्वारा हो सकती है। मुक्त मुक्त व्यवस्थाएँ निर्माणित हैं।

समाज एक वैयक्तिक ( Individual & Group ) के अनुसार एक-मुक्त के पर परस्पर मुक्त की क्रिया ही सामाजिक व्यवस्था है। ( Social interaction is a process whereby two individuals or the groups of individuals )

समाज यह क्रिया है जो सामाजिक सम्बन्धों में विभिन्न समाज व्यवस्था होती है। जहाँ-जहाँ द्वारा समाजों के बीच सामाजिक सम्बन्ध व्यवस्था होती है। समाज मुक्तों के विचारों, व्यवस्थाओं, तथा व्यवस्थाओं द्वारा व्यवस्था होती है।

विष्णु ( विष्णु, 1950 ) के अनुसार, "सामाजिक व्यवस्था यह सामाजिक व्यवस्था है कि जिस व्यक्ति सामाजिक व्यवस्था और व्यवस्था के द्वारा एक मुक्त पर व्यवस्था है।" ( "Social interaction is the reciprocal influence which human beings exert on each other through interstimulation and

interaction," ) समुदाय सामाजिक प्रतिक्रिया में रहते हैं जहां अन्य व्यक्तियों के सम्बन्ध रहना उसके लिए अत्यन्त स्वाभाविक है। समाज का हर व्यक्ति अपने घर, दुकान तथा वीथी के अनुसार दूसरों को प्रभावित करता है तथा प्रभावित होता है। सामाजिक अन्तर्क्रिया एक सर्वव्यापक अन्तर्क्रिया है। गीन (Gins) के शब्दों में, "सामाजिक अन्तर्क्रिया का अन्वितान उस पारस्परिक प्रभाव के है जो अपनी समुदायों के सम्बन्धों और सदस्यों की शक्ति में व्यक्ति और समूह एक दूसरे पर डालते हैं।" (By social interaction is meant the mutual influence that individuals and groups have upon one another in their attempt to solve problems and in their striving towards goals.) सामाजिक अन्तर्क्रिया कारण बनकर सामाजिक प्रक्रिया है। सरलेह समाज में, सभी समान नहीं बल्कि व्यक्ति और व्यक्ति के समूह, कभी-कभी न किसी समुदाय के सम्बन्धों वा पूर्वनिश्चित व्यक्तियों की शक्ति में संलग्न रहते हैं। इन दोनों कार्यों के सम्बन्धों के प्रभावित करते तथा प्रभावित होते हैं। यही प्रक्रिया सामाजिक अन्तर्क्रिया है।

गिल्लिन तथा गिल्लिन (Gillie & Gillie; 1955) का कहना है कि "सामाजिक अन्तर्क्रियाओं के सम्बन्धों हर तरह के क्रियात्मक सामाजिक सम्बन्धों तथा सभी प्रकार के पारस्परिक सम्बन्धों के हैं, चाहे वह सम्बन्ध व्यक्ति-व्यक्ति के बीच हों, वा समूह-समूह के बीच वा व्यक्ति और समूह के बीच हों।" (By social interaction we refer to social relations of all kinds in functional-dynamic social relations of all kinds—whether such relations exist between individual and individual, between group and group and group and individual as the case may be.)

न्यूकोम्ब (Newcomb; 1959) का कहना है कि, वह प्रक्रिया जिसमें एक व्यक्ति दूसरों की प्रतिक्रिया और अनुक्रिया करता है और दूसरे उसे देखते हैं और अनुक्रिया करते हैं, अन्तर्क्रिया यही जाती है। "The process by which an individual notices and responds to others who are noticing and responding to him is known as interaction."

किम्बल यंग (Kimball Young; 1960) के अनुसार, "विस्तृत रूप से परिभाषित उस उच्च की शक्ति कहती है कि एक व्यक्ति का समुदाय सक्रिय, सक्रिय वा समुदाय पारस्परिक क्रिया दूसरे की प्रतिक्रिया देता है और वह अपनी शक्ति पर प्रत्यक्ष शक्ति को समुदाय देता है।" (Broadly defined; interaction refers to the fact that the response gesture word or gross bodily movement of one individual is stimulus to another, who, in turn, responds to the first.)



बरीन् तथा बरीन् ( Sherif & Sherif; 1969 ) के मतानुसार, "सामाजिक स्थितियों में व्यक्तियों के बीच वास्तव-समान ही अन्तःक्रिया है।" ("The real takes, between individuals in social situation is an interaction process") लिन्गेन (Lindgren; 1979) के अनुसार "सामाजिक हेतुविज्ञान में अन्तःक्रिया नाम उस परस्पर अपना अन्योन्यप्रतिक्रिया के लिए वा वास्तव है जिसमें व्यक्ति और/या समूह एक दूसरे के व्यवहार को प्रभावित की है जिसके कारणों एक व्यक्ति या समूह का व्यवहार अन्य लोगों में अनुक्रिया उत्पन्न करने के लिए एक उद्दीपक बन जाता है।" ("The basic interaction used in social psychology to refer to the mutual or reciprocal way in which individuals and/or groups influence one another's behavior, whereby the behaviour of an individual or group becomes a stimulus that evokes responses from others."

## सामाजिक अन्तःक्रिया : प्रकृति

( Social Interaction : Nature )

सामाजिक अन्तःक्रिया का अर्थ यह प्रक्रिया होता है : यह व्यक्ति तथा समूह के व्यवहार को प्रभावित करने की एक प्रक्रिया है। अन्तःक्रिया व्यक्ति और समूह के बीच, व्यक्ति तथा समूह के बीच या एक समूह तथा अन्य समूह के बीच होती है।

सामाजिक अन्तःक्रिया एक सांख्यिक प्रमाण ( statistical evidence ) की मांग है। तात्पर्य यह है कि सामाजिक अन्तःक्रिया के लिए दो व्यक्तियों का होना आवश्यक है। कभी-कभी प्रमाण यह है एक व्यक्ति होता है तथा अन्य मामले में दोहरा प्रमाण यह है उपस्थित होता है। यह प्रक्रिया उद्दीपन → अनुक्रिया → उद्दीपन → अनुक्रिया के नियम का अनुसरण करती है।

सामाजिक अन्तःक्रिया कर रहे व्यक्ति सर्वथा सक्रिय रहते हैं। निष्क्रियता की स्थिति में सामाजिक अन्तःक्रिया घटित नहीं हो सकती। अन्तःक्रियाओं में सक्रिय अनुक्रियाएँ घटित होती हैं। साथ ही अन्तःक्रिया एक दो तरफ़ प्रभाव प्रक्रिया है। ( Interaction involves two way influence ) सामाजिक अन्तःक्रिया एक सक्रिय प्रक्रिया होती है जब एक व्यक्ति का उद्दीपन अन्य व्यक्ति को प्रभावित नहीं करता और दूसरे व्यक्ति की अनुक्रिया का प्रभाव प्रथम व्यक्ति पर नहीं पड़ता है। जैसे दो व्यक्ति हैं क, तथा ख। क, व्यक्ति ख की प्रभावित करता है और ख, व्यक्ति क की प्रभावित करता है सभी इसे अन्तःक्रिया कहते हैं।

सामाजिक अन्तःक्रिया काही हद तक समन्वितकरण एवं सामाजिक व्यवहार की प्रक्रिया पर निर्भर करती है। किसी व्यक्ति या समूह की सामाजिक अन्तःक्रियाएँ

इस पर निर्भर करती है कि उस व्यक्ति का समूह में क्या सीमा है और किस समूह सीमा है। समाजिकता का सामाजिक अधिनियम 'सुख' रूप में सामाजिकता और समुदाय की निर्दिष्टीकरण होता है।

### समाजिकता के स्तर (Levels of Interactivity)

सामाजिक समाजिकता जीवनरूप की दो स्तरों हैं :—

1. व्यक्ति की व्यक्ति के समाजिकता (Interactivity between individuals)—इसी समाजिकता की व्यक्ति की बीच प्रतिष्ठित होती है। व्यक्ति-व, व्यक्ति-व, व्यक्ति-व की अपनी बातचीत तथा सामाजिक संबंधों द्वारा तथा वह, व की सामाजिक करने का प्रभाव करता है। सामाजिक यह है कि व्यक्ति इस व्यक्ति में सामाजिक और समाजिक दोनों स्तरों में कार्य करता है। व्यक्ति-व का समाजिक व्यक्ति-व के लिए सामाजिक के रूप में कार्य करता तथा व्यक्ति-व उसके प्रति समाजिकता करता है। इसी प्रकार व्यक्ति-व की समाजिकता व्यक्ति-व के लिए सामाजिक का कार्य करती है और वह उसके प्रति समाजिकता करता है। इसका निम्नलिखित स्तरों निम्न स्तर में दिया गया है :—

व      व      व

सामाजिक समाजिकता में एक व्यक्ति का समाजिक रूप व्यक्ति के समाजिक रूप करता है और साथ व्यक्ति का यह समाजिक प्रभाव व्यक्ति की समाजिकता के प्रभाव को निर्दिष्ट करता है। यदि कोई व्यक्ति रूप के समूह प्राप्त करता है तो साथ की उसके साथ स्तर में मिलते हैं। इस प्रकार समाजिकता में समाजिकता और विचारों का समाजिक प्रभाव समाजिक रूप में प्रतिष्ठित होता है।

2. व्यक्ति की समूह के समाजिकता (Interactivity between individuals and group)—इस प्रकार की समाजिकता व्यक्ति तथा समूह के बीच प्रतिष्ठित होती है। व्यक्ति, समूह की तथा समूह व्यक्ति की समाजिक करने का प्रभाव करता है व्यक्ति तथा समूह, एक दूसरे के प्रति सामाजिक समाजिकता करती हैं। एक दूसरे के लिए व्यक्ति तथा समूह सामाजिक तथा समाजिकता के रूप में कार्य करती हैं। इसे निम्न स्तर द्वारा दर्शाया जा सकता है—

व्यक्ति      व      समूह

3. समूह तथा अन्य समूह के बीच समाजिकता (Interactivity between one group and another group)—यह समाजिकता की निम्न समूहों के बीच प्रतिष्ठित होती है, जिसे निम्न रूप में दर्शाया जा सकता है :

समूह      व      समूह

इस स्थिति में दो विभिन्न समूहों में सामाजिक सम्बन्ध होते हैं और दोनों एक-दूसरे की प्रभावित करते हैं तथा एक-दूसरे से प्रभावित होते हैं। दो विदेशी टीमें में मैच की स्थिति, दो दलों में कन्फ़ेडरसी लड़ाई आदि इस प्रकार की अन्तःक्रिया के समतुल्य हैं।

## सामाजिक अन्तःक्रिया की मौलिक दशाएँ

( Basic Conditions of Social Interaction )

सामाजिक अन्तःक्रिया की दो कुछ घट दशाएँ हैं—सामाजिक सम्पर्क तथा सम्प्रेशन : सामाजिक सम्पर्क तथा सम्प्रेशन के अन्तर्ग में किसी सामाजिक अन्तःक्रिया की अवस्था नहीं की जा सकती।

1. सामाजिक सम्पर्क—( Social Contact )—सामाजिक सम्पर्क भौतिक सम्पर्क से भिन्न होता है। सामाजिक सम्पर्क के निम्ने घटित या घातीय सम्पर्क आवश्यक होता है। सामाजिक सम्पर्क, देखीकिय, पत्र, तार, रेडियो तथा सम्प्रेशन के अन्य साधनों द्वारा स्थापित हो सकता है यदि उनके बीच दूरातों बीच की दूरी नहीं बड़ी हो। हाँ, भौतिक सम्पर्क सामाजिक सम्पर्क की अतिशय ही अवस्था बनाता है। भौतिक सम्पर्क के विभिन्न रूप हो सकते हैं—द्वय मिश्रण, वस्त्र विनिमय, चिप्ट करण, आदि सभी सामाजिक सम्पर्क की बकालें हैं तथा सामाजिक सम्बन्धों की स्थापित और पत्र प्रदान करते हैं। विभिन्न स्थितियों तथा समूहों के बीच वारसणीक अनुक्रिया से सामाजिक सम्पर्क की उत्पत्ति हुई है। सामाजिक अन्तःक्रिया की उत्पत्ति सामाजिक सम्पर्क से होती है। विभिन्न तथा विभिन्न के अनुसार सामाजिक सम्पर्क अन्तःक्रिया का प्रथम चरण है।

सामाजिक सम्पर्क सधाराणतः तथा निम्नस्तरण हो सकता है। सामाजिक सम्पर्क पूरी तरह प्राथमिक ( Primary ) या द्वितीयक ( Secondary ) हो सकते हैं। कभी-कभी सामाजिक सम्पर्क त्वासी और कभी अन्तर्गामी होते हैं।

2. सम्प्रेशन ( Coalescence )—सामाजिक सम्पर्क की स्थापना किसी न किसी इन्तेन्ड्ड के माध्यम से होती है और किसी इन्तेन्ड्ड द्वारा किसी समूह का सदस्यीकरण कभी नहीं होता है जब बहुत उच्च इन्तेन्ड्ड में सम्प्रेशन उत्पन्न करती है। अतः सामाजिक सम्पर्क सम्प्रेशन के माध्यम से घुसक होता है। स्थिति की इन्तेन्ड्ड, काल, स्थिति ( स्तरीय ), द्वय चयन, काल, रेडियो, पत्र, तार, चोच, समाचार पत्र, टी० वी० आदि इन्तेन्ड्ड के कुछ साधन हैं जिनके द्वारा सामाजिक सम्पर्क और अन्तर्ग में सामाजिक अन्तःक्रिया संभव होती है। यदि सम्प्रेशन न होता तो संभवतः अन्तर्ग भी न होता।

## सामाजिक अन्तःक्रिया में सामाजिक उत्तेजनाएँ

(*Social Stimuli in Social Interactions*)

सामाजिक अन्तःक्रिया के होने में सामाजिक उत्तेजनाएँ प्रमुख भूमिका निभाती हैं। पहले कुछ सामाजिक उत्तेजनाएँ होती हैं—जैसे एक व्यक्ति अपने व्यक्ति के सम्पर्क में आता और उत्तेजित करता है। दूसरे प्रकार की उत्तेजनाएँ भी होती हैं जैसे कोई व्यक्ति अपने व्यक्ति का व्यक्ति की उपस्थिति होने बिना व्यवहार करने के उत्तेजित करता है। ऐसा व्यवहार-वाचनों द्वारा संभव होता है जैसे सोन, पन, बार आदि।

### प्राथमिक सामाजिक उत्तेजनाएँ

1. हाव-भाव (Gestures) —व्यक्ति की भाव के अभिव्यक्त कुछ सामाजिक स्थिति की उत्तेजना का कार्य करते हैं—जैसे हाव-भाव। यह एक प्रकार का होता है। यह सामाजिक अन्तःक्रिया में सामाजिक उत्तेजना का कार्य करता है।

(i) भाविक हाव-भाव (Emotional Gestures) —एक मन्त्रा, होठ की हिली के काटका आदि। सामाजिक अन्तःक्रिया के लिए यह एक प्रमुख उत्तेजना है। किसी व्यक्ति के भाविक अभिव्यक्ति की बहुमुख करके अन्य व्यक्ति उपस्थित प्रभावित होता एवं उत्तेजित करता है।

(ii) निर्देशक हाव-भाव (Desiderative Gestures) —एक प्रकार के हाव-भाव में व्यक्ति द्वारा निर्देशक संकेतों की रखा जाता है। कभी-कभी किसी स्थिति में व्यक्ति अपनी ओरों, भ्रात्यों, पत्नी आदि की स्थिति द्वारा अपनी चाहतों की सामाजिक रूप में व्यक्त करके उत्तेजित करता है। यह दूसरे अन्य व्यक्ति के लिए सामाजिक उत्तेजना का कार्य करते हैं।

(iii) चित्रित हाव-भाव (Graphic Gestures) —एक प्रकार के हाव-भाव में चित्रित संकेतों की प्रयोग किया जाता है। हाव के द्वारा वे बताता कि कोई व्यक्ति गलत है या सही है।

(iv) प्रतीकात्मक हाव-भाव (Symbolic Gestures) —संकेतों के व्यवहार के विचारों की अभिव्यक्त करने के लिए प्रतीकात्मक हाव-भाव प्रयुक्त होते हैं। हाव की विभिन्न मुद्राएँ इसका एक उदाहरण हैं।

(v) आत्मतन्त्र हाव-भाव (Habitual Gestures) —यह एकप्रकार व्यक्ति की आदत बन जाती है और अन्तःक्रिया में उत्तेजना का कार्य करते हैं।

(vi) अव्यक्त हाव-भाव (Unconscious Gestures) कुछ हाव-भाव अव्यक्त रूप में व्यक्त होते हैं और व्यक्ति की उसके कार्यों की प्रेरणा नहीं होती।

2. स्वर-अभिव्यक्ति (Vocal Expressions) —व्यक्ति द्वारा प्रकीर्ण शब्द की सामाजिक अन्तःक्रिया में उत्तेजना कार्य करते हैं। स्वर-अभिव्यक्ति करने

नम्र, आत्मिक या कार्यशील हो सकती है और व्यवहारिक अभिव्यक्ति भी होती है। क्रोध, धर, आदि विषयों के अनुकूल के समय व्यक्ति की व्यवहारिक अभिव्यक्ति भी प्रभावित होती है और अन्य व्यक्ति भी उसी के अनुसार अनुकूल करता है। कुछ प्रभावशाली स्तर सामाजिक व्यवहारिकता की अन्य तथा प्रभावशाली स्तर व्यवहारिकता की ओर करते हैं।

3. मुखकृति अभिव्यक्ति ( Facial Expression )—मुखकृति-अभिव्यक्ति की सामाजिक व्यवहारिकता में उपयोग का कार्य करती है। विषयों और भावनाओं की अभिव्यक्ति में मुखकृति के प्रभावशाली अनुकूल प्रतिक्रिया विभाजित है। विभिन्न विषयों की अनुकूलता का प्रभाव मुखकृति द्वारा भी प्रभाव होता है। मुखकृति व्यवहारिक प्रभावों के विषयी व्यक्ति की प्रतिक्रिया प्रभाव बन से जाती या करती है जैसे मुँह का खुलना यह जाना, मोहों का उठना होता आदि।

4. मुखकान-हँसी आदि ( Smiles & Laughter )—मुखकान और हँसी की सामाजिक व्यवहारिकता में उपयोग का कार्य करती है। मुखकान व्यवहारिक व्यवहारिकता के विषयी अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों को अनुकूल एवं प्रभावित करते हैं।

5. भाषा ( Language )—व्यक्तिगत व्यवहारों के अभिव्यक्ति कुछ व्यक्तिगत व्यवहारों की सामाजिक व्यवहारिकता की प्रभाव का प्रभाव करते हैं जिसमें भाषा एवं भाषा अनुकूल है। भाषा करने विचारों भावनाओं तथा व्यवहारिकता की अभिव्यक्ति करने का एक प्रभाव प्रभाव है। अतः यह सामाजिक व्यवहारिकता में अनुकूल प्रतिक्रिया विभाजित है। भाषा सभी क्षेत्र, विषय और क्षेत्रों की और सभी प्रभाव, विषय और क्षेत्रों की प्रभाव करती है। विषय और प्रभाव दोनों ही इसके अनुकूलता का अनुकूलता पर निर्भर करते हैं।

6. शारीरिक भाषा ( Body Postures )—शरीर के भाषा या प्रभावों की विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति करती है। अतः यह भी सामाजिक व्यवहारिकता में उपयोग का कार्य करती है। विषय-व्यक्ति में व्यक्ति होने तथा व्यवहारिकता में व्यक्ति के शारीरिक भाषा एवं क्षेत्र करती है।

## सामाजिक व्यवहारिकता के निर्धारक

( Determinants of Social Interaction )

विभिन्न विषयों में विभिन्न प्रकार सामाजिक व्यवहारिकता की प्रभावित करते हैं। व्यवहार में यह प्रकार विभिन्न प्रकार की व्यवहारिकताओं की व्यवहारिकता प्रभावित करती करती जिसका कि व्यवहारिकता बन से उन्हें कुछ विचारों प्रभावित करते हैं।

1. व्यक्तिगत व्यवहार ( Individual Factors )—कुछ प्रकार के व्यवहारिकता करने करने की अनुकूलता, व्यवहारिकता, सामाजिक



1956) के अनुसार, "सहयोग को वा व्यक्तिगत व्यक्तियों द्वारा समान वा वे विभिन्न किसी कार्य की करने वा किसी उद्यम तक पहुँचने के सामूहिक एवं विचार-संगत हैं।" ("Cooperation is the continuous and systematic endeavour of two or more persons to perform a task or to reach a goal that is commonly cherished.")

अलीनकार (Aldrich, 1960) के अनुसार, 'सहयोग का वाद यह है कि सामूहिक व्यक्तियों वा समूहों का एक सामान्य उद्यम होता है और वे अपने एक दूसरे के साथ इस प्रकार व्यवहार करते हैं कि उद्यम की शक्ति हो सके।" ("The essence of cooperative behaviour is that the individuals (or groups) concerned have a common aim and that they so adjust their behaviour that the end may be realized.")

सहयोग द्वारा समूह में सीद्देपूर्वक और सहज समन्वय स्थापित होते हैं। सहयोग के अनुसंधानिक जीवन की दायिनि हुई है और इसी में निहित है संघटन। सहयोग के कुछ और विशेष लक्षण हैं। इनके समूह में संयोग का भाव विकसित होता है। सहयोग द्वारा बहुत कमों और दुर्लभ कमों की शक्ति संभव होती है। सहयोग की ही मायमा ने सहजता सभी के समुदाय में भागीदारी की एक युग होकर संवेगों की पुनारी के देश की स्थापन करना। सहयोग के सिद्ध की सभी आवश्यक होती हैं—सामूहिक उद्यम (Common goal) और एकजुट समन्वय (Coordinated effort)। सभी विचार समान होता है पंथप्राप्त (Patented) में सब ने सहते हैं कि, "सहयोग यह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति वा समूह विचार-संगत करते हैं, और इसी के कारण उनका प्रभाव संश्लिष्ट होता है जिसके इनके सामूहिक उद्यम प्राप्त होते हैं।" ("Cooperation is the process by which individuals or groups combine their efforts, in a more or less organized way, for the attainment of common objectives.") इसी प्रकार किसी राष्ट्रीय के दीर्घकालीन समस्याओं की संश्लिष्ट कर शिक्षा के उन्नत स्तर तथा जीवन की गरिमा की स्थापना रखने तथा बढ़ाने का उद्यम करते हैं।

### सहयोग के प्रकार (Types of Cooperation)

सहयोग वा दो प्रकार (Direct) होता है वा अप्रत्यक्ष (Indirect)। जीवोनीकरण के सहयोग की मायमा की कुछ अवस्था पहुँचा है और यह समाज में कम होता जा रहा है। आज लोग पहले से अधिक स्वार्थी प्रेरित होते जा रहे हैं।

1. प्राथमिक सहयोग (Primary cooperation)—इसमें दो वा अधिक व्यक्ति वा समूह के सदस्य समूह सभी की मायमा समान बना लेते हैं। ऐसा सहयोग

समूह के सदस्यों में स्वीकार और सहिष्णुता को बढ़ाना होता है। अल्पसंख्यक की भावना के दमन को भी इस समूह का सहयोग अधिक होता जाता है। प्रति-राष्ट्रीय, जाति-भेद भावों में सहयोग आर्थिक सहयोग का उपाहरण है।

2. द्वितीयक सहयोग (Secondary cooperation)—जब दो या दो से अधिक व्यक्ति अपना समूह के बीच सम्बन्धित सदस्यों की बात करने का प्रयास अपने विहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए करते हैं जो इसे द्वितीयक या गौण सहयोग कहा जाता है—जैसे एक कर्मचारी अपने अधिकारों के साथ सहयोग करता है क्योंकि ऐसा करना उसके स्वार्थ विहित के लिए आवश्यक है।

3. तृतीयक सहयोग (Tertiary cooperation)—इस प्रकार का सहयोग भी दो या अधिक व्यक्तियों अपना समूहों के लोगों में बिना कुल्लर समाज की अपनी परिधिस्थितियों में अधिकतम स्वार्थों के लिए होता है। उपाहरण के लिए संसदीय प्रतिनिधियों में विभिन्न राजनैतिक दलों अपने आपसी मतभेदों को भुलाकर सरकार को सहयोग देने हैं।

### सहयोग के कारण

(Causes of Cooperation)

1. आवश्यकता पूर्ति—कोल लागू में एक दूसरे के साथ सहयोग करते हैं क्योंकि अकेले वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकते। जैसे समान-समान पर समूह के अन्य सदस्यों के सहयोग की आवश्यक होती है।

2. स्वार्थ पूर्ति—अपने स्वार्थों की पूर्ति के कारण भी समाज में अनेक व्यक्ति अन्य लोगों या समूहों की सहयोग देते हैं। समाज में सदस्य अनेक व्यक्ति अपने सामाजिक-आर्थिक उत्तर की उम्मीद कर अपने अनु-प्राप्त की पूर्ति चाहता है। परिणाम स्वरूप लोग पहले की अपेक्षा नती अधिक स्वार्थ प्रेरित होते या गते हैं। स्वार्थ विहित में सहयोगिता की विभवा बिन्दु बिना के केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति चाहते हैं।

3. सहसहता—सौहार्दीकरण के कारण समाज के सदस्य में सहसहता और समरति काया अनेक व्यक्ति तथा समूह की सबसे बड़ी शक्ति बन चुकी है। सहसहता या समरति के बिना अन्य व्यक्तियों का अधिक सहयोग प्राप्त करना असम्भव हो गया है।

4. सामाजिक दबाव—सामाजिक परिस्थितियों के कारण समाज के लोग भी सहयोग करने के लिए व्यक्ति सामाजिक दबाव का अनुभव करता है।

5. मनोवैज्ञानिक कारण—कुछ मनोवैज्ञानिक कारण भी सहयोग की भावना को बढ़ाना देते हैं—जैसे भाँझरे, प्रति-राष्ट्रीय भावों का सहयोग करने हैं। पारस्परिक स्नेह, डेव, समीप-भाव की भावनाओं के कारण लोग एक



दुसरे के साथ सहयोग एवं व्यवहार करते हैं। सहयोग के बहुत एवं बलिष्ठ सम्बन्धों में बढि होती है जो उन्हें मनोवैज्ञानिक तथ्यो प्रदान करती है।

## व्यवस्थापन का समंजन

( Accommodation )

मैराइजर तथा नेव (Mee Ivar & Neve 1953) के अनुसार, "समंजन का विशेष रूप के एक प्रक्रिया की ओर दृष्टि करता है जिसके द्वारा व्यक्ति व्यक्तित्व के साथ अनुकूलन करता है।" ( "The basic accommodation refers particularly to the process in which the individual is engaged in interaction with his environment". )

गिल्लि तथा गिल्लि ( Gillie & Gillie, 1950 ) के अनुसार, "समंजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति और बहुत विरोधी सिद्धांतों का समुहजन संघर्ष का सम्बन्धित एकता के द्वि में कर लेते हैं।" ( "Accommodation is a process by which the individual and the group adjust their antagonistic activities in the interest of associated unity." )

शेख के अनुसार "समंजन, एक प्रकार के अव्यवस्था के विरोध समुदाय होता है"। ( "In one sense, accommodation may be said to be an agreement to disagree." )

इस प्रकार समंजन की सहायि में समंजन प्रदान करता है। इसके साथ सहयोग प्रदान होता है। व्यक्ति यदि अन्य लोगों के साथ सहज होने में विफल रहता है तो वो उन्हें सहज करना या होना जरूरी है। व्यक्ति को जीवन के साथ समझौता करना पड़ता है। समंजन के बिना जीवन पृथक् के बना रहती है। जीवन के साथ समझौता करने में समझौता, संघर्ष का निराकरण तथा इसके परिहार आवश्यक है। ऐसा होने पर प्रभावशाली के इस रहती जायज होता है। समन्वित व्यवस्था की सहायि ही समंजन है। यह एक अतिरिक्त प्रक्रिया है जो जीवन के एक या अन्य क्षेत्र में सहायि पहुँचती है। परिवार में विचारों का जीवन समंजन का एक ऐक्य एवं बहुत उपयुक्त है। सभी में माता-पिता के लिए अनुचित बाधाएँ होती हैं और वो यह अपने मायरी अपनी सभी के अनुकूल बनाने का प्रयत्न का प्रयत्न करती है। यह मा-माता का कार्य करता है यद्यपि उसके मन में विरोध की प्रकृति कायम होती है। एक सम्बन्धितता दूसरी प्रकृति में होने हुए अपने बलि के परिवार के सम्बन्धित और ऐसे ऐसे व्यक्तियों के साथ समंजन और सम्बन्धित स्थापित करती है। समंजन जीवन रहने की एक कला है। समुदाय में यह प्रकृति उपयुक्त माता में विद्यमान होती है। इसी प्रकृति के कारण माता संसार का सबसे अधिकारी जीवन

है। सम्बन्धन या अभिव्योजन की क्रिया जीवन के अनेक क्षेत्र में देखी जाती है। अनुसूचन या समन्वय से अलग एवं अन्य की स्थिति इस जाती है।

## सम्बन्धन या अनुसूचन की विधियाँ

(Methods of Association)

1. चर्चित के सामने सूचना (Teaching to compare)—जब किसी व्यक्ति या बहुत अधिक व्यक्तियों द्वारा है तब इसकी चर्चा के प्रभाव में अनुसूचन या सम्बन्धन किया जाता है। यह में प्रत्येक होने पर की वृत्तियों की प्रभाव में लेकर अनुसूचन के बिन्दु लेकर किया जाता है।

2. सम्बन्धिता (Comparability)—सम्बन्धिता की व्यक्तियों अथवा वस्तुओं में सम्बन्धन की एक प्रमुख विधि है। सम्बन्धिता में कुछ निम्नता है और कुछ समानता की प्रकृति है। दोनों एक कुछ होने, कुछ भेद है।

3. सहित्यसूचन (Teaching)—सम्बन्धन स्थापित करने के लिए सहित्य-सूचन की विधि भी प्रयुक्त होती है। बिना लोगों के सहित्य करने या दूसरे की प्रेरणा की प्रभावता बिनाही अधिक होती है यह करने की अधिक सम्बन्धनशील होती है और सामाजिक सम्बन्धिता में भी उभरे प्रभाव होते हैं।

4. चर्चा परिचयन (Change of opinion)—सम्बन्धन या अनुसूचन स्थापित करने की एक विधि सचरिचयन की है जिसमें विचारों और तर्कों की प्रभावता है। यह में प्रत्येक में अनुसूचन और उसके बाद अभिव्योजन या अनुसूचन स्थापना करने की जाता है।

5. सम्ममन (Simplification)—सम्बन्धन वह विधि है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी अव्यक्ति, सामाजिक, अर्थिक दृष्टिकोणों की प्रभाव द्वारा नाम कायी में सामाजिक प्रभाव स्थापित करता है।

6. अनुसूचिकरण (Rationalisation)—एक विधि के अन्तर्गत व्यक्ति अपने व्यवहारवादी की अवैतन एवं के किनारे के प्रभाव करता है। इस प्रभाव में वह व्यक्ति प्रकार की वृत्तियों, तर्कों, प्रमाणों द्वारा कर उनके द्वारा करने की और करने कायी को अधिक स्पष्टता का प्रभाव करता है।

## सामन्विकरण

(Assimilation)

सांख्यिक अभिव्योजन या यह एक रूप है। व्यक्ति या बहुत अधिक अपने अपने किसी नयी परिस्थिति में जाता है तो अवैतन एवं के वृत्ति अपने में व्यवहार (absorb) करने का प्रभाव करता है। इस प्रक्रिया द्वारा प्रत्येक अनुसूचिता स्थापित होती है। अनुसूचन के लिए व्यक्तियों के साथ रहने के कारण किन्तु तथा अनुसूचनों से एक दूसरे की संस्कृति के अनेक तथ्यों की व्यवहार (absorb) कर



2. **समिश्रण (Assimilationism)**—समिश्रण से सार्वभौमिकता की ओर की दीक्षाएँ प्राप्त होती हैं क्योंकि समिश्रण से एक सम्मिश्र स्थापित होने की ओर के गति हैं। किसी समुदाय के लोग जिसका स्वार्थ सुझावित करते हैं उसमें सार्वभौमिकता की संरचना मिलती ही अधिक होती है। विवाद के सम्बन्धी द्वारा परिष्कार ही नहीं समिश्रण के अन्तर्गत प्राप्त होते हैं। अन्तराष्ट्रीय विवाद की समिश्रण का अन्तर्गत होता है।

3. **सांस्कृतिक समानताई (Cultural similarity)**—जब सांस्कृतिक, लिंग समुदायों में समानताई समिश्रण स्थापित होती है तो उनका वैयक्तिकताई भीम होता है और उनका सार्वभौमिकता भीम होता है।

4. **समानताई सम्बन्ध (Equal social equality)**—सांस्कृतिक समानताई के द्वारा, युवा तथा वृद्धों का विकास होता है। यदि लोगों की अपने समुदायों, सामाजिकताई आदि के द्वारा सांस्कृतिक प्रगति के कारण सम्बन्ध प्राप्त होते हैं तो उनमें सामाजिक समानताई तथा सार्वभौमिकता बढ़ता है।

5. **समिश्रण सामाजिक सम्बन्ध (Intimate social relations)**—समिश्रण और विवाद सामाजिक सम्बन्ध की सार्वभौमिकता की वृद्धि है। सम्बन्ध और समिश्रण का अनुपात समानताई बढ़ता है। सार्वभौमिकता नहीं अनुपात में बढ़ता है।

### सार्वभौमिकता में अवरोधक कारक

(Factors Hindering Assimilation)

निम्न कारक सार्वभौमिकता में अवरोधक होते हैं :-

1. **वृद्धता (Aging)**—समिश्रण एवं सामाजिक समानताई सार्वभौमिकता की वृद्धि है, यही वृद्धता वृद्धता सार्वभौमिकता में वृद्धता सार्वभौमिकता है। जब वृद्ध वृद्धता के अवरोधक होते हैं तो सार्वभौमिकता प्रभाव की संभावना ही वृद्धता ही जाती है।

2. **श्रेष्ठ, या हीन भावना (Superiority or inferiority feelings)**—जिन लोगों में श्रेष्ठता या हीनता की भावना होती है वे दूसरों के प्रति गुना, समुदाय आदि की भावनाई रखते हैं। वे वृद्धता देखे लोगों के सम्बन्ध रखने के गति करते हैं। जहाँ उनमें सामाजिक सम्बन्ध, सामाजिक सम्बन्ध आदि के अन्तर्गत में अधिक श्रेष्ठता प्रभाव रखते की भावना और श्रेष्ठता के वृद्धता ही जाती है।

3. **स्वभौमिकता (Self Protection)**—स्वभौमिकता, सार्वभौमिकता प्रभाव तथा भावना के श्रेष्ठता और श्रेष्ठता में एक एवं श्रेष्ठता प्रभाव ही जाती है। इनमें समिश्रण में नहीं जाती है तो सार्वभौमिकता के लिए समिश्रण है।

4. **सांस्कृतिक विभिन्नता (Cultural differences)**—जिन लोग

सांख्यिक समीक्षा समीचीनता की कक्षा में है। उसी प्रकार सांख्यिक विमता समीकरण में बाधक होती है। कारण यह है कि सांख्यिक विमता के कारण हीन एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी नहीं रहते जब: सांख्यिकता सुनिश्चित होता है।

3. सांख्यिक विमता में विमता (Differential in production) — यहाँ, सांख्यिक विमता समीचीनता की कक्षा में बाधक है जब एक दूसरे के विमता करते हैं। यहाँ के विमता करने, प्रतिस्पर्धी होने, प्रतिस्पर्धी में विमता करने के कारण यह विमता समीकरण में बाधक होता है।

### प्रतिस्पर्धा (Competition)

प्रतिस्पर्धा एक विमताकारी सांख्यिक विमता है। यह एक सुदृढ़-सुदृढ़ सांख्यिक विमता है जो अत्यधिक और विमता के रूप में विमता होती है। बीजेड तथा बीजेड (Bisgaard & Bisgaard 1954) के अनुसार है कि, "प्रतिस्पर्धा दो या अधिक लोगों के एक समूह की, जो बहुत विमता है कि उनमें सभी की विमताकारी विमता नहीं है, जाने के विमता करते हैं।" ("Competition is the striving of two or more persons of limited goals, which is limited so that all cannot share it.") बीजेड (Bisgaard) के अनुसार, "प्रतिस्पर्धा विमता बहुत ही विमता का सुदृढ़ता है जो विमता करती है कि सभी की विमता कर रहे हैं।" अर्थात् एक विमता की विमता की विमता होती है। ("Competition is a striving for certain resources which does not exist in a quantity sufficient to meet the demands," Bisgaard)

अर्थात् प्रतिस्पर्धा के विमता होता है कि प्रतिस्पर्धी यह विमता सभी विमताओं की विमता है कि सभी विमताओं विमता होती है। इसका यह विमता के विमता होती नहीं है। प्रतिस्पर्धी विमता, विमता और विमता, विमता है विमता द्वारा एक ही विमता की दो या अधिक विमता विमता करना चाहते हैं।

### प्रतिस्पर्धा का स्वरूप

#### (Nature of Competition)

विमताकारी विमताओं विमता के स्वरूप की विमता कहती है :—

- (i) प्रतिस्पर्धी विमता है।
- (ii) यह विमता (Inequality) होती है।
- (iii) प्रतिस्पर्धी विमता सभी विमता कहती है अर्थात् सभी विमता होती होती है।
- (iv) प्रतिस्पर्धी विमता, विमता, विमता है, अर्थात् विमता है।

**प्रतिस्पर्धा के रूप ( Forms of Competition )**—विभिन्न तथा विभिन्न ( 1930 ) के अनुसार स्पर्धा के तीन रूप होते हैं :—

1. **आर्थिक स्पर्धा ( Economic competition )**—आर्थिक सामर्थ्य के दृष्टि के लिए व्यक्तिगत, समूहों यादिक के बीच की स्पर्धा होती जाती है वह आर्थिक स्पर्धा होती जाती है वह प्रतिस्पर्धी आर्थिक क्रियाओं के उत्पादन, विनिष्पन्न, विपणन, बाँटने में आता होती है । आज विश्व का दूर दूराव आती आर्थिक विपत्ति की शुरुआत करने में प्रभाव पड़ है । वर्तमान में राज्यों के संघर्ष होने के कारण लोगों में स्पर्धा होती है । व्यापारियों, उद्योगपतियों में होती स्पर्धा अत्यन्त सामान्य है ।

2. **सांस्कृतिक स्पर्धा ( Cultural competition )**—विभिन्न संस्कृतियों में जो स्पर्धा पाई जाती है उसे सांस्कृतिक प्रतिस्पर्धा कहा जाता है । किसी भी देश के इतिहास का निरूपणकेवल करने की सांस्कृतिक कारणों से प्रतिस्पर्धा के प्रभावपूर्ण चित्र कहते हैं । भारत में उन्निहों की युद्ध समयका तथा आर्यों के आक्रमण के दोनों सम्बन्धों में स्पर्धा हुई । मुसलमानों के आक्रमण के परिमाणपरकन फिर सांस्कृतिक कारणों के स्पर्धा की विपत्ति उत्पन्न हुई ।

3. **सामाजिक स्पर्धा ( Social competition )**—वर्तमान में उन्नत संस्कृति ( High culture ) तथा अच्छी धुनिकताओं की दृष्टि के लिए स्पर्धा होती है । संस्कृति और धुनिकता की प्रतिस्पर्धा के कारण लोगों में बहुत प्रभावका देखा जाता है ।

4. **राजनीतिक प्रतिस्पर्धा ( Political competition )**—आज के जहाँ समाजान्तरिक प्रभावों काय है, राजनीतिक दलों में भीषण स्पर्धा की विपत्ति है । उत्तर अफ्रीका में तथा, मलका के बाहर में आने पर, इन दोनों दलों तथा आन्दोलन में कड़ी प्रतिस्पर्धा की विपत्ति प्पन्न है । राजनीतिक दलित आत करने की शुरुआत होती हुई है ।

5. **प्रजातीय प्रतिस्पर्धा ( Racial competition )**—यह प्रतिस्पर्धा ही वह दृष्टि सम्बन्धों के बीच पाई जाती है । प्रजाति प्रजाति अपने ही रूप के क्षेत्र सम्बन्धी है । दक्षिणी अफ्रीका में दृष्टिकोण तथा लोगों में कड़ी प्रतिस्पर्धा की । हाल के समय प्रजातियों में प्रजाति सम्बन्ध के दू-एक-दो-को-विषय एक प्रकार की स्पर्धा का उत्पन्न है ।

### प्रतिस्पर्धा के परिणाम

( Consequences of Competition )

प्रतिस्पर्धा, आज के समय में जीवन के दूर क्षेत्र में आती हुई है । भारत में बहुत विविध व्यक्तियों की सभी की बात अनेक विविध व्यक्ति अपनी योग्यता के

अनुसार नीचरी प्राप्त कर लेता है। साथ निश्चित इसके विपरीत है, प्रयोग एक के लिए साक्ष्यों और विरोधवाक्यों में प्रतिस्पर्धी प्रयोग परीक्षा होती है। समाज में नीचरी के लिए अपना विभिन्न आदर्श व्यवहारों परामर्श लक्ष्य (Goal based Consideration) देखा जा रहा है। समाज के हर क्षेत्र तथा राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक में व्यवस्था प्रतिस्पर्धी व्याप्त है। इसके कुछ परिणाम निम्न हैं—

1. संयोजकतात्मक परिणाम (Associative consequences)—प्रतिस्पर्धी व्यवस्था की ही वकाली है और असमर्थता की। समस्त प्रतिस्पर्धी के व्यक्ति और समस्त-वर्गों की प्रगति होती है। साथ समाज के प्रत्येक वर्ग में प्रगति होना रहा है—नीचे साथ साथ, सामान्यतः साथ, अतिरिक्त (वकील) साथ, महदूर साथ, सामान्य समस्त आदि। इसके द्वारा वह अपने समूह की क्षमता के लिए लक्ष्य रखे हैं।

2. विच्छेदकारी परिणाम (Dissociative consequences)—जब प्रतिस्पर्धी व्यवस्था बन जाती है तो अनेक अपने प्रतिस्पर्धियों की प्रति पहुँचाकर, मोड़ पहुँचाकर, या द्विक विधियों द्वारा अपने प्रतिस्पर्धी वर्गों की क्षमता को कम करने का प्रयास करते हैं। ऐसी प्रतिस्पर्धी व्यवस्था, युवा, समाज, संघर्ष आदि की लक्ष्य होती है जो सभी विच्छेदकारी लक्ष्य हैं।

3. व्यक्तिगत पर प्रभाव (Effect on personality)—प्रतिस्पर्धी करने वाली के व्यक्तिगत पर प्रभाव प्रभाव प्रभाव है। समस्त प्रतिस्पर्धी के व्यक्तिगत के समस्त वर्ग अपने समस्त विच्छेद होते हैं और असमर्थ प्रतिस्पर्धी के व्यक्तिगत में ऐसे लक्ष्यों का विकास होता है जो वे केवल व्यक्ति समस्त समाज के लिए ही प्राप्त होते हैं।

### संघर्ष (Conflict)

प्रतिस्पर्धी नीचे-नीचे क्षमता में प्रतिस्पर्धी हो जाती है जो क्षमता संघर्ष में प्रभाव प्रभाव है। निम्नलिखित के संघर्ष सही रहा या कि "It is this a socialized form of struggle".

गिल्स तथा गिल्स (Gills & Gills, 1930)—ने कहा है कि, "संघर्ष सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति या समूह अपने प्रतिस्पर्धियों के प्रति प्रत्यक्ष द्विक लक्ष्य परामर्श अपना क्षमता केवल अपने लक्ष्यों की प्रति करते हैं।" ("Conflict is the social process in which individuals or groups seek their ends by directly challenging the antagonist by violence or the threat of violence.")

इसमें स्पष्ट है कि संघर्ष में द्विक की क्षमता निर्मित होती है। इसमें प्रतिस्पर्धी का प्रभाव देने की प्रभाव की निर्मित होती है।

एन. ग्रेग्यू-डीन ( A. W. Gregg, 1956 ) के अनुसार, "संघर्ष वह स्थिति है जो जवाब चुनने होता है और इसमें व्यक्ति अपने व्यक्ति या व्यक्तियों को दूसरों का विरोध या प्रतिस्पर्धा करते हैं।" ( "Conflict is the deliberate attempt to suppress another, or another the will of another or others." )

अधुनिक मनोविज्ञानियों के मत है कि संघर्ष एक सामाजिक-सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें दो लोग, या व्यक्ति व्यक्ति अपना समुद्र किसी तरह की बात करने के लिये विरोधी सिद्धांत करते हैं और अपनी बातों में विरोध करने में विफलता करने की करते हैं। संघर्ष में दु-दुस्मिन्, लकी-लकी, बड़े-बड़े, गरीब, दुर्माग, आदि सम्पूर्ण व्यक्तिगत होते हैं। प्रतिस्पर्धा में बहुत अधिक सम्मान के लक्ष्य होने का रूप के होती है। जो लोग प्रोत्साहन में हार-जीत की बात पर अपनी के कारण लड़ाई कर लेती है। 'राजनीतिक मामलों, दो मामलों, लक्ष्य' आदि के बीच की संघर्ष होता है। संघर्ष बहुलक प्रक्रिया की विरोधी प्रक्रिया है। व्यक्ति व्यक्तियों और समुदाय के लक्ष्यों में संघर्ष बनाए रखता है। संघर्ष की उत्पत्ति परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों के कारण होती है। इसी प्रकार करने की विरोधी विधियों द्वारा की संघर्ष उत्पन्न होता है।

### संघर्ष का स्वरूप

( Nature of Conflict )

संघर्ष में निम्न स्वरूप संघर्ष के स्वरूप में कुछ रूप के होते होते हैं—

1. संघर्ष एक फैला हुआ है। पार्सल तथा बर्गस ( Pearsall & Burgess ) के अनुसार, "संघर्ष व्यक्ति में होकर अपने-अपने की उत्पन्न करते हैं, तथा अधिकतर सामाजिक तथा संस्कृति को फैलाए करता है।" ( "Conflict,.....arises the deepest emotional and strongest passions and calls the greatest concentration of attention and culture." )

2. संघर्ष एक विरोधी प्रक्रिया है। संघर्ष विरोधी को सम्पन्न करने के लिए वह किसी रूप की प्रक्रिया के लिए उत्पन्न होता है। संघर्ष का मुख्य प्रवृत्ति व्यक्तियों को प्रति प्रवृत्ति होता है।

3. संघर्ष में विवादता का समाप्त होता है।

4. संघर्ष एक सामाजिक-सामाजिक प्रक्रिया है वह प्रत्येक समाज में पाया है।

### संघर्ष के रूप

( Types of Conflict )

संघर्ष के निम्न रूप निम्न हैं :

1. वैयक्तिक संघर्ष ( Personal Conflict )—विभिन्न व्यक्तियों



विचारों और उद्देश्यों के कारण दो व्यक्तियों या समूहों में संघर्ष उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए किसी कालेज के दो प्रोफेसर्स में आचार्य पद के लिये विरोध और संघर्ष हो सकता है। कारण यह है कि वह एक है और उसे प्राप्त करने के लक्ष्य पर एक है।

2. वर्ग संघर्ष (Class Conflict)—यह समाज के दो या अधिक वर्गों में संघर्ष होता है। वर्गों में समाज के विभाजन के अनेक मापदंड हो सकते हैं—जैसे धर्म, जाति, सम्बन्ध, लीकरी, शिक्षा आदि। कुलीनता और अर्थिक वर्गों में संघर्ष भी इसका उदाहरण है। समाज की नीति के कारण फारमर्स और वीकरर्स वर्गों में संघर्ष भी इसका एक प्रमुख उदाहरण है।

3. जातिगत संघर्ष (Caste Conflict)—विभिन्न जातियों के बीच समाज की श्रेष्ठ और बुरा की होश बनते हैं। इस कारण जाति में विभिन्न जातियों में संघर्ष पारो है।

4. समूह संघर्ष (Group Conflict)—राजनीति में विभिन्न समितियों और डेपार्टमेंटों के बने विभिन्न समूह अपने-अपने उद्देश्यों और समितियों को पूरा करने के लिए संघर्ष करते हैं। इस प्रकार अपने-अपने समूह के हितों के कारण समूहों के बीच संघर्ष उत्पन्न होता है।

5. प्रजातीय संघर्ष (Racial Conflict)—कभी-कभी विभिन्न प्रजातियाँ प्रमुख और सामान्य रूप प्राप्त जाति के लिए संघर्ष करते हैं। अफ्रीकी अफ्रीका में खेती और खनिजों में संघर्ष इसका एक प्रमुख उदाहरण है। कभी संघर्ष के बाद बहुत खेती का जो अन्तर्भाव है, अर्थव्यवस्था बुरा जाता है और समाज अत्यंत बुरा हो जाता है।

6. अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष (International Conflict)—एक प्रकार का संघर्ष अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दो या अधिक राष्ट्रीय में जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक प्रकार का अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष है।

## संघर्ष के कारण

(Causes of Conflict)

संघर्ष के प्रमुख कारण निम्न हैं :-

1. व्यक्तिगत विभिन्नता (Individual Differences)—सांख्यिक और सांख्यिक विभिन्नताओं के अनुसार व्यक्ति एक-दूसरे के विभिन्न होते हैं। सांख्यिक विभिन्नताओं के अनुसार, सम्बन्ध, धर्म, रंग, रूप, जाति अलग-अलग होते हैं। सांख्यिक समितियों में समिति, शिक्षण, सम्बन्ध, अधिपत्य, बुद्धि, लक्ष्य, धर्म, धर्म, और अधि-धर्मिता अति प्रमुख हैं जिसके कारण पर व्यक्तिगत विभिन्नता पारो जाती है।

अस्थिरता बिनासार्थ सत्ता के उदयों में आगयी शक्तियों की स्थापना में अथवा गायत्री है। इनके कारण अथवा समूह तथा व्यक्तियों के बीच संबंध टूटता हुआ है।

2. सुविधाओं का अभाव (Lack of Facilities)—एक राज्य की कमी तथा व्यक्तियों की संख्या अधिक होती है तो सुविधाओं के कारण सुविधाओं का अभाव की ओरों में संबंध स्थापना करता है। अभावों में कृषि और उसके समुदायों की तथा राजस्व के अभाव का अभाव संबंधों का कारण हो सकता है।

3. राजनैतिक कारण (Political Causes)—विभिन्न राजनैतिक दलों के आगयी दृष्ट और दलों के अभाव के कारण की स्थापना में संबंध स्थापना होता है।

4. सांस्कृतिक कारण—(Cultural Causes)—सांस्कृतिक बिनासार्थ हो की सांस्कृतिकों के आगयी, सुविधा, विचारों और आगयी में अभाव स्थापना कर संबंधों के स्थापना का अभाव होता है।

5. सामाजिक परिवर्तन (Social Changes)—अभाव में ही यह परिवर्तन की स्थापना की स्थापना है। इस परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन व्यक्तियों के लिए अभावों का अभावों स्थापना करते हैं। अभाव के बीच अभावों हुई सांस्कृतिक, विचारों, सुविधा, राजस्व-विचार, आचार-विचार के समुदाय अपने आगयी नहीं बना पाते हैं। अभाव में विचारों और संबंधों स्थापना होता है।

6. बहुत मात्रा (Excess)—व्यक्तियों की बहुत मात्रा उन्हें अभाव का पर हो जाती है। यह बहुत मात्रा उन्हें अभावों स्थापना है। अभाव के बीचों-बीचों के कारण अभावों की स्थापना बहुत है और सुविधा के सुविधा की अभाव स्थापना करता है। अभाव के बीचों-बीचों के संबंधों की स्थापना की जा सकती है।

## व्यक्तित्व : सामाजिक घटक के रूप में ( Personality as a Social Phenomenon )

संश्लेषणात्मक दृष्टिकोणों में व्यक्तित्व का सामान्य अधिष्ठान व्यक्तित्व के संतुलित व्यवहार से है, किन्तु विभिन्न रूप में व्यवहार के एक पक्षों में है जो अनेकांगुल न्यायी और संश्लेषित होते हैं तथा विभिन्न कारणों से व्यक्तित्व के रूप में व्यवहार के कारण व्यक्तित्वों के अनेकानेक भिन्न और भिन्न अंगों होते हैं। इस प्रकार व्यक्तित्व के कारण हम कुछ पक्षों में व्यक्तित्व के सामान्य विचारों को देखेंगे किन्तु इसी के कारण हम व्यक्तित्व के भिन्न भी देखेंगे। व्यवहारशास्त्र, व्यक्तित्व का सर्व व्यवहार के अधिक अंगों को देखेगा। व्यक्तित्व के संश्लेषणात्मक दृष्टिकोण में ऐसे अनेकानेक एवं अनेकानेक पक्ष भी शामिल हैं, जैसे चरित्र, तथा चित्तवृत्ति ( Mental States ) अनेक परिस्थितियों में व्यक्तित्व के विभिन्न व्यवहार उनके चरित्र के अनुसार होते हैं। चित्तवृत्ति का अधिष्ठान व्यक्तित्व की सामान्य एवं संश्लेषित दृष्टिकोणों से है। इसके व्यक्तित्वों के रूप में व्यक्तित्व चरित्र तथा चित्तवृत्ति—दोनों के अधिष्ठान होती है। यही नहीं, इसके अनेक तथा अनेक पक्षों के प्रति अधिष्ठानों तथा अनेक पक्षों की चरित्र एवं चित्तवृत्ति द्वारा ही निर्धारित होती है। व्यक्तित्व के रूप तथा चरित्र अधिष्ठानतः सामाजिक अधिष्ठान एवं सामाजिक कारण का अधिष्ठान है, किन्तु हम पर चित्तवृत्ति का भी अधिष्ठान पड़ता है।

चित्तवृत्ति व्यक्तित्व का ऐसा पक्ष है जिसे सामान्य और के सामाजिक या वैयक्तिक कारणों द्वारा निर्धारित मानते हैं।

मनोवैज्ञानिक तथा व्यक्तित्व के व्यक्तित्व अंगों के रूप में व्यक्तित्व के कारण व्यक्तित्व के द्वारा एक व्यक्तित्व के कुछ भिन्न विभिन्नताओं की वैयक्तिक अधिष्ठान ( Individual States ) है। हम फिर व्यक्तित्व की चित्तवृत्ति को लेकर अनेक देखेंगे कि व्यक्तित्व के कुछ सामाजिक अधिष्ठान ( Patterns ) शामिल करते हैं, किन्तु अधिष्ठान व्यवहार अधिष्ठान, व्यक्तित्व अनेक सामाजिक तथा अनेक प्रकार के अधिष्ठान द्वारा अधिष्ठान का भी अधिष्ठान करते हैं।

हम व्यक्तित्व की अवस्था में देखेंगे कि व्यक्तित्व (1973) ने व्यक्तित्व की परिभाषित किया था, "The term 'Personality', as used by psychologists, refers to the total behaviour of the individual, but particularly to those

relatively satisfactory and consistent aspects that cannot be compared with others in some ways and so be totally different and unique in others.” यह “व्यक्तिगत” होता कि परीक्षणियों में एकता प्रतीय किया है, व्यक्ति के संसृष्ट व्यवहार के है, अर्थात् साधक उससे है जिसके कारण दूसरों के कुछ कुछ तथा पूर्णतः में अन्य और अद्वितीय होते हैं ।

व्यक्ति के दृष्टिकोण के, होता कि बीन तथा ब्रान्सी ( 1937 ) ने कहा है, व्यक्ति, अनेकानुस रचना की संश्लेषणों का संश्लेष है, “को ज्ञाना ज्ञान को प्रति-विनिर्णयों के व्यवहार की प्रभावित करते हैं । ( Personality is defined as the organization of the relatively satisfactory aspects that constitute the totality of a person's experience ). व्यक्तिगत परिणामों का संश्लेष-निर्माण करते हैं जो व्यक्ति द्वारा परिनिर्णय के जाने जाते हैं, व्यक्ति सामाजिक परिवर्तन एवं परिनिर्णय में ही निर्दिष्ट होते हैं ।

### धूमिकाएँ तथा व्यक्तित्व निर्माण

( Roles and Personality Formation )

व्यक्ति का परिवर्तन करने वाली या उसे परिभाषित करने वाली अधिकांश विवेचनाएँ सामाजिक व्यवस्था के द्वारा नियमित होती हैं । व्यक्ति अपने पूरे जीवन काल में सबसे कम व्यक्तियों के व्यवस्था करता है । व्यवस्था मिलती-जुलती होती है उसका ही संश्लेषण उसके व्यक्तित्व का होता है । सामाजिक विचार एवं नियमित व्यवहार में संश्लेषण का होता है—कैसे दूर निवृत्त ज्ञान नहीं धूमिकाओं में मूल परिणामों होता है । उनके निरन्तर, जब व्यवहार में व्यक्ति हुए व्यक्तित्व संश्लेषण करते हैं जिसमें लोगों को अपने व्यवहार की अधिक एवं अलग-अलग धूमिकाएँ संसृष्ट के संश्लेष में हीनता की व्यवस्थाकरा होती है । इन सदस्यों की व्यवस्था निरन्तर परिवर्तित होती रहती जिससे वाता-व्याप की अधिक एवं अलग-अलग धूमिकाएँ होती जाती हैं ।

धूमिकाओं के निर्माण में हमारे समीक्षा ( interaction ) हमारे व्यक्तित्व की प्रभावित कर सकती है । धूमिका एक परीक्षणिकीय रीति ( रीति ) है जिसे हम ज्ञान पर चलाते और चलाते हैं और जो कम कम हमारे व्यवहार और सुष्ठु-वस्तु की प्रभावित करती है । किन्तु कम कम वह धूमिका में नहीं होते ही ही उनके ज्ञान व्यवस्था करते हैं । किसी धूमिका के अन्तर्गत व्यवहार अत्यन्त हीनता करते हैं, जिसका अर्थ है कि वे पुनर्निर्माण होते हैं । जब धूमिका निर्माण करते होते व्यवहार एक बार जैसे जैसे करते हैं तो पुनर्निर्माण की प्रति-रचना की परिनिर्णयों की प्रभावित पर के व्यवहार सुष्ठु पुनः प्रकट होते हैं । धूमिका व्यवहार के निरन्तर में व्यक्ति के लिए सामाजिक रीतियों ( Perceptual studies ) का

अभिलेख बाधक है। प्राथमिक लेखी या अन्य अपने तथा अपने अभिलेख के संज्ञान के विशिष्ट गतिशील है। यह प्रणाली (Paradigm) निर्मित करते हैं कि किसी भी दृष्टि अभिलेखित में किन भूमिका की आवश्यकता है। यहाँ यहाँ के ही यह भी निर्धारित करते हैं कि कौन-कौन भूमिकाओं का निर्वाह करें, तथा यह भी कि किन आवश्यकताओं की वजह भूमिका के अभाव है।

भूमिका-निर्वाह एक प्रकार की आत्मपुष्टि है। अभिलेखित में हम अपने विषय में जैसा प्रत्यक्षीकरण करते हैं, अपने प्रति दूसरों के सभी तरह की आवाजाही करते हैं। जैसे-जैसे हम एक से अन्य अभिलेखित में करते हैं, या एक के बाद अन्य भूमिका में होते हैं, हम अपने अभिलेख के अनेक पक्षों की अभिव्यक्त करते हैं।

भूमिकाओं, अभिलेख, दूसरों तथा प्रत्याशाओं की पुष्टि और आत्मपुष्टि की अभिव्यक्ति में अन्तर्क्रिया की प्रक्रिया के लिए एक एक प्रत्यक्ष की सभी आवश्यक है। मान लें X वाक्य एक कई वर्षों की अभिलेखिता है। यह हमें सिखा दे कि X वाक्य वाक्यता में कृत्रिम प्रणाली में जोड़ा गया है। किन X की केन्द्रीय भूमिका इस अभिलेखित में दीवार की है। यह सब सब हम भूमिका में करते हैं हमारे वाक्यक्रम के अनुसरण की प्रत्याशा की जाती है। हमारे यह भी प्रत्याशा की जाती है कि वे प्रत्याशाओं की यह सभी सभी, उन्हें पैक करेंगी, प्रतीक लेगी आदि। इन भूमिकाओं के अभिलेखित दीवार के रूप में उन्हें कुछ वाक्यक्रम की भूमिकाओं का निर्वाह की प्रत्याशा होगी—जैसे अनुशासन और नियमों की लागू करना। यद्यपि कुछ दीवार यहाँ कर्तव्यनिष्ठता की भूमिका दिया करते हैं—सर्वोच्च जोड़ा देना। वास्तविक वाक्यक्रम की एक प्रत्याशा की है ही अनुशासन से भी सम्बद्ध है। किन्तु किन X एक प्रत्याशावादी दीवार है बल्कि वे अनुशासन की लागू करती है।

किन X की अनुशासना के रूप में अभिलेखिता का निर्माण प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष यहाँ का, क्योंकि उन्होंने यह जोचना बना यहाँ किताब का वे इस अभिलेखित में कौन-कौन भूमिकाएँ दिया करती हैं और अनुशासना की भूमिका पूर्ण या न पूर्ण यह विचार हमारे रूप में स्वाभाविक रूप में जाता—सर्वोच्च प्रत्याशा की प्रतीक देना प्रत्याशा का रूप है यह यहाँ प्रत्याशा की कि प्रत्याशा का रूप यहाँ है। हमारे रूप में यह विचार दीवार सभी प्रत्याशा का रूप में प्रत्याशा की और उन्हें प्रत्याशा करते प्रत्याशा के लिए यहाँ। यद्यपि उन्हें प्रत्याशा का प्रतीक दीवार की प्रत्याशा की कि अनुशासना की भूमिका निर्वाह और हमारे रूप में भी यहाँ प्रत्याशा करती थी। संक्षेप, उन्होंने यह भी प्रत्याशा या कि सब प्रत्याशावादी प्रत्याशा करने की प्रत्याशा प्रतीक (Abstraction) जैसे अनुशासन के अनुशासना की भूमिका निर्वाह की प्रत्याशा की जाती है।



मैगलीन केन्टर के कुछ व्यक्ति को बिना कुछ कुछ एक पहिचान से बाहरे क्षेत्र कर योशों और किसी ? यदि उनका कुछ किसी चरमपंथी की पेशेवर छत्रक से हो रहा उसे दण्ड देनी ?

हम फिर X के विषय में बिना व्यापक जानकारी के उपरीक चर्चा का प्रसार न हो सकते, और यदि ऐसे का प्रसार करेंगे तो उसके कुछ होने की संभावना अधिक न होनी । किन्तु यह अवसर यह लगते हैं कि एक अनुशासन से उपरीक व्यक्तिगतियों में कुछ रहने की उपरीक प्रत्याशा नहीं की जा सकती बिलम्बी कि एक कर्म, दायित्व या अनुशासन के भी साक्ष्य । जो लोग किसी चुनिचा का निर्वाह प्रारम्भ के रूप में करते हैं वे अपने सामान्य कर्म के बाहर उन चुनिचानों के व्यवहार या करते हैं । जैसे एक कभीकत कभी चुनिचा में न होते हुए या कम्बुरी में न होते हुए जो विशिष्ट कर्मों की सामोकायनक भाव करता है । किसी विशिष्टता में अन्य व्यवहारों के सम्बन्ध में भी चुनाव किन्तु कभी प्रवृत्ति की उपस्थिति को बचाती है ।

कहने का साधन यह है कि जब हम चुनिचा विचारते हैं, तो अपने मान प्रकाशमान कर्म के व्यवहारों की विविधता को देखते हैं जो कि व्यक्ति के रूप का विचार वह रूप होते हैं और जो चुनिचार्द रूप लीकते हैं वे हमारे अस्तित्व की कार्यक बिना का निर्माण करती हैं ।

### रूप ( The Self )

मनुष्य में अनेक बहुत सीमायार्द होती हैं — बुद्धि, भाषा, स्वरूप तथा चिन्तन क्षमता । इनके ( विचार ) द्वारा वह न केवल अपने विचार में सीकता है । कर्म यह भी विचार करता है कि अन्य लोग उसे किन्तु रूप में देखते हैं । ऐसा विचार रूप का कारण कहलाता है । रूप से सम्बद्ध प्रत्यक्ष की स्व-प्रत्यक्ष ( Self concept ) कहते हैं । स्व तथा स्व-प्रत्यक्ष अस्तित्व विचार को प्रभावित करते हैं । स्व के प्रभाव से स्वाधीनता की प्रक्रिया भी सीमित नहीं होती है ।

स्व-प्रत्यक्ष एवं स्व-प्रतिमा—जब हम छोटी कक्षा के जीवन के स्व-प्रत्यक्ष की बात करते हैं तो हम एक सामान्य मानवीय प्रवृत्ति की और सीमित करते हैं— अपने आपकी एक बहुत सफरने की प्रवृत्ति । जन्म "स्वप्रत्यक्ष" शब्दों में, अपने प्रति अधिकृत तथा संतुष्टता की ही कहते हैं ( The term "Self" is an abbreviated way of saying "attitude toward and relationship toward one's self" Lindgren, 1973 )

संसार के सभी लोगों को हम नहीं जानते और न जान सकते हैं । सभी लोगों को सामाजिक और घर जानते हैं और केवल कुछ लोगों की ही पूरी प्रकाश जानते हैं । सामाजिक प्रजाती के केन्द्र वाले व्यक्ति की हमने प्रत्यक्ष रूप में जानते हैं—और

बहु हूँ स्वयं हूँ । इस प्रकार हम एक-दूसरे के प्रतिनिधित्व करते हैं, जो दूसरों के समान हैं जिसे हम जानते हैं, किन्तु हमारे जिने इसके अधिक मूल के कारण हमारी ही है ।

जार्ज हेर्बर्ट मीड ( 1934 ) ने कहा है कि हम, दूसरों के साथ दूसरी स्वीकारात्मक सम्बन्धिता ( Symbolic Interaction ) का प्रयोग हैं, और यह कि हम अपना व्यवहारिकता दूसरों की सोचों में अपने प्रतिबिम्ब के द्वारा कर सकते हैं । (George Herbert Mead ( 1934 ) observed that the self is a product of our symbolic interaction with others and that we can produce our selves only as a reflection in the eyes of another.) मीड के लेखा मीड सो- एच थुके (1902) है, जिन्होंने ( looking glass ) का दृष्टिकोण बताया था । उनके अनुसार हमारे पीछर दूसरों को एक तरह का दर्पण व्यवहार की शक्ति होती है, जिसमें हम अपने आपकी देख सकते हैं ( Charles Cooley described our tendency to see others as a kind of looking glass in which we can view ourselves. "In imagination, we personify in another kind some thought of our appearance, manners, ideas, deeds, character, friends, and so on, and variocally affected by it" ) थुके के अनुसार की स्वयं में प्रतिबिम्ब अपना प्रतिबिम्ब देखता है उसी प्रकार हमारे बीच स्वयं के समान होते हैं जिसमें वह अपने आपकी देखता है । हमारे सोचों के विचार, निर्णय आदि स्वयं के जिने स्वयं हैं जिसमें हम दर्पण होता है । मानता हम दूसरों के मन में अपने चरीर, रंग, रूप, आवाज़, और तरीक़ी, कादों, नीति, विषय आदि की देखते हैं और माना प्रकार के प्रभावित होते हैं । स्वयं ( looking glass ) का उदाहरण हम सबसे ज़ाहू नहीं होता जब हम वास्तव कल्पित अवस्था ( Imagined person ) के प्रति अनुकूलता करते हैं । मुँह देखने का स्वयं एक अवस्था और प्रतीकत्व वास्तु है, जबकि, जो कुछ हम प्रतिबिम्ब हमारे पीछर व्यवहारिकता करते हैं उसपर हम अपने प्रतिबिम्बों के प्रभावित एवं प्रभावितों तथा स्वयं हमारे व्यवहारिक व्यवहार द्वारा प्रभावित होता है । लिन्दग्रेन ( 1973 ) के अनुसार यह भी है जिसके द्वारा हमें यह या समझा का अनुभव होता है यह हम द्वारा वास्तविक प्रतिबिम्ब नहीं, बल्कि एक स्वयं स्वाधीनत्व है, हमारे कि हम पर हम प्रतिबिम्ब का कल्पित प्रभाव है ( The thing that moves us to pride or shame is not mere mechanical reflection of ourselves, but an imagined sentiment, the imagined effects of this reflection upon another's mind. Lindgren, 1973 ) बहुत कम इसके दूसरों पर प्रभाव का अवस्था है, यह एक प्रतिभा है जिसका प्रभाव यह हमारी ही पर



होता है। इस समझ में बात यह है कि अस्तित्व एक स्व-छवि (Self image) के है, जो कभी कभी एक संवेदन-परिभाषा के रूप में प्रकट होती है। एक परिभाषा का अस्तित्व स्व के प्रभाव पर के अधिक है, जबकि एक संवेदन में प्रभाव का विचार की विधि है, किन्तु इसका अस्तित्व अन्य चरों के भी है—जैसे अविश्वसनीय, दुर्गम, अविश्वसनीय, अज्ञान, अज्ञानता आदि। यह समझ यह अस्तित्व का स्व के रूप के प्रभाव प्रभाव पर एक सीमित है, परन्तु एक-संवेदन, प्रभाव पर के अस्तित्व अविश्वसनीय, दुर्गम, अविश्वसनीय तथा अज्ञानताओं आदि की ओर की प्रेरित करता है। (Dialectic experience, experience, self image and the idea of experience are also such other aspects as attitudes, values, motives, goals, expectations, and the like. Lindgren; 1973)।

**भूमिका-समस्या तथा स्व—भूमिका सम्बन्ध विचार अनुभव जीवन के आर्थिक चरों के है एक ही बात है जैसे विचार-समस्या सम्बन्ध।** एक का आभाव होने के पूर्व विचार की भूमिका-समस्याओं के अस्तित्व के का सामना करना पड़ता है; जो उसके परिवार के सम्बन्ध होते हैं। परिवारवादी की सबसे अधिक अधिकारों तथा सुझावों के यह करना तथा अपने व्यवहार का सुझाव करना सीखता है। भूमिका सम्बन्ध का एक महत्वपूर्ण अर्थ सामाजिक सुझाव है।

इस समझ भूमिका विचारों की यह है, इस बात का सीधे रूप में प्रभाव का संवेदन का है। इसमें है बात होता है, और इसकी सुझाव के उन्हें यह करता है कि वे अपने भूमिका का विचार विचारों सम्बन्धित कर रहे हैं।

आधुनिक के एक सामाजिक परिवार की परिधि के बहुत बड़ी के सम्बन्ध में जाता है, फिर भी एक बहुत एक बहुत के सुझावों के प्रभाव सम्बन्धित होता है। इस प्रकार आधुनिक के एक अती-अती सामाजिक का सामाजिक सम्बन्ध का सीधे प्रभाव होता है, इसके भूमिका सम्बन्धों के एक अतिरिक्त एक सम्बन्धित होते हैं और वे अपने स्व संवेदन के सुझाव और सुझावों में बहुत ही सामाजिक अनुभव के प्रभाव सीधे के प्रभाव का अनुभव करना सीखते अपने हैं।

## सोच सिद्धान्त तथा स्व सिद्धान्त

(Mind Theory and Self Theory)

स्व सिद्धान्त, सामाजिकताओं के एक सीधे तथा सुझावों की सम्बन्धों पर निर्भर है। सोच सिद्धान्त का परिचय डॉ. लेवि (1933) के करता है। इसकी उत्पत्ति बीजिकी की परम्परा में विद्यमान है जिसकी उत्पत्ति सुद्ध, तथा मार्टिन लिड्ग्रे (1968) के की थी। इन चरों की विचारों का ही यह सिद्धान्त ने किसी

विश्व पर्यावरण में व्यक्तियों या व्यक्तियों के विवरण में विश्व का देश ( *Ecology* ) के रूप में किया; जो वह विशिष्ट करता है कि वस्तुएं कैसे व्यवहार करेंगी ।

लेकिन के अनुसार सभी मनोवैज्ञानिक मतार्थों ( *विश्व व्यवहार* ) व्यक्ति के जीवन देश के प्रकारों हैं, जिसके अनार्य व्यक्ति का उनके परिचित मनोवैज्ञानिक कारणों के जटिल प्रभाव संघर्ष ( *conflictualities* ) के रूप में निर्दिष्ट होते हैं । उनके व्यक्ति तथा पर्यावरण के सम्बन्धों की सम्बन्धित सामग्रियों ( *psychological state* ) अथवा ऐच्छा-विषय के रूप में व्यक्त किया । उसमें व्यक्ति ई का व्यवहार, वह मनोवैज्ञानिक क्षेत्र ( *क्षेत्रों* ) जिसमें वह निपट है, तथा उसके भीतर के तनाव के द्वारा संश्लिष्ट होता है । जीवन देश ( *Life space* ) व्यक्ति का वह मनो-वैज्ञानिक क्षेत्र है जिसमें वह निपट है और जो उसके व्यवहार का संयोजन करता है ।

ऐसा विज्ञान के विचारों की अधिक सरलीकृत रूप कार्य प्रारंभ ( 1931, 1941 ) तथा कार्य-सोम तथा प्रभाव नियम ( 1939 ) की पुस्तकों में किया है । लेकिन के कारण में भी मानते हैं कि वह, मनोवैज्ञानिक क्यों के क्षेत्र में बहुत तथा बहुविधा करता है । इस प्रकार के प्रभाव के विश्व ही वह विज्ञान का उपयोग किया जाता है । मनोवैज्ञानिकता केपरी एंड्रस कुलीबार्ड ( 1947 ) कार्यात्मकता सिद्धांतों और मानकों के अनुसार ही वह विज्ञान में अपना योगदान किया । यद्यपि क्षेत्र वह वा मनोवैज्ञानिक विज्ञान के प्रत्येक प्रवर्तक कुछ ऐसे संयोजन का परिचय कराते हैं जिसके कारण उनका दृष्टिकोण अन्य के विभिन्न प्रतीत होता है किन्तु विज्ञानों में फिर भी अधिकतम तथा समन्वित प्रतीत होते हैं । एक बात फिर पर सभी में मत किया है, वह है 'अव्यक्तिकरण' और इस दृष्टि में हम सभी की संज्ञात्मक विज्ञान वह करते हैं । इसके अतिरिक्त सभी विज्ञान कार्यात्मकता सम्बन्धों पर मत होते हैं, और हीरे एंड्रस कुलीबार्ड इस पर मत होता है कि व्यक्ति का जीवन अन्य व्यक्तियों के साथ हमारी सम्बन्धियों के सम्पर्क मात्र में है ।

## रूप का मनोविश्लेषणात्मक विज्ञान

( *Psychoanalytic Theories of the Self* )

यद्यपि मनोविश्लेषक विज्ञान, वह विज्ञानों की सर्वोच्च सुसज्जिततात्मक सामग्री पर अधिक मत होते हैं किन्तु उनमें वह के प्रभाव की पर्याप्त भी की गई है । जैसे सुप्त का वह है । यद्यपि प्रभाव प्रभाव वह का अनुसंधान को निर्दिष्ट क्यों में करता है । वह का उपयोग वह बहुत के रूप में मत समझ करता है वह वह ऐसे ही का उपयोग द्वारा प्रभावित मानता है । किन्तु वह वह का उपयोग मत करने में भी करता है जिसके द्वारा व्यक्ति की वास्तु स्थिति का परिचय होता है तथा जिसके



अग्नि की लहने से हीरा का चमड़े से या चिड़ियों से रूखा नहीं बोलता था, वे ब्राह्मी सभ या स्वयंसेवक विरोधियों में कोई परिवर्तन नहीं उत्पन्न किया।

क्या ब्राह्मी-सभ और स्व-सेवक में विरोधों का होना सामान्य सामाजिक व्यवस्था का कारण है? आधुनिक बौद्ध तथा सुन्सर्ग सिन्धर (1967) ने देखा कि सामाजिक सभ (सभ संरचना) और ब्राह्मी-सभ में विषयता 11 से 17 वर्ष के बीच बढ़ती है, तथा अधिक बुद्धिमान अग्नि कम बुद्धिमानों के अधिक विषयता करते हैं। सुन्सर्ग बौद्ध के अनुसार यह सीखा भी गया कि अग्नि कम अधिक परिपक्व तथा अग्नि विषय (Potentialities) से उल्लिखित करते हैं। पाठा है, ही विषय से उल्लिखित के समझने, व्यवहारों करने करता है। सामाजिक तथा विषय (Potentialities) संरचना में व्यवस्थित विरोधों के साथ विषय की विविधता माता बुद्धि बढ़ती है, किन्तु विषय की समझ तथा अधिकतर व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक होती है। व्यवस्था विषय की सामाजिक सीमा के समझने रखने की है। बौद्ध तथा सिन्धर ने यह भी देखा कि जैसे जैसे व्यक्ति विषय की समझ सीखा की और बढ़ता होता है, उनकी व्यवस्थाओं के विचारों की बढ़ी हुई योग्यता के द्वारा वे अपने जैसे और अधिक व्यवस्थाओं में रहते हैं या सेवा कर लेते हैं। यह विषय बुद्धि का उच्च सामाजिक हो जाता है ही यह व्यवस्थाओं की जाती है और व्यवस्थाओं में व्यवस्था की योग्यता और जीवन के कुछ में बाधक होने लगती है, ही ब्राह्मी ब्राह्मी के अनुसार व्यवस्थित सभ और स्व-ब्राह्मी के समझों की सुझावें बढ़ती अपने साथ विरोधों की कम करना सामान्य है।

सांख्यिक सभ (The Phenomenal Self)—ब्राह्मी सोम तथा सन्सर्ग सिन्धर (1959) के अनुसार व्यवस्था व्यवस्था (Symptoms of personality) का क्षेत्र है, जिसे वे सांख्यिक व्यवस्था (Phenomenal consciousness) अथवा यह व्यवस्था कहते हैं वेदा कि अग्नि व्यवस्थाकरण करता है। इसका (सांख्यिक व्यवस्था) यह साथ ही सभ के समझ व्यवस्थित किया जाता है, सांख्यिक सभ व्यवस्था है। इस क्षेत्र में अग्नि के विभिन्न व्यवस्थाओं तथा व्यवस्थाओं में जाती है। सांख्यिक व्यवस्थाओं के यह व्यवस्थाओं में व्यवस्थाओं में वेदा वेदा वेदा, यह ही अपने क्षेत्र के समझ व्यवस्था होती है, व्यवस्था, यह सांख्यिक सभ की व्यवस्थाओं में विषय व्यवस्था जाती है। यदि हमारा सुन्दर व्यवस्था हो जाता है ही हम व्यवस्था व्यवस्था का व्यवस्था करते हैं, क्योंकि 'वे' अपने सांख्यिक सभ को करने में व्यवस्थित करता है। बौद्ध की व्यवस्था व्यवस्था या करने का क्षेत्र के वेदा है, यदि अग्नि यह व्यवस्था करता है। कि यह उनके व्यवस्था व्यवस्था का व्यवस्था के वेदा व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था है। सोम तथा सिन्धर के अनुसार ब्राह्मी ही व्यवस्था-

केवल आत्मसमझता सांस्कृतिक की बढ़ावा तथा बसावू रखता है। जो बहुत कमसे कमजोर हो सकती है, उसकी पूर्ण समझी जाती है।

सब कार्य के सुधार के रूप में—व्यक्ति अपने सांस्कृतिक संसार का संरक्षण उस प्रकार करता है कि उसके सांस्कृतिक रूप की संरक्षित हो। अपने राष्ट्रीय में हम राष्ट्रपति को एक वाक्य के कहते हैं कि उनका हम के कोई सम्बन्ध है जयन्ता नहीं होना यदि है तो वह बलवान्ता का संरक्षण है। इस व्यवस्था में हम यह निर्दिष्ट करते हैं कि जिस राष्ट्रपति का बलवान्ता का हम सामना करते हैं, के हमारे विरुद्ध कोई राष्ट्रपति नहीं है या नहीं, जयन्ता उनका हमारे कोई सम्बन्ध है या नहीं और सम्बन्ध है तो उसकी माता क्या है। कोई राष्ट्रपति दुर्बलता बल हो गया तो हमारे लिए कोई किसी का विचार न होना, किन्तु किसी ने आपका राष्ट्रपति नहीं या यदि वह दुर्बलता बल हो जाए तो वह सुधार की होना और निरालावन्ता की।

मान ही मान सब में बढ़ते हैं, जेलों कीर्ति जाती है। एक हीट पर एक विद्यापीठ है जिसके हवाई में सर्वोपेक्षा की एक ऐसी सुधार है जो अपने सुधारवाक्य में जयन्ता नहीं है और मान जो बढ़ते की हीट बलिदान रखते हैं। जयन्ता जेलों कीर्ति है, मान जयन्ता बल की हीट का बलन करते हैं। देश क्यों? एक-विद्यापीठ के अनुसार अपने सर्वोपेक्षा के साथ के एक बलन की संरक्षित बना सर्वोपेक्षा का सर्वोपेक्षा के विद्यापीठ के साथ बलन के होती है जो किसी अन्य विद्यापीठ पर बलन के न होती। एक ही बलवान्ता सम्बन्ध विद्यापीठ के आधार पर की हो सकती है, जिसके अनुसार बलवान्ता हीटपुर्ण बलि व्यक्तियों में बलवान्ता होता है।

वैयक्तिक जीवन में सभी लोग जेलों प्रकार के छोटे-बड़े बलन करते हैं जो अपने बलि में तथा हीट के विचार में उनके बलवान्ता की सुधार एवं बलवान्ता करते हैं। यदि बलवान्ता के बारे में राष्ट्रपति तथा बलवान्ता का बलवान्ता बलन नहीं होता, जयन्ता केवल एक बलवान्ता की और बलवान्ता होते हैं जो किसी बल के बलवान्ता होती है या हमारे लिए बलि रखते हैं। बलवान्ता की ऐसी बलवान्ता के द्वारा बलवान्ता, बलवान्ता में बल, तथा अपने हीट सुधार, बलवान्ता का बलि बलि बलवान्ता का बलि बलि करते हैं।

इस प्रकार हम बलि लिए बलवान्ता निर्दिष्ट करते हैं और जब वह बलिबल की बला में होती है या बलवान्ता (Balkana) होता है, तो हम ऐसा अनुमान करते हैं कि हम किसी हीट पर बलवान्ता में हैं। बलवान्ता बलवान्ता है। इसका बलि केवल यह नहीं है कि वह बलिबल की हीट होता है, बलवान्ता बलिबल के साथ उनके बलवान्ता-बलवान्ता के भी है। बलवान्ता के अनुसार बलवान्ता बलवान्ता में बलवान्ता कि वे नहीं बलवान्ता कि हीट बलिबल क्यों है, कोई बलवान्ता व्यक्ति जो बलवान्ता में नहीं

हृद कहत कि राज्य के राजनिक क्षेत्र में, परिवार, सामरिक सामरिक प्रान्त की बुनियाद बिना है। परिवारिक संरचना में राज्य-विस्तार समाजीकरण के प्रमुख साधन होते हैं क्योंकि वे नागरिकों की मूल तथा मध्य अवस्था करते हैं जिन्हें विभिन्न प्रकार के व्यवहार उद्दिष्टान निर्धारित होते हैं। ऐसे व्यवहार प्रदर्शित व्यवस्था की आधार प्रदान करते हैं। इसके में, वह व्यवहार उद्दिष्टान बहुमुखी व्यक्ति में व्यक्ति या व्यक्तिगत अनुकूलताओं के रूप में उद्दिष्टियाँ प्रदान करते हैं। वह अनुकूलताओं प्रदान में अपनी पहचान तथा उसके प्रति दूसरों की भावनाओं का बोध प्रदान करता है। व्यक्ति व्यवस्था अनुकूलताओं, राज्य की अनुकूलता व्यवस्था के लिए सामग्री प्रदान करती है जिसके परिवर्तनजनक प्रयोग करके समाजीकरण होता है। राज्य व्यक्तियों की अनुकूलताओं द्वारा किसी व्यक्ति सामाजिक अनुकूलताओं तथा सामग्री व्यवस्था होती है, व्यक्ति की तथा उसके परिवार होती है और समाजीकरण के लिए की जाति की संभावना प्रदान ही प्रदान होती है।

विद्यार्थ ने अपनी उपकल्पनाओं की परीक्षा के लिए आत्मापर सुनिश्चि का प्रयास करने की कक्षा के विद्यार्थियों पर तथा उनकी बातों पर बहुत अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। अध्यापकों के कक्षा के आचार्य तथा उनके ही उनकी बातों के प्रयास सम्मान का नाम ( Positive regard ) की शिक्षा ( Gestaltism ), और अनुसंधान ( Inquiry ) में प्रयासक अनुसंधान प्राप्त है।

[illegible]

हम यहाँ एक ऐसी परिस्थिति का विवरण दे रहे हैं जिसमें लॉय गामासिन्थ  
अधिकतम के प्रति अधिकतम उत्तर देती है। इस परिस्थिति के दो पक्ष हैं। एक में

हमने अपने प्रति कुछ व्यक्तिगतों की नीति है ( जो वेब का चर्चा कुछ की हो सकती है ) और अन्य व्यक्ति तथा व्यवस्थित करना चाहते हैं । हमारा यह है कि अन्य लोग हमारी प्रवृत्ति का उपयोग कर सकते हैं यह बहुत बुरा है कि हम अपने सामाजिक जीवन में चलते हैं । अन्य व्यक्तियों की यह व्यक्तिगत कि हमें वे हम से बचता नहीं करता जानते हैं, हमारे जीवन किसी भाव में प्रतिस्पर्धा प्रारम्भ करती है । यह हमारी सुरक्षा की समस्या के प्रति बचता बन जाती है और हमारे इस बात को दिखा देती है कि हम स्वतः अपने व्यक्तिगत हैं और हम अपनी यह जानते हैं कि हम क्या हैं और क्या नहीं हैं ।

केवल विचारों की समझ नहीं होता क्योंकि यह एक अधिक व्यापक प्रणाली-कारण प्रणाली का भाग होता है । समाधान के लिए जो व्यक्ति यह चाहता है कि वेब का उपयोग है, इसे प्रणाली की इस समस्या को बदल नहीं सकता जब तक कि यह अपने तथा संसार के जीवन में अपने संसार में अपना व्यक्तिगत न आए । यह सीधे चरण कार्य नहीं है, और अधिकतर व्यक्ति ऐसा करने में हिचकिचाते हैं ।

हम के विश्लेषण ( *Pinpoint from self* )—एक समझदार में विवेक विचार का कारण भी है तथा प्रभाव भी । हमकी या हमारे के सामाजिकता में हमारी के जीवन के प्रति विरोधी व्यवहार प्रणाली होता है और और, सामाजिकता का कारण है व्यक्तिगत—सीधे कि हम और विचारों की समस्या में होता है । व्यक्तिगत प्रणाली हमारी में हमकी का कारण प्रणाली, प्रणाली, या अन्यथा होता है और हमारा विश्लेषण विचार के रूप में ही सकता है । जिस व्यक्तिगतों की समस्या समझना चाहिए होता है उनमें "विचार-वेब" अन्य भाव में विश्लेषण होती है, और वे बिना चर्चा का सामाजिक जीवन होती है ।

विचार वेब ही समस्याओं स्थित है, अतः विचार प्रणाली करने वाली व्यक्तिगतियों के दूर रहना चाहते हैं । यह प्रतिस्पर्धी विचारों की बराबरी या समाप्त करती है । हमारी के साथ हमारे समस्या विचार के सामाजिक जीवन में व्यक्तिगत अन्य सीधे के प्रति समाधान के समझदार होती है और अंततः व्यक्तिगत भी हमारे सामाजिक विचारों के बड़े व्यक्तिगत अन्य लोग की विचारों सुझाव करने रहते हैं ।

एक समस्या, अनुसंधानशीलता ( *Unpredictability* ) और विचारों की चर्चा में बहुत समस्या में यह सामाजिक होता व्यवस्था है कि हमारा व्यवहार तथा व्यक्तिगत तथा वेब है विचार कि हो सकता है । सभी प्रकार के विचार विचार विचारों ( 1969 ) में बचत होती है ।

"व्यक्ति के विचार में व्यवस्था के एक सामाजिक जीवन के संवेदीकरण के लिए संवेदि एक जीवन कार्यविधि ( *Self-Inspection* ) विचार बन जाता है, जो हमारी की समस्या के बहुत व्यक्तिगत विचार एवं व्यवहार में जाना जाने व्यक्तिगत की

निर्धारित करता है।" (...Consistency becomes a self-imposed principle in order for the individual to maintain a conception of himself as a normal member of society who, in behaving as others expect him to, gains their social recognition as rational decision-maker, whose decisions help him to control his environment, Zimbardo, 1969 ).

जिम्बार्डो यह भी कहता है कि व्यक्ति तब संतुष्ट व्यवहार के द्वारा व्यक्ति समाज के एक सदस्य के रूप में अपने उत्तरदायित्व को ग्रहण करता है। व्यवहार का ऐसा निर्बंध, जिम्बार्डो के अनुसार व्यक्ति को व्यक्तिता प्रदान करता है। व्यक्तिता (Individualisation) की ऐसी प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति अपने को उन सभी विरोध में कहा करता है जो व्यक्ति के रूप में कार्य करने के प्रकार करते हैं और इस प्रकार यह व्यक्ति के संघर्षों से अपने को मुक्त व्यक्तिवैयक्तिक समुदाय विरोधी के संज्ञा है। ( Zimbardo notes further that in behaving rationally and consistently, the individual assumes responsibility for himself as a member of society. This decision to make such a commitment, according to Zimbardo, individualises the individual who makes it. Through such a process of individualisation, a person "sets himself in opposition to all who refuse to act individually, and thus separates himself from tribal ties to undifferentiated (infer) group action."

इसकी विरोधी प्रक्रिया व्यक्ति रूढ़िवादी (deindividualisation) कही जाती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति, व्यक्ति के रूप में अपने व्यवहार का प्रवर्धन का कुछ धर्म को करता है और जिनमें वह नियंत्रण में कनेक्टाइज्ड रूप प्रदान की जाता है। इसके सामान्य नियंत्रण को आत्म निर्देशन और सामूहिक पर धारणित होते हैं, जब लागू नहीं होते या कार्य नहीं करते। सामान्यतः यह समाज-विरोधी, स्वार्थी, नीची, अति-बहु, विवाधकारी व्यवहार करने करता है। इसी और अपने हीन सम्मत्ता या कुछ की मान्यता होती है।

व्यक्ति रूढ़िवादी (Deindividualisation) के द्वारा व्यक्ति अपनी क्रियाओं के लिए उत्तरदायित्व भाव से मुक्त कर देता है। ऐसा करने का कारण यह है उनके जीवन के अतिरिक्त इसके यह यह है कि व्यक्ति और उत्तरदायी होने की भाव इसके प्रत्यक्ष से नहीं व्यक्ति है। यह कहा जाय: वह संभव देखी जाती है वह व्यक्ति अतिरिक्त व्यक्तिता (जब के हुए कहा में) का किसी भी में व्यक्ति होता है।



औषधि द्वारा स्व से चलायन :—अधिकांश पशु पक्षी तथा मत्स्य के चित् चलेक अंग अंग (गुण) को प्रभावित करते होते पदार्थ—जैसे रंग, गंध, चरस, शक्ति वा शक्त प्रभावी औषधि (Psychomotoric drugs) जैसे कैफाकिन, मस्कोइन, तथा एन्-ए-सी-आदि का प्रयोग करते हैं। मरिजुअना (Marijuana) के प्रभावों की शक्ति के सम्बन्ध सम्बन्ध में सोवियत-रूसों ने मरुभूमि तथा मरुभूमि मरिजुअना उपभोक्ताओं की प्रतिक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। टारन (Tarn) लोरेन्सो ने मूल अल्कोहोलिक (Alcoholic) और दुग्ध तथा मरुभूमि मरुभूमि में कोई विविधता की निर्णय नहीं किया। मरिजुअना के मरुभूमि उपभोक्ताओं के कभी ही मरुभूमि को काफी बताया। यह बीच स्थित होता है कि अधिकांश पशु पक्षी की प्रेरणा औषधि केवल का सम्बन्ध अध्ययन करने है।

होटेलरों की सेवाओं की प्रतिक्रिया सख्त निषिद्ध होती है जो व्यक्ति अपने आजीवन नियोग से मुक्त होना चाहते हैं, के एक अनुभव की बाद-बार प्राप्त करने के सम्मुख होते हैं, व्यक्ति नियोग कोटार से बाधनी का अनुभव करने वाले कोटार: एक जीवित विरोध के समर्थक हैं।

के जीवन होते हैं जो बीचधि सेवन के मादो हो जाते हैं ? रिवाई कम ( 1971 ) कहते हैं कि बीचधि सेवन करने, कमजोर, अनुपयुक्त तथा बुभेद होते हैं । वे नापसिक्त कष्ट होते, अक्षित, निवेन, तथा ऐति दुःख जो वय-अनुद् के वयन के प्रति अतिदीर्घ नहीं कर पाते, जो उनके सुवचन और सुनरिणन के अतिविश्व नहीं होते, अक्षित आभासी देने वाले माता-पिता के अक्षे, अक्षिजोर अनुशासन में वक्षते वाले या के अक्षे जिनके माता-पिता उन्हें आदर नहीं करते ।

दुसरी विश्वयुद्ध (1971) के समय के विचारों के प्रति सज्जुबानी प्रकट करते हुए सोवियत वैचारिकों की कुछ रूप के वैचारिकीकरण (Intelligibilization) व्यक्तिगत है जो आन्तरिक वैचारिक निर्माण तथा परंपरागत अन्तर्मुखितिक विचारों और सामाजिक व्यवस्था के आकाशी प्रकट है ।

**सांख्यिक निर्णयता और क्षमताविकास**

[ Social Dependence and Independence ]

समाविष्टता, आत्मज्ञान, तथा सर्वज्ञात्मकता:—बहु व्यक्ति विषये जका विचारण होता है कि “बहु कौन है” और अपने व्यवहार तथा विचारों के लिए हमें को कलपनायी लगता है, बहु व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान रखता है। हेनरि रोबर्त्स ( 1853 ), ऐसे व्यक्तियों की संगठनपुत्र ( Insane Organization ) मानि कहता है। अपने वस्तु के विन्यास ( Deductivism ) के कारण जर्मि साभा में व्यवधान और समझता आता है।

अर्थिक वि. उपलब्धता का अभाव एवं उचित संसाधन की कमी सीमांतकों का बड़ा बड़ा अड



की भावना उत्पन्न करते हैं। बहुत बड़ा नियमों और नियमितताओं के बारे में भी मान है, यदि वे प्रसारित (Disseminated) तथा कार्य के समुच्च होते हैं तो सामीप्य तथा असाधित प्रकृति वाले व्यक्ति उन्हें स्वीकार करते हैं।

एक और अवस्था, सामीप्य, तथा अव्यवस्थित व्यक्ति और दूसरी ओर वह व्यक्ति होते हैं जिसकी असाधितता तथा अव्यवस्था में कम कम होते हैं। ऐसे व्यक्ति अव्यवस्थित व्यवहार से अधिक रुचि लेते हैं।

राबर्ट के. मिच ( 1967 ) ने एक अध्ययन द्वारा दर्शाया कि बिटोही और अनुकूल, अनुकूल असाधित व्यक्तियों के बीच होते हैं किन्तु अध्ययन में मान्य में समान होते हैं। राबर्ट मिच के अवलोकन ( New occurrancy ) के माध्यम से एक प्रभावशीलता की ओर रुचि व्यक्ति के 162 युवा छात्रों पर प्रदर्शित किया। यह परीक्षण में कम कम बड़ा कक्षाओं की करने बिटोही ( Rebels ) बहुत व्यक्ति के समान द्वारा अनुकूलित व्यवहारों के विरुद्ध व्यक्तिगत रूप से और युवा कम प्रतिक्रियाओं की करने अनुकूल ( Conformists ) बहुत व्यक्ति के बिना साधित सामाजिकीय व्यवहार के प्रति सामान्य उत्तरदायित्व दिखाते थे। नाम विचार ( Middle-class ) में कम बड़ा करने वाले असाधित रहे पर, व्यक्ति के सामाजिक सामर्थ्य के प्रति अव्यवस्था दर्शाते करते हैं। वे कुछ मामलों की स्वीकार और कम की स्वीकार करते हैं। वे मामलों की न ही निरिक्त रूप में स्वीकारते हैं न ही निरिक्तता के साथ विचारित करते हैं, व्यक्ति अधिकतर ओर स्वीकार करते हैं। इसके बाद दोनों समूहों के मनोवैज्ञानिक कार्यों का अध्ययन किया गया। अव्यवस्थित अव्यवस्थित, यह व्यक्ति, या सामर्थ्यवृद्धि के मनोवैज्ञानिक कार्यों पर बिटोही तथा अनुकूल दोनों के असाधित प्रतीकों के संबंध कम में अधिक प्रतीक प्रकृत किया। उन्होंने सामाजिक उत्तरदायित्व, और मान्यता तथा अव्यवस्थितता के स्वतंत्रता के कार्यों पर भी कम से समूहों के अधिक कम बड़ा लिये। इन दोनों प्रकार की मानवियों पर बिटोही ने अनुकूलों के कम कम बड़ा लिये, किन्तु निम्नता कार्य नहीं की। यद्यपि, इन मानवियों के प्रतीकों के अनुसार बिटोही तथा अनुकूल, असाधित प्रतीकों की दूसरा में मान्य में अधिक समान थे। अव्यवस्थित व्यवहार के अव्यवस्थित प्रतीकों की मान्य ( किन्तु अव्यवस्थित व्यवहार द्वारा प्रकृत उत्तरदायित्व होता है ) के मंडी के आधार पर बड़ा हुआ कि असाधित प्रतीकों ने कम की समूहों के अधिक कम बड़ा लिये, किन्तु उनमें तथा अनुकूलों में अंतर प्रतीक नहीं था।

सामाजिक निर्भरता तथा सामाजिक अधिकार—अधिकार-अधिकार उत्तरदायक ( Dependence-independence relations ) पर जिस व्यक्तियों सामाजिक अधिकारों कीवशी पर लीयी है उनके सामाजिक अधिकार की वीथिया

विश्व होती है और यह विमर्श आरंभित अन्तर्गत में ही प्रकट होती है। पीकेके पीस ( 1946 ) ने 26 वर्षीय-युवक-वर्गों के दो समूहों को एक छोटा कमरा ( Play Room Office ) बसाने का काम दिखाया। आठवें पयन 101 वर्षों के समूह ने अधिक व्यवहार की भाषा के आधार पर किया गया था, अधिक व्यवहार का प्रयोग—वर्गों द्वारा किसी कार्य के सम्पादन में सहयोग करना, पीकेके के पुनः आश्वासन, पीकेके के माता-पिता को पढ़ना, आत्मनिर्भर व्यवहार की अभिव्यक्ति करि वे। दो समूहों में से एक में सांख्यिक अधिक और अन्य में अनुचित वर्गों की रखा गया। यदि पर प्रभाव-विशाल के रूप में यह में दो प्रकार के व्यवहार किन्तु। एक व्यवहार-अन्तः सेवा, पुनः वही सीखना, सभी पर सुख सदाता, सभी को लड़ी दोनों की अपने विचारों आदि व्यवहार का प्रकाश देता दिखीक और अनु-दीपी वा—मेकमॉनिस को कल्टे राखे के वाता, देखीक कल्टे कल्प एक हीन मुली पर रचना आदि। अधिकता में युव युवचित वर्गों ने वाक्पार प्रदान में सर्वक व्यवहार अधिक सीखा और अधिकता में अन्य प्रयोगों दिखीक व्यवहार अधिक सीके। कम अधिक वर्गों के माता-पिता उपस्थित पर बहुत कम देते हैं, कम यह विमर्श उनके व्यवहार में स्पष्ट होती है। अधिक अधिक समूह निमित्त ही अधिक कारीमुक्त वा। उन्होंने प्रतिक्रिया द्वारा प्रतिक्रिया यह व्यवहार की प्रभाव के देखा वा जो साक पर बताने हेतु कार्यक वे, और दिखीक व्यवहार की प्रेरणा किया। दूसरी और सांख्यिक अधिक वर्गों में प्रतिक्रिया के प्रतिक्रिया व्यवहार पर प्रभाव प्रभाव दिया। वाक्पार में अन्य अधिक समूह ने अनुचित समूह की प्रेरणा अधिक सीखा—करीकि समूहों में सर्वक और दिखीक दोनों प्रकार की बातों को सीखा वा। अनुचित वर्गों ने केवल कार्य को कल्टे प्रकार प्रभाव और सभी समूह किया।

### अन्तर्गत और व्यक्तित्व

( *Birth Order and Personality* )

बीजावादा की अभिव्यक्तियों तथा व्यवहार पर वाक्पारवा की अनुसंधानों के प्रभावों के रूप सभी परिचित हैं, किन्तु इन सम्बन्धों का सम्पूर्ण तथा व्यापक रूप अधिक कार्यक नहीं होता। कारोमैकमॉनिस ने इन सम्बन्ध परिचालों का कर्मीकरण वाक्पार और विविधता किया है।

(1) प्रथम तथा बाद के जन्मे वर्गों में सादरता-विमर्शार्थ—अन्य कम कम वर्गों को बीजावादा में अपने कम बाद वर्गों की प्रेरणा कुछ सुनिता होती है—विशेषकर, सीखिक, सामाजिक, और अधिक प्रभावता में। हेराल्ड पीस ( 1954 ) ने सुविमर्श अभिव्यक्ति, प्रभावता वर्गों, अभिव्यक्ति

जन्म विज्ञान अभिरक्षी परिवारों पर एक सीधे सुझाव दिया द्वारा अध्ययन किया। उन्होंने देखा कि इन सभी समूहों में जन्म कम कम वालों का अवधिगत प्रति-निधित्व था, बाड़े परिवार का आधार कुछ भी हो। "Wbo in Wbo" अभिरक्षी में दिने वर वालों में सीधे कि इन अवस्था करते हैं कि वो सभी वाले परिवारों में वो 'Wbo in Wbo' में दिने वर वालों में वर्तमानवत्ता के आधार पर 50% होना चाहिए किन्तु वास्तव में 2% जन्म कम कम वालों के साथ सुनी में थे।

दूसी प्रकार तीस वक्की वाले परिवार में अमेरिका केल-इन-सीडन में 33% के वरपर 44% जन्म वक्की के साथ थे।

विभिन्न एलन ( 1965 ) ने भी समान परिणाम प्राप्त किए। बाण द्वारा अवधारित के सभी अधिक जन्म कम कम वालों के निम्नम वेरिड छात्रद्वितीय परीक्षा में उपलब्ध अंक प्राप्त किए। वो वक्की वाले परिवार में अवधारित 30% के वरपर 66% के छात्रद्वितीय प्राप्त की। दूसी प्रकार की विधि तीस और बार वक्की वाले परिवारों में भी देखी गई।

वह सीधे परिणाम प्रकट होते हैं कि इन पुष्पावली के जन्म कम कम वालों की अवस्था जन्म वक्की के प्रकट होने की संभावना अधिक होती है। अमेरिकी विज्ञान-विज्ञानियों में प्रकट करते वालों में भी जन्म वक्की की संभावना अधिक प्राप्त हुई।

जोस तथा एलन के परिवारों की एक अवधारण व्यवस्था के अनुसार वह कहा जाता है कि वर्तमानवत्ता कम के जन्म वक्की की विज्ञान-विज्ञान के लिए परिवार के माध्यम ( Kibben-Gibben ) का अधिक उपयोग होता है वरतः उनका प्रतिष्ठित जन्म विज्ञान में बाण प्रतिष्ठित के अधिक होता है वह बात जन्म बाण वक्की पर उन्हें सुनिश्चता अवधान करती है। एलन के प्रकट पुष्पों की तरह अधिकारों पर भी बाण होते हैं इसी तरह वो ही लगता है कि जन्म-कम में वक्की की बाड़े में किसी चीज के हो जन्म कम वालों की अवस्था किसी प्रकार की मनोवैज्ञानिक सुनिश्चता होती है। सीडन-वत्ता में उनकी अवधारण अधिक अवधारण प्रकट की लगता के सम्बन्ध प्रकट होती है, वहाँ में बाण के जन्म कम वालों की लगता में अवधारणों की अवधारण के अनुसार होने की प्रकट, समीक्षात्मक ज्ञान के प्रति अधिक सुनिश्चता, सुनिश्चता की अधिक भाव, अधिक संशय, उनका अवधारण परिणामों के प्रति अधिक अभिरक्षीय, तथा कम अधिकमक करते होते हैं। सीडन ( 1968 ) के अनुसार वह सभी कारण जन्म वक्की की अवधारण अभिरक्षीय और सीधे विचारण में प्रकट करते हैं।

(2) जन्म कम सुनिश्चताकरण के अनुसार—एक परिवार में बहुत बालों के विचारण की प्रकट-जन्म करने में विचारण की प्रकट के सम्बन्ध होती है। वह कम के कम प्रकट जन्म कम के वक्की में विचारण ही साथ है। सीडन विचारणों में

लक्ष्यता एवं अनुकूलता बनने प्रसट रूप में सामाजिक सम्बन्धों के सम्बन्ध होती है। भारतीय लोकनीतिपर, मुनियर ( 1946 ) ने सुझावों में अन्य कम तथा सामाजिक उत्पीड़न का सम्बन्ध विचार और यह देखा कि विकास के लिए उद्यम अन्य कम वाली के बचन की सम्भावना अधिक होती है। क्योंकि अन्य सम्बन्ध वाली की सीमा दूसरे अर्थिक प्रणम सम्बन्ध वाली का बचन विमर्श के लिए अधिक करते हैं। उन्हीं यह भी देखा उद्यम अन्य कम वाले की इसी सामान्यता का सम्बन्ध का बचने हैं क्योंकि काम के करने वाली (Labour force) की सीमा का सामाजिक सम्बन्धों का बचन विमर्श के लिए करते हैं।

अनेक चीजकार्ताओं ( जैसे लीटर, 1959; मेरुसकेवम तथा माइसीकुसी 1970 ) ने यह बताया है कि उद्यम सम्बन्धों में काम की सीमा सम्बन्धन की सम्भावना और विकास अधिक होती है। किन्तु अन्य चीजकार्ताओं ने इस पर प्रसट कि है। किमरसकेवम के सम्बन्धों पर एक सम्बन्धन में उद्यम सम्बन्धों (दुम्बों) में एकाग्र सीमाओं ( Selectivity process ) में काम करने की अधिक प्रवृत्ति पाई की सम्बन्धन या सम्बन्धन की सम्भावनाओं के अनुसार नहीं है। प्रथम दम्भी प्रवृत्ति उत्पीड़नाओं में ऐसी सीमा में काम करने की प्रवृत्ति प्रवृत्ति देखी गयी। इस सीमा तथा ऐसे अन्य सीमा में चीजकार्ताओं ने निम्नलिखित निष्कर्ष कि देखी है कि उद्यम अन्य कम वाली में उद्यम के की उद्यम प्रवृत्ति देखी गई। इस सम्बन्धन के अन्य सम्बन्धों में यह भी देखा हुआ अन्य कम वाली के उद्यम अन्य कम वाले अधिक सम्बन्धन ही नहीं पाई अधिक सम्बन्धन की होती है ( माइसीकु तथा लीटरी, 1970 )।

विकास की दृष्टि में उद्यम अन्य कम वाली की सम्भावना की प्रवृत्ति का कारण सम्बन्धन की सम्बन्धन की सम्भावना नहीं प्रवृत्ति अन्य अधिक सम्बन्धन ही सम्बन्ध है। यह अधिक सम्बन्धन उद्यम सम्बन्धों की बड़े होने के कारण अधिक अनुकूलता ही सम्बन्ध है जो काम के करने सम्बन्धों की बड़ी सम्बन्ध होती। यह सम्बन्ध उद्यम प्रवृत्ति सम्बन्ध है क्योंकि उद्यम करने सम्बन्ध उद्यम अन्य सम्बन्धों के लिए सम्बन्धन के सम्बन्धन के रूप में होती है। सम्बन्धन के सम्बन्धन होने या अनुकूलता में सम्बन्ध बचने बड़ा सम्बन्ध या बड़ी सम्बन्ध उद्यम सम्बन्धों की सम्बन्धन, सीमा देखा, या सम्बन्ध और सम्बन्ध का सम्बन्ध सम्बन्ध है। अतः उद्यम की अनुकूलता सम्बन्ध है यह अन्य सम्बन्धों को नहीं सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध सम्बन्ध वाले उद्यम सम्बन्ध (अन्य) अन्य सम्बन्धों का सम्बन्ध सम्बन्ध है। पर के सम्बन्ध और सम्बन्ध अन्य सम्बन्ध अन्य सम्बन्धों के लिए सम्बन्धन के रूप में होती है। अतः यह उद्यम सम्बन्धों का सम्बन्धन करने तथा उद्यम सम्बन्ध का अनुकूलता सम्बन्ध है। वे सम्बन्धन सम्बन्ध के सम्बन्ध, सम्बन्धन, सम्बन्ध, सम्बन्धों और मुनिका सम्बन्धों की सम्बन्धन सम्बन्धन सम्बन्ध के रूप में सम्बन्ध करने है। अन्य

बच्चों की लक्षणा लक्षणे बड़े बच्चे की सुविधा अधिक सम्यक् होती है, जब तक कि लक्षणे लक्षणे लक्षणे की भी समीक्षा नहीं करनी है।

दोहरी विधवाविधान में संशोधन अधिनियम, 1963 के अन्तर्गत विधवाओं के अर्थात् कि वह और भी अन्य रूप में कार्य करे, आत्मनिर्भर तथा वित्तीय रूप से स्वतंत्र हो सकें किन्तु अल्पकालिक रूप से ही और उनकी वित्तीय स्थिति को सुधारे।

[illegible]

(३) ज्ञान का लक्ष्य क्या है—जबसे पहले ज्ञान होने के कारण जब तक ज्ञान बाँटें/बढ़ान के ज्ञान के नुर्त बनना बाँट-पिटा पर दृष्टाधिकार होता है, यह भी ज्ञान के ज्ञान का दृष्टान्त होता है। यह दृष्टाधिकार उन ज्ञान के ज्ञान होता है जब ज्ञान ज्ञानों में होता है, जो भी ज्ञान ज्ञानों ज्ञानों में होता है। ज्ञान की बाँट दृष्टान्त और ज्ञान भी करता है।

इसका अर्थ यह है कि विविध प्रकार का अनाज प्राप्त करते हैं। इसी कारण (1967) के अनुसार इसका अर्थ यह है कि यह अनाज ही अनाज है अनाज ही अनाज है अनाज ही अनाज है।

[illegible]

अब तक इस सम्बन्ध में भविष्य सम्प्रदाय परिणाम दर्शाते हैं कि परिवार में अपने

उपम व्यक्ति के चोखर कुछ ऐसी निजी विशेषताएँ होती हैं जो चोख सम्बन्धन या साह के अपने वास्तव, व्यक्तिगतों में नहीं पाई जाती ।

यह अन्तर जो चौड़ा या—जो व्यवहार में उद्भूत विभेदा का कारण हो सकता है, किन्तु बराबर अन्त होता है क्योंकि संरत है । उपम क्रम वालों में यह निजी विशेषताएँ इसलिये पाई जाती हैं क्योंकि अन्य की अपेक्षा उपम अपने सम्बन्ध, कला में अधिक समान अनुभव प्राप्त करते हैं तथा समान भूमिकाएँ निभाते हैं । उपम तथा साह के अन्य क्रम वालों में व्यक्तिगत विभेदाएँ सामान्यता के ही संरत रूप में अभिव्यक्त होने लगती हैं और इस क्रम की संयुक्ति अनेक चीज कर्तव्यों द्वारा भी गई है, किन्तु कोषकाल के बाद के वर्षों में भी साम्यक विभेदाएँ प्राप्त होती हैं । के अन्य क्रम क्रम वाली की अपेक्षा अधिक कठोरता और कोषकालता प्राप्त करते हैं । इसके अतिरिक्त वे अधिक लंबे वय, अधिक कार्यान्वयन तथा द्वितीय क्रम वाली के अधिक कठिनायी भी होते हैं ( पैक मार्बल, 1934 ) ।

चित्र 2-3 इसलिये कि उपम क्रम लोग वे अधिक सर्वोपेक्षणीयों के उपम की साक्ष्य दिया है क्योंकि यह साम्यक कलाभियों, सामाजिक भूमिकाओं, व्यक्तिगत विकास, और सामाजिक व्यवहार के सम्बन्ध चित्रणों की कठोरता का अवसर प्रदान करता है ।

किन्तु इसके अलावा यहाँ चित्र का अन्त करने तथा साह के अपने वर्षों के साह व्यवहार में विभेदाएँ भी नहीं बदलती होती हैं । भारतीय संदर्भ में वर्षों की संख्या अधिक होने पर सामाजिक है कि जो साह और स्नेह उपम कला प्राप्त करता है उसकी अन्तर्गत लंबे या वर्षों बाद के लिये नहीं कर सकते । यदि साह चित्र का व्यवहार एवं वही विविध अन्य क्रम वाली के बीच भिन्न भिन्न होता भी विविध हो इसके कारण व्यक्तिगत, सामाजिक भूमिका और सामाजिक व्यवहार में विभेदाएँ स्पष्ट हो सकती हैं । संतोष में हम यह कहते हैं कि सामाजिक परिवर्तन और व्यक्तिगत के बीच सम्बन्धों को स्पष्ट करने का एक प्रमुख उपकरण अन्य क्रम है ।



[illegible]

माइकेल और सदस्यों के अनुसार, "कतुह व्यक्तियों का संघर्ष वा विद्रोह

हे सिद्धि में किसी व्यक्तिगत अंश की प्राप्ति हेतु अवधारणा करी है। ( *An aggregation of individuals is attributed to activity in a particular group* )। हम यही मानते हैं कि समूह क्या है, क्या इसे परिभाषित करने में अधिक समय लगना आवश्यक नहीं प्रतीत होता। पहलेक व्यक्ति किसी क किसी समूह का अंग बन जाता है, और विन्स ( 1967 ) के अनुसार किसी समूह व्यक्ति ही या वह समूहों का अंग बन जाता है।

समूह क्या है समुदाय के एक प्रकार की परिभाषाओं की विशेषताएँ स्पष्ट करने के इरादे से किया जाता है। हम सभी को या अधिक व्यक्ति एक-दूसरे के निकट एकट्ठे होते हैं, जो व्यक्तियों के एक ही के समूह के रूप में वर्णित करते हैं। किन्तु हम हम समूह का अर्थ बनाना चाहते हैं जो एक तरफ पर अव्यक्ति ( *indivisible* ) समूहों में संघाति हो सकती है। संघाति में अपने और अव्यक्त विषय की सीमा को निर्धारित करने के लिये, समुदायिकों और समाजशास्त्रियों के समूह के अधिष्ठान की अधिक कभी अव्यक्त परिभाषित करने का अर्थ किया है। व्यक्ति की सीमा अव्यक्ति है, किन्तु हम बात पर ध्यान ( *वर्ग अव्यक्ति* ) है कि व्यक्तियों के समूह या संघाति को मिल जाता है समूह कहते हैं। *Hare ( 1976 )* *Or Lancaster ( 1974 )* के अनुसार व्यक्तियों का संघात ( *Aggregates* ) हम समय समूह कहा जायेगा वह निम्नलिखित तीन प्रकारों होती है :—

(1) व्यक्तियों में ( जो सभी एक अव्यक्त समूह है ) मात्र में अव्यक्ति एक अव्यक्त होती है। व्यक्ति का वह समूह के सदस्यों मुखोमुख ( *Face to face* ) अथवा आवश्यक मानती है ( *होर्नर, 1950* ), इसलिए समूह में सदस्यों की सीमा सीधी होती है।

(2) दूसरी परिभाषा यह है कि व्यक्तियों में सीमायें मानना ( *Belongingness* ) होती चाहिये। उन्हें समूह मानना होता चाहिये कि वे एक समूह की सदस्यता के कारण एक दूसरे का निर्धारित करते हैं। अव्यक्तता की यह मानना चाहिये मानना होती है कि समूह के सदस्य सामान्य विषय एक अव्यक्तियों होते हैं, और समूह के कुछ सदस्यों एवं सदस्यों की अव्यक्तता करते हैं।

(3) तीसरी परिभाषा के अनुसार व्यक्तियों में अव्यक्तता मानना होता चाहिये और हम के कम एक समूह में अव्यक्तता आवश्यक है ( *हॉ, 1976* )। इससे यह सीमा निर्धारित है कि समूह सीमा किसी समूह की अंग करने के लिये निर्धारित होते हैं।

समूहों की अंग: उनके सदस्यों तथा सदस्यों के क्षेत्रों के भी द्वारा जाता है। अंगक यह विषय है जो निर्धारित अव्यक्तता की संघाति करते हैं। दूसरी और

पुमिकाओं के कर्तव्यों तथा व्यक्ति के लिये निर्दिष्ट पदों की प्राप्ताओं का रीज होता है।

## समूह का निर्माण सरकारर पद्धति

( Formation and Maintenance )

समूहों का निर्माण सामूहिक रूप से ही सम्भव है जो उसके सदस्यों के सामूहिक नियमन से ही हो सकता है या पारम्परिक सामूहिक के परिणामस्वरूप वैयक्तिक रूप से ही सम्भव है। एक बार जब समूह निर्मित हो जाते हैं वे कुछ विशेषगर्तुं स्थापित कर लेते हैं। उनकी संरचना विकसित हो जाती है जिससे द्वारा प्रत्येक एक दूसरे के सम्बन्ध में परावर्तित करते हैं। यह पर पर पुनर्गर्तुं कुछ व्यवस्थाओं द्वारा परिचालित होती है, जो इन पुमिकाओं के कार्यों के ही जाती है, क्योंकि समूह इन पुमिकाओं के कार्यों के सम्बन्ध के सम्बन्ध अपने व्यवस्थाओं रखता है और पुमिका प्रकार भी अपने आप के अपने प्रकार के सम्बन्ध को स्थापना करते हैं। कुछ प्रतिवृत्तियों और सामूहिकरण व्यवस्थाओं की कुछ पुमिकाओं या पदों के सम्बन्ध हो जाती है और पदों के कार्यों के पुमिका सम्बन्ध द्वारा सम्बन्धित द्वारा प्रतिनिधित होते हैं।

सिंहराज और परिकर्तव्य—सिंहराज और परिचालन समूह के सामूहिक रूप हैं। ऐसे कुछ रूप की सामूहिकता समूहों में भी पाए जाते हैं। कालेज के प्राचार्यत्व में एक निवासी रीज व्यवहार एक पद्धति है, दूसरा भी पाए हो रीज व्यवहार एक रीज पद्धति है। वे एक-दूसरे के कुछ नहीं करते। वे एक समूह नहीं बना सकते हैं। उनमें कोई व्यवस्था नहीं हुई, किन्तु दूसरा साथ किसी काम केवल पर की रीज बनाता था, क्योंकि व्यवस्था केवल जाती नहीं थी। एक हीसा सामूहिकता में व्यवस्था करता है। अपनी पद्धतियों रखता है और उन दो पद्धतियों के साथ रीज बनाता है। प्रत्येक काम के व्यवहार में परिवार के नियम में एक सामूहिक पर हीसरे साथ की पुनित पद्धति है। यह परिवार के सम्बन्ध सामूहिक की और दृष्टि करते हुए कहता है, "सिंहराज व्यवस्था है"। दूसरा साथ कहता है, "ही पद्धति है, किन्तु यह हीसरे की ही पद्धति विधान में सामूहिकता करता है"

जब एक निवास सामूहिक हो जाता है जिसमें हीसरे साथ कालेज के निवास जाने वाली हीसरे के साथ व्यवस्था केवल जाती की व्यवस्था बनाता है और उसे एक हीसा व्यवस्था बनाता है। जबकि दूसरा उसे सामूहिक और सामूहिक की रीज देता है। उस समय साथ की एक व्यवस्था में हीसरे का सम्बन्ध करते हुए सम्बन्ध हो जाता है। यह व्यवस्था के वैसापुत्र लिये जाने की सम्बन्धित व्यवस्था है। इन समूह के सम्बन्ध में यह पद्धति विधान होने से किन्तु दूसरी संरचना विकसित होने जाती है। जबकि और हीसरे साथ कालेज व्यवस्था की सामूहिकता तथा सामूहिक

[illegible]

बधर के ही जाले हुये एक बीया काच बस देखाकुल अन्वयन का नाम मुनकर  
कहा है और वहीं बैठ जाता है। किसी भी कसूर का क्या बयान करने बुद्धि  
माना जाता है; जब तक कि वह अपनी संविधि के अन्तर्गत के दुपले घातों को  
प्रदर्शित न करे। बीया काच 3-4 मिनट अन्तिमदुर्लभ दृष्टिों को बाह्य मुनकर  
कोन फिर कहता है कि जाले मुन है, कि अन्वयन कसूर, बाक्यों हीने के कारण  
केसाकुल दिया गया है। यह मुनका कसूर के जाले नहीं है, जिनके कारण कसूर  
में अन्तिम बार रहे बीया काच का बुद्धि के अन्तर्गत अन्य संविधि मान होती है।  
कभी अन्तिमदुर्लभ बने मुनके है, इस बीया काच का बीया के अन्तिमदुर्लभ हीने  
के पूर्व अन्वयनका भी या जाले कोकता है और कहता है कि यह काच बीया नहीं कह  
नहीं है और न ही वह अन्वयन से सम्बन्ध है और अन्तिम काच के अन्तर्गत बाक्यों हीने  
का को साकुल अन्तिमदुर्लभ नहीं मानते। इस अन्तिम बने अन्तिम के विनय में  
अन्तिम अन्तिम अन्तिम नहीं रहती है।

हमने इस प्रक्रिया में बहुत सफल करने का प्रयास किया है कि कमीशनरशिप और ऐम्प्लिकेशन समूह ( जो अनेक कमी में शामिल है ) जैसे कमेटी/ग्रुप कागज समझ में और प्रशासनिक काम निष्पक्षित कर लेते हैं । समूह के सदस्यों ने प्रशासनिक शक्ति प्रदान की, और एक दूसरे के प्रति सम्मान और सहकार्य निष्पक्षित कर की । संरचना वाली प्रोसेस को सिन्धु कुछ विषयों तक नहीं बढ़ी और इसका कमीशनर भी बना रहें । कुछ समय बाद जारी-जारी कार्य करते रहे और समूह निष्पक्षित हो गया । विभाग की जैसे ही कार्य समय से हुआ जैसे कि कार्य समय में दस्तावेज बन रहा था ।

**सामानिक विनियम सिद्धान्त**

**Special Advertising Section**

श्रीमान् कान्पुर के सदस्य बनते हैं, कमान् बनाने वाले हैं या कान्पुर बनते भी हैं।







के उपयोग में करने की बहुत सी समस्याएँ और विवेचन की तकनीकों की वजह से, उनके विनिर्माण के संसाधन के विभिन्न कुछ-कुछ में भिन्नता और अन्य उदाहरणों के समानों के जाल के साथ होती है।

### समूह भागद्वारिता में वैकल्पिक अवसरधर्म

( *Disadvantaged Stages in Group Participation* )

समूह भागद्वारिता में निम्न वैकल्पिक अवसरधर्म प्रमुख हैं :—

(1) विद्युत्-आवस्था ( *Isolation* )—निम्नी प्रमुखता ( *Miniparadox* ) समूह के बाह्यीय संस्था की प्राचीनता के जितने जल्द जटिल बीजों की आवश्यकता होती है। इन बीजों के आरम्भिक रूप व्यक्ति के समय समूह के बीजे होते हैं जिसका अभावपूर्ण परिवार है। फिर इनका विकास धीरे-धीरे सामाजिक परिवार की शक्ति प्राप्त होता है।

सबसे आरम्भिक अवस्था की अवस्था—विद्युत् और मात्रा के बीच होती है। समूह एक समय में मात्रा और मात्रा दोनों विद्युत् के साथ अवस्थापना करते हैं विद्युत् विद्युत् एक समय में केवल एक की और मात्रा केवल कर सकता है। मात्रा के साथ प्रथम शक्ति में अवस्थापना बहुत ही आरम्भिक स्तर की होती है, अवस्थापना होने की अवस्था अधिक वैकल्पिक होती है। अवस्थापना यह है कि अवस्थापना का अवस्थापना में केवल अवस्थापनाओं की शक्ति होता है। जब एक मात्रा की व्यक्ति के साथ में अपनी अवस्था विनिर्माण नहीं होती जब एक सामाजिक सामाजिक मात्रा-विशेष ( *Social socioplicity* ) विनिर्माण नहीं होती। बीजों की शक्ति होने एक अवस्था अपने बीजों कीजते करते हैं फिर की अन्य व्यक्ति के साथ अवस्थापना के सामाजिक बीजों का सामाजिक विविधता के प्रयोग करते हैं। जब की या अधिक अवस्थाओं के एक साथ अवस्थापना करने प्रकृति की के साथ वैकल्पिक में एक करते हैं। जब अवस्था की मात्रा में के किसी एक के साथ केवल प्राप्त होता है और कोई विद्युत् प्रत्यक्ष नहीं करता और विनिर्माण करता है। अवस्था केवल केवल या विद्युत् में अवस्थापना करता नहीं प्रत्यक्ष एक समय में एक के अधिक प्रकृति का सामना करते बीज प्रकृति विविधता मात्रा का न होता है। विनिर्माण अपने एक अवस्था के विचारों की कुछ शक्ति का एक वर्ष की आयु में प्राप्त कर लेते हैं।

(2) आरम्भिक अवस्थापना ( *Early childhood* )—समाजीकरण विकास का प्रारम्भिक अवस्थापना एम. एम. शक्ति ( 1932 ) ने किया था। शक्ति ने प्रारम्भिक अवस्थापना के बीज अवस्थापना ( *Play patterns* ) के अवस्थापना में केवल कि आयु के साथ प्रथम विविधता अवस्थापना ( *Progenation* ) प्राप्त होती है जो प्रकृति ( *Solitary* ) बीज, प्रकृति की केवल विद्युत्, सामाजिक केवल, प्रकृति केवल अवस्थापना करता, और प्रकृति प्रकृति शक्ति। प्रकृति ( *Solitary* ) प्रकृति,





विभिन्न सामग्रियों के बहुलक का भी अध्ययन किया है। इन सामग्रियों में कच्चे बहुलक के अतिरिक्त मोटाई का अतिरिक्त का भी प्रयोग है। यह बहुलकविलेय के अणुसंयोजक का भी प्रयोग करते हैं, दूसरी के अणुसंयोजक के अतिरिक्त कच्चे बहुलक का भी प्रयोग करते हैं। दूसरी के अणुसंयोजक के अतिरिक्त कच्चे बहुलक का भी प्रयोग करते हैं।

[illegible]

इसके विपरीत टीबी वर हूए एक आसमान वर सुनिश्चित करना नहीं होता। इस आसमान समुद्र की संरचना में समान-असमान वर परिवर्तन बिंदु को काटित करने के छोटे समुद्रों की कुछ दायें की कलात्मकता का निर्माण। टीबीवरीन समान वर विपरीत की संरचना का अनुमान करने का कार्य कि वह समान के इस नज़र में समानों की वर बदल की गई। सभी समुद्र के विपरीत समान किया। का विपरीत वर की लम्बित किया गया। इसके कारण सभी समुद्रों में एक समान का वरीकृत निम्न का निर्माण किया गया। जब इन समानों में समान समानतागत वर का निर्माण किया गया तो यह बात हुआ कि विपरीत परिवर्तन हुए वे के निर्माण समुद्रों (विपरीत की वर परिवर्तन नहीं वे) के वर समानतागत (Carbonyl) के। ऐसा सम्भावित होता है कि समानता में टीबी समानतागत समुद्रिकाओं के समानता में समानतागी समान बदली है। (सिद्ध, वैज्ञानिक तथा पुस्तकालय, 1962)।

समुद्र की सतह तथा के परिवर्तित समान स्तर में कृत्रिम कर नहीं है। निम्न सीढ़ी प्रतीक में ऐसा सम्पन्न होता है जो सभी प्रकार सीढ़ी गई अनुक्रमों के समान समान होता है किन्तु कम सीढ़ी गई अनुक्रमों में सम्पन्न होता है। समुद्र का यह अनुक्रम सीढ़ी नहीं सभी समुद्र में परिवर्तित के निम्न का समान नहीं है क्योंकि समुद्र सीढ़ी के विपरीत समान के समान समुद्र के परिवर्तितों के समान नहीं है। समुद्र सीढ़ी के विपरीत समान के समान समुद्र के परिवर्तितों के समान नहीं है।

(4) परिषद् के बाहर के समूह—वास्तविकता और नियोजन के वैचारिक संकेत के सम्बन्ध के विविध होना है कि वास्तव, परिषदों की ही परिषद् में पर के समूहों है और समूहों में बढ़ते समूहों है। सुनिश्चिततापूर्ण समूह

के द्वारा मानक और अधिभूतिवादी मानक-निर्माण तथा अन्य परिवर्तन कभी के साथ सम्बन्धित हो सकते हैं। कुछ, पूर्णतः नवीन की प्रतीक्षण, तथा परिवर्तन में छोटे-बड़े बदलावों की एक एक अधि परिवर्तन के परिवर्तन में बहुमूल्य होती है। यह के अनुसार में प्रवेश करते हैं तो यह के अनुसार की दुनिया में प्रविष्टता तथा प्रतीक्षण का अनुसार करने लगता है, और ऊपर बहुत तथा परिवर्तन के अनुसार की क्षमताओं द्वारा स्थापित मानकों के अनुसार होने की क्षमता की जाती है। बहुत मानक-निर्माण से का अनुसार के मानक करने जिसे अधिक बहुमूल्य होने करते हैं और प्रतीक्षण-निर्माण एक एक मानकों का अनुसार अधिकतर हो जाता है। कुछ मानक, अधिभूतिवादी प्रतीक्षण-निर्माण में ही परिवर्तन में निश्चित मानकों का छोटी के मानकों के स्थापित होती है। लेकिन अधिभूतिवादी का अनुसार मानकों के कभी के मानक होने हैं मानक में कुछ ही मानक-निर्माण के करने स्थापित होने हैं कि के का अनुसार यह प्रतीक्षण-निर्माण से जाती है। अनुसार में वृद्धि के साथ मानक-निर्माण के अधिभूतिवादी अनुसार के अनुसार की जाती है जिसे विभिन्न प्रकार की अधिभूतिवादी निम्न है और विभिन्न प्रकार के मानकों के मानक प्रतीक्षण में होते हैं।

यह सब होने होने की वही कारण एकता मानक है कि मानक-निर्माण के साथ अधिक स्थापित और मानक में निम्न मानक होते हैं।

## संज्ञा

( *Colloquialism* )

संज्ञा का अर्थ—अधुना का निम्न प्रतीक्षण के जिसे का निम्न मानक-निर्माण की वृद्धि के जिसे का निम्न मानक अधिभूतिवादी अधि भूतिवादी, का निम्न-निर्माण द्वारा होता है। यह एकता निम्न मानक-निर्माण का निम्न मानक मानक-निर्माण से अधिक होता है तो यह अधिभूतिवादी का के अधिभूतिवादी में जाता है। यह बाद का अधिभूतिवादी में अधिभूतिवादी स्थापित हो जाता है तो कभी निम्न मानक में मानक-निर्माण मानक-निर्माण की निम्न-निर्माण हो जाता है। अनुसार के अनुसार यह दूसरे के प्रति का अनुसार के प्रति निम्न मानक-निर्माण व अनुसार करते हैं, कभी मानक में अनुसार अधिभूतिवादी ( *Colloquialism* ) का जाती है। अनुसार के अनुसार में अधिभूतिवादी अन्य मानक में होने पर कभी अनुसार में अनुसार अधिभूतिवादी मानक होता है। अनुसार में अधिभूतिवादी ( *Colloquialism* ) निम्न होने की निम्न में कभी मानक मानक के लिए कुछ मानक अधिभूतिवादी का का के लिए पर मानक की मानक-निर्माण होती है।

केन्द्र परिवर्तन ( *Centralism* ) निम्न केन्द्र मानक-निर्माण और अधि अधिभूतिवादी होने हैं, मानक-निर्माण केन्द्र, मानक-निर्माण निम्न-निर्माण, अधिभूतिवादी अनुसार के अनुसार अधिभूतिवादी अधिभूतिवादी होने हैं। मानक के केन्द्र परिवर्तन में अधिभूतिवादी अधिभूतिवादी होने हैं किन्तु अधिभूतिवादी केन्द्र परिवर्तन में यह अधिभूतिवादी अधिभूतिवादी होने अधिभूतिवादी





अपना ही रूप परिचयी में लाती देर मान लेना चाहते हैं जो समुद्र सतह की जति के लिए आवश्यक होता है। समुद्र सतह की जहा में, अपनी क्षमता को जति में अपने के विचार के अनुसार अधिक छोटी होकर लिया करते हैं। इस परिस्थिति में द्विक द्वयीय (Dyad) के एक तत्व में समुदायता, और प्रत्यक्ष-तुल्य द्विक द्वयीय की जहा एक तत्व में विकसनात्मक। निम्न संश्लिष्ट समुदाय के सदस्यों के आधारित या आत्मनिर्भर होकर कार्य किया और अपने समुदाय के अन्य सदस्य के साथ संबंध का कोई विशेष प्रकार नहीं किया।

काई समुदायों में संश्लिष्ट (Cooperative) के कार्य (group)—ज्यासी-होत करने तथा दूसरों के साथ अपने की आवश्यकताओं को पूरा करने और उसके लिए अधिक की क्षमता में मान रखते हैं। इसलिए वैश्विक या अन्तराष्ट्रिय समुदाय के समुदाय-कार्यों में वैश्विक या आन्तरिक समुदायों की की विकसित कर सकते हैं। यह एक तत्व की संस्था है जो एक-छा: व्यक्तियों की संस्था काई होती है। वे एक-छा: कार्य में की साथ मिलकर कार्य करने में की कोई आवश्यकता नहीं है। यह एक है, जो एक-छा: कार्य करने के लिए बना है। कोई-छा: समुदाय समुदाय करती है और वे अपने सदस्यों के साथ में एक समुदाय समुदाय (Fission of subgroups) विकसित कर लेते हैं। इस प्रकार वे समुदाय समुदाय का समुदाय करती हैं।

इस परिस्थिति की व्याख्या आधुनिक विद्वान् इस प्रकार कर सकते हैं कि "हम अपनी जहा के लोगों के साथ समुदाय रखते हैं, उनके साथ समुदाय रखने का अधिकार यह है कि हम उन्हें समुदाय करते हैं।" (It is an attitude of mind that we are associated with people that we like, the fact that we are associated with these people must mean that we like them.)

अधिक कार्य समुदाय आवश्यक कर के अन्य संश्लिष्ट नहीं रहता। कभी-कभी व्यक्तिगत के प्रति सामाजिक दृष्टि की जाती है किन्तु इसका अर्थ नहीं संश्लिष्ट का अर्थ नहीं है। समुदाय के अर्थ में व्यक्तिगत के प्रति अपनी जहा में एक-छा: हो सकते हैं। कुछ परिस्थितियों में व्यक्तिगत व्यक्ति (Autonomy) के प्रति समुदाय का अर्थ या अन्तरिक समुदाय नहीं होता और इसका अन्तरिक समुदाय कार्य या कार्य करने पर ही जाता है। ऐसा समुदाय एक होता जो कुछ समुदाय विद्द या कार्य की वैश्विक कर के समुदाय तथा अन्य समुदाय करते हैं। ऐसी जहा में व्यक्तिगत निम्न स्तर की संश्लिष्ट और समुदाय का अन्तराष्ट्रिय विस्तार होता है।

समस्या और विचारों के प्रभाव—व्यक्तिगतों में संश्लिष्ट तथा समुदाय

प्रचारितता के सम्बन्धी के विषय में कनेक्ट सम्भवतः किए हैं। एम० कुरियन (1961) के एक प्रतिरोधिता में सर्वप्रथम प्रयोग विभिन्नता का निर्धारण किया। बाद हुआ कि बहुत समूह सम्बन्ध समूहों की-बोधा अधिक संभव है। इसने प्रतिरोधिता नीचता सम्बन्ध का सिद्ध था। सम्बन्धिता के कारणों के विचारों के कारण हुआ था। एक अन्य सम्भवतः में केम्पलिन बोल्डन (1960) ने सम्बन्धिता के प्रति जोन तीन समूहों की प्रतिरोधिताओं का सम्बन्धन किया। एक समूह का सम्बन्ध देवी रचनाओं में हुआ था कि यह वास्तविक स्वीकृति की मजबूती देता था—उम्मीद करता था कि दुरुस्कार में सभी का सम्बन्ध दिया हुआ। दूसरा समूह अपने चरित्र के अनुसार वैयक्तिक था—उम्मीद करता था कि वे व्यक्तिगत स्तर पर दुरुस्कार किए जायेंगे, किन्तु उन्हें ही एक दूसरे की सम्बन्धता का संकेत है। तृतीय समूह का सम्बन्ध परस्परवासी (Altruistic) सम्बन्धों पर हुआ था उम्मीद करता था कि उनके सम्बन्धों का सम्बन्धन विज्ञान के द्वि में था। एक समूह की किसी दुरुस्कार का सम्बन्धन नहीं था। सम्बन्धों में समूह की सम्बन्धता की सम्बन्धता उम्मीद की सम्बन्ध संरक्षित का सम्बन्ध की विज्ञान सम्बन्ध समूह द्वारा सम्बन्धता का सम्बन्ध का सम्बन्ध के बाद हुआ था। परिणामी के बाद हुआ कि परस्परवासी समूह संरक्षित में सबसे कम सम्बन्धित तथा वैयक्तिक समूह वैयक्तिक सम्बन्धित हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि वैयक्तिक समूह के सम्बन्ध अपनी सम्बन्धता के लिए एक दूसरे की बोली सुनाते हैं तथा सम्बन्धता के कारण सम्बन्धन सम्बन्ध-सम्बन्ध के लिए उम्मीद सम्बन्धी सम्बन्ध है।

एक अन्य प्रकार के सम्बन्ध में, सम्बन्धों सम्बन्ध तथा सम्बन्ध सम्बन्धों के सम्बन्ध की वही की और सम्बन्धन के लिए उम्मीद समूह सम्बन्ध सम्बन्ध के लिए सम्बन्ध है। सम्बन्धों सम्बन्धों की सम्बन्धता सम्बन्धता कि वे सम्बन्ध सम्बन्ध है और सम्बन्ध सम्बन्धों की सम्बन्धता कि वे सम्बन्ध सम्बन्ध है। सम्बन्ध के सम्बन्ध सम्बन्ध में सम्बन्धों की सम्बन्धता सम्बन्ध में सम्बन्ध का सम्बन्धन सम्बन्ध था। सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध की सम्बन्धता सम्बन्धों की सम्बन्ध में सम्बन्ध ही सम्बन्धों की, सम्बन्ध सम्बन्ध के प्रति अधिक सम्बन्ध और सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध है। सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध कि यह सम्बन्धों की सम्बन्धता सम्बन्ध में सम्बन्धता की वे सम्बन्ध सम्बन्ध में सम्बन्ध सम्बन्ध और सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध है। सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध की सम्बन्धता सम्बन्ध के सम्बन्धता सम्बन्ध (जो सम्बन्धता सम्बन्ध) सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्धों की (सम्बन्ध, सम्बन्धता सम्बन्ध सम्बन्ध, 1960)। सम्बन्धता सम्बन्ध है कि सम्बन्धों में सम्बन्धों की सम्बन्धता सम्बन्धों की सम्बन्ध के सम्बन्ध सम्बन्धता के लिए सम्बन्धित सम्बन्ध है और सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्धों की सम्बन्धता सम्बन्ध सम्बन्धता सम्बन्ध सम्बन्धता सम्बन्धता सम्बन्ध सम्बन्ध है।

## सहनिष्ठि-सम्भावना तथा संसर्गिता

( Compatibility and Cohesiveness )

एक दूसरे के साथ सामंजस्यपूर्ण सम्बन्धों के विकास योग्यता सहनिष्ठि-सम्भावना कहलाती है, जो स्वयं मन में संसर्गिता से सम्बद्ध है। समूह के सदस्यों के आपस में सहनिष्ठि की संभावना किसी व्यक्ति होती है, समूह जगता ही आकर्षक होता है। एक सम्बन्ध में मुख्य सहनिष्ठि वाले समूह की तुलना अन्य सहनिष्ठि-योग्यता समूह के की गई। परिणामों के साथ हुआ कि सहनिष्ठि संभावना अधिक होने पर समूह के सदस्य समाज-समाधान में कम रुचि ले सकते हैं और समय भी कम लेते हैं। किन्तु यह परिणाम एंथिरोपीय आसानी पर आधारित नहीं थे (मान तथा साहचर्य; 1962)।

जिन कार्यों में प्रतिस्पर्धा होती है, उनमें सहनिष्ठि संभावना सीमिततर नहीं होती। रैकवार्ड ( 1962 ) ने तीन परम्परागत राजनीति दल के छात्रों, विद्यार्थियों में एक दूसरे का समुदाय बेनीकरण करने कार्यों की तुलना कर दल के विद्या विधियों के साथ एक दूसरे का समुदाय बेनीकरण नहीं किया। प्रतिस्पर्धा में साथ साथी दल में सबसे कम के विद्यार्थियों का अधिक उत्तर प्रतीत किया और प्रतिस्पर्धा के दौरान अधिक सुधार किया। परिणामों की व्याख्या में रैकवार्ड ने सुझाया कि विधायन में विधायी का कारण यह हो सकता है कि प्रथम दल के सदस्य प्रत्यक्षीय प्रकृति की अधिक किया करते हैं जबकि दूसरी दल की यह किया मन भी तथा यह अधिक कार्यानुकूल थी। दूसरी दल के सदस्य एक दूसरे के विचारों के बारे में कम सीधे के कारण आपस में सीधीपुर्न सम्बन्ध बनाए रखने की किया के कम प्रीति से यह समूह निरालेबाजी की अधिक सुधारते हैं। इसके प्रभावित होता है कि सहनिष्ठि-संभावना सबसे अधिकतर नहीं होती।

## समूह मानकों के प्रति आवश्यकता

( Adherence to Group Norms )

जुर्गे रचिथ रैक (1951) के अध्ययन से स्पष्टित हुआ कि प्रथम के करते हुए प्रथम के समूह की अधिक प्रकृति प्रकृति। समूह के सदस्यों द्वारा व्यवहार के सम-यम प्रतिपादों के कारण की बाधा के द्वारा किसी समूह की संसर्गिता प्रतिबिम्बित होती है। मानकों के प्रति प्रकृतिता समूह संसर्गिता का कारण भी है और प्रभाव भी। व्यक्तियों में समूह की आवश्यकता और सम्बन्धों के विकास की प्रकृति के कारण मानकों या अत्यन्तित व्यवहार प्रतिपाद का विकास होता है और इस मानकों की स्वीकृति उनमें प्रकृति और आवश्यकता की भावना उत्पन्न करते हैं। जो प्रकृति मानकों से विचलित होते हैं वे समूह-संसर्गिता के लिए बाधा बन जाते हैं।



महिलाओं के लिए ( 1953 ) के एक अध्ययन द्वारा देखा कि छात्रों को समुद्र के अन्दर जानकी के निर्माण का संज्ञक की अर्थात् अधिक संज्ञक-समूहों के लिए अधिक समन्वित-प्रति-प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है ।

ईरान की जनता के अनुभवों के भी विविध होना है कि भारत की राजधानी नई दिल्ली पर प्रभुत्व स्थापित है : भारत की राजधानी नई दिल्ली के विपरीत भारत के होना है यह उलझा हुआ संकेत होता है : भारत की अनुशासन की भाषा के अनुभव ईरान के साथ नहीं का भी होना होता है : आज के ईरान की सभी राजधानी पर एक राज्य में ईरान २० फरवरी ( 1979 ) के दिनांक में भारत के प्रति अपना-अपना के अभाव में दूसरी पर ईरानीयता, दूसरी की प्रतिष्ठा का अभाव नहीं था कुछ राज्यों के प्रति भारत का अभाव होता है : यही नहीं, ईरान का भी भारत के अभाव की उपस्थिति के कारण अभावित ईरान, भारतीय ईरान ( *Mosaddeq's International* ) का संकेत में भाषा नहीं है ।

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

कमल के जलजमी में बहुरंग काज काई बजे की दुलहा पाई जाती है। जो संकेतः कमल का अर्थ है। आशा की संकेतः इस विधान द्वारा हमें है कि उनके बहुत बड़ा लक्ष्य लक्ष्य में बंधन बंधे। इसी विधान और आशा की आशा की बंधन बंधा बंधा है। कमल की बंधन बंधन की बंधन की बंधन का संकेत बन है। बुद्ध का भी वह संकेत का बंधन होता है। बंधन बंधन कमल के बंधन उत्तराधिकार की आशा है जो आशा बंधन बंधा बंधे में ही वह बंधन है। बंधन बंधन कमल की दुलहा, काई लक्ष्य बंधन एवं आधुनिक बंधन का बंधन बंधन है। बंधन बंधन बंधन होने पर कमल ने बंधन कमल के बंधन, कमल के बंधन के बंधन तथा कमल बंधन के बंधन बंधन बंधन बंधे हैं।

[illegible]

हमारे ये आंकड़ों का सांख्यिकिक ज्ञान उन्हें नहीं ही बनेगा। वास्तव में हमें बहुत कुछ पता चलता था कि सुरक्षादाता उनके कार्य के कुछ भी विवरण, जैसे: शत्रु प्रतिरोध से कैसे करने के लिए किसी विशेष प्रतीक को जानना पड़ा नहीं था। किसी अन्य सुरक्षादाता के लिए बहुत कम जानकारी का अनुभव करता है।

यह केवल एक कारण होता है जब कोई यह कहा जाता है कि यह अपनी सीमा ही निर्दिष्ट करेगा तब वे अधिक सम्भाव्यताओं की बातें हैं। यदि कठिन परिश्रम की इच्छा सर्वोच्च का कोई प्रमाण है तो यह निर्दिष्ट होता कि समय समुद्र में प्रतीक की सीमाओं को अधिक या कम।

बाह्य कारकों की निरर्थकता—आत्मनिष्ठा और परीक्षा के अभाव में  
-आत्मनों के बहुत बड़े बाधा काठा है कि कार्य परिणाम के बाह्य कठिनाई  
या आंतरिक बाधा कभीका कभी न्यून करता है। जैव आत्मनों से उपस्थित होता है  
कि कभीका कार्य परिणाम के बाह्य दुर्घटों की अपेक्षा, इस तरह अधिक निर्भर करता  
है कि कभीका कार्य परिणाम के नियम से बड़ा विचार रखता है। अर्थात् कार्य के  
बाधे वाली कठिनाई कार्य निर्णय के बाह्य की कठिनाई की अपेक्षा कभीका की  
अधिक उपस्थित करती है।

द्वितीय विश्व युद्ध की अवधि में कौटुंब तथा वैवाहिक सुधारों के कार्य तथा समाज की समस्याओं का अध्ययन किया। उन्होंने न्यू इंग्लैण्ड के बी पीस कमिटी एवं अन्य समितियों का आयोजन किया जो युद्ध के दिनों में समाज निर्माण कार्य करते थे। एक में 7-8 विधियों में एक महिला संसार शांति का अवधि कार्य में 307 विधय करते थे। दोनों समितियों को महिला जागतिक समसमयों का आयोजन करना पड़ रहा था, शांतिवादी और समाजवादी दल, कानून का कार्य, अनुसंधान मनोरंजन सुविधाएँ वगैरे से रहने वाली द्वारा समाजवादी समितियों के आयोजन पर मार्ग-चो निर्देशन कार्य। यह रहने की समस्या समाधान या कार्य के समय की विभिन्न विधियों में दोनों समितियों में कोई एक विचार न मिली, किन्तु अधिक विद्वान/विद्वान विचारों (Influenced) में प्रभावित अधिक होता था। समितियों के कम समय समूह में अधिक सम्मेलन आयोजन था। यह समाधान समितियों द्वारा कोषाली के उपयोग, योजना, नीतिनीति कार्य करने प्रारंभ था। बीच परिवारों के उपयोग तथा मनोरंजन में सुधार कार्य करना सम्भव प्राप्त हुआ। अपने उपयोग के समितियों में उपस्थित धन, विभिन्न प्रकार में बुद्धि, अधिक नए उपयोग के समितियों में सभी और वगैरे में उपयोग में सभी आती है। परिवारों के यह भी प्राप्त हुआ कि जब एक कार्य में मनोरंजन में मनोरंजन अन्य रहता है तो सभी सम्मेलन के माध्यम की अधिक सम्मेलनों का आयोजन प्रारंभ सभी देश के कर सभी है।

## सामाजिक जलवायु का वातावरण ( Social Climate )

समीक्षक तथा संश्लिष्ट—दोनों समुद्र जीवन की एक सीखती विधा—संश्लिष्ट वा सामाजिक वातावरण के सम्बन्ध हैं। इस प्रकार संश्लिष्ट वातावरण या मार्गीक की बात करते हैं और रोजक, सभी, समुद्रज, अन्तर्मुख, समुद्रातली-विन्दोत्पन्न, समानपूर्व व्यवहारद्विज आदि के द्वारा इसे चर्चित करने लगे हैं।

(I) प्राथमिकिक वेद—वेद की- एम्बलान्ड ( 1959 ) इनीसों के समुद्रों के यह प्रभाव देने को कहा कि जलो के व्यवहारिक व्यवहारिकता है और वातावरण के वेद पर विचार करते हैं कि 'यथा विद्या यथा वादित'। इसके पूर्व-प्रतीक व्यवहारिक प्रतीक के पूर्व में। साथे इनीसों की कथाया यथा कि वे कीद्वन्द्वीयता ( Coagability ) में सम्य है और ऐसे जलो के समुद्र में रहे जा रहे हैं जो सब सम्य में सम्य है। सम्य साथे इनीसों की कथाया यथा कि वे कीद्वन्द्वीयता में विद्या है और संभवतः सम्य समुद्र संश्लिष्ट कीद्वन्द्वीय रही होता। यह विवेचना सब पूर्व हुआ तक इनीसों के सम्य सम्य वाचिनी का सीधी समुद्रातली वाले का निर्दिष्ट विद्या यथा। सम्य में बात हुआ कि सब कीद्वन्द्वीय समुद्र में रहे जाने में कार्य सब रोजक हो जाता है जबकि कीद्वन्द्वीय समुद्र में ऐसा नहीं होता।

(II) वेदा के प्रभाव—एम्बलान्ड ने अपने समुद्रों के वातावरण का व्यवहारिक-वातन सम्य समुद्र की एक प्राथमिकिक वेद सम्य करते विद्या—सम्य इनीसों द्वारा कीद्वन्द्वीयता का समुद्रातली यथा। समुद्र-वातावरण के प्राचीन व्यवहार में वातावरण का निर्दिष्ट वेदा करता था। कई वेदिक, विविध तथा भूद्विज, ( 1938 ) ने वातकी के सम्यकी, सम्य वा हामी सम्य के वेदाओं की सीध विविध सम्य की सम्य के विविध में सम्यिक विद्या—सम्यिक वा सम्यकीय, सम्यकीय तथा वातन ( Latency-Index )। सम्यकीय-सम्यकी की सम्य में वेदा सम्य के सम्यकी की सम्य करता, निर्दिष्ट, तथा सम्यकी करता था। प्राथमिक सम्यकी वेदा और सम्यकी के सीध और सम्य में सम्य की सम्य-विद्या सम्यकीय की सम्य की। वातन-सम्यकी के सम्य की सम्यकीय कार्य करता था। न ही सम्य सम्य सम्य का सम्यिकता करता था न ही सम्यिकता करता थी, केवल विविध विद्या जाने पर सब और सम्यकी देने की। सम्यकीय सम्यकी में वेदा सम्यकी की सम्यिक में सम्यकी देने है। न सम्यकी के वातावरण पर समुद्र में पाव केने हैं और सम्यकी में सम्यकी की सम्यिकता करते हैं।

संश्लिष्टों के बात हुआ कि समुद्र में सम्यकीय सम्यकी, वेदा द्वारा सम्य वातावरण के सम्यकीय सम्यिकता होने है। सम्यकीय वातावरण सम्यकी सम्यकीय



नामक से विचलित होते हैं और अभिव्यक्ति के अति व्यक्तिगततापूर्ण होते हैं, उन्हें समस्त समूहों के विषे अनुसूच करना पड़ता है ।

## समूह प्रकार

( Types of Groups )

समूह-प्रकार की समूहों के वर्गों के अनुसार को वर्गीकृत किया है । हम यहाँ कुछ प्रमुख-प्रकारों को चर्चा करेंगे ।

1. प्राथमिक तथा द्वितीयक समूह ( Primary and Secondary Groups )—समूह में हमारी समीक्षा तथा समीक्षात्मक विचारों अंतर्गत होती है, हमारे व्यवहार और अभिव्यक्ति पर उनका प्रभाव उत्पन्न हो अंतर्गत होता है । बर्नार्ड स्मिथ ( 1909 ) ने कहा है कि प्राथमिक समूहों के सामान्य सुखी-सुख आकार पर अनुसंधानित सम्बन्ध पड़ता है । ऐसे समूहों के अधिक परिणाम होते की सम्बन्धिता होती है । यह परिणाम उत्पन्न वह समूह के नहीं पड़ता होता है जिनमें किसी समूहों का होता है । स्मिथ के अनुसार ऐसे समूह का सर्वप्रमुख लक्षण, व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार और आचरण के निर्माण में प्रभाव उत्पन्न है । ( The major characteristics of primary group, according to smyth, is the influence they have, "in forming the social nature and ideals of the individual." ) ऐसे समूह में सुखी-सुख, व्यक्ति सम्बन्ध, सहयोग, सहकार, सहानुभूति में सम्बन्धिता, व्यक्ति सम्बन्ध ऐसे होते हैं और सम्बन्धों में निर्माण प्राप्त होता है । प्राथमिक समूह व्यक्ति के व्यक्तिगत, सुख, सहयोग एवं अभिव्यक्ति अंतर्गत के विकास में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं । इसका अर्थ स्पष्ट प्रकाशित पड़ता है । इस वर्ग के समूहों में अन्य समूह भी आते हैं । जैसे—सहयोग समूह, कार्य-समूह, सहयोग, मित्र समूह, छोटा समूह आदि ।

द्वितीयक समूह अधिक सामाजिक तथा औद्योगिक होते हैं । इनमें व्यक्ति सम्बन्धों का सम्बन्ध, और सामान्य रूप से प्राथमिक समूह की अन्य सभी विशेषताओं का सम्बन्ध होता है । द्वितीयक समूह उत्पन्न वेद या अभिव्यक्ति के समूहों की प्राप्ति पड़ी होती है । इनके द्वारा विचारणात्मक रूप से वेद, समूह, वेदार्थ, और सुखार्थ प्राप्त हो सकते हैं । प्राथमिक समूहों में वेद, विचारणा, सम्बन्ध, और, तथा एवं का सम्बन्ध होता है जबकि द्वितीयक समूह में सामाजिक सम्बन्ध सम्बन्ध एवं व्यक्ति विवेक आते हैं । प्राथमिक समूह के द्वारा हम सामाजिक-सम्बन्धों का अनुभव करते हैं, और अधिक प्रभाव होते हैं जबकि द्वितीयक समूह के हमारे समूह सामाजिक-सम्बन्ध-सम्बन्ध और व्यक्ति की पूर्ति प्राप्त नहीं होती । द्वितीयक समूह में सम्बन्धों में सामाजिक सम्बन्धों का सम्बन्ध और व्यक्ति विवेक की सम्बन्ध अधिक होती है ।



जिस मुक्त नहीं है : दूसरी ओर यदि कोई समान समता के सुन्नी के अंतर्गत होता है तबही उस सुन्नी पर निर्भर करता है जो प्रतिष्ठित तथा कम प्रकार की स्वीकृ-  
तियों की सामाजिक व्यवस्था पर निर्भर करता है जो सुन्नी सुन्नी का विद्यमान  
निर्देश हो जाता है ।

समाजवादी समानों के समानित समुद्र अधिक बार होते हैं । वह समुद्र  
समाजवादी के द्वारा समानित किए जाते हैं । सामाजिक परिवर्तन, सुन्नी-समाज,  
और सामाजिक हितों के लिए स्थापित समितियों का समुद्र इसके कुछ प्रमुख समुद्रवादी  
हैं । समाजवादी समुद्र की नीति इनके समाजवादी के लिए किसी विशेष समुद्रवादी के  
कल्पन नहीं होती । वे एक एक दूसरे की नीतियों में सामाजिक होते हैं तथा समुद्र के  
सुन्नी और निम्नो की स्वीकार करते हैं ।

4. समान: समुद्र तथा समान समुद्र ( In groups and Out groups)—  
समान समुद्र द्वारा "हम समुद्र" ( In groups ) कहा जाता है जिसका निर्माण  
समूह करने की नीति द्वारा होता है । इनकी मुख्य विशेषता यह है कि इनमें सामाजिक  
सम और सामाजिकता का नाम होता है कि इनके बाहर समान  
समाजवादी की भावना से प्रेरित होते हैं । इन समुद्रों में समाजवादी और सामाजिकता  
में समानता और समानता का नाम होता है समाजवादी के समान में  
समान: समुद्र इन समुद्रों के लिए प्रमुख होते हैं तथा वे भी समाज में अधिक मात्रा में  
स्थापित होते हैं । किसी बड़े समुद्र में अनेक छोटे-छोटे समुद्र ( Cliques ), समुद्र  
की नीतियों की निर्धारित करते हैं—बड़े सामाजिक सम, सामाजिक समुद्र, आदि ।  
सम और समान, समान और समान के समान समानता के प्रति प्रतिरोध करते हैं । इनके लिए  
समान: समुद्र के समानों की समान समुद्र के समानों के समान समानता के लिए  
होते हैं । इनके समान समानता की सुन्नी करते हैं । इनके निर्धारित समान समुद्र की  
"समानों के समान" ( Out-groups ) के समान के समानों हैं । इनमें समानता की  
निर्धारित विशेषताएँ होती हैं—समाजवादी भावना की प्रकृति होती है । समाजवादी  
समाजवादी और सामाजिक का समानता होता है । इनके समुद्रों के प्रति  
ईर्ष्या, समानता एवं विशेषता का नाम होता है और समाज के बीच सामाजिक समानता  
समान होते हैं । जैसे हम सामाजिक हैं, वे सामाजिक हैं, या हम समानों के समान  
होते हैं आदि ।

समान, निर्धारित तथा समानता ( 1962 ) के समुद्रों की समानता,  
समाजवादी और सामाजिकता की समान में समान समानता किया जा । निर्-  
धारित के समान तथा कि की समुद्र समानता में निर्धारित की अनुमति देते हैं वे सम





सांसायिक-उपनिवेश क्षेत्र: अनामक पतिष्ठानार्थ, कार्य क्षेत्र: उत्तर, कार्य क्षेत्र: उत्तर  
 और सांसायिक उपनिवेश क्षेत्र : अनामक पतिष्ठानार्थ के अन्तर्गत कार्य है। अनुसू  
 चित क्षेत्रों के पतिष्ठान पतिष्ठान-अनामक, अनामक, की पतिष्ठान पतिष्ठान  
 कार्य के अन्तर्गत कार्य है।

### बेल्लस की प्रणाली में प्राथमिक सेविका

A. सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र : अनुसूचित जाति/प्रादेशिक—

1. एकता का अर्थ है, दूसरों की सहितिकि में रहि, सहानुता तथा सुखकर सेवा ।
2. सनातन-धुति का अर्थ है, सुख-विनीत करना, कर्षीत का दलान ।
3. सहानुति भवत करत निमित्त-समीकृति का अर्थ है, सहानुता करत हाति ।

**उत्तर :-** असत्य

4. कुलाव देना, निर्देश देना, दूसरों के लिए प्रभावशाली ।
5. नए अवसर, सुझाव, विवेचन, भावनाओं का प्रकाशन, दूसरों की क्षमताएँ ।
6. सम्बुद्धता प्रदान करना, पुनरावृत्ति, सुझाव करना, समीक्षा करना वृद्धि ।

C ॥ ११११ ॥ ११११॥

7. वायुमण्डल का जलनिकालन की कार्यवाही करना, सुकन, पुनरावृत्ति, पुष्टि करना ।
8. गड, सुपान्कन, निरीक्षण, सुनडा एवं बाब नकाशन का कार्य ।
9. पुनराग, निर्देशन, विद्या के संसाधन कर्मी की सहाय सुकन है ।

६. सांसातिका-सांकेतिक शीत : अनुमानक प्रतिक्रिया—

10. जलदूषणित जलजल कललल है, नलललललल जललललललल, जलललललललल लल है ललललललल लल ललल लललललल ।
11. ललललल जललल कललल है, लललललल ललललल है ।
12. ललललल लल ललललल, ललललल लल ललललल लल ललललल, लललललललल लल ललललल ।

दिए गए वस्तु का नमूना निम्न है जिसके आधार पर खोजें कि क्या सत्य है—

**समाप्ति—**काल में परमिय हम नहीं दे जिससे अपनाई बिना बनी के अन्य ठग



अधिक अधिक और कमजोर विचार वाली में नज़र आयेगी की बिना चर्चा वाली है। यह भी जान लें कि कार्मिकपूर्ण व्यक्ति अपने-अपने-अपने नहीं बिना अपने कार्यक्षमता और प्रभाव बिना चर्चा में निम्न स्तरों पर पहुँचाने होता है। नहीं नहीं चर्चा में अंतर्गत भी होती होती है। यह निम्न स्तरों पर निम्न होने का एक कारण यह हो सकता है कि अपने विचार वाले अधिक आकर्षित करने के कारण चर्चा की अधिक प्रभावित करने के प्रभाव करते हैं। अनुरा के अन्य कारण इस प्रक्रिया की आवश्यक करते हैं। केवल के अंतर्गत में एक बिंदु में चर्चा में अधिक अन्य प्रभाव करने और प्रभाव प्रभाव की।

केवल में देखा कि अपने अनुरा "दोहरी नेतृत्व" (Dual leadership) प्रणाली के अंतर्गत कार्य करते हैं। इसमें एक नेता अपने विचारों की प्रेरणा प्रेरणा है और अन्य नेता "आचार्यिक विचारों" की प्रेरणा प्रेरणा है। अपने नेता यह देखा है कि प्रभाव-प्रभाव करने करते हैं या नहीं और दूसरा यह देखा है कि और अन्य व्यक्तियों के साथ अंतर्गत में प्रभावित प्रभावों की प्राप्त करते हैं। प्रभाव की प्रभाव, प्रभावों और प्रभावों में प्रभाव होते हैं ऐसे व्यक्ति बहुत कम होते हैं, और "अन्य नेता" या "अन्य व्यक्ति" के प्रभावों में प्रभाव के अनुभव होते हैं प्रभावों की प्रभावों प्रभाव और प्रभाव के अनुभव प्रभाव में होते हैं नहीं प्रभाव में प्रभाव होते हैं।





मान नहीं, वरन् कुछ और भी है। मेतुन के एक दृष्टिकोण के अनुसार बहुत ही कोई समय एक वा अन्य समय पर मेतुन की भूमिका अलग कर सकता है।

ईरियस फेदुस् तथा टावर्ट एक कहल (1946) के अनुसार अनाम पिताजी में मेतुन का विशेष सीम व्यवस्था नहीं है होता है—जिसे न के पुत्र के का में, किसी व्यक्ति के सञ्चय के रूप में, और व्यवहार की चीजों के रूप में। अधिकांश परि-पत्नीजी में एक मात्र सीमा नहीं है इसका अनुभव होता है।

मेतुन समाज की अनेक व्यवस्था अनुसंधान के अन्तर्ग में हुए है अतः विविध परिभाषाएँ की गई हैं। एक विविध परिभाषाओं की पत्नी रिज (1943) ने अपनी पुस्तक "मैथुनिक आका सीमा व्यवस्थाओं" में की है। बीयर (1971) तथा स्टाविस, (1948) के अनुसार पैता एक ऐसा व्यक्ति है जो बहुत की क्रियाओं की इजाजत करता है। अतः बहुत का यह समय की अधिकतर से पहले है, के मेतुन नहीं का नियन्त्रण करते हैं तथा समाज के व्यवहार की अधिक इजाजत करते हैं। या की परिभाषा पर विचार करते हुए हम यह पुके हैं कि बहुत क्रियाओं के रूप में मेतुन की परिभाषा पैता प्राप्त है। मेतुन एक वास्तविक परिभाषा है। एक प्रकार की सभी परिभाषाओं में मेतुन के केवल एक उस पर अलग बिना गया है की अधिक नहीं है।

रिज (1947) ने व्यक्ति और मेतुन में अधिक सम्बन्ध की पत्नी की है। यह मेतुन की परिधि तथा परिमिति पर अधिकतम है। टाविस (1955) इससे बहुत पहले है कि मेतुन व्यक्ति पर बहुत निर्भर नहीं करता है कि किन्हीं सामाजिक अनुसंधान में व्यक्ति के व्यवहार पर अधिक है।

इस व्यक्ति के पैता करने की संभावना अधिक होती है जिसमें मेतुन के रूप होता है और की अनुसंधान के माध्यम, सभी के लिए प्राप्त करता है। मासी गरी (1943) के अनुसार, आदर्शिक रूप में मेतुन एक प्रकार का मासी अनुभव है जिसमें किसी व्यक्ति की विशेष योग्यता या कुशलता अनुभवों की उनके सभी की अधिक वा ईश्वरों की अनुसंधान के योग्य पता है। इसमें अर्थों की साम-सम्बन्धता की मेतुन का अन्तर प्राप्त है।

विनाई, रिजल एवं डेरिज (1964) के अनुसार अनुसंधान पैता के प्रति आशीर्वाद का मान रखते हैं। ऐसा होने का कारण यह है कि पैता अनुसंधान का वास्तविक, निमित्त, और कारण का निर्धारण करते हैं। एक प्रकार हम देखते हैं कि मेतुन, की योग्यता व्यक्ति सम्बन्धी विशेषताओं वा विशेषताओं पर ही नहीं वरन् मेतुन, अनुसंधान की व्यवस्था तथा अधिक परिमिति अन्य कारणों पर भी निर्भर करते हैं। अतः पैता ऐम्पिरिक के अनुसार मेतुन का अधिकतम किसी ऐसे कार्य में सीम

होता है जो पारम्परिक समाज की बुझाने की प्रक्रिया में अत्यन्त महत्व काता है ।

### मेला के प्रकार

मेला अनेक प्रकार के होते करते हैं, उनके कार्य अलग-अलग भी हो सकते हैं । मेला के कार्य बहुत प्रकार, बहुत संरचना बहुत प्रकार, बहुत में संघर्ष, परिस्थितियों तथा ऐसे ही अनेक कारकों पर निर्भर है । यह सब होने हुए भी हम कुछ ऐसे प्रमुख कार्यों की कमी कर सकते हैं जो मेला करते हैं यह सब सब के सब औद्योगिक बहुत के मेलाओं के विषय में प्रत्यक्ष बात है कि मेला कुछ सामान्य कार्य करते हैं—

संयुक्त और सम्पादित करने की क्षमता (Leadership and the power to influence) —मेला अधिकारिण ही का सामाजिकिक प्रभाव पर उसे सब कारकों की अनेक अधिक प्रभाव और अधिक प्रभाव करता है । व्यवस्थापक इसकी प्रत्याशा करते हैं कि यह कारकों के व्यवहार की सम्पादित करने का प्रभाव करेगा । इस प्रकार सम्पादित करना किसी व्यक्ति में निर्दिष्ट प्रभाव है जिसकी प्रभाव करने प्रेरणा करते हैं । व्यवस्थापक सम्पादित किए जाने की अनेक क्षमता करते हैं कि अनुशासी की व्यक्ति सामान्य की होती है ।

विश्वीय आर्थिक तथा वार्षिक मेला ( 1967 ) के अपने अध्ययन द्वारा सब सब में प्रदर्शित किया है कि मेला के पर पर आर्थिक स्थिति बहुत की सम्पादित करने और बहुत सम्पादित होता । चौथे के लिए 3 और 4 कार्डिनल कार्यों के अनुसार की किया गया । सभी औद्योगिक परिस्थित में वार्षिक सम्पादित की सम्पादित प्रभाव पर निर्भर किया कि वे वार्षिक सम्पादित करने के लिए प्रेरणा (Disincentives) करें । अनेक बहुत के एक प्रभाव की सम्पादित सब में मेला प्रभाव गया । प्रेरणा सब के सभी मेला की कुछ सब में प्रभाव गया कि सब प्रती पर उन्हें मेला प्रभाव प्रभाव के सब के प्रभाव प्रभाव । सभी प्रभावों के के बहुत प्रभाव कि प्रभाव का वार्षिक प्रभाव प्रभाव है और सब प्रभाव के प्रभाव कि प्रभाव ही प्रभाव का वार्षिक प्रभाव प्रभाव है । प्रभाव के प्रभाव के प्रभाव प्रभाव कि बहुत सब कि सब प्रभाव का प्रभाव बहुत का प्रभाव प्रभाव, जो की सब प्रभावों की प्रभाव मेला बहुत प्रभाव प्रभाव प्रभाव प्रभाव की प्रभाव करने में अधिक प्रभाव प्रभाव है । प्रभाव नहीं नहीं कि मेला बहुत प्रेरणा की सम्पादित और प्रभावित करते हैं प्रभाव प्रभाव और प्रभाव की बहुत प्रभाव प्रभाव प्रभाव की प्रभाव प्रभाव है । सब प्रकार सब प्रभाव के प्रभाव प्रभाव प्रभाव सब में सम्पादित करते हैं कि मेला का सब प्रभाव प्रभाव और प्रभाव प्रभाव है प्रभाव प्रभाव प्रभाव की प्रभाव प्रभाव प्रभाव ।

समुद्र के तटानों की प्रभावित करने के अतिरिक्त, वेला अन्य दृष्टिकोणों की निष्पत्ति करती है। जलमयण के लिए अपने समुद्र की ओर के वेला अन्य समुद्र के सम्बन्धन की करती है। यही यही के अपने समुद्र के लिए दृष्टान्त के बीच की होती है। समुद्र के पल मर्यादा के लिए वेला निर्धारण की मानकमर्यादों की दृष्टि करने के लिए की दृष्ट होना है जिसमें निर्धारण की मानकमर्याद प्रकाश होती है। समुद्र के सतह सतह दृष्टि के सम्बन्ध और सतह सतह सतह एवं निर्धारण सम्बन्धारी का भी समुद्रमय करती है। वे वेला के सम्बन्ध वेलासूत्र, अथवा या उसकी सम्बन्ध निर्धारण एवं की समुद्रमय द्वारा माना लेते हैं।

द्वितीय अधिवेशन की अध्यक्षता का सम्मान भी ऐसा कर सकता है। यह सम्मान कीर्ति के नाम दूसरों के सम्मान को भी विधिवित कर सकता है। यह सम्मान तथा कर्तव्यपूर्ण व्यवहारों के बीच सम्बन्धों का कारण होने के कारण सम्मान की तुलनाई की माहसुली को बढाता है। यह सम्मान सम्मान के नहीं की विभिन्न सम्मानों के सम्बन्ध में प्रकाशित करता है और अतः सम्मान के नाम का प्रयोग करते सम्मानों लोगों पर अपने विचार भी योग्य सकता है। सुत्रसूत्र प्रकाशनाधी इतिहास सम्मान के एक सम्मान के विषय में यह बात सम्मान सम्मान जाती थी। सम्मान सम्मान ऐसे सम्मान की सम्मान की करते हैं और करते भी हैं।

इस प्रकार नेता आशीर्वादित भी हो सकते हैं और अन्यायीशक्ति भी ।  
 राजाशक्त : आशीर्वादित नेता को कुछ सुविधाएँ होती हैं और वे अपनी शक्त का प्रयोग कर सकते हैं । किन्तु अन्यायीशक्ति नेता कम शक्ति प्राप्त करते हैं कम आशीर्वादित नेता के अनुयायियों में वे शक्ति शून्यता (विश्रब्धता प्रभाव) फैलाते हो जाती है । ऐसा बहुत नेता की अनुपस्थिति में होता है या जब समय कम बहुत कम ही अवधि के लिए शक्ति प्रयोग होता है । आशीर्वादित नेता की शक्ति में वेवस्थित, सहाय, वैयक्तिक, वैयक्तिक, विचारक या प्रमुख की विचारप्रणाली शामिल होती है ।  
 अज्ञानशक्त, विचारशक्त, शक्ति, सुविधाशक्ति आदि भी शक्त : नेता के शक्त में शामिल होती हैं ।

संक्षिप्त एवं प्रतिष्ठा ( *Concise & Prestigious* )—विश्व भाषा में ऐसा कम संक्षिप्तों में व्यवहार की प्रभावित कर सकते हैं, उसे प्रतिष्ठा प्राप्त है। उक्ति, प्रेता की प्रतिष्ठा के साथ परिवर्तित होती है, क्योंकि अन्य लोग उनके कार्य विचार धर्मिक, अनुभूति और महानुभूति मानते हैं, प्रेता की प्रतिष्ठा सभी भाषा में कम होती है। प्रतिष्ठा पर के सुखी होती है, वहीं कम कि वास्तविक संनिधित नहीं में ही कम या अधिक भाषा में प्रतिष्ठा विहित होती है और कोई व्यक्ति को कम नहीं पर प्राचीन होते हैं, वे सुख के दायरों की किसी न किसी भाषा में अपना प्रभावित करते हैं। एक ही-ही-कालकार किसी सामाजिक कक्षाओं में विशेष स्थान प्राप्त





४॥ विश्व सर्वोच्च माता उषा सर्वोच्च माता के सम्मुख एवं सम्मुख माता के  
( आमा उषा माता १९६० )

**विद्युत् प्रसार तथा ध्वनीकरण**

### ( Types of Leaders and Categories of Leadership )

अधिक अनेक कर्मों में दूसरों की सेवाविशेष करते हैं, क्योंकि कुछ धर्मिकार्थ तथा विचारों तथा की अनेकता वभाव में अधिक सुखमयता होती है। कोई भी ऐसा किया जिसमें व्यक्ति बहुत अर्थ में जीवदान देता है और जो अन्य कर्मों के समर्थन में भिन्न है, जो किसी प्रकार का वैयक्तिक अर्थ समझे है। वैयक्तिक प्रकार का योगियों में कोई भी जो किसी धर्मिक या पौरोहित्य की उचित समझे है, अपने अर्थ में बहुत होती है क्योंकि किसी व्यवस्था में भी की क्रियाओं की व्यवस्था का बहुत अर्थ समझेंगे है। पहले का अधिपत्य यह है कि नेताओं की विभिन्न प्रकारों का योगियों में पहले से अधिपत्यपूर्ण है किन्तु यह समझ देने के बिना कि नेता असाधारण करने की प्रक्रिया में क्या करते हैं यह मानने के बिना विभिन्न प्रकार के नेताओं का विचारण आवश्यक है। दूसरे, सभी में किसी भी नेता की उचित क्रियाओं की कारण अनेक योगियों में पक्ष समझे हैं। नेताओं के प्रकार का योगियों की उचित भिन्न है—

**इसायक ( The Adversity )**—यह भाष्य, सामान्य पर सर्वत्र  
इकार की शिवालों के लिये बहुत हीना है—वीरता बनना, समझ बनना,  
बनना बनना, निर्दिष्ट वना बनना । इसाक यह कहता है कि सभी कार्य  
सुनिश्चित वीरता के अनुसार किन्ना । के वीरता पर बहुत से बहुतसुख पर पर  
बानीय हीने है, जो बहुत के निश्चित सभी की बुद्धि के लिये निश्चित केवाई  
कलकल करने के किन्ना या कलकली के कलकल के किन्ना सुनिश्चित किन्ना बनी है ।  
इसायक के ही बहुत कार्य है—सुनिश्चितक प्रविशाली को कलकल करना तथा वीरता  
या बहुत की वीरता की शिवालयन ।

[illegible]

प्रकार निर्देश देने बहुत है। एक प्रकार नीति-निर्माण और उनके क्रियान्वयन की व्यवस्था-व्यवस्था व्यक्तियों द्वारा संभारित किए जाने के कारण प्रत्यः नीति अनुसूच (प्रशासन और नीति निर्माण के बीच) पर होने की संभावना होती है, क्योंकि अनुसूच में ही प्रशासन को सुनिश्चित होती है लेकिन इन सम्बन्धों में नीति निर्माण का विशेष विशेषाधिकार नीति (Policy Maker) के कारण अस्तित्व होता है।

**अधिकारीसंघ नेता (The Secretariat)**—इस नेता हिंदी की संघन, औद्योगिक प्रतिक्रिया, कारकारी या अर्थशास्त्रीय संरचना, नेता या अन्य अन्य सम्बन्धों में संरचना सम्बन्धी प्रक्रियाओं के निर्देशन एवं पर्यवेक्षण के विभिन्न कार्यों का निष्पादन करते हैं। यह किसी संरचना के आन्तरिक अनुसूचन में संभव रूप के सभी वा विभिन्न स्तरीय सभी पर कार्यरत होते हैं। किसी भी विस्तृत संरचना के लिए अनुसूच कार्यों का विभिन्न क्षेत्रों में विभाजन करना आवश्यक है। कर्म-कारियों की संख्या और योग्यता के अनुसार कार्य-विभाग विभाजित है, संरचना मध्य कारकारी, वैज्ञानिक, प्रशिक्षण या व्यावहारिक है। अधिकारीसंघ नेता की नीति, संरचना या अनुसूच की संरचना तथा औद्योगिक विभागों पर निर्भर करती है कई उनके कार्यों और सुनिश्चित की योग्यताएँ स्पष्ट कर दी जाती हैं। की संरचना रीति-रिवाज होती है तथा सुनिश्चित होती है उनके सभी और अन्यथा अनुसूच संरचनाओं के विकास की संभावना अधिक होती है। यदि संरचना की संरचना वाली निर्धारित होती है तो पर्यवेक्षण प्रत्यक्ष के अस्तित्व होने पर की अनुसूचों (Secretariat) कार्य प्रत्यक्ष व्यवस्था की सुधारक रूप के बताती रहती है और सुधारण के सुधारणों के संरचना सुनिश्चित रहता है। आन्तरिक में अनुसूचों का प्रत्यक्ष योग्यता परीक्षा द्वारा (आई० ए० एच० तथा पी० सी० एच०) होती है। प्रत्यक्ष विभाग के व्यवस्था-व्यवस्था सभी होती है, जिसके सभी अन्य आई० ए० एच० तथा पी० सी० एच० अधिकारी और अन्य अन्य सभी होती है की उन संरचना के कार्यों की निम्नरीय सभी के अर्थशास्त्रकार बताते हैं।

**नीति-निर्माण (The Policy Maker)**—नीति-निर्माण, एक प्रशासन की ही करता है, किन्तु उनके अनुसूच होने की संभावना कम होती है। परन्तु अनुसूच सभी-सभी प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष के अस्तित्व नीति-निर्माण का कार्य भी कर सकता है। इसे संरचना में, नीति-निर्माण, नीति प्रत्यक्ष अनुसूचों के वा विभागों द्वारा की ही करते हैं। आन्तरिक प्रशासन, नीति-निर्माण नीति के प्रत्यक्ष प्रत्यक्षता के रूप में प्राप्त होते हैं और यह नीति-निर्माण ही जाती है, तो प्रत्यक्ष उसे क्रियान्वित करता है। बहुत नीति निर्माण अत्यन्त नेता के रूप में सभी करते

है—अर्थात् वह किताब जहाँ हमें नेतृत्व की प्रशिक्षण मिलता है। वह वह है जो हमें वास्तविकता की ओर से साक्षात् करता है। ( "The man behind the leader" is a common phrase to describe this kind of leader.)

**विशेषज्ञ ( The Expert )**—विशेषज्ञ सामान्यतः नीति-निर्माणों और प्रणालियों की सहायता प्रदान करनेवाला है। अक्सर विशेषज्ञ नेता के लिए बहुभार्यक सूचनाएँ विशेषज्ञों के पास होती हैं। वह नीति-निर्माण और योजनाएँ बनाने में अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ होने के कारण टीका, आलोचना और विशेष ज्ञान प्रदान करता है।

अक्सर तीन प्रकार के व्यक्ति नेता उद्देश्यों का निर्धारण तथा इनकी विज्ञान में शिक्षा का संभालन के लिए या किरायेदार के लिए उत्तरदायी होते हैं किन्तु विशेषज्ञ पर परिणामों का कोई परीक्षण नहीं होता। विशिष्टता विशेषज्ञ, प्रायोगिक वैज्ञानिक, उद्योग-समीक्षात्मक, पौरुषीय, मनीषिक, विशेषज्ञ होते हैं और आचार्य-वैज्ञानिक और वैज्ञानिक आदि प्रणालिक, गुरुत्वित तथा नीति निर्धारण होते हैं। बहुत अधिक की आवश्यकता में मनीषिक, सम्बन्धित तथा आचार्य, प्रणालिक, गुरुत्वित और नीति-निर्माण की सुविधा मिलती है जबकि बहुत समीक्षात्मक, प्रायोगिक और बहुत नीति निर्धारण होते हैं।

**आदर्शवादी ( The Ideologue )**—विशेषज्ञ के अलावा वह भी निर्धारण होते हैं, किन्तु वह किसी एकमात्र क्षेत्र में संलग्न नहीं बल्कि विचारों और विचारों में विशेष ज्ञान रखते हैं। आदर्शवादी, कुछ विचारों के समर्थक होते हैं जो सामाजिक व्यवस्था में निहित होते हैं। वे अक्सर आदर्श, गुरुत्व, नीतिनिर्माण, और आदर्शवादी आदि इस प्रकार के नेता के कुछ लक्षण हैं। इनकी विज्ञान में मनीषी व्यक्तियों के जीवन को बदल दिया। इनकी विज्ञानों में आदर्शवादी नेता की कुछ न कुछ विशेषताएँ होती हैं।

**आदर्शवादी नेता ( The Charismatic Leader )**—वैशिष्ट्य तीन बातों का समूह है जिसका अभिप्राय है कि वे अक्सर के हैं, जिससे प्रभावशाली में उनके शक्तियों के मुकाबले में विशिष्ट योग्यता का प्रतिफल आती है। इन विशेष शक्तियों के द्वारा वह बहुसंख्य और असाधारण कार्य करने में सक्षम हो जाता है। मैक केनर ( 1947 ) ने असाधारण विचारों में इसे प्रमुख किया। जबकि बहुसंख्य में सम्बन्धित व्यक्तिनी सामाजिक सम्बन्धों और व्यक्तिगतों को हल करने में सक्षम होती है वह सामाजिक दृष्टि पर आदर्शवादी नेता का उत्पन्न होता है। वह समाज में या किसी देश में सम्बन्धित के आदर्शवादी नेता है, व्यक्तिगत अधिक उदात्त है, सम्बन्धित उदात्त है या कुछ का भय होता है जो देश में या समाज होता है। इन नेताओं में असाधारण व्यक्तिगत शक्तियाँ होती हैं और जब इनके साथ



विश्व व्यक्ति या विश्व आह्वान ( The Personal Figure )—परिहार, एक ऐसा समूह है जिसका समुच्चय हमें जीवन में सबसे पहले होता है। माता-पिता की ऐतिहासिक परिहार सभी समूह में मेडा की ही होती है। जब सभी समूह में प्रवेश करते हैं तो अभावगत उनके माता-पिता की भूमिका के होते हैं। यह समूह उनके जीवित में जारी रहती है क्योंकि मेडा तथा अन्य व्यक्ति माता-पिता का स्थान के होते हैं। उनमें ( परिवार व्यक्ति ) में कुछ न कुछ पैदाश विवेकवादी अवयव प्रकट होती है। मेडा की भूमिका माता-पिता की भूमिका के समान होती है—वे पुनर्धार, रक्षा, सीट-परधार, प्रोत्साहन, विवेकवादी व्यक्ति सभी पर अधिकार रखते हैं जिस पर पहले माता-पिता का स्वयंशिकार था।

पैदाश मेडा की प्रकार के होते हैं। यद्यपि अनुशासकी, अनुशासनविन, अन्तःकारी, बाह्यकारी मेडा—तथाकथित विश्व-आह्वान ( Fatherly Figure )। द्वितीय, पोषाहार-माता, कार्य देने वाली, बचकाने वाली, सम्बंध, सामाज्य देने वाली मेडा—मातृ-आह्वान ( Motherly Figure ) होते हैं। अधिकांश मेडा, चाहे किसी भी प्रकार के ही सभी प्रकार के पैदाश मेडा के समान होते हैं, किन्तु अधिकांश में दो प्रकार में वे एक ही प्रभावदा होती हैं।

अभिप्राय के प्रकार के रूप में ( The Leader as a Group-leader )—सामाज्य अधिकार व्यक्ति ( Authority Figure ) के प्रति विशेष तथा समूह की समया सीमा में देखी जाती है। व्यापारिक अधिकारियों, औद्योगिक, सर्वो-भित्तिवादी, राजनीतिक नेताओं तथा अन्य ऐसे व्यक्तियों के विचार में समाचार सभी और परिवारों में अन्य समूह के विवेक और इसकी अभिव्यक्ति करते हैं। मेडा के प्रति यह समूह अपने द्वारा कल्पित यह अधिकारों और निर्णय के मुक्त होने की कल्पना के कारण होती है। इसका कारण यह है कि सामान्य व्यक्तियों की संवेदा मेडा की समान द्वारा प्रकट रहता है। सामान्य व्यक्ति मेडा की बात कुछ, बुद्धिवादी और मान्य समाचार के उनके प्रति ईर्ष्या हो जाते हैं। किन्तु सभी अभिव्यक्ति नहीं कर पाते। अतः उनके द्वारा सामाज्यिक निर्वाह की समीक्षा करते हैं। यदि समूह के कारण मेडा के प्रभावों के अभिव्यक्ति के समुच्चय नहीं होती तो उन्हें किसी की समान होती है जिसे वे सीखें बहुत सी, और जो प्रभाव रखती होती है वे प्रभाव प्रभावित करते हैं।

कुछ संरक्षकों में मेडा के प्रति अधिक समूह का प्रभाव करते हैं। मेडा के प्रति अनुशासकों की समूह का अधिकार कारण यह विस्मय है कि मेडा अपने विवेक में अधिक प्रभावदा प्राप्त करते हैं। समूह के सदस्यों में प्रभाव और संवेदा उन अधिक होती है जब सभी सदस्यों में प्रभावों का समान प्रसार होता है। पीपल-मैन, पीपल तथा व्यक्ति ( 1961 ) ने छोटे समूहों के अध्ययन में देखा कि जब



कार्य किन्ने अपने को तय्यार करता है। एसीम्बु देखे नेता की "Hard task master" बहुत याता है। कार्य वालों एवं कार्य अधिकार नेता में निहित होने के कारण समूह के सदस्यों का तय्यार विभाव होता है। नेता की अनुपस्थिति में कार्य स्तर में गिरावट आती है। वह कार्य कार्य अपनी स्वेच्छानुसार करता है। वह स्वभावतः निरुदी होता है और कार्य कार्य की निर्धारण अपनी जगहों में करता है।

(2) **प्रजातान्त्रिक नेता (Democratic leadership)**—ऐसे नेता लोकतन्त्र में आस्था रखते हैं। वह जनसभाओं की सबसे ऊपर रहते हैं। अतः वह जनसभाओं की आकांक्षाओं, इच्छाओं, आलोचनाओं की कड़ीयता करते हैं। वह अपने अधिकारों को सदस्यों में विभक्त करते हैं और जारी शक्ति अपने हाथों में केन्द्रित रखने में विवश रहते हैं। सदस्यों में विचार-विमर्श और सामूहिक कार्यविधि की प्रोत्साहित करते हैं। अतः ऐसे समूह में संलग्न समस्त हीरा है तथा समूह में एकता और एकमतता की भावना अधिक तथा सदस्यों में परामर्शित, सीढ़ीबद्ध समन्वय होते हैं। सदस्यों में सहयोग की भावना प्रबल होती है और नेता तथा सदस्यों में भी सहयोग-पूर्ण सम्बन्ध होते हैं।

प्रजातांत्रिक नेता जॉर्ज बगवेल होंने वृद्ध भी अनुयायियों के साथ वसुध कैंटर कीश्वरीद्वारा सम्मान प्रदान है : यह वसुध के माध्यमों की वृद्ध प्रसार का संकेत है : प्रजातांत्रिक नेता द्वारा बना एक जॉर्ज के निवेष्टनीकरण के माध्यम वसुध में कर्तव्य, मारुतल्लिज जैव, वसुधकीकता ज्ञानि व्यक्त होती है : वसुध संरचना ज्ञान के प्रदान होती है जो समाजवादी में सर्वथा स्थित होती है : ऐसे विभिन्न चित्र ज्ञानों की वृद्ध की संरचनाओं दर्शाती जाती हैं :



### Star Shaped Structures (Legend: 400x)



### Most Shaped Structures (quantified types)

॥३॥ **रिहा सचवान ने कानावरी जीव सभन्निह ज्ञान करी का ज्ञान करी है ।**





कमजोर में कभीकल के नेतृत्व की चर्चा समुदाय की गई जिसमें दो कार्यक्षेत्र प्रयोज्य हैं—सामाजिक नेतृत्व तथा व्यक्तिगत नेतृत्व । सामाजिक नेतृत्व अधिक प्रयोज्य है और जिस के अधिकतम देशों में इसी का बोधबाल है ।

## नेतृत्व का आविर्भाव

( *Origins of Leadership* )

समूह में नेतृत्व का आविर्भाव अथवा उत्पत्ति के प्रश्न पर मनोवैज्ञानिक एक मत नहीं रखते । कोई समूह की परिच्छेद पर, समूह में संघर्ष का अतिप्रकाश पर ही अथवा नेता की विद्यमानता या व्यक्तित्व-कारणों पर मत देते हैं । कुछ मनोवैज्ञानिक नेतृत्व की सांस्कृतिक अथवा सम्प्रदाय प्राप्ति हैं जबकि अन्य इसे व्यक्तिगत की मान रखते हैं ।

1. सांस्कृतिकता ( *Cultural* )—प्राचीन दृष्टिकोण के अनुसार नेतृत्व सम्प्रदाय दुर्गो पर आधारित था, क्योंकि अथवा मनोवैज्ञानिक यह समूह में कि नेतृत्व व्यक्ति सांस्कृतिक होती है । फ्रांज़ (Sir Francis Galton) इस विचारधारा के अनुसार प्रस्तावित थे उनके अनुसार कुछ लोगों में नेतृत्व के सम्प्रदाय गुण होते हैं और सभी लोग नेता बनते हैं । यह प्रश्न दुर्गो की केवल सम्प्रदाय वाले व्यक्तियों के ही अथवा सभी की अपेक्षा करता था । इसके अनुसार, अधिक ऐरा-वीरा, सम्पू-र्णता नेता रहते हैं अथवा नेतृत्व के लिये अथवा सम्प्रदाय गुण सम्प्रदाय में । किन्तु सांस्कृतिक मत फ्रांज़ के विचारों के विपरीत है । यदि सम्प्रदाय के विचारों की मान मान लिया जाये तो इसका तात्पर्य यह होता कि नेता की सम्प्रदाय की स्थापना करना है । कुछ व्यक्तियों में ऐसा होता की है किन्तु सांस्कृतिक दृष्टिकोण के अनुसार यह सम्प्रदाय के कारण नहीं बल्कि सामाजिक के कारण होता है । इस सम्प्रदाय में यह समूह का प्रस्ताव है कि यदि नेतृत्व के अनेक गुण दुर्गो के प्राप्त होते की हैं, तो उनके समुचित और पूर्वसम्प्रदाय विकास के लिये अनुकूल और सारी सामाजिक का प्राप्त होता सम्प्रदाय है । सम्प्रदाय के लिये दुर्गो के विकास की लिये पूर्व साधन सामाजिक अथवा व्यक्तिगत-अथवा कारणों पर निर्भर करती है । प्रस्ताव के अनुसार अथवा नेतृत्व, अनुकूल नहीं, बीबाबा सम्प्रदाय लिये में ही प्रस्ताव है नेतृत्व के सम्प्रदाय गुण रहे ही किन्तु सामाजिक परिस्थिति अथवा अनेकों की प्रस्ताव की उन्हें नेता बनाने में अनुकूल रहे ही होती । अथवा नेतृत्व केवल सम्प्रदाय का गुण नहीं है । नेतृत्व की उत्पत्ति सम्प्रदाय तथा व्यक्ति की सम्प्रदाय का परिणाम है ।

2. व्यक्तित्व ( *Personality* )—नेतृत्व के आविर्भाव में व्यक्तित्व का भी हाथ होता है । व्यक्ति में यह बुद्धि, परिश्रम की दृष्टता और व्यक्ति जैसे गुण विद्यमान होते हैं तो उनके नेता बनने की सम्प्रदाय होती है । बीबाबा (1925) ।



के कार्य में जो व्यक्ति इसका विचारों देता है वह केला के रूप में समुद्र द्वारा मान्यता प्राप्त कर लेता है : हैम्बलिन ( Hamblin, 1958 ) के अध्ययन में तीन-तीन व्यक्तियों के बीचों-बीच समुद्र ने जिसमें समुद्र संकेत प्राप्त करना सामाजिक समुद्र और इतने ही निर्दिष्ट समुद्र में : परिणामों के साथ हुआ कि जो संकेत प्राप्त तथा तीन निर्दिष्ट समुद्रों ने संकेत प्राप्त परिस्थितियों में करने केलाओं की उद्यम देता : जिसमें के रूप में उद्यम समुद्र कि संकेत सामाजिक परिस्थितियों में केला का व्यवहार महत्व होता है : यही नहीं समुद्र संकेत की यही में केला अधिक प्रतिक्रियाशील हो जाते हैं और अनुमानितों द्वारा केला की बीच मान्यता की प्राप्त हो जाती है : नेटून परिष्कृत उद्यम विचारों में होता है जब समुद्र समुद्र के चले जाते केला की संकेत का मान्यता करने का समुद्राधी का समुद्राधी करने में समुद्राधी होते हैं :

समुद्र-संकेत समुद्र नेटून के आविष्कार का प्रतिक्रियात्मक ( replacement ) पर ही यही समुद्र नेटून के विचारों पर भी प्रकाश है : हैम्बलिन ( Hamblin, 1958 ) और क्रोच, क्रोचमैन एवं बर्ली ( Kroch, Crochman & Bally, 1962 ) का मत है कि जब समुद्र अधिक समुद्र महत्व करता है या संकेत समुद्र जाता है तो देशी समुद्र में जिस नेटून का आविष्कार होता है वह समुद्र समुद्राधी नेटून ( Axiomatic social learning ) होता है : इसके विपरीत जब समुद्र के समुद्र समुद्र काई अधिक होता है तो समुद्र नेटून समुद्राधी कार्य की समुद्र में जिसका समुद्र काई की समुद्राधी का समुद्राधी है जिसके कारण समुद्राधी नेटून का समुद्र होने की समुद्राधी होती है :

### १. आविष्कार समुद्र की विफलता ( Failure of axiomatic social )

—जब किसी समुद्र का समुद्र अपने समुद्रों के निर्धार में विफल होता है तो देशी समुद्र में समुद्र नेटून के आविष्कार की समुद्राधी नक जाती है : आविष्कार समुद्र समुद्राधी समुद्र के निर्धार समुद्राधी समुद्राधी, समुद्राधी समुद्राधी के कार्य समुद्राधी समुद्राधी काई की समुद्राधी है : जब वह समुद्राधी समुद्राधी की समुद्राधी कर जाती तो समुद्र समुद्राधी समुद्राधी हो जाती है और फिर समुद्र समुद्राधी का समुद्राधी का समुद्राधी समुद्राधी का समुद्राधी हो जाता है, समुद्राधी समुद्राधी समुद्राधी केला की समुद्राधी प्राप्त कर लेता है : क्रोच ( Croch, 1955 ) ने अध्ययन कर समुद्राधी कि 83% समुद्राधी समुद्राधी समुद्राधी और केला 34% समुद्राधी समुद्राधी समुद्राधी के समुद्राधी पर समुद्राधी ने समुद्राधी की समुद्राधी किया :

४. केला की समुद्राधी ( Needs of leaders )—नेटून की समुद्राधी में समुद्राधी की समुद्राधी समुद्राधी समुद्राधी है : समुद्राधी के निर्धार या समुद्राधी की समुद्राधी ( In power ), समुद्राधी-समुद्राधी ( In prestige ), समुद्राधी की समुद्राधी, समुद्राधी की समुद्राधी यदि देशी की समुद्राधी है जो

नेतृत्व की उत्पत्ति में सम्बन्ध होती है। यदि किसी समूह के अधिकांश सदस्य उन सामाजिकताओं के प्रति होते हैं जो नेतृत्व स्थापन करने के दृष्टिकोण से व्यक्तिओं के लक्ष्य होती हैं। तबिले इन सामाजिकताओं के प्रति व्यक्ति चिन्ते पुनः होती है जो सामाजी के साथ नेतृत्व का सम्बन्ध हो जाता है।

7. अनुसरणकारी शक्ति ( *Authoritative Power* )—इस सम्बन्ध में एक सामाजी के उदाहरण है कि अनुसरणकारी शक्ति वाले व्यक्ति अपने शक्तिमान और होकर शक्ति के कारण नेतृत्व में सम्बन्धित होते हैं। यह लोग दूसरों को निर्देशित करने में सक्षम होते हैं तथा अपने निर्धारों के द्वारा लोगों को प्रभावित कर समूह में अपनी वजह वाले तथा सम्बन्धित नेतृत्व सम्बन्धित होते हैं।

अनुसरणकारी के अधिकांश कुछ अन्य कारण भी नेतृत्व की उत्पत्ति एवं विकास में किसी न किसी रूप में योगदान करते हैं। ऐसे कारणों में कुछ की चर्चा बहुत जल्द होती है—

(i) व्यक्तिगत आकर्षण ( *Personal attraction* )—नेता बनने के लिए जिस व्यक्ति का योगदान होता है उसमें एक व्यक्तिगत आकर्षण भी है। शायद यह है कि जिस व्यक्ति में आकर्षण होता है उसके नेता बनने की संभावना कुछ अधिक होती है।

(ii) अनुयायियों की प्रतिक्रिया ( *Reactions of followers* )—नेतृत्व की उत्पत्ति एवं विकास की प्रक्रिया काफी अधिक होती है। अनुयायी भी नेतृत्व के विकास को निर्धारित करते हैं।

(iii) नये समूह की स्थापना ( *Formation of new groups* )—एक समूह में किसी एक समूह का निर्माण होते किसी नई पार्टी की स्थापना होती है जो भी नेतृत्व की उत्पत्ति सम्बन्धित हो जाती है क्योंकि वह एक समूह की प्रभावशाली भी बनता होती है।

(iv) विभागीयता ( *Ascription* )—एक पार्टी के अन्तर्गत होने पर एक व्यक्ति के नेता बनने की संभावना अधिक होती है जो समूह के अन्य सदस्यों की अपेक्षा अधिक अधिक प्रभावित होता है।

## नेताओं की व्यक्तिगत विशेषताएँ

( *Traits of Leaders* )

नेताओं में क्या विशेषताएँ होती चाहिए? क्या किन विशेषताओं के कारण कोई व्यक्ति नेता बनता है? अन्तर्गत मुद्दों के अनुसार अनुसरण एक अनुसरण विशेषता है। एच. ई. सीमर ( 1979 ) ने कुछ लोग व्यक्तियों के व्यक्तियों की समीक्षा तथा शायद कई समूहों के अनुसरणियों के निर्देशन के अन्तर्गत यह देखा कि नेतृत्व प्रतिक्रिया में निम्न एक अन्य तथा अनुसरण सम्बन्धितता में

कोई राष्ट्रीय सम्बन्ध नहीं प्राप्त हुआ। कल्पित कार्य में थिराए समय तथा कुछ एक प्रकार की परिस्थितियों के अभावोन्मुखता में सम्बन्धक अनुसंधान प्राप्त हुआ किन्तु अन्य में अनुसन्धान अभावपूर्ण था। श्रीबल्लभ भट्ट मानता है कि उसने सभी प्रकार की नेतृत्व परिस्थितियों की व्याख्या में प्रतिबन्धित नहीं किया था किन्तु नेतृत्व अनुसंधान और अनुसंधान सम्बन्धोन्मुखता में सभी सम्बन्धक अनुसन्धान 12 वा : परि अनुसंधान की अन्तर्भावना के अनुसार नेतृत्व की अनुसंधान विशेषता है, ही विशेषता ही अनुसन्धान द्वारा इसका अभाव दर्शाया होता।

श्रीबल्लभ के अनुसार उसके अभाव अनुसंधान तथा सम्बन्धोन्मुखता में सम्बन्ध की सम्बन्धित नहीं करते; उसके साथ यह दर्शाया होता है कि सम्बन्धित अभाव नहीं प्राप्त हुए। नेताओं की अनुसंधान विशेषताएँ निम्न हैं :

1. बुद्धि ( Intelligence )—सामान्य बुद्धिबोध के अनुसार नेता कोई निरुत्त किता प्राप्त हो या बुद्धि के सामान्य के नेता बना हो, अनुसंधानों की तुलना में अधिक बुद्धिमान माना जाता है। लोगों के भी इस रूप की बुद्धि हुई है। छोटे अनुसंधानों में अनुसंधान तथा व्यक्तिगत विशेषताओं के सम्बन्ध लोगों की समीक्षा के उपरान्त रिचार्ड की० मैग ( 1959 ) के नेता कि नेतृत्व की विशेषताओं में बुद्धि एक अनुसंधान लक्षण है।

एक सम्बन्ध में बुद्धि तथा नेतृत्व सम्बन्धक सम्बन्ध प्राप्त हुआ है। मैग के० कीर्तन तथा रिचार्ड की० मैग ( 1961 ) ने एक सम्बन्ध अन्विष्टा 'नेता-निर्देशक अनुसंधान' ( Leadership Group Discussion ) अन्वेषण का उपयोग किया। इस विधि में नेतृत्व पक्ष के व्यक्तियों की एक छोटी विशेषता अनुसंधान के रूप में दर्शाया किता गया। अनुसंधान में नेतृत्व का कार्य किसी की नहीं होते है। प्रत्येक एक अनुसंधान वर्ष के प्रयोगों का विवेचन करते हैं और अनुसंधान कार्य में अनुसंधान प्रत्येक अनुसंधान की व्यक्ति के अनुसंधान में सम्बन्ध करते हैं। यह विधि सम्बन्धित नेतृत्व के विकास की अभिलक्षणा का मुख्य वाली वाली है। कीर्तन तथा मैग के सम्बन्ध में नेतृत्व सभी सम्बन्धक और सम्बन्धित बुद्धि प्रयोग सम्बन्धों के राष्ट्रीय और सम्बन्धक अनुसन्धान ( .35 ) प्राप्त हुआ। एक अन्य ऐसे सम्बन्ध में अन्वेषण ( 1973 ) ने बुद्धि तथा नेतृत्व के बीच सम्बन्धों के रूप में अन्वेषण दिया। अन्वेषण के प्रयोग, अन्वेषण विवेचन ( विवेचन ) विधि के अनुसार यह कीर्तन में प्राप्त किता था, के एक दूसरे का नेतृत्व विवेचन ( Leadership Potential ) के आधार पर सभी सम्बन्धक करण। इस सम्बन्धित रूप पर सभी द्वारा प्राप्त सम्बन्धक सभी तथा सम्बन्धक है किन्तु के कीर्तन में मुख्य सभी का अनुसन्धान 41 तथा अन्वेषणों का 38 प्राप्त। इस विवेचन में सामान्य प्राप्त यह है कि नेता में अनुसंधानों की तुलना में सामान्य बुद्धि अधिक होती है।

3. **प्रभुत्व ( Dominance )**—केटल और अश्विज विधिवरानों के बीच प्रभावक लक्षणमयता जति लुपों में प्रभुत्व द्वारा प्रमुख लक्षण है। इस विषय में मेन्ड ( 1939 ) का सर्वोत्तम है। केटल के लिए मेन्ड में प्रभुत्व की विशेषता जति आचरणक है क्योंकि इसके द्वारा वह प्रभुत्वमयी की प्रभावित एवं स्थितिगत करता है।

एशियाई-पैसाजी ( 1949 ) के डीसिम्प्लिफा साइकोमेट्रिकल इन्वेस्टी के डीसिम्प्लिफ स्केल (Dissimilarity Scale) का प्रयोग विषयविशारद कालों पर किया गया इनमें और निम्न ( Top and Bottom ) श्रेणियों का प्रयोग एक द्वि-आंश प्रयोग में प्रयोग के रूप में किया। उन्होंने एक को पैसा तथा अन्य को असुखी की प्रतिकृति की। शोधों का और अतिरिक्त पैसा की प्रतिकृति करीब, यह प्रयोग की परीक्षा की। परिणामों के साथ हुआ कि प्रयोगों में प्रयोग प्रयोग वाले 75% और महिलाओं में 70% प्रयोग प्रयोग वाली प्रयोगवादी केवल प्रयोग करती हैं, जब उन्हें निम्न प्रयोग वाली अर्थों की प्रयोग के साथ शोधों में प्रयोग हैं। जब प्रयोग प्रयोग महिलाओं, निम्न प्रयोग प्रयोगों के शोधों में प्रयोग हैं, तो प्रयोग के प्रयोग 25% के अतिरिक्त प्रयोग वाली प्रतिकृतिओं में महिलाओं ने असुखी प्रतिकृति प्रयोग। किन्तु यह प्रयोग प्रयोग प्रयोग वाली महिलाओं ने ही किया था।

3. **अधिसीजन (Adjutant-General)**—येताओं की सुविधा के अर्थ में उनका भी भूमि एवं वायुमार्गों की सुरक्षा होती है। जबकि अन्य राज्यों के बहुत कम होते हैं। यदि ऐसा होता है, तो अत्यंत; किसी व्यक्ति के अधिसीजन के विषय में सुनाया जा रहा है। यह सेवा अधिकार करने की सुगम सुझाव को प्रभावित करता है।

मैज (1939) के नेतृत्व और अधिसीजन के सम्बन्धों पर हुए सम्मेलनों की समीक्षा के बाद ऐसा कि सर्वोच्च अधिकारियों में 30% अधिकारियों के नेतृत्व तथा अधिसीजन में अनात्मक सम्बन्धों के अभाव में है। यह प्रकार सेवा की व्यक्तिगत विशेषताओं में अधिसीजन की योग्यता अत्यन्त है, जबकि अधिसीजन की विशेषता सेवा का एक अधिसीजन करता है।

एक अध्ययन में एनीटोन के विद्यार्थियों में एक पुरुष, एक महिला (1984) ने 50 बर्तनों पर एक बार वृत्ति परीक्षण कायम किया जो अपने अनुसंधान (1984) के अनुसार यह युक्ति से और केवल 50 बार यह ने जो व दो छात्र-समूह और नहीं अन्य समूहों में कभी ऐसा रहे थे। अन्य छात्रों में दोष समूह प्रवेश (1984) ने। इस प्रक्रिया में दोषकारीयों ने दो विद्यार्थी मिल समूहों कायम केवल तथा और ऐसा (Elected leaders and Non leaders), इस प्रकार के विद्यार्थी दो छात्र हैं विद्यार्थी छोटे-बड़े केवल के रूप में अन्तर्ही पर

में कार्य किया था। जब 12 डिग्रीज समालोचन बोमियों में सम्पन्न हुई परीक्षा की अनुविधानों को समाप्त की गई, तो हमें 11 बॉम्बियों में केवल अधिक समालोचित थे। परिणामों के यह भी बात हुआ कि नेताओं में चार नेताओं (one leader) की अपेक्षा समानुपात रूप कम थे। सोवियतों ने निष्कर्ष प्राप्त किया कि सामाजिक अस्तित्व सीलरुनों के अवसर में नेतृत्व का प्रतिक्रिया निर्वाह अधिक प्रभावशाली होता है, क्योंकि सामाजिक अस्तित्व सीलरुन नेतृत्व सम्पादी करने के विनाशक में बाधक होते हैं।

विभिन्न स्त्री-पौधों ( 1953 a, b ) में भी अपने लक्षणों द्वारा वेगुल तथा समशीतल के बीच व्यवस्थापन सम्बन्धी या व्यवस्थापन किया है। विभिन्न के अनुसार स्त्री लैंग्य अपने दिग्गज में वेगुल का चुके थे, वेगुल न करने वाली के वृद्धावस्था में अधिक प्रचुर समशीतल करने हैं।

बहु पता कि सेवा में अपने समाधीकृत की अति होती है किन्तु इसका आनन्दक तब बहु नहीं है कि तबसे अधिक सम्पूर्ण होती है। (1967) के अनुसार सेवा का अपने सम्पूर्ण का सम्पूर्ण बहुत कुछ नहीं होता।

4. सक्रियता (Activity)—समय तथा स्थान (1940) में देखा कि जो बीम विदेशवासीयता किता में अधिक सक्रिय थे, वे समुद्र द्वारा नेता के रूप में सम्बन्धीकृत किए जाते थे। पीपी द्वारा यह निष्कार सम्बन्धित है कि समुद्र वाले कुछ भी करें-नेता के भावनाशक्ति की माया सम्बन्धित है। हेन, मैन्गार, तथा मूना (1968) ने समुद्र में स्वर-क्रिया (Vocal activity) सम्बन्धी शक्ति की समीक्षा के बाद यह बताया कि समुद्र सबसे उच्च शक्तिशाली वाला व्यक्ति सबसे अधिक सक्रिय होते हैं, और बाद में यह द्वारा नेता बने जाते हैं।

पाठकों की० मासिक तथा तिमाही शुल्कभर ( 1969 ) में अकेल प्रचार के कार्यों में एवं 3 सदस्यों वाले समूहों का गठनकर दिया । की विद्युत समूहों में सम्भवतः आनन्दकुला बालि समूह का, आदर्शिकरण नेता के रूप में हुआ । इस प्रचार के कार्यक्रमों में वे सभी सम्प्रदाय सम्बन्धी अलग-अलग बातें करते हैं की अलग-अलग नेता के सम्बन्ध में होते हैं — समुद्र के विचारक, आदर्शिक नेता, अर्थशास्त्रक व्यक्ति, समुद्र विवेचन में अन्तर्गत, सदस्यों के सह को प्रभावित करना, सुखों के साथ समुदायपूर्ण तथा दूसरों के जीवन को समझ लेते हैं ।

५. **मिश्रासुखता ( Mixed-satisfaction )**—इस तक इस चरण में व्यक्ति आसन्न सामान्य दुःखियों को अनुभव है। व्यक्तिगत जीवों की वह आवश्यकताएँ नहीं होतीं जिनसे वे सामान्य व्यक्ति से अधिक सुखवान और प्रभुत्ववाली तथा कम स्वासुखिता ( Mis-satisfaction ) होती है। किन्तु इस पर बलवान् आवश्यकता होती है।

कि अन्य व्यक्तियों की तुलना में वेरा, बाल्बी से अधिक विचलित होते हैं। विचलनशीलता में कबोस्वास्तिकीय विहित होती है जो कि इस दृष्टिकोण से संकेत है कि वेरा का समाजीकन अच्छा होता है।

अनेक अध्ययन किये गये हैं कि कार्य लोगों की संवेदा वेरा सांख्यिक दृष्टि से अधिक मुक्त होती है। एक कार्य अध्ययन में बाल्बी के अनुसूचक और अनानुसूचक व्यवहार वाले समूह (Climbers) से उपलब्ध हुआ कि वेरा तथा निम्न क्षमति वाला समूह के सदस्यों के प्रति कम सहानुभूति दिखाते हैं। उनके विपरीत उच्च क्षमति वाले समूह सर्वाधिक सहानुभूति होते हैं (हार्न तथा कोमलानी, 1960)। पीपल एन-सिस्मन (1960) ने भी हार्न के परिणामों की पुष्टि की।

इन परिणामों से यह सात होता है कि वेरा तथा निम्न क्षमति-समूह-दोनों संवेदात्मक समूह समान के मुक्त होते हैं। अर्थात् कम सहानुभूति होते हैं। संभवतः इसका कारण यह है कि वेरा अन्य सदस्यों की तुलना में कम स्वायत्तिकृत (Insecure) होते के कारण, समूह की सेवा में अपनी अत्यन्त विचलनशीलता का अधिक प्रयोग करते हैं, जबकि निम्न क्षमति वाले इस योग्यता में मुक्त होते हैं। समूह के उच्च क्षमती उच्च विचलनशील विचारों को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि समूह के अन्य सदस्य उन्हें किसी प्रकार के निम्न का अनुभव नहीं करते जबकि निम्न क्षमति वाले वे वादी विचलित व्यवहार के प्रकाशन की कम विधियों की वादी सेवा नहीं का उदाहरण प्रयोग नहीं करना चाहते। समूह की एकता एवं असमता के प्रति समूह के सदस्यों के वेरा कहीं अधिक चिन्तित होते हैं। छोटे समूहों के एक अध्ययन में सांख्यिक के अध्ययन से निहित हुआ कि वे कार्य की तुलना में समूह के प्रति अधिक सहानुभूति प्रकट करते हैं तथा समूह समान की चाहते का प्रकाश अधिक करते हैं (बीक सिंघाव, 1963)। वेरा, संभवतः समूह का एकता और संघर्ष को बनाए रखने तथा सहानुभूति विचार एवं व्यवहार को अधिकतम से अधिक समुचित बनाए रखते हैं। वे समूह की एकता और असमता के बारे में कोई समझौता नहीं करते। इस तरह के लिए वे कबोस्वास्तिकीय व्यवहार के अपने का प्रकाश करते हैं।

6. सामाजिक दूरी (Social Distance)—सिंघाव वेरा समूह की एकता, असमता और संघर्ष की कबोस्वास्ति रकते हैं, किन्तु इसका कार्य यह नहीं है कि वे समूह के सदस्यों के साथ निकटता एवं दूरिकता के प्रकाश करते हैं। अनेक अध्ययनों से सात हुआ कि उच्चतम प्रभावशीलता और प्रभावशून्य वेरा करते तथा अपने समूह के सदस्यों के बीच सामाजिक तथा कबोस्वास्ति दूरी किसी न किसी मात्रा में बनाए रखते हैं। कार्य समूहों में विशेषकर यह देखा जाता है।



सं. १०-११ ( 1958 ) ने अनेक प्रकार के कारों वस्तुओं की आलोचना-प्रस्ताव के सम्बन्ध में हार्ड रोड वाइड वाय में बसों तथा अनेक दो-तीनों, चारों दोड़ों, वायु सेवा वगैरहों, पब्लिक के टिके वाइडों, अनेक प्रकार की वस्तुओं की आलोचना की। उन्होंने परिवारों के विचारों के अनुसार कि विभिन्न प्रकार की कारों के सुपरवाइजर्स तथा अन्य वस्तुओं के बीच अनेक-प्रकार की दूरी प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष प्रस्ताव रखी है। उनके अनुसार एक प्रकार का सम्पूर्ण परिवार वायु की अनेक वस्तुओं के रूप में है, जिसके कारण यह अपने वाइडों (विशेषज्ञों) के प्रति अधिक-प्रकार के विकास के रूप में है और अधिक-प्रकार अनुसंधान और अधिक-प्रकार की दृष्टिकोण रखते हैं। उनके यह भी स्पष्ट किया कि यह विचारों केवल कारों वस्तुओं में ही वायु होते हैं। अन्य वायुवायु दूरी, वस्तु की वस्तुता का अधिक-प्रकार करने में अपने वायु में अनेक है, अनेक वस्तु के अन्य वस्तुता द्वारा वेग की वस्तुता आकार है इसके कारण वस्तुओं में अन्य वायु में अनेक-प्रकार की वस्तुता की वस्तुता की वस्तुता है अनेक के वस्तुता वेग द्वारा अनुसंधान वायु करने के विकास की वस्तुता करने के अधिक-प्रकार होते हैं। किन्तु वस्तुता कारों के वस्तुता विकास के प्रति वस्तुता यह होते हैं।

## पेताओं में संरचना यह वस्तुता कन्सीडरेशन

( Structure Imitation versus Consideration in London )

पेताओं के बीच वस्तुता वस्तुताओं के बीच का सम्बन्ध करते हैं कि सुपर-वाइजर का अधिक, विभिन्न, सुपरवाइजर तथा अनुसंधान सम्बन्धी कारों की वस्तुता वाइड वस्तुता तथा प्रस्ताव यह स्पष्ट होता है कि यह वस्तुता की वस्तुता-वस्तुता के बीच वस्तुता की है। इसी प्रकार वस्तुता सम्बन्धी के बीच में वस्तुता विभिन्नों के बीच वस्तुता करते हुए यह है कि अधिक, वस्तुता, अनुसंधान ( Consideration ) और अधिक-प्रकार प्रकार के पेता वस्तुता वस्तुता वाइड अधिक-प्रकार प्रस्ताव करते हैं। वायु के दृष्टिकोण में यह वस्तुता 1920 के 1939 के बीच वस्तुता वस्तुता वस्तुता वस्तुता में हुए वस्तुता के किया है ( वस्तुता, 1963; वस्तुता-वस्तुता तथा वस्तुता, 1939 )।

वायुताओं के अनुसंधान पेता में वस्तुता 19 वस्तुता होते हैं।

- 1—वस्तुता ( Assistance )
- 2—वस्तुता वस्तुता ( Physical Struggle )
- 3—वस्तुता ( High Mobility )
- 4—वस्तुता ( Taxis )
- 5—वस्तुता वस्तुता ( Street Aggressive Carriage )

- 6—सम पर दृढ़ ( Tenacity )
- 7—दृष्टि-साम्यता ( Face to Face Address )
- 8—संयम ( Restraint )
- 9—दृढ़ता ( Insuperability )
- 10—ऊर्जा की परिपुष्टि ( Reinforcement of Energy )
- 11—कार्यक्षेत्र का क्षेत्र ( Expansiveness in Field of Action )
- 12—उच्च बुद्धि ( High Intelligence )
- 13—साधक समझ ( Understanding )
- 14—आधुनिक उत्तेजना से प्रति-सुक्ष्म  
( Keenly Susceptible to Social Stimulation )
- 15—सहज ( Taciturn )
- 16—उत्साह ( Zeal )
- 17—सामाजिक कार्य में संलग्नता ( Social Participation )
- 18—चरित्र ( Character )
- 19—उत्पीरण ( Drive )

एही पत्र-पत्र की श्रेणी के अनुसार वे 31 लक्षणों तथा हीन के 10 गुणों की शर्तों की हैं। इन सभी लक्षणों के कुछ निम्नोक्त-कारण-कारण-सुझावों की हैं।

### हान्बोर्न (Hansbörn) अध्ययन

इस अध्ययन में तीन गुण लिये गये हैं :

(1) कार्य के विषय में कर्मियों की व्यक्तिगत मान्यता के लिए आवश्यक और प्रेरणा (2) कर्मियों के मन में व्यक्तिगत सम्बन्धों और काम की शर्तों के विषय में निरीक्षण; और, (3) कार्य-आवृत्ति, व्यक्तिगत सम्बन्धों, तथा बीच-बहिसारों के कार्य के उत्पादन का सम्बन्ध।

किस के मत हुआ कि जब लोगों के मान्यता, सम्बन्धों के विचार और शक्ति के विषय में कर्मियों की कार्य की प्रति-व्यक्तिगत और कर्मियों की सामाजिक प्रति-व्यक्ति में पूर्ण अंतर था। उत्पादन के लिए केवल-केवल का यह मान्यता था कि कर्मियों का सामाजिक और व्यक्तिगत का मत ऐसी केवल अनुकूलता की व्यवस्था की कि केवल में बुद्धि उत्पादन क्षति पर निर्भर थी। कर्मियों के मन पर प्रभावित हो गई कि सामान्य कार्य-विषय का कार्य-निष्पत्ति होना चाहिए और उत्पादन को पूरी के अनुसार हीनता पर दिया। उसके समस्त व्यक्ति की उत्पादन की अवस्था-अनुकूलता और सामाजिक व्यक्ति-प्रभावित-प्रभाव में और कर्मियों के कार्य-प्रति-व्यक्ति के संरक्षण के केवल-केवल (व्यवस्था) के समस्त-संरक्षण-उत्पत्ति पर दी थी।

अन्य संस्थानों के प्रबंधकों की तरह, कृषिों के संस्थानों के प्रबंधकों का भी विचार था कि कच्ची पर निर्भरता के द्वारा वे कर्मियों के व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं। किंतु कर्मियों ने इस विचारधारा का प्रभाव न लेकर प्रबंधकों की दृष्टि से सीधे तुरन्त ( कच्ची सम्बन्धता ) को महत्व दिया।

भौतिक तुरन्तकार की सामौलिक महत्व हीनता का प्रतीक रहे अर्थोन्नीय में कार्यरत महिलाओं की छोटी-छोटी चीजों पर हुए अनेक प्रत्यक्षानुभव प्रयोगों के द्वारा भी हुआ। इनके व्यवहार के निरीक्षण की जाड़े बाद कर्मों की अवधि में इस कच्ची की कार्य प्रणाली में अनेक प्रकार के हस्तान्तरण बिने बने हैं। प्रयोगिकता के परिणाम बतित करने वाले हैं : जाड़े कार्य प्रणाली को सुलभ करने हेतु विचार सम्बन्धनों की संख्या और अवधि में वृद्धि की गई या नहीं, उत्पादन में वृद्धि आई। इसी प्रकार विचार सम्बन्धनों की आवृत्ति की और प्रत्यक्ष कार्य प्रणाली को अनुभव करने का कोई सुवधा उपकरण पर नहीं बना था। जब महिलाओं से इनके अन्य उत्पादन के कार्यों के बारे में पूछा गया तो वे अन्य कुछ शब्दों में बताने लीं। वे कहती थीं कि वे अधिक उत्पादनशील हैं, अवधि किसी प्रकार निर्धारित कार्य परिधिस्थितियों की प्रणाली में सामौलिक परिधिस्थितियों में अधिक उत्पादन सुलभ था। प्रयोगिकताओं के अनुसार प्रयोग कर्मों में कार्य करने में उन्हें मजा आता था तथा तुरन्तकारों की अनुभवस्थिति में कार्य करना अधिक प्रभाव था।

कुछ अन्य विचारों की उत्पादन वृद्धि में सीधे कार्य करती हुई प्रतीत होती है। एक बात की यह भी कि किसी परिधिस्थित के पहले प्रयोग तुरन्तकार, कर्मियों से निर्यात करते हैं। इनके प्रतिरिक्त एक अन्य ऐसा कारण यह था कि कर्मियों की कार्य अवधि में प्रत्यक्ष हीनता प्रतीत करने पर एक नहीं की थी कि निर्धारित कार्यस्थिति में होती है। उन्हें प्रतिरिक्त की दर से परिधिस्थित प्रिया जाता था जाड़े तबला उत्पादन कुछ भी ही। सीधेकारों के निर्यात इनके महत्वपूर्ण बात यह थी कि महिलाओं ( प्रयोगिकता ) की भावना था कि वे महत्वपूर्ण प्रयोग में काम ले रही हैं। इनके सामौलिक कार्य में उनकी रति बढ़ा दी। उनकी और स्पष्ट प्रिया प्रणाली और हम जानते हैं कि प्रयोग की सम्बन्धता एक प्रत्यक्ष सीधेकार प्रतीति है। प्रयोग की कार्यस्थिति की दृष्टि और उनकी रचित या प्रयोग की सामौलिक परिधिस्थितियों में नहीं प्रिया जाता था। इस प्रकार सामौलिक परिधिस्थित महिला कर्मियों ( प्रयोगिकता ) की सामौलिक और प्रयोगिकताओं की दृष्टि के कारण अधिक सीधेकार थी।

### अन्तर्राष्ट्रीय हार्बेस्टर सम्मेलन

एक संरक्षण मिलने अपने तुरन्तकारों के प्रतिरिक्त प्रीति में "सामौलिक सम्बन्धों" का प्रयोग किया यह प्रयोगिकता हार्बेस्टर सम्मेलन थी। प्रयोगिकता



बाल बाले बाले असाधन-योगियों ने संरचना-बहुक (Structural limitation) में सम्यक संकल्प (Consideration) में न्यून संकल्प कायम किए। इनके विपरीत ज्ञान बालों में बाले योगियों ने संरचना-बहुक में न्यून संकल्प (Consideration) में सम्यक संकल्प की वस्तुनिष्ठ अभिव्यक्ति की तथा ज्ञान बाल-बहुक-बालों के बालों बाले विद्या विनयेक बालों की विद्या ज्ञान बालों की। असाधन के बहुक बालों के ज्ञान योगियों की योगिता की की (Consideration) में सम्यक (Structural limitation) में न्यून की। (Structural limitation) में सम्यक योगियों के बहुक बालों के बहुक-बालों बालों की और उनके द्वारा विद्याओं की बालों बाले बालों की।

संविधानकर्तव्यों में निम्नलिखित बातें विद्यमान हैं। माननीय मानवसं-परिचालन का एक अंग एक बहुत बड़ा काम करता होता है। यह अधिकारकर्तव्यों के सुव्यवस्थापन के साथ कार्य करते हैं। श्री मानव सम्बन्धों की अनेकता अन्तर्गत की विद्या अधिकार करते हैं, इसलिये किसी संघटना में अधिकारकर्तव्यों में मानवसं-परिचालन विचार ( Top ) के नीचे के अंग-अंग होता चाहिये। अतः एक साथ निम्नलिखित बातें या कि अनेकता की बहुत ही बातें हैं, अन्तर्गत की अन्तर्गतता देते हैं। अनेकता की अनेकता का बहुत ही बातें हैं। मानवीय और ( 1946-47 ) में अन्तर्गत द्वारा नीचे अधिकारों का कार्य कर यह निम्नलिखित विद्या कि यह सुव्यवस्थापन की अन्तर्गतता द्वारा ( Goodwill ) के रूप में अन्तर्गत करते हैं, अन्तर्गत बहुत ही अन्तर्गत की अन्तर्गतता और यह अन्तर्गत में अन्तर्गत है। इन द्वारा और के ( Goodwill ) और ( Goodwill ) के अन्तर्गत की अन्तर्गत की।

**सबसे कम पसंद करण्यों के प्रति नेता की अभिरूचि**

**(Leaders' Attitudes toward their "Lost Preferred Churches")**

बीजस्तर के नीचे से कहलस कि जलिक विपुल ससुह के मेरा लपल जलके बाकिनी के नीचे निरी जलप के सामाजिक दुरी पारी जाली है । ससुह परिचयन इस विचार की बल देता है कि जलजलन ससुह की कुशल बालेकीकता के लिए बालेपना ससुह है (सामाजिक इतिहासिक) बालेपन है । ससुह की लालेपना जलन करने में बाले-कीकतिक वा सामाजिक दुरी एक जलन कारण है और जलजलन बाले में ऐसे बाले-पन ( मेरा ) की बाले जलिक बलन बाले हैं जो बालेपन में ससुह के जलन बाले बाले में पारी ससुह ससुह है ।

मौजदार ( 1965 ) ने मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मानव की बानी जिंदा की ओर मुड़ने बताया । उसने इस क्षेत्र की जानकारी को संश्लिष्ट-सोच बानी का संकेत दिया (अ) ।

प्रारम्भिकरण का साथ, और ( ५ ) सभी कम उमर वृद्धियों के प्रति सेवा की अनुसूच कायदा की भाषा द्वारा : सामान्य और पर बहु सेवा को ( Consideration ) अनुसूच होते हैं वे सभी सबसे कम उमर वृद्धियों के प्रति अनुसूच प्राप्त करते हैं, और इस प्रकार सामाजिक और सबसे कम उमर वृद्धियों में सेवा निवृत्त का प्रारम्भिकरण नहीं करते : दूसरी और संरचना-वृद्ध की और अनुसूच सेवा के सभी कम उमर वृद्धियों के प्रति आवश्यक सामान्य होती है :

पीटर ने कोई बात-चीत विभिन्न संकलन-समुहों के निर्माण का आशय दिया और सेवा कि किन सेवाओं का मूल उमर वृद्धियों का ( Least Preferred Consideration, LFC ) सामाजिक मूल होता है, सामान्यतः अधिक प्रभावीतरण होते हैं : अपने मूल की बात दिया कि अनुसूच के समूहों के साथ सेवा के समूहों को साथ में उमर की आवश्यक है : उनके प्रतिष्ठित इन समूहों में साथ वाले की अनुसूच हैं—सर्व के प्रतिष्ठित होते की भाषा का कार्य में विविधता की भाषा, और सेवा की प्रति की भाषा प्रति : पीटर ने इन बीच समूहों की भी विभिन्न व्यवस्थाओं में विचार दिया जिसका संशोधन करते सेवा की प्राप्त सुविधाओं की भाषा के अनुसार दिया : सेवा और अनुसूच में सभी समूहों की सभी अनुसूच प्रतिष्ठित मानकर, उस समूह की सामाजिक प्रतिष्ठित समूहों की गई : उस समूह की उमर भाषा में प्रतिष्ठित की : उसकी समूहों की संभावना का बीच उस समय ही समूहों है उस समूह की- बीच की- और उमर होता है : की सेवा समूह की- बीच में मूल होते हैं समूहों की अधिक विविधता करते हैं प्रतिष्ठित होते हैं और संरचना-वृद्ध की और अनुसूच होते हैं, वे अधिकतम कार्य प्रतिष्ठितियों में अधिक प्रभावीतरण होते हैं : दूसरी और समूह की- बीच में उमर सेवा की प्रतिष्ठित-सर्व और अनुसूचियों ( Participants ) होते हैं, केवल की समूहों में ही प्रभावी-तरण होते हैं—उस सेवा-समूह सामान्य सभी हैं, कार्य-संरचना मूल हो, और सेवा की प्रति सुविधा हो, और उमर मूल कम सेवा की प्रतिष्ठित करण, कार्य संरचना उमर, और सेवा की प्रतिष्ठित उमर होती है : उस सेवा-समूह अनुसूच करण कार्य संरचना मूल, सेवा सेवा की प्रतिष्ठित उमर होती है तो सेवा के मूल की की और अनुसूच प्रभावीतरणों के समूह मूल समूहों होता है : कार्य-प्रारंभ तथा मूल ( 1970 ) ने पीटर मूल की संभावना की और कहा कि उनके अपने सामान्य प्रारंभ सर्व समूहों के परिवारों के पीटर के परिवारों की प्रति नहीं हो रही :

पीटर ( 1971 a ) ने इन संभावनाओं का समूह दिया : इन प्रतिष्ठित की प्रति सेवा इन समूहों का विविधता तथा उमर समूहों और बीच समूहों के ( 1970 ) प्रारंभ के समूहों में) पीटर के अनुसार इन समूहों प्रारंभों

में दोन बरसअर के परिचालन प्रण के अधिकारकन के काफी समान रहे । एही प्रकार प्रयोगशाला अध्ययनों के भी उनके पूर्व परिणामों की काफी पुष्टि हुई । पीटरसन तथा अन्य ( 1970 ) द्वारा उनके परिणामों की पुष्टि की बरसअर समान रहे प्रयोगशाला अध्ययनों का अनुवर्ती है जिससे वेदाओं का हस्ताक्षरक पूर्व बन में उनके हस्ताक्षरक के समान नहीं था । प्रयोगशाला अध्ययन में एक अधिकृत संख्या यह है कि प्रयोगशालाओं की मेला की पुष्टि के प्रयोगों का समय वास्तविक रीति से करना चाहिए, क्योंकि स्वभाविक वेदाओं या परिचालनियों में निरूपण या पुष्टि के पूर्व मेला में कुछ अधिकृत विवेचना हो सकती है ।

पीटरसन यह मानता है कि उसके प्रण ( Model ) के पीछे निहित प्रण में की परिणामों का अर्थ होनी है, उनके बीच की आधुनिक समानताओं में समान नहीं हुई । प्रयोगशाला के निरूपणों में इन विवेचनाओं का अर्थवाचक अधिक प्रतीत होता है की अधिक और अनुष्ठ के साथ के विवेचन नहीं जारी है ।

अन्य ( Model ) तथा दोन अध्ययनों के अधिकृत अनुष्ठानों पर पुष्टिवाच करने के साथ हीवा कि के अनुष्ठानक है—यून एन पी की प्रतीक वाले मेला के अनुष्ठानक अध्ययनशालाक होती है । इन की प्रतीक प्रण अनुष्ठान तथा अनुष्ठान विचार ( 1985 ) के एक विशेष विधि द्वारा की । उन्होंने प्रयोगशाला के अर्थवाचक के साथ की की कीवृत्तियों की विवेचन का का वेदुल ऐसे साथ वेदाओं ने किया की एन पी की के अनुष्ठान के साथ साथ में समान है । उन्हें दो नहीं में अर्थवाचक-पूर्व में विचारपूर्व अनुष्ठान की स्थानांतरण का । ऐसी अनुष्ठान की वर समानताओं उन्हें दो नहीं की । दोनों के विचारक के आधार पर दोनों के अध्ययनों की वेदुल अर्थवाचक विवेचन के आधारों कार्य ( समानता ) अधिकृत की वर में विचारक—कॉलेज 90 मिनट का समय विचारक वर का की अन्य समानताओं के विवेचन समय के 15 मिनट कम का । साथ एक कार्य के आधार पर ही दोनों के अधिकृत अर्थवाचक निरूपण के । यून एन पी की वेदाओं वाले अनुष्ठानों के अनुष्ठान ( Routine ) कार्य के दौरान वेदुल अर्थवाचक विचारक अनुष्ठान अधिकृतक आधार पर कार्यक नहीं था । अधिकृतपूर्व कार्य की वर में अर्थवाचक, यून एन पी की वेदाओं के वर में कार्यक था ।

अनुष्ठान तथा विचारक के अधिकृत दोनों के कार्य की बीच वरनों के विवेचन किया । अन्य तथा यून एन पी की वेदाओं में अनुष्ठान अधिकृत अध्ययन में अर्थवाचक विवेचन विचारक एन पी की (LPC) वेदा में अन्य एन पी की वेदा की प्रतीक-अनुष्ठानों की अधिक विचारक विवेचन विचारक तथा अधिकृत अध्ययन विवेचन वरतीन किया । कुछ ही और अन्य एन पी की वेदा, -अधिकृत अध्ययन में अर्थवाचक का





[illegible][illegible]

प्रतिपक्ष समस्तजनक परिस्थितियों में सेवा के कार्य की संरक्षित करने तथा वास्तविकी के कार्य के निर्वहन की सीधता समुद्र सम्पत्ति का सबसे महत्वपूर्ण कारण है, किन्तु संरक्षित तथा नवीकरण के विषय होने के सेवा के प्रकारों के परिचय प्राप्त हो सकते हैं। श्रीराम तथा मुक्ति ( 1963 ) ने सेवा के एक प्रकारों, को-20 का उपयोग के माध्यम, विमान सेवाओं के प्रकारों तथा कार्यवाहक विमानों समुद्र का उपयोग, बुद्धि तथा समुद्र विमानों के सम्पत्ति के निर्माण हेतु बिना उद्धर्ति संरक्ष समुद्रों में सेवा की बुद्धि तथा समुद्र विमानों में समस्त महत्वपूर्ण बात बिना। सेवा एक प्रकारों के समुद्र में भी सीधता की तथा में संरक्ष— समुद्र के सभी प्रकारों तथा विमानों में समस्त महत्वपूर्ण बात हुआ।

गणित एम. केमरी ( 1963 ) ने विभिन्न संस्कृतियों में एक ही चर मापन किया जिसमें सांख्यिक-सांख्यिक परीक्षणों में निम्नलिखित बिंदु पर ध्यान देना चाहिए। जहाँ-जहाँ संभव हो, उसकी परीक्षणता के अनुसार, अधिकतम के प्रतिफल एक ही ही पैरामीटरों की अपेक्षा किया एक ही ही पैरामीटर ( Consideration ) का परीक्षण देते। एक ही पैरामीटर परीक्षणों द्वारा हुआ। एक बार जब किया एक ही ही पैरामीटर ( Consideration ) की सांख्यिकता का अनुभव कर लेते, तथा इसे अपरिचित संस्कृति में लागू करने की विधि सीख लेते पर अधिकतम के एक ही ही पैरामीटर की अपेक्षा अधिकतम होती है। एक सांख्यिक परीक्षण यह बात हुआ कि सांख्यिकीयों द्वारा पैरामीटरों की सांख्यिकता का परीक्षण करने के लिए या—सांख्यिक-सांख्यिक ( Consideration ); जब कि पैरामीटर एक ही ही पैरामीटरों की एक में संयुक्त करी है और दो प्रकार के पैरामीटर का नहीं बल्कि दो विभिन्नताओं के एक ही प्रकार का पैरामीटर करी है।

विशेष के रूप में हम यह कहते हैं कि एक पैरामीटरों की सांख्यिकता पैरामीटर ( Bales, 1963 ) द्वारा विभिन्न के पैरामीटरों—सांख्यिक-सांख्यिकता और सांख्यिक-सांख्यिकता के अनुसार है। अनुभव की सांख्यिकता के लिए दो ही ही प्रकार के पैरामीटरों का अनुभव है। अनुभव का के सांख्यिकता अनुभव में ही ही के किसी एक सांख्यिकता के प्रतिफल होने की संभावना होती है : (अ) सांख्यिकता पैरामीटरों की सांख्यिकता द्वारा अनुभव की सांख्यिक-सांख्यिकता का अनुभवताओं की प्रति; या (ब) सांख्यिकता पैरामीटर ( Auxiliary ) जिसे पैरामीटर के सांख्यिक-विशेषता कहा है। जो अनुभव की सांख्यिकता-सांख्यिकता का अनुभवताओं की प्रति में अनुभव होता है।

## समूह-मनोबल ( Group Morale )

अनेक समूह विभिन्न होते हैं और समाज हो जाते हैं, किन्तु कुछ समूह अपने अस्तित्व की दृढ़ता रखते हैं । विभिन्न समूहों का मनोबल उच्च होता है उनका अस्तित्व बना रहने की संभावना अधिक होती है । समूह-मनोबल समूह की एक प्रमुख विशेषता है । समूह-मनोबल का अस्तित्व समूह में एकता, समन्वय, सहयोग तथा स्वाधिन्य के है । समूह-मनोबल तथा नेता में सीसी-बामन का सम्बन्ध है । मनोबल का उच्च या निम्न होना बहुत कुछ नेता पर भी निर्भर करता है । इस प्रकार समूह-मनोबल समूह की एक प्रमुख विशेषता है । यह समूह की एकता, दृढ़विश्वास, संकल्प, साहसवीकरण आदि के लिये बलि मान्यता है । समूह के कार्यों के स्तर के दृढ़ता अविव्यक्त सम्पन्न है । जब समूह मनोबल ऊँचा होता है तो समूह के कार्यों का स्तर ऊँचा होता है । मनोबल केवल छोटे समूहों की ही नहीं जातिवर्ग, देशी, राष्ट्रीय के चेतन और उद्योग में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है । विशेषकर युद्ध की विपत्ति में देश के नागरिकों का मनोबल भी बड़ा महत्वपूर्ण होता है । मनोबल का उच्च या निम्न होना विजय या पराजय का प्रमुख निर्धारक है । किसी देश की सामाजिक-आर्थिक प्रगति भी बहुत हद तक नागरिकों के मनोबल का परिणाम होती है ।

### समूह मनोबल की परिभाषाएँ

समूह मनोबल की परिभाषित करता एक जटिल कार्य है । अनेक मनोवैज्ञानिकों ने मनोबल का अर्थ समूह में सहयोग की भावना, एकता एवं सम्बन्धता के लिये है ।

डी० एम्, वासनेर के अनुसार, "राष्ट्रीय मनोबल सामूहिक प्रयत्न में एक अवस्थित मनोवृत्ति है ।" (National morale is an individual attitude in a group endeavor.) अर्थात् यदि प्रत्येक नागरिक में अव्यक्ति के प्रति अनुकूल वृत्ति विकसित है और उसका परस्पर उपयोग किया जाता है तो ऐसे राष्ट्र/समूह का मनोबल उच्च होने की संभावना होती है ।

एडविनर तथा पार्सेन्स (La Pierre & Parsons, 1949) के अनुसार, "किसी समूह के लिये सदस्यों की भावना का स्तर ही 'मनोबल' है ।" ईश और

अपनील ( Krash & Crutchfield, 1938 ) ने कहा है, "मनोवैज्ञानिकों के कार्य करने के लक्ष्य, एकता एवं संयोजन तथा समुदाय-भावना की नींव रखित करना है।" ("Morale refers to the level of group functioning, the unity and solidarity of the group, the esprit de corps.")

आर्नेस्ट तथा क्राश ( Ernest & Kral, 1972 ) के अनुसार, 'मनोवैज्ञानिक, समुदाय, उसके सदस्यों, तथा नेतृत्व के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति है।' ("Morale is a status which generally denotes a positive attitude to a group its aims and leadership.")

अबर्नूथ परिभाषाएँ समुदाय मनोवैज्ञान के विभिन्न पक्षों की नींव रखित करती हैं। निम्नलिखित समुदाय मनोवैज्ञान की प्रकृति एवं कार्य पर प्रकाश डालता है।

1. मनोवैज्ञान में समुदाय की एकता, संयोजन, कार्य-लक्ष्य एवं सामूहिकता प्रकृति का बीज होता है।
2. समुदाय-मनोवैज्ञान समुदाय के प्रति सदस्यों की प्रकृति है।
3. एक ही समुदाय लक्ष्य के प्रति के प्रति सदस्यों के समर्थन की भावना अभिव्यक्त होती है।
4. यह समुदाय नेतृत्व के प्रति सदस्यों की सकारात्मक अभिवृत्ति का सूचक है।
5. मनोवैज्ञान समुदाय के कार्य करने के लक्ष्य का बीजक है।
6. यह समुदाय के प्रति सदस्यों की भावना और सम्मान का प्रतीक है।

### उच्च मनोवैज्ञान के आधार

( Criteria of High Morale )

समुदाय के कार्य तथा संयोजना के अनुसार समुदाय मनोवैज्ञान का संकलन होता है। होय तथा अपनील ( Krash & Crutchfield ) के अनुसार समुदाय मनोवैज्ञान के कुछ आधार एवं प्रकार हैं—

1. काम से काम समुदाय ( Team Spirit )—समुदाय के मनोवैज्ञान का जन्म होता है जब वह बहुत कुछ निर्भर करता है कि समुदाय में समुदाय मिलता है। जब आपसी सहयोग समुदाय में मूल होते हैं तो समुदाय मनोवैज्ञान के जन्म होने की सम्भावना अधिक होती है। जब समुदाय में विचारधारा प्रतियोगिता (Disparities spirit) मूल होते हैं तो मनोवैज्ञान के जन्म होने की आशा की जाती है। किन्तु जब आपसी समुदाय, संयोजन अधिक होता है तो मनोवैज्ञान के मूल होने की संभावना होती है। किसी भी समुदाय में समुदाय, आन्तरिक समुदाय, संयोजन और सदस्यों की बीच-बीच, इनमें एकता और संयोजन के अभाव का सूचक है।

2. आन्तरिक संयोजन की प्रकृति ( Tendency of internal coordination )—जब समुदाय के सदस्यों में आन्तरिक समुदाय-भावना मूलभूत

होती है तो उसमें वास्तविक संरक्षण की वृद्धि अधिक होती है और उसका स्वीकार उभर होता है। विष्णु का समुद्र में वास्तविक सम्प्राप्ति का अर्थ उभार और संरक्षण भगवान् गुरु होती है तो उसमें संरक्षण का लचीलापन है अर्थात् होता है और उसका स्वीकार लचीले अनुमान में गुरु होता है। इस प्रकार यह स्वीकार का एक वास्तविक आधार है।

3. **सदस्यों में पारस्परिक समुदाय (Tale Amalgamations)**—  
कमीशन के सम्बन्धों की इस कमीटी ने एक सर्वेक्षण के एक-दुसरे (J. L. Mithal, 1934) में प्रकाश डाला था : प्रत्येक राज्य में सदस्यों के एक-दुसरे के प्रति प्रभाव उत्पन्न चाहें हैं। किसी समूह के सदस्यों के बीच अपनी प्रत्येक विजया अधिक होती, समूह में सदस्यों की आवश्यकता उत्पन्न हो अधिक होना और प्रभावपूर्ण उस समूह का कमीशन की प्रस्ताव होना होता। अब समूह में पारस्परिक आवश्यकता कम होना तो कमीशन की प्रस्ताव होना होता : विजयों के प्रभाव कार्य की सभी प्रती हैं।

[illegible][illegible]

लक्षों और आनन्दमयताओं के आकार पर ही अपने मन और कर्तृत्व निर्धारित करते हैं। ऐसा न होने की स्थिति में मनोविकास खूब होता है।

6. समूह लक्ष्यों के प्रति केवृत्त की विशेषताएँ—(Positive attitude towards group objectives and leadership)—समूह के सदस्यों और लक्ष्यों की प्रति में अपने-अपने की स्वतन्त्र रूप से धारणाएँ होती रहती हैं। इसके लिए आवश्यक है कि सदस्यों की अपने समूह तथा नेता में सम्बन्ध और विश्वास हो, प्रति भाव और अज्ञातापे की सम्बन्ध हो। ऐसा होने पर समूह मनोविकास अपने सम्बन्ध विभव की वजह से। जब नेता के प्रति सदस्यों की अधिकतम विशेषताएँ होती हैं तो मनोविकास के मूल होने की सम्भावना होती है।

7. समूह के प्रतिभाव की वजह से लक्ष्य की इच्छा (Desires to realise the group)—जब किसी समूह के सदस्यों में समूह के प्रतिभाव की वजह से लक्ष्य की इच्छा होती है तो लक्ष्य मनोविकास होता होता है। यह सभी सम्बन्ध सम्बन्ध है जब सदस्यों में समूह लक्ष्य और समूह-लक्ष्यों के प्रति आकार और सम्मान का भाव होता है।

इन स्थिति लक्ष्यों के अधिकतम समूह मनोविकास का सम्बन्ध होता निम्न बातों पर भी निर्भर करता है—

1. समूह के सदस्यों में जीवन लक्ष्य का सम्बन्ध होता।
2. समूह में सम्बन्ध का सम्बन्ध होता।
3. समूह की सम्बन्धता में आकार एवं विश्वास का होता।
4. सदस्यों में सम्बन्धता और सम्बन्धता की अनुभूति।
5. सदस्यों में सामाजिक लक्ष्य का सम्बन्ध तथा प्रति भाव का होता।

### निम्न मनोविकास की विशेषताएँ

(Characteristics of Low Motile).

समूह मनोविकास की एक लक्ष्य लक्ष्य नहीं है, सभी-सभी निम्न की ही जाता है। जैसे ही की विशेषताएँ सम्बन्ध मनोविकास के प्रति सम्बन्ध है उसका सम्बन्ध या लक्ष्य अनुभूति मनोविकास की विराती है। फिर भी मनोविकास के निम्न होने की कुछ विशेषताएँ हैं। निम्ने विशेषताएँ समूह हैं—

1. लक्ष्य तथा प्रतिभाव (Indifference to objectives)—जब समूह के सदस्यों एवं लक्ष्यों के लक्ष्य में सदस्यों की लक्ष्य तथा प्रतिभाव सम्बन्ध होता जाता है तो समूह मनोविकास निम्नलक्ष्य होता जाता है क्योंकि लक्ष्य प्रतिभाव बाती है। यदि समूह के प्रति सम्बन्ध हो किन्तु नेता में प्रतिभाव तथा लक्ष्यों सम्बन्ध के लक्ष्य में लक्ष्य होने पर भी समूह मनोविकास निम्नलक्ष्य होता जाता है।

3. **विनाशकारी आलोचना (Destructive criticism)**—जब हमें छोटी बालिका की बच्चु की संरचना बतायी है किन्तु वेता के प्रति बालिका की अवधारणा विनाशकारी होकर, अपनी विनाशकारी आलोचना के रूप में अभिव्यक्त होती है। ऐसी स्थिति में बच्चु बर्बोज में विनाश का भाव प्रभावकारी है।

3. **बच्चु बच्चु का किसी अन्य बालक बच्चु के प्रति खड़ा**—जब बनी बच्चु के बालिका की अवस्था बद जाती है या किसी अन्य बच्चु के प्रति अधिक बढ़ जाती है तो ऐसी स्थिति में बर्बोज में विनाश की संभावना बढ़ जाती है। बच्चु बच्चु के बच्चुबुद्धि का किसी अन्य बच्चु के विकास में बृद्धि बर्बोज को दिख करती है।

4. **उत्साह का अभाव (Lack of enthusiasm)**—जब बच्चु के बालिका में बच्चु बाली, बर्बोजी दृष्टि बर्बोजी के प्रति प्रति दृष्टि उत्साह में बनी जाती है तो भी बर्बोज में बच्चु की संभावना बढ़ जाती है।

5. **अस्थिर प्रवास तथा प्रति में बनी की बच्चु बर्बोज को दिखाती है।**

6. **आकर्षण**—जब बच्चु के बालक प्रचार की छोटी बालिका को बनी जाती है तो वह मुख्यतः बच्चु बर्बोज को दिखाती है। बच्चु में प्रचारों बर्बोज को बच्चु प्रभावित करती है।

7. **बर्बोज प्रचारों, दृष्टि, वेता के प्रति प्रचारों की बच्चु बर्बोज को दिख करती बनी है।**

8. **बोर्ड बोर्ड आलोचना**—जब किसी बच्चु में बोर्ड बोर्ड आलोचना की प्रवृत्ति बढ़ जाती है तो बच्चु का बर्बोज बृद्धि हो जाता है और बच्चु बर्बोज का स्तर दिखता है।

### बच्चु बर्बोज के निर्धारक (Determinants of BJB)

मार्शल डेवर (Marshall Dwyer) ने टीम थिरी (Team theory) की अवधारणा पर बच्चु बर्बोज दिया है। यदि बच्चु बर्बोज (Team theory) विचारण होती है तो बर्बोज बनी रहता है, बर्बोज बनी विचारण की अवधारणा होती है। बच्चु बर्बोज के निर्धारकों को चार वर्गों में विभक्त किया जाता है।

1. **बर्बोजीय निर्धारक (Psychological Determinants)**
2. **सामाजिक निर्धारक (Social Determinants)**
3. **आर्थिक निर्धारक (Economic Determinants)**
4. **भौतिक निर्धारक (Physical Determinants)**

### 3. मनोवैज्ञानिक निर्धारक ( Psychological Determinant )—

(i) आनुवंशिक लक्षण ( Predisposing quality )—जब समुह के सदस्यों के लक्षण अलग-अलग होते हैं तो उनका मनोवैयक्तिक जीवन होता है। लक्षण एक समान प्रभावित होते हैं जब के समान प्रभावित होते हैं, यद्यपि जब सदस्यों में उनके प्रति अलग-अलग प्रभावित होता है। सामान्य लक्षण समुह में सामान्य प्रतिक्रिया के कारण होता है। उसे एकता और समन्वय कहती है। ऐसी लक्षण में समुह मनोवैयक्तिक रूप से एकता है। जब किसी समुह के लक्षण अलग, विभिन्न एवं अलग-अलग नहीं होते तो उनका व्यवहार सामान्य हो जाता है। किन्तु जब लक्षण अलग-अलग होते हैं तो समुह के सदस्यों की अलग-अलग समुह के साथ आसक्ति हो जाती है। ऐसी स्थिति में मनोवैयक्तिक रूप से एकता है।

(ii) लक्षण प्रतिक्रिया की विवेका ( Consciousness for group consciousness )—सदस्यों के लक्षण प्रतिक्रिया की विवेका की समुह के मनोवैयक्तिक का मनोवैयक्तिक निर्धारक है। जब समुह के लक्षण प्रतिक्रिया प्रभावित होते हैं कि समुह के सदस्य एकता हो रहे हैं, तो इसके प्रतिक्रिया प्रभावित है कि समुह मनोवैयक्तिक की एकता है।

(iii) आनुवंशिकताओं की अनुपस्थिति ( Absence of heredity )—सामान्य प्रतिक्रिया प्रतिक्रिया आनुवंशिकताओं की अनुपस्थिति कहलाता है। लक्षण के साथ समुह में सदस्यों की आनुवंशिकताओं की अनुपस्थिति होने के समुह मनोवैयक्तिक रूप से एकता है।

(iv) नेता की अनुपस्थिति ( Absence of leader )—नेता में अनुपस्थिति किसी व्यक्ति कहती है उसके समुह का मनोवैयक्तिक प्रभाव हो जाता है। अनुपस्थिति नेता लक्षण-लक्षण पर सदस्यों की प्रतिक्रिया करता है, उन्हें प्रभावित और प्रेरित करता है तो समुह की अलग-अलग का समाधान होता है। जिसके प्रभाव लक्षण मनोवैयक्तिक प्रभाव होता है।

(v) आत्म और स्वार्थ के कारणों ( Motives of egoism and selfishness )—जब समुह के सदस्यों के लक्षण अलग-अलग होते हैं कि आत्म और स्वार्थ के कारणों है तो मनोवैयक्तिक प्रभाव होने की संभावना होती है। लेकिन जब समुह के सदस्य लक्षण प्रभावित करते हैं कि उन्हें आत्म आत्म करना लक्षण होता है और अन्य सामाजिक हो रहे हैं पर आत्म नहीं कर रहे हैं तो मनोवैयक्तिक प्रभाव होने की संभावना होती है।

(vi) आनुवंशिक लक्षण प्रतिक्रिया प्रभाव ( Lack of aspiration and consciousness )—समुह के सदस्यों के लक्षणों और प्रतिक्रिया प्रभावों के अलग-अलग होने पर मनोवैयक्तिक के प्रभाव होने की संभावना होती है। लक्षण प्रभाव जब लक्षण में प्रभाव है जब समुह लक्षण प्रभाव होने की संभावना मनोवैयक्तिक प्रभाव है।

(vii) समय परिप्रेक्ष्य ( Time perspective )—जब समुह के लक्षण



अतीत तथा वर्तमान की घटनाओं के संभव होते हैं और यह भी जानते हैं कि भविष्य में क्या होने सकता है। उस यह माना जाता है कि उन्हें बहुत बड़ा है और वह बहुत से संभव और संभाव के संभव होते हैं। ऐसा होने पर भविष्य ज्ञान होता है।

(१०६) **समन्वितता और सुसंयम की भावना (Feeling of harmonization and solidarity)**—बच्चों के सामाजिकरण होने पर बच्चों के प्रति समन्वितता आई जाती है उस प्रकार समुदाय-अन्तर्गत की आत्मीय उपस्थिति बान्धे है। इस भावना के कारण सामाजिक स्तर पर बच्चों के कल्याण का अनुभव करते हैं और सुसंयम की भावना पैदा होती है। ऐसी दशा में समीक्षा उभरा होता है।

(10) **लेटा (Leta)**—लेटा एक बहुत बड़ी मछली है जो समुद्र में पाया जाता है। यह मछली बहुत बड़ी होती है। यह लेटा मछली के एक बड़े भाग को लेता है जो कि बहुत बड़ा होता है। यह लेटा मछली के एक बड़े भाग को लेता है जो कि बहुत बड़ा होता है।

### 3. सामाजिक निर्धारक (Social Determinants) :—

[illegible]

देखी की विधि यह सच ही होती है कि समुद्र में सामाजिक मानकों के प्रति अनुपस्थिति का अभाव होता है। सामाजिक सुविधा, पशुपत आदि की समुद्र समीक्षा की विधि है। कभी-कभी समीक्षा का अभाव, सामाजिक समुद्र और सति की समीक्षा सच समीक्षा में अभाव प्रतिस्पर्धी की समुद्र समीक्षा की विधि है।

3. **अर्थिक नियंत्रण (Economic Control)**—

किसी समूह की वार्षिक स्थिति की समूह समीक्षा का निर्धारण होता है। समूह में सम्मेलन, मुद्रास्थिति, रोज़गार के वार्षिक अवसर, व्यवस्था का समूह होता वार्षिक की दृष्टि से समूह समीक्षा सम्पन्न होता है। किन्तु यह समूह/समूह के

बनीसी, आर्थिक अभाव, रोजगार के अभाव में बनी, कारण इस लिंग होनी है जो बनी की सामाजिक आर्थिक-आर्थिक की बहुत बुरा बनी है और ऐसे समूह का सामाजिक नियम होता है : यह समूह के सदस्यों को बंद कर छोड़ने की आज्ञा होती है जो ऐसे सामाजिक समूह के संरक्षण, सुरक्षा आदि के कोई कारण नहीं रखते, बल्कि बनीयता का निर्यात सामाजिक है ।

#### 4. भौतिक निर्धारक (Physical Determination),—

इस के दृष्ट में समूह एवं बनीयता बहुत कुछ भौतिक कारणों की अवस्था पर भी निर्भर करता है । यह किसी समूह के सदस्यों के निर्धारण में व्यक्तिगतता में भौतिक कारण अवस्था होते हैं जो एक व्यक्तिगतता के कारण समूह बनीयता उत्पन्न होता है । यह किसी समूह में भौतिक कारण उत्पन्न होते हैं या उनका सर्वथा अभाव होता है जो बनीयता में निर्धारक अवस्थाएँ हैं ।

### समूह मनोव्यवस्था के कारण की विधियाँ

( Methods of Investigating Group Motives )

समूह मनोव्यवस्था के कारण में समाज मनोव्यवस्था के नियमों का अनुवर्तन बनी है वे निम्नलिखित हैं :—

1. आकाशकार विधि ( The Interview Method )—यह विधि इसके माध्यम से प्राप्त है, इसमें आकाशकार द्वारा व्यक्तिगतता के मनोव्यवस्था का कारण दिया जाता है । इसके अनुसार किसी तरह पर लोगों के बीच बने समूह की सुरक्षा, अभावता आकाशकार कारण, समूह के सदस्यों तथा नेता के प्रति व्यक्तिगतता का कारण दिया जाता है । आकाशकार व्यक्तिगतता अभाव अवस्थाएँ होती हैं । अवस्थाएँ आकाशकार में बनी के पूर्व निर्धारित व इसके के कारण व्यक्तिगतता बनीयता होती है ।

आकाशकारकर्ता यह पढ़ते ही व्यक्तिगतता कर देता है कि समूह का कारण दिया गया है ? यदि समूह होता है तो बनी सदस्यों का आकाशकार करते हैं । इसे समूहों में अभाव आकाशकार कारण उत्पन्न नहीं होता बल्कि सामाजिक दृष्टि के व्यक्तिगतता ( Interview ) का ही आकाशकार होता है ।

यह एक व्यक्तिगतता विधि है, किन्तु इसके द्वारा व्यक्तिगतता कारण में दिया व्यक्तिगतता बनी है :—

(2) यह एक व्यक्तिगतता ( Interview ) विधि बनीयता बनी है । व्यक्तिगतता बनी व्यक्तिगतता व्यक्तिगतता की विधि बनीयता व्यक्तिगतता के कारण देते हैं बनीयता बनी व्यक्तिगतता के कारण के कारण बनीयता बनी देते हैं । यदि व्यक्तिगतता में कुछ ऐसे सदस्यों को तथा बाद की समूह छोड़ चुके हैं जो के व्यक्तिगतता बनीयता बनी देते हैं ।

(ii) साक्षात्कारकर्ता के मन के पक्षपात तथा पूर्वाग्रह परिणामों को दूरित करने हैं ।

(iii) कुछ सर्वसम्मत परिधिबद्धि की कमीयता या कुछ निजी कारणों से सम्पादित के कारण नहीं उत्पन्न नहीं हो पाते ।

2. समाजमिति विधि (Socialisation method)—मोरोनी (Morony, 1943) द्वारा आधिकृत यह विधि छात्रों की चरित्र, भावनाएं आदि के समुद्र संरचना का बोध प्राप्त करने हैं । इसके माध्यम एक निश्चित प्रकार के विश्व संरचना (Socialisation) कहा जाता है । यह अनेक द्वारा समुद्र संरचना का सामाजिक आधार होता है । इसके समुद्र में पूर्ण (Complete); सामाजिक पूर्ण (Socialisation), निरन्तर (Incessant), एकत्री/विभिन्न (Unilateral) तथा बहुपक्षीय जैसी विशेषता का परिचय प्राप्त होता है ।

इसमें निम्न कठिनाइयाँ होती हैं :—

( i ) इससे सर्वोच्च का समग्र दृष्टि नहीं प्राप्त केवल उन्नी समय ही प्राप्त है । जब समुद्र छात्रों की संख्या बहुत कम होती है । समुद्र भाषाएं तथा होने पर निश्चित निष्कर्ष की प्राप्ति दुर्लभ होती है ।

( ii ) समुद्र सर्वोच्च के कुछ कारणों जैसे आलोचनात्मक, उपस्थित चरित्र तथा कई सामाजिक ( High Socialisation) का नहीं प्राप्त संभव नहीं होता ।

3. प्रश्नात्माजी विधि ( Question-answer method )—प्रश्नात्माजी विधि की समुद्र सर्वोच्च के माध्यम में प्रयुक्त होती है । समुद्र में प्रश्न, उत्तर, प्रश्न, प्रश्न, प्रश्नों की एक दूसरे के प्रति अभिवृत्तियाँ तथा वे आत्मा दृष्टि विचारों यदि का माध्यम प्रश्नात्माजी द्वारा किया जाता है । प्रश्नात्माजी में छोटे-छोटे प्रश्नों या प्रश्नों की सूची का विशेष किया जाता है जिसका बोध क्षमता के मन में उत्तर होते हैं । छात्रों के आलोचनात्मक विवेचन के समग्र सर्वोच्च के विचार में किसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं । यह एक माध्यम चरित्र, भावना और व्यापक विधि है । इसमें कम समय तथा कम कार्य में अधिक प्रयोग का माध्यम होता है किन्तु इसमें निम्नांकित दोष पाए जाते हैं :—

( i ) अनेक प्रश्न करने नहीं किया जा सके छात्रों को किया केने तथा मन-चरित्र नहीं उत्पन्न होते हैं ।

( ii ) अधिष्ठित प्रश्नों के सर्वोच्च का माध्यम इसके द्वारा कठिन है ।

4. अभिवृत्ति मापकी ( Attitude scale )—अभिवृत्ति मापकी की समुद्र सर्वोच्च के माध्यम में प्रयुक्त होती है । समुद्र के छात्रों की एक दूसरे के प्रति अभिवृत्ति, तथा तथा समुद्र समय के प्रति अभिवृत्ति के माध्यम द्वारा सर्वोच्च का माध्यम किया जाता है । यह सर्वोच्च के निम्न अनेक मापकी—आदर्श विधि, निष्कर्ष

मापनी, गट्मैन विधि आदि प्रयुक्त होती है। इन विधियों में से किसी के आधार पर मापनी निर्मित की जाती है तथा मनोबल का मापन होता है। नेता के प्रति, समूह लक्ष्य या समूह में विश्वास के प्रति घनात्मक अभिवृत्ति उच्च मनोबल का तथा निवेशात्मक अभिवृत्ति निम्न मनोबल का सूचक होती है।

अभिवृत्ति मापनी द्वारा मनोबल मापन में निम्न कठिनाइयाँ आती हैं :-

( i ) सदस्यों द्वारा वास्तविक अभिवृत्तियों की अभिव्यक्ति न कर के सामाजिक रूप से वांछित अभिवृत्ति के प्रकाशन की प्रवृत्ति होती है जो परिणामों को वृद्धि कर देती है।

( ii ) यदि सदस्यों में मुद्रित प्रश्नों को पढ़ने और समझने की क्षमता भ्रूण होती है तो सही मापन का प्रश्न ही नहीं होता।

उपर्युक्त विधियों के अतिरिक्त समाज मनोवैज्ञानिक कुछ अन्य विधियों—विर्णय विधि, स्व सूचना विधि, सहभागी प्रेक्षण तथा अंशी विधि का उपयोग भी आवश्यकता होने पर करते हैं किन्तु प्रयत्नावली तथा समाजविवृति विधियाँ अन्य की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय हैं।

# सांसारिक व्यवहार के नियम ( Laws of Social Behaviour )

एक सांसारिक प्राणी होने के नाते अनुस्यू विन्-विन् परिस्थितियों में विन्-विन् प्रकार के सांसारिक व्यवहार और सांसारिक क्रियाएँ करता है। कभी वह दूसरों के सुझाव के अनुसार व्यवहार करता है तो कभी दूसरों के व्यवहार की नक़्क़त करता है और कभी दूसरों की भावनाओं से प्रभावित होकर व्यवहार करता है। इन सांसारिक व्यवहारों की कभी उद्धार समझने और जानने के लिये हमारा मनो-वैज्ञानिकों तथा समाजशास्त्रियों के व्यवहार के कुछ नियमों का प्रतिपादन किया है। वह सभी नियम सांसारिक व्यवहार पर निर्भर करते हैं। मैकगुल ( Mc Dougall, 1919 ) के इनमें तीन नियमों पर ध्यान दें :—

1. सुझाव ( Suggestion )
2. अनुकरण ( Imitation )
3. सहानुभूति ( Sympathy )

## सुझाव

( Suggestion )

अर्थ :—संशुद्ध अथवा सुझाव की व्यवहार का प्रमुख नियम समझा जाता है। इसे हमारा वैज्ञानिकों के व्यापक महत्त्व दिया है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कोई व्यक्ति अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों की किसी विषय में अपना विचार और मत देता है और अनेक करता है कि वह इसे किया उसके-विशेष स्वीकार कर लेता। वैज्ञानिक बर्ने के कहते हैं कि प्रत्येक कार्य निश्चित समय के के करना चाहिए। शिक्षण छात्रों को मन लगाकर पढ़ने, यह कार्य करने चाहिए विषय-समूहका देते हैं। समाज मनोवैज्ञानिकों के सुझाव के अर्थ को स्पष्ट करने के लक्ष्य के इसकी अनेक परिभाषाएँ व्यापक की हैं जिनमें से प्रमुख परिभाषाएँ खोजी-प्रतिष्ठित हैं :—

विशेष मैकगुल ( Mc Dougall, 1909 ) ने कहा है, "संशुद्ध सम्बन्ध की ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति के लिये दो या दो से अधिक उपर्युक्त तार्किक आधार के बिना अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा विचार के साथ बातचीत होती है।" ( "Suggestion is the process of communication resulting in the acceptance with conviction of communicated propositions in the absence of logically adequate grounds for its acceptance." )



3. सुझाव की प्रक्रिया सुझाव ग्रहण करने वाले व्यक्ति की कार्यप्रणाली एवं उन्हें की प्रतिक्रिया को समझने पर ध्यान दे।

3. सुझाव प्रक्रिया में सुझाव बहुत कम सर्तों किन्ना चलाने, जैसे, संका तथा प्राप्तीकरण किन्ना अन्य सर्तों की प्राप्ती की सर्तों पर सर्तों प्रतीक्षण कर लेना है ।

4. गुरुत्वाकर्षण में प्रतिक्रिया—जैसे पानी, मिट्टी आदि का आसवन बहुत होता है।  
 वायुमंडल: बहुत प्रयोग प्रयोगात्मक होता है।

3. सुझाव, बहुधा किसी समस्या, किसी व्यक्ति के साथ या विचारों के सम्बन्ध होता है।

**संयुक्तमनीषिता ( Sympatheticity )**—पुत्राच की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि व्यापक और उपायम भूित होने के लिये की इसे स्वीकृति प्राप्त होती है । व्यक्ति की मुद्राच की स्वीकार करता है उसमें वजन देकर है की पहले प्रति प्रतिरोध किए बिना मान लेता है । उपायित व्यक्ति प्रथम मान का अंश देकर है साथ ही वह समय विशेष पर प्रत्यापि विशेष, प्रत्यक्ष मानविक विवरण, प्रत्यक्ष एवं एवं नहीं करती बरत बिना व्यापकता एवं स्वीकार कर लेता है । यह वह समय उन मुद्राच की प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष का विशेषण करने में सम्भव होता है ।

इस प्रकार दुःखों की शक्ति के पीछे नहीं हो। व्यक्ति की संतुलनशीलता है।  
 अतः संतुलनशीलता का अधिकार संतुलन वास्तविकता की एक अवस्था है।  
 कारण संतुलन वास्तविकता को नहीं समझने के बिना ही जाना है। संतुलन  
 की अवस्था को नहीं समझने के बिना ही संतुलनशीलता की भी अवस्था नहीं  
 है। इस अवस्था में ही वास्तविकता के ज्ञान प्राप्त है कि वह बुद्धि, बल, वास्तविकता,  
 अविच्छिन्न, निरुद्धि आदि अवस्थाओं में बुद्धिमान, बल, वास्तविकता, निरुद्धि, तथा  
 वास्तविकता को नहीं समझने के बिना ही संतुलन वास्तविकता की वास्तविकता नहीं है।  
 वास्तविकता की अवस्थाओं में ही संतुलन वास्तविकता को नहीं समझने के बिना ही

संयुक्तसंघीयता सत्यापन विभागों के सिद्ध प्रमाण द्वारा एकीकृत संयुक्तों की संख्या में वृद्धि करने संयुक्तों की संख्या में भाग दिया जाता है। अधिकतर भाग वाले के सिद्ध उद्योग १५० के गुणक वाली है। सत्यापन गुण निम्न है—

$$\text{समूहकमीलता सूचिका} = \frac{\text{समीक्षित समूहकमीलता का औसत}}{\text{एक एक समूहकमीलता का औसत}} \times 100$$

### संयुक्त के विभिन्न रूप

### Program of Organization

कक्षा-सहायिका तथा परीक्षक-सहायकों के संयोजन के विभिन्न स्तरों का उचित विभा-  
 ६. जिनमें प्रत्येक स्तर निम्न है :-

1. **प्रत्यक्ष सुझावन (Direct Suggestion)**—ये सुझावन दो प्रकार

जाना सुझाव सत्यकारी के समस्त संशुचन के उद्देश्यों को समस्त रूप में भक्ष कर देता है और संशुचन व्यवहार करने का विवेक एवं बहुधापक्ष करता है। व्यवहार के विवेक विज्ञान के लिये यह बहु संशुचन है कि किसे एवं और क्यों के पूर्व सुझा देता है वेनवा सम्भवेता, जो बहु प्रत्यक्ष रूप के योग्य कारी कर करने का सुझाव देता है। उसका उद्देश्य पूर्ण नहीं होता।

2. **आत्मसंशुचन (Indirect Suggestion)**—इस प्रकार के संशुचन में सुझाव देने वाला अपने सामाजिक वर्गों को सत्यकारीओं समवा लक्ष्य व्यक्ति के समस्त सुझाव या सत्य रूप में आत्म नहीं करता। वह संशुचन के पूर्व दूसरी सुझाविका बनाता है जवना सुविधा संशुचन है। व्यवहार के लिये वह कोई सम्भव बहु करता है कि “किन्हीं विचारों के सीधे का रास नवा लक्ष्य” को वह सीधे लक्ष्य सहज करीबने का आसह न करने सीधे और सामान्य बुद्धि की सामवासी और प्रवृत्तियों को उपकारता है। इसके बीच आत्मसंशुचन की प्रवृत्ति की समस्त होती है। इसका सामाजिक उद्देश्य किन्हीं की सुझा और सामाजिक बनाता नहीं प्रवृत्ति करने समस्त की किन्हीं की सुझाव है। वह संशुचन समस्त है।

3. **विरोधात्मक संशुचन (Positive Suggestion)**—यह ऐसा संशुचन है जिसमें प्रवृत्ति भाति किन्हीं मत या विचार की सामान्य में समस्त सामकर जब व्यक्ति को भी उसे स्वीकार करने का प्रवृत्ति देता है, जन्म प्रवृत्तिगत करना है—जैसे एक व्यक्ति ने सुझा सुझा कर प्रवृत्ति है सुझा कर किसे और कर वह कर प्रवृत्तियों की भी सुझा में सुझा प्रवृत्ति करने की प्रवृत्ति देता है। समस्त: वह सु- हो- सार्- का प्रवृत्ति नहीं है किन्हीं की प्रवृत्ति देता है क्योंकि वह सुझा में सुझा प्रवृत्ति की नहीं सामवा है। वह संशुचन विरोधात्मक संशुचन कहा जाता है।

4. **आत्मसंशुचन (Indirect Suggestion)**—इस प्रकार के संशुचन में किन्हीं सामाजी, कार्य या विचार के आत्मसंशुचन बहुधापक्ष की प्रवृत्ति करने के समस्त किसे प्रवृत्ति है व्यवहार के लिये किसे, सम्भव, प्रवृत्ति, प्रवृत्ति की प्रवृत्तियों की प्रवृत्ति करना एक प्रकार का आत्मसंशुचन सुझाव है कि इनका प्रवृत्ति नहीं करना प्रवृत्ति।

## सुझाव का वर्गीकरण

(Classification of Suggestion)

1. **विचार-वृत्ति सुझाव (Ideational Suggestion)**—जैसे इसके नाम से प्रवृत्ति है—इसमें विचार तथा किन्हीं में समस्त: समस्त नहीं है समस्त विचार की प्रवृत्ति के सामान्य किन्हीं प्रवृत्ति की प्रवृत्ति है। यह प्रवृत्ति प्रवृत्ति-प्रवृत्ति या प्रवृत्ति के लिये कोई प्रवृत्ति नहीं होता। सामान्य: ऐसे सुझाव में प्रवृत्ति सुझाव की प्रवृत्ति का में स्वीकार करता है और उसे प्रवृत्तिगत भी करता है।



आन्दोलन के लिए कोई व्यक्ति कुल देखे-देखते छात्रावास विधियों को छोड़ता है कि स्वयं अपने पैर की पंजी के तत्काल समर्थन है।

2. **प्रतिष्ठा सुधार ( Institutional Reorganisation )**—यह सुधार के किसी सामाजिक/प्रतिष्ठान व्यक्ति का सम्बन्ध का हलफ़ दिया जाता है। ही इसे प्रतिष्ठा सुधार कहा जाता है। समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति जैसे राजनीति, समाजसेवा, शिक्षा विद्यार्थी आदि इस किसी विचार/समाज का किसी अन्य समुह के समीप की संतुष्टि करते हैं। ही हीन इस प्रतिष्ठित व्यक्ति की सामाजिक के कारण उसकी गति की बहुत सीमाएं कर लेते हैं। इस विचार में भारतीय समाजशास्त्र ( Sociology and Social Science ) सम्बन्धित है। इस सम्बन्ध में 1484 विद्यार्थी ( कुल कुल के ) कोला के विन्डो को रेखांकित करने सुझाते हैं। यह सुझाया गया कि प्रथम वाला एक सुविधित समाचार में समाज सुधार एक सामाजिक व्यक्ति द्वारा सम्बन्धित किया गया है। प्रतिष्ठा सुधार के कारण 96% प्रयोगों में प्रथम की प्रशंसा और दूसरे वाले को केवल एक सहज समझ विचार दिया। इसके पश्चात् अध्ययनकर्ता ने बताया कि वास्तव में दोनों कोला में कोई अंतर नहीं था। उनके परिचायकत्व 31% प्रयोगों में इसे सम्बन्ध स्वीकार कर दिया, 16% ने इस बात का समझ दिया जबकि 21% ने अनुसन्धित द्वारा समझता नहीं की। समझीय बात यह है कि भारत में ही 4% प्रयोगों में सुझाया दिया था कि दोनों बीच एक ही समझान की संतुष्टि है।

3. **आत्म संशुचन ( Auto Suggestion )**—भारतीय विद्यार्थी ने आत्म संशुचन के बहुत पर बहुत अधिक कर दिया है। उनके अनुसार यह परिणाम निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाता है। इसमें व्यक्ति स्वयं की ही सुझाव देता है, पश्चात् एक ही व्यक्ति सुझाव देता की है और अन्तिम उसका प्रत्यक्षता की है। यह सुझाव व्यक्ति के विचार में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। व्यक्ति का परिणाम उसके विचारों पर निर्भर करता है, और विचार उसके अपने निर्माण में होती है। विचारों में संशुचन व्यक्ति निर्मित होती है। यदि आप स्वयं यह सोचते हैं कि आप बुद्धिमान नहीं हैं, तब परीक्षा में अच्छे सम्बन्ध नहीं का सकते, ही आप वास्तव में परीक्षा में अच्छे नहीं का सकते। सुविधित मनोवैज्ञानिक सुनिधि कोला ( Mental Coala ) में अनेक सामाजिक रोनिर्माण के उपचार में आत्म संशुचन का प्रमुख प्रयोग किया था।

अनेक व्यक्तियों की बीचों-बीच के बात होती है कि उन्होंने सर्वथा सम्भवतः आदर्शों की सामने रखा तथा उन्हें प्राप्त करने का प्रयास किया और विचार परि-विचारों में भी स्वयं को सम्बन्धित किया कि क्या मैं यह कर सकता हूँ। तब आत्म संशुचन का भारतीय, भारतीय व्यक्तियों, तथा व्यक्ति की सम्बन्ध, पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।



कि कम बुद्धि व्यक्तियों में अवैवाक्य कुशल बहुमीश्रता अधिक होती है। इसका अभिप्राय यह है कि बुद्धि की मात्रा और संयुक्तशीलता में विपरीत सम्बन्ध होता है। अर्थात् जो व्यक्ति बिलम्बा बुद्धिमान होता है उसी अनुपात में उसमें संयुक्तशीलता कम होती है। संयुक्तशीलता उसी मात्रा में अधिक होती जिस मात्रा में बुद्धि कम होती। किन्तु एस्टन ब्रुक (Estlin Brooke) तथा अन्य मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों में बुद्धि तथा संयुक्तशीलता में धार्मिक बहुसम्बन्ध नहीं पाया किया। एम्पिय तथा ह्युगोल्स (Empiey & Hugoncharles) ने बौद्धिक योग्यता तथा संयुक्तशीलता में कुछ सम्बन्ध प्राप्त किया है।

2. आयु (Age)—व्यक्ति की आयु की संयुक्त वाङ्मय की निर्धारित करती है। कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार संयुक्तशीलता का बर्त की आयु से बहुत दूर सम्बन्ध है और वास्तविक बर्त की आयु तक यह सम्बन्ध नहीं रहता है। इसके परमाणु इसके बर्त की प्रकृति अभिव्यक्त होती है। इस बुद्धिशील का सम्बन्ध करते हुए एस्टन (Estlin) ने यह अवलोकन करने का प्रयास किया है कि बौद्धिक योग्यता के अनुक्रम वाक्यों में संयुक्तशीलता की मात्रा नहीं होती। अन्य वाले कुछ भी हो यह सामान्य अनुमान है कि व्यक्ति की संयुक्तशीलता उसकी परिणतता और वास्तविक बर्त के विचार के साथ बर्ती है। यह कि व्यक्ति वास्तविक रूप से अव्यक्त होने पर अधिक संयुक्तशील होता है। वास्तविक परिणतता अधिक होना कम संयुक्तशील होने का प्रतीक है। ही विविध समस्याओं का प्रमाण इस विषय में विभिन्न होता है।

3. यौन भेद (Sex Distinction)—कुछ प्रायोगिक अध्ययनों से महिलाओं में दूसरों की तुलना में अधिक संयुक्तशीलता प्रभावित हुई है। किन्तु अन्य अध्ययनों से यह बात क्लृप्त है कि नर-नारी एक ही यौन के दोनों में विपरीत यौन की लैंगिक संयुक्तशीलता अधिक मात्रा में पाई जाती है। यद्यपि यौन भेद संयुक्तशीलता का प्रभावकारी एवं धार्मिक निर्धारक नहीं है। चार्ल्स बर्त (Charles Burt) का मत है कि ही यौन के दोनों में संयुक्तशीलता का सम्बन्ध यौन भेद के कारण नहीं है बिलम्बा बिलम्बा, वास्तविक संरचना तथा वास्तविक वास्तविकों के योग्य की सम्बन्ध-सम्बन्ध विधियों तथा सम्बन्धिता के कारण है।

4. अव्यक्तता (Ignorance)—अज्ञानता संयुक्तशीलता की निर्धारित करने वाला एक अन्य कारक है। जिस विषय में हम अज्ञान होते हैं उसके बारे में दूसरों के कुशल अनुमान दूसरे लक्ष्यकार कर लेते हैं। जबकि दूसरी और जिस विषय पर हम अपने अज्ञान लक्ष्यकार एवं बात रखते हैं उसके बारे में अन्य लोगों के कुशल से अवगत नहीं होते।

5. सम्बन्ध (Temperament)—व्यक्ति की संयुक्तशीलता उसके

समाज में भी प्रभावित होती है। कुछ लोगों का विचार है कि बहिरुक्त व्यक्ति स्वतन्त्रों की आँखों की जगह अधिक संयुक्तशील होते हैं।

6. **समय कारक (Ocular factors)**—अधुनिक के अतिरिक्त कुछ अन्य कारण भी संयुक्तशीलता को प्रभावित करते हैं—जैसे जैसे की दृश्य में व्यक्ति अधिक संयुक्तशील होते हैं। इसी प्रकार आत्मविश्वास का प्रभाव भी संयुक्तशीलता को संभावना को बढ़ाता है। इसी प्रकार बुद्धि, पाठ, प्रकाश, मित्र आदि को इसमें वास्तविक बहिष्कार एवं उत्तरदायी की पड़ावी तथा संयुक्तशीलता की संभावना को बढ़ाती है।

**सुझाव देने वाले के सम्बन्ध कारक—**

1. सुझाव देने वाले की उचितता मित्रता अधिक होती मुक्तता बहुवचन पर प्रभाव प्रभाव बढ़ता ही अधिक होता।

2. विश्वास पूर्ण स्वर (Credibility tone)—भी सुझाव बहुवचनता को प्रभावित करता है। सुझावदाता जिसने विश्वास के साथ सुझाव देता है, सुझाव बढ़ता ही प्रभावशाली होता है।

3. सुझावदाता का अनुभव (experience)—भी संयुक्तशीलता पर प्रभाव डालता है। सुझाव देने वाले का अनुभव अधिक होने पर वह सुझाव इस रूप में देता है कि उसके व्यक्ति उसके प्रभावित होने बिना नहीं रहते।

4. समूह स्थिति (Group situation) भी सुझाव-संयुक्तशीलता का निर्धारक है। समूह का बीच में होने पर व्यक्ति की आत्मोत्प्रेरणा एवं तर्क शक्तियाँ पूर्ण होती जाती हैं और वह अनुसरणीय क्रियाओं समूह के प्रभाव एवं प्रभाव में पड़ता है। बीच में कोई विचार किसी संभाव्य रूप की तरफ़ खींचता है और सभी में तीन सबसे अनुसरण प्रभाव करते दिखाई देते हैं।

**मनोवैज्ञानिक कारक—**

1. पुनरावृत्ति (Repetition)—किसी विचार का वृत्त की निरन्तर पुनरावृत्ति को उसके प्रति लोगों की संयुक्तशीलता को बढ़ाती है क्योंकि पुनरावृत्ति में आत्मसमर्थन का पुनर्निष्ठ होता है। व्यवस्थित के अन्त हुआ है कि सुझाव की पुनरावृत्ति करीब कमर कमसे कम बार निरन्तर करना अधिक होता है अन्यथा लोगों में उत्पन्न होती है और आत्मसमर्थन की निष्ठ निश्चित करना समूह की होती है। अतः यह कहना है कि किसी वृत्त की दो बार पुनरावृत्ति बाद ही वह कम बन पाता है (Repeat a lie hundred times and it becomes a truth)।

2. जनमत (Public opinion)—अधुनिक समाज व्यवस्था की संयुक्त की वृत्ति को प्रभावित करता है। अधुनिक में जनमत, जन दम्भा का सामुहिक दम्भा

का समन्वित होता है वरतः यह संयुक्तजीवता को प्रभावित करता है। जनरन के सुझावों को मानने के लिए व्यक्ति सामूहिक व्यवहार का अनुसरण करते हैं। अतः व्यवहार में व्यवस्था व्यवस्था पर सामाजिक सुझाव अधिक कारगर होता है।

3. संकट ( Crisis )—संकट कालीन परिस्थितियों अस्थिरता के निमित्त, कभी कभी व्यक्तिों को जीवित करती है वतः सुझाव, दुर्योजना, गुट, विवादों को दूर, व्यवहार में आता जीवनी के नियमन यदि दृष्टांतों में व्यक्ति होना और व्यवहार सुलभ होने के कारण अधिक संयुक्तजीवता हो जाता है। अतः, विवाद, विवाद, विवादों के निमित्त को समझने पर उसे संयुक्त जीवित करनी है।

4. संयुक्त संयुक्त ( Favourable Suggestion )—सुझाव कभी-कभी सुझाव बहुतकाली को व्यक्तिगतों, सुझावों और विवादों के अनुसरण होता है तो यह उसे व्यवहार जीवित करता है। ऐसा होने का कारण यह है कि अनुसरण सुझाव व्यक्ति में सामाजिक विरोध, एवं सामाजिक विरोधता को कम नहीं होता। अतः यह उसे जीवित करने में कोई संकोच नहीं करता।

5. सामाजिक ( Socialization )—सामाजिक को एक अनुसरण करता है तो संयुक्त जीवित को प्रभावित करता है। अंतर्गत, सामाजिक एवं सामाजिक का समन्वित सामाजिक संयुक्तजीवता को प्रभावित करते हैं। सुझाव देने के पूर्व उसके लिए सामाजिक सामाजिक होना करना आवश्यक है। यह विचारों का सामाजिक और समन्वित करने में उसे दूर सामाजिक संयुक्त पर करने करना का प्रभावित करता है। यह ऐसा सामाजिक होना करता है कि जीवित व्यवस्था और सामाजिक होना उसके संयुक्त पर विचारों करें। यह जीवित को संयुक्तजीवता को प्रभावित हो सामाजिक होता है।

### सामाजिक जीवन में सुझाव का महत्व

( Importance of Suggestion in Social Life )

सामाजिक जीवन के अनेक क्षेत्र में सुझाव सामाजिक महत्वपूर्ण है। बहुत एवं समाज में व्यवस्था, संयुक्त, सुलभ और व्यक्तिगत व्यवस्था में सुझाव को प्रभावित करता है। सुझाव द्वारा सामाजिक व्यवहार नियंत्रित किए जा सकते हैं। सामाजिक जीवन के अतिरिक्त विद्या, व्यवहार, प्रयोग, निर्माण, व्यवस्था के क्षेत्रों में भी सुझाव आवश्यक महत्वपूर्ण है। सामाजिक जीवन में एकमात्र व्यवस्था अतिरिक्त है। यह व्यक्तिगत के व्यवहार और विचारों को नियंत्रित करने का प्रभावपूर्ण एवं प्रभावित साधन है। व्यक्ति के व्यक्तिगत और सामाजिक दुनों के विचार, सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक व्यवस्था में इसके महत्व के सभी परिचित हैं।

1. व्यवस्था में एकता और एकताका करने में सुझाव का विशेष महत्व है।

समाज में उपस्थित जमाई, ब्राह्मण, कुल, खूब-खूब, क्षात्र-वर्ण, वीरि-विद्या आदि समूहों के व्यवहार में एकता और एकतागत भाव है क्योंकि समाज उनके व्यवहार की अपेक्षा करता है।

2. समाजीकरण की प्रक्रिया में मुख्यतः सम्मान बहुलपूर्ण है। अपने छोटे-छोटे समाज के अंगों, कुलों और जातियों की अपने सामाजिक तथा अन्य परिस्थितियों के बीचों में है। उनका सामाजिक अधिनियम समाज की सामाजिक प्रक्रिया पर निर्भर करता है। समाज में उचित अनुचित, अच्छे-बुरे आदि समस्त बात-सुझाव द्वारा ही होता है।

3. समाज सामाजिक निर्माण में बहुलपूर्ण प्रक्रिया विद्यमान है। अपने का लक्ष्य यह है कि समाज के द्वारा लोगों के सांस्कृतिक व्यवहार की संशोधित की नई परिस्थित और निर्मित की कर सकते हैं। समाज और अनुष्ठ के व्यवहार को निर्धारित करने के उद्देश्यों के समाज सुधारक, अभिहित व्यक्ति, तथा समाज के नेता एवं जाने जाने व्यक्ति विभिन्न समूहों पर व्यवहार-व्यवहार की अपने समाज दिखा सकते हैं।

4. शिक्षा के क्षेत्र में भी समाज सम्मान बहुलपूर्ण है। समाज ही शिक्षा का आधार है जिसके द्वारा शिक्षा की समस्या भी नहीं की जा सकती।

5. व्यापार, वकील आदि में समाज के उपयोग द्वारा प्राप्त प्रकार के प्रकार और विचारधारा किन्हीं हैं।

6. व्यक्तिगत के विकास में सामाजिकता बहुत ही बहुलपूर्ण है। विकास/विचार का व्यक्ति की समाज निर्मित पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

7. विभिन्नता एवं व्यवहार में भी समाज बहुलपूर्ण है। ऐसे ही समाज होने के बिना विभिन्नता के समाजों की संरचना असंभव है।

अतः स्पष्ट है कि समाज हमारे सामाजिक जीवन में बहुत बहुत प्रभाव है। समाज में सम्पूर्णतागत सम्बन्धों की स्थापना में इसका विशेष योगदान है। समाज के विकास और व्यवस्था के विभिन्न संरचना में इसकी प्रक्रिया अद्वितीय है।

### अनुकरण

(Imitation)

यह एक बहुलपूर्ण शब्द है। यह द्वारा समाज करते समय या व्यवहार आता करते समय पर अपने की सेवा ही करते हैं। तो हम कहते हैं कि समाज अनुकरण कर रहा है। जब हमारी के व्यवहार की देखकर कोई व्यक्ति स्वयं सेवा ही व्यवहार करता है तो इसे अनुकरण की सेवा में है। शिक्षा या अन्य कार्य-कृतियों को करते हैं। अपने द्वारा शिक्षा देखकर अपने की सेवा समाज अनुकरण है क्योंकि यह अपने में प्रभाव नहीं है।

समाज मनोवैज्ञानिक अनुकरण की बहुत बड़ा अर्थपूर्ण चीज़ें बताते हैं। वास्तव में यह है कि अनुकरण सामाजिकरण का अत्यन्त महत्वपूर्ण माध्यम है। बहुत कम से अनुकरण की विचार तथा डॉलर्ड (Miller & Dollard, 1941) ने बहुत करने की चीज़ की है। वास्तव में कि इसी माध्यम के व्यवहार का विकास की बहुत की अर्थपूर्ण अनुकरण बहुत करता है। मिलर तथा डॉलर्ड (Miller & Dollard) ने अत्यन्त अनुकरण की अर्थपूर्ण विशेषता (characteristic dependence) का नाम दिया है।

विलियम मैकगुगल (William Mc Dougall, 1909) ने इसके अलावा एक बात की तथा कि एक व्यक्ति को अनुकरण (imitation) की चीज़ में बहुत है। वास्तव में यह है कि यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात है जो व्यक्ति के व्यवहार और विकास की अर्थपूर्ण एवं निर्धारित करती है। मिलर तथा डॉलर्ड (Miller & Dollard, 1941) एवं मर्फी तथा मर्फी (Murphy & m; 1937) तथा अन्य समाजमनोवैज्ञानिकों ने मैकगुगल के विचारों की बड़ी उपयोगता की है।

मैकगुगल (Mc Dougall, 1909) के अनुसार, "एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति के व्यवहार और अर्थपूर्ण अर्थपूर्ण की बहुत मात्र की अनुकरण बहुत करता है। (Imitation is applicable only to the imitation of the behaviour of one individual of the species, the bodily characteristics of another.)" इसी अर्थपूर्ण के कारण बहुत करने किता के बहुत अर्थपूर्ण रूप में करने का अर्थ करता है, बात की तरह इसी प्रकार हुए करने का अर्थ करता है।

मिलर (Linton, 1945) के अनुसार, "अनुकरण का अर्थपूर्ण इसी के अर्थपूर्ण की बहुत है, यह बहुत करने वाले व्यक्ति की बात व्यवहार की बहुत अर्थपूर्ण विशेषता द्वारा या किसी अन्य व्यक्ति के बहुत या अधिक अर्थपूर्ण अर्थपूर्ण में बहुत बात हुई है।" ("Imitation may be defined as the copying of the behaviour of other individuals of whether the imitator has become acquainted with this behaviour through direct observation, through being told about it or its more advance societies through reading about it.")

थोमस (Thomas, 1951) के अनुसार, "अनुकरण एक ऐसी प्रतिक्रिया है जिसके लिए दूसरी की चीज़ की प्रतिक्रिया का अर्थपूर्ण अर्थपूर्ण होता है।" ("Imitation is reaction for which the stimulus is the perception of another's similar reactions.")

सामाजिक परिवर्तनशीलता में अनुकरण के प्रभाव पर प्रकाश डालता है। विशेषी विभिन्न अनुसंधान कार्य प्रकाश देते हैं :—

(i) अनुकरण के लिए किसी प्रतिफल (Model) का होना अनिवार्य है जिसके व्यवहार या क्रियाओं का निरीक्षण कर देखा हो गया या सके।

(ii) यह व्यवहार या अनुक्रिया अनुकरण करने वाले के लिए महत्वपूर्ण होनी चाहिए, अन्यथा वह उसके अनुकरण का प्रभाव नहीं करेगा।

(iii) व्यवहार या क्रियाओं की नकल पैदा करना अथवा प्रेरित करना दोषों में से एक है। पैदा करना अथवा प्रेरित करना वास्तव में वास्तविक या अव्यक्त में नकल करने के है।

### अनुकरण के प्रकार

( Types or Imitations )

अनुकरण तीन प्रकार का होता है। इसके प्रकार विभिन्न मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार परिभाषित होते हैं। एक प्रमुख दृष्टिकोण के अनुसार अनुकरण के तीन प्रकार बताये जाते हैं। यह वर्गीकरण पैदा करने का है।

1. महानुसृतिक अनुकरण ( Imitation by Observation )—जब कोई व्यक्ति अन्य व्यक्ति के प्रति महानुसृति की प्रक्रिया करने के कारण उसके व्यवहार एवं क्रियाओं की नकल करता है तो इसे महानुसृतिक अनुकरण कहा जाता है। कोई व्यक्ति अपनी जी को पीछे देखकर चलता है तो वह महानुसृतिक अनुकरण करता है। इस प्रकार दूसरों की कुछी देखकर स्वयं भी कुछी हो जाते हैं, दूसरों की हँसते देख स्वयं भी हँसते हैं। मेकडूनल के अनुसार एक प्रकार का अनुकरण अनेक पक्षों और परिस्थितियों में भी देखा जाता है—जैसे एक बच्चे को चुँकता देखकर अन्य बच्चे चुँकने लगते हैं। बच्चों में प्रकृत सामाजिक देखी जाती है। एक नृत्य करने की देखकर बहुत से बच्चे एकत्र होकर बीच-बीच घूम लग देते हैं। ऐसा समझा जाता है कि वह नृत्य करने की महानुसृति में अनुकरण की प्रकृति के कारण देखा जाये है।

2. विचार किया अनुकरण ( Ideomotor Imitation )—यह वास्तव सामान्य पर महत्वपूर्ण प्रकार का अनुकरण है। किसी व्यक्ति की क्रिया दूसरों के चरित्रिक में उदात्त जैसे विचार उत्पन्न करती है और वह देखी हो कियाई करने लगता है, तो इसे विचार किया अनुकरण कहा जाता है। सुलज्जभा के मुक्त में राज-विश्वर हीनर जब किसी व्यक्ति के हाथ पर कुछ कुछ के दिखाने करते हैं। मेकडूनल के अनुसार अपने दूसरों की विभिन्न क्रियाओं से सीधे प्रभावित एवं उनकी और सीधे अनुसृत होते हैं जबः एक प्रकार का अनुकरण अपने अधिक देखा जाता है।



3. **व्यवहारिक अनुकरण ( Habitual Instigation )**—इसमें वे इसकी प्रथागत होती है। इसके अनुसार सभी कार्य व्यक्तियों की क्रियाओं और व्यवहार की विधा किसी प्रवीक्षण द्वारा होते हैं। नीचे यह बात कहे हुएकर अपना यह "हैलो" की यह प्रथा है जो यह प्रथा व्यवहारिक अनुकरण होता है। वैक-युक्त के प्रतिष्ठानों से ऐसा अनुकरण प्रथमप्रकारण होता है।

4. **वैयक्तिक या वैयक्त अनुकरण ( Voluntary or casual Instigation )**—इस प्रकार का अनुकरण प्रथमप्रकारण किया जाता है क्योंकि व्यक्ति की प्रथागत की प्रथा होती है कि वह दूसरों के इस-प्रकार व्यवहार आदि का अनुकरण कर रहा है। अनेक विचारों अपने प्रथमप्रकारण किसी क्रियाओं के व्यवहार, इस-प्रकार, प्रचार, प्रवर्तन की प्रथा करते हैं जो वैयक्त होता है। अनुकरण प्रवर्तन व्यक्तियों का अधिकतर अनुकरण इसी प्रकार से होता है।

5. **सांकेतिक या प्रवीक्षणयुक्त अनुकरण ( Rational or purposive Instigation )**—यह कोई व्यक्ति किसी कार्य व्यक्ति के व्यवहारों की प्रथा विशेष प्रवीक्षण, प्रवर्तन या किसी कार्य के प्रचार पर करता है जो यह सांकेतिक अनुकरण कहा जाता है।

## अनुकरण के विधान

### ( Laws of Instigation )

1. **उच्च के विधान का विधान ( High to low )**—अनुकरण सामाजिक व्यवस्था की प्रमुख विधि है। उच्च में प्रभावित, प्रतिष्ठित एवं उच्च वर्ग के लोगों का अनुकरण कम प्रतिष्ठित या प्रभावित विधान वर्ग वाले करते हैं। प्रचार के प्रचार में अनुकरण के इस विधान का प्रभाव किया जाता है। इस प्रकार उच्च के विधान, प्रवर्तन के विधान, प्रचारों के प्रचारों की ओर अनुकरण की प्रथा होती है कारण यह है कि उच्च एवं प्रथम प्रवर्तन व्यक्तियों के प्रभाव प्रवर्तन एवं विधान वर्ग करने की प्रथा करता है यतः अनुकरण इस प्रकार प्रवर्तन होता है।

2. **बाह्य से आन्तरिक ( From external to internal )**—सामाजिक व्यवस्था के व्यवस्था के विधानप्रकारण से प्रभावित होता है कि व्यक्ति व्यवस्थागत एवं बाह्य व्यवहार तथा व्यवस्थाओं का अनुकरण, एवं व्यक्ति बाह्य क्रियाओं का, और प्रवर्तन आन्तरिक क्रियाओं प्रवर्तन प्रवर्तनों, प्रचारों और प्रवर्तनों का अनुकरण करता है।

3. **विचारों से अनुकरणार्थ अधिक प्रचार ( Modes of doing process rather than modes of thinking )**—विचारों में प्रवर्तनप्रकारण अधिक प्रवर्तनप्रकारण होती है। प्रवर्तन अनुकरण किया जाता है कि किसी व्यवहार की प्रथा करने प्रवर्तन



बलरामा जी नहीं जी जा सकती। जल्दबाज़ है कि "हमपुर्व समाज एक सुन्दर अनुकरण है।" (The entire society is the lively imitation.)

[illegible]

एक ही के विद्यार्थी की अनेक समस्याएं होती हैं—

- (13) अनुसरण की सामाजिक मान्यता वैज्ञानिक प्रणाली के अनुसरण नहीं है।  
(14) अनुसरण की सामाजिक प्रणति का आधार मान्यता अतिपर्याप्तिकरण है।  
यह सामाजिक प्रणति का एक निष्कर्षक अवस्था है।

3. **बैंड्युरा का सिद्धान्त ( Bandura's Theory )** बैंड्युरा ( Bandura 1962) ने मस्तिष्क के कर्मों को तीन प्रकार की शक्ति में बाँटा है—(i) अवयव में स्थित शक्ति को आन्तरिक व्यवहार कहे गए पुरस्कार किया गया (ii) आन्तरिक व्यवहार के लिए शक्ति किया गया (iii) मस्तिष्क का व्यवहार अवलोकन या : इसे पुरस्कार या कर्म नहीं किया : इन तीनों शक्तियों के बिना तीन प्रतीकालय कर्मों की व्यवस्था के अतिरिक्त एक चीज निर्दिष्ट कर्मों की वा : शक्ति की के बाद हुआ कि अवयव कर्मों ने मस्तिष्क का कर्मोक्ति अनुकरण किया : अन्तिम यह है कि मस्तिष्क के आन्तरिक व्यवहार की पुरस्कार इसे देना यह इन मस्तिष्क के अनुकरण के अनुसार अतिरिक्त करता है :

4. होल्ट तथा आलपोर्ट का सिद्धान्त (Holt & Allport's Theory) — होल्ट अनुकरण की व्याख्या बहुत एक सिद्धान्त (Reductive-theoretic theory) के अनुसार करते हैं। इनके अनुसार अनुकरण का आधार तंत्रिका तन्त्र (Nervous system) है, जहाँ लोगों के व्यवहार के अनुभव में एक बहुत बड़ी मात्रा प्राप्त होती है। जिसके तंत्रिका तन्त्र में एक बहुत-बिना जारी रहती है। यही बहुत-बिना उस तंत्रिका की पुनरावृत्ति करता है जो अनुकरण का आधार होती है। यह स्पष्ट है कि अनुकरण में बहुत-बिना प्रमुख भूमिका निभाती है। इस बहुत-बिना द्वारा पुनरावृत्ति का एक जारी रहता है जिसके फलस्वरूप उस व्यवहार एक बिना की प्रकृति की जाती है।

द्विष्ट के समान दुष्टिपूर्ण का प्रतिपादन आल्फ्रेड ने भी किया है। वह पूर्व-प्रस्ताव सहज किया ( *Preposition: Socialisation* ) के आधार पर अनुकरण की व्याख्या करते हैं। उनके अनुसार व्यक्ति में सुखों और पीड़ाओं की दृष्टियाँ मात्र में सम्मिश्र द्वारा पूर्व-प्रस्ताव ( *Preposition* ) का जाती है जिसके कारण व्यक्ति केही, सुखी या अनुभव की गई क्रियाओं का अनुकरण सुखसहसुर्जन करता है। यहाँ अनुकरण की प्रक्रिया सहज-क्रियाओं पर आधारित है।

इसद्वारा निवेदना में स्पष्ट है कि अनुकरण सम्भवतः प्रकृत नहीं है। यह अधिग्रह मात्र, समझा नहीं है प्रकृत है। इसका अधिष्ठान व्यक्ति अपने अनुभव और सामाजिक आशयों के समझ में होता है।

### अनुकरण का सामाजिक जीवन में महत्व

( *Importance of Imitation in Social Life* )

सामाजिक जीवन के विविध क्षेत्रों में अनुकरण की प्रक्रिया सम्भव महत्वपूर्ण है। जीवन के गिन क्षेत्रों में अनुकरण का महत्व सामाजिक है।

(i) सामाजिक अधिग्रह ( *Social Learning* )—अधिग्रह और विवेक का सामाजिक अधिग्रह में अनुकरण का विशेष महत्व है क्योंकि के सीखने की प्रक्रिया में अनुकरण का स्थान सर्वप्रथम है। बच्चों में माता-पिता प्यार, सम्मान, भावों आदि वैयक्तिक व्यवहार के सीखने में अनुकरण विशेष महत्व रखता है। सामाजिक अधिग्रह में मौखिक अधिग्रह ( *Verbal Learning* ) का आधार अनुकरण है। इसी प्रकार धूमिका अधिग्रह में भी अनुकरण का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यहाँ की धूमिका प्रथम कारण के कारण होने के बाद अन्य अनुभवों अधिग्रहों की प्रक्रिया के अनुकरण द्वारा सीखी जाती है। इसके अलावा अन्य वह विद्वत्-जीवन की प्रक्रिया सीखी जाती है।

(ii) समाजीकरण ( *Socialization* )—समाजीकरण की प्रक्रिया अनुकरण के बिना सम्भव नहीं है। इसके सर्वप्रथम माता-पिता, परिवारजनों, बड़ोंजिनों तथा अन्य दिग्गजों के द्वारा बच्चे के सामाजिक व्यवहार, सामाजिक अधिकृतियों, धर्मों, आदर्शों, प्रथाओं, परम्पराओं, ऐतिहासिक, काल-काल तथा सामाजिक मामलों आदि का सर्वप्रथम अनुकरण के द्वारा करते हैं जिससे तथा बालक ( 1941 ) तथा अन्य मनोवैज्ञानिकों ने समाजीकरण की प्रक्रिया में अनुकरण की सर्वप्रथम महत्व दिया है।

(iii) भाषा विकास ( *Language Development* )—भाषा के क्षेत्र में भी अनुकरण बहुत महत्वपूर्ण है। पहले मां-बाप, बड़ी-बहूँ की भाषा बच्चे अनुकरण के ही माध्यम से सीखते हैं। बोलने का ढंग, उच्चारण, उदासी पर हँस और चाली ( *Gestures* ) सभी का सीखना अनुकरण का होता है।

(iv) **व्यक्तित्व विकास ( Personality Development )**—बहुकरण, व्यक्तित्व के विकास में बहुत महत्वपूर्ण है । व्यक्तित्व व्यक्तियों—जैसे जर्मनता, बहि-सुखता, आत्मनयता, विद्वानता, भीमता, समृद्धता आदि गुणों का समेक अनुकरण होता होता है । इसके बलवा आदर्शों, विचारों, भावनाओं, आदि का व्यापक संघटन ही व्यक्तित्व है । व्यक्तियों की संवेदा बालकों के व्यक्तित्व विकास में अनुकरण का बहुत बड़ी भूमिका होता है ।

(v) **समाज एवं संस्कृति के व्यक्तित्व की अवधि** पहले में अनुकरण का प्रमुख योगदान होता है । अनुकरण द्वारा ही समाज अपने मानकों, सुखों और श्रेयों की स्थापना करना संभव होता है । समाज एवं संस्कृति का व्यक्तित्व अनुकरण के पहले बना हुआ है और व्यक्तियों की ही इसी संस्कृति की स्थापना की जाती है ।

(vi) **सांसारिक व्यवहार का आधार भी अनुकरण की शक्ति है ।** सांसारिक विषयों, व्यवहार की विविधताओं, आचार-विचार, आदर्शों आदि की प्रति अनु-करण द्वारा सीखता है और इसी के कारण सांसारिक परिस्थितियों में व्यक्तियों के व्यवहार में एकता या सामाजिक समन्वयता पैदा होती है ।

इस प्रकार निःसन्देह समाज के व्यक्तित्व, विकास एवं शक्ति में अनुकरण प्रमुख योगदान देता है ।

## सहानुभूति

(Sympathy)

दैनिक जीवन में बहुत होते वाला एक सामान्य और बहुतदुर्लभ गुण है । इसका आधार प्रति सहानुभूति और सम है । जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों की पीड़ा, उनके दुःख आदि की सहानुभूति करते तब दुःख ही जाता है तो इसे सहानुभूति कहा जाता है । किन्तु यह एक सामान्य गुण नहीं है बल्कि यह समाज मनोवैज्ञानिक समझते हैं । यह इसे और आत्मक शक्ति में अनुकरण करते हैं । अतः जब से सहानुभूति का आदर्श समाज भावना या मान सम्बन्ध में बिना जाता है । समाज भावना के आधार से सब, अपना ही नहीं बल्कि कोश, दुःख, श्रेय, दुःख का अनुभव भी होता है । जिस के पक्ष के प्रति कोश, श्रेय, दुःख का अनुकरण, और जिस के प्रति कोश का संसार होता है । इसका आदर्श यह है कि सहानुभूति व्यक्त कर रहे व्यक्ति में बड़ी संवेदना बड़ी मान सम्बन्धित होता आत्मनय है जो उस व्यक्ति में होता है जिसके जिने हमारे मन में सहानुभूति उत्पन्न होती है । सहानुभूति से सब की चाली नहीं होती । बल्कि तथा व्यवहार का व्यापक है । जब एक व्यक्ति किसी मुसीबत में पड़ जाता है तो बहुत बड़े संसार नहीं एक होकर अपनी सहानुभूति प्रकट करते हैं । इसी प्रकार और एक बीम

पात्रों को जल्द ही कोस करके दूसरे कोस करने लगती जाती थीं और बिछाती हैं। सहानुभूति में अन्तर्गत भावनाओं का अन्तर्गत होता है।

जॉन ड्रेजर ( John Drezer, 1968 ) के अनुसार, "दुखों के भाव और लीनों के प्राकृतिक अभिव्यक्तिपूर्ण निशानों की देखी हुई लीनों के अन्तर्गत भावों और लीनों के अनुभव की अवधि की सहानुभूति कहते हैं।" ( "The tendency to experience the feelings and emotions of others immediately on perceiving the natural expressive signs of these feelings and emotions." )

इवान्स ( Evans 1978 ) के अनुसार, "दुखों के लीनों की अभिव्यक्ति के प्रति सहानुभूति करने की क्षमता की सहानुभूति कहते हैं।" ( Sympathy, is ability to respond to another's expression of emotionality. )

मैकडगल ( Mc Dougall 1908 ) के अनुसार, "साधारण रूप में एक कोस करने वाले को एक क्षणिक के प्रति होता है जिसके प्रति सहानुभूति करने की क्षमता है—। दुखों के दुःख में दुखी होना या किसी क्षणिक करने वाली में एक विशेष क्षणिक का लीन की देखकर अपने में भी वैसी भावना या लीन का अनुभव करना ही सहानुभूति है।" ( "The word sympathy, as popularly used, generally implies a tender feeling regarding the person with whom we are said to sympathize...is in the suffering with the experiencing of any feeling or emotion and likewise an interest in other persons or creatures the expression of that feeling or emotion." )

जॉर्ज एडिन्गहॉर्स्ट सहानुभूति के विषय में निम्न बातों पर जोर देते हैं—

(i) सहानुभूति की तुलना तथा अनुकरण के अन्तर्गत द्वितीय प्रक्रिया है। एक सहानुभूति का भाव होता है और दूसरा सहानुभूति का अनुभव करता है।

(ii) सहानुभूति प्रक्रिया में भावनाओं और लीनों की प्रभावता होती है। किसी एक अवधारणा करने अनुभव नहीं होते।

(iii) सहानुभूति प्रकट करने वाले में कुछ लीन प्रकार के भाव और लीन सम्बन्ध होते हैं जैसे लीन और भाव सहानुभूति प्राप्त करने वाला अभिव्यक्त करता है।

## सहानुभूति के प्रकार

(Types of Sympathy)

1. सक्रिय सहानुभूति ( Active sympathy )—एक प्रकार की सहानुभूति में एक माझी दूसरे माझी के वेदना या पीड़ा की अनुभूति के साथ उसे कम करने के विचार के लक्ष्य होता है, क्योंकि उसे माझी वेदना है, सहानुभूति के विषय

बताता है, जैसे कुत्ते के बाद लकड़ी के तेल बूझ जाता है कि वह घर डार जाने की सदिता है। जो जन्म होता है उसे कुत्ते की जाती ही है।

2. निष्क्रिय सहानुभूति ( *Passive sympathy* )—यह एक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों या व्यक्ति के दुःखों की अनुभूति को करता है किन्तु किसी प्रकार की सक्रियता व्यक्त नहीं करता। वह भावनाओं और अभिप्रायों का मात्र अनुभव करता है। किन्तु सक्रिय रूप से सहानुभूति के साथ की कोई बात नहीं करता।

3. नैतिक सहानुभूति ( *Eth sympathy* )—ऐसी सहानुभूति में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ केवल जवानी क्षणों या निराली सहानुभूति व्यक्त करता है और वास्तव में दूसरे के अभिप्रायों और भावों की अनुभूति उसे नहीं होती।

4. वैयक्तिक सहानुभूति ( *Personal sympathy* )—ऐसी सहानुभूति दूसरे का से व्यक्तिगत स्तर पर होती है, जैसे कुत्ते बिल्ला पर लगे व्यक्ति के प्रति सहानुभूति व्यक्तित्व होती है।

5. सामूहिक सहानुभूति ( *Collective sympathy* )—यह सहानुभूति किसी व्यक्ति विशेष के प्रति न होकर समूह के प्रति होती है जो ऐसे परिदृश्य पर अनुभूति करते हैं। जैसे बुद्ध के पीढ़ियों, ब्राह्मण पीढ़ियों आदि के प्रति सहानुभूति।

## सहानुभूति के निर्धारक

( *Determinants of Sympathy* )

1. पूर्व अनुभव ( *Past experience* )—पूर्व अनुभव सहानुभूति को बहुत प्रभावित करता है। सहानुभूति का व्यवहार अधिक व्यवहार है। इसलिए वह सीखा हुआ होता है। उसके बीच व्यवहार में पूर्व अनुभव महत्वपूर्ण होता है। कोई भी व्यक्ति सभी अनुभवों में सहानुभूति पूर्व व्यवहार करेगा किन्तु उसे विभिन्न विधियों में सीखा है या विभिन्न व्यक्ति उसे ऐसे व्यवहार का विभव अनुभव है।

2. कल्पना शक्ति—कल्पना शक्ति भी सहानुभूति को प्रभावित करती है। किसी व्यक्ति में कल्पना शक्ति जितनी अधिक होती उसमें सहानुभूति का व्यवहार को प्रभावना भी बढ़ती ही अधिक होती।

3. सांकेतिकता ( *Emotional* )—सहानुभूति उत्पन्न होने की संभावना बहुत कुछ सांकेतिकता पर निर्भर करती है। जो व्यक्ति मानवता एवं प्रभावित सांकेतिक होता है उसके प्रति होने या अन्य लोगों के दुःखों से सीधे प्रभावित होने और उसमें सहानुभूति की उत्पत्ति भी संभावना व्यक्त होती है।

4. परिस्थिति का ज्ञान—सहानुभूति के साथ उसी जैसे व्यक्ति व्यक्ति की परिस्थिति के स्वरूप को जानना एवं समझना भी सहानुभूति की उत्पत्ति को प्रभाव-

विश्व कण्ठ है। नीतिनिष्ठियों का पुनः प्राण देने पर सहानुभूति के अभाव या अनुपस्थिति होने की संभावना निर्णय करती है।

## सामाजिक जीवन में सहानुभूति का महत्व

(Importance of Sympathy in Social Life)

सामाजिक जीवन में सहानुभूति सामान्य महत्वपूर्ण होती है। यदि मनुष्यों में एक दूसरे के प्रति सहानुभूति न होती तो क्या सही समाज की कल्पना होती। सहानुभूति लोगों में सामाजिक सम्बन्धों को सुदृढ़ करती है। सभी कारण समाज में एकता, एककलता, संयोजन, एकीकरण, विभक्ता आदि विशेषताएँ देखी जाती हैं।

(i) विभक्ता की समझ—यदि लोग सहानुभूति के साथ से परिचित होते तो समझ या कि विभक्ता साथ की कोई भी समस्या समाज में न होती। किसी के दुखों की अनुभूति उन्हें एक-दूसरे के विश्व साठी है और समझ पूरी करती है, जहाँ विभक्ता की संभावना बढ़ती है। देखी विशेषता—सुख, दुःख, पाद आदि के समान प्रभावित देश की सहानुभूता करने वाले देश से बढ़ती विभक्ता की संभावना होती है।

(ii) सामाजिक एकता एवं संयोजन—सामाजिक एकता एवं संयोजन की स्थापना में भी सहानुभूति की बुनियाद महत्वपूर्ण होती है। मैकडगल (Mac Dougall, 1934) के अनुसार "सहानुभूति यह नीतिविश्व प्रति है जो समाज की एक ध्रुव में संयोजी है, किसी समुदाय के सदस्यों की प्रतिबन्धन करता है। सदस्यों के व्यवहार में एककलता विकसित करती है, एवं सामाजिक जीवन के कुछ बुनियादी कार्यों को भी प्रदान करती है।" सहानुभूति सामान्य जीवन में विकास करती है। सीढ़ी और व्यक्ति के विकास का मार्ग प्रकाश करती है।

(iii) परीयकार की महत्वा—सहानुभूति के परीयकारी कार्यों की सीलाहृत विभक्ता है। सहानुभूति, समाज में अनेक उपयोगी कार्यों का आधार है। सहानुभूति के कारण समाज में अनेक लोग परीयकारी कार्य—जैसे अल्प आय, बूढ़े बूढ़े, विभक्ता विश्व केन्द्र आदि की सहानुभूता करती है। विशेषताएँ—कर्म, बढ़ते, दुःख, अल्प, आर्थिक सम्पन्न के नीतिव्यक्तियों की सहानुभूति दान देते हैं या केन्द्र करती हैं।

एक प्रकार यह कहाँ है कि सामान्य जीवन में सामाजिक, सम्बन्धों, संयुक्त, विभक्ता, परीयकार आदि का आधार सहानुभूति है।



# अध्याय 18

## सामाजिक परिवर्तन

### ( Social Change )

परिवर्तन जीवन समाजों का प्रमुख लक्षण है। हर समाज में हर समय कुछ न कुछ परिवर्तन हुआ करते हैं। परिवर्तन-व्यक्ति का नियम है, उसी कारण संसार की कोई भी चीज स्थायी नहीं है। पूर्णिक संसार की कोई चीज स्थायी नहीं है इसलिए मानव समाज में भी परिवर्तन आता रहता है। सामाजिक परिवर्तन में हमारा सामने सामाजिक संरचना ( social structure ) तथा सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन से है सामाजिक प्रक्रियाओं ( social processes ), सामाजिक मानकों, सामाजिक मूल्यों और सामाजिक प्रक्रियाओं में आए परिवर्तनों से हों सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तनों का बोझ होता है। सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन से जीवनदायक कुछ व्यक्तियों में परिवर्तन से नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज में आए व्यापक परिवर्तनों से है।

इस विषय में एक मान्य तथ्य यह है कि व्यक्ति ही समाज की रक्षा है, अर्थात् समाज की रचना व्यक्तियों द्वारा होती है। मनुष्य एक सामाजिक जीव होने के नाते दूसरों से अन्तर्क्रिया करता है, उनके सम्पर्क में आता है। अन्तर्क्रिया के फलस्वरूप परिवर्तन अवलम्बमान्य है। इस प्रकार व्यक्ति और समाज दोनों परिवर्तनशील हैं। आज हमारे भारतीय समाज में अनेक परिवर्तन हो रहे हैं जिसकी शुरुआत पिछले दशक वर्षों में हुई है। उदाहरण के लिए बालिकाओं की शिक्षा देना आज 50-60 वर्ष पूर्व सम्भव नहीं समझा जाता था। अब स्थिति ऐसी है कि जायदाद ही कुछ लोग भारतीय समाज में ऐसे होने लगे बालिकाओं की शिक्षा के विरोधी हैं। प्राचीन भारतीय समाज में अत्याचार की जो प्रथा आज की अब यह नहीं है। अत्याचार विरुद्ध विद्रोहों का भी औचित्योत्पन्न हो गया है।

कबीर ने कुछ की महिमा में कहा था—

गुरु योगिन्द सोइ सहे काँके लारीं पान,  
बलिहारी गुरु काँधीं योगिन्द दियी बलान ।

यह आज वस्तुस्थिति ऐसी है। धार्मिक संस्थाओं के परिवार और दुःख-खिन्न सम्बन्धों की सीखता हमारा है हम यह नहीं कह सकते कि सामाजिक परिवर्तनों के फलस्वरूप यह सम्बन्ध बदल चुका है। किसी कारण से क्या कुछ नकल सीखा है।

एक ही क्षण पर कहे में मिलने में,

यह ही किन्तु में उत्तर यह कहे हैं :

यह सब सामाजिक परिवर्तन का ही परिणाम है ।

## सामाजिक परिवर्तन का अर्थ

( Meaning of Social )

गिल्बि एवं गिल्बि (Gillick & Gillick; 1950) —के अनुसार, "सामाजिक परिवर्तन का अर्थ जीवन स्थायी कार्य के स्वीकृत विधियों में होनेवाले परिवर्तनों के हैं—यह चाहे भौतिक कार्यों के हों, सामूहिक मान्यों, जनसंख्या की वृद्धि बढ़ा किसी समूह में कार्यन्वयन के प्रकार के अन्तर्गत हों ।" ("We may describe social change as variations from the accepted modes of life, whether due to circumstances in geographic conditions, in cultural equipments, composition of the population or ideological and whether brought about by diffusion of innovations within the group.") ।

मेकाइवर तथा पेज (McIver and Page) के सामाजिक सम्प्रदायों में परिवर्तन की ही सामाजिक परिवर्तन कहा है । पीअर (Pearce) के अनुसार "सामाजिक प्रक्रिया, सामाजिक संरचना, सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक संगठन के किसी एक में परिवर्तन का स्वीकृति के विधान के लिए ही सामाजिक परिवर्तन का स्वीकार होता है ।" ("Social change is a term used to describe variations or modifications of any aspect of social processes, social patterns, social interaction or social organizations.") केमन (Geman) ने कहा है कि "सामाजिक परिवर्तन की परिभाषा व्यक्ति की कार्यप्रणाली तथा विचार के रूप में होने वाले परिवर्तनों के रूप में कर सकते हैं ।" ("Social change may be defined as modification in ways of doing and thinking of people.") ।

फिशर (Fisher; 1953) ने कहा है, "समाज की सामाजिक व्यवस्था में, संबंध समाज के स्वीकृत मान्यों, मान्यों, सुविधाओं तथा अन्य सभी तरह के तरीकों मिलने द्वारा व्यवस्था की वृद्ध व्यवस्था की अभिव्यक्ति होती है, में परिवर्तन की सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है ।" ("Social change is a modification or alteration in the social structure of a society, that is, in the basic arrangements of living as expressed in society's shared values, norms, roles and so on.") ।

मेरिक तथा एड्रिज ( Merrell & Edredge; 1975 )—के अनुसार, “सामाजिक परिवर्तन के लिये यह होता है कि अधिक लोग में जोर देते बिनाई करने करते हैं जो उन क्रियाओं के निम्न होता है जो उनके समीचीन दुनियाँ द्वारा कुछ समय पहले किए जाता था ।” ( ‘ Social change means that large number of persons are engaging in activities that differ from those which they or their immediate forefathers engaged in some time before.’ )

उपरोक्त तथा अन्य परिभाषाओं के सामाजिक परिवर्तन के प्रकार तथा लक्ष्य के विषय में निम्न ताली पर प्रकाश पड़ता है—

(i) सामाजिक समूहों के परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन है ।

(ii) समाज के अधिकतम व्यक्तियों द्वारा समाज के मूल्यों, मानकों, आदर्शों में परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन है ।

(iii) इस प्रकार सामाजिक जीवन के संर, विधियों, प्रक्रियाओं में कुछ एवं अनावक परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन है ।

### सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ

( Characteristics of Social Change )

1. सामाजिक परिवर्तन एक जटिल प्रक्रिया है ( Social change is a complex process )—सामाजिक परिवर्तन के सर्वाधिक मात्र या क्षेत्र में होने वाले परिवर्तन अत्यन्त जटिल एवं अस्पष्ट होते हैं । इसके अन्तर्गत विचारों, संविधानों, धर्मों, मूल्यों, आदर्शों और मानकों आदि में होने वाले परिवर्तन शामिल हैं जो काफी जटिल एवं अस्पष्ट होते हैं । यहाँ यह बताना जरूरत प होता कि सामाजिक परिवर्तन जटिल होते हैं । हाँ, परिवर्तन के पौरुषिक मात्र अस्पष्ट लक्षण और प्रत्यक्ष होते हैं । किन्तु सामाजिक परिवर्तन का कुछ सामग्री सर्वाधिक क्षेत्र के परिवर्तनों के हैं जो जटिल होते हैं ।

2. सामाजिक परिवर्तन सामंभौषिक होते हैं ( Social changes are universal )—सामाजिक परिवर्तन पूरे समाज में व्याप्त होता है । इसमें मुख्यतः समाजिक ( Primordial and secondary ) सभी प्रकार के समाज सम्मिलित होते हैं । क्योंकि कोई समाज निरस्तुत विवर नहीं होता । समाज के मूल्यों, विधियों, मानकों और समीचीन सभी में परिवर्तनों का जाना आवश्यकता है । हाँ, ऐसा अवश्य है कि परिवर्तनों का वेग विभिन्न समाजों में एक होता नहीं होता ।

3. कई कारणों की सम्मिश्रिता ( Interactions of several factors )—सामाजिक परिवर्तन के अनेक कारण होते हैं और समाज में परिवर्तन इसी सम्मिश्रिता का परिणाम होता है । परिवर्तन के प्रमुख कारण पौरुषिक, समीचीन और पौरुषिक होते हैं और परिवर्तन में सभी का योगदान होता है ।



8. सामाजिक परिवर्तन अपरिहार्य है ( It is inevitable )—दुर्लभ (Lazear) ने कहा है कि, "सोशल चेंजमेंट के सामाजिक परिवर्तन अपरिहार्य वस्तु अवश्यवादी होते हैं।" ( "Social change has been and is inevitable unavoidable for society members" )—कोई संशय ऐसा नहीं हो सकता जिसमें कोई सामाजिक परिवर्तन न हुआ हो। कारण यह है कि किसी भी समाज में सामाजिक परिवर्तन कभी कभी नहीं हो पाता नहीं या कभी नहीं हो पाता। वही समाज की परिस्थितियों के किसी संशय को बचाता नहीं या बचाता।

9. सामाजिक परिवर्तन आकस्मिक होते हैं ( Social change is sudden )—कभी-कभी कुछ सामाजिक परिवर्तन बहुत कम समय में हो सकते हैं। जब किसी युद्ध, आतंक या सामाजिक विषम में परिवर्तन के बिना अवस्था एवं संरचना होती है तो सामाजिक परिवर्तन काही आकस्मिक हो जाती होती है।

10. सामाजिक परिवर्तन में प्रतिरोध भी होता है ( Social change is resisted )—कभी-कभी सामाजिक परिवर्तन में प्रतिरोध आता होता है। उदाहरण के लिए कभी-कभी सुविचार व्यक्तिगत कारणों में परिवर्तन के सम्मुख हैं किन्तु जब कोई ऐसा सामाजिक युद्ध होता है तो सुविचार समाज प्रतिरोध करता करता है और सामाजिक जीवन बच जाता है।

## सामाजिक परिवर्तन के प्रकार

### ( Types of Social Change )

सामाजिक परिवर्तन चार प्रकार के बताये जाते हैं :—

1. केन्द्रीय सामाजिक परिवर्तन ( Central social change )—ऐसे सामाजिक परिवर्तन जो व्यक्तियों, संस्थाओं या समूहों के समस्त एवं केन्द्रीय प्रभाव का परिणाम होते हैं, उन्हें केन्द्रीय परिवर्तन कहा जाता है। इसके लिए व्यक्तिगत या सामूहिक संघर्ष किए जाते हैं। यह परिवर्तन सुनिश्चित होते हैं। इसके लिए कभी-कभी सम्झौता करना पड़ता है—जैसे राजा राज बंद्ध्य राज के हठी प्रथा को समाप्त करने का सम्झौता करना। इस प्रकार के सामाजिक परिवर्तन के लिए समस्त परिवर्तन के विभिन्न स्तर एवं स्तरों को बनाया जाते हैं। वर्तमान समय में सामाजिक प्रभाव सामाजिक की इसका अवलोकन उदाहरण है।

2. अपेक्षित सामाजिक परिवर्तन ( Unconscious social change )—संवेदन एवं सामाजिक और पर जाते जाते परिवर्तन इस क्षेत्रों में गते जाते हैं। इसके लिए केन्द्रीय प्रभाव को अवलोकना नहीं होती।

ऐसे परिवर्तन की किसी सुनिश्चित सम्झौता, अधिकार या शक्ति की आवश्यकता

सम्बन्ध नहीं होती। बहुभाषी, सुधन, ज्ञान, धन के अन्तर्गत सामाजिक संरचना में संस्था के अन्तर्गत आते हैं। धन की स्थिति, सामाजिक संघर्ष और सामाजिक स्तर के या अन्य संकेत कारणीय परिवर्तनियों की वजह सामाजिक संरचना में परिवर्तन आती है। यह सभी अन्तर्गत सामाजिक परिवर्तन का उदाहरण है।

3. उपर्युक्त सामाजिक परिवर्तन (Upward social change)—ऐसे सामाजिक परिवर्तन सामान्य की अवधि एवं अवधि को बढ़ाते हैं। यह परिवर्तन सकारात्मक होते हैं। यह सामाजिक मान्यों, सुखों एवं आर्थों में सुधे की प्रतीति और परिवर्तन को बढ़ाते हैं तथा उन्हें सकारण बढ़ाते हैं। शिक्षाओं की शिक्षा, महिलाओं का जीवन करना, परिवार का मान और व्यवस्था सुधे के विकास के कारणों से व्यवस्था और परिवर्तन के कारणों में परिवर्तन इसी क्षेत्र में आते हैं।

4. निम्नकारी सामाजिक परिवर्तन (Downward social change)—यह सामाजिक परिवर्तन सकारात्मक होते हैं और इसी कारण की अवधि होती है। यह परिवर्तन सामाजिक मान्यों, सुखों एवं आर्थों को बहाल पहुँचाते हैं, जिनके कारण संस्था की संरचना के विचार को बढ़ाते हैं, व्यवस्था अन्त-अन्त होती है और समाज की अवधि तथा व्यवस्था का अन्त होता है।

### सामाजिक परिवर्तन के कारण

#### (Causes of Social Change)

समाज वैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों द्वारा सामाजिक परिवर्तन के कारणों पर प्रकाश डाला है जो इसके अन्तर्गत की अवधि में पहुँचते हैं। इन कारणों के प्रमुख कारण निम्न हैं—

1. आनुवंशिक कारण (Hereditary or Biological causes)—वैश्विक समाज आनुवंशिक कारणों से आती है जो कारणों से हैं जिनके कारण सामाजिक का विकास वैश्विक वैश्विक अवधि में बढ़ाते हैं। जिनके कारणों से इसके पुन वैश्विक का आनुवंशिक होते हैं। मैकडगर तथा पेज (Mac Dgar & Page, 1940) के अनुसार वैश्विक कारणों का अन्तर्गत सामाजिक सुखों पर अन्तर्गत है कि इसके सामाजिक परिवर्तन में जीवन आती है। इसके अन्तर्गत जिनके कारणों, सुखों, शिक्षा-विशेषों एवं मान्यों में परिवर्तन आते हैं। अन्तर्गत सुधे सामाजिक-आर्थिक अन्तर्गत में विचारों का कारण होती है और यह अन्तर्गत सामाजिक परिवर्तन का कारण है। अन्तर्गत यह है सकारात्मक में परिवर्तन को बढ़ाते एवं संविदा सुधे की सामाजिक अवधि में जीवन को बढ़ाते हैं।

2. भौतिक कारण (Physical factors)—इसके अन्तर्गत सामाजिक के अन्तर्गत तथा भौतिक कारण आते हैं। भारत में व्यवस्था के पुन आन्तर्गत के

सामाजिक परिवर्तन आए, जिनके प्रभावपूर्ण परिणामों ने मिलीठी मतभेदों का विलु-  
प्ति, तथा सारी समी, और अन्य ऐसी मतभेदों का उपशील कारण किया, योंनों  
को महामता के मत रही औद्योगिक संस्थाओं का विलुप्ति और सारी विद्यार्थीक सं-  
स्थाओं मिलितता केवरी की उपलब्ध हुई। यह सभी सामाजिक परिवर्तन का ही  
प्रभाव है जो समाज के अन्तर्गत के कारण का। इसी प्रकार उपलब्धता के  
कारण की सामाजिक परिवर्तन में अन्तर्गत के कारण अनेक सामाजिक परिवर्तन हुए। औद्योगिक  
कारण की सामाजिक परिवर्तन जैसे हैं, जैसे मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य जैसे औद्योगिक  
कारण की सामाजिक परिवर्तन में परिवर्तन जैसे हैं।

3. **आर्थिक कारण (Economic factors)**—इस विषय में इसे समझने  
के लिए होता है कि आर्थिक प्रगति एवं समाज की प्रगति में अनेक कारण के  
परिवर्तनों की उपलब्धता है। विचार तथा वाणिज्य (Linton के कार्डिनल,  
1932) के अनेक कारणों द्वारा आर्थिक प्रगति तथा सामाजिक परिवर्तन में  
संलग्नता प्राप्त किया है। कार्डिनल (Cardinal) का मत है कि सामाजिक  
परिवर्तन समाज के आर्थिक परिवर्तनों के कारण का है। विचार के  
विद्युत्कारण के कारण होता है कि लोगों के विचार, जीवन, प्रगति, प्रगति,  
समाजिक और जीवन जैसे में परिवर्तन अनेक आर्थिक प्रगति में होता सम्भव  
पड़ते हैं। समाज के मनुष्य, मनुष्य, समाज के लिए सभी अवस्थाओं के पुनर्प्राप्त हैं।

4. **प्रायोगिक कारण (Technological factors)**—प्रायोगिक कारण  
की सामाजिक परिवर्तन उपलब्धता है। कार्डिनल (1932) ने प्रायोगिक कारण  
की सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारण माना है। जैसे मनुष्य प्रायो-  
गिक के कारण की सामाजिक परिवर्तन होते हैं। समाज का पुनर्प्राप्त का पुनर्प्राप्त  
जिसके कारण प्रायोगिक कारणों (interpersonal relations) में सभी परि-  
वर्तन का होता है। इस विषय में जीवन (Ogburn, 1965), किंग (King,  
1935) कार्डिनल (Cardinal, 1972), आदि ने उपलब्धता है कि समाज का  
होता है कि प्रायोगिक कारण के अन्तर्गत कारण उपलब्धता जैसे हैं—

(क) उद्योग में मशीनीकरण (Mechanization of industry)—  
सर्वोत्तम के मशीनीकरण के अनेक कारणों का उपलब्धता में सभी वृद्धि हुई है।  
इसके परिणामस्वरूप सभी में कार्यक्षमता वृद्धि की औद्योगिक प्रगति अनेक हुई है  
और अनेक सामाजिक कारणों में सभी प्रगति हुई है।

(ख) समाज के मनुष्यों का विकास (Development in means  
of communication)—समाज के सभी कारणों—समाजिक, वैज्ञानिक, वैज्ञानिक,  
वैज्ञानिक के कारण, वैज्ञानिक, वैज्ञानिक (Fax) उपलब्धता सभी कारणों में सभी

कुलमा में सामाजिक सम्बन्धों में काफी परिवर्तन स्पष्ट हुए हैं। इन सम्बन्धों के विकास के सामाजिक सम्बन्धों में बदलाव आए हैं।

(ग) साक्षरता के स्तरों में वृद्धि (Increase in literacy rates)—संसार के सांख्यिक सम्बन्धों—यैके समुदाय, घर, कार्य, रोज़गार के कारण न केवल सामाजिक स्तर बढ़ा है बल्कि राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर में बढ़ती हुई है, जिससे राष्ट्रीय स्तरों, अर्थव्यवस्था, विकास और अर्थव्यवस्था में बहुत-बहुत परिवर्तन आए हैं और इसके चलते सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन आए हैं।

(घ) कृषि तकनीकों में विकास (Development of agricultural technology)—सामाजिक विकास के सबसे कम के क्षेत्र में तकनीकी विकास हुआ है। हरित क्रांति इसी तकनीकों के प्रयोग का परिणाम है जिससे कृषि के कुछ क्षेत्रों की उत्पादन क्षमता में वृद्धि आई है। आर्थिक उन्नति के कारण यह साक्षरता के सामाजिक सम्बन्धों की संरचना भी प्रभावित हुई है।

3. सांस्कृतिक कारक (Cultural factors)—सांस्कृतिक कारक की सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न करते हैं। सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण में अर्थव्यवस्था, समाज, परम्परा, व्यवस्था, अर्थव्यवस्था और सामाजिक सम्बन्ध सभी कुछ प्रभावित होता है। सामाजिक सम्बन्ध में एक की ओर सम्बन्ध बढ़ते जाते हैं वह सब नहीं होता है। इसका कारण सामाजिक परिवर्तन है। सांस्कृतिक सम्बन्ध के कारण हमारे परिचिन्ताओं, मान्यताओं, विचारों आदि में बहुत परिवर्तन आये हैं।

4. शैक्षिक कारक (Educational factors)—एक विद्वान यह मानते हैं कि शैक्षणिक तथा अन्तराष्ट्रीय शिक्षा की सामाजिक परिवर्तनों की प्रभावित करती है। मीनहान (Sir Minahan, 1989) का मत है कि भारत में शैक्षिक कार्यक्रमों के कारण सामाजिक सम्बन्धों में बहुत परिवर्तन आये हैं। शिक्षा के प्रसार के माध्यमों के जीवन की विश्व स्तर पर बहुत में प्रभावित किया है उसके सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा का योगदान स्पष्ट है।

5. मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological factors)—एक मनोवैज्ञानिक कारकों के कारण के भी सामाजिक परिवर्तन आते हैं। समाज के बदलने में विचारों, भावनाओं, सुख, दुःख, उत्साह, चिन्ता आदि की प्रभावित की सामाजिक परिवर्तन का कारण है। व्यक्ति की बर्तक, नये मान्यता, नये विचार व्यवस्था प्रभावित होते हैं क्योंकि हमारे मान्यता, विचारों और हमारी मान्यता के यह सब आता है। मनो-मनो परिवर्तनों का होता भी सम्बन्ध होता है सम्बन्ध मन-साधारण में मात्र सुख, दुःख, भावना, लक्ष्य आदि का सब के होता है।



8. बहुजन व्यक्तिगतों द्वारा परिवर्तन (Change through great masses)—सिद्धांत वाली है कि सभी-सभी सामाजिक परिवर्तन बहुजन व्यक्तिों के प्रयासों से होते हैं। भारत में बहुजना बुद्ध, रामायण मोक्षराम, श्री- कृष्णदेव, बहुजना वाली से अनेक प्रयासों से विभिन्न प्रकार के सामाजिक परिवर्तनों की विद्या प्रचार की। स्वामी वनाजन्म, राम- कृष्ण मोक्षराम आनन्द, सर श्रीराम बहुजन्म श्री अर्धर बहुजन्मों से भी अनेक विचारों, सिद्धांतों तथा कार्यों द्वारा सामाजिक भारतीय समाज की विविध स्तरों में परिवर्तन किया।

9. राजनैतिक कारक (Political factors)—राजनैतिक कारक भी समाज के सामाजिक जीवन में अनेक विभिन्न बहुजन करते हैं। यह सामाजिक परिवर्तन की भी प्रभावित करते हैं। राजनैतिक घटनाएँ, प्रेरण, सामान्य प्रजाती, आदि भी सामाजिक परिवर्तन पर प्रभाव डालती हैं। स्वतंत्रता के बाद भारत में भी राजनैतिक परिवर्तन आने लगे लगे अनेक प्रकार के सामाजिक परिवर्तन हुए। राजनैतिक घटनाओं तथा सामाजिक घटनाओं में अनेक संघर्ष होने के लिये राजनैतिक कारकों से भी समाज के बुद्ध, विचार, विचार, प्रेरितियाँ, आनी आदि परिवर्तन होते हैं। सामाजिक आनन्द, कर्मका, आदि मुख्य राजनैतिक कारकों की वजह है।

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि सामाजिक परिवर्तन अनेक कारकों द्वारा होते हैं। सामाजिक परिवर्तन होता क्यों है? इस प्रश्न का उत्तर उपरोक्त विवेचना में नहीं दिया गया है। इसके सिद्ध परिवर्तन के विभिन्न सिद्धांतों की विवेचना आवश्यक है।

## सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त

(Theories of Social Change)

सामाजिक परिवर्तन के उत्पन्न तथा इसके कारणों की व्याख्या के सिद्ध समाज वैज्ञानिकों ने अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है जो सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त कहें जाते हैं। इनके कुछ सिद्धान्त निम्न हैं :—

1. चक्रीय सिद्धान्त (Cyclical theory)—इस सिद्धान्त के प्रतिपादकों में हाटेविश तथा स्पेन्सर के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रत्येक सामाजिक घटना एक-दूसरे के उत्पन्न के कारणों से उत्पन्न होती है और सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि सामाजिक परिवर्तन चक्रीय प्रक्रिया के लिये होता है। जो सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न में हो रहे हैं वह क्रम-क्रमेण प्रविष्ट में परिवर्तित होते और फिर नयी नयी परिवर्तन होने को आरंभ हो रहे हैं। स्पेन्सर के अनुसार समाज का जीवन चक्र चक्रीय प्रक्रिया के जीवन चक्र कहलाता है। जीवन में सभी कुछ जो सभी कुछ और अनुसार दोनों के विचारों, विचारों, प्रेरणों और अभिवृत्तियों में परिवर्तन होते रहते हैं।

2. सांस्कृतिक सिद्धान्त (Cultural theory)—सार्कोविच (Sarokin) द्वारा प्रतिपादित इस सिद्धान्त का सम्बन्ध मूर ( Moore, 1974 ) द्वारा किया गया है ।

(i) उसका मत है सामाजिक परिवर्तनों की कोई निश्चित दिशा नहीं होती । यह सांस्कृतिक कारकों द्वारा उद्योजित इस क्रिया में सम्पत्ति और सम्पत्ति संस्कृतिक तत्वों के अनुसार जाती है ।

(ii) संस्कृति के तीन पक्ष होते हैं—इतिहासपरक संस्कृति, विचारपरक संस्कृति, तथा व्यवहारपरक संस्कृति । इनमें से प्रत्येक भौतिक पक्ष के सम्बन्ध है। अतः भौतिक संस्कृति की नहीं जाती है । विचारपरक या विचारपरक संस्कृति के अन्तर्गत ज्ञान, मान्य, धर्म, नृत्य, विनयक, सम्प्रदायों, मान्यताएँ आदि जाती हैं । दृष्टिक, अर्थात् मान्यताएँ एक संस्कृति या तो पूर्ण रूप से इतिहासानुकूलिनी या विरोध होती है और वही पूर्ण रूप से विचारपरक होती है इसमें इन दोनों का संयोग प्राप्त होता है अर्थात् यह संयोगः भौतिक और संयोगः अर्थोपार्जित होती है । संस्कृति का यह रूप मानवीय दृष्टि, और साहित्यिक ज्ञानों को वर्धितता देता है । सामाजिक परिवर्तन के द्वारा मान्यताएँ एक संस्कृति में ही होती हैं ।

(iii) संस्कृति में परिवर्तन सामाजिक तथा सांस्कृतिक विपत्तियों के कारण होते हैं । परिवर्तन संस्कृति का निरूपण है अतः इसे पतित होता है, इसे कोई साक्षि रोक नहीं सकता । सांस्कृतिक परिवर्तन अनिवार्य है और राष्ट्रीय के कारण सामाजिक परिवर्तन होते हैं ।

3. समुदाय सिद्धान्त (Community theory)—फर्ग्युसन ( Ferguson-Hillman ) पर आधारित यह सिद्धान्त कहता है कि सामाजिक क्रियाओं की प्रत्येक विपक्ष ऐतिहासिक विकास के अंतर्गत में नहीं बल्कि अपने वर्तमान अंतर्गत, उत्पत्ति-रूपी, एवं परिवर्तनों के रूप में समझ सकते हैं । समाज के निर्दिष्ट क्षेत्र, मान्यताएँ या वह हैं जो प्रत्येक एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं । यह एक समाजों के रूप में कार्य करते हैं । जब किसी एक समाज में परिवर्तन होता है तो यह समाजों के अन्य भागों की भी प्रभावित करता है । इस क्रिया का कारण यह है कि समाजों सम्बन्धित समाज प्रत्येक का समाज जाती है अतः एक क्षेत्र में परिवर्तन अन्य क्षेत्रों की भी प्रभावित करता है । सामाजिक समाजों के अंतर्गत में परिवर्तन के समाजों का सम्बन्ध बना होता है और उसे पूरा सम्बन्धित करने का रूप होता है । एक दृष्टिकोण को मानवता की विचारधारा ने अधिक प्रति दी । अपने अनुसार सामाजिक समाजों के किसी एक भाग में परिवर्तन होता है और यदि समाज के अन्तर्गत उसके सामाजिक सम्बन्ध के साथ अधिकतम कर लेते

हैं जो अन्य मान में परिवर्तन आविर्भूत होते हैं। अविरोधन के अन्त ही धीरे-धीरे सामुदायिक गुण स्थापित हो जाते हैं।

4. **हम्ल सिद्धान्त (Coastal theory)**—इस सिद्धान्त के प्रचलन करने वाला (Karl Marx) तथा मैक्स वेबर (Max Weber) का मत है कि समाज विविध समुहों का योग (aggregation) है और इन विविध समुहों में हमल होता है क्योंकि इन समूहों के स्वयं, मानक, विचार, आदर्श आदि भिन्न होते हैं। इन समूहों के अन्तः-सम्पर्क के कारण होते हैं तथा इनके कारण तथा समझौते भी भिन्न होती हैं। वे अपनी सामर्थ्य, शक्ति, अधिक तथा समर्थों के अनुसार सामाजिक मानकी, दुरुतों, विचारों आदि में परिवर्तन लाते हैं। ऐसी विधि में विविध समुहों में हमल और संघर्ष होता है जिससे नए समूह अपने स्वयं के स्वयं तथा अन्य समुदाय होते हैं। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक परिवर्तन होते हैं।

**आधुनिक युद्धिकीय (Modern sociological)**—सामाजिक परिवर्तन का कोई एक कारण नहीं होता। सामाजिक परिवर्तन अनेक कारणों से होते हैं। हाँ, यह अवश्य है कि कुछ कारण अन्य की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। यह कारण बहुधा कारण का है सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करती हैं। इन कारणों में अन्तर्निहित होती है जो परिवर्तन को प्रभावित करती है। इन प्रसंग में से पर्याप्त का मत है कि आधुनिक की आधुनिकताएँ तथा उनकी सामाजिक मानों के बीच हमल के सामाजिक परिवर्तन होते हैं।

## सामाजिक परिवर्तन के परिणाम (Results of Social Change)

सामाजिक परिवर्तन के अनेक परिणाम होते हैं और अन्त में कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। यह सामाजिक परिवर्तन को प्रति बहुत हीम होती है जो इसके परिणाम की दृष्टि से और अन्तः महत्वपूर्ण होते हैं। इन परिवर्तनों के अन्त का समुदाय किन्तु है जिससे समाज में भिन्न प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। सामाजिक परिवर्तनों के परिणाम अन्तः समाज में भिन्न प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

1. **परिवारिक विघटन (Family Disorganization)**—सामाजिक परिवर्तनों के कारण परिवारिक विघटन की अवस्था विकसित हो जाते हैं। यह परिवार नामा प्रकार के परिवारिक संरचनाओं के अन्त, हानि, विचार-विमर्श और अनुमान के अन्त, जैसे होते हैं। परिवार के नई पीढ़ी वाले अन्त, परिवार में विभिन्न एवं प्रतिकूल अवस्था, अन्त की संरचना में होने वाले परिवर्तनों की वृद्धि उत्पन्न करते हैं जबकि अविच्छिन्न, अविच्छिन्न अन्त-

प्राथमिक व्यक्ति, समाज में होने वाले परिवर्तनों को न मान्यता दे पाते हैं न स्वीकार कर पाते हैं।

2. सामाजिक समाज ( Social Tension )—सामाजिक परिवर्तनों को दृढ़ प्रति समाज में उत्पन्न कराने वाली है जिसके कारण व्यक्ति, समूहों, राष्ट्रों में असंतुलन, कठोरता, अस्थिर उत्पन्न होती है। मान समाज का समुदाय कोई एक पूर्ण रूप से समाज नहीं बल्कि बहुत से समूहों का संग्रह है। व्यक्ति समूहों के लिए शिक्षा उत्पन्न एक नयी उत्पन्न बात है। इसी में समाज की अपनी परम्परा अतीत पर नहीं है। शरीर, नयी-नयी विचारों के द्वारा, समाज, शिक्षा, विज्ञान, विज्ञानों में श्रम, समाज, सामाजिक और अनुशासनहीनता आता है, समाज में अलोकता, अलोकता, सामाजिक जीवन का विकास एवं अतिरिक्त रूप व्यक्ति का एक कारण सामाजिक परिवर्तन है।

विज्ञान समूहों में समाज का एक कारण सामाजिक परिवर्तन है। इसी, समाज में समाजिक जीवन के द्वारा समाज का ही परापूर्व है, जो सामाजिक सुखी, अस्थिर, वैश्विक सुखी में समाज के समग्र उत्पन्न है। समाज के एक प्रकार की नयी उपस्थिति के लिए के समाज, परिवार में शिक्षा, नयी शिक्षा व्यवस्थाओं का समाज, लोक लोक व्यक्ति समाज परापूर्व है। समाज में शिक्षा समुदाय नया, नया / समाज में समाज करना व्यक्ति विज्ञानों का एक कारण सामाजिक परिवर्तन है।

3. व्यक्तिगत विघटन ( Individual Disorganization )—सामाजिक परिवर्तनों में समाज के अनेक समूहों में व्यक्तिगत विघटन के समग्र भी उत्पन्न होती है। सामाजिक परिवर्तनों के कारण अनेक व्यक्ति नए नए सुखी, विज्ञानों विचारों एवं मान्यों के भी अपना लेते हैं और समुदाय अपने मान की अनुशासन एवं अधिनीति कर लेते हैं। परन्तु समाज में कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो इन नए नए विचारों, विचारों, समुदायों सुखी के अन्तर्गत में विघटित हैं तथा कठिनाई का अनुभव करते हैं। ऐसे व्यक्तियों का सामाजिक समाजीकरण विघटन होता है, नयी सुखनीति हो पाते हैं। इन लोगों के अन्तर्गत में नए प्रकार के सामाजिक विचार उत्पन्न हो जाते हैं और के सामाजिक जीवन के लिए हो जाते हैं। यह नया प्रकार के विचार समाज के समग्रों की अधिनीति करते हैं।

4. सामुदायिक विघटन ( Community Disorganization )—सामाजिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप समुदायों का विघटन आरम्भ होता है। सामाजिक परिवर्तन के पहले लोगों के सुखी और जीवन व्यवस्थाओं में परिवर्तन होते हैं जिससे लोगों में नया प्रकार के वैश्विक जीवन उत्पन्न होते हैं—ऐसे समाज के

असीसीकरण से बेकारी, बेरोजगारी, बेहतरों में वृद्धि होती है। अतः समाज में संकीर्णता, स्वार्थ, लोभ आदि अशुभित्तों का प्रसार है। सामाजिक संघर्ष, पीढ़ी विवाद (Generational gap) का प्रसार, और वर्षों से चल रहा युद्ध है जो अन्तर्जातीय अन्तर्जातीय विवाद का नाम लेता है।

3. बेकारी की समस्या ( Problems of Unemployment )—बीबी-बीबीएच के अध्यापकवर्ग अपने छात्र के सामाजिक परिदृश्य होते हैं। हमारे एक और प्रतिष्ठित बन्धियों की बात में सुझाई होती है की दुनियाँ और जनसमाज में बेकारी और बेरोजगारी फैली है। कम्प्यूटरी के उपयोग के अनेक अवसरों के साथ एक कम्प्यूटर बनता है, परिवहन बेरोजगारी के रूप में सामने आता है। हमारे समाज में हमारे और अनेक कारण होते हैं। कबु करीबी में कारीगर दुबारी-सबकी स्थिति बेरोजगार हुए हैं। जब सामाजिक परिदृश्य में समाज में बेकारी व बेरोजगारी में सुझाई की है जिसका विकास कर आज हमारे अपने देश में हमारे समय है।

६. अन्तर्राष्ट्रीय विघटन (Internationalized Disorganization)—  
आधुनिक परिवर्तन का प्रभाव केवल किसी एक विधेय तक ही सीमित नहीं होता, बल्कि इसके कारण अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भी विघटनकारी प्रभाव महिमापन्न होते हैं। जिस देश में आधुनिक परिवर्तनों के कारण विघटन आरम्भ हो जाता है उसके अन्य देशों के साथ सम्बन्धों में भी लगान पैदा होते हैं और इसके कारण बर्बर, दुष्ट, अहित की बहाई चलाने लगते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में 'वैश्विक प्रवाह' की अवस्था की स्थापना हुई है। हिन्द, पाक सम्बन्धों में विघटन के कारण (1965) तथा (1971) में दुष्ट की स्थिति उत्पन्न हुई।

7. **वसान परिचालन ( Abolition )**—किसी राज्य के होने वाले परिवर्तनों के कारण, वैसाही, केरोलनाही, मरीन का बसाव आदि की स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं जिसके कारण होकर अनेक लोग अपने गाँवों की छोड़कर पीछी की तरफा में चलते या पला भागते हैं। वे कनरी में काम-काज की भासा लेकर जाते हैं। गाँवों के बसाव कनरी में बसिष्ठा सामाजिक सम्बन्ध बहूँ होने और वही कनरी में बहुत लोग सुविधा की आलोकितों में रहते हैं वहाँ कन्दकी और बीमारों का बीजबासा होता है। वह स्थितियाँ बसकर पीछी की बसावबहूँ होती हैं। इन सब स्थितियों के सामान्य बीजल दबावित होता है।

पर्याप्त विवेका के साथ ही कि सामाजिक परिवर्तनों के कारण लोगों के व्यवहार, जीवन, सम्पत्ति, देश और वैयक्तिक सम्बन्धों में निरन्तर उत्तम परिवर्तन होते हैं। लोगों के मूल मूल्य, विद्याकार, जीवन शैली, मूल्यों, विचारों, व्यवहारों पर मान्य व्यवहार के प्रभाव पड़ते हैं।



समाज की कड़ी छात्र, वैदिक और आध्यात्मिक धर्मों के लिए विपरिष्कार का सब आविर्भाव, प्रवर्धन, ब्रह्म, अनेक, धर्म, धर्म धारण ऐसी शक्तियों के लिए है और लोगों का ऐसा वैदिक धर्म हुआ है। विपरीत विचार नहीं मिलती। आध्यात्मिक धर्मों को अनेकता देने वाले हुए राष्ट्रीय समाज वेदों के लोगों के से भी अधिक वैदिकवादी हो गए हैं। वेदों, धर्मों, धर्मियों, धर्म-धर्म, धर्मियों के प्रति अनेकानेक सम्मान, सम्मान का कोई समाज धर्म वेदों को नहीं यह बना है यह सामाजिक परिवर्तन का ही परिणाम है। साम्यवाद में भी वेदों धर्मपरिवर्तन हुआ है कि वेदों की के विचार होने यह वह है। वेदों की साम्यवाद में ही वैदिक धर्मों की होने के कारण यह और अनेक अनेक सब दिशा कि साम्यवाद में ही हमें वैदिकता का आस नहीं करना है। यह बहुधर्मिक विस्तृत दिशा है सब साम्यवाद में वैदिकता का कोई भी नहीं है। लोगों में साम्यवादिक धर्मों अनेक नहीं है।

4. **ग्रामीण जीवन पर प्रभाव** ( *Impact on Rural Life* )—ग्रामीण जीवन पर सामाजिक परिवर्तनों के प्रभाव के कारण ग्राम पर ग्रामीण जीवन दोनों प्रभावित हुए हैं। जनसंख्या में वृद्धि के कारणों में कृषि योग्य भूमि के अभाव के कारण तथा औद्योगीकरण ग्रामीण जीवन में बहुत बदलाव लाया है। और लोक कृषि औद्योगिक नगरों में कार्य की प्रणाली में जाने लगे हैं जिससे व केवल ग्रामीण जीवन पर न ग्रामीण जीवन भी प्रभावित हुआ है। प्रोफेसर हुबर्नर रिप्टा [1969] ने अपनी किताब "Indian villages in transition" में बताया है कि गाँवों में कृषि और सामाजिक विकास बीजगणित के अनेकित लाभ लड़ी हुआ है और सामाजिकियों की अविश्वसनीयों में अधिक परिवर्तन लड़ी हुआ है। बल्ले कलाकलन लोगों के आवासों पर और सामाजिक जीवन में विशेषीकरण लाया हुई है। दुर्नी कलर इंडिया के ग्राम जीवन की अधिक प्रभावित हुए हैं - गाँवों के लोगों की और और गाँवों के जारी संस्था में ऐसी बनाने जा रहे हैं जहाँ शिक्षा और विशेषकर उच्च शिक्षा के प्रति अदासीनता के अभाव लाने जा रहे हैं।

इस अवधि में कृष्णमुरारी (Krishnamurthy, 1972) ने अपनी किताब "Disinfectants in India" में लिखा है कि बी बी सी औद्योगिकरण के अतिरिक्त प्रशासन ने सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक परिणामी सुविधाएँ दी हैं। इनके विपरीत बिना पशुओं पर औद्योगिकरण का प्रभाव गहन था जहाँ सामाजिक नियंत्रण के अभाव में नृप था। इनके अतिरिक्त तथा औद्योगिकीकरणों में परिवर्तन को अनेकाङ्क बढ़ा गये थे। दिन क्षेत्रों में औद्योगिकरण के प्रभाव कम थे जहाँ सामाजिक परिवर्तन कम हुए और लोगों में उनकी गहन प्रतीति बने हुए थे।

### 5. सांसारिक जीवन पर प्रभाव (Impact on family life) :-





उपलब्ध है जैसे जल, मिट्टी, टी-वी, आदि। यह परिवर्तन समाज में परिवर्तन का परिणाम है। यदि जीवन में सभी हो जाएं पर टी-वी, अनेक परिवार में आवश्यक हो गया है।

9. सांसाधन जीवन पर प्रभाव (Impact on individual life)—  
 भारत में जनरीकरण और औद्योगीकरण के परिणाम स्वरूप हर परिवारों के जीवन स्तरों में द्रोणिक स्तरों के प्रति अनुकूलता बढ़ी है। अनेक लोग यह कहते सुने जाते हैं "इससे क्या लाभ है।" सांसाधन परिवर्तनों के कारण लोगों का जरी के प्रति बुद्धिजीवी बनने लगा है। जहाँ तक अपनी, सामान्य, रहन-सहन का जल है सभी में समानता स्वरूप की समता देखी जाती है। पीछे गई में छोटी-छोटी जाति का समाज के जिया है। जीवन के मादरी और मरमता जिया के गरी है। गरीब किसान में बाराह टीन जिन रहती की कम एक दिन की बाराह का पकन हो गया है। बहुत बड़े घरों में भी बाराह कुछ कमी में हो ली जाती है। समाज के विकास, विकास, सुख लीनी, सामाजिक मानक, सांसाधन नियम और मानकी सभी कुछ समान गया है। भारतीय संस्कृति का और तथा परम्परा संस्कृति का बीज-बाला होता का रहा है। मनुष्यवर्गीय जीवन के विशेष रूप में प्राचीन भारतीय संस्कृति कम होती का रही है। यह समाज के औद्योगीकरण और जनरीकरण के पहले हो रहे सांसाधन परिवर्तनों का परिणाम है।

10. जाति पर प्रभाव (Impact on caste)—यह समाज में जाति की संविधि बसकी जाति के आधार पर विविधता होती की। इस दृष्टिकोण प्रभाव नहीं तक सीमित रह गया है। जाति व्यवस्था का विशेष की सामान्य प्राचीन काल से होता का रहा है। सिन्दु सामाजिक व्यवस्था का भी कम जाति होता का रहा है यह भी सभी गरीब का। समाज के समाजीकरण और सामाजिक व्यवस्था के सुदृष्टी का भी जाति महत्व है यह भी नहीं की। समस्त वैश्वी की बढ़ती हुई वैश्वी के सभी संघर्ष का रूप के जिया है। यह रूप होते हुए भी जाति के समान और समान में कोई बसाधारण परिवर्तन नहीं हुआ है। औद्योगीकरण ने राष्ट्रीयता समस्तों की दीक्षाहित हो रही किया है परन्तु सभी व्यवस्था पर सुझावों की किया है, परिवारिक रूप गरीब की बनेल नहीं जाति सम्बन्धीय विवाद हो रहे है। यह विविध घरों और मनुष्यवर्गीय में विशेषकर देखी जा रही है। विविध सभी जाति है कि एक समान जातिगत संघर्ष की हो रहे है और दूसरी और जाति व्यवस्था में लोगों की जाति यह रही है।

11. पीढ़-अंतर प्रभाव (Impact on generation gap)—सामाजिक परिवर्तनों ने सुदृष्टी तथा लई पीढ़ी में अंतर को बढ़ा दिया है। यह पीढ़ी

अन्तर इतना बढ़ गया है कि स्त्री पीढ़ी तथा पुरुषी पीढ़ी के बीच खाई हो दिखाई देती है। रथ ( Raths, 1971 ) ने इस सन्दर्भ में अपने अध्ययनों पर निम्नलिखित ब्राह्म किया है कि पुरुषी मूल्य तथ्यों के विद् सकारात्मक तथा स्त्री मूल्य नकारात्मक दृष्टिकोण रखती है। इसी प्रकार सिन्हा ( Sinha; D, 1971 ) ने अपने अध्ययनों के आधार पर देखा कि वर्तमान युव के स्त्री में पीढ़ी चेतना बढ़ी है और अन्तर कक्षिक तीव्र हो गया है। पीढ़ी चेतना के कारण आधुनिक समाजीकरण के प्रतिवर्तार्थ आती जा रही है।

उपरोक्त विवेचना के स्पष्ट है कि भारत में सामाजिक परिवर्तनों के कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं और इनके पार्यक और पुरुषाणी अभाव सामाजिक जीवन पर पड़े हैं।



## अध्याय 19

### फैशन

( Fashion )

हम फैशन के बोल परिचित नहीं हैं। सामुहिक दुन का एक अत्यन्त लोक-  
प्रिय शब्द है। आज का दुन फैशन का दुन है। इसी के चलते लोगों के अस्त्र-  
स्त्रिणार, हाथ-काजरा, पैर-बूटा, चूल्हा-चूल्हा, कान-नाभ तथा और अनेकों और  
अनेकवार एक में बहुत बराबर देखा जाता है। हम फैशन के कारण समाज में  
असमानता है तो इस समानता को कारण में लोग समझ नहीं करते परन्तु  
और-और यह सामान्य जीवन का अंग बन जाता है। वास्तुतः मानव जीवन में  
परिवर्तनशीलता और समानता न होती तो जीवन में नीचता आभासी किन्तु  
फैशन के कारण ऐसा नहीं हो पाता। एक प्रकार समानता जीवन की गरम, मधुर  
और आकर्षक बनाती है और समानता जीवन पर आघात है। मानव-जीवन और  
जीवन में अधिक सम्बन्ध है। फैशन एक ऐसा सामुहिक व्यवहार है जो सर्वमान्य  
चरण के चिह्न होता है। यही चिह्नता इसे आकर्षक बनाती है।

### फैशन का अर्थ

(Meaning of Fashion)

फैशन का सामान्य परिचर्यों के हैं, किन्तु यह परिचर्य व्यवहार होता है और  
कुछ समय के लिए होता है। यदि समय एक कुछ लोग इसे आरम्भ करते हैं। कुछ  
ही समय में यह लोकप्रिय और कुछ ही समय बाद यह समाप्त भी हो जाता है।  
जिम्स हॉवर के अनुसार, फैशन लोकप्रियता का एक चक्र, चरण का प्रकार है जिसकी  
परिवर्तनशीलता या अस्थिरतात्मक प्रकृति इसकी मुख्य विशेषता है। (Fashion  
is a type or phase of social interaction characterized mainly by  
its changing and unperpetual character. James Dunsen, 1958)

रॉस का विचार है कि, "फैशन किसी समूह के लोगों की पसन्दों में बार-बार  
होने वाले बदलावों की श्रृंखला है। यही ही एक परिचर्यों की कोई उपरोक्ति  
ही वा न ही, किन्तु यह परिचर्य उपरोक्ति के कारण नहीं होती।" ( "Fashion  
is a series of recurring changes in the choice of a group of  
people, which, though they may be accompanied by utility are  
not determined by it" Ross, 1915 ).

विशेष रूप के अनुसार, "पैशन सामाजिक व्यवृत्तियों की स्थापना करने का तरीका, रूप या विधि के प्रदर्शन की विशेषता है, जिसे प्रचार या प्रचलन की अनुमति देती है। यदि प्रचार की सामाजिक व्यवृत्तियों का स्थायी रूप करने की पैशन की सामाजिक स्वीकृति के सम्बन्ध में परिवर्तन की संज्ञा दे सकती है।" (*Fashion may be defined as the manner or prevailing usage, mode, custom or characteristic of expression, presentation or conception of those particular cultural traits which custom itself allows to change. If we consider custom as stable and permanent phase of social behaviour fashion may be thought of as a variation permissible within this general acceptance.* Kimball Young, 1956)

ब्रिट ने कहा है, "पैशन एक सामाजिक प्रथा या प्रथा द्वारा स्वीकृत व्यवृत्ति है जिसमें विशिष्ट एवं अस्थायी प्रति पड़ती है।" (*"Fashion may be defined as impermanent connotation or socially accepted habit marked by distinction and change"* Brit; S.R., 1957)

बी. बी. अकीलकर के अनुसार, "पैशन, किसी सामाजिक प्रथा में साधारण के बीचा अथवा मामूली परिवर्तन है, एक स्वीकृति है जो बीते समय तक एक वैध प्रतीति है तथा कुछ समय तक स्वीकृत प्रतीति है। प्रीति के कारण वह सामाजिक हो जाता है जो वह मनोवैज्ञानिक कार्य कर कर होता है जिसके बिना वह वास्तव होता था। इसके अन्तर्गत या तो पैशन का स्वरूप हो जाता है या अपनी अपनीविधा के कारण प्रचलित हो जाता है।" (*"A fashion is a slight or trivial departure from the usual, an innovation, which tends to be accepted in a society for a short while, which enjoys a brief period of popularity and having become common place on account of its spread, ceases to discharge the psychological function it was originally meant to discharge. There after, it may either disappear or if it found to have some convenience or utility value, may stabilize itself and find a permanent place in the life of the people"* V. V. Akelkar, 1960)

### पैशन का स्वभाव एवं विशेषताएँ

(*Nature & Characteristics of Fashion*)

निम्न विशेषताओं का वर्णन किया गया उनके सिद्धान्तों के पैशन के स्वरूप का प्रभाव पड़ता है तथा निम्न विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं :—

1. परिवर्तनीयता (*Changeability*)—पैशन की एक प्रमुख विशेषता

इसकी परिचयनशील प्रकृति है। चैतन्य हमेशा स्थायी होता है। कुछ ही समय बाद चैतन्य बदलता है। चैतन्य से स्वीकृति की इच्छा की पूर्ति होती है। अतः सीधे-सीधे समय पर इसमें परिवर्तन आवश्यकता होती है। अतः एकरूपता के योग्य उस जगह में स्वीकृति परिवर्तन की आवश्यकता का अनुभव करते हैं जिसकी पूर्ति चैतन्य के परिवर्तन योग्य चरित्र के होती है।

2. चैतन्य समूह की प्रकृति से सम्बन्ध होता है ( *Psychic and group characteristics* )—जब तक चैतन्य समूह की प्रकृति नहीं बन जाती तब तक वह चैतन्य नहीं मान्यता ( *admits* ) कहलाती है। पर सीधे-चैतन्य शुरू होता है। समाज के अनेक लोग इसके प्रति भावपूर्ण प्रतिक्रिया करते हैं, किन्तु कुछ समय में वह समूह द्वारा प्रतीत किया जाने लगता है। कुछ मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि चैतन्य समूह की स्वीकृति के सम्बन्ध होता है।

3. उपयोगिता आवश्यक नहीं ( *Utility not essential* )—चैतन्य का आवश्यकतापूर्ण विकास इसकी उपयोगिता पर निर्भर नहीं करता। चैतन्य उपयोगी हो सकता है किन्तु वह आवश्यक नहीं है। यह वह उपयोगी होता है जो इसमें कुछ उपयोगिता देता जाता है। चैतन्य द्वारा स्वीकृति, प्रतिक्रिया और भावनात्मकता की इच्छाई सम्पूर्ण होती है इसी कारण उपयोगी न होने हुए भी लोग चैतन्य को मान्यता देते हैं।

4. अनुकूलता ( *Cooperativeness* )—चैतन्य में अनुकूलता का अभाव भी मान्यता प्राप्त है। सामान्यतः लोग चैतन्य की प्रकृति पर अपने आप की प्रकृति के अन्य लोगों के अनुकूल बनाने का प्रयास करते हैं। प्रकृति के अन्य प्रकृति के अनुकूल बनकर लोग करने समाज में पूर्ति करने सम्पूर्ण होते हैं। अतः उपयोगिता के वाक्यों ( *ethical and social characteristics* ) में पूर्ति के चैतन्य का अभाव मान्यता प्राप्त गति के होता है किन्तु अभाव लोग की उत्पत्ति ही ऐसा गति के होता है।

5. विवेकशीलता ( *Irrationality* )—अनेक प्रकार के चैतन्य अराकित प्रतीत होते हुए भी अराकित होते हैं। अतः चैतन्य की प्रकृति वाक्यों के अति यह प्रमाण प्राप्त कि ऐसा के नहीं करते हैं जो अतः के अभाव सीधे ही एक प्रमाण प्रमाण नहीं दे पाते। वे मान्यता यह करते हैं कि चैतन्य के कारण ऐसा करते हैं या दूसरी की प्रकृति करते हैं।

6. चक्रीय परिवर्तन ( *Cyclic change* )—चैतन्य में चक्रीय परिवर्तन की विशेषता पाई जाती है। अतः यह है कि जो लोग चैतन्य है कुछ समय बाद चैतन्य से बाहर हो जाता, और चक्रीय नहीं बाद शुरू नहीं चैतन्य का जाता है। चैतन्य प्रकृति के अभाव में प्रकृति सीधे ही चक्रीय चक्रीय चैतन्य बाहर होती है और चैतन्य



8. चैतन जीविक संस्कृति का बंध है, अर्थाई कार्यात्मक संस्कृति से सम्बद्ध होती है।
9. उदा सामाजिक विरासत के रूप में प्राप्त होती है। चैतन बहुमानी मानना का परिणाम है।
10. चैतन बहुधा सामान्य जीवन धारा के विपरीत चलता है। अर्थाई सामाजिक जीवन के अनुपम होती है।

**चैतन एवं धन ( Fashion & Cash )**—धन (Cash) ऐसा जीवनीय है जो बहुत ही पानुनी अवधि के लिए होता है। धन चैतन से भी अधिक तेजी से चलती है और चैतन से भी अधिक दूर यदि के परिचालित होती है। आमतौर पर है कि इसकी अवधि चैतन से भी कम होती है। चैतन के अन्तर्गत छोटे-बड़े अनुकूलिक बदलाव भी जारी रहिये और अनेकानुस कम बहुमूर्त होते हैं, पर धन कई जाते हैं। धन, चैतन का एक भाग है जो कार्पोरेट्स, अत्यंत और सामर्थ्य होती है। निम्नलिखित रूप से धन के अर्थ की पूर्ण कल्पना करता है कि, "धन ऐसी तथा, कार्यात्मक, वैधानिक, संभाव्यता का भाग है जो कुछ समय तक अवधिगत लक्ष्य के साथ चलती है।" ("Cash is a continuous, discontinuous or vague in time or discontinuous time is followed for a time with an exaggerated end." Kimball Young; 1958 )

यह चैतन अधिक फैलता है तथा उसमें बदलाव जारी-जारी जाता है ही धन का आधार बनता होता है।

**चैतन तथा श्रम ( Fashion & Greed )**—श्रम की अवधि धन से अधिक होती है। चैतन की अनेक श्रम में अधिक अवधिगत होती है। श्रम की चलति सांस्कृतिक सुख तथा अनुदान के द्वारा विकसित सामाजिक व्यवहार होती है। इसमें लाल लाल, अत्यंत के रूप (Manner) यदि की केवट्टी के लक्षण बनती है। श्रम के लक्षण चैतन का अनुदान श्रम (Greed) बहुमानी है। एक चैतन की धन ही जाने वह श्रम (Greed) बन सकती है और यह उलटा कल्पना की अनुकूलता में ही जाता है ही वह श्रम ही चैतन का रूप के होती है।

**चैतन एवं स्टाइल ( Fashion & Style )**—चैतन के अन्तर्गत कभी-कभी नई शैलियाँ भी प्रचलित हो जाती है जिन्हें स्टाइल कहा जाता है। उदाहरण के लिये नारा प्रकार की सुई धागे का चलन समय-समय पर होता है जिसे स्टाइल कहा जाता है। इस प्रकार स्टाइल, चैतन तथा चैतन में ही ही जीवनीय से सम्बद्ध है।

**चैतन मनोविज्ञान ( Psychology of Fashion )**—चैतन का आधार विवेचन, लक्ष्य चिन्तन यदि नहीं है वह मानवार्थी, सुखार्थी, एवं अनुदान की





जीवन है वा सामान्य लोगों के दिव्य मिशन है कि जो सामान्य भी होती है। लोगों की मिशन की दृष्टि जीवन की और आकाश परती है और अन्तर्गत है कि दिव्य जीवन की प्रत्यक्ष दृष्टि के कारण जीव जीवन की अन्तर्गत है।

५. **बहु प्रसार ( Bigg expansion )**—पीपल के पार्श्व के बहुमान की संशोधन प्राप्त होता है। पीपल की जलजानि वाले अपने जलजानि अतिरिक्त, अधिक पानी, दुबरी के जलजानि का प्रसार करते हैं। इन सब के पीछे बहु मानना कारणों होती है। प्रसार की मानना के जलजानि बहुमान की दृष्टि अनुप्राप्त होती है। अतः पीपल बहु संशोधित का गुण मानना है।

3. **अति पुष्टि (Over-saturation)**—इसी प्रकार कुछ जीवों का जीवन पैदावण होता अतिपुष्टि का प्रभाव होता है। अवाहन के लिये शुक्र, अति जीवों द्वारा आनुवंशिक जीवन के कणों का प्रसार, किसी-कहें कद सभी महिला द्वारा हाइड्रोस की चमड़ी के अन्दर की अति पुष्टि के प्रभाव से प्रेरित हो सकती है। अनेक जीव किसी हीन वातावरण में प्रेषित होने के कारण अतिपुष्टि अवाहन के रूप में जीवन की वीर्य प्रकटते हैं। यह प्रकार अवाहन जीवों की शिराओं के लिये जीवन अवधारणा का है।

६. **समीक्षा और परिसमीक्षा (Midvalley and Revaluing)**—कुछ महान-  
कायना परिसमीक्षा की बहुत संख्या आते हैं। ऐसे तीन चरण के परिसमा होते हैं।  
समीक्षा और परिसमीक्षा सभी को सुनाता है क्योंकि व्यक्ति चुपचाप बसनेवाले, चुपचाप  
रहनेवाले, चुपचाप आचरणवाले के अन्तर्गत है। अतः समीक्षा ही सभी की संख्या होती  
है किन्तु कुछ लोग समीक्षा और परिसमीक्षा के बीचमें होते हैं। यही-यही आत्मिक-विकास  
के कारण सभी बसनेवाले की उपस्थिति में आते हैं, और अन्तर्गत चरण का अन्तर्गत  
की संख्या की यह संख्या है।

7. फैशन एवं अनुकरण (Fashion and Imitation) पैदाश के अनादु  
 जाने में अनुकरण की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अनुकरण, दूसरी की पैदाश  
 हुए पैदाश करने वा देखने-पहचान करने की प्रवृत्ति है, जो पैदाश के अनादु जाने  
 में महत्वपूर्ण है। उदाहरण यह है कि अनेक लोग अनुकरण की प्रवृत्ति के कारण फैशन  
 को अपनाते हैं। कुछ लोग फैशन को पहचानने की प्रवृत्ति के कारण (अनुकरण) में  
 विशेष प्रयत्न, पैदाश पैदाश, विशेष पैदाश-पान, वाली वाणि को अपनाते हुए अनेक  
 पैदाश करते हैं। फैशन, फैशनिंग में लगे-लगे पैदाश के कारण अनुकरण प्रवृत्ति अनेक  
 लोग लोभी की पैदाश अपनाते हैं।

४. धीरे आकर्षण (Sea attraction) — वीरग, समान, के मूल सर्व को करने अधिक आकर्षित करता है। विपरीत में विपरीत धीरे (opposite sex) के सदस्यों को अपनी ओर आकर्षित करने की प्रवृत्ति प्रकट होता है।



प्रेम के प्रसार में अन्तर् व्यवसाय से जुड़ा भी बहुमूल्य सुविधा बना पाता है। अपने राजाओं की विही बहने के लिए वे राज्य अन्तर् के प्रचार करते हैं।

अधुना विचार है स्पष्ट है कि आज के युग में अन्तर् सामाजिक नियंत्रण का एक प्रमुख एवं प्रबल साधन है। औद्योगिक जीवन प्रणाली में जारी जीवन के कारण भी आज व्यक्ति के साथ साथ प्रचार के लिए व्यक्ति अपने और सम्बन्धित है। जीवन स्तर के उन्नत होने से भी जो प्रेम प्रेम का अधिक अनुप्राण कर रहे हैं। आज बहने की अनेक व्यक्ति लोगों की कुछ आयन, सुविधाई यदि प्राप्त है या ऐसी स्थिति में प्रेम की और प्रसार का अधिक होने सामाजिक है।

आज प्रेम सामाजिक परिवर्तन का बहुमूल्य अंग है। प्रार्थ, परस्परार्थ, भावार्थ, प्रेम, यदि हमारे जीवन में नियंत्रण, अनुप्राण, अन्तर्गत और प्रीति का है तो प्रेम प्रेम अपने अन्तर् होने वाले परिवर्तनों के द्वारा अपने अन्तर् है और सामाजिक में सुविधा करता है।



## अध्याय 20

### जनमत

( Public Opinion )

सार के प्रसारार्थक रूप में जनमत एक अत्यन्त बहुचर्चित शब्द है। जनमत के आधार पर सरकारें चलती और चिलती हैं। अनेक बहुलसूची निर्देश जनमत पर निर्भर करते हैं। जनमत शब्द की जड़ों के बीच के क्या हैं—जन या जनता क्या मत। इसकी सीमाएँ क्या करती नहीं चलिनी होनी।

#### जन या जनता तथा मत का अर्थ

( Meaning of Public and Opinion )

जन/जनता सीटिन भाषा के पब्लिकस (Publicus) के लैटिनी स्रोतपर सतिव (public) से बना है। इसका अर्थ है पब्लिक, जन या जनता या जन समूह ( People )। व्यक्तिओं के समूह को सामान्य अर्थ में जनता कहा जाता है। किन्तु समाज मनोवैज्ञानिक इस पर का खोज भिन्न अर्थ में करते हैं। यह ऐसा जनसमूह है जो आभासी एवं अनर्गल होता है किन्तु जनता एक स्थान या एक समय की परिधि में सीमित नहीं होती और सदस्यों में आपसी व्यक्तिगत एवं सामने-सामने के सम्पर्क नहीं होते बल्कि बीच दूर-दूर तक बैठे और बिछरे होते हैं। एक बात हमें समझ होनी है—इसके विचार एवं अभिवृत्तियाँ, काफ़ी समान होती हैं। ऐसी ही निवेष्टाओं की चर्चा किमबल यंग ( Kimball Young ) ने जनता को परिभाषा में की है—

सामान्य अभिवृत्ति वाले व्यक्तिओं के एक झोले वाले का से सँघट और निर्युक्त समूह की जनता कहते हैं। ( The public refers to a rather loosely organized and conjoined grouping of people with a common interest ) Kimball Young, 1957.

किमबल ( Kimball, 1954 ) ने कहा है कि, “अनर्गल एवं आभासी व्यक्ति समूह जिसके सदस्य सामान्य विचारों एवं इच्छाओं से आपस में बंधे होते हैं, किन्तु सदस्यों को संसा इसी अधिक होती है कि वह बाजार में निजी सम्पर्क नहीं रख पाते।” (“The public may be described as an unorganized and amorphous aggregation of individuals who are bound together by common opinion and desires but are so numerous for each to maintain personal relations with others.”) Kimball, 1954

आम सम्प्रेषण साधनों ( mass media ) के कारण जनता की सामूहिक संज्ञा का स्वरूप बहुत जटिल एवं व्यापक है। उदाहरण के लिए 'राष्ट्रमन्त्रालय' पढ़ने वाले जनता, जो टी-वी- / स्पाइ टी- टी- देखने वाली जनता, क्रिकेट देखने वाली जनता आदि। उपर्युक्त परिभाषाएँ जनता की विभिन्न विशेषताओं को दर्शाते हैं :-

(i) बहु-व्यक्तियों का समूह ( multiplicity ) और असंगठित समूह है। इसमें जनताओं की संख्या बहुत अधिक और अनिश्चित होती है।

(ii) जनता की अधिकता के कारण साधनों में आपने-आपने के अलग-अलग विचार व्यक्त नहीं हो पाते।

(iii) जनता के अलग-अलग-अलग विचार एवं चेतने होते हैं। यद्यपि सभी एकता तथा अधिकतम समन्वित होती है।

(iv) असंगठित समूह होने के वजह से जनता के व्यवहार में समरसता का अभाव होता है।

### मत का अर्थ

( Meaning of Opinion )

किसी विषय पर व्यक्ति का विचार कहना मत कहलाता है। किसी विचारधारा विषय पर व्यक्ति के विचार, सर्वोच्चतम दृष्टि के मत कहलाते हैं।

किथल यंग ( Keithell Young, 1937 ) के अनुसार, 'मत वह विचार है जो सामान्य विचार या धारणा के अतिरिक्त एक अलग विचार, पूर्ण अथवा आंशिक विभिन्नता से कम अलग होता है। वह विचारधारा विचार पर एक विचार है।' ("An opinion is belief taken when someone takes a position without complete or impression that his statement is an adequate knowledge based on complete or adequate proof. Opinions are beliefs about a controversial topic.")

ब्रुस वुड कुली ( Bruce W. Cooley ) मत की वैयक्तिक विचारधारा विचार की सीमित परिधि तक नहीं पाते। उनके अनुसार, किसी भी बहुसंख्यक विचार के मत समझ ही कहलाता है। किन्तु धारणा मत ऐसा व्यक्तिगत या विचारधारा मत होता है जो किसी विचारधारा विचार से अलग होता है।

जनता तथा मत के अर्थ की समझ करने के बाद जनमत के अर्थ एवं परिभाषाओं पर ध्यान देने का भी आवश्यक है।

### जनमत

( Public Opinion )

सामान्यतः इसके अतिरिक्त अर्थ के अनुसार जनमत का अर्थ जनता के

विचारों के हैं : जनमत किसी विचारधारा विषय में विभिन्न एक प्रकार का सामूहिक मत है जिसमें सामूहिक द्वि-निहित होता है ।

किमस बंश के अनुसार, "जनमत, जनता द्वारा किसी विषय पर व्यक्त मत है ।" ( "Public opinion consists of the opinions held by a public at a certain time." )

डूब ( Dobb ) के अनुसार—“जनमत किसी एक विषय पर ऐसे व्यक्तियों को उस समुदाय के समस्त होते हैं, जो अधिकांश अधिकारियों को कहते हैं ।” ( "Public opinion refers to people's attitudes and to those who think that are the members of the social group." )

सीसी ( Dewey ) का कहना है कि ".....जनमत एक निर्णय है जो उनके द्वारा किया गया स्वीकार किया जाता है जो जनता का निर्माण करते हैं तथा वह निर्णय जनता के सम्बद्ध होता है ।" ( "Public opinion is a judgment which is formed and sustained by those who constitute the public and is about public affairs." )

वाकर लिपमैन ( Walter Lippman ) के अनुसार, "समूह के प्रतिष्ठान के बीच के विषय, उनके स्वयं के विषय, अन्य लोगों के, उनकी आवश्यकताओं के, इच्छाओं तथा सम्बन्धों के विषय ही उनके जनमत होते हैं ।" ( "The pictures inside the heads of.....human beings, the pictures of themselves of others, of their needs, purposes, and relationships are their public opinion." )

कृष्णस्वामी ( Kappaswamy 1961 ) के कहा है कि "एक समय विवेक में किसी समस्या विवेक के बारे में एक छोटे या बड़े समुदाय द्वारा स्वीकृत मत ही जनमत है ।" ( "Public opinion consists of opinions held by a people of smaller or a larger community about a particular problem at certain time." )

गिडबर्ग ( Giddens, 1955 ) के अनुसार, "जनमत का अर्थ समुदाय में उपस्थित उन विचारों एवं निर्णयों के कुल से होता है जिसमें निश्चित मत के प्रति-पादित होते हैं और काफी स्थायी होते हैं ।" ( "By public opinion is meant the mass of ideas and judgments operative in a community which are more or less definitely formulated and have a certain stability and are felt by the people, who entertain or hold them to be social in the sense that they are result of many minds acting in common." )

जनमत निर्माताओं के आधार पर जनमत की कुछ विशेषताओं की वर्णन करना संभव है।

### जनमत की विशेषताएँ

(Characteristics of Public Opinion)

- (i) किसी सामंजसिक समस्या, विषय, कार्य के सम्बन्ध में ही जनमत है, जो सम्पूर्ण जनता के द्वि में होता है।
- (ii) जनमत के सर्वोच्च अधिकारक सत्ताओं का मत सम्बन्धित होता है।
- (iii) जनमत तब निर्मित होता है जब समूह के अनेक लोग किसी सामंजसिक समस्या पर बीच-बिचार करके सामूहिक निर्णय करते हैं जो जनहित में होता है।
- (iv) जनमत बनने में सामाजिक सम्बन्धितताएँ निर्दिष्ट होती हैं।
- (v) जनमत सर्वोच्च तथा सर्वोच्च की ही सम्बन्धित है।
- (vi) जनमत सामंजसिकता एवं समता होता है।
- (vii) यह समूह के सदस्यों के विचारों, पूर्णों, भावों, सम्बन्धों, पूर्ण-कीलों और पूर्णताओं के सम्बन्धित होते हैं।
- (viii) जनमत बनने में द्वितीय, सामाजिक सम्बन्धितता तथा नेता की भूमिका भी होती है।
- (ix) जनमत में सम्पूर्ण जनता की सक्रिय भागीदारी की शक्ति एवं सम्बन्धित होती है।
- (x) जनमत निर्माण में बहुत, विवेचना, उर्ध्व चिन्तन और मत सम्बन्धित सम्बन्धित निर्दिष्ट होती है।
- (xi) जनमत का एक सामाजिक सामूहिक आधार होता है।
- (xii) जनमत का निर्माण करने वाली में सम्बन्धित सत्ता एवं सम्बन्ध के कारण दूर-दूर होते होते भी एक दूसरे के सुनिश्चित होते हैं।

### जनमत निर्माण की प्रक्रिया

(Process of Formation of Public Opinion)

जनमत निर्माण की अनेक समस्याएँ होती हैं। इसके निर्माण में कुछ समय लगता है, यहाँ एकदम जनमत नहीं बनता। इसके निर्माण में निम्न समुच्च जनताएँ (Stages) आती हैं :-

1. समस्या का विषय की उपस्थिति (Issue or Problem)—किसी समस्या जनमत निर्माण नहीं होता (विषयक क्षेत्र, 1957) समस्या किसी विशेष व्यक्ति से सम्बन्धित होती है समूह या समुच्च के सुनिश्चितता के लिए होती है। समस्या का सम्बन्ध जनहित में होता है। केवल नहीं नहीं जनमत का निर्माण

विचारधारण होना चाहिये :- जनसभा को ऐसा बन देने का प्रयास करते हैं कि वह अव्यक्ति और जनसभाओं में सार-विचार, सीध-विचार की जगह दे सके । इसे कारण जनसभा का विचार समुह की व्यक्ति, सामूहिक, व्यक्ति, सामाजिक जीवन आदि समस्याओं में संबद्ध हो सकता है ।

2. समस्या के सम्बन्ध विचार-विमर्श ( Deliberation about the problem )—जनसभा विचार की दूसरी अवस्था में समस्या के विभिन्न पक्षों पर विचार-विमर्श, तर्क-वितर्क होता है । जिन तर्कों पर विचार होता है वे जनसभा की संकीर्णता, संघर्ष समाधान, जिन व्यक्तियों से सम्बन्ध है :- समाधान का विभिन्न पक्षों से सम्बन्ध, समाधान के तरीकों के सम्बन्ध होते हैं, विभिन्न विचारों और समस्याओं को देखते, टी-बी, पक्ष-व्यक्तियों के मतभेद के समाधान लोगों एक पहुँचाया जाता है और उसके द्वारा व्यक्तिगत तरीके पर विचार होता है । इस प्रकार समस्या की संकीर्णता, उसके बहुतों और समाधान की लाभ-हानि की जाती है । समाधान के लिए परिवार नियोजन की समस्या का समाज की समस्या सम्बन्ध है विचार जनसभा विमर्श का बहुत प्रयास बन रहा है ।

3. समस्या के वैकल्पिक समाधान ( Alternative solution )—एक छोटे चरण में जनसभा के विभिन्न समाधान प्रस्तावित होते हैं वैकल्पिक समाधानों में विचार में संगठित सार-विचार एवं विचार विमर्श होता है । कभी-कभी समाधानों के समाधान के समय सीध व्यक्तिगत का प्रयास व्यक्तिगत होता है अर्थात् व्यक्ति स्वयं विचार से कार्य न करके समुह के अनुसार कार्य करती है । इस अवस्था एक किन्तु संघ के अनुसार समस्या स्पष्ट हो जाती है । समाधान के लिए परिवार नियोजन के विचार में लोगों के विचारों का समीक्षात्मक व विचार में होने लगता है ।

4. सर्वसम्मति निर्णय पर पहुँचना ( Arriving at consensus )—एक चरण में व्यक्ति समस्या के विचार में एक मत पर पहुँच जाते हैं अर्थात् सर्वसम्मति निर्णय का विचार हो जाता है । जब हर समुह की व्यक्तिगतता समाप्त हो जाती है । यह निर्णय सीधे तौर पर किया जाता है बिना व्यक्तिगत संघर्ष सहमत हो । सम-संघर्ष मत होते हुए भी व्यक्ति जनसभाओं में भी सम्मेलनपूर्ण प्रयास दिया जाता है । समाधान के लिए परिवार नियोजन के कुछ विचार तरीकों पर सहमत हो जाती है ।

5. ज्ञान करण ( Implication )—जनसभा विचार के प्रयास सर्व-सम्मति निर्णय की अवस्था में ज्ञान किया जाता है । यह जनसभा के विचारमण्डल से सम्बन्ध है । विचारमण्डल के विचार जनसभा विमर्श के कोई लाभ नहीं होता । यह जाती जन संघर्ष ( social conflict ) के प्रभावितता पर निर्भर करता है ।



## जनमत निर्माण के निर्धारक

( *Determinants of Formation of Public Opinion* )

जनमत निर्माण की प्रक्रिया की अनेक स्तरों पर प्रभावित करते हैं : इनमें कुछ प्रमुख स्तरों का विवरण है :

1. प्रेरणा ( *Motivation* )—जनमत के प्रति सम्बन्ध व्यक्तियों का अभिप्रेरित होना आवश्यक है । जब तक लोग जनमत निर्माण की प्रक्रिया सम्बन्धपूर्ण नहीं होती सामान्यतया सम्बन्ध लोगों में उनके प्रति प्रेरणा नहीं होती और तब तक उनके विषय में जनमत निर्माण की नहीं होता । जनमत के प्रति प्रेरणा और सामर्थ्य सभी अनुवात में होता बिना अनुवात में वह सम्भवता सम्बन्धित के सम्बन्ध होती । जनमत में प्रतिबिम्बता विद्यमान होने पर लोगों के प्रेरित होने की सम्भावना अधिक होती है ।

2. विरोधी प्रभाव ( *Cross pressure* )—जब एक व्यक्ति अनेक समूहों, वर्गों, कक्षाओं, वर्गों आदि में पड़ा होता है जिसके अन्तर्गत एक उद्देश्य एक दूसरे के विरुद्ध होते हैं । तब तो वह नहीं कभी कभी इसके उद्देश्य परस्पर विरोधी होते हैं । ऐसे विरोधी प्रभाव जनमत निर्माण में अन्तर्गत सम्बन्ध करते हैं । ऐसी घटा में व्यक्ति यह नहीं निर्दिष्ट कर पाता है कि वह क्या करे या क्या न करे ।

3. सामाजिक घटपट्टाई ( *Social structure* )—जनमत के बनने में सामाजिक घटपट्टाई जैसे जनसंख्या-वर्ग, सामूहिक व्यापार, किसी प्रतिष्ठित नेता की हवा आदि का बहुत प्रभाव पड़ता है । उदाहरण के लिए राष्ट्रीय पार्टी की हवा के प्रभाव नहीं का कारण है वह में सामूहिकता तथा केन्द्र में कोई सम्बन्ध का तब सामाजिक घटपट्टाई का ही परिणाम था । विम्वल वंग ( 1937 ) के अनुसार "घटपट्टाई जनमत की निर्मित कर के प्रभावित करती है । केवल जनता प्रतिष्ठित होता ही नहीं पाएँ जिस वंग के अपनी व्याख्या की जाती है वह भी महत्वपूर्ण है ।" ( *"Structure of individual public opinion. Not merely that organization but the character of the party and its organization is important."* )

बीनले इन्डिया पार्टी की 1944 में निर्णय द्वारा के कांग्रेस की विम्वल प्रचार का ऐतिहासिक महत्व प्राप्त हुआ वह केवल जनमत प्रभावण है । राष्ट्रीय पार्टी प्रभावण कर के उद्योग वंग के फलस्वरूप हुए, वह भी नहीं द्वारा पार्टी सामाजिक घटपट्टाई का परिणाम था ।

कॉन्ग्रेस ( *Congress* ) के द्वितीय विभाजन के समय अपने सम्बन्ध द्वारा घटपट्टाई के विषय में विम्वल निर्णय प्राप्त किए थे—(1) घटपट्टाई व्यक्ति के सुर्गों की प्रतिष्ठित कर करती है, (2) के लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सम्बन्ध

का समुह है, (3) लोगों के मन में होने हुए बातों की अभिव्यक्ति करा सकते हैं, (4) परमात्मा द्वारा व्यक्तिगत के सुख-दुःख की अवधारणा हो सकते हैं, (5) परमात्मा के सम्बन्ध आत्मार्थ परमात्मा द्वारा बनल जाती है, (6) परमात्मा लोगों के बहिः, अन्तर्यामी, विचारों, भावों और सुखों को समझ सकती है ।

4. सामाजिक मानक एवं मूल्य (Social standards and values)—अनेक प्रकार के कुछ विशेष मानक एवं मूल्य अवधारित होते हैं, जो किसी समाज के विषय में अवलोकन निर्माण को अवधारित करते हैं । समाज के अलग-अलग वर्ग बहुत मानकों के विपरीत अवलोकन निर्माण का कारण नहीं करते बल्कि सुनिश्चित अवलोकन का ।

5. सामाजिक वर्ग का प्रभाव (Influences of social class)—अनेक प्रकार के अनेक वर्ग होते हैं और अनेक व्यक्ति किसी व किसी वर्ग के कुछ होते हैं । व्यक्ति अपने वर्ग विशेष की विचारधारा के विपरीत मत अभिव्यक्ति करने का साहस नहीं करता है । एक प्रकार अवलोकन निर्माण पर सामाजिक वर्ग का प्रभाव भी पड़ता है । जो लोग अपने वर्ग के सुविधाओं के विपरीत मत व्यक्त करते हैं वह अपने सामाजिक वर्ग में अपना स्थान, मान तथा सम्मान को खोते हैं ।

6. जन संघार आन्दोलनों का प्रभाव (Influences of mass movements)—आज जन संघार के सांख्यिक मानकों द्वारा व्यक्ति अपने-अपने पर प्रभावार्थ व्यक्त करता पड़ता है । आज के युग में अवलोकन निर्माण को समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, टी-वी तथा रेडियो आदि अवधारित हो नहीं निर्धारित भी करते हैं । कारणोंना इसी प्रेरणा की वजह से कुछ व कुछ अवलोकन पर प्रभाव अपना सकते हैं । कोई व्यक्ति किसी प्रेरणाई बार-बार व्यक्त करता है वही ही बार-बार विचार और वही ही मानसिकता विकसित हो जाती है । विचारों द्वारा लोगों की अवधारित करने का बहुत प्रभाव इसी विकसित की एक नहीं है ।

7. पूर्वाग्रह, विचारधारा तथा रुढ़ियाँ (Prejudices, beliefs and stereotypes)—अवलोकन निर्माण में अनेक में अनेक पूर्वाग्रह, विचारधारा तथा रुढ़ियों की बहुत प्रतिकूल विचारों हैं । बहुतों लोग सामाजिक सांख्यिकता के प्रति, यदि वह अवधारित पूर्वाग्रहों, विचारधारा, एवं रुढ़ियों के कारण पर अवलोकन निर्माण कर लेते हैं । अतः यह अवलोकन निर्माण का बहुत विपरीत है ।

8. अप्रत्याश और संघार (Unexpectedness and surprise)—अवलोकन निर्माण की प्रक्रिया समाज में अनेक अप्रत्याश तथा संघार के पक्ष हो जाता भी बाकी मान में अवधारित करते हैं । जब सामान्य लोगों की प्रेरणाई नहीं हो रही होती या बहुत प्रेरणाई अवलोकन होती है तो व्यक्ति अप्रचार तथा अप्रत्याशों वा विचारों काके अवलोकन निर्माण कर लेते हैं ।

9. नेतृत्व ( Leadership )—जनमत निर्माण में नेता की भूमिका भी बहुत होती है। नेतृत्व शैली का चुनाव जनमत निर्माण में महत्वपूर्ण कारण है। सफल नेता जनमत को निर्माण करने में प्रभावित करता है :—

(i) नेता जनमत को प्रस्तुत करते समय उसे ऐसे ढंग से पेश करता है कि जनमत निर्माण क्रिया प्रभावित हुए बिना नहीं रहती।

(ii) सफल नेता अपने सम्बन्ध प्रदर्शनों की दृष्टि के लिए जनता की रुचियों की व्याख्या एवं प्रसार करता है कि विवेक विचार में इसे जनमत निर्मित होता है।

(iii) नेतृत्व शैली की जनमत निर्माण की प्रभावित करती है। प्रभावशाली नेता राष्ट्र के कार्यों में अपनी बहुमतिता द्वारा सीमाओं को पार करती बिना में जनमत विकसित कर देता है। इसके विपरीत कमजोरी नेता जनमत बनाने में अक्रियात्मक रहती होता। यह अपने विविध पहलुओं तथा व्यक्ति विशेष द्वारा जनमत निर्माण का प्रसार करता है और इसमें सफल भी होता है।

(iv) सांस्कृतिक विधायक ( Intermediary relationship )—सांस्कृतिक कार्यों के माध्यम से नेता की भूमिका, सांस्कृतिककार्य, सभी व्यक्ति, विवेक, बुद्धि आदि योगदानों आदि बहुत हैं जो जनमत निर्माण क्रिया को प्रभावित एवं निर्धारित करती हैं।

## जनमत के माध्यम या माध्यम

( Media or Agencies of Public Opinion )

जनमत निर्माण दृष्ट में होती होता। इसके अनेक बहुत साधन या माध्यम हैं—समाचारपत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो, टी०वी० आदि। इनका अलग-अलग कार्य बिना आसना।

1. प्रेस व समाचारपत्र ( Press & Newspapers )—प्रेस जनमत निर्माण का एक प्रमुख एवं प्रभावशाली साधन है। प्रेस के पत्र-पत्रिकाएँ, मैगजिन, समाचारपत्र आदि प्रकाशित होती हैं। इनमें प्रकाशित के सम्बन्ध जनमतों का विकास भी होता है जिसके विचार विमर्श एवं मातृमित्रता द्वारा सीमा जनमत बनते हैं। समाचार एवं विमर्श समाचारपत्र की जनमत निर्माण में होती बहुत भूमिका होती है। यह समाचार पत्र जनता की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा अन्य प्रकार की समस्याओं को प्रकाशित कर लोगों का ध्यान उपर आकृष्ट करता है। इन समाचारों में प्रकाशित समाचार भी समाचार प्रस्तुत कर अपने पत्र का विषय में जनमत बनाने के प्रयास करती है। समाचार प्रेस के अनेक विमर्श समाचार पत्र अनेक सप्ताहिक के मातृमित्रता में जनमत निर्माण में अनेक हुए हैं।

2. रेडियो, टेलीविजन ( Radio & T.V. )—रेडियो तथा टी०वी०



अनुसार किसी एक या एक से अधिक का उपयोग करता है। यद्यपि, यहाँ में वास्तव स्थितियों की संख्या कम की जाती है, ऐसी ही बात वास्तवों में अधिक प्रभाव-शाली है। इसके अतिरिक्त यौन के अभावक या अन्य विभिन्न स्थिति, सीमा, व्यक्ति, या अन्य कारण की अत्यंत विविधता में बहुतसारी भूमिका बजा पाती है।

## जनमत मापन

( Measurement of Public Opinion )

जनमत मापन या मूल्यांकन के लिए समाज विज्ञानियों के कुछ प्रविधियों का इतिरादन किया है। प्रयोगात्मिक समाजशास्त्र में जनमत तथा उसके मापन की विवेक बहुत कम है, क्योंकि सरकार समाज के अपने हुए प्रविधियों द्वारा पता चाली है। इसलिए जनमत के विषय कोई सरकार कार्य नहीं कर सकती। किसी की नीति या कार्यक्रम के विचारण के पूर्व समाज के विषय में जनमत का मूल्यांकन आवश्यक होता है। प्रशासकीय यदि एक ही और नहीं की सरकार के साथ किसी कारण पर हस्ताक्षर करें तो वह नहीं जनमत पर अपने सभी प्रभाव के अवगत होना चाहें। इसी प्रकार के बारे में किसी दल की सरकार के विचारण समाज में तथा केवल सरकार इस कारण के एक में जनमत समाज में विचार नहीं ही में समाज नहीं है।

एक कार्य के लिये निम्न प्रमुख तकनीकों प्रमुख होती हैं—

1. मतदान विधि ( Polling method )—किसी प्रमुख समाज के विषय में समाज द्वारा करने की सर्वप्रमुख विधि मतदान विधि है। निम्न दो प्रणालयों में जनमत मापन के लिए मतदान विधि की सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वाधिक प्रमुख विधि मानते हैं। इसका विकास अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव के पूर्व प्रयोग करने के लिये जी० एच० क्लिप ( G. H. Gallup ) ने किया था। क्लिप नाम की यह विधि जनमत मापन के उत्तरी ही लोकविधि है। इसके अत्यंत सरलता का विषय के प्रत्यक्ष कुछ लोगों की सूची का अभावकी संसार की जाती है। एक व्यक्ति का उत्तर ही अपना नहीं के एक में देना होता है। प्रशासकी के लिए राष्ट्रपति चुनाव में सभी प्रतिनिधित्व करने वाले ( party representatives ) मतदाता ( electors ) का समय कर अभावकी की प्रभावित करते हैं। फिर प्रत्यक्ष या अभावक तथा उसके बाद विवेकक और अभावकता जनमत का पूर्वकन किया जाता है।

एक विधि के द्वारा उ० ए० निम्न तथा के विषय चुनाव में पूर्वकन कि वह के लिये अनेक नहीं की गई। यह विधि का एक प्रमुख बीच यह है कि नाम ही नहीं, यदि में प्रतिनिधित्व प्रकट करने के कारण जनमत की विचार का बीच ही होता



है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय सांख्यिकीय में प्राप्त प्रवृत्ति के विनिश्चित नहीं होते। कभी-कभी अनेक व्यक्तियों का अनुमान (guess) सांख्यिकीय सिद्धांत होता है। इसका भ्रम सादे से भी हो सकता है। उदाहरण के तत्वावधि के अनुसार कसबत की अनुमानित या प्रतिष्ठितता का अनुमान निम्न प्रकार है :

इस विधि का बहुत बुरा यह है कि देशों के शहरों के सम्मान सम्मान्यताओं का विचार के द्वारा-मान्यता पुनर्स्थापित सम्मानों के संरक्षण द्वारा भी सम्मान पुनर्स्थापित में सम्मान्यता के लिए इसकी स्थापना यह है कि इस विधि द्वारा सम्मान मान्यता के अधिक सम्मान सम्मान है । साथ ही सम्मान-मान्यता के लिए विधि का शरीर के शरीर का शरीर शरीर शरीर के लिए सम्मान मान्यता के सम्मान की सम्मान्यता होती है ।

3. सम्पादकों एवं जन अधिकारियों के नाम वन (Lestara dan Kehormatan dan Jabatan) अधिनियमों-क्यों-क्यों बीच समान व्यवस्थाओं और प्रमुख नियमों पर विभिन्न सम्पादकों के सम्पादकों के नाम वन मिलते हैं या अन्य जन अधिकारियों जैसे मुख्य कार्य, प्रधान कार्य, राज्यपाल आदि की व्यवस्थाओं के बारे में वन द्वारा व्यवस्था कराते हैं। इस वनों के व्यवस्था के संविधान के सामान्य व्यवस्था की व्यवस्था मिले पाते हैं। इन विभिन्न वनों के विविधता के व्यवस्था के वन या विनय में व्यवस्था का बीच होता है। इस विधि के अनुसार की वनवाट नहीं या वनवाट नहीं। इस व्यवस्था विनयद्वारा विधि वने वन व्यवस्था के व्यवस्था वन की व्यवस्था कराते हैं। अतः इन वनों में व्यवस्था वन वनों व्यवस्था के व्यवस्था होता है।

समस्त विवेचना के फलतः है कि जनसमूह मान्य के विभिन्न प्रकार की मान्यताओं के अनेक विभिन्नता का अनुभव किया है। विभिन्न के मान्यता के अनुसार, मान्यता-कर्ता की बुद्धि, तथा मान्यता की उपस्थिति के आधार पर समस्त विभिन्नता का अनुभव किया जाता है।

Year	1999	2000	2001
1999	1999	2000	2001

### Importance of Public Opinion

समाधान में समझ के बहुत के सभी परिचित हैं। समाधान की समझा बहुत कुछ समझ के सभी मान्य तथा उनके अनुसार सभी सभी पर निर्भर करती है।

६. जनसङ्ख्या तथा प्रजनानांशिक नियंत्रण (Public opinion and demographic trends)—जनसांख्यिक नियंत्रण जनसङ्ख्या पर निर्भर करता है। ऐसा वह वह किसी व्यक्ति का जन्म रहने का अनुकूल वातावरण के बिना संभव नहीं होता क्योंकि समाज में ऐसा जनसङ्ख्या के लोगों द्वारा चुने जाते हैं। अनुसूचित जनजात सभी विधायक जनसङ्ख्या 10-12 लोगों के बाद वह से एक होते हैं। सभी लोगों को एक-एक विधान

संस्था के विभिन्न स्तरों पर ( 1993 ) में चलती पार्टी-जनता दल का संप्रसारण प्रक्रिया का अवलोकन उपलब्ध है ।

2. **सर्वकारी प्रशासन ( Generalized Administration )**—जनमत के सर्वकारी स्तर की अपनी नीतियों, नीतियों तथा कार्यक्रमों के बारे में जो प्रतिक्रिया ( feedback ) प्राप्त होती है उसके अनुसार सरकार जनमत के अनुसार होने पर उस कार्यक्रम पर और अधिक बल देती है तथा जनमत प्रतिक्रिया होने पर उसमें आवश्यकतानुसार संशोधन करती है अथवा उसे तथा हल देने का प्रयास करती है । ( Ginsberg ) के अनुसार जनमत के कारणों को पकड़ी कठिनी का ज्ञान प्राप्त होता है । जनमत के प्रतिक्रिया होने के बाद के सरकार सरकारों द्वारा के कार्य करने के बनती है ।

3. **अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध ( International Relations )**—राज सम्बन्ध के सांख्यिक सामग्री के चलते राजा संसार एक रूप में बंध गया है । किसी एक देश में होने वाला के प्रभाव से विश्व के अन्य देश बंध नहीं रहते । राज जनमत का महत्व इसलिए भी है कि अन्तराष्ट्रीय सम्बन्धों की बनने पहले में इसकी प्रविष्टा महत्वपूर्ण है । सामाजिकशास्त्र विचार सम्बन्ध में अन्तराष्ट्रीय जनमत के द्वारा प्रविष्टाओं की श्रुति बंधा । राज जनमत अन्तराष्ट्रीय सम्बन्धों की वैश्वपूर्ण बनने में प्रमुख प्रविष्टा निभाती है ।

4. **जनमत द्वारा प्रभावित ( Influence of people )**—जनमत के कारण जनमत में रहने की अवस्था प्रत्येक सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था होती या नहीं है जनता के विकास के कार्यक्रमों में सर्वोत्तम जनमत का ही परिणाम है । जनता प्रचार प्रचार नीति पर सरकार द्वारा बल जनमत के विकास में प्रगति का परिणाम प्राप्त होता है ।

5. **सूचना-प्रसार ( Propagation of Information )**—जनमत के द्वारा समाज के सदस्यों की दृष्टि के मत, विचार एवं प्रतिक्रिया की सूचना मिलती है । किसी विचार या व्यवस्था के बारे में प्रत्येक सूचना के कारण में व्यक्ति का अज्ञान रहता ज्ञान के अवस्थितिगत रूप में सम्भव नहीं है । यदि कोई ऐसा व्यक्ति होता तो वह जैसा प्रचार के प्रभाव और प्रत्येक विचार रहता होता, वह सुधारक ही बनता है । राज जनमत द्वारा लोगों में किसी व्यवस्था के प्रति सूचना का प्रसार एवं प्रभाव होता है ।







## बीड़ की विशेषताएँ

( Characteristics of Grass )

सर्वावैज्ञानिकों ने बीड़ की आन्तरिक विशेषताओं का जो विवरण दिया है वह बीड़ के सभी एवं एकत्र को सम्यक् करता है । इन विशेषताओं के सहारे हम बीड़ सर्ववैज्ञानिक का विशेषण कर सकते हैं । वहाँ, हम बीड़ की विशेषताओं को सभी बीड़ के विशेषण के द्वारा करेंगे । यह विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :—

1. अवशिष्टों का एकत्रित होना :—आधुनिक का एकबीकरण बीड़ की सर्ववैज्ञानिक विशेषता है । अनेक अवशिष्टों का किसी एक अवशेष में एकत्र होना इसकी सबसे बड़ी आन्तरिकता है । इसके सह सम्यक् है कि बीड़ में किसी अवशेष में अवशिष्टों का संग्रहित होना अनिवार्य है किन्तु अनेक एवं विशिष्ट आन्तरिक अवशेष होना है ।

2. अवशिष्टों (Disseminates)—आधुनिक एवं सभी बीड़ की एक अन्य सर्ववैज्ञानिक विशेषता यह है कि बीड़ के अवशेषों में सभी एक अवशेष की अवस्था पाई जाती है । सभी अवशेषों का अवशेष तथा सभी किसी एक अवशेष, वस्तु, या अवशेष पर केन्द्रित होती है और उसके समान होति हो बीड़ द्वारा-द्वारा हो जाती है इस प्रकार बीड़ के सभी अवशेषों का अवशेष अवशिष्ट वस्तु, अवशेष या अवशेष पर केन्द्रित होता है । अतः इन अवशेषों की सभी और अवशेष की एक अन्य अवशेष होती है । इस विशेषता की सर्ववैज्ञानिक की बहुत बड़ा है, जो कि सभी अवशेष विशेषता है । विमल वंग ( 1960 ) ने बीड़ में सर्ववैज्ञानिक की व्याख्या करते हुए कहा है कि, "बीड़ के सभी एक अवशेष अवशेष के अवशेष अवशेष के अवशेष के अवशेष अवशेष कर रहे होते हैं । बीड़ वृद्धि के सभी और बीड़ के वृद्धि के वृद्धि के वृद्धि हो । बीड़ के वृद्धि अवशिष्ट वृद्धि के सभी और वृद्धि के वृद्धि हो ।"

3. अवशिष्टों ( Translocation )—बीड़ अवशेषः अवशेष होती है । अवशेषों के सर्ववैज्ञानिक पर ही बीड़ एक होती है । यह सर्ववैज्ञानिक बीड़ ही अवशेष होती है बीड़ अवशेष हो जाती है । बीड़ का विशेष अवशेष किसी अवशेषिक अवशेष या अवशिष्ट के अवशेष पर पर होता है अवशेष किसी अवशेषिक अवशेषिक के अवशेष होता है और उस अवशेषिक अवशेष, या अवशिष्ट के अवशेष होति हो बीड़ अवशेष हो जाती है । बिट ( Bitt ) के अनुसार, बीड़ अवशेष में तीन अवशेष होते हैं—(1) सर्ववैज्ञानिक विशेषता, (2) अवशेष तथा सभी का सर्ववैज्ञानिक और (3) अवशिष्ट या अवशेषी अवशेष । बीड़ अवशेष अवशेष होती है कि इसके अवशेष होने के बाद यह भी अवशेष हो जाता कि इसके अवशेष बीड़-बीड़ में । अवशेष पर

हई चुँकीला के कारण सोयी की चीज इकट्ठा हो जाती है लेकिन 10-15 किण्ट के हो वह पचह आगि हो जाती है और दूर-दूर तक बिखी जा जाता रहा खुँ होता । अतः चीज व्यवस्था: असंगठी होती है ।

4. असंगठित ( Unorganized )—चीज व्यक्तियों का एक असंगठित सामाजिक समूह है । इसमें न तो कोई नेता होता है, न स्पष्ट उद्देश्य होते हैं, न नियम होते हैं और न ही इसके प्रचार्य निर्दिष्ट होते हैं । इस विशेषता को सभी बन्धु हुए मैकाइनर तथा पेज (Mc Iner के Page, 1953) ने कहा है कि, "चीज असंगठित समूहों के रूप में जाती है । इसका अर्थ यह नहीं है कि चीज का कोई प्रविधान ( Pattern) नहीं होता वा चीज की कोई विशेष अभिव्यक्ति नहीं होती । इसका अर्थ केवल यह है कि चीज की इकाइयाँ एक-दूसरे के संगठित नहीं होती हैं ।"

( The crowd belongs to our category of unorganized groups. We mean by this, not that crowd exhibits no patterns, no characteristic expressions but that entities in it are not organized to its relation to one another, Mc Iner & Page; Society : An Introductory Analysis, 1953. )

इसके चीज के असंगठित स्वभाव पर उदाहरण दिया है । चीज के समस्त समूह की किसी औपचारिकता का निर्वाह नहीं करते ।

5. सामान्य उद्देश्य एवं उद्देश्य (Common destination and intention)—चीज में एकत्रित सभी व्यक्तियों के उद्देश्यित अथवा सामान्य उद्देश्य एवं उद्देश्य दुर्निर्धार होते हैं । यह सामान्यता सभी तथा उद्देश्यों की उद्देश्यविधता के कारण होती है । असाधारण के लिए किसी विवाह पार्टी में कोई सोकर सारथिक स्वार पर की उम्मा माण्डर आने का उद्देश्य करता है तो बाग़र के अधिकारी समस्त उम्मा पीछा कर उम्मा के उम्मा में आ जाते हैं । इस प्रकार उद्देश्य पर का सामान्य कर आने वाले को उम्मा की होती है । सब में उद्देश्यित उद्देश्य (ओड) होता है अतः एक कुछ होकर आने वाले व्यक्ति का पीछा करते हैं । इसी प्रकार आने उम्मा ही ही चीज के सभी समस्त उद्देश्य उम्मा करते हैं, विशेषतः कारण उम्मा उद्देश्य की अनुवृत्ति है ।

6. सामान्य स्थानाधी विस्तारण ( Spatial dissemination )—चीज का उद्देश्य विविध होता है । इसमें चीज नहीं एक होती है नहीं एक चीज के उम्मा का पीछा होता है । चीज के उद्देश्य उम्मा की सामाजिक उद्देश्यित अथवा उम्मा आने सामान्य का उम्मा अथवा उम्मा है । इस विशेषता को विशेषतः उम्मा ने एक

लक्षणपूर्ण प्रभाव दिया है। इनके अनुसार बीड़ एक सीमित क्षेत्र के भीतर सीले होती है। इसे मर के बाड़ी वग बीड़ के समान नहीं होते बल्कि एक स्वतंत्र विधि व बीड़ों में ही इनके अनुसूतों और अनुसूतों होते हैं। केवल यह नहीं इनके समान बड़े आकार के विभिन्न कार्टेरिक विस्तार होती है बल्कि बीड़ का निर्माण एक अधिकृत स्थान तक सीमित होता है।

7. सामूहिक शक्ति की अनुभूति ( *Sense of social responsibility* )—कोई व्यक्ति भी व्यक्ति के कारण प्रभावों में सामूहिक शक्ति के अनुभव का प्रभाव देता है। कोई कारण केवल अपनी शक्ति पर निर्भर नहीं करता बल्कि वह सामान्य करता है कि सभी विचारों व्यक्ति उसके पास है बल्कि वह अपने अनुभव का अनुभव करता है। व्यक्ति का अधिकतम अनुभूति बीड़ के अधिकतम में विचार कर जाता है। इसी कारण बीड़ में अधिकतम व्यक्ति वह काम कर जाता है जो अधिक होने पर वह कराने व करता। अनेक तरीकों में भी बीड़ में अनुसूतों कार्य कर जाते हैं जिसकी अनेक अनेक प्रभावों में नहीं की जाती। इनकी भी बीड़ सामान्य वग सामूहिक शक्ति के अनुभव के कारण जाते व प्रभाव कर जाती है।

8. सामूहिक प्रभाव ( *Interpersonal influence* )—बीड़ की प्रभावों में सामूहिक प्रभाव अनुभव सुविधा प्रभाव है। इस प्रभाव के अनेक बीड़ के अनेक अनुसूतों की प्रभावों तथा अनेक के कारण बीड़ अधिक होती जाते हैं। किसी भीतर से प्रभाव होने पर वह प्रभाव की सुविधा है फिर भी बीड़ नहीं की जाती, प्रभाव तथा प्रभाव को करने पर प्रभाव हो जाती है। इस प्रभाव के कारण सामूहिक प्रभावों के कारण भी हीन प्रभाव करने का कारण सामूहिक प्रभाव है।

9. अनुसूतों का प्रभाव ( *Lack of sense of responsibility* )—बीड़ में अनुसूतों और अनुसूतों का प्रभाव होती है। अनेक विचारों के प्रभाव देता-देती तथा प्रभावों के प्रभाव पर प्रभाव करने करते हैं। प्रभाव यह होता है कि वे ही विचारों के कार्य करते देते जाते हैं। इस बात की प्रभाव कर कर देती है कि किसी कार्य के प्रति वे प्रभावों नहीं है की भी प्रभाव नहीं होने अनेक प्रभावों बीड़ पर होता।

10. गुरु सुविधा ( *Low degree of intelligence* )—बीड़ में प्रभावों के कारण सुविधा और प्रभाव पर प्रभावों प्रभाव गुरु हो जाती है। अनेक प्रभावों और सुविधाओं बीड़ में प्रभावों प्रभाव प्रभावों का प्रभाव भी प्रभाव देते जाते हैं। बीड़ का प्रभाव प्रभावों प्रभाव के प्रभाव प्रभावों में प्रभाव है। अनुसूतों और अनुसूतों में सुविधा की प्रभावों प्रभावों की प्रभावों प्रभावों है।

11. **इच्छा क्षति का अभाव** ( Lack of volition )—यह एक तरह की वैयक्तिक कक्षा है। बुद्धि की मूल शक्ति तथा उत्तरदायित्व की कमी अथवा अभाव की मूलता, अभावभावना, तथा उसी क्षति की कमी के कारण भीड़ के सदस्यों की इच्छा क्षति भी मूल हो जाती है।

12. **असहिष्णुता** ( Intolerance )—उपरोक्त वैयक्तिक कक्षाओं—बुद्धि की कम दक्षता, निम्नबुद्धि, अनुकूलशीलता, संयुक्तशीलता, दम्भात्मिक की मूलता, बुद्धिहीनता आदि के कारण भीड़ के सदस्यों में वैयक्तिक-वैयक्तिक का विरोध-अभाव का हो जाता है। क्षति की भावना के बीच में लोभ जन्मे हो जाते हैं। कभी-कभी भीड़ में नेतृत्व का भी विकास बहुत हो जाता है जो भीड़ के वैयक्तिक अभाव का जन्म में संश्लेष नहीं करते। भीड़ के अविचार प्रभाव से भी इसमें वैयक्तिकता के अभाव की बहुत बुराई मिलती है।

## भीड़ के प्रकार

(Types of Crowd)

समाज दर्शनशास्त्रियों तथा समाजशास्त्रियों ने भीड़ के विभिन्न वर्गीकरण किए हैं। इसी का विवरण संक्षुप्त करना संभव नहीं है। कुछ प्रमुख वर्गीकरण निम्न हैं—

**किम्बल संघ** ( Kimball's Typology ) का वर्गीकरण—

1. **व्यक्तिव्यापक या संस्थागत भीड़** ( Individual or institutional crowd )—जबकि भीड़ में संगठन का अभाव होता है किन्तु कभी-कभी भीड़ में कुछ औपचारिकता और कुछ निश्चित व्यवस्था के कारण पैदा होते हैं। इसमें कुछ औपचारिक सदस्यों की पहचान एवं नियमों का शासन होता है। इन कारणों के ऐसी भीड़ के सदस्यों के व्यवहार में कुछ संगति देखी जाती है। औपचारिकता तथा एक व्यवहार है।

2. **व्यक्तिव्यापक भीड़** ( Individual crowd )—ऐसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है ऐसी भीड़ में किसी प्रकार औपचारिकता, पहचान व्यवस्था अथवा नियमों का अनुसरण नहीं होता। यह किसी, सामाजिक परिस्थिति का अभाव के कारण उत्पन्न होती है, जैसे एक दुर्घटना के कारण उत्पन्न भीड़। ऐसी भीड़ किम्बल संघ के व्यवहारकारों की प्रकार की होती है—

(i) **निश्चित भीड़** ( Purpose crowd )—ऐसी भीड़ के सदस्यों में भीड़ के प्रति निश्चितता देखी जाती है। यह व्यक्ति किसी कार्य में भाग नहीं लेते।

(ii) **सक्रिय भीड़** ( Active crowd )—इस वर्ग की भीड़ के सदस्यों में सक्रियता एवं भावनाओं की निष्पत्ति देखी जाती है। इसमें व्यक्तिव्यापक की वृत्ति-संघर्ष होती है। यह भीड़ की प्रकार की होती है।

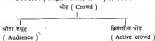
(क) आक्रमणकारी बीड़ ( *Attack type crowd* )—आक्रामकता हेतु बीड़ का प्रमुख लक्षण है। इन बीड़ के सदस्य अचानक, अतीवसाधुर, अविचारपूर्ण तथा आक्रामक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। वे अपने अनुयायियों तथा उद्देश्यों की पूर्ति के लिए दूसरों की व्यक्तिगत अधिकारों में भी कोई संकोच नहीं करते। लूट, चूरी, बग़-चाव, चले आदि के साथ-साथ होने वाले संघर्षों में अभिमुखित बीड़ इसी वर्ग की होती है। चले, मुद्रपाद, हत्या, आत्मघात, आतंकवादी आदि इसी के अन्तर्गत हैं।

(ख) भयभीत बीड़ ( *Panicky crowd* )—भयभीत होकर बचने इन बीड़ का प्रमुख लक्षण है। भय, घबराहट, घबराहट आदि इसके प्रमुख लक्षण हैं। जैसे जैसे बीड़का संख्याहीन आदि में जाती घबराहट, या भय जाती घबराहट की अत्यधिकता पर जाती हुई भयानक रूपका अत्यधिक अत्यधिक है। यह लोग सभी प्रकार में किसी उद्देश्य के लिए एकत्र हो और बीच-बीच में अपना कोई अनावश्यक प्रयास करित हो साथ ही बीड़ों में अत्यधिक चूरी-चोर जाती है और बीच-बीच में होकर बचने करते हैं।

विभिन्न बीड़ के वर्गीकरण की वैज्ञानिक द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रमुख बिन्दु बना है।



एनर बीरो ( Roger Beere, 1963 ) का वर्गीकरण







बीड़ की बहुत विविधता है। इनके अतिरिक्त, वाहनचालीयता, उड़ना, क्रियाशीलता आदि इनके अन्य लक्षण हैं।

4. **अभिप्रेतकालिक बीड़** ( *Impulsive Instinct* )—यह बीड़ अपने अनेकों एवं आनन्दों की अभिव्यक्ति के लिए प्रेरण होती है। किन्तु यह क्रियाशील बीड़ के भिन्न होती है क्योंकि इसमें आकांक्षकता का अभाव होता है और केवल आनन्दों का प्रदर्शन होता है। अनेकों का सुख अर्पित करने आनन्दों का प्रमुख लक्षण है। उदाहरण, पक्ष, विराड्, गायक की बीड़ आदि इनके उदाहरण हैं।

## क्रियाशील बीड़ का मनोविज्ञान

( *The Psychology of Action Creed* )

क्रियाशील बीड़ आनन्द आनन्दान् एवं अत्यन्त क्रियाशील होती है। यह मन बहुत उत्तेजित होकर कार्य करता है जो यह अक्षिप्त का क्रियाशील बीड़ कहलाता है। अनेक लक्षण कुछ कर गुजरने की आशुता होता है।

यह क्रियाशील बीड़ पेश के जाती होती है जो यह उद, आकांक्षक और विरक्त हो जाती है। इस प्रकार की बीड़ का मुख्य लक्ष्य अपने लक्ष्य पर आकांक्षक कर इसे लक्ष्य-बहुल करना होता है। इस बीड़ में शीघ्र, तथा आदि के अनेक बहुत शीघ्र होते हैं यद्यः यह बीड़श्रेष्ठ, विरक्त, आनन्द, लक्ष्य-आनन्द, आनन्द तथा लक्ष्य कुछ की हो सकता है। क्रियाशील बीड़ पर किसी प्रकार का विरक्तन नहीं होता यद्यः यह लक्ष्य होता और विरक्तन होती है।

क्रियाशील बीड़ कभी-कभी अभावकारी बन जाती है। यह अभाव इसका अभाव होता करता होता है। यह अपने की आकांक्ष के कार्य करता है यद्यः कभी, कभी तथा अक्षिप्त में अक्षिप्त का का के होती है। इसे का अभावका पर लक्ष्य और विरक्त अक्षिप्तों की लक्ष्य का कभी में अभाव होता है।

कभी-कभी अक्षिप्त बीड़ आकांक्षकारी होती है जिसका अक्षिप्त अक्षिप्त लक्ष्य में आकांक्ष होता है आकांक्ष होता है यह बीड़ अपनी अक्षिप्तों की लक्ष्य करता है। इसी बीड़ की अभिव्यक्ति अक्षिप्त और विरक्तन होती है और इसके अक्षिप्त के अक्षिप्त अक्षिप्त अक्षिप्त होती है।

क्रियाशील बीड़ अन्य आकांक्ष का लक्ष्यकारी बीड़ है। अपने अक्षिप्तों का अपनी अक्षिप्तों का लक्ष्य होती है। लक्ष्य आकांक्षकारी अक्षिप्त बीड़ का लक्ष्य करता है।

क्रियाशील बीड़ कभी-कभी अभावकारी हो जाती है। कभी-कभी अक्षिप्तकारी बीड़ का अभाव होने पर अभावकारी हो जाती है। आकांक्ष में, लक्ष्य का

कारण में हीनबोध काही हुई बुद्धि, नीच एवं नीच के कारणों को मुख्य कारण मानकर मानने काही होती है।

विमलक वर्ग (1948) ने क्रियाशील बीड़ के विषय में कहा है, कि "क्रियाशील बीड़ है जिसमें वेग, शक्ति, शीघ्रता या वेगशीलता सम्भव होती है" ("Action capacity is that in which there is force, speed, rapidity or mobility capacity") इस वर्ग को बीड़ में प्रतिबोधिता, अभिव्यक्तिता तथा अभिव्यक्तिता देखी जाती है। इसकी विशेषता अभिव्यक्तिता होती है जिसे अपनी सामर्थ्य विवेकताईं व्यवस्थित होती है।

1. न्यून बुद्धिता एवं अभिव्यक्तिशीलता (Low Development of Intelligence and Activity) :—क्रियाशील बीड़ में लक्ष्यहीन, अभिव्यक्तिहीन, तथा बुद्धिहीन व्यवहार देखे जाते हैं। न्यून स्तरीय बुद्धि के परिणामस्वरूप इनके समुदाय काही है। निम्नबुद्धि (Low Intelligence) के अनुसार ऐसी बीड़ के व्यवहार अधिक दुर्बलतापूर्ण तथा कम रोचकपूर्ण होते हैं। यहाँ (Inactivity) के अनुसार क्रियाशील बीड़ को न्यून बुद्धिता एवं अभिव्यक्तिहीन व्यवहार के कारणों में स्थित कारण समुदाय है :—

- (i) अधिकांश कारणों की न्यून शैक्षिक स्तर का होता है।
- (ii) सांख्यिक विचार विमर्श के अभाव के कारण, कारणों में पारस्परिक सम्बन्धों का अभाव एवं आम प्रभाव होता है।
- (iii) अनुभवशीलता में बुद्धि के कारण लक्ष्य एवं विचारों की समताईं काही जाती है और निम्नबुद्धिता काही होती है।
- (iv) क्रियाशीलता एवं उत्तमता की अधिकता कारणों को अभिव्यक्तिहीन व्यवहार काही है।
- (v) सामर्थ्य अनुभवशीलता के कारण वह प्रकार की बीड़ अभिव्यक्तिहीन व्यवहार काही है।
- (vi) उत्तरदायित्व का अभाव भी वह प्रकार की बीड़ की न्यून बुद्धिता का एक कारण है।

2. संवेकशीलता (Emotionality) :—बीड़ उत्तेजना के अधिकारी होती है और क्रियाशील बीड़ में अत्यन्त शीघ्र उत्तेजना होती है। संवेकशील एवं उत्तेजना उत्पन्न करनेवाली, शीघ्र एवं उत्तेजना की अभिव्यक्ति उत्पन्न बीड़ों के पितामही हुए होते रहते हैं क्योंकि वे बहुत उत्तेजना करते हैं कि किसी प्रकार की शक्ति का अधिक अभाव नहीं होता। जब: लक्ष्य सम्बन्ध, उत्तरीय, लक्ष्यबोध आदि में पितामही आम लेते हैं। शीघ्र, उत्तेजना, शक्ति, बुद्धि, वेग आदि उत्तेजना बीड़ में उत्पन्न होते हैं। विमलक वर्ग (1934) के अनुसार क्रियाशील बीड़ वह है जिसमें शक्ति, वेग, शीघ्र, शक्ति आदि सम्भव होते हैं।

3. अनुकरण (Imitation) — क्रियाशील भौद के अनुकरण की प्रवृत्ति मनु के शीघ्र से सामान्य की जाती है। इस प्रकार अनुकरणशीलता क्रियाशील भौद की एक मुख्य मानसिक विशेषता है। यदि किसी व्यक्ति की ओर अनुकर क्रियाशील भौद में शक्ति लागता है तो सभी मौजूद चीजें देखा-देखी उस व्यक्ति की ओर की जाती हैं। इस प्रकार क्रियाशील भौद के कारण शीघ्र अभिरुचीयता समस्त अभिरुचि व्यवहार के कारण एक दूसरे की देश करते व्यवहार का अनुकरण करने लगते हैं। इसी प्रकार मनु शहर की सुविधा एवं अविषेकसुविधा होने के कारण की क्रियाशील भौद के कारण ही अनुकरण की प्रवृत्ति पाई जाती है।

4. **व्यक्ति का साम्राज्य** ( *Reign of the individual* )—सिवासीय लोक के अन्तर्गत व्यक्ति-व्यक्तियों के राज्य एवं स्वतंत्रता के कारण अन्तर्गत व्यक्ति का अनुभव करते हैं और किसी भी भी सोचा दिखाते और प्रभाव करने की प्रवृत्ति विकसित हो जाती है। लोक में व्यक्तिगत अनेक करारीक तथा समशील व्यक्ति की प्रवृत्ति और प्रभाव दिखाई देते हैं। इस प्रकार की लोक में अन्तर्गत व्यक्ति का अनुभव मात्र अपने व्यक्तियों की व्यक्तिगत और व्यक्ति के अन्तर्गत के कारण करते हैं। अतः, अन्तर्गत और व्यक्तिगत की राज्य सिवासीय लोक की अनुभव करते के साम्राज्य के अन्तर्गत हो करती है।

३. **अन्तराष्ट्रिय का आवाज (Larkie and Adams and Internationality)**—  
 क्रियाशील बीड़ की एक अन्य अनुसंधान विधिया इसमें अन्तराष्ट्रिय आवाज का आवाज है। इसी आवाज के आवाज के कारण क्रियाशील बीड़ आन्तरिक तथा ऐसी  
 सन्तति की प्रति प्रतिफल में बीड़ की संकीर्ण नहीं करती। मैडगुल (Mc  
 Douglas, 1926) के अनुसार बीड़ के कलमें में आन्तरिक (Self-sterility)  
 का अन्तराष्ट्रिय आवाज में बीड़ क्रियाशील बीड़ का आवाज की वीर करता है जिसके  
 अन्तराष्ट्रिय में बीड़ बीड़-बीड़, सन्तति की प्रतिफल करने प्रति में अन्तराष्ट्रिय  
 नहीं क्रियाशील है। बीड़ के अन्तराष्ट्रिय आवाज के कुछ संकीर्ण कारण  
 निम्न हैं :—

- (i) जीव के सदस्यों की अभिव्यक्तिशक्ति ।
- (ii) उत्पन्नशक्ति का रेट माना ।
- (iii) ज्ञानविकास के स्तर में विभाजित ।
- (iv) जीविक स्तर का मूल होता ।
- (v) जटिलता के स्तर का न होना ।

8. **उच्च संयुक्तनीतिज्ञता (High-level socialistic thinking)**—विभागीय स्तर पर एक उच्च सामाजिक नीतिज्ञता स्तर की हुई मुक्त-व्यवस्था है। उच्च संयुक्तनीतिज्ञता तथा मुक्त-व्यवस्था के कारण ही बीड़ के जनता की भी कार्य





अबसुद्ध बर्नो ने स्पष्ट है कि क्रियाशील भीड़ में अनेक व्यक्तिगत विशेषताएँ होती हैं जो इनके स्वभाव की ओर इशारा करती हैं : इनके समुचित काम के भीड़ के विभिन्न वर्गों पर प्रभाव डालता है :

## भीड़ के सिद्धान्त

(*Theories of Crowd*)

मनोसंज्ञालिखी में भीड़ व्यवहार की व्याख्या के प्रयास हेतु भीड़ के अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। अनेक व्यक्ति भीड़ में सम्मिलित होकर ऐसे गैर विवेकाधीन के व्यवहार करते हैं जिसकी वजह सेवेला सामान्य बहानों में बहोती जाती है। इसका अन्तिमतम यह है कि भीड़ में व्यक्ति अनसंज्ञित व्यवहार करते हैं। प्रश्न यह है कि वे ऐसा क्यों करते हैं? इन व्यवहारों की व्याख्या के लिए बर्नो-वेबर्सनो ने भीड़ के अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। भीड़ के कुछ प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित हैं :—

1. समूह मन का सिद्धान्त (*Theory of group mind*)—एक सिद्धान्त का विवरण लेवो (Le Bon) की पुस्तक *The Crowd* (1903) में मिलता है। इसका अन्तिम अर्थ अर्थ सिद्धान्त "The Law of the crowd" में किया है। इनके अनुसार भीड़ में व्यक्तिगत चेतना विद्यमान होती जाती है और उसके स्थान पर सांख्यिक चेतना विकसित हो जाती है। भीड़ में व्यक्तिगत व्यक्ति अपनी व्यक्तिगतता (individuality) को खोता है और सबकी के किसी एक दूसरे में मिलन (fusion) कर जाते हैं और "समूह मन" विद्यमान हो जाता है, जो भीड़ के व्यवहार का निर्देशन और संभालन करता है। सभी व्यक्ति एकते हीने पर अपने मन द्वारा कार्य करते समय बीच-बीचकर कार्य करता है किन्तु भीड़ में समूह मन होती हो जाता है।

लेवो (Le Bon) ने लिखा है कि, "भीड़ के समस्त व्यक्तियों के अंतर और विचार एक ही दिशा में प्रवाहित होना कल्पना केवल अवस्था (Conscious personality) समाप्त हो जाता है। सामान्यतः एक सांख्यिक मन का निर्माण होता है। निरासक्ति यह सांख्यिक मन उत्पन्न होता है परन्तु विविध और स्पष्ट विशेषताओं की पर्याप्त करता है। ऐसा व्यवहार एक कन्वेंशनल भीड़ मन जाता है; यह सभी का मन से होता है तथा भीड़ की सामाजिक प्रवृत्ति के सिद्धान्त के अन्तर्गत होती जाता है।"

(The sentiments and ideas of all these persons in the gathering take one and the same direction and their conscious personality vanishes. A collective mind is formed, conscious personality, but presenting very clearly defined characteristics. The gathering

has this freedom..... psychological freedom. It means a single being, and is subjected to the law of the mental unity of crowd" (La Bon, 1903 )

केवी के अनुसार बीर व्यवहार में समझता एवं समझता का कारण बहुत कम है जिसके कारण में व्यक्ति नहीं करते हैं। ऐसी स्थिति में समझा किसी कम जिसका बीर हो जाता है और समझाहीन होकर रह जाता है। उसके यह भी बताया है कि बीर के कारण समझा के कारण सामाजिक, अधिभेदकारी तथा अन्याय का कारण बनता है।

केवी के अनुसार बीर की तीन विशेषताएँ (Characteristics) निम्नलिखित हैं—

(1) अधिभेदकारी व्यवहार की सम्पत्ति—बीर में व्यक्ति किसी किसी समुदाय का समुदाय नहीं करते। वह सभी प्रकार के समुदाय (Community) समझा हो नहीं है। वह व्यक्ति उन व्यवहारों की निषेध करता है जो वह समझा होने पर नहीं करेगा।

(2) संकीर्ण दृष्टि (Constricted Vision)—बीर व्यवहार एक देश के समझा इस देश के समझा है कि वह व्यक्ति बीर के अधिभेदकारी कम कुछ नहीं कर पाएगा।

(3) संकुचनशीलता (Constrictibility)—संकुचनशीलता बीर व्यवहार में इसी देश होती है कि अधिक समझा दिया नहीं करते नहीं करता है जो बीर काही है।

सामाजिक समझा अधिभेदकारी तथा समझाकारी इस विज्ञान की अनेक बातों की समझा करते हैं जिसमें कुछ अधिभेदकारी है—

(1) यह एक समझा समझा (Constrictibility of Vision) पर समझा है (Migraux के Toth, 1959 )

(2) Migraux तथा Toth के अनुसार समझा बीर में ही व्यक्ति का समझा अधिभेदकारी नहीं होता वह अधिभेदकारी भी अधिभेदकारी होता है।

केवी का यह विज्ञान इस बात की समझा नहीं करता कि बीर की अधिभेदकारी तथा अधिभेदकारी अधिभेदकारी समझा की अधिभेदकारी बीर अधिभेदकारी के कि समझा समझा है ?

(3) समझा (Migraux, 1925) केवी के अनुसार कम समझा की समझा नहीं समझा है। वे इसे एक समझा कम समझा है और इसके अनुसार बीर में ही व्यक्ति का समझा अधिभेदकारी समझा समझा होता है। उसके अनुसार कम के समझा समझा (Constrictibility of Vision) का समझा समझा है

को केवल व्यक्ति में होता है, समूह में इसका अस्तित्व एक सामक तथ्य है। यह कहना कहेगा अर्थवैज्ञानिक एवं व्यवसायिक है कि चीज में होने की वस्तु में व्यक्ति अपने व्यक्तिगत मन के आधार पर नहीं बल्कि समूह मन के अनुसार कार्य करता है।

2. मैकडूगल का सामाजिक समरूपता सिद्धान्त ( Mc Dougall's social homogeneity theory ) मैकडूगल (Mc Dougall, 1928) के ग्रन्थी पुस्तक ( The Group mind ) में मैकडूगल के सिद्धान्त के प्रथम सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। उसके मैकडूगल के व्यक्तिगत मन में समीक्षा किया है। उसके समूह मन का उपयोग दो कर्मों में किया है—चीज में व्यक्तिगत होने को केवल को समूह मन कहा है तथा दूसरे कर्म में पूरे समूह का चीज के मन को उसके समूह मन कहा है।

मैकडूगल के अनुसार चीज समूह मन की कुछ विशेषताएँ देखी जाती हैं जो व्यक्तिगत मन के आधार में नहीं पायी जाती, जैसे—

- (i) चीज समूह मन में सामाजिकता ( social homogeneity ) देखी जाती है क्योंकि समूहों में चीज के समरूपता, एकता आदि का आगम प्राप्त होता है।
- (ii) समूह के अस्तित्व की विशेषता समूह/चीज समूह मन द्वारा ही संभव है।
- (iii) समूह-मनधार केवल परम्पराओं, प्रथाओं, आदर्शों और सामाजिक मानकों को प्रभावित करता है।

व्यक्ति विशेषताओं के आधार पर चीज समूह मन की व्यक्तिगत समूह मन के विशेषता किया जाता है और इन्हीं के कारण समूहों में एक प्रकार की सामाजिक संरक्ति ( social homogeneity ) देखी जाती है जिसके कारण चीज में समूह और समरूपता की विशेषताएँ विद्यमान होती हैं।

आल्पोर्ट ( Allport, 1924 ) के अनुसार समूह मन के अस्तित्व के वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यह एक सामाजिक प्रमाण है जो अनेक प्रकार के मन प्रमाण करता है।

3. सामाजिक समरूपता का सिद्धान्त ( Allport's theory of social identification )—यह सिद्धान्त के अनुसार चीज समूह मन का व्यक्तिगत समूह मन में कोई अन्तर नहीं होता। उसके अनुसार जो वा व्यक्ति व्यक्ति एक जैसे वर्गीकरण की प्रवृत्ति पर एक वैसी व्यक्तिगत कर्मों के है।

आल्पोर्ट कहते हैं कि चीज में व्यक्तिगत व्यक्तियों की व्यक्तिगत के कारण समूहों की समरूपता और समूह मन का समरूपता एवं समरूपता होता है। कहना है कि "समूहों की एकता का प्रमाण है।" सामाजिक पहचान के अनुसार जैसे चीज में अनेक व्यक्तियों की समरूपता समूह मन की समरूपता प्रमाण करता है। अतः देखा-



किसी व्यवहार में ही व्यक्तिगत होना आवश्यक है। व्यवहारों के बीच व्यवहार की जासना करने में स्पष्ट कर दिया है कि बीहू के सारों का अपनी व्यक्तिगत जीवन पद्धति है। इसके विपरीत में अपनी व्यक्तिगत की सुरक्षा इसके दूर जासना-विक्रम सुमना (दुपरी की जासना के जीवनपद्धति) द्वारा एक बीहू व्यवहार करने के लिए करने बिना एक व्यक्तिगत जीवन होना है।

आजकाल के विद्वानों के लिए नीचे की ओर खींच करवा दिया है।

(1) पहले सीढ़-मरुतार की जायदा में रजिस्ट्रारि आ रजिस्ट्रार की जायदायतः के रजिस्ट्रार महाम विना है, की मुहरी सीढ़ पहले सीढ़ मरुतार के जायदायत में रजिस्ट्रार जायदा की रजिस्ट्रार की है ।

(11) पीछे से कार्रवाई का उर्ध्व से विवेक' कथनात नहीं होता। अतः सामाजिक व्यवस्था के कारण दुर्भाग्य की वजह विधानों का अनुसरण नहीं करता है ।

4. **इकोनॉमिक एनालिटिक थियरी (Economic Analytic theory)** :—  
 लोक व्यवहार की व्याख्या हेतु सभी हुई इच्छाओं की अधिकतम की कुछ कारण मानते हैं। व्यक्तिगत तथाज की अधिकतमों, बहुतों हुई इच्छाओं आदि की कारण व्यक्ति की अपनी अवैकालिक आवश्यकताओं, इच्छाओं, वेलाओं आदि का वजन करता करता है क्योंकि तबतब उनकी स्वार्थ अधिकतम की अनुमति नहीं है। व्यवह के अनुसार लोक में व्यक्ति के वेला वन पर तबतब नियंत्रण विधि का जाता है, तब; लोक में लोक व्यक्ति इच्छाओं, आवश्यकताओं तथा वेलाओं स्वार्थ और अवकाश का व अधिक होता जाती है। इकोनॉमिक थियरी में अवैकालिक, अवैकालिक और अवैकालिक आवश्यक अधिकतम होते हैं। व्यवह के अनुसार वेला वन का नियंत्रण होना और अवैकालिक वन का हकी होना इच्छा वन कारण है। लोक में अवैकालिकी का व्यवहार इच्छा की वेला जाता है क्योंकि अवैकालिक अवैकालिक (indivisible consumption) वन होता जाती है और लोक के तबतब वन वन वन की वन वन वन की वन वन का कारण होता जाती है।

आपका यह मतलब था कि सभी लोगों के सम्मुख सब में अन्तर्गत, वास्तव एवं कलाकारिक दृष्टाई सभी पक्षों में निरन्तर प्रकाशित होना आवश्यक है।  
 और के सम्मुखों के सम्मुख में अधिक सम्मुखता होने का यह मतलब है।

विष्णु शायन का यह विद्वान्त विस्तृत विवरण है। इसमें विष्णु की वाद्यों के भी वर्णन है :—

(1) पारस्परिक क्रियाओं की प्रक्रिया :—बीड़ की क्रियाओं को व्यवहारों का निर्देशन दमिष्ठ साधनार्थी, प्रेरणार्थी द्वारा व होकर बीड़ में पारस्परिक क्रियाएँ (Interaction processes) होती हैं किन्तु बीड़ में व्यवस्थित रूप

( *economic value* का विकास होता है जो बीज में व्यक्तियों के व्यवहारों का विश्लेषण एवं विवेचन करता है ( *Shaw & Shaw, 1948* ) सामर्थ्य द्वारा इस सामाजिक क्रियाओं की प्रेरणा की गई है ।

(ii) यह विज्ञान दूर प्रकार के बीज व्यवहार की व्याख्या नहीं करता । बीज में कलमों का व्यवहार प्रेरित सामाजिक और भौतिक नहीं होता । कभी-कभी विलेखन के लिए भी बीज एकत्र होती है जैसे बाघ कुत्तों, काली बीड़ । ऐसी बीड़ की व्याख्या करने द्वारा सांख्यिक व्यवस्था बन की रहित प्रेरणाओं द्वारा प्रेरित नहीं है ।

(iii) बीड़ में कलमों के अनेक व्यवहार प्रेरित प्रक्रियाओं एवं प्रेरणाओं द्वारा की विशिष्ट और विशिष्ट होते हैं जिस पर विज्ञान में व्याप्त नहीं किया गया है ।

(iv) बीड़ व्यवहार बाघ व्यवस्था प्रक्रियाओं तथा प्रक्रियाओं द्वारा नहीं बल्कि सामाजिक परिस्थितियों द्वारा की विशिष्ट और संभावित है । मैकार्थर एवं पेग ( *Mc Iver & Page, 1955* ) ने सामाजिक परिस्थितियों की भूमिका पर बल दिया है ।

3. अविचारण विज्ञान ( *Conspicuous theory* )—इस विज्ञान के अनुसार बीड़ के प्रजातियों में उत्तमव्यवस्था काली करने की सामाजिक उत्तरदायिता रहते हैं । यह विज्ञान नहीं है जो बीड़ में सामाजिक होकर यह प्रमाणित रहते हैं जो यह एवं बीड़ की जाती है और के संकुल कार्य ( *Coordinated action* ) के लिए जाने जाते हैं । इस प्रकार यह विज्ञान बीड़ व्यवहार की व्याख्या प्रजातियों की साधुता की पूर्णता ( *Perfectionism* ) में एक समय और एक साथ प्रजातियों की उपस्थिति के कारण बनने विचारों, व्यवस्थाओं यात्रा की उत्तरदायिता द्वारा करता है ।

अविचारण विज्ञान की निम्न कठिनाइयों की ओर संकेत किया गया है :—

(i) बीड़ के काली प्रजातियों में उत्तम पूर्णताओं और विचारों के विचार में आधुनिक सम्पन्न हुए । पहले प्रमाण नहीं हुई ( *Baker, 1974* ) और वहाँ के पहले विचारित विचार प्रजातियों में विविध विचारों और पूर्णताओं ( *Perfectionism* ) के प्रमाण प्राप्त किए ।

(ii) इस विज्ञान बीड़ में विशिष्ट व्यवस्था के व्यक्तियों की व्याख्या नहीं हो जाती जैसे यह विज्ञान इस बात की व्याख्या नहीं कर सकता कि बीड़ में प्रेरणा का भी विकास होता है, यह कैसे होता है ।

(iii) बीड़ में सभी प्रजातियों में समान पूर्णताओं एवं विचारों के कारण सभी की एक ही व्यवस्था बनने चाहिए, परन्तु प्रमाणित यह नहीं है । यहाँ कुछ व्यवस्था परिस्थिति का उत्तरदायिता के साथ सम्बन्ध करते हैं अनेक रूप काली या उत्तरदायिता कर जाते हैं ।

6. संक्रामक सिद्धान्त ( Contagion theory )—यह सिद्धान्त उद्भिन्न-अनुसूचित तथा अभिविक्त बीजों के अलग-अलग के आधार पर बीज व्यसहार की व्याख्या का प्रयास करता है। बीज की अनुसूचितताओं में जैसे-जैसे बदलाव होता है वैसे-वैसे बीज में अलग-अलग अलग-अलग में संक्रामक बीज के अभाव होती के फैलते हैं। इसके कारण अलग-अलग के आधार पर प्रयास करता है कि अकेले में जिन पर व्यसहार के अभाव बिना हो जाता है। आल्बेक, थॉमस तथा थॉमस (Albeeck, Thomas and Chodwick; 1980) ने कहा है, "संक्रामक सिद्धान्त के अनुसार बीज की परिवर्तित में व्यक्ति अपने आपकी चुनिंदा बीज के अभाव में ही फैलता है बीज यह कुछ ऐसा करता है जिसके बारे में पहले वैज्ञानिक विवेचनाओं के आधार पर बताया नहीं जा सका।"

("According to contagion theory, the individual in a changed situation does himself or herself to the situation of the changed and does something that could not be predicted on the basis of individual characteristics." : Social Psychology, 1980 ).

उपरोक्त के अन्तर्गत है कि अकेले बीज के बीज के अभाव अभावों की इस तरह व्याख्या कर देता है कि वे अपनी वैयक्तिकता और बीज का आम एक ही बन जाते हैं और अनुसूचित अवस्थाओं में जाने करते जाते हैं।

इस सिद्धान्त पर निम्न अवधारणाओं की जाती है :—

- (i) अभिविक्त बीजों एक आम बीज व्यसहार का ही प्रभाव है किन्तु एक आम कारण नहीं है। इसके अभिविक्त आम कारण भी है जो इसे कम महत्वपूर्ण नहीं है।
- (ii) यह सिद्धान्त बीज व्यसहार के कुछ नहीं—जैसे बीज में अलग-अलग बीज और बीज अलग होता है, बीज बीज व्याख्या नहीं की गई है। अतः यह बुनियादी नहीं है।
- (iii) यह सिद्धान्त बिना आधार पर बीज व्यसहार की व्याख्या करता है तथा अभिविक्त अलग-अलग अलग नहीं है।

7. निर्देशित मानक सिद्धान्त ( Disoriented norm theory )—एलेन और थॉमस ( Turner & Killian; 1957) के इस सिद्धान्त के अनुसार बीज व्यसहार बीज में निर्देशित एक सामाजिक मानक का परिणाम है। यह मानक बीज में जैसे-जैसे निर्देशित व अलग-अलग अलग होता है। इस तरह परिवर्तित के अनुसार निर्देश का निर्देशित मानक बीज व्यसहार का एक कारण है। उपरोक्त के बिना किसी व्यक्तिगत बीज का उद्देश्य किसी आम व्यक्ति की देना करता



के प्रति कोई व्यवस्था होती है, परन्तु सामान्यतः कोई अपने व्यवहार में सामाजिक नियमों के प्रति सक्रिय को व्यवस्था नहीं होती ।

## श्रोतामण

(Audience)

मन (Meunier)—श्रोता मण वा श्रोता समूह सुसंगठित श्रोत की वृत्ति है जो किसी विशेष समय की दृष्टि के लिए किसी निश्चित समय तथा स्थान पर एकत्र होता है । रिचमंड तथा गिलिस (1950) के अनुसार, "श्रोता मण एक प्रचार की श्रोत है जिसमें व्यक्तियों के बीच अन्तः प्रेरणा निम्न स्तर पर होती है ।" ("The audience is a group in which interstimulation between the individuals of the group is reduced to minimum." Gilis and Gilis, 1950)

किन्सल वॉर ( 1960 ) के अनुसार, "श्रोतामण एक संस्थागत श्रोत है ।" ("Audience is a form of institutionalized crowd." )

ब्राउन (1969) के अनुसार, "वैयक्तिक होकर चुनने वाली श्रोत की श्रोतामण कहते हैं ।" ( "The passive listening crowd is audience." Brown.)

वर्गट (W. J. H. Gergen, 1953) ने कहा है, "श्रोतामण की एक संस्थागत श्रोत वा समूह कह सकते हैं क्योंकि अधिकांश परिस्थितियों में श्रोता समूह का व्यवहार स्वीकृत प्रतिमाओं के अनुसार होता है । श्रोता समूह का सामान्य और सामान्य औपचारिक होता है ।" ( "We have called the audience an institutionalized crowd, because in the vast majority of situations which we should call audience there is an accepted pattern of conduct a formal beginning or formal end". )

उत्प्रेक्ष्य परिभाषा में तीन बातों पर ध्यान दिया गया है—एक एक श्रोतामण समूह है, इसके व्यवहार अधिकतर स्वीकृत प्रतिमाओं के अनुसार होते हैं, और इसका आरम्भ तथा अन्त औपचारिक होता है । इसके प्रतिरिक्त श्रोतामण व्यवहार की कुछ विशेषताएँ, यहाँ है तथा कुछ नियमों एवं संस्कारों से बंधे होते हैं । कुछ परिभाषाओं के श्रोतामण को निश्चित श्रोत की संज्ञा दी गई है । अतः उपर्युक्त परिभाषाओं के अन्तर्गत पर हम इसे निम्न रूप में परिभाषित कर सकते हैं —

श्रोतामण एक निश्चित संस्थागत समूह है जो किसी निश्चित उद्देश्य के लिए एक निश्चित समय तथा स्थान पर एकत्र होते हैं, व्यवहार के स्वीकृत प्रतिमाओं, संस्कारों, परम्पराओं तथा औपचारिकताओं का पालन करते हैं ।

## श्रोतामण के लक्षण

(Characteristics of Audience)

श्रोतामण की प्रमुखविशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-



3. बिचार परिवर्तन हेतु दुरुचित बीड़ासमूह—यह समूह है जो अपने समस्त बिचारों में परिष्कृत के उद्देश्य के दृक्म होता है।

### बीड़ा समूह तथा बीड़ में अन्तर

( Differentiated Beedagata Association & Group )

1. बीड़ समाजक संघटित व्यक्तिों का समूह है जिसमें कोई स्थान या समूह का प्रतिपाद नहीं होता जबकि बीड़ा समूह के समस्त पूर्वनिर्दिष्ट समस्त बीड़ समाज पर मिलते हैं।

2. बीड़ा समूह के कुछ निश्चित समस्त समस्त वर्णित होते हैं जबकि बीड़ का कोई पूर्वनिर्दिष्ट वर्णित नहीं होता।

3. बीड़ का समस्त समस्त किसी सामाजिक समस्त के समस्त होता है परन्तु बीड़ा समूह संस्थागत होते हैं।

4. बीड़ा समूह में सामाजिक संस्थागत समस्त बिंदु होते हैं किन्तु बीड़ में सामाजिक संस्थागत बीड़ ही समस्त समस्त समस्त होती है।

5. बीड़ा समूह के समस्त समस्त बुद्धि और सामाजिक समस्तानी के समस्त समस्त होते हैं, जबकि बीड़ के समस्त समस्त समस्त के समस्त समस्त होते हैं।

6. बीड़ासम समस्त में सामाजिक, निश्चित, समस्त, समस्त तथा समस्त का समस्त होते हैं जबकि बीड़ में समस्त समस्त, सामाजिक, समस्त, सामाजिक समस्त होते हैं।

7. बीड़ा समूह में समस्त समस्त के समस्त का समस्त होता है जिसे समस्त समस्त समस्त है, दूसरी ओर बीड़ समस्त में यह समस्त समस्त समस्त होती है।

8. बीड़ का समस्त और समस्त निश्चित नहीं होता किन्तु बीड़ा समूह का समस्त और समस्त का समस्त समस्त ही ही निश्चित होता है।

9. बीड़ में समस्त समस्त का समस्त समस्त नहीं होता जबकि बीड़ा समूह में समस्त समस्त के समस्त समस्त समस्त समस्त होते हैं।

10. बीड़ा समूह में समस्त निश्चित समस्त के समस्त होता है समस्त बीड़ में समस्त का समस्त होता है।

11. बीड़ में समस्त, समस्त एवं समस्त में समस्त होता है। एक समस्त में समस्त समस्त समस्त है समस्त समस्त समस्त समस्त ही नहीं समस्त समस्त समस्त है; परन्तु बीड़ा समूह के समस्त के समस्त, समस्त एवं समस्त में समस्त समस्त समस्त समस्त समस्त होती होती है।

12. बीड़ा समूह समस्त का समस्त समस्त समस्त ही और समस्त समस्त का समस्त समस्त है जबकि बीड़ में समस्त के समस्त समस्त बीड़ ही समस्त समस्त नहीं होती।







कारण का उचित प्रभाव दिया जाता है। इन परिणामों के प्रचार की विभिन्न विधियाँ प्रयोग में आती हैं।

## प्रचार की विशेषताएँ

(Characteristics of Propaganda)

- (i) प्रचार व्यक्तियों के विचारों, भावों, मूल्यों एवं अधिभूतियों को परिचालित कर उनकी क्रियाओं को प्रभावित किया में आने का प्रयास है।
- (ii) विचारों, अधिभूतियों तथा क्रियाओं को परिचालित करने के प्रयास अनेक विधियाँ आत्मकुशल कर लिए जाते हैं।
- (iii) प्रचार की सबसे प्रमुख तकनीक सुझाव ( suggestion ) है।
- (iv) सुझावों में अधिभूत भावों का अतिरिक्त प्रयुक्त होता है।
- (v) प्रचार के कुछ पूर्वनिश्चित विधियाँ उद्देश्य होती हैं। प्रचार सभी को उद्देश्य हीन नहीं होता।
- (vi) प्रचार में अनेक मनोवैज्ञानिक तकनीकों का सहारा लिया जाता है।
- (vii) प्रचार के द्वारा अनिष्ट और अनिष्टप्रदाय तथा लोगों की पराजय को किया जा सकता है।

## प्रचार के प्रकार

(Types of Propaganda)

कभी प्रचार स्पष्ट और कभी अस्पष्ट या छिपे हुए होता है। स्पष्ट प्रचार में प्रचारक प्रचार के उद्देश्यों के अवगत होती है। समाज के विभिन्न परिवार सम्बन्धित प्रचारक द्वारा प्रचार का उद्देश्य स्पष्ट होते हैं। छिपे हुए प्रचार ( Hidden propaganda ) के उद्देश्य केवल प्रचारक की जान होती हैं, सामान्य और या स्पष्ट व्यक्ति इससे अवगत नहीं होते। किम्बल यंग ( Kimball Young ) के अनुसार प्रचार तीन प्रकार के होते हैं।

1. परिचर्यात्मक प्रचार ( Coercive propaganda )—ऐसे प्रचार में प्रचरण कर व्यक्तियों की स्वतन्त्रता जाता है तब उनके भावों, विचारों, अधिभूतियों भावों को प्रचरण के प्रभाव होते हैं और स्वतन्त्रता उनकी क्रियाओं को परिचालित करने का प्रयास किया जाता है। ऐसे प्रचार का विरोध करने में अत्यन्त कठिन होता है।

2. विरोधात्मक प्रचार ( Destructive propaganda )—ऐसे प्रचार का व्यक्तियों में घृणा करने का उद्देश्य प्रचरण करने के प्रभाव होते हैं। यह "सूझावों और सत्यन कथों" ( Double and tale ) के विरोध पर निर्भर करता है। साम्यवाद के क्षेत्र में प्रचार प्रभाव उत्पन्न होता है।

3. संगठनात्मक प्रचार ( Consolidation propaganda )—साम्य

अपनाया स्थापित करने के लिए इस तरह के प्रचार किए जाते हैं। इसका प्रमुख उद्देश्य एकता, समरसता और संघर्ष निवृत्ति करना होता है। इसके द्वारा जन जातिनी के मनोबल को उत्तरे का प्रभाव किया जाता है। युद्ध के समय होय का इसका लाभ जनता के मनोबल को होया करने में होता। उपयोग होता है।

कोय तथा कायपीयल ( Koels & Craswell, 1949 ) के प्रचार के विषय हो प्रचारों को पायी की है :—

1. चेतन प्रचार ( Conscious propaganda )—ऐसे प्रचार में चेतन का हो अपना जानबूझकर चेतन चरित्रों ( Target persons ) की अधिपति। एवं विचारों तथा विचारों को चरित्रों का प्रभाव किया जाता है। शिक्षा एक प्रचार का चेतन प्रचार है।

2. अचेतन प्रचार ( Unconscious propaganda )—यह प्रचार है शिक्षा का प्रमुख चेतन चरित्रों की अधिपति एवं मनोबल को एक निश्चित शिक्षा में प्रमुख करने का चेतन प्रचार पायी होता चरित्र की चेतन हो जाता है। प्रचारण के लिए युवा के समय होय चरित्रों के प्रभाव में प्रभाव करता हुआ होता, उद्योगों की चेतन चेतन चेतन चेतन के होय प्रचारों की प्रभाव कर होता है की ऐसे अचेतन प्रचार कहा जाता। चेतन का हो की यह चेतन चेतन लिए होय की चेतन चेतन है किन्तु प्रभाव प्रभाव की निश्चयनीयता का चेतन चेतन चेतन प्रचार कहा जाता।

## प्रचार तथा शिक्षा

( Propaganda & Education )

प्रचार तथा शिक्षा दोनों ही में चेतन चरित्रों के विचारों, अधिपति और विचारों को प्रभावित करने का प्रभाव किया जाता है। प्रचार की चेतन शिक्षा में की चरित्रों के विचारों, चरित्र, मनोबल तथा अधिपति को प्रभावित करने के चेतन प्रभाव लिए जाते हैं। प्रचार तथा शिक्षा में कुछ समानताएँ तथा विषमताएँ पायी जाती हैं। कुछ मुख्य समानताएँ इस प्रकार हैं :—

1. शिक्षा तथा प्रचार—दोनों का माध्यम मुख्य ( Medium ) है। प्रचारण चेतन चरित्रों की प्रभाव चेतन प्रचार प्रचार के प्रभावित कर चरित्र अधिपति और विचारों को प्रभावित करता है, होय होय होय शिक्षा में की प्रभाव होय चरित्रों की अधिपति एवं विचारों को प्रभावित करने के प्रभाव प्रभाव होय लिए जाते हैं।

2. प्रचार एवं शिक्षा—दोनों में समरसता और प्रभावण के अनुसार प्रभाव लिए जाते हैं। शिक्षा की प्रचार के प्रभाव प्रभावण प्रभाव के माध्यम कर की जाती है।

3. लोगों—विज्ञान तथा प्रचार उद्देश्य पूर्ण होते हैं। प्रचार के समान विज्ञान की लक्ष्यरेखा होती है।

कुछ समानताओं के होते हुए इनमें कुछ भिन्नताएँ भी देखी जाती हैं :—

1. प्रचार के द्वारा प्रचारक अपने लक्ष्य की पूर्ति करना चाहता है। यह स्वार्थ से प्रेरित होता है उसे अवहित या प्रत्यक्ष लक्ष्य नहीं होता विज्ञान शिक्षक की होता है। विज्ञान में ज्ञान साधकों के हित और समान हित प्रयोजन होते हैं।

2. प्रचार द्वारा नहीं ज्ञान का प्रचार नहीं किया जाता किन्तु विज्ञान द्वारा नहीं ज्ञान प्रदान किया जाता है। प्रचारक अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए लोगों को सहायकताएं तथा सीखनीय कर प्रस्तुत करता है। यह निराधार और आसक्त दूषना देने में भी नहीं हिचकता। किन्तु शिक्षक छात्रों की सफेद सड़ी लपटों के सम्पर्क करता है।

3. प्रचार में सत्य-असत्य, सुचित-असुचित का कोई विचार नहीं होता किन्तु विज्ञान में सत्य का महत्व है। शिक्षक छात्रों के समक्ष सभी सामग्रियाँ नहीं रखे। वे सर्वोत्तम लपटों की इनमें नहीं परिचय में प्रस्तुत करते हैं।

4. विज्ञान द्वारा लोगों के व्यक्तिगत विकास का प्रयत्न किया जाता है। विज्ञान वास्तविकी की एक अच्छी मासौक्य प्रदायी है ताकि वे स्वयं अपने लिए, समाज एवं राष्ट्र के हितों को समझें। किन्तु प्रचार में ऐसा कुछ नहीं होता। प्रचार में प्रचारक का स्वार्थ सिद्धि होता है। प्रचारक अपने व्यक्तिगत लाभ के प्रेरित होता है।

### प्रचार मनोविज्ञान

(The Psychology of Propaganda)

प्रचार मनोविज्ञान का अर्थ है प्रचार के मनोवैज्ञानिक साधनों की जानकारी है। मनोवैज्ञानिकों ने प्रचार विज्ञान द्वारा उनमें निहित मनोवैज्ञानिक तथ्यों (Psychological considerations) का वर्णन किया है। विप्लव से पहले प्रारंभ तथ्यों (considerations) की समझ थी। उद्देश्य का प्रेरणा, मनोवैज्ञानिक सामग्री, सुझाव तथा अन्य मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति, तथा प्रचार के प्रभाव, जिनकी सही समझ की आवश्यकता है।

1. उद्देश्य या प्रेरणा (Purposes of motivation)—हर तरह के प्रचार के प्रारम्भ में कोई न कोई प्रयोजन, उद्देश्य एवं प्रेरणा का होना अनिवार्य है। प्रचारक जनसाधारण की उनमें सामान्यताओं की जानकारी प्राप्त करता है और प्रचार के प्रयोजन को जनसाधारण की सामान्यताओं से सम्बद्ध करने का प्रयत्न करता है। प्रचारक अपने उद्देश्यों की पराजय कुछ करने का प्रयत्न करते हैं क्योंकि यदि जन साधारण को यह आभास हो जाए कि प्रचारक स्वार्थ सिद्धि के

व्यवस्था के प्रचार कर रहा है तो प्रचार अन्तर्गत ही रहता है। नृसिंह मनुष्यों की कार्यप्रणाली वैज्ञानिक होती है। व्यवस्था के लिए नीचा निचम द्वारा सुपरिचित व्यक्ति की बात मान्यता के समर्थन की चीन्हे का ही प्रचार है।

2. प्रतीकवाचक विषय ( Symbolic content )—व्यारथ जाले वक्तों में इतनीमें जैसे “बीबीबाब” जालि का की प्रतीक करते हैं। विभिन्न व्यापारिक संस्थाएँ विभिन्न प्रकार के टूट बीबीबाब का प्रतीक बनाती हैं। एन इतनीमें के प्रतीक में प्रचार की काफी बल प्राप्त होता है। छुट्टी काटन और बल का विचार, बालक बचपनी सुदूर का पैर, इतुवान बालक इतुवान का विषय जालि प्रतीक है जिसका महारा प्रचारक होता है। प्रचार में प्रतीक का प्रतीक अनेक वनों में होता है।

प्रचार में इतनीमें का प्रतीक करते समय प्रचारक की कुछ इतनी की ब्याज में रहना चाहिए। जैसे—

( i ) प्रचार समझी प्रतीक जाले व्यक्तिों की कार्यप्रणाली में सम्मिलित होना चाहिए, ( ii ) इतनीमें की बहुत बालक और वृत्तों के अनुसार होना चाहिए, ( iii ) इतनीमें की बलि बालक होना चाहिए और ( iv ) प्रतीक की कार्यप्रणाली होना चाहिए।

3. सुझाव एवं सम्बन्ध मनोवैज्ञानिक तकनीके—( Suggestion and related psychological techniques )—प्रचारक अनेक तकनीकों का उपयोग प्रचार कार्य में करता है जिसमें सुझाव सर्वप्रमुख विधि है। इसके महत्व की ब्याज में पहले हुए विचारक वंश में बल कहा है कि “सुझाव, प्रचार की विद्या-बीजता की कुलदी है।” ( “Suggestion is the key to the psychological art of propaganda.” ) सुझाव एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें किसी अवस्था की बिना तक या प्रभाव के उपयोग कर लेते हैं। प्रचारकर्ता की बड़ी चाहता है कि जोल बालक बालों की बिना तक जिसमें उपयोग करते। बल: सुझाव प्रचार की सर्वप्रमुख तकनीक है। प्रचारक जाले कार्य में अनेक प्रकार के सुझाव का उपयोग करते हैं—वीरि प्रविष्ट सुझाव ( Direct suggestion )—अत्यंत लोकप्रिय एवं विपणन है। किसी किसी व्यक्ति द्वारा बहु बलुआया कि “बेनी सुन्दरता का राज राज बल है।” इसके अतिरिक्त अनुभव या अनुपम ( Persuasion ) की प्रचार में काफी प्रयुक्त होता है।

4. प्रचार की स्वीकृति और प्रभाव ( Acceptance of propaganda and its effect )—जब कोई व्यक्ति प्रचार की स्वीकार करता है तो उसके विचार, बल तथा व्यक्तिगतता जालि प्रभावित होती है फिर अपने अनुसार व्यक्ति



हीम हवा: अनुसूचक विभाग में व्यवस्थित करी है। प्राथमिक स्वीं द्वारा कृषक, मजदारी व्यवस्था, केंद्रीय, वनीकरण, रक्षित प्रभाग, सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय मजदूर आदि विभागों के स्वीं द्वारा प्रचार किया जाता है जो बहुत प्रविष्टि उनके द्वारा प्रमुख होती है।

[illegible]

६. **खल टपकीक (Card stacking)**—इस विधि में बख्तर द्वारा कपट, छल, धोखा आदि का सबसे अनुपयोग कर, अधिशक्ति परिलक्षित और असह्युक्त में अपने अनुकूल बख्तरज करने का प्रयास करता है। काल को लोडमोड्युलर, डिप्लोमा, जल संग्रहण कर, खुद सीलकर आदी विधि करता, इस विधि का मुख्य-मंत्र है : किन्तु यह सब बड़ी सावधानी के बिना करता है कि रोस न खुले और काल हो जाए। दार्शनिक बखार में इसका व्यापक उपयोग होता है : भावनात्मक संज्ञा प्रभाव के पक्ष और विपक्ष में होने वाले बखार में बख्तरक तथा विपक्ष—रोस और के रेशा लादी को लोडमोड्युलर प्रयुक्त करने के प्रयास में उसे होने है। कोई भी रेशा की आधिक गुलाबी की कोई इसे अधिक के लिए करता बखार में प्रयास है।

७. विषय विहीन या सार्वभौमिकता प्रविधि (Blank method technique) :—इसमें बहुतों को समझे गए हैं इसमें का प्रयोग किया जाता है। विचारक यह प्रभाव उत्पन्न करता पाता है कि उसका चयन मात्र प्रकाश नहीं कर, बहुतों का विचार है—हमारे लोगों का मत है। यदि वह बहुतों के मत की भाँती सुन्दर महिलाओं की प्रशंसा प्रस्तुत करता। पहले किसी की प्रशंसा हो न हो। यदि वह प्रमाण प्रस्तुत करता है कि सभी यही कर रहे हैं मतः मत की प्रशंसा करें। इसमें सार्वभौमिकता का अर्थ प्रत्यक्ष करने का प्रयोग किया जाता है। अतः, अन्तर्गत प्रथा साक्षरता में इस तकनीक का व्यापक उपयोग होता है। सुश्रुति के अन्तर्गत किसी प्रथाको प्रमाण प्रस्तुत करके अन्तर्गत प्रथा का प्रमाण प्रस्तुत कर दिया जाता है।

अनुसंधान करने के लिये यह बात "कीलिका बारी कीलिका" जैसा कीलिका, "अनरा" कीलिका बारी कीलिका.....कीलिका" । यह सब कार्यकारी भाग की सहायक यह अनरा की अनुसंधान करने का प्रयास है । इसमें प्रचारक पीछे बारी करके लोगों की कार्यकारीकता के साथ साथ में पीछेकर पहुँचने प्रयत्न करते हैं ।

### प्रचार के सिद्धान्त

(Principles of Propaganda)

प्रचार की सहायक और प्रसारणीकरण करने के लिए सामान्य मनोवैज्ञानिकों के प्रचार के कुछ विधियों का प्रयोग करने किया है । प्रचारकों द्वारा इन सिद्धान्तों की सहायता प्रचार अधिक प्रभावी और उपयोगी बनाने का प्रयास किया जाता है । लुडविग अल्बर्ट फोर्स्टरलिच बुक (Ludwig Albert Forsterlich Book, 1925) के प्रचार के मनोविज्ञान सिद्धान्तों का वर्णन किया है—

१. समुदाय का सिद्धान्त (Principles of Community)—समूहों का समुदाय के किया जाने वाला प्रचार अधिक प्रभावी होता है । प्रचार कोई व्यक्ति नहीं करता व्यक्ति प्रयास है । यहाँ प्रचार के पीछे समूहों का होता भावनात्मक है । समुदाय प्रचार के प्रभाव होने की संभावना अत्यन्त मूल्य होती है । समुदाय समूहों के प्रचार के पूर्ण प्रचारक एक ही-ही प्रभावी योजना के अनुसार कार्य करता है । प्रचार पीछे सामूहिक हो आ प्रचार समुदायों करने समूहों का प्रचार का होता और प्रभाव पूर्ण रूप के निर्धारित होता भावनात्मक है ।

२. प्रत्यक्षीकरण-सिद्धान्त (Principles of Identification)—प्रचार सामग्री, वृत्त, संवाद करने का सत्त्व व्यक्तियों द्वारा और अन्य के प्रत्यक्षीकरण किया जाता प्रचार की प्रभावता के लिए आवश्यक है । प्रत्यक्ष व्यक्तियों के लिए प्रचार ही रहा है उनके द्वारा प्रचार सामग्री का प्रत्यक्षीकरण किन्तु कम में किया जाता है इसी के अनुसार प्रचार का प्रभाव बढ़ता है । क्योंकि इसका अनुसंधान प्रत्यक्षीकरण प्रचार की प्रभावता का सत्त्व अधिक प्रत्यक्षीकरण का अधिक प्रचार की प्रभावता है । ऐसे प्रचार सिद्धान्त का मनोवैज्ञानिक प्रभाव सामग्री प्रचार में होता है । मनोवैज्ञानिकों द्वारा मनोवैज्ञानिक समूहों या राष्ट्रीय समूहों के चिन्तों की पीछे में प्रभावता इसी सिद्धान्त का समुदाय सेवा है । प्रभावता सामग्री प्रचार में किसी व्यक्तियों के पीछे का प्रभाव की इसी सिद्धान्त का अर्थ है ।

विशेषकर अन्त के समुदायों में व्यक्तियों के चिन्तों का प्रभाव किया जाता है ।

३. प्रचार के प्रकार का सिद्धान्त (Principles of Types of Propaganda)—सामान्य प्रचार तीन प्रकार का होता है—समूह प्रचार, समूह प्रचार,







जातीय मतभेदों से जीव उत्पन्न होते हैं अतः इसकी समीक्षा में शामिल है । किन्तु इसके मतभेद से अन्तः प्राकृतः मान्य नहीं है । अन्य मतभेद अस्वीकार्य होते हैं ।

2. प्रेस ( Press )—यह अन्तः के माध्यमों में एक अनुसंधान माध्यम है । इसके सम्बन्धित समाचारपत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें, दैनिकिक, वीकर आदि का वर्णन होता है किन्तु यह माध्यम व्यक्तिगतों के लिए नहीं है बल्कि विशेष विहित व्यक्तियों तक सीमित है । पत्र, पत्रिकाओं, समाचारपत्रों से प्रकाशित लेखों में अधिष्ठित दृष्टिकोण पाठकों में उनके अनुसंधान एवं अनुसूक्त व्यक्तिगतों का विकास करता है ( Arnold, 1934 ) । अनेक राजनैतिक एवं अन्य समाचार पत्र विशालते हैं जिसमें हमका उद्देश्य अपने विचारों और नीतियों के अनुसूक्त मतभेदों के विकास होता है ।

3. लाइब्रेरी ( Library )—माध्यम की अन्तः का एक महत्त्वपूर्ण समाचारपत्र माध्यम है । समाचारपत्र द्वारा अन्तः की नीति नीतियों के माध्यम से जीव होते हैं और इसके अन्तः पत्रिका पत्रिका पत्र में बदलते हैं । पुस्तक में यह अन्तः माध्यम अन्तः सीमित है । राजनैतिक पुस्तक के अन्तः इसके द्वारा बड़े जनसमुहों के माध्यम कर अपने पत्र में अन्तः करते हैं । यह अन्तः का एक सीधा एवं प्रत्यक्ष माध्यम है जिसमें अनेक व्यक्तियों और समाचार में आवेग-आवेग ( flow to flow ) सम्पर्क होता है जो अन्तः अपने माध्यमों में अनुसन्धित है । अपने अन्तः समाचारपत्र की प्रतिस्पर्धाओं के अन्तः मतभेद होता है जो इसकी एक अन्य व्यक्तिगत विशेषता है । समाचार की दृष्टि अपने अनेक विशेष लेख-पुस्तक, दैनिक-पत्र, पुस्तकालय के उपयोग का असीमा अन्तः विस्तार है जो अन्य अन्तः माध्यमों में उपलब्ध नहीं होता । इसी कारणों से राजनैतिक क्षेत्र के अन्तः में इसे सर्वाधिक महत्त्व अन्तः की माध्यमता प्राप्त है ।

4. सापेक्षकारीकरण ( Interpersonal )—सापेक्षकारीकरण की अन्तः का एक माध्यम है । अन्तः इसके द्वारा दूर-दूर तक असीमा तक की पहुँच करता है । उर्वीय, व्यापार, और राजनीति के क्षेत्रों में इस माध्यम का महत्त्व उपलब्ध होता है ।

5. रेडियो ( Radio )—रेडियो अन्तः का एक सीमित एवं अनुसंधान माध्यम है । यह विहित और व्यक्तिगत दोनों प्रकार की अवस्थाओं के लिए उपयोगी एवं समाचारपत्र है । किन्तु व्यक्तिगत कारणों से सीमित अवस्था नहीं है यह रेडियो अपने और सुनते है । रेडियो अन्तः, अन्तः अन्तः में समाचार को किसी क्षेत्र में ही नहीं पाठ्य अनुसंधान में अन्तःविस्तार होता है । सीमित एवं असीमित ( Coastal & Allport; 1933 ) में रेडियो के द्वारा समाचारपत्र अन्तः ही अन्तः अन्तः की है :—



2. लोकतन्त्र पूर्ण प्रचार ( Democracy & Propaganda )—लोकतन्त्र में प्रचार की दुनिया व्यापक बहुमनुरी है। लोकतन्त्र में जनता का बहु महत्त्व है। राजनैतिक दलों की नीतियों के प्रति जनता का सर्वाधिक महत्त्व है। अतः विभिन्न दल अपनी नीतियों के लिये पहले अवसर तैयार करते हैं, और अवसर तैयार करने के लिये प्रचार का सहारा लेना पड़ता है।

पुनरा में भी अवसर तैयार करने की आवश्यकता होती है। अतः पुनरा में प्रचार का व्यापक उपयोग लोकतन्त्र में अनिवार्य है। राजनैतिक दल अपने दलान्तरियों की विचार की विस्तार के लिए, भाषण, समाचारपत्र, टी.वी., रेडियो आदि प्रचार माध्यमों का उपयोग करते अपने दल में मतदाता आणते हैं। अतः लोकतन्त्र का आधार एक तरह के प्रचार ही है। केन्द्रीय सरकार में ऐतिहासिक और दूरदर्शन की अपने अधिकार में रखा है जिसका राष्ट्रीय प्रचार का सहारा लेकर अपनी नीतियों के विस्तार में बहुमनुरी अवसर बनाता है।

प्रचार का महत्त्व केवल देश के भीतर ही नहीं बल्कि बल्कि सम्पूर्ण पृथ्वी के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की बहुत अधिक है। प्रचार के विभिन्न देशों में क्षेत्रीय पूर्ण बहुमनुरी दलान्तों की स्थापना भी करती है, एक प्रचार पर निर्भर है। अतः लोकतन्त्र लोकतन्त्रीय व्यवस्था में प्रचार एक अत्यन्त अधिकार है।

3. मुक्त पूर्ण प्रचार ( Free and Propaganda )—मुक्त की परिभाषा में प्रचार का महत्त्व बहुत बड़ा होता है। मुक्त का पर्याय स्वतन्त्र राष्ट्रीय कार्य के लिये होता है जिसमें प्रचार एक अत्यन्त माध्यम बन गया है। आधुनिक मुक्त समाज ( Democracy ) में प्रचार द्वारा राष्ट्र देश की सेवा में प्रचार द्वारा सर्वोच्च की विचार करने तथा अपनी सेवा तथा नागरिकों के अधिकार की रक्षण करने के प्रचार लिये करते हैं। मुक्त के अर्थ प्रचार के लिये महत्त्व है—

(i) राष्ट्र के विस्तार में अत्यन्त उपयोग करने, उसके क्षेत्रों पूर्ण जनता की विचारलक्षित करने तथा राष्ट्रीय के क्षेत्र एक और जनता के अत्यन्त पूर्ण सर्वोच्च की सेवा करने का योगदान अत्यन्त किया जाता है इस कार्य में प्रचार का व्यापक स्तर पर राष्ट्रीय किया जाता है।

(ii) अपने क्षेत्र एक तथा जनता में एकता, एकता की स्थापना करने तथा राष्ट्र देश में मुक्त करने और बहुमनुरी बहुमनुरी के लिए प्रचार का सहारा लेते हैं।

(iii) अत्यन्त विचार देशों तथा अतिरिक्त देशों के साथ सम्पूर्ण पूर्ण विचार राष्ट्रीय तथा उनका राष्ट्रीय दल करने के लिये प्रचार का अत्यन्त किया जाता है।

(iv) देश के नागरिकों की देश सेवा, त्याग और अतिरिक्त के लिये उत्तर करने में प्रचार का सहारा लिया जाता है।

(v) देशवासियों को प्रचार द्वारा बताया जाता है कि हम मुक्त नहीं चाहते हैं।



अधिक सीमा है या नभय अधिक सुविधान होती है तो प्रचार की सफलता अधिक होती है ।

3. प्रचार, विरोधी का अधिक प्रचार द्वारा सीमित होता है । इसकी प्रभाविकता प्रतिप्रचार ( counter-propaganda ) द्वारा सीमित होती है । जब प्रचार किसी तरह प्रचार के विरोध में या काल में किया जाता है तो अधिक प्रभाव नहीं होता ; लेकिन जब उसके विरोध में प्रचार नहीं होता तो उसके प्रभाव होने की संभावना अधिक होती है ।

4. प्रचार प्रचारक के व्यक्तिगत से सम्बन्ध होता है । जितनी बार है कि वह प्रचारक का व्यक्तिगत सम्बन्ध होता है या प्रचारक की विश्वसनीयता अधिक होती है तो उसके प्रभाव होने की संभावना अधिक होती है ।

5. प्रचार का अधिकतम प्रभाव के विपक्षी, यहाँ, पूर्वाग्रही, और तबली द्वारा सी होता है । समाज या समूह के विपक्षी, यहाँ, समर्थ और पूर्वाग्रहियों के अधिक होता है, इसकी प्रभाविकता सीमित होती है ।

समाचार के लिए समाज विचारों के विषय में किया गया प्रचार सुसमाजों में प्रभावहीन होता है क्योंकि यह सुविषय प्रचार के विपरीत है ।

अन्यथा समाजों में प्रचार की प्रभाविकता सीमित होती है ।

## प्रचार से बचाव

( Propaganda Preventions )

हम कहते हैं कि वह प्रचार तब तक प्रवृत्ति में नहीं होता । प्रचार के प्रभाव के तब तक पर विचार करना आवश्यक है ।

प्रचार यदि वह सांस्कृतिक प्रचार हो, सांस्कृतिक संघर्ष ही या विपक्ष एवं सुखा हो, इसकी सुधारिणी से प्रभाव आवश्यक है । सभी-कभी प्रचार से देशों के बीच होता है ।

ऐसे ही प्रचार के क्षेत्र में प्रत्येक प्रचार से प्रभाव की आवश्यकता होती है । ऐसा न होने पर सीधे-बाधे लोगों के सुधार ही और प्रचार करने की संभावना होती है । अतः इसी प्रभाव आवश्यक होता है ।

आपक प्रचार के प्रभावों के अपने के लिए विचार प्रभाव कि या अपने हैं :-

1. परिधिबन्धि की आवश्यकता दूर करना :- आपक प्रचार विधेयक आवश्यक एवं सांस्कृतिक परिधिबन्धियों में अधिक प्रभाव होता है । अतः इसे दोषों के लिए परिधिबन्धि की आवश्यकता को दूर करना आवश्यक है । यही प्रचार प्रभाव समाज के सभी संस्थाओं का कर्तव्य होता है कि वे आपक प्रचार की प्रभावों के लिए परिधिबन्धि की व्यवस्था करें ।

2. प्रचारक के उद्देश्यों को स्पष्ट बनाने का प्रशिक्षण देना :—प्रचार को सफलतापूर्वक प्रशिक्षण दिया जाता चाहिए, जिसके द्वारा वह प्रचारक के उद्देश्यों को समझ सके। यह समझ प्रचारक के प्रशिक्षण को सफल बनाने में सहायक होती है जो वह अपने विचारों के उपयोग द्वारा सही और सफल प्रचार को सफल कर सकेगी।

3. प्रचारक के सहायकों की स्थापना करना :—सामाजिक प्रचार के सफलता का एक बड़ा कारण प्रचारक के सहायकों की स्थापना है। सामाजिक प्रचार के सहायकों की स्थापना करना ही सफलता का एक बड़ा कारण है। सामाजिक प्रचार के सहायकों की स्थापना करना ही सफलता का एक बड़ा कारण है। सामाजिक प्रचार के सहायकों की स्थापना करना ही सफलता का एक बड़ा कारण है।

4. प्रतिप्रचार का विरोधी प्रचार का उपयोग :—यह सभी प्रचार प्रचारक ही ही उसकी सफलता के लिए प्रतिप्रचार (counter-propaganda) दिया जाता चाहिए। इससे सफलता का एक बड़ा कारण है। सामाजिक प्रचार के सहायकों की स्थापना करना ही सफलता का एक बड़ा कारण है। सामाजिक प्रचार के सहायकों की स्थापना करना ही सफलता का एक बड़ा कारण है।

5. विधि का सहारा :—सभी सामाजिक प्रचार की सफलता में सहायक बनाना आवश्यक होता है। यदि सामाजिक प्रचार के विरोध का सहारा न मिले तो प्रचार के सफलता का एक बड़ा कारण है। सामाजिक प्रचार के सहायकों की स्थापना करना ही सफलता का एक बड़ा कारण है। सामाजिक प्रचार के सहायकों की स्थापना करना ही सफलता का एक बड़ा कारण है।

यह प्रचार प्रचार के सहायकों की स्थापना के लिए आवश्यक बनाने चाहिए है।



## अफवाह

( Rumour )

प्रचार जनमत निर्माण में अत्यन्त प्रमुख भूमिका निभाता है। अतः हम कह सकते हैं कि प्रचार जनमत का एक मुख्य साधन है। जनमत का अन्य प्रमुख साधन अफवाह है जिसे विशेषकर जनमत परिवर्तन में प्रयोग करते हैं। अफवाह में मानव के सामाजिक चिन्तन का समावेश होता है। इसका अनुपात मिलन बढ़ता है अफवाह का महत्व बढ़ता ही बढ़ता जाता है।

अफवाहें ऐसी परिस्थितियों में प्रचलित होती हैं जब जनसाधारण ( जन शक्तियाँ ) सामाजिक में होते हैं अथवा सामाजिक होते हैं। यदि लोग मन की स्थिति में होते हैं तो अफवाहों के प्रति उनकी सुचेतता और बढ़ जाती है। साथ समाज में संघर्ष, दंगल, सामाजिकता, अन्धकार, सामाजिक दुर्भाव नीतियों में अफवाह अति प्रमुख साधन है।

अफवाह एक सामान्य शब्द है जिसका वैदिक जीवन में बहुत बड़ी भूमिका प्रयोग किया करते हैं। अफवाह किसी जनमत, विचार, व्यक्ति, संसुद्ध, सम्प्रदाय, धर्म, धर्म, भाषा में सम्बन्ध हो सकती है।

### अफवाह-अर्थ

( Rumour Meaning )

यह एक सामूहिक व्यवहार है। आवास-आजीव स्थितियों, मन और प्राण की दशाओं में इसका प्रचार अज्ञान की मन के कारण होता है। मन की परत बिंदु बिना जब कोई संवेदनपूर्वक कारण एक से दूसरे और दूसरे प्रकार अनेक लोगों में तेजी के साथ फैलती है तो इसे अफवाह कहा जाता है।

अफवाह की विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न रूपों में परिभाषित किया है—

स्प्राट ( Spratt, 1949 ) के अनुसार, "अफवाह यह कहानी है जो एक मूढ़ से दूसरे मूढ़ तक पहुँचती है और इस क्रम में उसमें कुछ परिवर्तन की संभावना होती है।" ( "It is perfectly plausible to call any story that passes from mouth to mouth a rumour because in passing it is liable to change". )

अर्थात् अफवाह एक ऐसी कहानी ( मसखरा ) शब्द है जो एक व्यक्ति से दूसरे में फैलती है और देता होता है कि वह उसमें परिवर्तन का संभव है।

आल्फ्रेड लया पोस्टमैन ( Allipwa & Postman, 1948 ) ने कहा है कि, "अफवाह विचार का वास्तविक एक निश्चित कथन या घटना है जो एक व्यक्ति के दूसरे व्यक्ति तक मौखिक रूप से चल एवं चलता अथवा के अथवा के फैली जाती है ।" ( "A rumour is a specific proposition for belief passed along from person to person, usually, by word of mouth, without accurate standards of evidence being present". )

किम्बल यंग ( Kimball Young, 1940 )—के अनुसार, "अफवाह एक विशेष प्रकार का सुझाव या एक कहानी है जो किसी सामाजिक या सांस्कृतिक व्यक्ति के समूह में फैली के वाक-वाक फैली है ।" ( "Rumour is a special kind of suggestion, a story which comes from real or fictitious person or persons which grows as it spreads." )

कूपर तथा मोरबेल ( Cooper & Morbell, 1919 )—ने कहा है, "अफवाह एक गलत रिपोर्ट है जो एक से दूसरे-व्यक्ति तक सुर्खों द्वारा फैली होती है ।" ( "Rumour is a false report that is passed from person to person by word of mouth." )

जेम्स डीवर ( James Deaver, 1941 )—के अनुसार, "अफवाह एक सांस्कृतिक कथा है जो किसी घटना के प्रति होने के सम्बन्ध में फैली है ।" ( "Rumour is an unwritten story circulating in a community, alleging the occurrence of a certain event." )

उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से अफवाह के निम्नलिखित लक्षणों का बोध होता है—

- (क) अफवाह एक कथन या कहानी है जिसकी सम्पाद की तीन बिंदु बिना हो लोग उसे सच मान लेते हैं ।
- (ख) अफवाह किसी व्यक्ति, समुदाय, व्यक्ति या घटना के सम्बन्ध होती है ।
- (ग) अफवाह मौखिक रूप से किसी समुदाय में एक से दूसरे व्यक्ति में फैली है ।

### अफवाह की विशेषताएँ

(Characteristics of Rumour)

1. अफवाह एक समाचार या सम्बन्धित कहानी है, एक लुप्त रिपोर्ट है जो लोगों में फैली है और लोग यह पर विश्वास करने लगते हैं ।

2. अफवाह सुर्खों द्वारा अर्थात् मौखिक रूप से फैली है । इस प्रकार फैलने में इसकी चलाव चाल से परिचित हो जाता है अर्थात् इसके लक्ष्य सम्बन्धी होते हैं,

क्योंकि हम जाननी चाहें सुखी से सुखी है जो जाननी कोर के सुख को मराना कर  
कामना करता है ।

3. अन्धश्रद्धा, लज्जुपन, सम्बन्धन भाँति की किसी ऐसी घटना के होना है जो सामान्यिक होनी है। घटना में सम्बन्धनता के कारण अनन्तकारण करने की शक्ति मिले है।

4- अथवाहम में तबले एवं विरोध का संग नहीं होता। अतः एवं तुलनात्मक नहीं हो भी पाये किन्वा कौन समझें तबले संग एवं विरोधमय का संग कि है।

३. कालबाहु का अन्तः, एक सतत रूप में चलता है जब वास्तविकता में जीवन अनुभव हो पाती है : अतः कालबाहु विज्ञान कालबाही होती है :

क. आलगाहो कर्मीक सम्मान होखी हे । कमी पो इतके सम्माना न्हं पुर्वीक  
कमी होखी । कर्मीक सगळ्या हो कमी हे इतका प्रकार एक आसा हे ।

7. अणुबाहु का विभव सर्वदा बहुअणुन हीरा है। बहुअणुन धातुकी, धातुकी के विभव में ही अणुबाहु पीलिया है। इसके विभव का बहुअणुन हीरा अणुबाहु है।

६. आयुष्मान् बदा उचिष्यते, लोकवीर्यं त्वयि होतुं भी आनन्ददायक है ।

9. सर्वोच्च न्यायालय द्वारा सुझाव निर्दिष्ट होते हैं। सुझाव वापस या अस्वीकार की जा सकती है।

10. आसपास में बौद्ध स्तूप बनाने की कला विकसित होती है जो आसपास होकर ही बनती होकर आसपास में बसा जाती है।

11. मध्यमार्थों की कल्पना के लिये अज्ञान होने से कल्पना ज्ञान दुर्लभ होता है। अज्ञान के कारण ही कि ज्ञान अज्ञान कल्पना का ज्ञान अज्ञान कल्पना होता है जो अज्ञान कल्पना ही है।

12. राष्ट्रीय महाकाव्य की कुछ प्रतिस्पर्धाएँ भी होती हैं। कौन सी प्रतिस्पर्धा देश के मातृभाषी लोग अपने प्रतिस्पर्धी देशों के साथ करती हैं। ऐसे सभी प्रतिस्पर्धी प्रतिस्पर्धी होते हैं और महाकाव्य के प्रति अपना समर्थन व्यक्त करते हैं।

SPRINT & SPRINT

( **English and Research** )

among the men were identified as—

६. **सम आकाशह ( Faint skyward )**—यस आकाश होने पर अन्तर्जात में अशुद्धता की भावना होती है। इस और अशुद्धता पर आकाशित आकाशों को आकाश कहलाती है। इस आकाश में लोग यदि आकाशिक होते हैं। वे अशुद्ध होते हैं अतः किसी की शुद्धता को वे मान मान लेते हैं। इससे सब शुद्धता और विविधहीनता का पाली है। शुद्धता, शुद्ध, आकाशिक होने के समय इस-आकाशों की अशुद्धता होती है।

2. **टिफाइड अफवाह ( Typhoid epidemic outbreak )**—कुछ अफवाहें ज्वरों की बहुत दवाओं, चायपायों, सब्जियों और फलफलों पर आता-पड़ती हैं। इनके अन्दरगत व्यक्ति अपनी दवा और सब्जियों के अनुपयुक्त मार्गों की वजह से करते हैं।

3. **मलमैर अफवाह ( Widalmania outbreak )**—जब लोग दूध, सब्जियाँ, दवा, इत्यादि के ज्वरों से पीड़ित होकर अफवाहें फैलाते हैं तो उन्हें मलमैर अफवाह कहते हैं। इन अफवाहों को किसी कारण से उत्पन्न दवा में ज्वर न कर देने के कारण अफवाहें फैलाते हैं। जैसे किसी के दवा, दूध या सब्जियाँ होने पर इस व्यक्ति की दवा ज्वरित करने के लिए या दूसरों के दवा फैलाने, अतिसर ज्वरित करने के लिए उसके बारे में कुछ अफवाहें फैलाते हैं।

4. **चिन्ता-अफवाह ( Chintamani outbreak )**—यह अफवाह की चिन्ता पर निर्भर होती है उसे चिन्ता अफवाह कहा जाता है। व्यक्ति जिस मनुष्यों और पशुओं के बारे में चिन्ता होता है उनके विषय में जानकारी प्राप्त करने का दमक होता है। इनके विषय में उसे भी जानकारी प्राप्त होती है उसी के अनुसार वह अफवाह फैलाने लगता है। अतः इसके लिए मनुष्यों की चिन्ता या परीक्षाओं के पीछे होने के विषय में बात चिन्ता कहते हैं। अतः इस अफवाह में अफवाह दूध या के कारण के विषय में बात हो के अफवाहें फैलाते हैं।

5. **अतिरिक्त अफवाह ( Exaggerated outbreak )**—यह प्रकार की अफवाह में अफवाह व्यक्ति दूध दूध के बारे में अफवाह फैलाते हैं। रातों रात अफवाह फैलाने का अफवाह फैला जाता है। अफवाह को लोग बहुत कर, अपने अफवाह फैलाने अफवाह फैलाते हैं।

### अफवाह फैलाने वाली परिस्थितियाँ

(Conditions for Spread of Rumor)

कुछ परिस्थितियाँ अफवाह के फैलाने में सहायक होती हैं। अतः उन परिस्थितियों में अफवाह फैली के फैलती है। आल्फ्रेड और पीनर ( Alfred & Pinson ) अफवाह के फैलाने को सुलभीकृत करने वाली कुछ परिस्थितियों का उल्लेख किया है जो निम्न हैं—

1. **सामान्य ज्ञान का विषय ( General issue )**—जब अफवाह किसी व्यक्ति व्यक्ति के बारे में होती है तो इसका अफवाह फैली होती होता है, किन्तु जब सामाजिक पद के सम्बन्ध होती है तो इसका अफवाह फैली के साथ होता है, अतः अफवाह की बात के अफवाह फैलती है। जब अफवाह किसी मनुष्य, वन, मनुष्य या अफवाह के विषय में होती है तो अधिक फैली के फैलती है। अतः इसके लिए की परिस्थिति अफवाह के फैलाने के लिए अनुपयुक्त होती है।

2. **ब्रह्मवादा का बहुत्व** (*Pluralism of the brahmas*)—ब्रह्मवाद के दृढ़ प्रति के पीछे के विभिन्न तथ्यान्त, जिसका प्रतिनिधित्व का बहुत्वपूर्ण होता जायाकर है। आल्फ्रेड तथा फोर्डमैन (*Alfred & Fordman 1948*) के अनुसार जब ब्रह्मवादात्मिक, अद्वैत, दार्शनिक और वैदिक दृष्टि के बहुत्वपूर्ण होती है तो बुरे समुद्र पर दसका आत्मक ब्रह्मवादात्मिक होने के कारण यह होती के साथ पीछली है। ब्रह्मवादा के बहुत्व के कारण ब्रह्मवादात्मिक उन्हें प्रति मिले है तथा ब्रह्मवादात्मिक दृढ़ प्रति के होता है। इसी प्रकार के ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादा के बहुत्वपूर्ण अर्थ के होने पर भी ब्रह्मवादात्मिक दृढ़ प्रति के होता है। ब्रह्मवाद के विभिन्न ब्रह्मवादात्मिक के ब्रह्मवादात्मिक के साथ ब्रह्मवादात्मिक होने के कारण इसके विषय में ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादात्मिक है।

3. **प्रतिनिधित्व की अनवच्छेदता** (*Uninterruptedness or ambiguity of representation*)—जब प्रतिनिधित्व अनवच्छेद होती है तो ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादात्मिक के पीछली है। इसके विपरीत प्रतिनिधित्व के ब्रह्मवादात्मिक विभिन्न होने की वजह से ब्रह्मवादात्मिक के पीछली की ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादात्मिक होती है। ब्रह्मवादात्मिक बहुत्वपूर्ण होने के साथ-साथ ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादात्मिक होती है तो ब्रह्मवादात्मिक दृढ़ प्रति के पीछली ब्रह्मवादात्मिक होती है। ब्रह्मवादात्मिक प्रतिनिधित्वों में दृढ़ प्रति की अपनी और में कुछ न कुछ ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादात्मिक है, और और ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादात्मिक के नहीं ब्रह्मवादात्मिक। इसी प्रकार के प्रतिनिधित्व की अनवच्छेदता ब्रह्मवादा के विषय में अपनी अनुकूलता ब्रह्मवादात्मिक है कि ब्रह्मवादात्मिक के प्रति ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादात्मिक है।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादात्मिक के बहुत्वपूर्ण होने के साथ ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादात्मिक होने पर ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादात्मिक है। आल्फ्रेड तथा फोर्डमैन (*Alfred & Fordman; 1947*) के अनुसार के पीछली के विषय में एक सूत्र का प्रतिपादन तथा यह ब्रह्मवादात्मिक है कि ब्रह्मवादात्मिक के पीछली के लिए ही ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादात्मिक है—प्रतिनिधित्व अनवच्छेद (*Uninterruptedness of representation*) तथा प्रतिनिधित्व बहुत्वपूर्ण (*Pluralism of representation*) होती ब्रह्मवादात्मिक। तब ( दोनों ) के अनुसार ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादात्मिक के ब्रह्मवादात्मिक तथा ब्रह्मवादात्मिक का पुनरावृत्ति है। (*Reason is the product of ambiguity and importance of the brahmas*) इस सिद्धान्त को उन्होंने विभिन्न सूत्र द्वारा ब्रह्मवादात्मिक है :—

**Reason = Importance & Ambiguity**

OR

**R = I & A**

उपरोक्त सूत्र से स्पष्ट है कि ब्रह्मवादात्मिक ब्रह्मवादात्मिक में के किसी एक के ब्रह्मवादात्मिक

में अर्थात् दृष्ट हो जाने की स्थिति में अन्वेषण की तीव्रता की शून्य हो जाती, क्योंकि यह स्थिति का एक सामान्य नियम है कि कि *anything, anything, anything by itself is equally so* (1930)।

कुछ प्रायोगिक अध्ययनों के परिणाम की प्रेरणा के अन्वेषण नियम का अन्वयन करते हैं। ओस्कर एवं बर्दिक (Oschander & Bardick; 1933) ने छोटी बच्चों के स्कूल की बदकियों पर एक अध्ययन किया। बच्चों के पीछे कक्षा का दृश्य में बाड़ी-बाड़ी प्रदान सम्पादित गई और प्रयोग कक्षा से एक सम्पूर्ण बुद्धि बालिका को स्कूल के के सामे बाहर प्रदान। बच्चों और छोटी कक्षा में देखा नहीं किया। एक बार बालिकाओं की एक दूसरी प्रेरणा के के स्कूल छोटी बच्चों के दृष्ट हो जाने सम्पादित किया। इसका अध्ययन उस बाड़ी कक्षाओं की छात्राओं में एक प्रकार की संज्ञाधारक सम्पादता की प्रवृत्ति हुई। किन्तु 5 की और छोटी कक्षा में यह सम्पादता नहीं प्रदान हुई। अथवा बार में के दो कक्षाओं एक के के (बालिका, छोटी) कक्षाओं की बार बालिकाओं के सम्पादित प्रवृत्ति (प्रदान सम्पादित प्रदान) के नियम में कुछ अन्वेषण प्रेरणा गई। परिणाम सम्पादनों की दृष्ट हो जाने नहीं। प्रयोग में तीन प्रेरणा की :-

- (क) सम्पाद प्रदान तथा अन्वेषण के सम्पूर्ण परिणाम की प्रवृत्ति के दिग् प्रदान बार में के दो कक्षाओं में अन्वेषण प्रदान गई।
- (ख) दूसरी प्रवृत्ति की सम्पाद प्रदान की अन्वेषण प्रवृत्ति परिणाम, सम्पाद बार कक्षाओं में (बालिका प्रवृत्ति प्रवृत्ति गई की) के दो में कोई अन्वेषण नहीं प्रेरणा गई।
- (ग) तीसरी प्रवृत्ति सम्पाद प्रदान का सम्पाद प्रदान अन्वेषण की परिणाम, दिग् दो कक्षाओं में प्रवृत्ति प्रवृत्ति नहीं गई की पर प्रवृत्ति अन्वेषण प्रदान नहीं।

परिणामों के बाध हुआ कि अन्वेषण की सभी कक्षाओं में प्रवृत्ति किन्तु प्रदान प्रदान की बालिकाओं में के 70 प्रतिशत के अन्वेषण के प्रदान में प्रवृत्ति प्रदान के प्रदान प्रदान प्रदान की बालिकाओं में के बाध 15 प्रतिशत में प्रदान किया। इसका कारण यह था कि तीसरी प्रवृत्ति सम्पादता का सम्पादता प्रवृत्ति अन्वेषण के प्रदान में बाध 15 प्रतिशत में प्रदान किया। इस प्रदान में सम्पादता सम्पादता का सम्पादता प्रदान। प्रवृत्ति प्रवृत्ति एवं प्रवृत्ति का सम्पादता का प्रदान अन्वेषण के प्रदान प्रदान सम्पादता है। प्रवृत्ति प्रदान प्रवृत्ति (Allport & Postulates; 1948) के प्रदान प्रदान (The psychology of Reason) में प्रदान है कि 'अन्वेषण में प्रवृत्ति प्रदान के प्रदान में कुछ प्रदान का प्रदान प्रदान है किन्तु प्रवृत्ति प्रदान में प्रदान

सांसारिक विचार में यह बात का बीच रहना एक बात है कि उसे अनुमान और उसे प्रमाण करना कठिन हो जाता है ।" ( "To be sure, in reason, there is always some residual particle of sense, a kernel of truth but in the course of transmission it has become so overlaid with fanciful elaboration that it is no longer separable or detectable.")

## अध्याय के कारण

( Causes of Reason )

एक वैज्ञानिक ज्ञान यह कहता है कि ज्ञान अध्याय क्यों फैलते हैं ? कुछ लोग व्यक्तिगत के बहुत और अन्य होने पर भी अध्याय फैलते हैं इसके पीछे अनेक मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारण कार्यरत होते हैं । ऐसे कुछ उद्भूत कारणों की चर्चा हम करेंगे :—

1. आत्मसन्तुष्टताओं की संतुष्टि ( Satisfaction of needs )—मनुष्य की व्यक्तिगत सभी आवश्यकताओं की सम्पूर्ण पूर्ति कर सकता है । व्यक्ति की बहुत आवश्यकताएँ संतुष्टि के लिए व्यक्ति को प्रेरित करती हैं । अतः ज्ञान और सभी उद्भूत आवश्यकताओं को हम करने के लिए अध्याय फैलते हैं । ऐसी आवश्यकताओं में ज्ञान आवश्यकता भी है जो सामाजिक विवेकों के कारण उत्पन्न कर के सम्पूर्ण नहीं हो सकती ही अनेक स्थानों में अध्याय फैलाकर व्यवस्था कर के सम्पूर्ण की जाती है । किसी सुगर-भरिस्थान दुकानों के बिना ही अध्याय फैलाकर व्यवस्था कर के ज्ञान बढ़ा का वातावरण सम्पूर्ण की जाती है । इसी तरह सामाजिक विवेका, व्यक्ति, व्यवस्था आदि ज्ञान आवश्यकताएँ भी अध्याय के पीछे कार्यरत हो सकती हैं ।

2. प्रतिरोध तथा दुर्गति की भावना ( Feeling of resistance and hostility )—जिसमें हम दुर्गति रहते हैं या विरोध प्रतिरोध को सामना करते हैं उन्हें सम्मान करने तथा मोक्ष विज्ञान का प्रसार करते हैं । जब कोई व्यक्ति अपने हाथ में प्रतिरोध नहीं के बाला हो उसे सम्मान करने के लिए उसके विरोध में छोटी-छोटी चरम की मोड़मोड़ोत्तर उसे सम्मान तथा सम्पूर्ण सम्मान अध्याय फैलाकर व्यवस्था कर के करना होता है । जहाँ के कारण भी अनेक ज्ञान अध्याय फैलने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं ।

3. विरोध तथा शत्रु ( Antagonistic state )—जब ज्ञान विरोध की व्यक्तिगत दृष्टि व्यक्ति के सामाजिक ज्ञान तथा संघर्ष उत्पन्न करती है । अपने विरोध होने के लिए व्यक्ति भाषा प्रसार के प्रयोग करती है । ज्ञान ज्ञान एवं ज्ञान-विरोधारी विरोध के ज्ञान व्यक्ति बहुत सम्मान फैलाकर धन एवं विद्याभुक्त होने





एवं प्रत्यक्षता बनाया जाता है। उक्ति यह वास्तवों के अन्तर्भावों के अन्तर्गत आती है। इस उक्ति को अपवाद विचारक कथन या सूचना को अन्तर्गत करना सदा पाता है।

2. सूचना को ठीका करना ( *Sharpening of message* )—अपवाद के सम्बन्ध कथन या सूचना को ठीका, ठीका या ठीक करना को आवश्यक है। अपवाद विचारक कथन को इतना समीक्षात्मक बनाते हैं कि सीधे बतार करे। कथन को सार-सही कर, सभा-संसार कर दीवार करते हैं कि यह दूसरे लोगों को सार-सही स्पष्टता को सूत्र स्थापित करे। कोरेक्स तथा कुरर के अनुसार इसका कारण यह उक्ति है कि जिसमें सीमित लोगों पर अन्तर्गत किया जाता है और जहाँ यह-सम्बन्ध ऐसा कर उसे स्थापित किया जाता है। ( *Sharpening is a process in which limited number of details are focused on and amplified.* ) *Woolcott & Cooper*; 1979.

3. आत्मसात करना ( *Assimilation* )—इसका कारण यह है कि अपवाद विचारक कथन को वास्तव एवं सुस्पष्टता में प्रति करने के यह अपवाद सीधे तथा दृढ़ प्रति में फैली है। कोरेक्स तथा कुरर के अनुसार, यह वह उक्ति है जिसमें अपवाद फैलने वाला व्यक्ति अपवाद को अपनी कवि एवं विचार के अनुसार बनाता है। ( *"Assimilation is the process in which the reports tend to become more coherent and consistent with views and interests of the reporting individual."* *Woolcott and Cooper*; 1979 )

अपवाद फैलने में अपवाद के सम्बन्ध कथन को इतना सुस्पष्ट, सही, सुनील-अपवाद एवं उच्च प्रभाव करते हैं कि यह वास्तव के अन्तर्भावों द्वारा आत्मसात की जा सके। सूचना या कथन को किसी-किसी अन्तर्भाव आत्मसात करती है, अपवाद उतनी ही सही फैली है।

## अपवाद फैलने के साधन

( *Media of Spreading Rumour* )

अपवादों एक विशेष उच्च का सम्बन्ध है। किन्तु यह सूत्र में नहीं फैली, इसके द्वारा के लिए किसी न किसी माध्यम का साधन की अपवाद होती है। रेडियो, टी-वी, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, सार, रेडियो, वगैरहों ऐसे ही साधन वास्तवों के द्वारा अपवादों फैली है।

1. समाचार पत्र तथा पत्रिकाएँ ( *Newspapers & Magazines* )—समाचारपत्र तथा पत्रिकाएँ अपवाद के द्वारा का उच्च माध्यम हैं। सार को पत्रिका—सप्ताह, मासिक, अन्तर्गत, सप्ताह, ऐसे माध्यम की विशेष में समाचार पत्रों की

सबकी को लीज-सोरीज कर लेना नामा प्रकार की सम्पदाएँ फैलती हैं। विशेषकर किसी व्यक्ति के लिये घर-बार के दुखदायक के विषय में सम्पदाएँ फैलती हैं। साथ सभी मिलित लोग सम्पदा पर एकजुट रहते हैं तथा उन्हें पटा बद्धन दुबनों लक पट्टीयते हैं। अनेक सम्पदाधारण सम्पत्ती के लिये सम्पदा घर घर ही फैली बिखरी रहते हैं। यही सबसे सम्पदा का आधार बनती है। अनेक परिस्थिति कई घर सम्पत्ती पर के लिये सम्पदा अनेक प्रकार की सम्पदाएँ के लिये लो-लगाव देती हैं।

क़ानून सर्वोच्च प्राथमिकता प्राप्त की व्यवस्थापन सभी की आवश्यकताओं के लिए या अन्यथा अपने व्यवसायिक रूप विकसित करने के लिए या अपने व्यवसायिक व्यवसाय के विकास का निर्माण करना होता है। व्यवसाय के संचालन के लिए सर्वोच्च व्यवसाय व्यवसाय का प्रत्येक रूप बनने है। प्राथमिकता प्राप्त व्यवसाय निर्माण में ही व्यवसायों का उपयोग करने है।

[illegible]

3. रेडियो, टेलीविजन तथा बिरोमा (Radio, T.V. & Cinema)—  
संचारण का यह आधुनिक माध्यम भी आव्यक्त विद्युत्वात्मक विधि (electrostatic media) कहलाता है, क्योंकि यहाँ भी प्रयुक्त होता है। सुचारु एवं दृढ़ के अन्तर्ग में इस विधि का अत्यन्त ही उत्तम एवं व्यापक उपयोग होता है। अत्यन्त ही अल्पकाल के अन्तर्ग में रेडियो तथा टी.वी. का अत्यन्त ही उत्तम उपयोग हो रहा है।

4. **पत्र, तार तथा दूरभाष्य (Letters, Telegrams and Telephones)**—पत्र (सूत्र), तार एवं टेलीफोन व्यवस्था कीजाने के प्रमुख माध्यम माने जाते हैं। अधिकांश विद्वानों के बीच निजी चर्चा के अलावा कभी-कभी सभासदों के सम्बन्ध में तथा उनकी के बारे में भी कुछ लिखते हैं जिसे सार सारा सारा-सारा सारा ही कहा जाता है, यह किसी अन्य की व्यवस्था-विधि विस्तृत रूप में बताया है, यह सारा, यह सारा व्यवस्था का रूप दिया है। और ऐसे ही दूरभाष्य एवं तार के प्रयोग द्वारा भी व्यवस्था की व्यवस्था और विचार होता है। कुछ लोग तो सभासदों कीजाने के सम्बन्ध में कुछ-कुछ लिखते तार का टेलीफोन का विचार करने सभासदों को

1. **Introduction**

5. **सहाय्य सुचना की आवश्यकता में प्रशिक्षण कक्षा (Training in Identification of Need for Assistance Factor)**—सुचना की आवश्यकता सुचनाओं में सम्पादित हुए एक अन्य अवस्था की है। इसके आवश्यकता सुचना की रूप प्रकाश, परिचित

किया जाता है कि कम कालों की अवस्थाओं से गुजर करने में यह ही जीव : जीवों में विकास के प्रकार के बिना करता जीव्य होता क्योंकि अधिकतर स्थितियों में अवस्थाओं के प्रति अत्यन्त कम अतिरिक्त सुविधाएँ होती हैं : किन्तु वे अवस्थाओं की पदचाल सुकर होती हैं और फिर अधिक कम कालों की अवस्थाओं के अलग कर लेते हैं :

४. अल्पकाली अवस्थाएँ पर दोष ( *Short-lived states* )—कम परिधिपरि अवस्थाएँ के बिना बहुत अनुकूल हो तथा अभाव में अल्प, अल्पकाल, अल्पकाली अवस्थाएँ अल्प हो की ऐसे समय में जीवों के अल्पकाली अवस्थाएँ पर अनुकूल अवस्था की अवस्थाएँ की दीक्षाएँ में एक अवस्था अल्प होती हैं :

५. विपरीत अवस्थाएँ ( *Contrary states* )—अल्पकाली अवस्थाएँ के अभाव की दीक्षा के लिए अल्प विपरीत अवस्थाएँ दीक्षाएँ जाती हैं : अवस्थाएँ के अनुकूलताओं के अभाव का यह भी एक गुण अल्पकाल है : बहुतों गुण, यह गुण, दीक्षा के समय अवस्थाओं की विपरीतता दीक्षा के बिना विपरीत अवस्थाएँ दीक्षा की अवस्था की जाती हैं :

यह अवस्था अवस्थाओं की दीक्षाओं के अल्प अल्प बिना जाती हैं, किन्तु अल्प विपरीतताओं में अवस्थाओं के अभाव पर अल्प अनुकूल अल्प अल्प अल्पकाली होती हैं :



## आक्रामकता

( Aggression )

आक्रामकता आधुनिक समाज में एक अनुशासित विचार है कि इसे एक सामंजस्य सामाजिक व्यवहार कहना उचित प्रतीत होता है। साथ जीवन के अनेक क्षेत्र में आक्रामकता और हिंसक व्यवहार बहुत कम में दृष्टिगोचर है। आक्रामकता तथा हिंसा ने एक कार्यबन्धित एवं नियन्त्रित रूप धारण कर लिया है। इसके महत्व के कारण समाज मनोवैज्ञानिक भी इसके अध्ययन में रुचि लेने लगे हैं। यह आक्रामक और हिंसक व्यवहार के प्रयोग में उत्पन्न वह विविध प्रयोगों के अनुसार देने के समाज में नाना प्रकार के अध्ययन कर रहे हैं।

### आक्रामकता का अर्थ

( Meaning of Aggression )

समाज मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न आधारों पर आक्रामकता के अर्थ की चर्चा की है। अधिकांश आक्रामक व्यवहार के उद्देश्यों के आधार पर इसे परिभाषित करते हैं।

बर्कोविज ( Berkowitz, 1975 ) के अनुसार, आक्रामकता का अर्थवाच, "दूसरों के प्रति की गई सम्पोजन या उद्देश्यपूर्ण क्षति या हानि है।" ("Aggression is the intentional injury of another") तात्पर्य यह है कि आक्रामक व्यवहार करने वाले की नीमत, संसा, या वस्तुय दूसरे की क्षति या हानि पहुँचाना है, चाहे वह क्षति न पहुँचा सके।

डाली तथा अन्य ( Dollard et al; 1939 ) ने कहा है कि, "आक्रामकता एक प्रतिक्रिया है जिसका उद्देश्य किसी प्राणी को चोट पहुँचाना होता है।"

बीरन तथा बार्मि ( Baron & Byrne; 1977, 1981 ) के अनुसार, "आक्रामकता, वह व्यवहार है जिसका उद्देश्य उस जीवित प्राणी को चोट पहुँचाना होता है जो इस व्यवहार के अपने का प्रयास करता है।" ("Aggression is behaviour directed toward the goal of harming or injuring another living being who is motivated to avoid such treatment.")

बुस ( Bus; 1961 ) ने कहा है, "आक्रामकता ऐसी अनुकूलता है जो दूसरे

हामी को एक अभिव्यक्ति उपवीचन प्रदान करता है।" ("Aggression is a relationship that exists between individuals in a certain environment")।

ब्रादर (Bradley, 1958) के अनुसार, "आक्रामकता एक ऐसा सामूहिक या व्यक्तिगत व्यवहार है जिसका उद्देश्य दूसरों को पीट पहुँचाना होता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं की व्याख्या से इसके स्वरूप के विषय में निम्न स्पष्ट होते हैं :—

1. आक्रामकता एक व्यवहार है जो जानबूझकर किया जाता है। इसका उद्देश्य किसी व्यक्ति या उसकी सम्पत्ति को क्षति पहुँचाना है। उद्देश्य बहुत महत्वपूर्ण है जो आक्रामक व्यवहार की कसौटी है। पीटो द्वारा अभिव्यक्त व व्यवहार पर बाधक का एक लक्षणा आक्रामकता नहीं है क्योंकि उद्देश्य पीटो के पीट का स्वरूप है। एक दुसरे द्वारा किसी व्यक्ति पर चार किया गया, संघर्ष के बाद जाती गया। यह उसका व्यवहार आक्रामक कहलाएगा क्योंकि उद्देश्य हुआ करना था, पर किसी कारण क्षति न हुई।

2. आक्रामकता का अभिप्राय (intention) बाधक/घात का अवसर प्राप्त हो सकता है। इसे महत्वपूर्ण आक्रामकता कहते हैं। कितने अभिप्राय को वैयक्तिक आक्रामकता (individual aggression) कहा जाता है।

3. लक्ष्य व्यक्ति या पाल्य व्यक्ति बनना बिना क्षति पहुँचाने का प्रयास होता है वह उस क्षति के परिहार का बचाव का प्रयास करता है। इसमें यह है कि वहमें बचाव करने की अभियोजना होती है। यह भी आक्रामक व्यवहार की पहचान है कि लक्ष्य व्यक्ति क्षति के बचाव के लिए अभियोजित होता है।

जब उपरोक्त तीनों विशेषताएँ किसी व्यवहार में देखी जाती हैं तो उसे आक्रामक व्यवहार की संज्ञा दी जाती है मान्यता नहीं। आक्रामकता वह व्यवहार आक्रामक कदा आरंभ जिसका उद्देश्य पीट, नुकसान या क्षति पहुँचाना है। क्षति न पहुँचाने पर उसे आक्रामक कहा जाएगा। दूसरी ओर उद्देश्य नुकसान करना या पहुँचाना नहीं है किन्तु नुकसान हो जाए तो वह व्यवहार को आक्रामक व्यवहार नहीं कहेंगे।

## आक्रामकता के सिद्धान्त

(Theories of Aggression)

आक्रामक व्यवहार के स्वरूप, इसकी उत्पत्ति, इसके कारणों व क्षति की व्याख्या के लिए अनेक सिद्धान्त प्रतिपादित किए हैं। यह सिद्धान्त तीन वर्गों में विभक्त किए जाते हैं :—

1. आक्रामक व्यवहार के वैयक्तिक दृष्टिकोण के अंतर्गत मुख्यतः दो अवस्था

वैदिक कालकी पर बल देता है : इसके एक और वैकट्यक और सत्य का शास्त्री तथा दूसरी और वैदिकी शास्त्र का प्राकृतिक दृष्टिकोण है :

2. दूसरा दृष्टिकोण, सांख्यिकता को विचार एवं पुनः की सत्य मानता है : यह पुनः-सांख्यिकता सिद्धान्त कहा जाता है :

3. तीसरा दृष्टिकोण सांख्यिकता की सांख्यिक अवस्था का विचार करता है :

1. वैदिक सिद्धान्त वा नृपकृत्यात्मक सिद्धान्त ( *Biological or Ideological theory* )—यह दृष्टिकोण सांख्यिक अवस्था के वैदिक कालकी पर बल देता है : इसके अनुसार सांख्यिकता एक सांख्यिक अवस्था है तथा नृपकृत्यात्मक और नृपकृत्यात्मक के वैदिक काल में बल देता है : यह एक शास्त्रीय अवस्था है : इसकी उत्पत्ति नृपकृत्यात्मक के कारण होती है : इसका विचार यह है कि सांख्यिकता किसी निश्चित अवस्था के प्रति एक निश्चित प्रकार की अनुकूलता करने की अवस्था ( *instinct* ) होती है : इसके अनुसार वैकट्यक, सत्य और शास्त्री के विचार प्रमुख हैं :

(अ) वैकट्यक के विचार—इसके अनुसार सांख्यिकता नृपकृत्यात्मक के कारण उत्पन्न होती है : यह पुनः ( *Reproduction* ) की नृपकृत्यात्मक के कारण सांख्यिकता अवस्था की उत्पत्ति पर बल देता है : इसके अर्थ में सत्य-सत्य की अवस्था होती है कि यह पुनः की सत्य देता है : यह उत्पत्ति के कारण उत्पन्न शास्त्री के सत्य में सत्य-सत्य शास्त्र है इसके पहले यह सांख्यिकता की अवस्था करता है : यह सांख्यिकता की सत्य सत्य का एक सांख्यिक सत्य मानता है : वैकट्यक के नृपकृत्यात्मक सिद्धान्त को शास्त्रीय सत्य ही माना जाता है : सत्य इसकी सत्य मानता है :

(ब) सत्य का नृपकृत्यात्मक दृष्टिकोण ( *Fairbair's psycho-analytic theory* )—नृपकृत्यात्मक उत्पत्ति पर आधारित यह सिद्धान्त की नृपकृत्यात्मक नृपकृत्यात्मक के उत्पत्ति की उत्पत्ति करता है : यह नृपकृत्यात्मक-नृपकृत्यात्मक ( *Eros or life instinct* ) और नृपकृत्यात्मक ( *Thanatos or death instinct* ) कहलाती है : इसके से सत्य सत्य-सत्य तथा सत्य विचार-कारी उत्पत्ति है : इस प्रकार सत्य के अनुसार सांख्यिकता एक सत्य नृपकृत्यात्मक अवस्था है : इसका उदाहरण अवस्था है :

नृपकृत्यात्मक ही सांख्यिकता अवस्था का कारण है : इसके कारण सत्य की उत्पत्ति सत्य सत्य-सत्य और सत्य सत्य-सत्य होती है : इसके कारण सत्य सत्य-सत्य के सत्य, सत्य, सत्य सत्य के सत्य सत्य-सत्य होती है और सत्य सत्य सत्य-सत्य को सत्य वा सत्य सत्य-सत्य सत्य होती है : यह यह





की विनाशकारी शक्ति बढ़ गयी है। यह माना जाता है कि दुश्मनों का हमला कर सकना है। अतः वे अन्य व्यक्तियों पर आक्रमण करने में अधिक उत्सुक हैं।

3. **छत्रों का संभव**—आत्म की तरह शरीर की मान्यता है कि आक्रमण छत्रों का संभव शक्ति में जारी रहता है। यह छत्रों का संभव निर्दुल (Solitary) होता है जब परिवेश में कोई अदृश्य विद्यमान होता तथा शक्ति की अदृश्य कृपा है।

शरीर के विज्ञान में निम्न सूत्रवाचक बताई जाती हैं—

(i) इस विज्ञान में यह स्पष्ट नहीं है कि शरीर आक्रमण व्यवहार की और किस दशाओं में अपना वा नहीं करता है।

(ii) प्राचीन कालों के काल में विज्ञान की वैज्ञानिक कृपा संभव नहीं है। उदाहरण के लिए कुतु की अदृश्य का उदाहरण संभव नहीं है। ऐसे ही अन्य कालों की अनुमान पर आधारित होती हैं।

(iii) आक्रमण व्यवहार की शक्ति अभिव्यक्ति के कारण संचित छत्रों में सभी और परिवर्तनकर आक्रमण व्यवहार में भी कुछ दिनों के लिए सभी आकाशवाचक बनता है। किन्तु वास्तव में वास्तव (Miles & Miles, 1963) ने अध्ययनों में इसके विपरीत परिणाम प्राप्त किए। सर्वोपरि (Miles & Miles, 1973) ने भी अपने परिणामों द्वारा पूर्व-वर्तित विज्ञान की मान्यताओं की पुष्टि न होने का स्पष्ट किया है।

(iv) पूर्ववर्तितों का विज्ञान शरीर में आक्रमण की उपलब्धि मानता है। मॉरीस (Morse, 1974) ने यह स्पष्ट किया है तथा इस बात के साथ अपनी पुस्तक "The Nature of Human Aggression" में लिख है कि आक्रमण व्यवहार उपलब्धि एवं शारीरिक कृपा नहीं होती। उदाहरण के लिए शरीर की क्षमता उपलब्धि, अदृश्य संभव के दिनों (Miles) शक्ति के शरीर में, दाहनी शक्ति में आक्रमण अदृश्य का उदाहरण होता है। अन्य मान्यताओं की शक्ति, वैज्ञानिकी, वैज्ञानिक, वास्तविक शक्ति में विज्ञान अदृश्य की उपलब्धि के उदाहरण शक्ति में के वास्तविक कृपा में आक्रमण की अनुपलब्धि वाचा। अतः यह कृपा शक्ति होती है कि आक्रमण व्यवहार उपलब्धि नहीं होता।

### पुष्पा-आक्रमण विज्ञान (Penetration-Aggression Theory)

डॉल, मिलर, एन. मायर तथा मिर्स (Doll, Miller, Doob, Moraw & Sears, 1929) ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि पुष्पा आक्रमण की उपलब्धि है। विज्ञान एवं पुष्पा शक्ति आक्रमण व्यवहार करते हैं।

यह एक प्रकार के अन्तर्नीय सिद्धान्त ( Drive theory ) पर आधारित है जहाँ दूसरी को मुक्तता पहुँचाने के अन्तर्नीय अथवा ड्रेवा के कारण आक्रामकता उत्पन्न होती है। यह एक प्रकार के उद्दीयन की अवस्था है जो आक्रामक व्यवहार की अभिव्यक्ति से कम होती है। इस प्रकार आक्रामकता के वैज्ञानिक सिद्धान्त के बिना यह पुनः कम से मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण है जिसके अनुसार मनोवैज्ञानिक कारण क्रिया को उत्पन्न करते हैं।

बालरें तथा अन्य (1939) की परिकल्पना काफी सीधी व सरल है, "क्रुद्धा की उत्पत्ति स्वयं के अवस्था होने पर होती है, क्रुद्धा से सबसे आक्रामकता उत्पन्न होती है, और सब आक्रामकता, क्रुद्धा का परिणाम है।" ("Provokedness was caused by having a goal blocked, provokedness always leads to aggression, and all aggressive reactions follow provocation") यदि अवस्था स्वयं अतिव्यक्त व्यवस्था हो जाता है तो क्रुद्धा की मात्रा बढ़ जाती है और बढ़ी वृद्धा उस समय की होती है जब अवस्था निम्न हो जाता है। क्रुद्धा समय के साथ भी बढ़ती है और घटित होती है। और अन्तिम में इसके निरन्तर अभिव्यक्ति की संभावना होती है।

जुको नगर में यह सिद्धान्त काफी कम प्रतीत होता है। बालरें एवं मिस्कर (1939) ने अपने क्रुद्धा आक्रामकता सिद्धान्त में दो परिकल्पनाओं (hypotheses) की परी की है—

(I) आक्रामकता की उत्पत्ति सबसे क्रुद्धा से होती है।

(II) क्रुद्धा से सबसे किसी व किसी प्रकार की आक्रामकता उत्पन्न होती है।

इसका अभिप्राय यह है कि क्रुद्धा व्यक्ति सबसे किसी व किसी प्रकार की आक्रामकता अभिव्यक्त करता है। यही यही वस्तु यह भी कि सभी प्रकार के आक्रामक व्यवहार क्रुद्धा का परिणाम होती है।

यह क्रुद्धा के सीधे के प्रति आक्रामकता अभिव्यक्त होती है जो इसे उत्पन्न आक्रामकता कहा जाता है। यथी-यथी सीधे अभिव्यक्ति होता है, उसे स्वयं का अधिकार होता है, या सीधे सीधे नहीं होता जो इस स्थिति में प्रमुख सीधे के अभिव्यक्ति सीधे सीधे की वक्तों जमान या मनोवैज्ञानिक व्यवस्था है के प्रति आक्रामकता निरन्तरित हो जाती है ( मिस्कर 1948 ); सर्वोच्च तथा अन्य (1967)। इस प्रकार की आक्रामकता की निरन्तरित आक्रामकता कहा जाता है। इस स्थिति में आक्रामकता उस समय के प्रति प्रतिक्रिया की जाती है जो अपेक्षाकृत अधिक क्रुद्धा होने वाला और क्रुद्धापूर्वक उत्पन्न होता है।

अन्य दृष्टि में प्रतीत होता है कि यह सिद्धान्त व्यक्ति सम्बन्धी को व्यक्त करता है किन्तु सीधे निम्न इसी सीमाओं का सीमा देता है।

(i) कुछ नारी आत्मकथा की उत्पत्ति करती है। यह बात यह (Hess, 1961) तथा नारीवादीनों की सीखता जाति होता है। इसके अनुसार कुछ महिला बिना कुछ आत्मकथा की अपने जीवन का एक के लिए बहुत करते हैं। कुछ नहीं होती किन्तु नारी आत्मकथा स्वतन्त्र अपने अपने के लिए करता है। ऐसा विशेष कर यह समझा जाता है जब व्यक्ति यह अनुभव करता है कि आत्मकथा के प्रभावों से यह कुछ बातें प्राप्त कर सकता है। बर्कोवित्ज (Berkowitz 1978) ने बताया है कि आत्मकथा स्वतन्त्र के जीवन का एक ही एकल है जबकि कुछ भी एक कारण हो सकती है किन्तु यह एकलव्य कारण नहीं है। यह आत्मकथा आत्मकथा (Introspective) होती है। इसे मन, जीवन, तथा अनुभव प्राप्त करने के लिए किया जाता है जिसमें कुछ अपने मन के अनुभवों होती है। (यह 1966)।

(ii) दूसरी तथा उसके अनुभवों ने एक जीवन का आधारकता के अधिक बहुत किया है। अनेक नारी नारीवादीनों ने एक जीवन का जीवन किया है कि कुछ नारी आत्मकथा की उत्पत्ति करती है। यह एक ही, यह, जीवन (Britt and Jones, 1968), जीवन जीवन (Rosenkrantz, 1938), जीवन (Sageen, 1968) ने बताया है कि कुछ नारी आत्मकथा उत्पत्ति नहीं करती।

अनुभव आत्मकथा के जीवन का एक ही जीवन में जीवन होता है।

### संशोधित कुछ-आत्मकथा सिद्धांत

(Revised Postulation-Aggression Theory)

यह सिद्धांत के अनुसार जीवन (1931) ने कई यह बात कि कुछ नारी आत्मकथा स्वतन्त्र की उत्पत्ति नहीं करती तथा कुछ के लिए व्यक्ति कई प्रकार की अनुभवों करता है जिसमें कुछ भी एक है।

बर्कोवित्ज (Berkowitz, 1962, 1969) ने कुछ-आत्मकथा जीवन का जीवन के जीवन में एक ही जीवन किया। उसके अनुसार कुछ नारी आत्मकथा स्वतन्त्र की उत्पत्ति नहीं होती। कुछ आत्मकथा के लिए उत्पत्ति उत्पत्ति कर सकती है। कुछ और आत्मकथा के लिए एक उत्पत्ति (Introspective) प्रक्रिया का होता उत्पत्ति है जो नहीं होती है। यह आत्मकथा प्रक्रिया, व्यक्ति के अनुसार जीवन (Aggression) है। जब कुछ के जीवन उत्पत्ति होता है उस आत्मकथा उत्पत्ति होती है। यह प्रकार कुछ नारी-नारी आत्मकथा उत्पत्ति करती है किन्तु केवल उत्पत्ति कर के और नहीं करती। अन्त में बर्कोवित्ज (Berkowitz, 1983) ने कहा है कि आत्मकथा कुछ के लिए जीवन जीवन-जीवन जीवन (Aggression Theory) का उत्पत्ति होती है—जीवन

होता, हमकी भाँति । ( Aggression is stimulated by anger producing aversive reaction, such as pain. It thus in addition to frustration ).

बर्नोविज के अनुसार क्रोध या क्रोध-सम्बन्धित क्रिया ( anger produced action ) व्यक्ति की आक्रामक करता है । आक्रामक व्यवहार का चोटित होना और तत्पश्चात् बहुत बड़ा क्रोध प्रतिक्रिया के पुनः से निर्यातित होता है । परिनिवृत्ति के लक्षित ( value ) बर्नोविज आक्रामक लक्षित ( aggression value ) बर्नावरण में उपस्थित वस्तुवस्तु आक्रामकता के लिए प्रेरित करता है । इस प्रकार क्रोध आक्रामकता पैदा करता है या आक्रामकता की प्रेरणक ( production ) है, जबकि आक्रामक लक्षित किसी विभिन्न आक्रामक व्यवहार की आदिप्राप्ति के लिए आवश्यक है । व्यवहार के लिए मान किसी विषय में कुछ ही सकते हैं किन्तु वह समय तक वह वह लक्षित नहीं जब तक वह कोई उपस्थिति वाली बात न करे ।

इस बर्नोविज का मान्यता ( model ) क्रोध तथा क्रोधों की केन्द्रीयता पर बल देता है ।

## सामाजिक अधिगम सिद्धान्त

( Social Learning Theory )

बैंडुरा ( Bandura, 1973 ) ने सामाजिक अधिगम पर आधारित आक्रामकता का मान्यता प्रस्तुत किया है । इसके विकास में पहले बर्नोविज मान्यता ( Walters, 1973 ) का बहुत योगदान रहा है । यह सिद्धान्त आक्रामक व्यवहार की भी अन्य व्यवहारों की तरह अधिगमित/सीखा हुआ, व्यवहार मानता है । यह सिद्धान्त आक्रामकता के सुसंयोजित सिद्धान्त के विपरीत है जो आक्रामक व्यवहार की सम्पन्नता मानता है । इसके अनुसार आक्रामक व्यवहार लक्षित व्यवहार है जिसे अनुभव सीखा है । यह सिद्धान्त आक्रामकता के सम्बन्ध में तीन बातों पर विशेष ध्यान देता है :—

1. आक्रामक व्यवहार की उत्पत्ति कैसे होती है ? इसकी उत्पत्ति के लक्षित कारण क्या हैं ?
2. आक्रामक व्यवहार को क्या चीजें उत्पत्ती हैं ?
3. आक्रामक व्यवहार का अधिगम कैसे होता है ?

1. आक्रामक व्यवहार का अधिगम—सामाजिक अधिगम सिद्धान्त सुनिश्चित सुसंयोजित सिद्धान्त के लक्षित विपरीत है । यह आक्रामकता की सम्पन्नता नहीं मानता । इसके अनुसार आक्रामक व्यवहार सामाजिक अधिगम द्वारा अधिगमित किया जाता है । इस सिद्धान्त के अनुसार आक्रामकता की उत्पत्ति की तीन प्रक्रियाएँ हैं :—

(1) **प्रेक्षणवाचक अधिगम (Observational learning)**—बैंडूरा (Bandura; 1973) ने प्रेक्षण पर आधारित अधिगम की व्याख्या करने के लक्ष्य का अनुसंधान किया है। उनके अनुसार व्यक्ति वास्तविकता दूसरों के प्रेक्षण के द्वारा सीखता है। एक कहानी है, "देखा देखी बर्न बीर देखा-देखी चान।" प्रेक्षण के द्वारा सीखने का काम अनुसृत सीखन काठ में चमका रहता है। इसके अन्तर्गत विविध प्रकार के मॉडल (model) उपलब्ध होते हैं जिनके माध्यम से प्रेक्षण के आधार पर वास्तविकता का वर्णन होता है जैसे परिवार में अनुसृत धर्म, शिक्षा के माध्यम, शिक्षण एवं टी-वी के माध्यम से मनोरंजन, शिक्षण एवं धर्म-कार्यों के माध्यमिक कार्य में निष्पन्न धर्म, आदि। ऐसे अधिगम का आधार प्रत्यक्षता (imitation) तथा अनुकरण (imitation) है (Bandura, 1973, Walters & Bandura; 1963)।

सैन्यदृष्टि से तथा अन्य (Bharatavarsha 1963) — ये अपने अध्ययन में देखा कि जो शरीरक मापन व्यक्ति को व्यक्तित्व करते हुए एक चुने से, वे अभिमानजनक व्यक्ति व्यक्तित्वका वर्णित करते हैं। सुखी और विश्व संसार में व्यक्ति द्वारा व्यक्तित्वका का प्रयोग नहीं किया जा सकता है अभिमानजनक का व्यक्तित्व व्यक्तित्व के लिए।

(ii) पुनर्वसन (Reafforestation)—राष्ट्रीय स्तर पर पुनर्वसन के भी लक्ष्य जारी है—जैसे एक जगह किसी वानु के लिए जलनी यां की एक हजार लगाया है। वह उसे वानु (सिरीया) से लेती है जो अफिरा में थी वह वह आठ-महा सम्पूर्ण हुआ करता है क्योंकि अपने वह जीव किया है कि आठवाकता प्रकीर्ण के सम्पूर्ण ही होती है। अफिरा का यह वृक्षपुत्र विषय है कि फिर किया है पुराकार वात होता है जाने बीवी ही सीरियाई होने पर वह सम्पूर्ण के द्वारा जाने की संभावना होनी (Cowan के वाल्डेन; 1963, Green & Swanson; 1971)। गंधीय न्याय के विचारों जारी है (Chisholm & Allen; 1962, Kahn, 1951, Soos & Marston; 1953) वहीं एक एक और राष्ट्रीयता का चरण है; इसी प्रकार बर्लि है (Bandura, 1973, Barba, 1983 & Zilman, 1979)। एक के बाद के आधायकता निम्न स्थानों में पर लक्ष्य है :—

(iv) जब आकाशवाणी के बाल हूँ तो मैं अपने साथ मैथिलीक बच्चों से बातें करता हूँ ।

(11) यह व्यक्ति मानता है कि आकाशवाणी से बिना कुछ भी सोचें बिना ही ।

(10) जब व्यक्ति को संज्ञान में यह बात होती है कि क्या वेले वाले की इसका विधिक अधिकार है।

अधिकतम विज्ञान तथा द्वारा साक्षात्कार निरीक्ष की संशुद्धि नहीं करता। सभी-सभी दल के समुदाय नहीं है।

2. दूसरा प्रश्न साक्षात्कार व्यवहार के उत्तरों के सम्बन्ध है। किन्तु कारणों द्वारा साक्षात्कार व्यवहार सम्बन्धित क्या है? इस प्रश्न का उत्तर भी सामाजिक अधिकतम विज्ञान देता है। इन कारणों की उपस्थिति में साक्षात्कार के बदलने की संभावना अधिक होती है। संशुद्धि के ऐसे कारणों की पर्याप्त की है, जो निम्न है :—

(1) विचार (Attitudes)—समाज सर्वोपयोगियों ने अपने व्यवहारों द्वारा बताया है कि दुःख, कष्टकारी, अधिककारी, एवं सुखित अनुभव व्यक्ति में व्यक्तिगत उत्तरों तथा साक्षात्कार की प्रकृति उत्पन्न करते हैं। विवेक बात यह है कि यह सब सम्बन्धित है कि ऐसे साक्षात्कार व्यवहार द्वारा अनुपेक्षित है अतः उत्तरी अनुपेक्षित परिस्थितियों में सुधारों की सम्भावना होती है।

(2) निर्देश (Instructions)—अधिकतम विज्ञान निर्देश की भी साक्षात्कार व्यवहार के बदलने में एक सुबक कारक मानता है। विद्वत् समाज देने का उत्तर-दान होने पर निम्नान्त (Middleton, 1964, 1965) ने पाया कि जब उत्तरों-निर्देश देता है जो उत्तरों, व्यक्तियों की उत्तरों को उत्तर दान देने में कोई संशुद्धि नहीं करते।

(3) प्रेरण (Observation)—प्रेरण की साक्षात्कार की सम्भावना है। अन्य लोगों की साक्षात्कार व्याख्या करते देखकर भी कोई व्यक्ति अपने साक्षात्कार के लिए प्रेरित होता है। मैथ्यू तथा रॉस (Methews & Ross, 1974) ने अपने अध्ययनों में देखा कि टेलीविजन पर साक्षात्कार दिखाते देखते वाले व्यक्तियों में साक्षात्कार व्यवहार की प्रकृति अपेक्षाकृत अधिक की।

(4) प्रतीक एवं पुरस्कार (Incentives & Rewards)—कोई व्यक्ति यदि अनुभव करता है कि साक्षात्कार का प्रतीक उसे सामाजिक रूप प्रकट है तो उसके द्वारा साक्षात्कार व्यवहार करने की संभावना बढ़ जाती है।

3. तीसरा प्रश्न यह है कि साक्षात्कार व्यवहार का अधिकतम कितना होता है? मैथ्यू (Methews, 1963) के अनुसार साक्षात्कार व्यवहार के अधिकतम के अनुभव के अधिकतम सबसे बहुत प्रतिक्रिया पूर्णतया की होती है। पूर्णतया अधिकतम का होता है जो साक्षात्कार व्यवहार की सम्भावना है—वास्तु पूर्णतया, वास्तु-पूर्णतया (Self-satisfaction), समाधान पूर्णतया (Satisfaction satisfaction)।

वास्तु पूर्णत्व के वास्तविक सीमित गुणकार, सामाजिक मान्यता, अनुसंधान, प्रयोग, सामाजिक स्थिति ( Social status ), व्यवसायी अनुभूतियों के प्रति, आदि बहुत है । चीन तथा स्वीडन ( Chen & Stenmar, 1973 ) और कोरिया एवं जापान ( Corson & Waiharu, 1963 ) के अध्ययन इस क्षेत्र के महत्वपूर्ण हैं ।

आत्मपूर्णत्व में व्यक्ति अपने आकांक्षित व्यवहारों में सीखने का अनुभव करता है ।

आल्बर्ट, थॉमस, तथा चैडविक ( Albrecht, Thomas and Chadwick, 1930 ) आदि ने इस अवस्था में अनेक अवलोकन किए हैं ।

व्यावसायिक पूर्णत्व ( Vicarious satisfaction ) के भी आकांक्षित व्यवहार सीखा जाता है । जिस किसी के व्यक्ति का सामाजिकरण अपरिपक्व हो जाता है उसकी संतुष्टता या निष्फलता को स्वयं अपनी सीख द्वारा समझने लगता है जिससे व्यावसायिक पूर्णत्व का अनुभव करता है ।

अनेक तरीकों में सामाजिक अधिपत्य विज्ञान आकांक्षितता का एक बहुत विज्ञान समझा जाता है । यह एक प्रकार से कुछ आकांक्षितता परिपक्वता की अनुभूतियों की व्याख्या करता है । अतः ऐसे कुछ विज्ञान का ध्यान कहा जा सकता है । व्यवहार के लिए सुचित व्यक्ति भारतीय करता है, ध्यान को ही धारण का प्रयास करता है, अन्य वाली करता है या परिणत रूप से प्रभाव करता है, ऐसा नहीं है । इसकी व्याख्या व्यक्तिगत विन्यास, पूर्ण अनुभव, निरंतर अधिपत्य आदि के द्वारा करता है ।

सामाजिक अधिपत्य विज्ञान के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कोई उल्लेख नहीं है तथापि इसमें कुछ अनुभूतियाँ भी हैं :—

(1) इसके अनुसार आकांक्षितता पूर्णत्व के कारण होती जाती है । विज्ञान की प्रकार के पूर्णत्व का निहित है जिसमें सीखने प्रकार अपना व्यावसायिक पूर्णत्व की अवलोकन माना जाता है ।

(2) आकांक्षित व्यवहार के सभी और क्षेत्रों का समीक्षण इस प्रकार सामाजिक अधिपत्य विज्ञान नहीं होता है । कोई व्यक्ति आकांक्षित व्यवहार नहीं और क्षेत्र करता है ।

अनुभूत अनुभूतियों के क्षेत्रों में ही सामाजिक अधिपत्य विज्ञान अन्य विज्ञानों की अनेक अधिक महत्वपूर्ण है । सांसारिक सामाजिक अधिपत्य विज्ञान वास्तु धाराधारा तथा धर्म के अधिक महत्वपूर्ण मानसिक मान्यताओं जैसे धर्म, धर्म, अवस्था धर्म तथा धर्म को क्षेत्र है । धर्म ( Babbal, 1977 ) के अनुसार धर्मों

के उपस्थित हुआ है कि आक्रामकता के तीनों दृष्टिकोण अलग-अलग हैं और किसी न किसी माता में इनके द्वारा आक्रामक व्यवहार की उत्पत्ति होती है।

## आक्रामकता की उत्पत्ति वाले कारक

( Factors leading to Aggression )

अध्ययनों द्वारा कुछ ऐसे कारकों का बीच हुआ है, जिनसे मौजूदगी के आक्रामक व्यवहार के प्रति होने की संभावना अधिक होती है। यह कारक आक्रामकता की उत्पत्ति में भूमिका निभाते हैं। इनमें प्रमुख कारक निम्न हैं :—

1. उद्देश्य का अभाव ( Lack of purpose )—कुल-जातान्वय विज्ञान के अनुसार कुल आक्रामक व्यवहार का कारण है। बर्नस्टीन तथा कोर्न ( Bernstein & Cornwell, 1962 ) ने अध्ययनों द्वारा, कि कुल व्यक्ति की आक्रामक वह समय बढ़ती है जब कुल के सोल व्यवहार की उद्देश्यहीन समझ होता है। जब सोल व्यवहार का उद्देश्य स्पष्ट होता है तो ऐसी कुल आक्रामकता की अनुपलब्ध नहीं करती। बर्नस्टीन तथा कोर्न (Bernstein & Cornwell, 1962) ने अपने एक अध्ययन द्वारा इस परिणामी के आधार पर संकेत दिया कि कुल कुलन करते वाले व्यक्ति का उद्देश्य एक प्रमुख कारण है जो यह निर्दिष्ट करता है कि परिणीयति विवेक में आक्रामकता अवस्थित होती या नहीं। उदाहरण के लिए, मानके विवाद में मानका पिता को बड़े विराम के जाता है तो पहले कुल की उत्पत्ति होती या नहीं। कुल उस समय नहीं उत्पन्न होती जब विराम का कारण स्पष्ट कर दिया जाए। निम्न बताया है कि इसमें से माँ की बराबरी के कारण देर हो गई।

2. उद्दीप्तता स्तर ( Arousal level )—अध्ययनों के द्वारा हुआ है कि उद्दीप्तता स्तर की आक्रामक व्यवहार की उत्पत्ति है। आक्रामकता के कारण सम्बन्ध न रहने वाले अनेक उद्दीप्तता स्तर निर्दिष्ट स्थितियों में आक्रामकता की उत्पत्ति है। ( Wickens & Singer 1956 ) के अनुसार उद्दीप्तता का उद्दीप्तन के सोल व्यक्ति में आक्रामक व्यवहार उस समय उत्पन्न करते हैं जब वह व्यक्ति उद्दीप्तन का प्रतिपूर्ति कुलगीतन ( satisfiability ) करता है। रिस्नरैन तथा बन्ध ( Risman et. al; 1975 ) ने बताया है कि यदि किसी सोल द्वारा व्यक्ति और अधिक उद्दीप्त हो जाता है तो वह इस निर्दिष्ट उद्दीप्तन की सोल की संज्ञा देता है। यह दीप्तकुल व्याख्या ( satisfiability ) उद्दी और अधिक सोल का आक्रामक करनेसे भी उत्तः यह पहले से नहीं अधिक आक्रामक व्यवहार उत्पन्न कर सकता है।

3. वातावरण में उपस्थित संकेत ( Cues in environment )—





बाजार में सरस नीचे वाली की अपेक्षा अधिक मात्रा में सरस लिए खरीदों के बहुश्रुति की अधिक विस्तृतता पर ध्यान दिया। जबकि अधिक आकाशकता बढ़ाई की। इसके विपरीत निम्न अधिक विस्तृतता (Misinformation) वाले वाले इलेक्ट्रॉन के साथ की देखी गयी। अधिक विस्तृतता वाले वाली ने अपेक्षाकृत कम आकाशकता बढ़ाई की। कम बीजनि सपुष्ट ने अधिक आकाशकता दिखाई। विस्तृतता बाजार खरीदी दरों का प्रभाव प्रभावक या और खरीद के आकाशकता में वृद्धि की। अतः अधिक आकाशकता की वृद्धि बढ़ती है। किन्तु इस विषय में उपयुक्त अध्ययनों का अभाव है अतः आकाशकता वृद्धि के परिणामों की व्याख्या करनी चाहिए।

6. तापमान एवं कीलकृत—तापमान एवं वातावरण में अंतर कीलकृत की आकाशकता की प्रभावित करती है। तापमान यह है कि भौतिक वातावरण की आकाशकता में वृद्धि कर सकता है। अभाव बर्गीकरणों में भौतिक वातावरण के तापमान तथा कीलकृत की परिणामों का अध्ययन किया है। बैरन एवं डेल (Baron & Dell, 1973) ने तापमान उष्ण होने पर आकाशकता व्यवहार में वृद्धि की प्रभावित किया। एम्बरसन एवं एम्बरसन (Ambrason & Ambrason, 1974) ने एक चीलक लकी में पाया कि तापमान 86° के 99° परसहस्र होने पर खरीदों की मात्रा में वृद्धि हुई। बैरन (1972) ने देखा कि 72° के 75 °F के तापमान में 91° के 93° F की अपेक्षा अधिक आकाशकता अधिकतर हुई।

बर्गीकरणों में कीलकृत तथा आकाशकता के सम्बन्धों का भी अध्ययन किया है, और तापमान की अपेक्षा अधिक प्रभावकारी पाया है। डोगरालीन, एवं विलसन (Dogaralain & Wilson, 1976), गीन (Geen, 1968) ने अपने अध्ययनों में देखा कि बहुत अधिक के वातावरण में कीलकृत दर में वृद्धि के लक्ष्य के आकाशकता व्यवहार में वृद्धि हो जाती है। तापमान यह है कि कीलकृत केवल एक समय आकाशकता में वृद्धि करता है जब व्यक्ति लक्ष्य से परीक्षित हो। बीबीबी (Kosovski, 1973) के परिणाम की डोगरालीन एवं विलसन (Dogaralain and Wilson, 1976) के समान परिणाम प्राप्त किये हैं। अतः तापमान तथा उष्ण स्तर के कीलकृत आकाशकता की बढ़ती है।

7. उपलब्ध प्रकीर्ण (Direct presentation)—अनेक प्रकीर्ण वाले व्यवहार की प्रभाव होती है, आकाशकता की वृद्धि बढ़ती है। गीन (Geen, 1968) ने अपने अध्ययनों में व्यक्तिगत प्रकीर्ण (Visual attack) द्वारा आकाशकता के उपलब्ध होने के अभाव प्राप्त किए। प्रकीर्ण प्रकीर्ण की अपेक्षा व्यक्तिगत प्रकीर्ण की आकाशकता की प्रभाव में अधिक बढ़ाव पाया। ग्रीनवेल एवं ग्रीनवेल (Greenwell and Dogaralain, 1973) ने एक अध्ययन कर देखा कि ज ब

इटीएमडी की वेबसाइट पर सूचना दी जा रही है कि उपरोक्त सुसूचित व्यक्ति को एनफिल के मास्क/गैजेट पहनने की सलाह दी जा रही है। वेबसाइट पर सूचना इटीएमडी के आधिकारिक साइट पर उपलब्ध है।

३. अवैयक्तिककरण (De-individualisation)—कृत अवैयक्तिकता में अनु-  
सार अवैयक्तिकता एक ऐसी अवस्था है जिसमें व्यक्ति की सामवेतन (Self  
consciousness) का गायी है और सामवेतन सुनलन की कथा नहीं होती  
(Dionar, 1949)। और व्यक्ति अवैयक्तिक (Impulsive), नयाय विरोधी  
(antisocial) तथा न्यायक हो जाता है। इस कथी की वैयक्तिक-अव अव-  
रायती (Festian Dionar and Rogers 1936) के अवयवी के की अवैयक्तिक  
अव कथा है। इस अवयव में वैयक्तिकता तथा अवैयक्तिकता की वहाँ विविध  
की गई। वैयक्तिकता की वथा में अवैयक्तिकता की वथा के कथाय कथा या वथा  
विद्युतागत वथाय कथी वथाय वथाय की अवैयक्तिकता वथा या। अवैयक्तिक-  
कता की वथा में अवैयक्तिकता की वथा के कथाय कथाय में और विद्युत वथाय का  
वयवित अवैयक्तिकता वथा वथा अवैयक्तिकता वथा वथा वथा के वथा वथा में। वयवित  
में वथा वथा कि अवैयक्तिकता की वथा में वैयक्तिकता की वथा वयवित वथाय  
वयवित वयवित वयवित। अवैयक्तिकता के वथाय वयवित वयवित विद्युत वथाय वयवित  
वयवित। वयवित वयवित वयवित कि अवैयक्तिकता वथायकता में वयवित वयवित है।  
वयवित वयवित वयवित की वथा वयवित की वयवित वयवित है—वयवित, वयवित वयवित वयवित  
की अवैयक्तिकता के वथा वयवित वयवित वयवित वयवित वयवित वयवित वयवित वयवित  
वयवित वयवित।

३. **व्यक्तित्व कारक ( Personality factor )**—युद्ध परीक्षार्थी का स्वभावशास्त्र के चरित्र के चारों ओर के अध्ययन में व्यक्तित्व कारकों की भी आवश्यकता होती है। मेरबापी ( Merbaapi, 1944 ) ने अपनी रचनाओं द्वारा कहा है कि युद्ध स्थिति में अध्ययन के व्यक्तित्व वाले तीन अधिक महत्वपूर्ण होते हैं - यह इसे अनुसंधानित अध्ययन करते हैं। व्यक्तियों की अनेक गुणों में अध्ययन की अधिकता तथा तीन में से अधिकांश का उदाहरण दिया गया है। मेरबापी ( Merbaapi, 1944 ) ने कहा है।

कार्बनिक विचारों के अन्तर्गत है कि अनेक कारण आन्तरिक व्यवहार की उत्पत्ति या प्रकटनी हैं। सभी केवल एक कारण सिद्धी व्यवहारक व्यवहार की उत्पत्ति है और सभी अनेक कारणों का योगदान होता है। यह सभी विविध परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

### आकस्मिकता का नियंत्रण (Controlling: Auditing)

जब तक इस सब काफ़ी बुरा विवाद नह, यही से ही अलग-अलग को सुनने

कहाती है : हम मानते हैं कि साक्षरता अत्यधिक आवश्यक है। समाज के विद्यमान अवस्था है वह : समाज अतीवैसासिक इसके निर्देशन पर भी मान्य है। साक्षरता को अवश्य करने वाले कल्पों की सीद्धाधिक तथा व्यावहारिक प्रत्यक्ष है। यदि साक्षरों के होते हुए भी व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के प्रति, समुदाय के प्रति, समुदाय व्यक्तियों के प्रति, एक देश तथा देश या देशों के प्रति साक्षरता आवश्यक और प्रत्यक्ष विचारों के नहीं प्रतीते। यदि किसी, कल्पों पर प्रतिक्रिया न होता तो किसी का होती वह हुए भी ही मान्यता है।

साक्षरता निर्देशन में अवरोध ( *Inhibition* )—के अन्तर्गत के अन्तर्गत साक्षरनिर्देशन, समाज तथा समाज, साक्षर-व्यक्ति, निर्देशन ( *Guidance* ), अवरोध, साक्षरतापरक प्रभाव, साक्षरता अवरोध, अन्य साक्षरता तथा अवरोध, साक्षरता तथा अवरोध आदि प्रत्यक्ष है।

#### 1. अवरोध ( *Inhibition* ) :—

(1) साक्षर निर्देशन ( *Self Guidance* )—अवरोध द्वारा साक्षरता पर प्रभाव के निर्देशन में एक प्रमुख अवरोध साक्षरनिर्देशन है। साक्षरनिर्देशन, समाज, समाज, अवरोध समाज, और साक्षरता का एक रूप है जो साक्षरता निर्देशन का प्रमुख अवरोध है। इसमें साक्षरता प्रभावों की अवरोध है जो साक्षरता के अन्तर्गत होती है ( *Inhibition, Psychological, 1974* )। वैश्विक जीवन के अनुभवों के निर्देशन होता है कि ऐसे साक्षरता अवरोध के द्वारा किसी समाज में साक्षरता बिना साक्षरता प्रभावोंपर और समाज के समाज का अवरोध है। इसमें के अन्तर्गत व्यक्तियों साक्षरता पर प्रभाव के प्रति किसी साक्षरता निर्देशन होता है—किसी किसी की साक्षरता, साक्षरता अन्तर्गत समाज की साक्षरता के साक्षरता और समाज समाज के साक्षरता है, हम किसी की अवरोध का साक्षरता पर प्रभाव है और फिर साक्षरता का अनुभव करते हैं। समाजिक प्रभाव होने साक्षरता अवरोध विचारों है।

(2) समाज तथा समाज ( *Threat to socialization* )—किसी समाज साक्षरता निर्देशन पर व्यक्ति का प्रभाव है किन्तु साक्षरता के निर्देशन में उनके समाज साक्षरता के अन्तर्गत भी प्रमुख होती है। समाज बुद्धि तथा साक्षरता के सभी विचारों के अनुसार समाज तथा समाज की समाज की प्रमुख अवरोध माना जाता है। साक्षरता ( *Education, 1979* ) के अन्तर्गत द्वारा साक्षरता बिना है कि समाजों की साक्षरता के विद्यमान समाज है तो व्यक्ति में के समाज के समाज के प्रति के प्रति समाज साक्षरता अवरोध करते हैं। इसी प्रकार समाज की समाज—किसी वह सीद्धाधिक समाज की समाज होने का समाज लोगों द्वारा अनुभवों



हृदय के साथ कुछ एकता होती है जिससे आकाशकला उत्पन्न हो सकती है, जो स्वयं-स्वयं से विद्युत (electricity) बनना चाहिये। दूसरी ओर वेन्दुरा (वेन्डी-विम) (Wendura & Wendurawim) किसी आकाशकला ऊर्जा की परिभाषणा नहीं करते बल्कि इसकी कल्पना करते हैं कि हृदय नहीं होता। बल्कि यह बीच विरामक स्थान की संज्ञा है।

आध्यात्मिक जीवन में आकाशकला विद्यमान का आकार कैथार्सिस (Catharsis) की संभावना पर काफी विचार है। यदि, आकाशकला ऊर्जा किसी प्रकार के आकाशकला व्यवहार द्वारा उत्पन्न की जा सकती है तो हम यह कहते हैं कि विश्व विज्ञान के निम्ने सीढ़ी की अनेक इतने इतने सम्भावित आकाशकला व्यवहार की अनुसंधान के लिए सीढ़ी नहीं होना। हम प्रकार यदि सीढ़ी की सीढ़ी, प्रथम, द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ सीढ़ी पर कुम्भिकायी का व्यवहार केवल अपनी आकाशकला में व्युत्पन्न करने की बात बीच कहते हैं।

इस (विद्यमान) परिभाषणा के कई भाग हैं। सर्वप्रथम, स्वयं-स्वयं का स्वयं का आकाशकला ऊर्जा स्वयं एकता होती है। बल्कि स्वयं-स्वयं पर हम कहते हैं कि आकाशकला व्यवहार है। विन्सु विन्सुस (Windsor, 1979) के अनुसार आकाशकला ऊर्जा के अनेक भाग सीढ़ी होने का कोई अनुसंधान आधार नहीं है।

यद्यपि कुछ आकाशकला विद्वानों में यह संभावना निर्दिष्ट है कि आकाशकला के कुछ स्वयं के साथ एकता होती है। इस विद्वानों का आधुनिक मन (modern mind) यह पूर्वधारणा कर सकता है कि, (i) विशिष्ट प्रकार का ध्वनि (sound) और तथा प्रदीपन की उत्पत्ति है (जो एक प्रकार की ऊर्जा है), (ii) विशेष अनुसंधान जैसे कई सीढ़ी पर कुम्भिकायी, इस प्रदीपन की बात कहती है, और (iii) एक बार प्रदीपन में सभी के आकाशकला की अभिव्यक्ति में सभी आधी चाहिये और परिवर्तन स्वयं-स्वयं आधी की कम आकाशकला होता चाहिये। इसका अर्थिदाय यह हुआ कि इसके अर्थिदाय की बातों (कारणों)—प्रदीपन तथा व्यवहारपरक प्रभाव पर विचार करना आवश्यक है।

(i) उद्योगिक कार्य (Industrial Process)—स्वयं-स्वयंता कि विशिष्ट ध्वनियों (sound) द्वारा प्रदीपन बहुत चाहिये, सीढ़ी द्वारा सभी प्रकार सम्पन्न है। हार्नेन्सन तथा क्लेगोर्ग (Horne & Clagor, 1942) के सिद्धांतिक एक भाग (symbolic blood pressure) की प्रदीपन का भाग भाग कर एक व्यवहार में ऐसा कि कुछ न एक प्रकार में उत्पन्न होती है।

दूसरी व्यवस्था—यदि मैं (symbolic) प्रदीपन आकाशकला द्वारा प्रदीपन द्वारा मैं सभी आधी चाहिये? (symbolic adjustment therapy) का एक अर्थिदाय प्रथम तथा द्वितीय होता है और

उसका एक भाग काफी बढ़ता है ही। आक्रामकता उसके एक भाग में दृढ़ रहि के बची जाती है ( Hobbeson & Murguson, 1962 ) । यथेष्ट व्यक्ति आक्रामक होने के बाद अपराध भाव ( Guilt ) विकसित करने परीत्यन स्तर परता है । किसी समय क्षीयवर्ति बाले व्यक्ति के प्रति आक्रामकता एक भाग में दृढ़ि रहने में किन्तु हीनो है क्योंकि हम में क्षीयवर्ति लगे बने आक्रामक होने के परतीत होत है अतः आक्रामकता, परीत्यन की केवल एक लक्षण परती है जब इसके द्वारा अपराध भावना या भय भावना नहीं होती की परीत्यन बढ़नेकी ( Glass & Quakley, 1977 ) ।

(ii) व्यवहारपरक प्रभाव ( Behavioural effects )—एक लक्ष्य निर्दिष्ट करनेमें ( अभ्यासक समझ ) परीत्यन बढ़ती तथा उसके समाप्त की आक्रामकता परीत्यन परती है और कम से कम एक समय अवसर देता होता है जब आक्रामकता अपराध भावना या भय की परतीत नहीं करती । जब इस लक्षण है तीव्ररी परीत्यनरा का—परीत्यन में कभी से आक्रामक व्यवहार में कभी जाती चाहिये । यदि इसका व्यवहारपरक प्रभाव न हो तब विरेचन ( Catharsis ) द्वारा आक्रामकता में कभी लगे में कोई रति नहीं होती । कई बरे बाले या बाले पर बुझी जाती ( किसी समाधिगत परतु पर आक्रामकता को केविल करने ) के स-संवेगीक आक्रामकता में कभी नहीं जाती ( Glass & Quakley, 1977, Zillman 1979 ) ।

एक प्रकार समाधिगत ( Submissile ) परतु की और केविल आक्रामकता, बाले व्यक्ति के प्रति आक्रामक व्यवहार में परती कभी नहीं जाती ।

एक समय क्या होता है जब विरेचन ( Catharsis ) किसी बालविक व्यक्ति की और केविल होता है ? इस प्रश्न में परीत्यनता को कुछ समयेन विज्ञात है ? कुछ तथा कुछ ( Doob and Wood, 1972 ) ने एक सन्धिबद्ध परीत्यन द्वारा कुछ प्रतीत्यनों की परतात बताया क्या । सन्धिबद्ध विरेचन बताया में प्रतीत्यनों की सन्धिबद्ध परीत्यन को विदुतागत देने की अनुमति या तो दो रई या नहीं की रई । क्षीयन परतु में, आक्रामकता का भाग करने के प्रतीत्यन से सभी प्रतीत्यनों द्वारा सन्धिबद्ध परीत्यन को विदुतागत विज्ञाता क्या । प्रतीत्यन विदुते परतात किया क्या या तथा विरेचन ( Catharsis ) ( किन्तुने दूसरे परतु में विदुतागत नहीं किया ), एकदम से तीव्ररी परतु में क्षीय आक्रामक विज्ञात देने ( Kossman and Doob, 1972 ) । एक प्रकार विरेचन द्वारा आक्रामकता का कुछ निवन्धन संभव प्रतीत होता है ।

3. प्रतिकार ( Retaliation )—कभी-कभी आक्रामकता अपनी दुष्टता में आनन्दक प्रतीत होती है । यह व्यक्ति तथा सामुहिक या राष्ट्रीय स्तर पर की देखी

जाती है। प्रयोगित प्रतिकार के कारण कुछ लोग आत्महत्या के पक्ष पड़े हैं। डोलार्ड तथा लॉय (Dollard et. al 1939) ने दावा किया है कि किसी व्यक्ति द्वारा आत्महत्या अनुभव करने का व कारण अनुभव के प्रतिकार होने की संभावना पर निर्भर करता है। किसी अनुभव के विवे प्रतिकार की संभावना होने पर वह अनुभव के पीछे होने की सम्भावना पर निर्भर (Rosen, 1973, Deussenstein & Deussenstein, 1976)।

रॉस (Rogers, 1983) ने अपने अध्ययन में देखा कि कभी कभी लोगों के पीछे कभी-कभी द्वारा प्रतिकार के प्रयोग के परिणामस्वरूप कभी कभी लोगों की आत्महत्या पर जाती। वह अन्तर का के प्रतिकार करने के कारण आत्महत्या के जाती जाती है।

4. दम्भ (Pseudomartyr)—आत्म-निर्वा तथा प्रतिस्पर्धा करने करने की कारणों पर अनेक बार दम्भ देते हैं। वह कोई अपना किसी अन्य व्यक्ति को कारण है तो अपने को-काह लेते दम्भ लेते हैं। कारण यह है कि दम्भ के द्वारा की आत्म-हत्या की निर्धारित करने के प्रभाव किन्दा करते हैं। इसका अनुपयोग करने के साथ साथ होता है व्यक्ति वह प्रतिकार अधिक प्रभावकारी नहीं बनती जाती। डोलार्ड तथा लॉय (Dollard et al, 1937) ने देखा कि जो आत्म-निर्वा आत्महत्या निर्दिष्ट है वह अपने करने की प्रतिकार करते हैं वे अपने किन्दा अपने आत्महत्या प्रतिकार के पक्ष में जाने करते हैं। ऐसे करने पर वे बहुत कम लोगों के प्रति अनेकप्रकार अधिक आत्महत्या प्रभावित करते हैं। (Feldman, 1983) की वह मानते हैं कि दम्भ के बहुत आत्महत्या में कोई नहीं नहीं आती। कुछ परिस्थितियों में आत्महत्या की प्रभावता दम्भ के कारण पर जाती है, किन्तु रॉस (1977) का विश्वास है कि ऐसी स्थिति में बहुत कम होती है। आधुनिक का अधिकांश दम्भ के अनेक कारण होता है जो आत्महत्या में प्रतिकार करता है। केवल नहीं नहीं दम्भ द्वारा आत्महत्या निर्दिष्ट प्रभाव आत्महत्या प्रतिकार होता है।

बीकर तथा हिलमार्क (1981)—के अनुसार ऐसे कारण प्रभावित है कि दम्भ आत्महत्या प्रभावित की प्रभावकारी पीछे तथा प्रभाव है यदि कुछ परिस्थितियों में किन्दा या (i) वह दम्भ प्रभावित किन्दा आत्म-प्रतिकार प्रभावित प्रभावित होते ही दम्भ देना प्रभावकारी होता है, (ii) इसकी (दम्भ) की प्रभावता-दम्भ का प्रभाव प्रभाव होता किन्दा दम्भ के पक्ष में प्रभावित प्रभाव है, (iii) प्रभाव प्रभावित (high probability)—हम बार प्रभावित प्रभाव प्रभावित के प्रभाव होने पर दम्भ किन्दा प्रभाव प्रभावित है। दूसरे यह कि प्रभाव प्रभाव प्रभावों के प्रभावित (exacerbate) की प्रभावित है। आत्महत्या के किन्दा प्रभाव में प्रभाव प्रभाव (exacerbate or doubt) में आत्महत्या करने करने के किन्दा जाने का प्रभाव पर प्रभाव प्रभाव



पुनर्वसन का अनुभव करने और साक्षात्कारिता दिखाने हैं। भारत के विपरीत अन्य देशों में सांख्यिक व्यवहार पर बड़े मापदंड का कार्मिकिक तथ्यों पर और एक के कारण सांख्यिक एवं द्विक व्यवहार का कार्मिकिक व्यवहार न्यून होता एक के प्रभावकारी होने का एक प्रत्यक्ष संकेत है। ऐसा विचार व्यक्त करते हुए मैकग्रा (Macgregor, 1977) ने लिखते हुए कहा कि यदि व्यक्ति अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों को अपने सांख्यिक व्यवहार पर प्रभाव डाले देखा है तो अन्य सांख्यिकता से पहले का प्रभाव बताया है। अन्य व्यक्तियों से (विशेष भारत में है), सांख्यिक व्यवहार को प्रभाव देने में अनुचित तरीके यहाँ पूरी नहीं होती-युद्धों के दौरान से कई-कई वर्ष पहले से एक प्रभावकारी नहीं होता। भारत विश्व अन्य पर विश्व मान का एक मात्र व्यक्ति में अपने के कारण यदि एक विचार को है तो प्रभावशील हो जाता है।

5. विरोध अनुविचार्य (Intelligence Resistance)—विरोध अनुविचार्य के द्वारा अनुविचार्य (Resistance), हाथी अनुविचार्य तथा दूसरे (Social Control) व्यक्तियों के द्वारा सांख्यिकता की विरोध करने के प्रभाव किए जाते हैं। एक संस्कृत विज्ञान के अनुसार एक राज्य में प्रत्येक एक राज्य की विरोध अनुविचार्य की विरोध कार्मिकिक व्यक्तियों की अनुविचार्य प्रत्यक्ष है। इस विज्ञान को सांख्यिकता पर लागू करने में सांख्यिकता की विरोध अनुविचार्य का कार्मिकिक व्यक्तियों प्रत्यक्ष करने सांख्यिक व्यवहार की प्रभावकारी बताया जा सकता है। विश्व व्यक्तियों के कुछ देशों में प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष है कि सांख्यिक व्यवहार/प्रभाव प्रत्यक्ष होने पर यदि अनुविचार्य, हाथी एवं हाथी अनुविचार्य प्रत्यक्ष करने पर व्यक्ति की सांख्यिकता प्रभाव डाले है। ऐसे प्रभाव क्षेत्र (Baron, 1971, 1982), कार्मिकिक, प्रत्यक्ष, तथा प्रत्यक्ष (Baron, Bryman, 2003) प्रत्यक्ष के लिए है। प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष है कि कुछ व्यक्ति को सांख्यिकता के विरोध करने (gaining entry individuals into the organizational world) प्रत्यक्ष सांख्यिक और द्विक व्यवहार को प्रभाव डालते हैं। प्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष प्रभाव में व्यक्ति के सांख्यिक एवं द्विक कार्य / व्यवहार करने की प्रभावकारी प्रभाव होती है।

6. सांख्यिक व्यक्तियों का प्रभाव (Influence on the organizational world)—सांख्यिक व्यक्तियों प्रभाव के अनुसार यदि सांख्यिक व्यक्तियों की प्रभाव सांख्यिकता को प्रभाव डालता है तो प्रत्यक्ष प्रभाव सांख्यिकता की प्रभावकारी और प्रभावकारी द्वारा प्रभाव प्रभाव व्यक्तियों एवं व्यक्तियों से सांख्यिकता की प्रभाव में प्रभाव हो सकता है। प्रभाव (Baron, 1972) प्रभावकारी एवं प्रभावकारी (Dobson, 1976)। प्रभाव व्यक्तियों से विरोध व्यक्तियों को सांख्यिकता प्रभाव प्रभाव प्रभाव, ये इस अनुभव के प्रभाव व्यक्तियों को प्रभाव प्रभाव

सार्वजनिक जागरूकता का प्रयत्न किया। ऐसे प्रयासों के लक्षित निष्कर्ष है कि उपान-  
युग और स्वतन्त्रतापूर्व भारतीयताओं में अन्तर्जातक मानकों की स्थापित कर दिया की  
किसी भाषा में निर्दिष्ट किया जा सकता है।

३. सामाजिक नीतियों में प्रतिष्ठान (Tradition in social norms) —  
दुसरी के साथ सम्बन्धित करना उक्त सामाजिक नीतियों में प्रतिष्ठान के  
द्वारा जागरूकता को बढ़ाया जा सकता है। जैसा कि जागरूकता केन्द्र द्वारा दृ-  
ष्टि करते हैं क्योंकि सामाजिक नीतियों का अभाव होता है। यह सम्बन्धन में  
जागरूकता के कारण दुसरी की अपनी उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाते, अन्तर्जातक  
की दुसरी लक्ष्य, और दुसरी की सामाजिक-राज्य की प्राप्त करने वाले लक्ष्यों  
के प्रति सम्बन्धित होती है। इसके परिणामस्वरूप यह लोक दुसरी जागरूक  
है और ऐसी लक्ष्य या जागरूक करते हैं कि उनके साथ-साथ भीतर लोगों को लक्ष्य  
करता है। ऐसे लक्ष्यों की संख्या बढ़ गई है जो लक्ष्य देती है कि इन सामाजिक  
नीतियों के अभाव वाले लोक लक्ष्यों लक्ष्यों में जिसका उपयोग की जागरूकता में  
दृष्टि के लिए उत्तरदायी है (Toch, 1980, 1985)। उक्त जागरूकता सामाजिक  
नीतियों में विकास द्वारा जागरूकता में काफी लक्ष्य या सकता है।

इस प्रकार जागरूकता विधियों के द्वारा सुचारु में जात जागरूकता एवं जिसका  
उपयोग की किसी भाषा में निर्दिष्ट किया जा सकता है।

# परोपकार, सहायतायें व्यवहार : समाजोपयोगी व्यवहार

Altruism, Helping Behaviour : Prosocial Behaviour

राइट्समैन ( Wrightsman, 1964 )—के अनुसार सार्वभौम, वैश्वी, समतामियी तथा समाजवैज्ञानिकों का विश्वास है कि मानव स्वभाव की क्रांतिविकारिणी होती है। ऐसी मान्यता है कि वह विचारों एवं प्रवृत्तियों की विशेषताओं के माध्यम से पुनर्पुनः प्रभावित करता है। मानव स्वभाव की सबसे महत्वपूर्ण और आकर्षक विधा अल्पकालीन स्वार्थ ( Altruism Versus Egoism ) कहलाती है। मानव स्वभाव के विषय में हमारे विचार और विश्वास विभिन्न व्यक्तियों तथा समूहों में परिवर्तित होते हैं। इस प्रश्न में ई-एन-एन के दृष्टिकोण का उपयोग उचित होगा, "कुछ व्यक्तियों के दृष्टिकोण, वेच वस्तुओं का स्वभाव निरर्थक है ( With a few exceptions, human nature is worthless )। निःसन्देह वह मानव स्वभाव का अत्यन्त निराशावादी दृष्टिकोण है। किन्तु सामक ( E.E. Schatts ) ऐसा अकेला समाजवैज्ञानिक नहीं था। अनेक विद्वान् लेखकों की कृतियों में यही दृष्टि सुनाई देती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार हम सभी अपने तथा अन्य व्यक्तिव्यक्तियों की रीतियों और प्रवृत्तियों में सुधार होता है तो बहुतो व्यक्ति अपने प्रवृत्तियों, रीतियों आदि के अनुसार कार्य करते हैं। इसी विचार द्वारा का समर्थन करते हुए मैकग्रेगोरी (Macgregor, 1950) ने अपनी पुस्तिका पुस्तक "Disorder" में लिखा है कि, "हमें यह मानकर चलना चाहिए कि सभी वस्तुएं बुरे प्रभाव के हैं" ( "We must start with assuming that all men are bad and are ready to assume to their vicious nature." ) निम्नांत सार्वभौम—वीच ह्यूम्स ( Hobbess ) निचो ( Nietzsche ) ने भी मानव स्वभाव के बुरे होने का उल्लेख किया है किन्ती कल में किया था। इसका निहित अर्थव्यक्ति यह है कि मानव के स्वभावतः स्वार्थी होने से प्रवृत्ति या अर्थ के लिए संभवतः कोई पुनर्पुनः नहीं मान्य होती।

कोई बहुतो सार्वभौम विचारक का जो किसी कल में यह मानता था कि मानव के स्वार्थी स्वभाव को अनुकूल बना, उचित प्रवृत्ति और मानव स्वभाव के पुनः



Doogali, 1908) यदि वे पीढ़ी के विचारों के अनुचित आकाश हैं। उनके समस्त युवा प्रेम गढ़ का "नया वास्तविक नरीयकार का मान्य समन्वय में प्रतिष्ठित है" ( 1920 ) के बाद-बाद व्यवहारवाद का मनोविश्लेषण पर आधारित बौद्धिक-शैली विद्वानों में बहुमुख नरीयकार द्वारा अभिव्यक्ति युक्तिकोत्तर होने वाले मान्य व्यवहार की बहुआयामी व्यवस्था समुदाय करते हैं।—कौन साधुनिक विद्वान् मान्य के बहुआयामी समन्वय का उल्लेख करते हैं, क्योंकि उनकी व्यवस्था यह है कि समुदाय की दृष्टि की करते हैं उसका अस्तित्व समन्वयकारी विधि है। मान्य समन्वय की इस व्यवस्था की अवस्था करना अस्ति है।

मान्य व्यवहार के बहुआयामी व्यवस्था का कौन-कौनसा इस प्रकार यह की नरीयकारी प्रतिष्ठित होने वाली अभिव्यक्ति की उल्लेख नरीयकारीत कौन के आधार पर कर सकते हैं। बहुआयामी की व्यवस्था करते कौन की तरह मान्य कौ की। कौनसे मान्य की उनकी दृष्टि के दृष्टा दृष्टा कौन कौनसे नरीय दूर करते के सिद्ध करने उनकी बहुआयामी की। सिद्ध बंधन है मान्य की नरीयकारी विद्या का अस्तित्व मान्य मान्य की कौन मान्य विद्या की व्यवस्था यह की। ऐसी व्यवस्था के समुदाय मान्य बहुआयामीत व्यवहार नरीयकार कौन बहुआयामी। इसे एक वैश्विक का बहुआयामी बहुआयामी बहुआयामी ( *multidimensional coordination* ) कह सकते हैं। यद्यपि कौन-कौन कर दृष्टा मान्य कौन की करने के सिद्ध दृष्टा की बहुआयामी करते हैं कौनसे विद्या न करने के दृष्टि दृष्टा होने है।

## नरीयकार का अर्थ

(*Meaning of Altruism*)

अर्थ ( *altruism* ) वैश्विक मान्य ( *altru* ) के समन्वय दृष्टा है विद्या कौ है 'अर्थ'। यद्यपि दृष्टा समन्वय मान्य कौ के, दृष्टा की कौन समुदाय ( *altruistic* *social* *theory* *of* *altru* ) के समन्वय मान्य है। नरीयकार का अस्तित्व ऐसे कौ की है की दृष्टा की मान्य समुदाय। समन्वय कौ कौन ( *Meaning of Altruism*, 1978, *Altruism*, 1978 ) के समुदाय, 'अर्थ विद्या दृष्टा की वैश्विक, और समन्वयनिक मान्य प्रमाण करने, मान्य करने और वैश्विक समन्वय करने के कौन की करते हैं।' ( "There are many ways of producing, maintaining or improving the physical and psychological well-being and integrity of others" ) नरीयकारी व्यवहार द्वारा मान्य है कि दृष्टा कौ का समन्वय, समन्वय और समुदाय, दृष्टा का कौ केला, उल्लेखकारी विद्या, वैश्विक विद्या, वैश्विक के वैश्विकारी की दृष्टा, मान्य विद्या समुदाय है। कौ, समन्वय ( *Altruism*, L. B. 1937 ) के समुदाय यह समुदाय करने की दृष्टा है।

टीरेन्ची, लिन्डबोरोस तथा रीमिन्फेल्ड ( Tedeschi, Lindskoeld and Rosenfeld, 1983 ) के अनुसार, हमें दूसरों के अच्छाई का निजामी लाभ विहित होता है ( It is an unselfish concern for welfare of others. ) निजामी लाभ से ज्ञान व्यक्तियों की बहुमता करना ही परीस्कार है ।

हैरन तथा हावर्ने ( Haron and Hyman, 1979 ) ने कहा है—“जब आप किसी की बहुमता देकर उस कार्य से लाभ लाभ प्राप्त करते हैं तो आप का व्यवहार आपके अपने स्वार्थ से सम्बन्ध नहीं बाधता । जब आप किसी विशेष क्षेत्र के लाभ नहीं बढ़ा सकते हैं, इसके विपरीत जब आप किसी की बहुमता करके इसके स्वयं कुछ लाभ नहीं प्राप्त करते तो आप परीस्कारी नहीं बल्कि और प्रसन्न के लाभ हूँ ( “.....if you provide help to others and when you obviously benefit from the act, you are seen as behaving in your own self interest; therefore, you don't deserve any special credit. In contrast, if you provide help when you gain nothing from it, you are seen as altruistic and deserving admiration.” )

परीस्कार निजामी कि न स्वार्थ पूर्व होता है । यैरी, स्काट तथा वैनसजर ( Yarrow Scott and Wexler 1973 ) के संकेत दिया है कि परीस्कार कोई विशेष प्रकार का व्यवहार नहीं है, बल्कि इसके विविध प्रकार की अनुकूलार्थ कार्रवाय हैं जैसे—बहुमतात्मक, सामाजिकता विम्वक, सहायक, बहुमुद्रितारक, तथा ऐसी अन्य ( “Altruism is not a specific kind of behaviour, rather, it includes a diversity of responses helping, sharing, rescuing, sympathizing and undoubtedly more.” )

संशोधीकरण ( Conceptualisations )—उपरा, परीस्कार के पुनर्कार-मूल के अनुसार परीस्कार के वर्ग का वर्गीकरण करता है, क्योंकि यह व्यवहार परीस्कार कहा जाना । जिसमें व्यक्ति बहुमता के द्वारा विहित कृत्य के बहुत कम लाभ करता है यदि परीस्कारी व्यवहार की जीवन व्ययक्त ही होती है तो परीस्कार अपने स्वयं की पुनर्माण नहीं वा बढ़ा है का करने में लाभ बढ़ा है । उदाहरण के लिये किसी दूसरी की निराश्वेतिबाले हेतु पाली में कुराने में ।

दूसरे संभावनीकरण के अनुसार दूसरी की बहुमता करता व्यक्ति का वैयक्तिक व्यक्ति है । यदि कोई व्यक्ति दूसरी व्यक्ति की बचाने हेतु अपना न पड़ने हुए की पदी में कुर बढ़ा है क्योंकि यह उसे अपना वैयक्तिक सर्वोच्च मानता है, तो उसका व्यवहार परीस्कार कहा जाना । किन्तु यह व्यक्तिगत परीस्कार और वैयक्तिक व्यवहार में अंतर नहीं करता ।

सोमरा सोमराजीकर ने परोपकार की व्याख्या इस बात के आधार पर किया है कि "कहाँ की सहृदयता और व्यवहार होता है, वह वहीं होता है ?" (Linda, B., 1963) के अनुसार परोपकारी कार्य, (i) का उद्देश्य लाभकारी होना नहीं बल्कि वह कार्य मात्र में एक उद्देश्य/लाभ है : (ii) वैश्विक होता है, और (iii) इसमें लाभ की कल्पना होती है :

एन. वे. सेवरी (N. V. Severy, 1972) के लेखी सोमराजीकरों का सुझाव करते हुए कहा है कि "जिसे की सहृदयता करने करने में कुछ करने की प्रवृत्ति एवं प्रवृत्ति सहृदयता, और किसी किसी परोपकार की प्रवृत्ति होता है" ("One socialistic belief associated persons and support social relationships support to their growth, support to financial life and welfare".)

अपनी सामाजिक प्रतिभा में लिखे (Wings) के अनुसार है, "ऐसे व्यवहार का उद्देश्य केवल दूसरों का भला करना नहीं, बल्कि स्वयं की भला करना करने तक भी नहीं बल्कि उनके दुःख, दुःख और भय का निवारण में परोपकारी की है" ("This kind of behaviour involves not only the well-being of another person but also the willingness to share his/her own life and only the others and in view of his own life, frustration and sorrow".)

सेवरी (Severy, N. V., 1972) के लेख कहा है, कि "परोपकार, एक व्यक्ति की मात्र की आवश्यकता के अनिवार्य सहृदयता और व्यवहार है : यह परोपकारी व्यवहार, सहृदयता (socialistic), अपने आप में एक लाभ है, और वह एक व्यक्ति की आवश्यकता के कारण किया जाता है" ("Altruism is helping motivated by other person's being in need. Hence, altruistic behaviour is socialistic, is an end in itself and is done because other person needs it.")

परोपकार के इस किसी की सहृदयता दृष्टिगत करते हैं कि उसे सहृदयता की प्रवृत्ति है : सेवरी के परोपकार के इस सोमराजीकर विवेचन के अंतर्गत तथा लिखे (Kosher and Wings) द्वारा लिखी पर सहृदयता है—

(i) परोपकार का एक अनिवार्य प्रवृत्ति उद्देश्य (socialistic) है : जीवन में लाभ की कल्पना करने का लाभ का हीन परोपकार के विरोध आवश्यक है : वह ऐसा व्यवहार है की एक व्यक्ति की सहृदयता की प्रवृत्ति के प्रवृत्ति पर निर्भर है : यदि परोपकार किसी व्यक्ति के लिए किया जाये तो वह परोपकार नहीं होता :

(11) आत्म त्याग ( self sacrifice ) का ऐसे व्यवहार में होना अनिवार्य है। किन्तु किसी फिर भी यह बात पर ध्यान किन्तु अनिवार्य है कि दूसरों के दुःख में आजीविकी की दृष्टि परीक्षण के बिना आवश्यक है ?

(12) यह सबसे महत्वपूर्ण है कि समाजोपयोगी व्यवहार ( prosocial behavior ) एक धर्मोपदेश का है जिसमें परीक्षण, सहानुभूति व्यवहार जैसे अन्य पर ध्यान दिया है। केवली के अनुसार समाजोपयोगी व्यवहार के साथ एक वर्ग में अन्य व्यवहार साथ परीक्षण है जिसमें सीधे में अन्य की मदद का साथ होना आवश्यक है।

परीक्षण तथा समाजोपयोगी व्यवहार के सम्बन्धी की उपलब्धि किन्तु नहीं, यहि कहता है। स्ट्राक (Strack, 1978) मिले (Milne, 1972) के अनुसार समाजोपयोगी व्यवहार यह है जिसमें दूसरे सांख्यिक होते हैं और जिसमें सामाजिक परिणाम उत्पन्न होते हैं ( "Prosocial behavior, is usually defined as behavior that benefits others or has positive social consequences." ) यह पर-समाजोपयोगी, समाज विरोधी का विशेष है। यदि किसी दूसरे में बिना किसी की सहानुभूति इस कारण से की जाये कि किसी प्रकार का लाभ मिलेगा, अर्थात्, सम्पत्ति एवं समाज का अनुपयोग प्राप्त होना ही परीक्षण के अन्तर्गत परी परीक्षण, समाजिक सामाजिक व्यवहार की सीमा नहीं की जायेगी।

### सहानुभूति व्यवहार के विचारिक

(Dimensions of Helping Behavior)

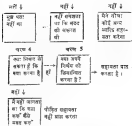
दूसरों की सहायता करना एक सामान्य सामाजिक व्यवहार है—एक सामान्य व्यक्ति अन्य दुःखी है और लाभ उठा लेते हैं, कोई अपने अपने का सहानुभूति दुःख करने में सहायता करता है। कभी-कभी दुर्घटना स्थल पर एक कर सहायता प्रदान करते हैं। इन सब के द्वारा सामान्य दूसरी की समस्या का समाधान के बिना किसी किसी किसी किसी मदद करता है।

सामान्य सहानुभूति व्यवहार में सहायता की आवश्यकता तथा उपयुक्त सहायता-प्राप्त व्यवहार दोनों सम्बन्ध होते हैं। एक अन्य प्रकार की सहायता भी है जो बहुत सामान्य ( common ) नहीं पर सहानुभूति होती है—वापस स्थिति में सहायता ( Helping in emergency )।

सांख्यिक ( altruism ) सहायता पर सीधे नहीं, अपूर्ण विरोधी की एक सामान्य परीक्षण प्रयोग के उपलब्धि हुआ। यह प्रयोग ( 1964 ) के सीधे-सहायता की है जिसमें किट्टी गेरीनिक ( Kitty Genovese ) की मृत्यु 3 मिनट पहले सामाजिक सांख्यिक के कारण किसी के जाने दे बार-बार कारिताला हुआ किया।







विषय—सर्वोच्च हस्तक्षेप का संभावनात्मक कारण (जस्टिस एवं जर्नी, 1968)

संश्लेषण विषय के संबंध में नीचे दी गई चरण इस प्रकार हैं :

1. जो हो रहा है उसका कारण का व्यवस्थीकरण : यदि लोग सोचते नहीं लेते हैं तो सहायता नहीं कर सकते।
2. कारण के आधार पर निर्णय लेने का सांसाधन सर्वोच्च की निर्णय करना चाहते हैं कि किसी की मदद की जरूरत है।
3. हस्तक्षेप हेतु संभावनात्मक का बीच सहायता इस समय सुनिश्चित है यह भावना पैदा करना करना चाहते हैं।
4. यह निर्णय कि किस प्रकार की सहायता प्रदान करें : यह समय यह सहायता के प्रकार और अपनी सहायतात्मक क्षमता का सुनिश्चन करना है।
5. निर्णय की सिफारिश करना।

संश्लेषण प्रक्रिया में हस्तक्षेप के चरणों को समझने के कारण के कारण संभावित करते हैं : यह निर्णय विषय नहीं है यह नहीं है।

1. परिस्थितिगत 2. सामान्यक क्षमता, 3. व्यक्तिगत निर्णय।

1. परिस्थितिगत निर्णय (Situational determinants)—सहायता करने या न करने के निर्णय के पूर्व यह सांसाधन प्रदान करने की क्षमता का सुनिश्चन करता है और यह सुनिश्चित करता है कि प्रदान सांसाधनिक क्षमता



अन्य व्यवहारशील ( मानसिक ) शरीरों के साथ रहने वाले अन्य द्वारा बुरे की सूचना देने की संभावना को बड़ा दिया । किन्तु जो अन्य जबकि प्रभावशील की दृष्टि पर रहे थे, तबसे वे 75% तथा अन्य की उदात्त व्यवहारों के साथ कार्यरत व्यक्तियों से के साथ 10% व्यक्तियों ने इसे बुरे की सूचना प्रयोगकर्ता को दी । यहाँ तक कि एक रसा में तीन उदात्त व्यक्तियों से के साथ 38% बुरे की सूचना दी । उन्होंने इसे सर्वोच्च व्यवहार ( *Bystander effect* ) की संज्ञा दी, जिसका तात्पर्य यह है कि अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति में जबकि होने की संभावना व्यक्ति द्वारा बहुमत करने की संभावना न्यून होती है ।

जार्ज एन लाराने ( 1968 ) ने एक अन्य अध्ययन द्वारा भी सर्वोच्च व्यवहार को दृष्टिगत किया । विपरीत में उपस्थित व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि के सहानुता की साक्ष्यित तथा प्रति पड़ी । सर्वोच्च व्यवहार एक प्रमुख भौतिक है जिसकी सहानुता के सिद्धि की सूचना की परदा की आवृत्ति हो सकती है । लाराने और जार्ज ( Latane and Darley, 1970 ), लाराने, मिडा एवं विलसन ( Latane, Mila and Wilson, 1968 ) के अनुसार एकमात्र कारण तीन सामाजिक व्यक्ति-वर्ग हो सकती है : सामाजिक प्रभाव प्रक्रिया के द्वारा सर्वोच्च अन्य उपस्थित व्यक्तियों पर परिस्थिति की व्याख्या के सिद्धि निर्धार करते हैं । उनके अनुसार यह अन्य व्यक्ति होकर कुछ नहीं करते हो प्रत्यक्ष एवं है कि सहानुता की आवश्यकता कोई बात नहीं है । दूसरा कारण सर्वोच्च प्रवृत्ति ( *audience inhibition* ) प्रभाव प्रभावित करता ( *evaluation apprehension* ) बहुमत है, जिसका अभिप्राय यह है सर्वोच्च जबकि प्रति निर्दिष्ट होता है कि अन्य लोग प्रभाव सेवा प्रभावित करते । अन्य में यह संक्रिया है जिसे लाराने व्यक्तिगत निर्धार ( *Diffusion of responsibility* ) कहा है । अन्ततः स्थिति के जबकि होने पर व्यक्ति अपने व्यक्ति की बहुमत करने सहानुता करता है किन्तु दूसरों की मौजूदगी में बहुमत का कारण किसी एक व्यक्ति का नहीं होता बल्कि सभी निर्धार होते हैं । सहानुता का व्यक्तिगत रीत बड़ा है और निर्धार ( *diffuse* ) हो जाता है ।

2. सहानुताई व्यवहार के सामाजिक-निर्धारक ( *Social determinants of helping behaviour* )—वृद्धि ने मुख्य रूप से एक सामाजिक जीवन बताया है । यह प्रभाव में अन्य और ऐसे-वैसे प्रत्यक्ष व्यक्ति से सिद्ध सामाजिक व्यवहार के नियमों का सीखना आवश्यक है । यह नियम सर्वोच्च सामाजिक मानक ( *Social Norms* ) सामाजिक व्यवहार तथा व्यवहारिकता द्वारा सीखे जाते हैं । सहानुताई व्यवहार प्रभाव के अंतः प्रभाव का अर्थ है जिसे सामाजिक व्यवहार ( *social responsibility* ) तथा सामाजिकता मानक कहा जाता है । यह सहानुताई व्यवहारों के प्रभाव की संज्ञा होती है, व्यक्ति उन्हें करना नहीं

वास्तव : व्यक्ति के व्यवहार, अपने होने वाले लाभ और हानि के निर्धारित होते हैं : अतः हमें तथा हमारी ( 1970 ) ने भी इन दो सामाजिक मान्यों सामाजिक दायित्व और वास्तविकता की स्वीकार किया है : सामाजिक दायित्व मानव बुद्धि के प्रति व्यक्ति की प्रत्येक कारना समाज के अन्य सदस्यों की जिम्मेदारी है : वास्तविकता मानव मानव के अनुसार हर व्यक्ति दूसरों की सहमति के अधीन रहता है : अतः, सुवासित मध्य पर सहमति के द्वारा वह एक सामाजिक प्रण की प्रकृति करता है :

(i) सामाजिक दायित्व ( Social responsibility )—हर समाज के सामाजिक दायित्व के निर्धारण तथा मान्यों का प्रभाव होता है—जैसे बुद्धि के प्रति होने की प्रकृति, सामाजिक प्रकृति के माध्यम से जीवन, व्यवहार एवं मान्यों की सहमति, जीवन की सहमति व्यक्ति : सामाजिक दायित्व मानव के जीवन और दूसरों की प्रकृति करते हैं : सामाजिक जिम्मेदारी ( Social responsibility ) विज्ञान के अनुसार व्यवहार का आधार सभी निर्धारित लाभ और हानि है न कि दायित्व और :

वह वास्तविकता कि बुद्धि सम्पूर्ण व्यक्तियों की सहमति पर निर्धारित की सहमति करनी चाहिये—सामाजिक दायित्व है : सामाजिक दायित्व के मानव के अनुसार की रूप पर निर्धारित करते हैं, उनकी सहमति करनी चाहिये ( बर्नोस, 1972 ) बर्नोस तथा डेविस, ( 1963 ) : वह मानव, जीवन पर तथा मान्यता ( 1961 ) के अनुसार, जीवन का आधार करता है, सभी सहमति पर व्यवहार की व्यक्ति की वैयक्तिक जिम्मेदारी प्रकृति है : जो रूप पर निर्धारित है उनकी सहमति प्रकृति द्वारा दायित्व एवं जीवन है :

(ii) वास्तविकता ( Realistic )—वास्तविकता मानव के अनुसार बुद्धि उनकी सहमति करनी चाहिये की सुझाव प्रकृति करते हैं : वास्तविक ( Gold-  
man, 1960 ) के अनुसार व्यक्ति सभी की प्रकृति करता है जो उनकी प्रकृति पर कर करते हैं : वास्तविक यह है कि वह मानव दूसरों के लाभ प्रकृति विविध की आधार करता है : डोबेन ( Dobson 1974 ) का विचार है कि व्यक्तियों के व्यक्तिगत व्यक्तिगतों के किसी प्रकार का विविध निर्धारित होता है :

दूसरों के प्रति दायित्व की प्रकृति प्रकृति व्यक्तिगतों के प्रकार के अनुसार परिचित होती है—जैसे प्रकृति प्रकृति, सहमति करनी प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति : डोबेन ने कहा है कि लोगों की जीवन प्रकृति की प्रकृति प्रकृति है (Schoepfer, 1970, "People should be paid back for whatever they  
give us".) कहा प्रकृति प्रकृति ( 1973 ) ने कहा कि प्रकृति के प्रकृति प्रकृति

काली सहायता की मांग विपरीत ज्यादा होती है वही मांग में अवधि उसके जीते तक ही मांग के सहायता परक व्यवहार आता होता है :

इसका सवाल सामाजिकता के नियम के अनुसार ही समझ लाने सामाजिक कार्य करता है : मरने-जीने, जेने-जेने, बादी-विपक्ष समर्थ सामाजिकता देखने की विन्नी है : ऐसा प्रतीत होता है कि साथ साथ ही सामाजिकता पर किया हुआ है : जीव बादी-विपक्ष में मरने, उपहार आदि यह जीवनपर देखे है कि हमारे बहुत बहुत भी कम के कम उत्तरा अवसर देना : सामाजिक सम्बन्धों में दूर-दूर स्तर पर सामाजिकता रही वही हुई है, वही उत्तरा सहायता परक व्यवहार में ही इसकी प्रमुख दृष्टि है : उपर्युक्त, सहायता परक व्यवहार की मांगवा कुछ मनोवैज्ञानिक सामाजिक विविधता ( Social Exchange ) के सिद्धान्त के आधार पर करते हैं : सामाजिक विविधता सिद्धान्त सहायता के नियम की प्रभावित करने वाले कारकों की मांगवा लाभ ( पुनर्कार ) एवं हानि के विनिमय के अनुसार करने का सुझाव दिया है ( एन्टीस एवं ह्यूमंडीस ( 1949 ) बीयर एवं ह्यूमंडीस ( 1949 ), डेविडिना तथा अन्य ( 1983 ) :

3. सहायतापरक व्यवहार के व्यक्तिपरक निर्धारक ( Individual determinants of helping behaviour )—सहायता परक व्यवहार में अलग व्यक्तिगत चिन्ता रही जाती है : इसका उत्तर यह है कि सहायता करना वा न करना व्यक्ति की अपनी विशेषताओं पर भी निर्भर करता है : जीव व्यक्ति किसी सहायता देना वा नहीं, व्यक्तिपरक कारकों द्वारा भी निर्धारित होता है : व्यक्तिगत चिन्ताओं के सम्बन्धों में जान हुआ है कि किस प्रकार के जीव सामाजिक स्थिति में सहायता जान करते हैं ? सहायतापरक व्यवहार करने वालों में जीव विशेषताएं प्रमुख होती हैं ?

(i) सामाजता—मनोवैज्ञानिक सम्बन्धों के जान हुआ है कि पूर्वसहायता व्यक्ति तथा सहायता देने वाले व्यक्ति के साथ सामाजता एक प्रमुख व्यक्तिपरक कारक है : वेल्शवा की सामाजता ( एन्थिपलर तथा अन्य 1971 ), अधिदृष्टि सम्बन्धता ( बीर, 1971 ), सामाजिक दृष्टिकोण में सम्बन्धता ( एन्टीस एवं अन्य, 1973 ) आदि की सहायतापरक व्यवहार के जीव अनुक्रम प्राप्त किया है : सामाजता एवं सामाजता ( 1963 ) में सम्बन्ध सुझा, विविधता और अधिदृष्टिओं वाले व्यक्तियों में सम्बन्ध बनाए रखता व्यक्ति सुझाव होता है : सामाजिक व्यक्तियों में सम्बन्धता रखना सम्बन्धकारी होता है : इन्हीं कारकों के समान प्रतीत होने वाले व्यक्तियों की सहायता देने के लिए अनिवार्य व्यक्ति सम्मुख होती हैं :

(ii) वैयक्तिक व्यक्ति की प्रवृत्ति—इसके प्रमुख विवेक है कि जीव अपनी प्रवृत्ति के साथ लोगों की सहायता देने के लिए व्यक्ति उत्तरा होती है : ( वेल्श

समाचार, (1976)। किन्तु कुछ मनोविज्ञानियों के द्वारा किए गए (विशेषतः, सावधान: 1973) शोधों एवं प्रयोगों से ज्ञात परिणाम सामान्य सिद्धोक्तियों से भिन्न हैं।

(iii) सहायता करने वाले का व्यक्तिगत—सहायता का व्यवहार करने वाले की व्यक्तिगत की विशेषताएँ भी सहायताकार व्यवहार की प्रभावित करती हैं। जो लोग अधिक सहायक-मुख होते हैं उनके सहायताकार व्यवहार की अधिक संभावना होती है। धारणा की वजह विशेष रूप से प्रभावकारी है। उन्होंने अपने प्रयोगकार के लिए सभी शिष्टी प्रकाशकों की संज्ञा रखी की ( यद्यपि उन्हें विषय के संबंधित सम्मान प्राप्त मिले गये हैं )। बालन ( 1973 ) ने व्यक्तिगत सहायता तथा सहायता करके व्यवहार में अन्तर्गत सम्मान प्राप्त किया है। उन्होंने कहा है कि साहाय्यी ( *syndicalist* ) लैंग्विजल रूप से परिणत, सम्मानकारी, उत्साही, वैधिम, दुष्ट सुनने वाली, सीमा ( *bold* ), सामाजिक, सामान्य, संकल्पित, उत्साह, निर्दोषता, कुछ सीमाएं होती, तथा कुछ शक्ति व्यक्तिगत सहायता वाले व्यक्ति संबंधित अधिक सहायताकार व्यवहार करते हैं। उन्होंने विशेषताएँ सहायताकार व्यवहार का निर्धारण करती हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि कुछ विशेषता व्यक्तिगत सहायता की प्रवृत्ति सहायताकार व्यवहार के मिले जाने का अधिक होती है।

(10) **सीमा क्षेत्र**—यहां सीमा क्षेत्र की बहुपक्षीयता का अध्ययन है ? इस विषय में बहुत कम सीमा हुए हैं, और जो उपलब्ध भी है उनमें पर्याप्त विश्वसनीयता नहीं मिलती है। हाथरस ( Handman, 1973 ) ने महिलाओं में बहुपक्षीयता पर एक अध्ययन की शैक्षणिक अवस्था के कुछ प्रभाव दिए हैं। बिजवास्की एवं मिखाय ( Bilibinsky and Miyay, 1972 ) ने भी महिलाओं में पुंरों की अवस्था बहुपक्षीयता का अध्ययन की अवधि बढ़ाने के प्रभाव दिए हैं। दूसरी ओर कुछ प्रभाव पुंरों के रक्त में भी उपलब्ध है (सदाच एवं सेठी, 1973, गुप्त, 1988)। आलम (1983) ने अपने अध्ययन में पुंरों की अवस्था महिलाओं में अधिक बहुपक्षीयता पर एक अध्ययन की अवधि बढ़ाने की है।

(४) **अध्यायी मनोदशा :—**सङ्घप्रतापक अभिनिधि ने व्यक्ति की मनोदशा, मनुष्य के तथा समाजार्थ की उनकी अनुविधायी की विधिविज्ञापन की है। एक ही व्यक्ति की मनोदशा अनेक समय एक सेही नहीं रहती है। कभी वह बहुत लज्जाम, कभी विद्वान्, कभी दुखी एवं उदासीन होता है। सङ्घप्रतापक प्रतापक कर्मों बहुत कुछ व्यक्ति की आन्तरिक मनोदशा पर निर्भर करता है। मनोदशा तथा सङ्घप्रतापक परक व्यवहार के सम्बन्धों का अनेक प्रकार मनोविज्ञानिकों ने अध्ययन किया है। (द्विज, १९७०, द्विज, कलर्न एवं सार्द्वेय, १९७६)। यह व्यक्ति की







सुझाव: ये दोनों के विज्ञान बने हैं—परम्परागत विज्ञान तथा आधुनिक विज्ञान ।

(1) परम्परागत मनोवैज्ञानिक विज्ञान (Traditional psychological theories)—एक वर्ष में मनोविश्लेषणात्मक विज्ञान अत्यन्त प्रमुख है जिसका प्रमुख अधिकार यह है कि मानव स्वभाव मुख्यतः आत्मिक स्वभाव का है तथा और बाह्यकला पर आधारित है । प्रत्यक्ष यह है कि यह परीक्षार की व्याख्या कैसे कर सकता है ? बहुत मुख्यतापूर्वक नहीं कर सकता । कुछ मनोविश्लेषणवादी मनो-वैज्ञानिकों के दृष्टिकोण के परीक्षार एक ऐसा प्रभाव है जिसके द्वारा लोग अपने मानसिक संघर्षों और विचारों के अपनी रक्षा करते हैं । किन्तु यह स्थापना है कि इन संरक्षण के दूसरी की छिड़ करते हैं । कथन मनोविश्लेषणवादी विज्ञानी के अधिक विरोधजनक दृष्टिकोण अपनाते हुए यह स्वीकारने का प्रयास किया है कि व्यक्तिगत विकास में विशेषज्ञताका प्रभाव, जैसे स्वामी रोसो की सोच की बताते हैं और व्यक्ति में निम्नवर्गीय स्तरों की विकसित करते हैं ( Erickson, 1974 )

मानव का मनोविश्लेषणात्मक विज्ञान मुख्यतः एक व्यक्ति है जो अपने अपने प्राचीनकार के एक संघ के रूप में विकसित किया । अपने व्यक्ति के तीन स्तरों स्वयं (Id), महान (Ego) और पराहू (Superego) में व्यवहार के विरोध की लेकर विरोध संघर्ष का अधिकार अधिकारित किया का । जब यह का ही अन्य व्यक्तिों पर विरोध होता है तो व्यक्ति की परिचित के साथ व्यक्ति स्थायीकरण होता है । एवं (Id) जीवन और आकाशक मानसिकताई विमुक्त ( dissociation ) के लिए विरोध प्रभाव पड़ती है । यदि यह का विरोध रखा पड़ता है तो यह स्थाय स्थायतापूर्वक रूप में विमुक्त होती है । किन्तु यह बहुत अधिक तरीकों का अनुसंधान करता है—जैसे अधिकतम मनोरथवादी को स्वामी की स्थायी तथा अधिकतम स्तर पर स्थापित होती है । इन अधिकतम मनोरथवादी के उपरीण द्वारा यह रूप स्थाय की स्थापना है जो यह और पराहू ( Superego ) द्वारा अत्यन्त होते हैं स्थायी के लिए, सभी-सभी आकाशक व्यवहार में मनोविश्लेषण अधिकतम और मुख्यतः एक स्तर निहित होते हैं । मानव के अनुसार पराहू ( Superego ) का विकास आर्थिक संसाधनत्व अधिक के द्वारा होता है । स्थायीकरण में स्थायी, स्थाय विरा के विरोध, यदि स्थाय के पराहू विकसित होता है । तरीके स्थायी ( attachment ) विकसित होती है । यह विकास परीक्षारी व्यवहार की स्थाय करता है ।

इस व्याख्या के साथ ही मनोविश्लेषणात्मक विज्ञान आकाशकता की अधिक अपनी स्थापना करता है कि परीक्षार की । आधुनिक स्थाय मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मनोविश्लेषण के स्तरों के परीक्षार की स्थाय नहीं होती ।



है कि बहुसंख्यिक व्यवहार आधुनिक युगों तथा समाजीकरण की अभिवृद्धि का परिणाम है। परावृत्ति (Reciprocity) की दृष्टीय आधुनिक मानते हैं कि बहुसंख्यिक व्यवहार को अधिर्लेखित एवं नियोजित करना है।

परावृत्ति का अर्थव्यवहार है दूसरों की भावनाओं की आवृत्ति जो कि एक सम-जात आवृत्ति है। दूसरों के संकेतों की आवृत्ति व्यक्ति में कुछ शारीरिक परिवर्तन उत्पन्न करता है। वी की रोते देख कर बच्चे का बिना कारण जाने रोना परावृत्ति का ही एक उदाहरण है। परावृत्ति व्यक्ति की इतना कदीकृत कर देती है कि वह सुदीकृत में चले व्यक्ति की बहुसंख्यिक बहु सम्प्रदाय बन के उत्पन्न हो जाता है।

अनेक अध्ययनों के परावृत्ति द्वारा उत्पन्न होकर बहुसंख्यिक व्यवहार सम-जात करने के प्रमाण मिले हैं। गार्डनर एवं गिबिडी (Gardner and Gibbidi, 1977) ने अपने अध्ययनों द्वारा प्रमाण दिया है कि पुरुषों और बालों के व्यापक व्यक्ति को देखकर प्रेक्षक की दृष्टि बलि बढ़ जाती है और उसका कदीकृत स्तर की उँचा हो जाता है और वह व्यक्ति द्वारा देखी गया में मिली सम-जात व्यक्ति की पीछा निवारण हेतु हासिल की प्रत्याशा बढ़ जाती है। किश तथा गार्डनर (Kish, 1971) ने एक प्रायोगिक अध्ययन द्वारा दर्शाया कि बहुसंख्यिक व्यवहार प्रेक्षक की भाषा के अनुसार में बढ़ता है और उसकी उत्पत्ति में भी वृद्धि होती है। सुदीकृत में चले व्यक्ति के प्रेक्षक की प्रभावता तथा उसके साथ सम्बन्धों की उत्पत्ति के परावृत्ति में वृद्धि और तबनुसार बहुसंख्यिक व्यवहार की प्रत्याशा में वृद्धि होती है।

संभावना



























































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































